सवत् 1972949098 रजि० न० NP 17504 58

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख

99 दयानन्दाब्द 4 वार्षिक शुल्क 50 रुपये आजीवन रुपय

□ श्री अश्विनी कुमार पाठक

आर्य समाज के सत्सगो तथा अन्य उत्सवों की समाप्ति पर वैदिक धर्म की जय के उद्घोष लगाये जाते हैं और वैदिक धर्म की अन्य मत मतान्तरो से तुलना करके इसे ही आर्य समाज के विद्वान तथा उपदेशक सर्वश्रेष्ठ बताते है मैने कई आर्य विद्वानो से पूछा कि क्या ससार मे वैदिक धर्म का कही अस्तित्व है इसके उत्तर मे प्राय सभी ने यह कहा कि वैदिक धर्म का अस्तित्व तो है परन्तु आजकल इस हिन्दू धर्म कहा जाता है परन्तु एक दो विद्वानो ने स्पष्ट रूप स स्वीकार किया कि पृथक स अन्य मतो की तरह वैदिक धर्म तो नही है और आर्य समाज जिन सिद्धान्तो को मानता है वे वैदिक धर्म के सिद्धन्त ही हैं परन्तु इन सिद्धान्तो पर आचरण करने वाले पारवार बहुत कम हैं

वास्तव मे अगर देखा जाये तो वैदिक धर्म का ससार मे कोई अस्तित्व ही नहीं है क्योकि हिन्दू धर्म मे तो भिन्न भिन्न विचारो के लोग हैं अर्थात् ईश्वर को मानने वाले न मानने वाले मूर्ति पूजा करने वाले तथा न करने वाले इत्यादि इसमे तो बहुत से सम्प्रदाय हैं जिनकी अपनी अपनी अलग पूजा पद्धतिया हैं फिर इसे वैदिक धर्म कैसे कहा जा सकता है

महर्षि दयानन्द ने हमे बताया था कि हमारा प्राचीन नाम आर्य है हिन्दू नहीं इसीलिए उन्होने आर्य समाज के नाम से एक आन्दोलन चलाया और उसके दस नियम बनाये जो लोग आर्य समाज के सदस्य बनते हैं उनके लिए अनिवार्य है कि इन नियमो के अनुसार चले महर्षि न यह भी कहा कि वह कोई मत अथवा पथ नहीं चलाना चाहते वह तो सत्य सनातन वैदिक धर्म को मानते हैं जिसे ब्रह्मा से जैमिनि मुनि तक सभी मानते आये हैं आर्य समाज का लक्ष्य इसी धर्म का प्रचार प्रसार करना है जो वेद पर आधारित है महर्षि ने 3 दिसम्बर 880 को आर्य समाज मुलतान के मत्री मा दयाराम वर्मा को एक पत्र लिखा था कि 88 मे होने वाली जनगणना मे आर्य लोग धर्म के खाने मे वैदिक धर्म तथा जाति के खाने मे आर्य लिखाये परन्तु खेद है कि आर्य नेताओ ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया हर 0 वर्ष बाद जब जनगणना होती है तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सब आर्यों को यह निर्देश दिया जाता है परन्तु यह कुछ पता नहीं कि कितने लोग इसे मान कर अपने अपने को वैदिक धर्मी लिखाते हैं मेरे विचार मे तो सभी आर्य धर्म के खाने मे हिन्दू ही खिलाते हैं इसलिए अगर वैदिक धर्मी बन जाते तो वैदिक धर्म की वृद्धि होती इस लिए इस बात का तो खूब प्रचार होना चाहिए कि सभी लोग जनगणना तथा अन्य सरकारी फार्मो इत्यादि मे अपना धर्म हिन्दू न लिखा कर वैदिक धर्म ही लिखाये तथा सरकार के भी यह सरकारी अधिकारी इसे मना करें ऐसा करने पर वैदिक धर्म एक शक्तिशाली धर्म के रूप मे ससार मे सब से बडा हो सकता है क्योकि इसके सब सिद्धान्त बुद्धि अनुकूल हैं इस तरह सब आर्य सदस्यो के परिवार एक ही वैदिक धर्म को मानने वाले होगे आजकल तो अन्य हिन्दुओ की तरह आर्य सदस्यो के परिवार भी अलग अलग विचारो के हो रहे हैं जिस तरह कि घर मे अगर पुरुष आर्य समाज का सदस्य है तो ऐसे अधिकतर पुरुषो की स्त्रिया पौराणिक अथवा र धा स्वामी इत्यादि हैं पुत्र पुत्रियो मे से कोई हनुमान चालीसा पढता है तो कोई शिवजी पर जल चढाता अथवा नास्तिक है इसीलिए बहुत से आर्य सदस्यो को यह वेदना रहती है कि उनके परिवार आर्य समाज मे नहीं आते महिला सदस्यो की सख्या अन्य समाजो मे काफी कम है जिससे उनकी सन्तान माता पिता के बीच मे फस कर रह जाती है कि वह किसे ठीक समझे किसे गलत इन्ही कारणो से आर्य समाज के सत्सगो मे बहुत कम लोग आते हैं और आर्य समाज शिथिल होता जा रहा है आखिर आर्य समाज तो एक आन्दोलन है और आन्दोलन हमेशा नहीं चला करते है अब तो आर्य समाज कोई आन्दोलन चलान मे भा अक्षम होता जा रहा है क्याकि इसक लिए कार्यकर्ता हा नहा मिलत अगर सब सदस्यो के परिवार वैदिक धर्मी हो तो आर्य समाज कभी शिथिल नही हो सकता क्योकि अपने घर से ही कार्यकर्ता मिल जाये जिस तरह एक ईसाई अथवा मुसलमान की सन्तान भी उसी धर्म को मानने वाली होती है ऐसे ही आर्यों की सन्ताने भी हो जाती

आर्य समाज हिन्दुओ से कभा अलग नहीं हो सकता पर हिन्दू तो कोई धर्म ही नही है अगर वैदिक धर्म लिखान म किसी का सकोच हो ता उसके साथ ब्रैकेट मे हिन्दू भी लिखा जा सकता है आर्य नेताओ से निवेदन है कि परस्पर लडाई झगडे द्वेष की बाते छोडे परस्पर मिलजुल कर इस पर विचार करे तथा महर्षि दयानन्द का आदेश मान कर सभी आर्य परिवार अपना धर्म वैदिक धर्म हा लिखाये और किसी योग्य व्यक्ति

शेष पृष्ठ 5 पर

श्री प० मनीषीदेव जी नही रहे

आर्य समाज माडल टाऊन अमृतसर के पुरोहित प मनीषी देव जा शास्त्री का दिनाक 24 99 को देहान्त हो गया श्री मनीषी देव जी न अपने जीवन मे आर्य समाज की बहुत सेवा की है अपने पुत्रो व पुत्रियो को भी वैदिक विचार से ओत् प्रोत किया उनके सपुत्र प राकेश शास्त्री पुरोहित आर्य समाज सै चण्डीगढ तथा अनिल कुमार जा नरेश कुमार तीनो ही पुरोहित रूप आर्य समाज का सवा कर रहे है उनके दामाद प अनिरुद्ध जी शास्त्री आर्य समाज माडल टाऊन लुधियाना मे पुरोहित रूप मे कार्य कर रहे है उनका सुपुत्री विशोका यात सन्यास का दाक्षा लकर स्थान स्थान पर घूम घूम कर वेद प्रचार कर रही है

इस प्रकार श्री प मनीषदेव जी ने अपना सारा परिवार आय समाज के अर्पण किया हुआ है और उनक सभी बच्चे आर्य समाज का सवा कर रहे है यह उनका आर्य समाज के प्रति बहुत बडी देन है वह स्वय भा जावन भर अन्तिम समय तक आर्य समाज का कार्य करत रहे उनका अभाव सदा आर्य समाज मे खटकता रहेगा हम परम पिता परमात्मा स प्रार्थना करते हैं कि वह उस पवित्र आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार जनो को इस वियोग को सहन करने की शक्ति द

हम सभा कार्यालय के सभी कमचारा उन्हे अपना श्रद्धाजलि भ करते है

धर्मदेव आर्य कार्यालयाध्यक्ष

मनुस्मृति में प्रतिपादित धर्म का स्वरूप

□ श्री अशोक कुमार कसल द्वारा कसल फिलिंग स्टेशन ढोल कुरुक्षेत्र हरियाणा-136136

मनुस्मृति के रचयिता मनु मानवीय सृष्टि के प्रथम महापुरुष है मनुस्मृति सभी स्मृतियो मे प्रधान समझी जाती है । इस ग्रन्थ की सभी विद्वानो ने प्रशसा की है इस ग्रन्थ मे मनु ने ईश्वरीय ज्ञान वेद को प्रमाण मानकर अपनी मान्यता प्रस्तुत करते हुए मानव धर्म का विश्लेषण किया है

धर्म का लक्षण करते हुए मनु ने लिखा है कि

वेद स्मृति सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मन । एतच्चतुर्विध प्राहु साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम् ।।

अर्थात वेद स्मृति सत्यपुरुषो को आचरण और अपने आत्मा के अनुकूल प्रिय लगने वाला आचरण दूसरो के साथ करना ये धर्म के चार स्पष्ट लक्षण है

आचार परमो धर्म श्रुत्युक्त स्मार्त एव च अर्थात् वेद और वेदानुकूल स्मृतियो मे कहा हुआ आचरण ही श्रेष्ठ धर्म है अत आत्मोन्नति चाहने वाले द्विज को चाहिये कि वह इस श्रेष्ठ आचरण सदा प्रयत्नशील रहे

तस्मादस्मिन् सदायुक्तो नित्य स्यादात्मवात् द्विज ।

आगे आचरण की महत्ता को लिखे हुए कहा है **आचाराद् विच्युतो विप्रो न वेद फलमश्नुते। आचारेण तु सयुक्त सम्पूर्ण फलभाग भवेत् ।।** अर्थात् जो द्विज धर्माचरण से रहित है वह वेद मे प्रतिपादित धर्म जनित सुख के फल को नही प्राप्त कर सकता है तथा जो धर्माचरण करता है वह सम्पूर्ण सुख का प्राप्त करता है

धर्म का ज्ञान वही व्यक्ति प्राप्त कर सकता है जो अर्थ तथा काम स आसक्त नही है परन्तु भोगी कामी लोभी और स्वार्थी व्यक्ति को धर्म का चर्चा भी अच्छा नही लगती यह एक दृष्टान्त से स्पष्ट किया जा सकता है दुर्योधन न योगेश्वर श्री कृष्ण से कहा था कि हे कृष्ण मैं धर्म जानता हू किन्तु धर्म की ओर मेरी प्रवृति नही होती और अधर्म भी मैं जानता हू किन्तु उससे हटने को मन नही करता है

मनुष्य को धर्म के अर्जन मे जल्दबाजी नहा करना चाहिये। जिस प्रकार छोटी दीमक धीरे धीरे पूरी बाम्बी का निर्माण कर लेता है उसी प्रकार मानव का उद्विग्न हुए बिना यथाशक्ति धीरे धीरे धर्म अर्जन करना चाहिये तभी धर्म परलोक लिये सहायक बनता है । परलोक मे माता पिता पुत्र पत्नी और नाती (गोत्रीय) कोई भी सहायक नहीं होता केवल एक धर्म ही सहायक के रूप मे रहता है

नामुत्र हि सहायार्थं पिता माता च तिष्ठत । न पुत्रदारा न ज्ञाति धर्मस्तिष्ठति केवला ।।

अकेला ही जीव जन्म और मृत्यु को प्राप्त होता है। एक ही धर्म सत्कर्म का फल सुख और अधर्म का फल दुःख भोगता है । अर्थात् शुभाशुभ कर्म ही जीवात्मा के साथ जाते हैं जिनका फल जीवात्मा सुख दुःख रूप मे भोगता है इसलिये जो मनुष्य धर्म को प्रधान समझता है और धर्म के अनुष्ठान से जिसका मन पाप से दूर हो गया है । ऐसा व्यक्ति परमात्मा को शीघ्र प्राप्त करता है। जो धर्म का विनाश करता है उसे धर्म नष्ट कर देता और जो धर्म की रक्षा करता है वह धर्म से सदा सुरक्षित रहता है ।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित । तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतोवधीत्।।

अत चारो आश्रमो वाले अर्थात् ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ तथा सन्यासियो आदि सब मनुष्यो को योग्य है कि निम्नलिखित दस लक्षणो से युक्त धर्म का सेवन और उससे विरुद्ध अधर्म का त्याग प्रयत्न से किया करे ।

धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रह । धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्म लक्षणम्।।

अर्थात् धृति क्षमा दम अस्तेय शौच इन्द्रिय निगह धी विद्या सत्य और अक्रोध इन दसो का नाम धर्म हैं

1 **धृति** सदा धैर्य रखना अर्थात् सन्तोष

दृष्टान्त—महर्षि दधिच द्वारा असुर वृत्रासुर के वध के लिये अपनी अस्थियो से वज्र निर्माण के लिये यह सोचकर देह त्याग दी कि शरीर तो एक दिन जायेगा ही वह किसी का उपकार करता जाए यह मुझ प्राणी का परम सौभाग्य। धन्य हैं महर्षि दधिच की धृति

2 **क्षमा** निन्दा स्तुति मान अपमान हानि लाभ आदि दुःखो मे भी सहनशील रहना सामर्थ्य रहते हुए भी अपकारी का अपकार न करना ।

दृष्टान्त—स्वामी दयानन्द ने अपने हत्यारे को न केवल क्षमा किया अपितु उसे बचाने के लिये अपने पास से धन देकर उसे किसी दूर देश मे भागने के लिये विवश भी किया। क्या यह क्षमाशीलता की पराकाष्ठा नहीं है।

3 **दम**—मन को विषयो से रोकना । मन को सदा धर्म मे प्रवृत्त कर अधर्म से रोक देना अर्थात् अधर्म करने की इच्छा भी न उठे ।

दृष्टान्त एकान्त मे रात्रि के समय जब अप्सरा उर्वसी कामातुर होकर कुन्ती पुत्र अर्जुन के कक्ष मे आई तो अर्जुन ने कहा जैसे कुन्ती देवी मेरी माता है वैसे ही आप भी मेरी माता है आप अपने इस पुत्र पर प्रसन्न हो। अर्थात् उर्वशी का यौवन रूप श्रृगार अर्जुन के दम (मन के सयम) को भी विचलित नहीं कर सका

4 **अस्तेय**—चोरी त्याग अर्थात् बिना आज्ञा वा छल कपट विश्वासघात वा किसी व्यवहार तथा वेद विरुद्ध उपदेश से पर पदार्थ का ग्रहण करना चोरी और उसको छोड देना साहूकारी कहाती है । काय वचन और मन से परद्रव्य को न चुराना ।

दृष्टान्त— एक बार एक छोटा लडका अपने पडोसी के घर गया। पडोसी के घर मे उस समय कोई न था। लडके ने देखा एक डोली मे ताजे सेब रखे थे । लेकिन उसने उन सेबो को हाथ तक नहीं लगाया। पडोसी जब घर आया तो उसने देखा कि डोली मे सेब जैसे के तैसे रखे हैं उसने लडके से पूछा क्या तुम्हे सेब अच्छे नहीं लगते। तुमने सेब क्यो नही चुराये? यहा कोई देखने वाला तो था नहीं लडका बोला मुझे सेब बहुत अच्छे लगते है । चाहे कोई देखने वाला हो या न हो मैं तो देखने वाला था और मुझे अपने को कोई चोरी बेईमानी का काम करता हुआ नहीं देखना चाहिये धन्य है छोटे से लडके की अस्तेयता ।

5 **शौच**—जैसे स्वर्ण पात्र जल मात्र से धीरे से शुद्ध हो जाता है परन्तु स्वर्ण धातु अग्नि मे तपाने से मैल नष्ट होकर शुद्ध होती है । उसी तरह मनुष्य की बाहरी शुद्धि स्नान आदि से हो जाता है उसी तरह प्राणायाम करके मन आदि इन्द्रियो के दोष क्षीण होकर निर्मल हो जाते हैं ।

6 **इन्द्रिय निग्रह**—इन्द्रियो को वश मे रखना अधर्माचरणो से रोक के इन्द्रियो को धर्म मे ही सदा चलाना। विषयो के प्रति आकृष्ट इन्द्रियो का प्रत्याकर्षण

दृष्टान्त—एक राजकुमार की पत्नी बहुत सुन्दर थी । एक दिन राजकुमार को राजकार्य हेतु बाहर जाने के लिये उद्यत होना पडा राजकुमार को परम धार्मिक अद्रोहक को छोडकर अपना रूपवती पत्नी की रक्षा हेतु कोई दूसरा नहीं दिखता था । मैं अपन शय्या पर तुम्हारी पत्नी को शयन कराऊगा । उसकी रक्षा लोकाचार के विपरीत व्यवहार के बिना मुझे नजर नहीं आती । अगर आपको यह शर्त स्वीकार हो तो आप अपना पत्नी को मेरे घर रख सकते है अद्रोहक की यह बात स्वीकार ली राजकुमार ने । छ महीने बाद जब राजकुमार लौटा उसको पत्नी के सम्बन्ध मे जितने मुख उतनी बाते सुनने को मिली राजकुमार न अद्रोहक के प्रति अपनी नाराजगा प्रकट की तो अद्रोहक ने उत्तर दिया पीठ की ओर तुम्हारी स्त्री को करके अपनी पत्नी की ओर मुख करके मैं सदा एक शय्या पर सोया हू। तुम्हारी स्त्री के स्तनो न भी मेरी पीठ को जब स्पर्श किया है मुझे माता के स्तन का बोध हुआ है इसलिये मेरा भाव सदा शुद्ध रहा । धन्य है अद्रोहक का इन्द्रिय निग्रह ।

7 **धी**—ज्ञान तथा सदाचारण द्वारा बुद्धि बढाना मादक द्रव्य बुद्धिनाशक अन्य पदार्थ दुष्टा का सग आलस्य प्रसाद आदि का छोड के श्रेष्ठ पदार्थो का सेवन सत्पुरुषो का सग योगाभ्यास रा बुद्धि का बढाना

दृष्टान्त—सच्ची धी उस कहते हैं जो सत् असत् का सहा सही निर्णय कर सके जो असत मे भी भूलकर प्रवृत न हो तथा सदा सत् के सम्मुख रह इस प्रकार की सत् बुद्धि के प्रतीक हे मिथिला नरेश राजा जनक वे नित्य अनासक्त तथा ज्ञानियो के भी गुरु थे ।

8 **विद्या**—परमात्मा आत्मा तथा प्रकृति का यथार्थ ज्ञान तथा उसके अनुरूप कर्म करना । पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त यथार्थ ज्ञान और उनसे यथायोग्य उपकार लेना विद्या इसके विपरीत अविद्या है । शास्त्रो मे विद्या को कामधेनु कहा गया है अर्थात् वह गाय जा समस्त इच्छाये पूर्ण कराती है विद्या की प्राप्ति के लिये ईश्वर जीव और प्रकृति के स्वरूप को

(शेष पृष्ठ 6 पर

सम्पादकीय

यति मडल की एक बैठक दिनाक 20 1 99 को आर्य समाज अनारकली मदिर मार्ग नई दिल्ली बुलाई गई थी। यह बैठक आदरणीय सुमेधानन्द जी चम्बा मत्री यति मडल ने पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आदेश अनुसार बुलाइ थी। इस को बुलाने के लिये जो एजेडा भेजा गया था उस का विषय था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के चुनाव 8 11 98 को सम्पन्न हुये लेकिन अभी भी गतिरोध है इस के सम्बन्ध मे विचार।

इस बैठक का निमन्त्रण पत्र मुझे भी आया था और मैं 20 1 99 की बैठक मे गया तो इस बैठक मे स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष यति मडल स्वामी ओमानन्द जी स्वामी दीक्षानन्द जी स्वामी विद्यानन्द जी स्वामी सुमेधानन्द जी चम्बा स्वामी इन्द्रवेश जी स्वामी अग्निवेश जी प्रो शेर सिह जी श्री सूर्यदेव जी पडित हरबस लाल जी शर्मा आचार्य भगवान देव जी श्री शिव कुमार जी शास्त्री श्रीमति सतोष कपूर श्री विट्ठल राव तथा अन्य कई सदस्य वहा उपस्थित थे। यह बैठक स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के सरक्षण मे ओर स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे आरम्भ हुई। बैठक के आरम्भ मे स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज ने कहा कि आज हमे आर्य समाज के सगठन को मजबूत करने की बात करनी चाहिये। सारी बात स्पष्ट रूप से सामने आनी चाहिये। ताकि कोई समाधान निकल सके। स्वामी दीक्षानन्द जी ने सर्वप्रथम स्वामी अग्निवेश जी को अपने विचार रखने के लिय कहा। स्वामी अग्निवेश जी ने 8 नवम्बर 1998 को जो सार्वदेशिक सभा का चुनाव हुआ उस के बारे मे अपने विचार रखे और उन्होने कहा कि उस समय जो परिस्थितिया थी उस के अनुसार चुनाव हुआ। परन्तु कई कुछ नियमानुसार नहीं हआ। लेकिन जो कुछ भी हुआ आर्य समाज के सगठन को दृष्टि म रख कर वह किया गया। उन्होने कहा कि अब जो कुछ हो गया है हम सब को मिल कर सभी अधिकारियो को सहयोग देना चाहिये। इसी प्रकार के विचार स्वामी इन्द्रवेश जी प्रो शेर सिह जी श्री सूयदेव जी ने भी प्रकट किये। उन्होने भी कहा कि अब जो हो गया है उस को हमे मान लेना चाहिये। आचार्य भगवान देव जी ने बताया कि डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री मत्री सार्वदेशिक सभा ने 8 11 98 क साधारण अधिवशन के लिय 3 10 98 को अडर पोस्टल सर्टीफिकेट द्वारा एजेडा जारी किया और प्रवेश पत्र सार्वदशिक सभा के सभी प्रतिनिधियो को भेजे और 8 11 98 का सार्वदशिक सभा का चुनाव इसी एजेडा के अनुसार हाना चाहिये था। उन्होने कहा कि जो प्रतिनिधियो की सूची 1995 मे बनाई गइ थी उस के अनुसार जो चुनाव किया गया वह अवैध है और श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री द्वारा जो एजेडा जारी किया गया था उन प्रतिनिधियो द्वारा जो चुनाव किया गया वह नियमानुसार हुआ है। आचार्य भगवान देव जी न सुझाव दिया कि हम अदालत मे नहीं जाना चाहिये। इस का फेसला यति मडल के सन्यासी वर्ग ही कर दे तो यह आर्य समाज के सगठन को मजबूत करने के लिये ठीक रहेगा। आचार्य भगवान देव जी ने कहा कि आज सार्वदेशिक सभा के झगडे के कारण सभा क अकोण्ट बद पड है इस के लिये उन्होने सुझाव दिया कि स्वामी सर्वानन्द जी स्वामी दीक्षानन्द जी ओर स्वामी सुमेधानन्द जी चम्बा यह तीनो सन्यासी और दोनोपक्षो मे स एक एक व्यक्ति ले लिया जाये। जो सार्वदेशिक सभा के बैंक खातो का सचालन करे। स्वामी सुमेधानन्द जी चम्बा वालो के हस्ताक्षर अनिवार्य हो। इस कमेटी के सयोजक भी स्वामी सुमेधानन्द जी हो। इस प्रकार सभा के बैंक खातो को सचालित किया जाये। जब तक यति मडल इस झगडे का समाधान नहीं निकाल लेता तब तक यह व्यवस्था जारी रहे। पण्डित शिव कुमार जी शास्त्री ने भी इस प्रस्ताव का समर्थन किया और श्रीमति सतोष कपूर ने भी इस बात का समर्थन किया। इस पर प्रो शेर सिह जी ने कहा कि अब चुनाव तो हो गया है इसी को मानना चाहिये। स्वामी दीक्षानन्द जी ने मुझे भी बोलने के लिये कहा। जब मैं मच पर आया मेरे मन मे विचार आया कि आज मैं आर्य समाज के उच्च कोटि के सन्यासियो के समक्ष बोलने जा रहा हू। इसीलिये मैंने निश्चय किया कि मैं जो भी कहूगा बिल्कुल सच कहूगा ताकि सभी को वस्तु स्थिति का पता चल सके। इस के पश्चात् मैंने 3 10 98 से लेकर 8 11 98 तक जो कुछ भी सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे हुआ उस के सम्बन्ध मे सारी बात बताई। मैंने कहा कि आप आर्य समाज के उच्चकोटि के सन्यासी है आप इस सारे विवाद को अच्छी तरह से देख लो। जो भी निश्चय करना हो कर लो ताकि सार्वदेशिक जैसी उच्च सस्था लडाई झगडे से बच सके। उस के पश्चात् माननीय पडित हरबस लाल जी शर्मा ने सारी स्थिति को स्पष्ट रूप से बताया और गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सम्बन्ध मे कई प्रकार की बात बताई।

इस के पश्चात् श्रीमति सतोष कपूर ने भी अपने विचार रखे और बैठक दोपहर के भोजन के लिये स्थगित हो गई। भोजन के बाद पुन बैठक आरम्भ हुई और फिर सारी बात पर चर्चा हुई लेकिन इस के बाद स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि यति मडल किसी विवाद मे पडना नहीं चाहता और बैठक शान्ति पाठ क पश्चात् समाप्त हो गई।

बैठक जब बुलाई गई तो स्वामी सुमेधानन्द जी चम्बा वाल जालन्धर आये तो उन से मेरी बात चीत हुई। स्वामी जी बहुत उच्च कोटि क सन्यासी हैं उनके मन मे आर्य समाज के प्रति बहुत तडप है। उनका प्रयास है कि आर्य समाज का सगठन बहुत मजबूत हो और आर्य समाज उन्नति करे। उन्होने बहुत ही यत्न कर के यति मडल की इस बैठक का आयोजन किया था परन्तु इस बैठक का कोई लाभ नहीं हुआ। मैं समझता हू कि आर्य समाज म आज सच्चाई को कहने वाले बहुत कम लोग ह क्योकि सच इसलिये कहना नहीं चाहते कि कहीं हमारी कुर्सी न छिन्न जाये। जब बैठक समाप्त होने वाली थी तो पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द जी ने सक्षिप्त मे अपने विचार रखे और उन्होने कहा कि आर्य समाजी हमेशा सच बोलते थे और यदि आर्य समाजी अदालत मे गवाही दे देता था तो जज महोदय उस आर्य समाजी की गवाही को सच मान कर मुकद्दमे का फेसला कर देता था। स्वामी जी न कहा कि हमे सच बोलना चाहिये लकिन बैठक मे सब सच्चाई का पता चल गया हम अफसोस है कि आज हमारे मध्य मे आर्य समाज मे ऐसे निडर व्यक्ति नहीं रहे जो सच्चाई का सामना कर सकते हो।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जिन्होने आर्य समाज की स्थापना की थी उन्होने इसलिय आर्य समाज की स्थापना नहीं की थी कि हम सच्चाइ का साथ न दे और डर कर हमेशा काम करत रह। आर्य समाज क कार्यकर्ताओ मे काम करने का बहुत जोश है लेकिन काम करने वाल व्यक्तियो को जिस प्रकार से अपमानित किया जाता है उन के विरुद्ध बेबुनियाद दोषारोपण कर के उन्हे पीछ धकलने की कोशिश की जाती ह इस से कार्यकर्त्ताओ का मनोबल गिर जाता है।

आज इस बात की जरूरत है कि हम गहराई से सोचे कि हमे आर्य समाज के सगठन को किस तरह से मजबूत करना है सार्वदशिक सभा सार ससार की आर्य समाजो की सर्वोच्च सस्था है यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्रजातत्र तरीका आर्य समाज की सस्था को चलाने क लिये बताया था उस को हमे मानना चाहिये। सार्वदेशिक सभा के नियम उप नियम बने हुये है। यदि हम उन पर अमल नहीं करेगे तो सस्था कैसे चल सकगी इस सर्वोच्च सस्था के नेताओ को नियमो का पालन करना चाहिये। यदि सार्वदेशिक सभा के नेता नियमो का पालन नहीं करगे तो प्रान्तीय सभाओ जिला सभाओ व आर्य समाजो मे नियम का पालन कैसे होगा म यह लख लिख रहा हू तो मुझे लिखते हुये बहुत दुख हो रहा है कि आज आर्यसमाज के सार्वोच्च सगठन म ऐसे कोइ निष्पक्ष आदमी सामने नही आ रह जो सारी समस्या का समाधान निकाल सके। पद तो आते जाते रहते हे लेकिन पदो के लिये सस्था को खराब नही करना चाहिये। अभी भी कुछ नही बिगडा और सयम से काम लेना चाहिय ओर निष्पक्ष होकर सस्था के हित मे काम करते हुये आर्य समाज के सगठन और सार्वदेशिक सभा के सगठन को मजबूत करने के लिये कदम उठाने चाहिये।

हैदराबाद मे सार्वदेशिक सभा का जो चुनाव हुआ उस मे श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् प्रधान चुने गये थे ओर दूसरी ओर स्वामी विद्यानन्द जी ने सार्वदेशिक सभा का प्रधान अपने आप को घोषित कर दिया था और तीन वर्ष तक मुकद्दमेबाजी चलती रही। लोग कहते थे कि हैदराबाद म गलती हो गई है लेकिन अब गलती नहीं होगी परन्तु हम ने इस से कोई सबक नहीं सीखा मै समझता था कि यति मडल की बैठक मे इस सर्वोच्च सगठन का कोई ठोस परिणाम निकल जायेगा और सगठन मजबूत हो जायेगा परन्तु इस यति मडल की बैठक मे सार्वदेशिक सभा के दो पक्ष सामने आये है इसलिये मेरी सभी आर्य समाज के नेताओ से विनम्र प्रार्थना है कि सार्वदेशिक सभा के सगठन को मजबूत बनाने के लिये गहराई से सोचे। ताकि समय बर्बाद न हो और अदालतो मे मुकद्दमेबाजी न हो। स्वामी ओमानन्द जी के साथ मुझे बातचीत करने का बहुत कम अवसर मिला लेकिन इस बार जब मे दिल्ली मे ठहरा तो मुझे स्वामी जी से बातचीत करने का पूरा मौका मिला। स्वामी ओमानन्द जी जो सार्वदेशिक सभा के प्रधान बने हैं उनकी यह हार्दिक इच्छा है कि सभी झगडे समाप्त हो और सभी मिल कर काम करे और किसी भी तरह का विवाद उत्पन्न न हो। स्वामी ओमानन्द जी से मिलने के पश्चात मुझे आशा की किरण दिखाई देती है कि स्वामी जी सारे विवाद को खत्म करने का प्रयास करेगे और इस प्रयास मे मैं स्वामी जी का हर सभव सहयोग करूगा और आशा है कि आर्य समाज का कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नारा सफल होगा।

अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट सभा महामन्त्री

डारविन का विकासवाद मूर्खतापूर्ण प्रलाप है

□श्री प्रदीप कुमार जैन आचार्य 21 आलोक, हापुड, (उ०प्र०) 245101

डारविन वाद के कारण जो नास्तिकता और मूर्खता का दौर प्रारम्भ हुआ उसने विज्ञान की विभिन्न शाखाओ को प्रभावित किया। अनेक वैज्ञानिक सृष्टि रचना स्वयमेव मानने लगे। उनकी मान्यता मे आत्मा एव ईश्वर तो है नहीं अतएव शरीर रचना भी जड पदार्थों की रासायनिक क्रियाओ से स्वत हो गई होगी । इस भ्रामक चिन्तन के फलस्वरूप उनमे जीवमात्र के प्रति ममता मैत्री समाप्त हो गई एव स्वार्थ का चरमोत्कर्ष हो गया।

विकासवाद से प्रजनन विज्ञान को जो गलत दिशा मिली उससे प्राकृतिक प्रजनन क्रियाओ और ब्रह्मचर्य के सिद्धान्तो को छोड वैज्ञानिक मनमानी करने लगे। किसी भी स्पीशीज (प्रजाति) के शरीर के द्रव्य को दूसरी वा उसी स्पीशीज के सदस्य के शरार मे प्रविष्ट करा देना उनके प्रयोगो का अग हो गया और ऐसे प्रयोगो से नवीन आविष्कार की आशा वे करने लगे। इस प्रकार आविष्कार का बहाना लेकर वे कृत्रिम गर्भाधान सकर नस्लो का जन्म आदि द्वारा मूक पश्वादि जातियो पर कहर ढाने लगे और तो और वे मानव जाति पर ऐसे एसे प्रयोग करत हुए पूर्ण छूट चाहते हैं । किन्तु अपने कृत्रिम गर्भाधान या सकर नस्ल आदि के सिद्धान्तो और प्रयोगो को वे स्वय पर लागू नहीं करते उनके सिद्धान्त और प्रयोग तो दूसरो के लिए ही हैं। यदि प्रशासन यह नियम बना दे नकन्तु उनके सिद्धान्त और प्रयोग पहले उन्ही पर लागू किये जायेगे तो वे इसके लिए कदापि तैयार न होग किन्तु बावेला मचायेगे। इससे उनका आत्मा का पाप प्रकाशित हो जाता है

धर्म का बात सुनकर अनुसना करने अथवा एक कान से दूसरे कान मे निकाल देने की प्रवृत्ति लोगो की बन गई है। जैसे कुत्ते की पूछ सीधा नहा की जा सकती ऐसे ही इन लोगो के व्यवहार मे भी परिवर्तन नही होता विज्ञान को ये पढते हैं उनक प्रति आस्था भी है। अत विज्ञान के नियमो के आधार पर ही आत्मा व ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध कर डारविनवाद को परखने का प्रयत्न मैंन किया है ताकि वे इसको पढ विचार कर अपना बुद्धि व दृष्किोण मे कुछ परिवर्तन कर सके। मुझ मे ऐसी दृष्टि विकसित करने का श्रेय महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थो को ही है।

डारविन ने आत्मा और ईश्वर का अस्तित्व नहीं माना। अत जड पदार्थों की रासायनिक क्रियाओ के फलस्वरूप ही शरीर रचना का होना मान लिया। उसके अनुसार प्रारम्भ मे एक कोशिकाओ वाले विभिन्न जीवो का विकास हुआ। विकास की इस शृखला के अन्त मे बन्दर से मनुष्य की रचना हुई।

अब विज्ञान का जडत्व का सिद्धान्त क्या कहता है ? यह कि बिना बाह्य बल लगे जड पदार्थों की स्थिति या आकृति मे स्वय परिवर्तन नही हो सकता ।

इसकी व्याख्या करने पर स्पष्ट होता है कि इस गुण के कारण ही

1 कुर्सी मेज आदि जड पदार्थ स्वय उठकर दूसरी जगह नही चले जाते।

2 जड वस्तुए अपनी गति या गति की दिशा अथवा आकृति मे स्वय परिवर्तन नहीं कर सकता ।

3 जड पदार्थ स्वय ही जुडकर पम्प कम्प्यूटर आदि मशीन नही बन सकते और न ही दूसरे जड पदार्थों पर वे स्वय हा इस प्रकार बल लगा सकते हैं कि विभिन्न मशीने बन सके ।

4 रासायनिक क्रियाओ के फलस्वरूप बने पदार्थ भी पूरा तरह जड पदार्थ होते हैं उनमे जडत्व का गुण क्रियाओ मे भाग लेने वाले पदार्थो के समान ही वर्तमान होता है।

5 रासायनिक क्रियाओ से मशाने स्वय नहीं बन सकती।

6 जड पदार्थों से बनी कम्प्यूटर आदि अच्छी से अच्छी मशीने भी स्वय नहीं चल सकती किन्तु किसी के चलाने से ही चलती है।

7 जड पदार्थों मे स्वय मशीन चलाने का सामर्थ्य नही होता इसी कारण चलाने वाले के अभाव मे हजारो वर्ष तक पडी रहने पर भी मशीन चल नही पाती ।

8 मशीन कितने ही समय तक कैसे भी विशेष पर्यावरण या परिस्थिति मे रहे या रखी जाये किसा दूसरी मशीन मे परिवर्तित नहीं हो जाती क्योकि पर्यावरण या परिस्थिति भी जड निर्मित होते हैं। अत जडत्व गुण के कारण उनमे सृजनात्मक क्षमता का अभाव होता है।

इस व्याख्या के आधार पर विचार करे कि–

शरीर मे हृदय इतना उत्तम पम्प मस्तिष्क अत्युत्तम कम्प्यूटर है इसके अतिरिक्त पाचन तत्र उत्सर्जन तत्र तत्रिका तत्र रक्षा प्रणाली आदि उत्तमोत्तम रचनाये हैं ऐसी मशीन अपने आप कैसे बन सकती है ? इस मशीन के विभिन्न भागो के आश्चर्यजनक कार्यों पर विचार करे– जिह्वा कैसे विभिन्न स्वादो का ज्ञान कराती है गुर्दे कैसे रक्त को छानकर शुद्ध करते हैं शरीर से व्यर्थ पदार्थ किस प्रकार उत्सर्जन तत्र द्वारा बाहर निकाल दिये जाते हैं। शरीर की भीतरी टूट फूट शरीर की आन्तरिक क्रियाओ से ही ठीक हो जाती हैं हृदय शरीर मे किस प्रकार से रक्त को पम्प करता है रक्षा प्रणाली किस प्रकार शरीर को विभिन्न रोगो से बचाये रहती है आदि आदि ।

ऐसी ऐसी उत्तम मशीने इस छोटे से शरीर मे हैं। जड मे जडत्व गुण होने से मशीने बन जाने या मशीने बना देने का सामर्थ्य नहीं है। स्पष्ट है कि इनका कोई रचियता है और वह जड नहीं हो सकता ।

अब माता या पिता तो शरीर रचना करते नहीं जो करते तो अपनी सतानो को मूर्ख दुर्बल रोगा वा कुरूप रच फिर देख देख दुखी हो उनके इलाज हेतु वे वृथा इधर उधर भाग दौड क्यो करते ? अतएव इन समस्त शरीरो के रचियता का कोई अन्त नहीं है अर्थात् ईश्वर की पुष्टि होती है ।

साराश रूप मे जड पदार्थों मे जडत्व गुण होने स वे स्वय मशीने नहीं बना सकते। यदि वहाँ मशीन रचना देखी जाती है तो इसका अर्थ है कि रचियता अवश्य है । अत शरीर रचना को देखकर ईश्वर की पुष्टि होती है और यह पुष्टि डारविन के विकासवाद पर एक भयकर उल्कापात है ।

अब मानव शरीर स्वय चलता है मशीने बनाता व चलाता है जबकि जड निर्मित अच्छे से अच्छे कम्प्यूटर आदि मशीनो मे भी जडत्व के कारण स्वय चलने मशीने बनाने व चलाने आदि के गुण नही होत। इसस यही स्पष्ट होता है कि मानव शरीर मे कोई जड स भिन्न पदार्थ विद्यमान होना चाहिये । अत शरीरस्थ चेतन का अस्तित्व सिद्ध होता है ।

यहा इस शका पर भी विचार कर लेते हैं कि यह शरीरस्थ चेतन ईश्वर नहीं है।

शरीरस्थ चेतन ईश्वर का अश भी नहीं है क्योकि पदार्थ के विभिन्न अशो मे पदार्थ के ही गुण होते हैं। यदि शरीरस्थ चेतन ईश्वर का अश होता तो यह दुख न भोगता ।

यह ईश्वर से उत्पन्न भी नहा है क्योकि तब ईश्वर का छोटे छोटे भागो के रूप मे क्षय होन से वह सर्वव्यापक न रह जायेगा

शरीरस्थ चेतन भिन्न भिन्न है क्योकि एक के विचार इच्छा अनुभूति दूसरा नहीं जान सकता।

अत उपर्युक्त चिन्तन से विभिन्न आत्माओ का अस्तित्व सिद्ध होता है और यह डारविनवाद पर पुन भयकर कुठाराघात है ।

अब डारविन के विकासवाद के इस भाग पर विचार कर लेते हैं जो यह बताता है कि विभिन स्पीशीजो (घोडा कुत्ता बन्दर मनुष्य आदि प्रजातियो) की उत्पति एक ही आदि जीव मे हुए क्रमिक परिवर्तनो से हुई है। इन परिवर्तना का कारण स्पाशजो मे पर्यावरण के अनुसार अपने को ढाल लन की क्षमता है इस क्षमता का अनुकूलन क्षमता कहते है उदाहरण के लिए इस क्षमता क कारण ही मरूस्थलीय पौधो मे जड तत्र अति विकसित हो जाता है ताकि जडे दूर दूर फैल थोडा थोडा पानी बटोर पौधे को जीवित रख सके। इसी क्षमता के कारण ही मरूस्थलीय पौधो जैसे नागफनी मे पत्तिया शूल मे स्थानातरित हा बहुत कम क्षेत्रफल वाली हो जाता है जिससे पत्तियो के छिद्रो स होने वाला वाष्पोत्सर्जन बहुत कम हो जाता है और पौधे मे जल का विशेष हानि न होने से पौधा इस शुष्क व गर्म जलवायु म भा जिन्दा रह सकता है इस अनुकूलन के कारण कुछ सरीसृपो (रेगने वाल जन्तु उदाहरण मगरमच्छ छिपकली आदि) मे अग्रपाद (आगे के पैर) पखो मे बदल गये और पक्षी बने।

अब विचार करो कि जब जड पदार्थो स बनी मशीन मे जडत्व गुण के कारण दूसरी मशीन मे स्वय बदल जाने की क्षमता नहीं होती भले ही उन्हे कैसे भी पर्यावरण मे कितनी भी अवधि के लिए क्यो न रखा जाये क्योकि पर्यावरण भी ता जड निर्मित होता

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव संपन्न

13 जनवरी को प्रभात आश्रम मे वैदिक वाङ्मय मे मृत्यु का स्वरूप विषय पर होने वाली शोध सगोष्ठी ने इस वर्ष वेद सम्मेलन का स्वरूप ले लिया । भयकर शीत होने पर भी वैदिक विद्वानो एव श्रोताओ की अप्रत्याशित उपस्थिति ने शोध सगोष्ठी को वेद सम्मेलन के रूप मे परिणत किया शोध सगोष्ठी की अध्यक्षता प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० कृष्ण लाल जी (दिल्ली) कर रहे थे एव सयोजन कर रहे थे डा० निरुपण जी विद्यालकार इसके अतिरिक्त अन्य पधारने वाले विद्वानो मे प्रमुख थे डा० अवनीन्द्र कुमार जी श्रीमति शशि तिवारी दिल्ली वि० वि० डा० मनोरमा तिवारी लखनऊ डा० सुभाष वेदालकार जयपुर राजस्थान वि०वि० डा० जयदत्त उप्रैति कुमायू वि० वि० अल्मोडा प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री डा० महावीर अग्रवाल डा० सोमदेव शताशु गु० कागडी वि० वि० डा० कृष्ण कुमार गढवाल वि० वि० ड० श्रीमति उर्मिल आनन्द दयालबाग वि० वि० आगरा आदि प्रसिद्ध वैदिक विद्वान उपस्थित थे

14 जनवरी को सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ ही अनेक प्रतिष्ठित विद्वानो के भाषण एव प्रवचन सुनने को मिले छत्रपति शिवाजी के जीवन से सबधित सस्कृत नाटिका विद्यार्थियो के शारिरिक व्यायाम प्रदर्शन तथा धनुर्विद्या प्रदर्शन का कार्य मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहा इसी अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे गुरुकुल कागडी वि० वि० के कुलपति डा० धर्मपाल जी पधारे हुए थे यहा की उपस्थिति एव जनता की श्रद्धा को देखकर उन्होने कहा कि यहा का उत्साह पूर्ण वातावरण गुरुकल कागडी के प्राचीन उत्सवो का स्मरण दिला रहा है शिक्षा जगत मे प्रभात आश्रम की उपलब्धियो का भूरि भूरि प्रसशा की अन्त मे स्वामी जी महाराज ने आर्शीवचन के रूप मे सक्रान्ति पर्व का महत्व प्रतिपादित करते हुए वैदिक सिद्धान्तो का अनुसरण करने के लिय लोगो को प्रेरित किया इस प्रकार आश्रम का 26वा वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक सपन्न हुआ

अमृतसर में वैदिक भाषण प्रतियोगिता

आर्य युवक सभा शक्ति नगर के तत्वावधान मे आर्य समाज मन्दिर शक्ति नगर मे (सात भिन्न भिन्न स्कूलो मे प्रतियोगिता कराने के उपरान्त) वैदिक भाषण प्रतियोगिता (फाइनल) कराई गई जिस की अध्यक्षता श्री दर्शन लाल जी (प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा) ने की जिस मे 21 छात्र छात्राओ ने भाग लिया समारोह मे अध्यापक गण एवम् गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे

निम्नलिखित विषय थे

जीवन का महानता मे चरित्र का योगदान 2 आर्य सस्कृति के प्रतीक श्री राम 3 भ्रष्टाचार एक राष्ट्रीय समस्या

प्रथम स्थान कुमारी सपना सरस्वती डी० ए० वी० द्वितीय स्थान कुमारी रितु आर्य समाज लोहगढ तृतीय स्थान कुमारी कान्ति सरस्वती डा० ए० वी० को प्राप्त हुआ मुख्य अतिथि बहन लक्ष्मी कान्ता जी चावला विधायिका ने स्मृति चिन्ह तथा पुरस्कार वितरित किए

सभा के पदाधिकारियो श्री सत्यनारायण जी शुक्ल (प्रधान श्री हीरा लाल जी कन्धारी वरि उप० प्रधान श्री मुरारी लाल जी धवन (महामत्री श्री विजय नागरा जी उपप्रधान श्री दिनेश कुमार जी कोषाध्यक्ष ललित सचदेव (प्रचार मत्री तथा सदस्यो ने सक्रिय भूमिका निभाई अन्त मे प्रीतिभोज का आयोजन किया गया

बठिण्डा मे धर्मवीर हकीकत राय का बलिदान दिवस

आर्य समाज बठिण्डा के प्रागण मे बाल हकीकत राय का बलिदान दिवस बडी धूमधाम के साथ श्री बिहारी लाल जी मगला की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ सर्व प्रथम हवन यज्ञ आर्य समाज के सुयोग्य आचार्य प्रवर श्री प० सुनील कुमार जी पुरोहित के सान्निध्य मे हुआ माताओ द्वारा यज्ञ के बाद गीत गाये गये अन्त मे श्री बिहारी लाल जी ने सचालन करते हुए सबका धन्यवाद किया और अपने बेटे नरेश मगला के पुत्र की खुशी मे जलपान की व्यवस्था का **बाबू राम**

फिरोजपुर में बसन्त पंचमी पर्व

आर्य समाज राना का तालाब फिरोजपुर शहर मे बसन्त पचमी का पर्व विशेष समारोह से 22 99 का मनाया गया इसमे महात्मा आम मुनि दम्पत्ति यज्ञमान बने मन्त्री जी ने हिन्दू धर्म का रक्षा हेतु बलिदान देने वाले धर्मवीर हकीकत राय तथा अन्य बलिदानी देश भक्तो के जीवन पर और बसन्त की महत्ता पर प्रकाश डाला

सन्तोष कुमार मन्त्री

हांसी में वेदकथा एव गायत्री महायज्ञ

आर्य समाज मन्दिर हासी मे दिनाक 9 2 99 से 4 2 99 तक रात्रि 8 से 10 बजे वेदकथा एव गायत्री महायज्ञ प्रात 7 से 9 बजे तक होने जा रहा है जिसमे कथा वाचक पूज्य स्वामी माधवानन्द जी सरस्वती हिसार यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामसुफल शास्त्री वैदिक प्रवक्ता आर्य समाज हासी एव भजनो पदेशक महाशय जबर सिंह खारी वेद प्रचार मण्डल हासी होगे

इनके अतिरिक्त आर्य स्कूल व डी० ए० वी स्कूल के बच्चो का भी रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जायेगा 14 2 99 को दोपहर 12 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ कार्यक्रम सम्पन्न होगा

सतीष कुमार आर्य

आर्य समाज जालन्धर छावनी का चुनाव

आर्य समाज जालन्धर छावनी का वार्षिक चुनाव 24 1 99 को सत्सग के बाद हुआ जिसमे सर्वसम्मति निम्न अधिकारी चुने गए 1 प्रधान श्री जनक राज जी महाजन 2 वरिष्ट उपप्रधान श्री चमन प्रकाश जी नन्दा 3 उपप्रधान श्री चन्द्र प्रकाश जी गुप्ता 4 उपप्रधान श्री काशीराम जी अग्रवाल 5 मत्री श्री स्वदेश कुमार जी लाला 6 कोषाध्यक्ष श्री जवाहर लाल महाजन 7 उपमत्री श्री राम सिह 8 पुस्तकाध्यक्ष श्री अशोक कुमार जावेद 9 सेवादल अध्यक्ष श्री रमेश जी 10 आडिटर श्री बलदेव राज जी शर्मा

—स्वदेश कुमार लाला (मत्री)

आर्यसमाज माडल हाऊस जालन्धर का चुनाव

आर्य समाज माडल हाऊस जालन्धर का वार्षिक चुनाव दिनाक 3 99 को सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ श्री जयदेवराज प्रधान श्रीमती राजदुलारी वरिष्ट उपप्रधान श्रीमति कमलारानी उपप्रधान श्री कमलजित मनेजा महामत्री श्री ओम प्रकाश मत्री श्री विधात्र सिंह राणा मत्री श्री राजकुमार सन्दल कोषाध्यक्ष श्री धर्मेश कुमार सह कोषाध्यक्ष श्री सूरज प्रकाश प्रचार मत्री श्री राजकुमार स्टोर कीपर क० ब्रह्मस्वरूप पुरोहित अन्तरग सदस्य

श्रीमति सोनिया प्रीति बहन प्रेम प्रभा सुदेश रानी रजनी बाला कान्ता राना । श्री धीरज कुमार श्री हरिन्द्र शर्मा श्री धर्मवीर श्री विद्यासागर श्री प्रेम नाथ श्री बिहारी लाल श्री गिरधारी लाल श्री बसरा श्री अश्विनी कमार शर्मा श्री राकेश कुमार

जयदेव राज प्रधान

पृष्ठ का शेष)

को नेता मान कर आर्य समाज का उन्नति मे जुट जाये क्योकि नाऽन्य पन्था विद्यतेऽनाय इसके अतिरिक्त दूसरा रास्ता नही है आर्य समाज आखिर एक सगठन ही तो है कोई धर्म नहीं है अब तो हालत यह हो गई है कि किसी आर्य सदस्य के पुत्र/पुत्री को अगर आर्य समाज के सत्सगो मे आने को कहा जाये तो या तो वह झूठ मूठ हा भर लेता है अथवा स्पष्ट रूप मे कोई तो यहा तक कह देता है कि उनके माता पिता आय समाज मे जाते हा है जिसका अभिप्राय यह होता है कि वह (पिता जी) आर्य समाज के सदस्य है इस तरह टाल मटोल करके बात समाप्त हो जाती है इसलिए आर्य विद्वानो सन्यासियो और आर्य प्रतिनिधि सभाओ के अधिकारियो से मेरा नम्र निवेदन है कि वे परस्पर विचार विनिमय करके महर्षि दयानन्द के आदेश का पालन करे तथा आर्य जनता को अपना धर्म वैदिक धर्म सभा सरकारी कागज पत्रो तथा जनगणना के समय लिखने का निर्देश दे और इसका खूब प्रचार किया जाय

अभी तक वैदिक धर्मियो का वास्तविक सख्या कहा सरकारी रिकार्ड मे है हा नहा होनी चाहिए

गढवाल मे बसन्तोत्सव

आर्य समाज सावली आदि पचपुरी गढवाल के आर्य सभा सदो द्वारा बृहद् यज्ञ से बसन्तोत्सव के पावन पर्व का सुभारम्भ हुआ भजनोपदेशक श्री बच्चाराम जी आर्य द्वारा मधुर भजन प्रस्तुत किये गये समाज के अध्यक्ष श्री हमराज जी प्रियव्रत की अध्यक्षता मे बसन्तोत्सव का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ मच सचालन समाज के मत्री गगा प्रसाद सौम्य द्वारा किया गया आर्य समासदो ने वसन्तऋतु के महत्व पर प्रकाश डाला

अन्त मे सभा का समाप्त करते हुए श्री प्रियव्रत जी ने सभा को बसन्त ऋतु के आगमन के शुभकामनाए दी

(पृष्ठ 2 का शेष)

जानना आवश्यक है । ईश्वर जीव और प्रकृति पृथक पृथक है । जीव चेतन अल्पज्ञ कर्ता भोक्ता बध मोक्ष मे आने वाला है । परमेश्वर सच्चिदानदस्वरूप सर्वज्ञ सृष्टि कर्त्ता निराकार कर्मफलदाता और नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव है । इन तीनो के स्वरूप को जानना विद्या और न जानना अविद्या है । भौतिक विद्या से सासारिक दु ख दूर हाते हैं जबकि आध्यात्मिक विद्या से मोक्ष की प्राप्ति होती है

दृष्टान्त– स्वामी दयानन्द ने वदो और शास्त्रो के प्रमाणो से यह सिद्ध किया है । ईश्वर जीव प्रकृति तीनो अज अर्थात् जिनका कभी जन्म नही होता और न कभी ये जन्म लेते हें अर्थात् ये तीन सब जगत के कारण हैं । तीनो अनादि हैं । ओ३म् ईश्वर का मुख्य निज नाम है । शिव शकर विष्णु महादेव ब्रह्मा रुद्र इन्द्र गणेश शक्ति लक्ष्मी सरस्वती देव देवी यम आदि सब गुणो के आधार पर ईश्वर के नाम है इन नामो के कोई भिन्न भिन्न देवता नही है ईश्वर मे अनेक गुण हैं धन्य है महर्षि दयानन्द की विद्या ।

9 **सत्य**–सत्य समझना सत्य मानना और सत्य वैसा करना जैसा आत्मा मे वैसा मन मे जैसा मन मे वैसा वाणी मे जैसा वाणी मे वैसा कर्म मे वर्तना अर्थात् जो पदार्थ जैसा हो उसको वैसा ही समझना वैसा ही बोलना और वैसा ही करना भी

दृष्टान्त–राजा हरिश्चद्र का राज्य धन तथा वैभव गया पत्नी को बचना पडा स्वय बिकना पडा स्वय चाडाल बनकर शमशान का चौकीदार बनना पडा यहा तक कि इकलौता पुत्र पत्नी उस पुत्र की लाश लिय रोती हुई सम्मुख । पर हरिश्चद्र ने शमशान का कर लिये बिना पुत्र का अन्तिम सस्कार करने की अनुमति नहीं दी । धन्य है राजा हरिश्चन्द्र की सत्यता

10 **अक्रोध**–क्रोधादि दोषो को छोडना । क्रोधादि दोषो को छोडकर शान्ति आदि गुणो को ग्रहण करना । क्रोध को अक्रोध से और दुष्टता को साधुता से जीतो । वैर का बदला प्रेम से देना उचित है । मनुष्य को शत्रु न समझे मन से किसी के प्रति शत्रुता का भाव न रखना ।

दृष्टान्त–वेर घृणा भाव से महर्षि वसिष्ठ के परमशत्रु विश्वामित्र ना वसिष्ठ को मारने के लिये जाना [illegible] तु महर्षि वसिष्ठ का विश्वामित्र क [illegible]मा करना अर्थात् क्रोध को [illegible] से जीतना । धन्य है महर्षि वसिष्ठ का अक्रोध ।

क्या यहीं धर्म के दस लक्षण हैं । आगे चलकर इस विषय मे अधिक विवाद हुआ । मनुष्य को धर्मात्मा बनने के लिये क्या इसके अतिरिक्त किसी अन्य गुण की आवश्यकता नहीं है ? क्या ब्रह्मज्ञान ईश्वर उपासना आत्म साक्षात्कार आत्मदर्शन आदि धार्मिक कृति के लिये आवश्यक गुण नहीं है । तब धर्म की परिभाषा इस प्रकार की गई । यतो अभ्युदय नि श्रेयस सिद्धि स धर्म । अर्थात् जिससे अभ्युदय यानी उन्नति और कल्याण सिद्धि अर्थात् प्राप्ति हो वह धर्म है । कहने का भावार्थ यह है कि यदि उपरोक्त दस धर्म लक्षणो के अतिरिक्त कोई गुण शेष रह जाते हैं तो उनकी पहचान यह कि जिस गुण से उन्नति और कल्याण प्राप्त हो वह धर्म ही है ।

अत यम नियमो के सेवन का विधान किया जाता है । अहिसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पाच यम हैं शौच सन्तोष तप स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान ये पाच नियम हैं । यमो का सेवन नित्य करे केवल नियमो का नहीं । क्योकि यमो का सेवन न करता हुआ केवल नियमो का सेवन करता हुआ मनुष्य कर्त्तव्यो से पतित हो जाता है इसलिये मनुष्य को यम सहित नियमो का सेवन करना चाहिये ।

अहिंसा–किसी की हिसा न करना । अहिसा का अर्थ है प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखना । किसी को किसी प्रकार का दु ख न देना । सब पर दया करना ।

सबकी रक्षा करना परन्तु अहिसा धर्म केवल निर्बलो के लिये है चोर डाकू अत्याचारी हत्यारो के लिये नही । इन अपराधियो को उचित दण्ड न देने से अत्याचार अन्याय और हिसा की वृद्धि होती है । हिसक की हिसा न करना अहिसा नहीं अपितु हिसा है । अत दुष्टो और हिसको को मृत्युदण्ड देना धर्म है । श्री कृष्ण ने कस और शिशुपाल को मारा श्री राम ने बालि को मारा । क्या श्रीकृष्ण श्रीराम हिंसावादी थे ? कदापि नहीं । हिसा स्वार्थ के लिये होती है और उन महापुरुषो मे स्वार्थ लेशमात्र भी नहीं था । उन्होने केवल अधर्म अन्याय और अत्याचार को मिटाने के लिये दुष्टों का सहार किया । इसी प्रकार यज्ञ मे पशुओ को काटकर होम करना पाप है । स्वय मास भक्षण करना पाप है । वाचिक अहिंसा का पालन करो । मन में दृढ निश्चय कर लो–मैं आज से किसी के प्रति कठोर शब्द नहीं बोलूगा । दूसरो को हानि पहुचाने का विचार मन से निकल जाना चाहिये । किसी की हानि मत सोचो । अत मन कर्म और वचनो से किसी के प्राणी की हानि न करना अहिसा है ।

सत्य–विश्वास से पहले किसी सिद्धान्त की समुचित परीक्षा करनी चाहिये ।

क) जो ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव एव वेद के अनुकूल हो वह सत्य और उससे विरुद्ध असत्य है ।

ख) जो सृष्टिक्रम के अनुकूल हो वह सत्य और उससे विरुद्ध असत्य है ।

ग) आप्त अर्थात् सत्यवादी धार्मिक विद्वान का वचन सत्य और इससे विरुद्ध असत्य है ।

घ) अपने आत्मा की पवित्रता के अनुकूल सत्य और उससे विरुद्ध असत्य है ।

ङ) प्रत्यक्ष (इन्द्रियो का सीधा अनुभव) अनुमान (प्रत्यक्ष के आधार पर चिन्तन) उपमान (समानता से वस्तुओ को समझना) शब्द (आप्तो का वचन) ऐतिह्य (सच्चा इतिहास) अर्थापत्ति (कारण के बिना कार्य नहीं होता) सम्भव (ससार में क्या सम्भव और क्या असम्भव है) एव अभाव (अस्तित्व मे होना व न होना) जो इन कसौटियो पर खरा उतरे वह सत्य और उससे विरुद्ध असत्य है । अत सत्य और असत्य का निश्चय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहिये ।

अस्तेय–चोरी त्याग । छल कपट बिना आज्ञा पराये धन द्रव्य पदार्थों की प्राप्ति जैसे निषिद्ध कर्म को मन वाणी और शरीर से किसी भी प्रकार न करना ।

ब्रह्मचर्य–उपस्थेन्द्रिय का सयम । आठ मैथुनो का अभाव ।

अपरिग्रह–ममत्व बुद्धि से सग्रह का अभाव अत्यन्त लोलुपता स्वत्वाभिमान रहित होना ।

शौच–बाहर और भीतर की पवित्रता । सत्यपूर्वक शुद्ध व्यवहार से द्रव्य की और उसके अन्न से आहार की एव यथायोग्य बर्ताव से आचारणो की और जल मृत्तिकादि से शरीर की शुद्धि को तो बाहर की शुद्धि कहते हैं और राग द्वेष तथा कपटादि विकारो का नाश होकर अन्त करण का स्वच्छ और शुद्ध हो जाना भीतर की शुद्धि है ।

सतोष–तृष्णा का सर्वथा अभाव । सम्यक् प्रसन्न होकर निरुद्यम रहना सतोष नहीं । किन्तु पुरुषार्थ जितना हो सके उतना करना हानि लाभ में हर्ष वा शोक न करना ।

तप–कष्ट सेवन से भी धर्मयुक्त कर्मों का अनुष्ठान अर्थात् स्वधर्म पालन के लिये कष्ट सहना ।

स्वाध्याय–वेद और सत् शास्त्रो का अध्ययन एव ईश्वर के नाम और गुणो का कीर्तन ।

ईश्वर प्रणिधान–ईश्वर की भक्ति विशेष मे आत्मा को अर्पित करना ।

अत मनुष्य को धर्म का आचरण जीवन मे सदैव करना चाहिये क्योंकि यही मनुष्य का साथ देता है । जो पुरुष धर्म को प्रधान समझता है और धर्म के अनुष्ठान से जिसका मन पाप से दूर हो गया है । ऐसा व्यक्ति परमात्मा को शीघ्र प्राप्त करता है ।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है कि ज[illegible] पक्षपातरहित न्यायाचरण सत्या भाषणादियुक्त ईश्व राज्ञा वेदो स अविरुद्ध है उसको धर्म और जा पक्षपात सहित अन्यायाचरण मिथ्याभाषणादि ईश्वराज्ञा भग वेद विरुद्ध है उसको अधर्म मानता हू

आगे स्वामी दयानन्द न स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश मे लिखा है कि मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यो के सुख दु ख और लाभ हानि को समझे अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे । इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य स धर्मात्माओ कि चाहे वे महाअनाथ निर्बल और गुण रहित क्यो न हो उसकी रक्षा उन्नति प्रियाचरण और अधर्मी चाहे वह सनाथ महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहा तक हो सके वहा तक अन्यायकारियो के बल की हानि और न्यायकारियो के बल की उन्नति सर्वथा कर । इस काम मे चाहे उसको कितना दारुण दुख प्राप्त हो चाहे प्राण भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक कभी न होवे ।

आर्य समाज, घाटकोपर का उत्सव

आर्य समाज घाटकोपर मुम्बई का वार्षिकोत्सव व प्रथम संस्कार शिविर समारोह गतिदिनों अत्यन्त उत्साह पूर्वक मनाया गया। आचार्य चन्द्रदेव जी "कुलपति" आर्य गुरुकुल कृष्ण पुर फरुखाबाद का राष्ट्र के नाम सन्देश व वेदानुकूल वैदिक राष्ट्र की स्थापना तथा युवकों हेतु समय के महत्व का आंकलन व प्रति बद्धता का निर्देशन हुआ। प सुरेश शास्त्री मुम्बई द्वारा प्रभुभक्ति के रस से परिपूरित भजन तथा युवा पीढ़ी को राष्ट्र रक्षा हेतु समाज में व्याप्त अज्ञान, अन्याय, अभाव को समूल नष्ट करने पर बल दिया गया।

कैप्टन देवरत्न आर्य उप प्रधान सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, श्री शूर जी प्रताप भाई, श्री मुजफ्फर हुसैन, श्री हरिभाई कोठारी तत्व चिन्तक आदि का उद्बोधन प्रेरणाप्रद रहा।

(पृष्ठ 4 का शेष)

से जड़त्व गुणयुक्त होता है । अतः ऐसी सृजनात्मक शक्ति वह नहीं रखता । तो फिर एक कोशिकीय जीवो के शरीर रूपी मशीन में जड़ पर्यावरण के कारण इस प्रकार के परिवर्तन कैसे सभव हैं कि नई-नई जटिल एवं श्रेष्ठतर स्पीशीजों का विकास होता रहे। अन्त मे आदमी रूपी श्रेष्ठतम मशीन बन जाये ? अतः डारविन का एक स्पीशीज से दूसरी स्पीशीज में बदलते जाने का कथन ऐसा ही है जैसे कोई कहे कि मेरा कलम विशेष परिस्थितिया पाकर कमशः साइकिल, स्कूटर, कार, रलगाडी में बदलता गया फिर वायुयान बनकर आकाश मे उड़ने लगा। एक स्पीशीज का दूसरी स्पीशीज में परिवर्तन का अर्थ है- एक मशीन का स्वतः धीरे-धीरे दूसरी मशीन में परिवर्तन और वह परिवर्तन जड़त्व के सिद्धान्त से स्पष्टतया विरोध रखता है । भौतिकी का यह सिद्धान्त गलत नहीं, किन्तु एक स्पीशीज से दूसरी स्पीशीज का विकास-जो किसी ने देखा नहीं, केवल कल्पना की है-ही गलत हो सकता है। स्पष्ट है कि एक कोशिकीय प्राणियो का विभिन्न स्पीशीजों में क्रमशः स्वतः विकसित होते हुए अन्त मे मनुष्य बनना सभव नहीं है, अतएव डारविन के इस कथन पर भी व्रजपात हो जाता है।

साराश रूप मे डारविन का विकासवाद एक मूर्खतापूर्ण प्रलाप ही है कि जिसने शरीर रचना रासायनिक क्रियाओं से ही मानकर आत्मा व ईश्वर के अस्तित्व को पूरी तरह नकार दिया और मनुष्य जाति और उसके ज्ञान-विज्ञान को गलत दिशा दे, निबिड़ अंधकार में धकेल दिया।

लगे हाथ जैन मत का भी खण्डन इस जड़त्व के सिद्धान्त से कर लेते हैं । इन्होने आत्मा के द्वारा किये कर्मों से बने कर्मबन्धों से स्वतः ही शरीर रचना मानी है, रचियता ईश्वर का अस्तित्व नहीं माना । जैन मत के अनुसार ये कर्मबन्ध सूक्ष्म द्रव्य (अर्थात् पुद्गल) से बनते हैं तथा द्रव्य को आकर्षित कर शरीर रचना कर लेते हैं। सुधि पाठकवृन्द ! यहा जरा विचार करें कि ये कर्मबन्ध जड़ पदार्थ से बने होते हैं। अतः इनमे जड़त्व गुण होगा कि नहीं ? तब ये स्वतः शरीर रूपी उत्तम मशीन कैसे रच सकते हैं ? क्योकि जड़ मे स्वय मशीन रचना का सामर्थ्य नहीं होता। फिर आत्माओ के लिए प्रत्येक बार सौरमण्डलादि भी कैसे रचे जा सकते हैं ? क्योकि जड पदार्थों मे जड़त्व होता है । अतएव ईश्वर एव आत्मा का अस्तित्व सिद्ध हो जाने से जैनादि नास्तिक मतो का खण्डन भी हो जाता है ?

अहो ! बार-बार विचार करने पर ईश्वर और आत्मा का अस्तित्व सिद्ध होता है । जब सर्वशक्तिमान ईश्वर सृष्टि का स्वामी है और यहा उसी के नियम चलते हैं, किसी अन्य के नहीं, तो उसके नियमो को जान, उनके पालन मे प्रवृत्त हो हम क्यों नहीं आत्मोद्धार करते हैं ? मनमानी करके उसके कोप के भाजन क्यो बन रहे हैं ? जगत्पिता परमेश्वर, सब आत्माओ को बल प्रदान करें कि इससे इस आर्यावर्त में तथा बाहर के सभी देशो में वेदों की पुनः प्रतिष्ठा हो और सब स्वस्थ, बली और विद्वान हों, दीर्घायु व्यतीत करते हुए एक सूत्र में बंधे रहें ।

अमृतसर में मकर संक्रान्ति पर्व

आर्य महिला परिषद्, अमृतसर की ओर से महर्षि दयानन्द धाम, बाजार हसली कटडा मित सिह, अमृतसर में मकर सक्रान्ति के उपलक्ष्य में दो दिवसीय महायज्ञ ऋग्वेद और सामवेद के मत्रो पर अधारित महायज्ञ का आयोजन किया गया ।

यज्ञ के ब्रह्मा पद को पडित सिकन्दर शास्त्री जी और श्रीमति शकुन्तला जी ने सुशोभित किया। यज्ञ के समय महर्षि दयानन्द धाम का हाल खचाखच भरा हुआ था । वेद मंत्रो से सारा वातावरण यज्ञमय हो गया । यज्ञ के उपरान्त श्री सिकन्दर शास्त्री जी, श्रीमति शकुन्तला जी, बहिन आज्ञा वती जी, बहिन अनिता जी के मधुर भजनों ने सारे वातावरण को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस समारोह मे वेदमत्रो के भावो को प्रकट करते हुए श्रीमति जगदीश आर्या, अध्यक्षा पंजाब प्रान्तीय आर्य महिला परिषद् ने कहा कि आज विश्व मे नारी जाति, जिन महत्वपूर्ण पदों पर आसीन है इस का सारा श्रेय आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द जी को जाता है । आज विश्व मे नारी जाति प्रत्येक क्षेत्र मे प्रतिस्पर्धा है अगर वास्तव मे नारी जागृत हो जाए तो सभी समस्याओ का समाधान हो सकता है । यह जागृति केवल वेद के अनुसार जीवन ढालने से सम्भव हो सकती है। श्रीमति जगदीश आर्या ने सभी नारी जाति को वेद पढने और उस का अनुसरण करने की प्रेरणा दी ।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये श्रीमति सुनीता पसाहन श्रीमति कुन्ती देवी, श्रीमति उषा बजाज, श्रीमति लता पसाहन श्रीमति बेबी ने विशेष सहयोग दिया ।

दयानन्द माडल स्कूल रायकोट में गणतन्त्र दिवस मनाया गया

आर्य समाज रायकोट के भवन मे दयानन्द माडल स्कूल चल रहा है । इस द्वारा 26 जनवरी 99 को गणतन्त्र दिवस मनाया गया । झण्डा लहराने की रसम श्री राजकुमार जिन्दल सी ए ने अदा की जिला आर्य सभा लुधियाना से श्रीमति राजेश शर्मा प्रधान, श्री विजय कुमार सरीन महामत्री, श्री रणवीर भाटिया कोषाध्यक्ष, श्री नरिन्द्र भल्ला जी श्री मतवाल चन्द जी प्रधान दाल बाजार लुधियाना, श्री रमेश सूद जी दाल बाजार लुधियाना, स्वामी सुमना यति जी, श्रीमति जनक रानी, श्री ओम प्रकाश पासी जी और लगभग 20-25 आर्य सदस्य इस प्रोग्राम पर पहुचे ।

बच्चो ने "पजाब की धरती" एकांकी प्रस्तुत किया। इस मे सरिता कनौजिया ने धरती मा का अभिनय किया। जिसकी सभी सज्जनो ने बहुत प्रशंसा की और भी बहुत से नन्हे-मुन्ने बच्चों ने रगा रंग प्रोग्राम प्रस्तुत किया ।

श्रीमति राजेश शर्मा जी प्रधान जिला आर्य सभा लुधियाना ने बच्चो को आजादी के साथ-साथ आर्य समाज के नियमो पर चलने की प्रेरणा दी ।

श्री अशोक कुमार कन्नोजिया महामत्री आर्य समाज ने मच सचालन किया ।

श्री विजय कुमार सरीन, श्री रणवीर भाटिया, श्री मतवाल चन्द जी लुधियाना ने भी भाषण दिया। श्री रमेश सूद ने स्वामी दयानन्द जी और स्वामी श्रद्धानन्द जी के जन्म दिन और शहीदी दिवस कौमी त्यौहार मनाने की सरकार से अपील की। श्री जय प्रकाश जी ने भारत के सविधान की जानकारी दी।

लाला श्री भीमसैन प्रधान आर्य समाज रायकोट ने आए सभी श्री राजकुमार जिन्दल सी ए जिला आर्य सभा लुधियाना से श्रीमति राजेश शर्मा प्रधान श्री विजय कुमार सरीन महामत्री श्री रणवीर भाटिया, श्री नरिन्द्र भल्ला श्री रमेश सूद, श्री मतवाल चन्द जी श्रीमति जनक रानी और स्वामी सुमना यति और सभी सदस्यो को फूल माला पहना कर अभिवादन किया।

प्रधान, आर्य समाज रायकोट

भटिण्डा में पारिवारिक सत्संग

श्री संदीप कुमार सुपुत्र श्री अशोक कुमार अग्रवाल (मैनेजर) आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल भटिण्डा के 27वे जन्म दिवस पर पारिवारिक सत्सग का आयोजन किया गया । पं० सुनील कुमार शास्त्री पुरोहित द्वारा यज्ञ करवाया व उपदेश दिया गया। आए हुए सभी पारिवारिकजनो ने व अन्य लोगो ने फूलों की वर्षा करके आशीर्वाद दिया । श्री अशोक कुमार जी ने 100 रुपये आर्य समाज को दान दिया । -बाबूराम

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर [illegible]
के स्वर्ण जयन्ती तथा ऋषि बोधोत्स[illegible]

विश्व कल्याण गायत्री महा यज्ञ व राष्ट्रीय एकता महा सम्मेलन

8 फरवरी से 14 फरवरी 1999 त[illegible]

सम्मेलन के अध्यक्ष—स्वामी इन्द्रवेश जी व मुख्या तिथि श्री स्वामी अग्निवेश जी होगे। ध्वजारोहण आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा करेगे। इस अवसर पर—स्वामी सुमेधानन्द जी (चम्बा), स्वामी सत्यानन्द, प० सत्यपाल पथिक, प० हरबस लाल हस, श्री डा० के० के० पसरीचा, वशिष्ट उपप्रधान, श्री आशानन्द आर्य उपप्रधान व श्री अश्विनी कुमार शर्मा महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, श्री चन्द्रमोहन (वीर प्रताप), श्रीमति सुदर्शन चोपडा, श्रीमति स्वदेश चोपडा (पजाब केसरी), प्रिं० अश्विनी कुमार शर्मा दोआबा कालेज), डा० राम अवतार, प० धर्मदेव आर्य, श्री सुधीर शर्मा, श्री भगत चुन्नी लाल (एम० एल० ए०), श्री मोहिन्द्र सिह के पी, श्री इकबाल सिह तथा अन्य नेता गण पधार रहे है।

सभी आर्य बन्धुओ व बहनो से निवदेन है कि समय पर पधार कर उत्सव की शोभा बढाए व धर्म लाभ उठावे।

सरदारी लाल आर्य रत्न	**मनोहर लाल**	**राज कुमार**
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मत्री

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामन्त्री सम्पादक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस/ऐलिमेट प्रिंटर्स जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

सवत् 1972949098 रजि० न० NP 17504 58

वर्ष 48 अक 49 3 फाल्गुन सम्वत् 2055 तदनुसार 4 मार्च 999 दयानन्दाब्द 4 वार्षिक शुल्क 0 रुपए आजीवन रुपय

गृहस्थाश्रम-वैदिक स्वर्ग का मूलाधार

ले श्री अखिलेश कुमार सुभाष बाजार मवाना (मेरठ)

परमात्मा ने मनुष्य को जीवन जान क लिए वद की शिक्षा का प्रकाश उनका आत्माओ म अकित किया है वद सभी मनुष्यो क लिए समान रूप से प्रभावकारी है वैदिक सिद्धान्तो के अनुसार ईश्वर प्रकृति तथा आत्मा ये तीनो अनादि सनातन हैं इनम स ईश्वर तथा आत्मा अमर तथा अपरिवर्तनशील है कवल प्रकृति ही परिवर्तन शील है सृष्टि के प्रारम्भ मे अहकार तत्व की उत्पत्ति होने क उपरान्त आत्मा प्रकृति के बने हुए शरीरो से सयुक्त होत हैं जिसस प्रकृति के बन हुए शरार कार्य करना प्रारम्भ कर देत हैं यहीं स मनुष्य का यात्रा प्रारम्भ हो जाता है जो अहकार समाप्त होने के उपरान्त मो प्राप्ति पर समाप्त होती है मनुष्य को अपन लक्ष्य प्राप्ति क लिए जीवन जीना होता है तथा जिसके लिए उसको कामनाय बनानी पड़ती है इन कामनाओ को नियम मे बाधन क लिए हमे ज्ञान का सहारा लना पडता है तथा ज्ञान हो वद का दूसरा नाम है वेद क अनुसार गृहस्थाश्रम वास्तव म सबस बडा आश्रम है तथा इसके नियमो का ठीक ठीक पालन कर हम धरती पर हो स्वर्ग का अनुभव कर सकत हैं इसक लिए हम आश्रमो व अन्य तथ्यो क बारे म जानना आवश्यक है

(१) आश्रम वेद न मनुष्यो का जीवन सो वर्षो का माना है जिसको चार आश्रमो म विभक्त किया गया है प्रत्यक आश्रम पचीस पच्चीस वर्ष का बनाया गया है

सर्वप्रथम पचीस वष ब्रह्मचर्याश्रम
2 द्वितीय पचीस वर्ष गृहस्थाश्रम
3 तृतीय पचास वर्ष वानप्रस्थाश्रम
4 चतुर्थ पचास वर्ष सन्यासाश्रम

(2) गृहस्थाश्रम जिस प्रकार नदिया तथा बडे बडे नद तब तक भ्रमण करत है जब तक समुद्र को प्राप्त नहीं हो जाते उसी प्रकार गृहस्थाश्रम शेष तीनो आश्रमो का निर्वाह करता है तथा गृहस्थाश्रम के सहारे हो शेष तीनो आश्रमो स्थिर रहत हैं जिस प्रकार वायु के सहारे सभी प्राणी जीवित रहत हैं उसी प्रकार गृहस्थाश्रम शेष तीनो आश्रमो को दान तथा अन्नादि देकर अन्याश्रमो को स्थिर रखता है जिसके कारण गृहस्थाश्रम ज्येष्ठाश्रम है

(3) गृहस्थाश्रम मे प्रवेश का समय गृहस्थाश्रम म प्रवेश करने के लिए सबस अधिक आवश्यक है मनुष्य का ब्रह्मचर्य तथा वेद ज्ञान आयु क अनुसार कन्या का सोलहवे वर्ष स चौबिसवे वर्ष तक पुरुष का पचासवे वर्ष स अडतालिसवे वर्ष तक विवाह का समय उत्तम है विवाह का आयु के अनुसार वद न तीन भागो म विभक्त किया है

(1) निकृष्ट यदि कन्या का आयु सोलह वर्ष की हो तथा पुरुष की आयु पचीस वर्ष की हो ओर इस आयु मे दोनो का विवाह होता है तो वह निकृष्ट विवाह की श्रेणी मे आता है

(2) मध्यम जब कन्या की आयु अट्ठारह बीस वर्ष की हो तथा पुरुष की आयु तीस पैन्तीस वर्ष का हो या चालीस वर्ष का हो ओर इस आयु म दोनों का विवाह होता है तो वह मध्यम विवाह की श्रेणी म आता है

(3) उत्तम जब चौबीस वर्ष का कन्या का विवाह अडतालिस वर्ष के पुरुष के साथ होता है तब वह उत्तम विवाह की श्रेणी मे आता है

(4) गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करने का अधिकार गृहस्थाश्रम मे प्रवेश का अधिकार केवल उन्ही को है जिन्होने आचार्य कुल मे ब्रह्मचर्य पूर्वक रहकर चारो वेदो का अथवा एक वेद का पूर्ण रूप स मनन कर लिया हो तथा जिसका ब्रह्मचर्य खण्डित न हुआ हो

(5) गृहस्थाश्रम पर वर्णाश्रम का प्रभाव गृहस्थाश्रम मे प्रवेश स पूर्व हमे वर्णाश्रम पर भी ध्यान देना आवश्यक है वद मनुष्यो को उनके गुण कर्म तथा स्वभाव क अनुसार चार भागो मे विभक्त किया है ब्राह्मण क्षत्रिय 3 वैश्य 4 शूद्र

(1) ब्राह्मण ब्राह्मण का पढना पढाना यज्ञ करना कराना दान लना देना मुख्य रूप स ये यह कर्म है मन स किसी बुरे काम का इच्छा भी न करना तथा अधर्म मे कभी प्रवृत्त न होना तथा अपनी ज्ञानेन्द्रियो तथा कर्मेन्द्रियो को अत्याचरण से रोक कर धर्म मे चलाना आदि भी ब्राह्मण क कर्म है जल से बाहर के अग सत्याचार से मन विद्या स जीवात्मा तथा ज्ञान से बुद्धि को पवित्र करना अपने बाहर के मलो को दूर कर शुद्ध रहना अपने भीतर के राग द्वेषादि को दूर करना किसी की निन्दा न करना सुख दुख हानि लाभ मान अपमान आदि मे दृढ निश्चय करके रहना जड को जड चेतन को चेतन मानना पृथ्वी से लेकर परमेश्वर तक पदार्थो की विशेषता जानना प्रत्येक वस्तु को यथा योग्य उपयोग करना तथा वद ईश्वर मुक्ति पूर्व जन्म धर्म विद्या सत्सग माता पिता आदि का सेवा करना भी ब्राह्मण क गुण है

(2) क्षत्रिय जो न्याय स प्रजा को रक्षा करना दुष्टो का तिरस्कार तथा श्रेष्ठो का मान करना है सब प्रकार स सबका पालन करता है तथा विद्या का वृद्धि और सुपात्रो का सेवा म धन आदि का व्यय करना यज्ञ करना तथा कराना वद आदि शास्त्रो का पढना तथा पढाना विषयो म न फसना तथा जितेन्द्रिय रहकर शरीर तथा आत्मा म बलवान रहना सैकडो सहस्रो म भी अकेले युद्ध करन म भय होना सदा तेजस्वी तथा दीनता रहित रहना धैर्यवान होना गाना ओर सम्बन्धि व्यवहारो तथा सब शास्त्रो मे चतुर होना युद्ध म डटकर लडना कभी न भागना इस प्रकार लडना जिसस निश्चित रूप स विजय हो पक्षपात रहित होकर सबक साथ यथायोग्य व्यवहार करना अपना को गई प्रतिज्ञा का पूरा करना यह सब एक क्षत्रिय क गुण है

(3) वैश्य गाय आदि पशुओ का पालन तथा रक्षा करना विद्या का वृद्धि करन कराने क लिए धनादि का व्यय करना यज्ञ करना वेदादि शास्त्रों का पढना सब प्रकार क व्यापार करना एक सैकड पर पन्द्रह प्रतिशत व्यापक स अधिक व्याज न लना तथा असल से दुगना धन न लना तथा खरा करना यह वेश्य क गुण है

(4) शूद्र किसी का निन्दा न करना किसी स ईर्ष्या करना या अभिमान न करना यह कार्य शूद्र को करने चाहिए इसक अतिरिक्त ब्राह्मण क्षत्रिय तथा वैश्यो क म सहायता भी करनी चाहिए

उक्त वर्णो का परिभाषा को ठीक प्रकार समझकर अपने अपने वर्णो मे स्त्री तथा पुरुष का विवाह करना चाहिए (क्रमशः)

बन्धन से मुक्ति

ले० श्री आनन्द अभिलाषी जी वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर हरिद्वार

इस ससार मे हर जीव हर प्राणी बधा हुआ। अग्रेजी भाषा मे एक कहावत है MAN IS BORN FREEBUTHEIS EVERY WHERS IN CHAINS मनुष्य स्वतत्र पैदा होता है पर फिर भी वह हर समय किसी न किसी जजीर मे बधा है कोई मोह की जजीर मे बधा है तो कोई लोभ की किसी को काम न जकडा है तो किसी को क्रोध न। किसी को ईर्ष्या द्वेष खाये जा रहा है तो किसी को अहकार दबाए जा रहा है।

ऋग्वेद का एक बड़ा सुन्दर मत्र है–

ओम् उदुत्तम वरूण पाशमस्मदवाधम वि मध्यम श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो। अदितये स्याम स्वाहा।।

इद वरुणायऽअदित्यायाअदितये च इद न मम।।

ऋग्–म १ सू २४ म १५

भावार्थ यह है कि प्रभु तू हमारे सबसे ऊपर के पाश बन्धन को तार दे नीचे के पाश को हटा दे बीच के पाश को शिथिल कर द यह सब बन्धन काम लोभ क्रोध मोह और अहकार के हैं और इन जालो स मुक्त होकर हम तर अदिति अखण्डित नियम अखण्डित नियमो म नाश रहित मोक्ष के लिए निष्पाप होकर योग्य अर्थात् मोक्ष के अधिकारी बने हम ऊपर से नीच और नीचे से बीच मे स पापो क जाल मे फस पडे हैं। आप कृपा करो कि यह जाल कटकर छिन्न भिन्न हो जाये हम इन जालो म इसलिए बन्द हैं क्योकि हम आप क अखण्ड नियमो का पालन नहा कर रहे आप कृपा करो कि हम आपके बनाये अहिसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचय अपरिग्रह आदि महाव्रतो का पालन करे

हम इन बन्धनो स कौन मुक्त करवा सकता है कोन इन जालो से हम छुडा सकता है

कात्यायन श्रोत २५ १ १० मे एक बहुत सुन्दर मत्र है जो कि मार्गदर्शक –

ओं ये त शत वरुण य सहस्र यज्ञिया पाशा वितता महान्त। त भिर्नो अद्य मा तात विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुत स्वर्का स्वाहा।। इद वरुणाय सवित्रे विष्णावे विश्वेभ्यो देवे भ्यो मरुद्भ्य स्वर्केभ्य इद न मम ।।

भावार्थ यह है कि हे प्रभो आप के ससार मे सैकडो और हजारो नियम हैं जिनके पाश से मनुष्य बधा हुआ है। हमारे गुरुजन ने शुभ कर्मों के प्रेरणा देने वाले है न्याय शास्त्र को जानने वाले शास्त्रवेत्ता जो क्या ठीक है और क्या गलत है इस का निर्णय करते हैं। हमारे मित्र गण जो विपत्ति के समय हमे ढाढस बधाते हैं तपस्वी लोग जो तपस्या का जीवन व्यतीत करते हैं यह सब हमे कर्म के बन्धन से छुडा कर भवसागर से पार करने मे सहायता दे।

सक्षिप्त रूप मे कहा जाये कि चार प्रकार क व्यक्ति मनुष्य को इन बन्धन से छुडा सकते हैं। उन चार प्रकार के नाम ऊपर लिख दिये हैं थोडा उन के नाम पर उन के गुणो पर उनके अधिकर क्षेत्र पर चितन कर ले विचार कर ले।

१) सविता–पहली प्रकार के लोगो का नाम सविता दिया गया है सविता का अर्थ है प्रेरक शुभ कर्म मे प्रेरणा देने वाले को सविता कहते हैं एक पछी पिजर मे बन्द है उस के पिजरे का दरवाजा जिस दिन खुला रह जाये वह उड जायेगा। एक शेर को पिजरे मे बन्द करके रखा है जिस दिन दरवाजा खुला रह गया उस दिन वह शेर भाग कर जगल मे चला जायेगा एक कैदी कारागार म बन्द है जिस दिन जेल का दरवाजा खुला मिला वह वहा से भाग निकलेगा पर जीव शरीर रूपी कारागार मे बन्द है वह मुक्ति पाना नहा चाहता। चलो मनुष्य तो कह सकता है कि मुझे मनुष्य देह शुभ कर्मो के परिणाम स्वरूप मिना है मैं क्यो इसको छोड़ू? चूहा बिल्ली कुत्ता या नाली का कीडा कब अपनी देह का छाडना चाहता है कोई भी जीव जन्तु पशु पक्षी मरना नहा चाहता इसलिये प्रेरक का आवश्यकता है जो यह प्रेरणा द जीव शरीर रूपी पिजड़े को छाड कर बाहर आकर मुक्ति को प्राप्त हो शरीर रूपी पिजडा छोडने का अर्थ आत्महत्या नहीं। वह तो एक पाप है और फिर एक शरीर का त्याग कर के आत्मा तो नया चोला ले ही लेगी। प्रेरक मनुष्य को इस बात की प्रेरणा देगा कि आवागमन के चक्र से छूटो शुभ कर्म करो ताकि इस ध्येय की प्राप्ति हो सके।

प्रेरणा से बहुत से जटिल से जटिल काम भी सरल हो जाते हैं। सुभाष चन्द्र बोस ने भारतवासियो को प्रेरणा दी कि दासता की जजीरें को काटो। नारा दिया तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूगा। एक भगत सिह तो क्या अनेको भगत सिह फासी के फदे पर झूल गये। हर एक के होठो पर यही तराना था। मेरा रग दे बसती चोला महात्मा गाधी ने सत्याग्रह के लिये प्रेरित किया कि नहीं हम अहिसा से भारत को आजाद करायेगे। उन्होने आवाज दी कि विदेशी का बहिष्कार करो। सारे देश मे विदेशी कपड की होली जला दी गयी। एक नारे ने सभी जेलो को भर दिया। गाधी और सुभाष की प्रेरणा न भारतवासियो मे एक ऐसा जोश भर दिया कि अग्रेज भारत को छोड कर जाने के लिये मजबूर हो गये

स्वामी दयानन्द के प्रेरणादायक शब्दो ने अमीचन्द की जीवन नौका को इस किनारे से उस किनारे पर ला कर खडा कर दिया। अमीचन्द एक अच्छा कवि और एक अच्छा भजनीक था। पर उसका जीवन विलासमय था। स्वामी जी के एक वाक्य कि अमी चन्द तुम हो तो हीरा पर कीचड मे पडे हो ने अमीचन्द को झझोड कर रख दिया।

अर्जुन युद्धक्षेत्र मे मोह ग्रस्त हो कर युद्ध करने से इकार कर देता है योगीराज कृष्ण उसे प्रेरित करके मोह जजाल से निकालते है उस उपदेश को जो भगवान कृष्ण न अर्जुन को दिया गीता के नाम से स्मरण किया जाता है जो कि एक अमर ग्रथ माना गया है

सविता के भिन्न भिन्न अर्थ हैं परमात्मा का एक नाम सविता भी है परमात्मा भी शुभ कर्म की प्रेरणा वेदामृत द्वारा देता है परमात्मा केवल प्रेरित करता है परन्तु उसने जीव को कर्म करने की स्वतत्रता दे रखी है। कर्म का फल भगवान के हाथ मे है। परमात्मा वेद के माध्यम से हमे क्या कुछ प्रेरणा नहीं देता।

ओ द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति पृथ्वी शान्ति राप शान्तिरोषधय शान्तिर्वनस्पतय शान्तिर्विश्वे देवा शान्ति ब्रह्म शान्ति सर्वं शान्ति शान्ति रेव शान्ति सामा शान्ति रेधि।

यह मत्र सन्देश देता है परमात्मा की ओर से प्रेरणा देता है कि इस जगत मे शान्ति हो अन्तरिक्ष म शान्ति हो द्यौलोक मे शान्ति हो औषधि वनस्पति इत्यादि सब मे शान्ति हो। इस से बडी शान्ति की और प्रेरणा क्या हो सकती है? वेद किसी जाति विशेष के लिये किसी सम्प्रदाय के लिये किसी विशेष देश के लिये नहीं बल्कि ससार के लिये नहीं नहीं समस्त ब्रह्माण्ड के लिये हैं। शान्ति भारत के लिये नही। शान्ति हिन्दुओ के लिये नहीं शान्ति की समस्त विश्व के लिये प्रार्थना की गई है। आज हजारो नियम हैं जिनके पाश मे मनुष्य बधा हुआ है हमारे गुरुजन जो शुभ कर्मों की प्रेरणा देने वाले है न्याय शास्त्र को जानने वाले शास्त्रवेत्ता जो क्या ठीक है क्या गलत बताने वाल है आज विश्व शान्ति के लिये अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन हो रहे हैं वेद ने तो शान्ति की प्रेरणा मानव को ससार के उत्पन्न होने पर ही दे दी थी। अब मानव सोचे कि कौन सा मार्ग अपनाना है शान्ति का युद्ध का हिसा का या अहिसा का।

परमात्मा ने मनुष्य को प्रेरणा दी है

सगच्छध्व स वदध्व स वो मनासि जानताम्।
देवा भाग यथा पूर्वे सजानाना उपासते ।।
समानी व आकूति समाना हृदयानि व ।
समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति ।।

इकट्ठे मिल कर चलें एक जैसे बोली बोलें मतभद न हा हमारे हृदयो मे प्यार हो

प्रेम से मिल कर चलो
बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजो की भान्ति तम
कर्त्तव्य के मानी बनो ।

अब सोचना हमने है कि प्यार से रहना है या झगडे से एक जैसा बोली बोलना है या भात भात की सब को साथ ले कर चलें भाई का हत्या करनी है क्या पडोसी से ईर्ष्या करनी है? सुपथ का मार्ग अपनाना है या कुपथ का? स्वार्थी बनना है या परमार्थ करना है? अहिसा पर दृढ रहना है या हिसा पर उतारू होना है। परमात्मा ने तो मार्ग दर्शन कर दिया। प्रेरणा भी कर दी अब रह गई बात हम पर कि प्रेरणा को कैसे अपनाना है। (क्रमश)

सम्पादकीय

आर्य समाज को स्थापित हुए 124 वर्ष व्यतीत हो चुके है। आगामी वर्ष सन् 2000 मे इसे पूरे 125 वर्ष हो जायेगे। आर्य समाज की स्थापना चैत्र सुदि प्रतिपदा को सन् 1875 मे महर्षि दयानन्द ने बम्बई मे की थी। इस दिन हमारे सारे देश मे नव सवत्सर नया वर्ष मनाया जाता है। महाराज विक्रमादित्य से इसकी गणना आरम्भ हुई इसलिए इसे विक्रमी सवत् भी कहा जाता है। इस बार 18 मार्च को चैत्र सुदि प्रतिपदा है और इस दिन से सवत्सर 2056 आरम्भ हो रहा है। महर्षि दयानन्द ने इस दिन की महत्ता को देखते हुए आर्य समाज की स्थापना के लिए इस दिन को चुना। जिस समय महर्षि न इस समाज की स्थापना की थी उस समय आर्य समाज का प्रचार व प्रसार करने वाले और वेदो का प्रचार करने वाले वह अकेले थे। उन्होने सत्यार्थ प्रकाश सस्कार विधि और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और दूसरे कई ग्रन्थो की रचना की। इसके साथ ही उन्होने वेदो ..ा भाष्य करना आरम्भ कर दिया था। वह चाहते थे कि मै अपने जीवन काल मे चारो वेदो का भाष्य करके जाऊ परन्तु विधाता को यह स्वीकार न था अभी उन्होने यजुर्वेद का भाष्य करके ऋग्वेद का भाष्य आरम्भ ही किया था कुछ ही मण्डलो का ऋग्वेद का भाष्य किया था कि उन्हे कूट विष दे दिया गया जिसके कारण वह दीपावली के दिन 1883 मे अपने नश्वर शरीर को छोड कर सदा के लिए चले गए।

महर्षि को इस बात का पता था कि जो लोग अकारण ही उनके शत्रु बने बैठे है वह कभी भी उनके जीवन का अन्त कर सकते है क्योकि उन्हे कुछ दुष्ट प्रवृति के लोग कई बार विष दे चुके थे। वह योग क्रियाए जानते थे इसलिए उन्होंने प्रत्येक बार अपने शरीर का बचाव कर लिया था परन्तु अन्तिम बार उन्हे विष के साथ साथ काच बारीक पीस कर भी दे दिया गया था जिसे वह अपनी न्योली क्रियाओ आदि से उसे बाहिर नहीं निकाल सके और उसने अन्तडियो मे घुस कर शरीर को जख्मी कर दिया था। यदि महर्षि जी कुछ समय और जीवित रह जाते तो आर्य समाज का स्वरूप ही कुछ और होता। फिर भी महर्षि की मृत्यु के पश्चात् आर्य समाज मे पूर्ण जागृति आई। अनेको नई आर्य समाजो का निर्माण हुआ और उनकी स्मृति मे कई स्कूल कालेज खुले। आज सारे ससार मे आर्य समाज तथा आर्य समाज द्वारा सचालित स्कूल कालेजो का जाल बिछा हुआ है।

आर्य समाज को स्थापित हुए 124 वर्ष व्यतीत हो गए है। इस बार हम 124वा स्थापना दिवस मना रहे है। इस दिन को मनाते हुए आओ चिन्तन करे कि आर्य समाज ने अपने इन 124 वर्षों मे क्या कुछ किया। आर्य समाज हर क्षेत्र मे आगे बढा। महर्षि के काल मे भारत देश परतन्त्र था उन्होने स्वतन्त्रता का बीज बोया था और आर्य समाजियो ने उसे अपने खून पे सींचा था उसने एक वृक्ष का रूप धारण किया जिसके फलस्वरूप 15 अगस्त सन् 1947 को हमारा देश आजाद हो गया।

आर्य समाज ने स्त्री शिक्षा के लिए महान कार्य किया क्योकि उस काल मे स्त्रियो को शिक्षा देने का कई धर्माचार्य विरोध कर रहे थे आर्य समाज ने कन्या पाठशालाए खोल कर स्त्री शिक्षा आरम्भ कर दी और उसके बाद कई स्कूल व कालेज खोल दिए। अब सनातन धर्म जैसी सस्थाए जो कभी स्त्री शिक्षा का विरोध करती थीं वह भी कई स्कूल कालेज स्त्री शिक्षा के लिए चला रही है।

नव वर्ष (नव संवत्) मंगलमय हो

18 मार्च को चैत्र सुदि प्रतिपदा से नव वर्ष नव सवत्सर 2056 आरम्भ हो रहा है। इस अवसर पर हम आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से आर्य मर्यादा के सभी ग्राहको व पाठक महानुभावो तथा सभी आर्य समाजो व शिक्षा सस्थाओ के अधिकारिया कार्यकर्ताओं, प्रिंसीपलो प्राध्यापको अध्यापको व सभी आर्य बन्धुओ व बहनों को हार्दिक बधाई देते हैं और परम पिता से प्रार्थना करते हैं यह वर्ष सब के लिए मंगलमय हो।

के. के. मनसौचा — वरिष्ठ उपप्रधान
हरबस लाल शर्मा — सभा प्रधान
अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट — सभा महामन्त्री

अछूतोद्धार के लिए आर्य समाज ने आन्दोलन चलाया और वह बडा सफल रहा अब लगभग यह लानत समाज मे समाप्त प्राय हो गई है। सरकार ने भी इसे अपना लिया है।

आर्य समाज ने जब विधवा विवाह के पक्ष मे आवाज उठाई तो इस का प्रारम्भ मे बडा विरोध हुआ परन्तु बाद मे जब लोगा ने देखा कि इससे विधवाओ की दशा सुधरी है और अधर्मी होने से बच गई है तो बहुत से लोगो ने इसका समर्थन किया। कई ईसाई और मुसलमान अपना कुचक्र चला कर कई विधवाओ को मुसलमान बना लेते थे। आर्य समाज ने जब विधवा विवाह आरम्भ कर दिए तो उनकी सब योजनाए धरी धराई रह गई। आर्य समाज ने अनाथो की ओर ध्यान दिया उन्हे भी मुसलमान अपना रहे थे इस लिए आर्य समाज ने अनाथालय खोल कर अनाथो को विधर्मी बनने से बचा लिया।

आर्य समाज ने अनगिनत कार्य किए और सारे ससार को एक नई दिशा दी। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को आर्य समाज ने प्रभावित किया। आर्य समाज का कार्य स्वर्ण अक्षरो मे लिखने योग्य है। आर्य समाज वह सस्था है जिसने मानव मात्र का कल्याण किया है। क्योकि जाति पाति छुआ छूत मजहब व सम्प्रदाय की भावना से व आडम्बरो से ओत् प्रोत समाज को आर्य समाज ने एक नई दिशा दी और अनेकता को दूर करके एकता प्रदान की।

18 मार्च को सभी आर्य समाजे आर्य समाज स्थापना दिवस मनाते हुए आर्य समाज के पिछले 124 वर्ष के कार्य पर दृष्टिपात करे व जनता को बताए कि आर्य समाज ने इन 124 वर्षों मे क्या किया। आर्य समाज के जन्म की 125वीं जयन्ती मनाने की तैयारी करते हुए सभी आर्य बन्धु आर्य समाज के कार्य का लेखा जोखा करे। आज हम आर्य समाज का कितना कार्य कर रहे है। कितनी उन्नति कर रहे यदि हम देखे कि इस समय आर्य समाज मे कुछ शिथिलता आ गई तो हम निश्चय करे कि आगामी इस एक वर्ष मे हम इस शिथिलता को दूर करके आर्य समाज मे फिर जागृति पैदा करेगे।

—अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट
सभा महामन्त्री

दानवीर श्री राजेश्वर जी का निधन

श्री राजेश्वर जी का 83 वर्ष की आयु म 11 2 99 का निधन हा गया दिनाक 24 1 99 का उन्हे लिवर क आप्रशन क लिए सर गगा राम अस्पताल मे भर्ती कराया गया था

श्री राजश्वर जा का जन्म 25 फरवरा 1916 का लाला भगवान दास जा और सोभाग्यशालिना श्रामता लाजवन्ती के घर पर हुआ इनका परिवार जहलम (पकिस्तान) स 1928 मे दिल्ला आ गया था राजश्वर जा बचपन स ही प्रभु भक्ति और धामिक प्रवृति क थ राजश्वर जा ने बचपन म अनक आर्थिक कठिनाइया का सामना किया राजश्वर जा न टयूशन पढा कर 1936 म दिल्ला विश्वविद्यालय म हिन्दू कालेज स बा एस सा का पराक्षा उत्तार्ण की और कालेज मे सर्वप्रथम आय

1938 मे पब्लिक सर्विस कमाशन का पराक्षा देकर D rector Ge cr l of S ppl es and D sposal कायालय म नोकरी करने लगे

मइ 944 म राजश्वर जी सठ रामकृष्ण डालमिया जा की सर्विस म आ गय सठ डालमिया जी इनके काम स इतन प्रभावित हुए कि उन्होन र जश्वर जा को 13 कम्पनिया का निर्देशक नियुक्त कर दिया राजेश्वर जा 1980 तक सेठ डालमिया जा क काम स जुडे रहे।

सन् 1931 म आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान शास्त्रार्थ महारथा श्री रामचन्द्र दहलवी जा क भाषण एव शास्त्राथ सुन कर राजेश्वर जी बहुत प्रभावित हुए उसा मजबूत नीव के आधार पर राजेश्वर जी छुआछुत जन्म जात मिटाना हिन्दु समाज मे समरसता लाना धर्मान्तरण का रोकना एव परावर्तन (शुद्धि) क प्रचार व प्रसार म निरन्तर जुट रह उन्होन अन्तजातीय विवाहो को प्रोत्साहन देन क लिए आर्य समाज ... म अन्तर्जातीय विवाह विभाग खोला हे जहा आज प्रतिदिन 2 अन्तर्जातीय विवाह होत है

... जश्वर जा न अपन माता पिता का स्मृति का स्थाया रखन के लिए सार्वदशिक सभा म उनक नाम लाजवन्ती भगवान दास शुद्धि स्थिर निधि 1992 मे कुछ लाख रुपये दकर स्थापित का है इसक ब्याज स शुद्धि प्रचारका का मान धन दिया जाता है। गत लगभग 3 वर्ष तक उन्होने सभा कार्यालय मे अग्रेजी मे पत्र व्यवहार हेतु एक कमचारी अपने खर्चे से दिया हुआ था आर्य समाजो के साप्ताहिक सत्सगो म श्रद्धालुओ की घटती हुई उपस्थिति से भी वे व्याकुल हो जाते थे उन्होने आर्य समाजो मे रौनक लाने के लिए दिल्ला प्रदेश म गुरुकुल कागडी क स्नातक एक योग प्रशिक्षक की नियुक्ति की हुई है जिसका मान धन वह अपने ट्रस्ट की ओर से दते थे 1970 म राजेश्वर जी के किशोरवय पुत्र सुशील कुमार की एक सडक दुर्घटना मे मृत्यु हो गई सुशाल की स्मृति राजश्वर जा ने आर्य समाज साऊथ एक्सटैशन 1 मे व्यायामशाला स्थापित का बाद मे आर्य समाज द्वारा शिशु विद्यालय खोलने के कारण व्यायामशाला को कोटला ग्राम मे स्थानान्तिरित कर दिया गया एव अपने प्रिय पुत्र की याद म आय समाज साउथ एक्सटैंशन 1 को अपनी लागत से एक विशाल कक्ष बनवा कर दिया। वे प्रचार कार्य को आर्य समाज की रीढ मानत थे इसलिए आर्य समाज क प्रचारको एव उपदेशको को सहयोग तन मन धन से करने को तत्पर रहते थे। उपदेशको के पुत्र पुत्रियो के विवाह अथवा चिकित्सा इत्यादि के लिए वे सदैव उदारता से आर्थिक सहायता करते थे शुद्धिकृत बन्धुओ के पुनर्वास विवाह अथवा रोजगार इत्यादि के लिए वे भरपूर प्रयास करते थे घर वापसी/परावर्तन (शुद्धि) को अपने जावन का लक्ष्य मानते थे शुद्धि आन्दोलन को हिन्दू जन आन्दोलन बनाने के लिए वे विश्व हिन्दू परिषद से जुडे वे 1972 से 1983 तक इन्द्रप्रस्थ वि हि प क अध्यक्ष रहे वे 1971 से विश्व हिन्दू परिषद के ट्रस्टी चले आ रहे थे वे 1981 से दक्षिण दिल्ली के विभाग सघ चालक थे उनक सतत् प्रयास से 1992 मे वि हि प ने शुद्धि कार्य को एक आयाम के रूप मे अपना लिया एव इस प्रकल्प के वे अखिल भारतीय अध्यक्ष बना लिये गये। सन् 1996 म आर एस एस ने भी शुद्धि कार्य को अपना लिया इससे वे अत्यधिक प्रसन्न हुए उनकी आखो मे प्रसन्नता क आसु बहने लगे और वे कहने लगे कि महर्षि दयानन्द की विचारधारा को वि हि प और आर एस ने अपना लिया है मेरे जीवन का एक बहुत बडा लक्ष्य पूरा हो गया

सन् 1932 मे जब श्री राजेश्वर जी बी एस सी प्रथम वर्ष के विद्यार्थी थे उन्होने एक मुस्लिम मोचा को शुद्ध कर हिन्दू बनाया बाद मे माली हालत अच्छी होने पर शुद्धि कार्य के लिए चार प्रचारक रख लिए उनके सहयोग स हजारो मुस्लिम व ईसाइयो को हिन्दू धर्म की मूलधारा मे सम्मलित किया उनका कहना था कि कोई भी व्यक्ति शुद्धि कार्य कर सकता है केवल इच्छाशक्ति की आवश्यकता है उन्होने एक पुस्तक परावर्तन क्यो और कैस ? भी लिखी है जो शुद्धि कार्य करने वालो के लिए काफी उपयोगी है उन्होने 1991 मे चन्द्रकाता राजेश्वर धर्मार्थ ट्रस्ट बनाया अपन मकान का एक हिस्सा बेच कर तमाम राशि ट्रस्ट मे दे दा जिसका उपयोग ऋषि दयानन्द की विचारधारा के प्रचार प्रसार के लिए किया जायेगा।

दि 12 2 99 को उनक अन्तिम यात्रा म जन समूह उमड पडा। शव यात्रा मे विभिन्न सस्थाओ द्वारा श्रद्धाजलि अर्पित का गई उनक पार्थिव शरार का पूर्ण वैदिक ... म दयानन्द घाट लोदा रोड निजामुद्दीन म अग्नि को समर्पित किया गया

दि 15 2 99 को आर्य समाज ग्रटर कैलाश म साय 5 बजे श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया जिसम वि हि प क उपाध्यक्ष आचार्य गिरिराज किशोर जी श्री सत्यनारायण बसल जी आर्य पुरोहित श्री विद्या प्रसाद मिश्र श्रीमति शकुन्तला आर्या जा पूर्व महापौर ने अपने विचार रखे एव श्री हरवश लाल कोहली जा न कविता पाठ किया मच का सफल सचालन श्री स्वदश पाल गुप्ता जा ने किया श्री राजश्वर जा अपन पीछ धर्म पत्नी एक पुत्र एव एक पुत्री छोड गये हैं

उनका धर्म पत्नी श्रीमाती चन्द्रकान्ता पुत्र श्री राम कुमार आय पुत्रवधु श्रीमति परम आर्या पुत्री ललिता निझावन एव दामाद श्री ... निझावन ने उनके मिशन को आग बढान का सकल्प व्यक्त किया ह

मोगा में महर्षि दयानन्द बोध दिवस

आर्य समाज मोगा के तत्वावधान मे आर्य गर्ल्ज सी सै स्कूल ने अपने प्रागण मे दि 15 2 99 सोमवार को प्रात 8 से 10 30 बजे तक महर्षि दयानन्द बोध दिवस बडे ही हर्षोल्लास एव समारोह पूर्व मनाया। जिसमे प्रात 8 स 9 बजे तक बृहद यज्ञ किया गया पश्चात् आर्य शिक्षण सस्थाओ के छात्रो ने भजन गीत कविता एव भाषणो द्वारा महर्षि दयानन्द के जीवन एव कार्य को जन मानस के समक्ष बडे ही रोचक ढग से प्रस्तुत किया पूजनीय ब्रह्मचारी राम प्रकाश जी आर्य समाज धर्मपुर हिमाचल प्रदेश इस सभा के अध्यक्ष के रूप मे अलकृत थे।

इस अवसर पर आर्य शिक्षण सस्थाओ के सदस्यगण एव सभी प्रिसीपल तथा विद्यार्थीगण सम्मिलित हुए

विद्यालय प्रबन्धक समिति के प्रधान श्रीमती इन्दुपुरी जी ने अमूल्य समय देने के लिए पूजनीय ब्र रामप्रकाश जी का हार्दिक स्वागत एव धन्यवाद किया साथ ही बोधोत्सव पर बच्चो द्वारा आयोजित कार्यक्रमो से प्रसन्न होकर उत्साहवर्धन के लिए 600 रु प्रदान किए।

प्रबन्धक श्री बोधराज मजीठिया जी ने समागतजना का स्वागत एव धन्यवाद करते हुए विद्यालय के पुन निर्मित भवन हतु सहयोग देने वाले समस्त दान दाताओ के नामो का उल्लेख करत हुए उनकी भूरि भूरि प्रशसा एव हार्दिक धन्यवाद किया

आर्य समाज के सरक्षक श्री के के पुरा जी ने बच्चो के जीवन निर्माण के लिए सुन्दर विचार दकर उन्हे प्रेरित किया।

सभाध्यक्ष पूजनीय ब्र राम प्रकाश जी ने छात्रो को ऋषि क बोध को लक्ष्य बनाकर निज जीवन उद्देश्य को सफल एव सार्थक बनान की प्रेरणा दी ब्र जी के कर कमलो द्वारा कार्यक्रम मे अक ग्रहण करने वाले सभी छात्रो को पुरस्कार भी प्रदान किया गया

प्रिसीपल श्रीमती नरेश अग्रवाल जी ने पूजनाय ब्र जी एव विद्यालय प्रबन्धक समिति तथा आय ... समस्त जनो का पूर्ण सहयाग दन पर हार्दिक धन्यवाद किया अन्त मे शान्ति पाठ के पश्चात सभा न प्रसाद एव जलपान ग्रहण किया

गुरुकुल, शिक्षा और प्रणाली

ले डा महेश कुमार शास्त्री अध्यक्ष संस्कृत विभाग डोआबा कालेज जालन्धर

प्राचीन काल से ही भारत सम्पूर्ण विश्व के लिए ज्ञान का अगाध स्रोत रहा है इसकी महान् परम्पराए हैं उन्हीं पुरातन पुनीत परम्पराओ मे से एक है गुरुकुल परम्परा। गुरुकुल एक ऐसा कुल जिसमे गुरु शिष्य एक साथ रहकर गहन तत्व का चिन्तन किया करते हैं सार ससार को अध्यात्म व शान्ति का शाश्वत उपदेश देने वाले उपनिषद् इन गुरुकुलो की ही देन ह जा उपनिषद् अपनी विपुल तात्विक सामग्री स उन गुरुकुलो का परिचय स्वय द रहे हैं जहा ऋषिजन गुर अथवा आचार्य अपन शिष्यो के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह किया करत थे। उन ऋषिजनो के लिए शिक्षक व अध्यापक जसे नितान्त सकुचित अर्थ वान शब्दो का पयाग करना अपनी अयाग्यता को ही प्रकट करना है

गुरु का सर्वसाधारण अर्थ है भारा यह गुस्सा या भारीपन भारी भरकम तेजस्वी शरीर मात्र स नही अपितु कई अन्य कारणो से हुआ करता है और वह है उसका एक साथ ऋषि गुरु और आचार्य होना।

स्वय मन्त्र व तत्व का द्रष्टा होना ही ऋषित्व है ऋषयो मन्त्रद्रष्टार साक्षात्कृत धर्माण ऋषयो बभूव (निरुक्त 2 11 व 20) व अपने विशिष्ट विषय क ज्ञान शास्त्र के सशय रहित पूर्ण विद्वान् हुआ करत हे जा निष्कारण पूर्ण वात्सल्य भाव स अपन सम्पूर्ण तत्व ज्ञान का अपने समित्पाणि जिज्ञासु शिष्य म अवतरित करके इतन विकसित रूप म दखना चाहते हैं कि यदि कभी उस शिष्य से हा शास्त्राथ का अवसर आन पडे तो उसस पराजित होन मे ही अपने को धन्य समझत हे

मातृमान् पितृमान आचार्यवान् पुरुषो वेद माता पिता क पश्चात् इस स्वार्थी ससार मे कवल गुरु हा तो हे जा अपने शिष्य का प्रगति दख कर ईर्ष्याभाव स ग्रसित नही हाता अपितु अपन स आगे बढता हुआ दखकर और भी प्रसन्नता तथा गौरव का अनुभव करता है। इन तीन क अतिरिक्त कोई एसा विशाल हृदय उदारचता मानव इस धरती पर दिखाई नहा पडता। पुत्र अथवा शिष्य स हार जाने मे भी जीत के आनन्द का अनुभव यही तो है इनका गुरुत्व।

आचार्य और शिक्षा प्रणाली ये दोनो एक दूसरे से अनुस्यूत हैं। आचार्य गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आत्मा है और शिष्य उसका शरीर है। आचार्य ही शिष्य मे आत्मा बनकर अधिष्ठित होता है जिससे वह अज्ञानाछन्न शिष्य वस्तुत चेतनावान् हो उठता है तथा ज्ञान के प्रकाश से भर जाता है आचार्य उसे अपनी कुल रूपी गर्भ गुहा मे रखता है उसे सस्कारित कर द्विजत्व प्रदान करता है

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिण कृणुते गर्भमन्त

(अथर्व 11 5 3)

जन्मना जायते शूद्र सस्काराद् द्विज उच्यते

(वृ० उ अत्रि स 142)

द्विज का अर्थ है दूसरा जन्म मृत्यु के बिना जन्म सम्भव नही अत आचार्य के गर्भ मे कुल मे आते ही ब्रह्मचारी शिष्य के सामने अपने आचार्यो का जो रूप प्रकट होता है वह है मृत्यु रूप आचार्यो मृत्यु (अथर्व 11 5 14) आचार्य का अनुशासन ही मृत्यु रूप है यह अनुशासन ही उसक जन्म जन्मान्तर से सचित कुसस्कार रूपी बीज को अकुरित होने का अवसर मिलने नही देता फलत जैसे धरती म पडा हुआ बीज उचित वातावरण खाद पानी के बिना धरती के गर्भ मे ही जर्जरित हो जाता है ठीक वैसे ही ब्रह्मचारी शिष्य क वे जन्म जन्मान्तर स सचित कुसस्कार रूपी बीज भी आचार्य का अनुशासन रूपी भट्टी म पडकर दग्ध हो जात है और जला हुआ बीज कभी अकुरित नही होता यही आचार्य का मृत्यु रूप हे इसी क द्वारा ब्रह्मचारी शिष्य का आचार्य की कुक्ष रूपी गर्भ गुहा स दूसरा जन्म होता है श्रेष्ठ सस्कारो से समन्वित जन्म इसी को वदादि शास्त्र द्विजत्व म प्रवश का नाम देते है

शिक्षा दने का विधि क्या हो? इसका सकत भी आचार्य शब्द म ही मिलता है। आचार्य वही है जो अपने आचरण से शिक्षा मे अवतरित हो जाए आचार्य अपने शिष्यो पर जो शासन करता है उसे शासन न कह कर अनुशासन कहा जाता है। अनु एक उपसर्ग है जिसका अर्थ है पश्चात् दूसरे शब्दो मे आत्म शासन के पश्चात् जिसका आरम्भ होता है उसका नाम अनुशासन है। जिस आचार्य व राजा का अपने आप पर शासन नहीं जो स्वय नियमो की बागडोर से नहीं बधा वह अपने शिष्यो अथवा पुत्रो पर क्या अनुशासन करेगा? उसे शासन तो कहा जा सकता है परन्तु अनुशासन कदापि नहीं अनुशासन तो आत्म शासित आचार्य से शिष्य मे वैस ही अवतरित होता है जैस दर्पण मे प्रतिच्छाया उसमे दण्ड प्रयोग की आवश्यकता नही होती शासन दण्ड प्रयोग के बिना कभी हो नहीं सकता शासन बलात् किया जाता है और अनुशासन सहज भाव स। शासन मे शासक क प्रति प्राय विद्रोह तथा दुर्भाव के स्वर गूजत है और अनुशासन म सौहार्द तथा सद्भावना के स्वर शासन अशान्ति भय और दु ख का विस्तार करना है तथा अनुशासन शान्ति निर्भयता और आनन्द का अत शासन और अनुशासन के इस गूढ रहस्य को समझते हुए आचार्य अपने आचरण से ही शिष्यो मे शिक्षा का आधान किया करता है यही उसका आचार्यत्व है

आचार्य कस्मात्? आचार्य आचार ग्राहयति अचिनोति अथात् आचिनोति बुद्धिमीति वा

(निरु 1 2 3)

शिक्षार्थी शिष्य कैसा हो? जो गुरु और शास्त्र दोनो क प्रति श्रद्धान्वित हो समर्पित हो तत्वज्ञान का उत्कट अभिलाष रखता हो तथा पूर्ण व्रती हो क्याकि श्रीमद् भगवद् गीता 4 39) क अनुसार इन तीनो म स किसी एक का भी अभाव हो तो शिष्य तत्वज्ञान को उपलब्ध नही हाता

श्रद्धावान् लभत ज्ञान तत्पर सयतन्द्रिय

फिर एसा शिष्य अपने ऋषितुल्य गुरुजना से वद व्याकरण ज्योतिष दर्शन आयुर्वेद धनुर्वेद अर्थशास्त्र समान शास्त्र आणविकी प्रौद्योगिकी कोई भी विद्या क्यो न सीख। वह ज्ञान के जिस क्षेत्र मे भी उतर जाएगा नि सन्देह उसी विद्या विशेष मे वह अपने अन्दर इतनी योग्यता समहित कर लेगा कि वह न केवल उस विद्या के सर्वोच्च शिखर पर पहुच जाएगा बल्कि उस शिखर को वह अपने योगदान से और भी ऊचा उठा सकेगा

ऐसा जिज्ञासु शिष्य अपन ऋषितुल्य आचार्यो स कैसी शिक्षा प्राप्त करेगा? वह शिक्षा होगी जिससे पूर्ण मनुष्य का निर्माण हो सक जो अध्यात्म विज्ञान तथा भौतिक जगत् से सम्बन्ध रखन वाली विद्याओ क गूढ रहस्यो को एक साथ आत्मसात् करा सके ऐसी शिक्षा जिसस मानवता का पूर्ण विकास हो जिससे इहलोक और परलोक दोनो सिद्ध हो

सारभूत शब्दो म मनुर्भव जनय दैव्य जनम् मानव शिक्षा क इस वैदिक सिद्धान्त को जहा मूर्त रूप दिया जाता हो उस सस्थान का नाम गुरुकुल है जिस शिक्षा के द्वारा इस सिद्धान्त का साकार किया जाता हो उसका नाम गुरुकुल शिक्षा है अपने कुलरूपी गर्भ म रख कर आचार्य आत्म शासन स अनुशासन पूर्वक शिष्य को जो शिक्षित करता है इसी का नाम गुरुकुल शिक्षा प्रणाली है

वर्तमान युग म मोक्षपद स अवतरित पुण्यात्मा महर्षि दयानन्द सरस्वती न सम्पूर्ण मानव जाति क कल्याण क लिए इसी पुनीत पुरातन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को साकार करने का स्वप्न लिया था जिसकी सारी योजना उन्होंने अपन अमर ग्रन्थ सत्याथ प्रकाश म उद्भावित की है इसी स्वप्न को पजाब की पावन धरती पर जन्म लेन वाल विनम्र योद्धा महर्षि क अनन्य अनुयायी महात्मा मुशीराम स्वामी श्रद्धानन्द) न गगा क पावन तट पर कागडी ग्राम पुण्य भूमि हरिद्वार म गुरुकुल कागडी क नाम स अपने आचार्यत्व म साकार रूप का अपूर्व साहस दिखाया था खेद है कि उनके पश्चात् गुरुकुलो की सख्या म तो अभिवृद्धि हुई है लकिन उपयुक्त स्थान तपोनिष्ठ आचार्यो तथा व्रतनिष्ठ श्रद्धावान जिज्ञासु शिष्यो क अभाव म गुरुकुलो शिक्षा प्रणाली स्वय म पूर्ण होते हुए भी अपूर्ण सिद्ध हो रही है फिर भी मै इतना कहन का साहस अवश्य करुगा कि इस स्वार्थ केन्द्रित तथा अर्थ मात्र प्रधान युग मे ये गुरुकुल मानवनिर्माण की प्रक्रिया मे जो भी कार्य कर पा रह है उसे समय तथा धन का सदुपयोग ही मानना चाहिए

वृष्टि यज्ञ एक चिन्तन

ले० महात्मा प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी धूरी

वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक होने से वेद 'मनो विज्ञान' "भौतिक विज्ञान" और "आध्यात्मिक विज्ञान" का अथाह ठाठे मारता हुआ "समुद्र" है जो "मन्त्र" रूप मे है। "मन्त्र" का अर्थ होता है सलाह चिन्तन । तो आओ हम विचारे कि "वृष्टि यज्ञ" के विषय मे वेद हमे क्या-क्या सकेत देता है। जैसे "निकामे निकामे न पर्जन्यो वर्षतु" यजु 22 22। अर्थात् जब-जब हम कामना करे तब तब वर्षा हो और यजु 36 10 मे भी कहा गया है "पर्जन्यो अभि वर्षतु" पर्जन्यो से वर्षा हो, और "पर्जन्य" कैसे बने "यज्ञाद् भवति पर्जन्यो" गीता 3 14। पर्जन्यो उन बादलो, मेघो का नाम है जो वर्षा से पृथ्वी को हरा भरा और जगल में मगल कर देते हैं। यह मेघ कैसे बनावे "यज्ञ" से। जैसे पृथ्वी पर जल प्राप्त करने के लिए कुएं खोदे जाते है "द्यो" से जल प्राप्त करने के लिए "द्यौ" जो जल का विशाल समुद्र है "द्यौः समुद्र सम सरः" यजु 23 48। अर्थात् आकाश जो समुद्र से भी बडा समुद्र है, यह भगवान् का "जल भण्डार" (Water Box) है। "पर्जन्य" मेघ पाईप लाईने हैं और इस जल को नीचे लाने का साधन "यज्ञ" है। "वर्षतु ते द्यौ·" यजु 1 25। हमारे वैज्ञानिक ऋषियो की मान्यता है कि यज्ञग्नि मे जो सात्विक पौष्टिक और सुगन्धित पदार्थ डाले जाते हैं उस अग्नि लगभग "हजारो गुणा" करके, परमाणु रूप मे वायु के साथ घूमते रहते हैं और जब वर्षा होती है तो इन सात्विक पौष्टिक और सुगन्धित परमाणु वर्षा मे जल मे मिश्रित हो जाते है फिर यहा सात्विक, पौष्टिक और सुगन्धित अन्न पैदा होता है, फिर "जैसा खाओ अन्न, वैसा होगा मन" वाली कहावत चरितार्थ हो जाती है। अतः हमारे ऋषि "यज्ञ" द्वारा हुई "वर्षा" को विशेष महत्व देते हैं, देते थे। यज्ञाग्नि क साथ ऊचे स्वर से वेद मन्त्रो के गान से "वर्षाहु यजु 24.38" वर्षा को प्रेरित किया जा सकता है, क्योकि शब्द स्वर एव छन्द का सीधा प्रभाव वातावरण पर पडता है। पर्जन्य बादल बनाने के लिए विशेष जडी बूटियो विशेष प्रकार की समिधाओ तथा विशेष प्रकार के पदार्थो को यज्ञग्नि मे आहुत करके पृथ्वी मडल एव अन्तरिक्ष मण्डल मे भेद कर, उस जल को जो भगवान का जल भण्डार है, हिलाया जाता है और यहां विशाल यज्ञ होने से गर्मी बढ जाती है, जब बहुत गर्मी बढ जाती है, लोग कहते हैं अब वर्षा होगी। जिसे यजुर्वेद 1 25 मे कहा गया है "वर्षतु ते द्यौ"।

नोट :-वर्तमान समय में, पीने वाले जल की बहुत ही कमी अनुभव की जा रही है, यदि ऐसी ही अवस्था रही तो 50 वर्ष मे जल संकट बहुत ही भयकर रूप धारण कर लेगा। लोग त्राहिमान-2 कह उठेगे अतः अभी से वैज्ञानिको को चाहिए कि ऋषियो की "रिसर्च" से लाभ उठा कर "यज्ञ" द्वारा "द्यौः" रूपी विशाल समु- से जल लेने की "योजना" को क्रियात्मिक रूप दे, जो मानवता की सच्ची सेवा होगी।

मनसा परिक्रमा मन्त्र :-प्रार्थना के रूप में

ले. पिशोरी लाल प्रेम ब्रबदू जिला सिरमौर हि. प्र. 173022

ओं प्राची दिगग्निरधिपति रसितोरक्षितादित्या इषव मन्त्र का शेष भाग अतिम मंत्र के साथ॥

हे अग्ने स्वरूप, ज्ञान स्वरूप, प्रकाश स्वरूप, ज्योति स्वरूप, परमेश्वर आप हमारे पूर्व दिशा के अधिपति हैं। आप हमारी हर प्रकार के बन्धनों से, कष्ट क्लेशों से, अज्ञान अंधकार से, सूर्य की किरणों, सूर्य के प्रकाश तथा आदित्य विद्वानों के द्वारा रक्षा करते है।

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपति स्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषव ॥

हे परम ऐश्वर्यशाली, ऐश्वर्य के दाता राजाधिराज इन्द्र प्रभु परमात्मन् आप हमारे दक्षिण दिशा के अधिपति हैं। आप हमारी टेढे स्वभाव वाले मनुष्यो तथा पशु, पक्षी कीट पतग आदि से पितर लोगो के द्वारा, तथा आदित्य विद्वानो के द्वारा रक्षा करते हैं।

ओ प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपति· पृदाकू रक्षितान्नमिषव ॥

हे सर्वोत्तम, परम पवित्र, बल के भण्डार, वरणे योग्य, वरुण देव जगदीश्वर, आप हमारे पश्चिम दिशा के अधिपति हो, आप हमारी पृदाकुओं से सांप बिच्छू आदि विषैले जन्तुओ से अन्न घृत एवं औषधियों के द्वारा रक्षा करते हैं।

ओ उदीची दिक्सोमो अधिपति स्वजो रक्षिताऽशनि रिषव ॥

हे सुख और शान्ति के दाता, अति प्रिय, अति मधुर, सौम प्रभु, सौम्य स्वरूप भगवन् आप हमारे उत्तर दिशा के अधिपति है। आप हमारी स्वय उत्पन्न होने वाले कीट पतग मच्छर आदि से विद्युत के द्वारा रक्षा करते हैं।

ओं ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपति कल्माषग्रीवोरक्षिता वीरुध इषव ॥

हे सर्वव्यापक, सर्वाधार, सर्वशक्तिमान प्रभु आप हमारे नीचे की ओर के अधिपति हैं। आप हमारी विषैली वायु से वृक्षो ओर लताओं के द्वारा रक्षा करते हैं।

ओं ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपति· श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषव·॥

हे ज्ञान स्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वान्तरयामि, सब से महान्, गुरुओं के गुरु बृहस्पति देव आप हमारे ऊपर की ओर के अधिपति हैं स्वामी हैं। आप हमारी कष्ट आदि रोगो से एव हर प्रकार के रोगों से वर्षा के द्वारा रक्षा करते हैं॥

मन्त्रों का शेष भाग ·-तेभ्यो नमोऽधिपति भ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्योनम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टियच्च द्विष्मस्त वो जम्भे दध्म ॥

हे परम ब्रह्म आप को नमस्कार हो, हे ससार के अधिपति आप को नमस्कार हो। हे परम रक्षक आप को नमस्कार हो, हे इषुओ के स्वामी आपको बारबार नमस्कार हो। प्रभु जो हम से ईर्ष्या द्वेष करते हैं, अथवा जिन से हम ईर्ष्या द्वेष करते हैं, उसे आपके न्याय रूपी सामर्थ्य पर छोड़ देते हैं। हे न्यायकारी दयालु परमपिता परमेश्वर हम स्वयं ईर्ष्या द्वेष को त्याग कर प्राणी मात्र से प्रेम करे, प्राणीमात्र की सहायता और रक्षा करें, प्राणी मात्र को मित्र की दृष्टि से देखे, यही हमारी याचना है, स्वीकार करे ॥

बठिण्डा से टंकारा

आर्य समाज बठिण्डा को कार्यकारिणी की बैठक दिनाक 21 11 98 मे हुए निर्णय अनुसार आर्य समाज बठिण्डा के प्रधान श्री प्रेम भाटिया जी सपत्नीक मन्त्री श्री बिहारी लाल जी मगग्गा सपत्नीक, आर्य माडल हाइ स्कूल के प्रधान श्री पी डी गोयल जी सपत्नीक एव श्रीमती विजय जिन्दल ऋषिबोधोत्सव के समारोह पर श्री महर्षि दयानन्द ट्रस्ट टकारा में सम्मिलित हुए।

ऋषि जन्म भूमि टंकारा में भव्य रूप से आयोजन किया गया यह समारोह आर्य समाज बठिण्डा के पदाधिकारी एव सदस्यों के अतिरिक्त भारतवर्ष के भिन्न 2 प्रांतों से आये आर्यजनो ने श्रद्धापूर्वक मनाया। विशेषकर पजाब से श्री सत्यानन्द जी मुजाल मालिक हीरो साईकिल वर्क्स लधियाना अपने परिवार सहित सम्मिलित हुए। यजुर्वेद पारायण यज्ञ प्रात. सायं दैनिक होता रहा इसमें ऋचाओ की ध्वनि बड़ी सुन्दर थी। वातावरण शान्तमय, यज्ञमय हो गया।

इस समारोह में पधारे विद्वानों सन्यासियों द्वारा समय-2 पर मधुर प्रवचन होते रहे। इन प्रवचनों को सुनने हेतु जनसमूह उमडता रहा। टकारा ट्रस्ट के ब्रह्मचारियों द्वारा की गई सेवा, वक्तृता एवं वेश-भूषा देखते ही बनती थी। टंकारा ट्रस्ट के इस समारोह में सफाई जलपान भोजन आदि की व्यवस्था प्रशसनीय थी। दिनाक 14.2 99 को प्रातः टकारा गाव में प्रभात फेरी निकाली गई जिसमें ऋषि महिमा के भजन महिलाओं एवं पुरुषों द्वारा गाये गये। इसके उपरान्त ध्वजारोहण आदरणीय श्री मुजाल जी (लुधियाना) के करकमलो द्वारा किया गया। जिसमें प्रथम आर्य समाज के पदाधिकारियों के अतिरिक्त श्री मुजाल जी सपत्नीक का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया। ध्वजारोहणोपरान्त बडे स्तर पर भव्य शोभा यात्रा गांव के विभिन्न गलियां/बाजारों व ऋषि जन्म स्थली से गुजरते हुए ५... ेस टकारा ट्रस्ट के प्रांगण में पहुंची।

इस महान कार्यक्रम के मन्त्री कहो या सयोजक श्री रामनाथ जी सहगल थे उन्हें हर समय हर जगह हमने उपस्थित पाया। उन्होने पजाब से पधारे सभी आर्यजनो का इस समारोह में सम्मिलित होने पर तहेदिल से धन्यवाद किया। इस सारे कार्यक्रम की सफलता व विधिपूर्वक सम्पन्न करवाने का श्रेय श्री रामनाथ जी सहगल को ही जाता है। भगवान उन्हें स्वास्थ्य एव दीर्घायु प्रदान करें। टकारा से वापिस आते समय हम जोधपुर में रुके जहा हमने महर्षि दयानन्द स्मृति-भवन में वह स्थान देखा जहां उन्हें प जगन्नाथ द्वारा विष दिया गया था। इसमें एक ऐतिहासिक कुआ भी है।

प्रेम भाटिया प्रधान

ऋषि जन्म भूमि टंकारा ट्रस्ट को मिलने का पूर्ण आश्वासन

हर्ष का विषय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान एव श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा के टस्टी श्री सत्यानन्द मुजाल जी के प्रयासो से टस्ट को महर्षि दयानन्द जन्म भूमि का अधिकार मिलने का पूर्ण आश्वासन श्री कानजी भाई चकूभाई (जन्म गृह का वह भाग जहा स्वामी जी का जन्म हुआ था के मालिक) ने श्री मुजाल जी के आग्रह पर जन्म गृह टकारा टस्ट को नि शुल्क दे दिया और टस्ट को कानूनी कार्यवाही करवाने हेतु दस्तावेज तैयार करवाने का आग्रह कर दिया है।

इस आश्वासन को देने के लिए श्री कानजी भाई चकूभाई अपने परिवार के सदस्यो सहित ऋषि बोधोत्सव मे सम्मिलित हुए और सार्वजनिक रूप स टस्ट को जन्म स्थान देने की घोषणा की। इस उपलक्ष्य मे उनका श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा द्वारा स्वागत किया गया।

आज समस्त आर्य जगत् को जिनकी सवेदनशील भावनाये उस जन्म गृह से जुडी है और सभी इस बात से उदासीन थे कि ऋषि का जन्म गृह का अधिकार आर्य समाज के पास नही है अपितु एक निजी व्यापारी क पास है। पूरे आर्य जगत् को इस बात का गव है कि आर्य समाज के पास श्री सत्यानन्द मुजाल जेसे दयानन्द के वीर सपूत उपस्थित है जिन्होंने यह कार्य इतने सहज रूप से कर दिखाया जिसमे पूरा आर्य जगत् लगभग विफल हो चुका था।

सभा आय जनो की ओर से श्री सत्यानन्द मुजाल को हार्दिक शुभकामनायें एव हार्दिक शुभाशीष देते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी दीर्घायु हो ताकि व ऋषि ऋण से इसी तरह उऋण होते रहे।

ट्रस्ट परिसर मे कमरे का निर्माण

कु सुरुचि गुप्ता जिनको काल ने अकस्मात् दिनाक 20 9 1987 को मृत्यु की गोद मे सुला दिया 14 वर्ष की अल्पायु मे ही अपने परिवार जनो को छोडकर वे इस भौतिक जीवन से विमुक्त हो गई। उन्हीं की स्मृति मे उनके माता पिता श्रीमती प्रेमलता गुप्ता श्री गोविन्द राम गुप्ता ने श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा के परिसर मे एक लाख रुपये की धनराशि देकर एक कमरे का निर्माण अपनी बेटी कु सुरुचि गुप्ता की स्मृति मे करवाया। उस कमरे का विधिवत् उद्घाटन उन्हीं के कर कमलो द्वारा दिनाक 14 2 1999 को किया गया। उद्घाटन से पूर्व यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया और कु सुरुचि गुप्ता की स्मृति मे विशेष मन्त्रो की आहुतियो से स्मरण किया गया।

1, 01, 111/ रुपये का सात्विक दान

श्री शकर आर्य जोकि मध्य प्रदेश के दबाना गाव के निवासी हे पिछले कई वर्षों से अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती देवी के साथ टकारा ऋषि बोधोत्सव पर पधारते थे। पिछले वर्ष उनकी धर्मपत्नी का अकस्मात् स्वर्गवास हो गया और उनकी धर्मपत्नी श्री शकर आय को अपनी मृत्यु से पूव यह आग्रह कर गई थी कि उपरोक्त राशि टकारा टस्ट को दान रूप मे अवश्य देवे ओर अपने पूरे जीवन निरन्तर ऋषि बोधोत्सव के पर्व पर टकारा पधारे। उनके वचन को पूर्ण करने के लिए श्री शकर आर्य अपने पुत्र एव पुत्रवधु के साथ टकारा पधारे और श्री महर्षि दयानन्द स्मारक टस्ट टकारा को रु 1,01 111/ की धनराशि दान के रूप मे प्रदान की।

—राम नाथ सहगल मन्त्री

आर्य बाहर से नहीं आये : वे भारत के ही मूल निवासी हैं

विश्व प्रसिद्ध इतिहासविदो की राय

यह धारणा अब पूर्णतया गलत साबित हो चुकी है कि भारत मे आर्य बाहर से आए। न तो प्राचीन साहित्य मे ऐसा कोई उल्लेख मिलता है और न ही ऐतिहासिक साक्ष्य कि वे बाहर कहीं से आए और यहा के मूल निवासियो को दबा कर शासक बन बैठे प्रसिद्ध वैदिक विद्वान और इतिहासविद डा डविड फ्राली ने यह बात कही जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय मे एक व्याख्यान में उन्होने आश्चय जताया कि पुरातत्व की दृष्टि स भी कोई प्रमाण नहा मिले हैं फिर भी यही पढाया जा रहा है कि भारत मे आर्य अफगानिस्तान क रास्ते कई दलो मे आए तथा उन्होन यहा की प्राचीन और मूल सभ्यता सस्कृति को नष्ट किया

डा फ्राली ने कहा कि पुरातात्विक प्रमाणो के आधार पर आर्यो के आक्रमण का सिद्धान्त दुनिया भर मे रद्द कर दिया गया है। भारत मे पता नही क्यो पढाया जा रहा है सिधु घाटी और हडप्पा की सभ्यता का समय 2700 स 1900 साल ईसा पूर्व समझा जाता है नई खोजे साबित करती हैं कि भारत मे सभ्यता क विकास ईसा स कम से कम सात हजार साल पहल हो चुका था। यहा एक विकसित सभ्यता मौजूद था हडप्पा सभ्यता का अवसान किसी आक्रमण के कारण नहीं प्रकृति प्रकोपो से हुआ उन दिनो पर्यावरण म व्यापक बदलाव आए वैदिक साहित्य म जिस सरस्वती का उल्लेख मिलता है वह ईसा से 1900 साल पहले तक सूख चुकी था यह शिला के पश्चिमी भाग से कच्छ क रन तक बहती थी इन्ही दिनो आबादी यहा से वहा हटी

प्राचीन भारतीय इतिहास के विद्वान जम्स स्केफर को उद्धृत करत हुए डा फ्राली न कहा कि भारत म आर्यों के आक्रमण का सिद्धात औपनिवेशिक मानसिकता का परिचय है स्केफर का सदर्भ नही हो तो यह बयान किसी कट्टरपथी हिंदू को लग सकता है। उन्होने साउथ ऐशिया एविडेंस इटरप्रिटेशन एड हिस्ट्री पुस्तक मे आर्यो के आक्रमण के सिद्धान्त को ध्वस्त कर दिया है। मिशिगन यूनिवर्सिटी से प्रकाशित पुस्तक मे विभिन्न विद्वानो के लेख सकलित है। स्केफर के अनुसार भारत मे आर्यो के बाहर से आने के सिद्धान्त का बढावा देने के पीछे निहित उद्देश्य रहे हैं इस सिद्धान्त के आधार पर वे भारत मे अपने उपनिवेश को जायज ठहरा रह थे डा फ्राली ने कहा कि आर्यो के बाहर स आने या यूरोप मे उनका मूल स्थान बताने का सिद्धान्त नाजी इतिहासकारो न उछाला मजे की बात है कि इसकी सबसे ज्यादा वकालत अब कम्युनिस्ट रुझान वाल इतिहासकार कर रह है

उन्होने द इडो आर्यन्स आप साउथ एशियन्य का हवाला देत हुए कहा कि भारत स बाहर कहा भी ऐसे ककाल नही मिल ह जा यहा के वेदिक आर्यो स मेल खात हो ऐस प्रमाण भी नहा मिलते कि वेदिक आय प्रागैतिहासिक काल मे दक्षिण एशिया या यूरोप मे कहा बसत हो उपमहाद्वीप के भारत पाकिस्तान बगलादश और श्रीलका जैसे देशो मे हा उनके होन क प्रमाण मिलते है डा फ्राली न कहा कि वैदिक सभ्यता और आधुनिक सभ्यता मे गहर अतर्सबध दिखाई दता है आर्य यदि बाहर से आए तो उन दशो की सभ्यता सस्कृति म भी उनकी उपस्थिति झलकनी चाहिए था

भारत मे इतिहासविद बाबा लाल एस पी गुप्ता और एस आर राव कई साल स आर्यो क आक्रमण के सिद्धान्त को चुनौती द रहे है उनक प्रतिपादनो का पूर्वाग्रह स प्रेरित बतात हुए रद्द किया जाता रहा डा फ्राली न कहा कि पश्चिम म पिछल कुछ वर्षो मे मजबूती स स्थापित हुए निष्कर्ष को किसी आग्रह से प्रेरित कहना कठिन है। लास एजेल्स म पिछल साल अगस्त मे एक काफ्रेस म विद्वानो न तथ्य और प्रमाण के आधार पर जो कहा उसे नकारना मुश्किल है

उन्होने कहा कि कल तक आर्यो के आक्रमण पर अडे रहन वाले विद्वानो के मन भी बदल रह है उदाहरण के लिए इस सिद्धान्त की प्रबल पक्षधर रोमिला थापर भी कहने लगा है कि सिधु घाटी की सभ्यता आर्यो के आक्रमण स नहीं प्रकृति प्रकोपो से नष्ट हुई

बठिण्डा मे प लेखराम बलिदान दिवस

धमवार प लखराम जा का बलिदान दिवस आर्य समाज बठिण्डा क प्रागण मे बडी धूम धाम के साथ मनाया गया यह कायक्रम प्रधान श्री प्रम भाटिया जा क अध्यक्षता व मन्त्री श्र बिहारा लाल जा मगगा के सचालन मे हुआ सवप्रथम हवन यज्ञ आय समाज क मान्य पुराहित प सुनाल कुमार जा शास्त्रा के आचायत्व मे सम्पन्न हआ यज्ञ प्राथनापरान्त श्रीमत दशना मगला न एक भजन सुनाया श्री पुरोहित जी ने बताया कि श्री प लेखराम जी ने फाल्गुन सुदी 3 सवत 1953 वि अनुसार 6 मार्च 1897 को रात्रि के 2 बजे नश्वर शरीर को वैदिक धर्म पर बलिदान कर दिया था पुरोहित जी ने सभी को प लेखराम जैसा बनने का प्रेरणा दा कि जिस तरह पण्डित जा धर्म के लिए जिए वैसे ही हम भा उम के लिए जीवन जिए

प्रेम भाटिया प्रधान

गान्धी नगर जालन्धर का उत्सव

आय समाज गान्धा नगर 1 जालन्धर का वाषक उत्सव व आर्य समाज स्थापना दिवस से 4 अप्रल 1999 तक मनाया जा रहा ह जिसमे कई उच्चकाटि क विद्वान व नेता गण पधार रह ह जालन्धर का सभा आर्य समाजो क अधिकारियो से प्राथना ह कि अपना आय समाज के सभा सदस्या सहित इस उत्सव म पधार कर अपना सहयोग दे

बूटाराम प्रधान

माडल टाऊन जालन्धर मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ

आपको यह सूचित किया जाता है कि हमारे पिता स्वर्गीय प्रो वेद प्रकाश जा मल्होत्रा की पहला पुण्य तिथि रविवार 14 3 99 को है इसके उपलक्ष्य मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ हमारे निवास 280 एल माडल टाऊन जालन्धर मे रविवार 7 3 99 का साय 4 बजे से आरम्भ हो रहा ह जिसका पूर्णाहुति रविवार 14 3 99 को साय 6 बजे होगी कार्यक्रम प्रतिदिन साय 4 से 6 बजे तक चलेगा

विमय मल्होत्रा

माता गार्गी देवी का निधन

आर्य समाज गोबिन्दगढ जालन्धर की प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्रीमती गार्गी देवी का 17.2 99 को देहावसान हो गया। इनका अन्तिम शोक दिवस आर्य समाज गोबिन्द गढ मे मनाते हुए श्री प धर्मदेव जी आर्य श्री प रमेश जा श्री नरेश जी मन्त्री श्रीमती कृष्णा कोच्छड जी मन्त्राणि ने व सैकडो उपस्थित लोगो ने उन्हे अपनी भावभीना श्रद्धाजलि अर्पित की। श्रीमता गार्गी देवी जी आर्य समाज के भिन्न भिन्न पदो पर रह कर कई वर्ष तक सेवा करती रही अब भी वह आर्य समाज की सरक्षक था। उनके पति स्व जगन्नाथ जी आर्य प्रादेशिक सभा के महोपदेशक रहे और कुच्छ समय साईं दास स्कूल मे सस्कृत अध्यापक के रूप मे भी कार्य करते रहे। पकिस्तान बनने से पूव श्री जगन्नाथ जी लाहौर मुलतान कोयटा बलोचिस्तान व गुजरावाला मे रहे। भारत विभाजन के पश्चात् वह जालन्धर मे आ गए और मोहल्ला गोबिन्दगढ मे रहने लग सन् 1963 मे उनका देहावसान हो गया। इन दोनो का बच्चो पर भी बहुत प्रभाव पडा। उनक सुपुत्र विश्व प्रिय जी श्री सर्वप्रिय जी सोम प्रिय जी तीनो ही बहुत सुयाग्य है। सारा परिवार बहुत हा नेक व श्रेष्ठ है। माता गार्गी देवी जी अपन पीछे भरा परिवार छोड गई हैं। उनका अभाव आर्य समाज मे सदा खटकता रहेगा। हम आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से उन्हे श्रद्धाजलि भेन्ट करते हुए परमात्मा से उनका सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं।

—*धर्मदेव आर्य*
सहसम्पादक

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामन्त्री सम्पादक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस/ऐटि प्रिंटज जालन्धर से मुद्रित होकर आय मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आय प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ ।

सवत् 1972949098 | हरिद्वार (उत्तरप्रदेश) | रजि० न० NP 17504 ୨8

रजि न PB JL/55 कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम् दूरभाष ☎ 292926

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 48 अक 50 8 चैत्र सम्वत् 2055 तदनुसार 21 मार्च 1999 दयानन्दाब्द 174 वार्षिक शुल्क 50 रुपय आजीवन 500 रुपय

महर्षि की सार्वभौमिक उदात्त भावना

ले० श्री महेश कुमार शास्त्री 1488 पटौदी हाउस नई दिल्ली-2

महर्षि दयानन्द जिस भाति अपने देश का हित चाहते थे उसी प्रकार उनके मन मे विश्व कल्याण और हित की भावना था। उन्हीं के शब्दो मे।

यद्यपि मैं आर्यावर्त देश मे उत्पन्न हुआ और बसता हू स्वदेश वालो के साथ मनुष्य की उन्नति के विषय मे बर्तता हू वैसा विदेशियो के साथ भी तथा सब सज्जनो को भी बर्तना योग्य है।

वह चाहते थे कि जिस प्रकार पूर्व काल मे भारत वासियो का देश विदेशो मे आना जाना और व्यवहार तथा सम्बन्ध होता था वैसा ही अब भी होना चाहिए।

प्रथम आर्यावर्त्त देशीय लोग व्यापार राज्य कार्य और भ्रमण के लिए सब भूगोल मे घूमते थे

एक समय व्यास जी अपने पुत्र शुक्र और शिष्य सहित पाताल अर्थात् जिसको इस समय अमेरिका कहते हैं उसमे निवास करते थे श्री कृष्ण तथा अर्जुन पाताल मे अशवतरी' अर्थात् जिसको अग्नि नौका कहते हैं उस पर बैठकर पाताल में जाकर महाराज युधिष्ठिर के यज्ञ मे उद्दालक ऋषि को ले आये थे धृतराष्ट्र का विवाह गान्धार जिसको कन्धार कहते है वहा की राजपुत्री से हुआ। माद्री पाण्डु की स्त्री ईरान क राजा की कन्या थी अर्जुन का विवाह पाताल मे जिसको अमेरिका कहते है वहा के राजा की लडकी उलोपी से हुआ था।

महाराजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ म चीन का भगदत्त अमेरिका का बब्रु वाहन यूरोप देश का विडालाक्ष ईरान का शल्य आदि सब राजा व राजदूत यज्ञ में आये थे।

महर्षि दयानन्द मनुष्य जाति को एक जाति मानते थे। इसलिए उन्होने जाति और मनुष्य की परिभाषा प्रस्तुत की

जाति जो जन्म से लेकर मरण पर्यन्त बनी रहे। जो अनेक व्यक्तियो मे एक रूप से प्राप्त हो। जो ईश्वर कृत अर्थात् मनुष्य गाय अश्व और वृक्षादि समूह हैं वे जाति शब्दार्थ से लिये जाते हैं।

मनुष्य अर्थात् जो विचार के बिना किसी काम को न करे उस का नाम मनुष्य है। मनुष्य उसी को कहना जो कि मननशील होकर आत्मवत् अन्यो के सुख दु ख हानि लाभ को समझे अन्यायकारी बलवान् से न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे परन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओ की चाह वे महा अनाथ निर्बल और गुण रहित क्यो न हा सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओ की रक्षा उन्नति प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान् और गुणवान् भी हो तथापि उनका नाश अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहा तक हो सके वहा तक अन्यायकारियो के बल की हानि और न्यायकारियो क बल की उन्नति सवथा किया करे। इस काम मे चाहे उसको कितना ही दारुण दु ख प्राप्त हो चाहे प्राण भी चले जावे परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक कभी न होवे।

मनुष्य को सबसे यथायोग्य स्वात्मवत् सुख दु ख हानि लाभ मे बर्तना श्रेष्ठ है।

मनुष्य स्वय अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द मे रहे। मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य को जानने वाला है।

जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहलाता है।

सर्वदा सत्य की विजय और असत्य की पराजय और सत्य से ही विद्वानो का मार्ग विस्तृत होता है इस दृढ सकल्प से आलम्बन से लोग परोपकार करने मे उदासीन होकर कभी सत्यार्थ करने से नहीं हटते।

मत्रदृष्टा क्रान्तदर्शी महर्षि ने स्तुत्य उदार अभिप्राय को प्रकट किया

सर्वसत्य का प्रचार कर सबको ऐक्यमत से करा द्वेष छुडा परस्पर म दृढ प्रीति युक्त कराक सबसे सबको सुख लाभ पहुचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। सर्वशक्तिमान परमात्मा की कृपा सहाय और आप्तजनो की सहानुभूति से यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल मे शीघ्र प्रवृत्त हो जावे जिससे सब लोग सब धर्मार्थ काम की सिद्धि करके सदा उन्नत होते रहे यह मेरा मुख्य प्रयोजन है।

आप्त (विद्वान) जो यथार्थ वक्ता दोष रहित धर्मात्मा विद्वान सत्योपदेष्टा सब पर कृपा दृष्टि से वर्तमान होकर अविद्यान्धकार का नाश करके अज्ञानी लोगो क आत्माओ मे विद्यारूप सूर्य का प्रकाश सद कर उसको आप्त कहत है

दयालु दयानन्द की अभिलाषा थी

आजकल बहुत से विद्वान सब मतो मे है यह पक्षपात् छोड सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो बाते सबके अनुकूल सबमे साथ हैं उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बाते हैं उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से बर्ते बर्ताव तो जगत् का पूर्ण हित होवे क्योकि विद्वानो क विरोध से अविद्वानो म विरोध बढकर अनेक विध दु ख की वृद्धि और सुख की हानि होता है

यदि मानव समाज दयानन्द का आत्मा की आवाज को सुनकर आर भावनाओ को समझकर जीवन म अपनाता तो मनुष्य देश विदेश क सीमा प्रतिबन्धो को छोडकर मानव मानव की रक्षा करने वाला हो जाता

पुमान् पुमान्स परियात् विश्वत वह तो विश्व को एक कुटुम्ब बनाना चाहत थ वे सार ससार को एक परिवार मानत थे

वसुधैव कुटुम्बक

समस्त विश्व को सब मनुष्यो का घर बनाना चाहते थे यत्र विश्व भवत्येकनीडम् विश्व भूमि माता का गोद मे जिन्होने जन्म लिया हे उसकी गोद ही सारी दुनिया ह इस दुनिया को घर की भाति हम सब मानने लग तो सम्पर्ण मानव उसकी रक्षा करने के लिए एक सूत्र मे बन्ध कर बन्धुत्व की भावना वाले बन जायें

उनका ध्येय ससार का उपकार करना था वह मसार का उपकार करना समाज का मानव का मुख्य उद्देश्य मानते थ वह चाहते थे क सबका शारीरिक मानसिक ओर सामाजिक उन्नति हा

उस महर्षि महावैज्ञानिक का ज्ञान विज्ञान तर्क प्रमाण सगत विचार सारणि पर चलकर [illegible] सबका कल्याण हा सकता

महर्षि का मनोभावनाओ स मनुष्य एक जुट बनते उनम आत्मीयता हाती उनके विचार व्यवहार एक जैसे होते। शान्त वातावरण मे सब सुखी होते

बन्धन से मुक्ति

ले० श्री आनन्द अभिलाषी जी वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर हरिद्वार

गतांक से आगे

ईश्वर प्रेरणा देता है।

तच्चक्षुर्देवहित पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतम अदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

कि हम सौ वर्ष जिये, सौ वर्ष देखें, सौ वर्ष सुनें, किसी के अधीन न हों इत्यादि। अब हम पर निर्भर है कि इस प्रेरणा से हम सात्विक जीवन व्यतीत करके सौ वर्ष जीना चाहते हैं या शराब में अथवा अन्य नशीले पदार्थों का सेवन करके इस जीवन का पहले ही अंत कर देना चाहते हैं।

सविता सूर्य को भी कहते हैं। सूर्य भी प्रेरक है। रात के व्यतीत होने पर सूर्य की किरणें जब वस्तुओं पर पड़ती हैं तो हर पदार्थ के अन्दर एक प्रकार की जागृति या प्रेरणा उत्पन्न हो जाती है। सूर्य किसी चीज का उत्पादन नहीं करता। पदार्थों में जो शक्ति निहित थी वही जाग उठती है। नया जीवन आ जाता है। अंग्रेजी का शब्द STIMULATOR आन्तरिक भावों को ठीक-ठीक व्यक्त करता है। सूर्य की किरणें यदि गुलाब पर न पड़ती तो गुलाब न खिलता। सूर्य की किरणे गुलाब नहीं। सूर्य से गुलाब नहीं बना। न गुलाब बिगड़ कर सूर्य मे लीन होता है। परन्तु गुलाब की आन्तरिक बीज रूप अविकसित शक्तियो को विकास करने मे उद्यत करने मे सूर्य प्रेरक है। विद्युत तरंग ELECTRIC CURRENT भी प्रेरक है। एक ही विद्युत कोष से पखे चल पडते हैं। आटे की चक्की है भिन्न-भिन्न यन्त्र हैं जो विद्युत की प्रेरणा से चलते हैं। शुभ कर्मों पर चलने के लिये जो व्यक्ति दूसरे लोगों को प्रेरणा करते हैं वे उन लोगो को बन्धनो से मुक्त कराने का एक पात्र बनते हैं।

सविता का अर्थ मां भी है। मां एक बहुत अच्छी प्रेरक है। माता ही सन्तान का पवित्र आत्मा बना सकती और माता उसी सन्तान को चोर और डाकू भी। महात्मा गांधी को महात्मा बनाने मे उस की माता की बहुत बड़ी प्रेरणा थी। महात्मा गांधी छोटे थे अकेले रात्रि के समय पेशाब करने के लिये न जाते थे। कहते थे कि डर आता है। मां तुम साथ चलो। माता ने कहा बेटा तू अकेला नहीं। राम तेरे साथ हैं। इन शब्दों ने गांधी को प्रेरित किया और वह राम भक्त बन गये। इसलिये अपने राष्ट्र को, जन्म भूमि, अपनी भाषा को मातृ भाषा कहते हैं। वेद को वेद माता कहा गया है।

ओम् स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।

अर्थात् हम वेद माता की स्तुति करें और उस की प्रेरणा से सब को आयु प्राण प्रजा पशु कीर्ति आदि प्राप्त हों।

परन्तु प्रेरित करने वाला व्यक्ति स्वयं बंधन रहित होना चाहिये। यदि वह स्वयं बंधा होगा तो किसी बन्धन को खोल या तोड न सकेगा वह असमर्थ रहेगा।

गुरु द्रोणाचार्य ने कौरवों को प्रेरित किया कि वह पांडवों को और नहीं तो पांच गांव दे दें। पर कौरव नहीं माने क्योंकि वे अहंकार और राजसी लोभ के बन्धन में बंधे थे। भीष्म पितामह ने भी वैसी हो प्रेरणा दी। परन्तु कौरवों ने एक न मानी। परिणाम क्या हुआ। दुर्योधन आदि सब के सब भाई मारे गये और सेना भी पराजित हुई। इसी प्रकार रावण को उसके भाई परिवार मित्र सगे सम्बन्धी सब ने प्रेरित किया कि राम के साथ युद्ध करना उचित नहीं पर उसने एक न मानी और वह प्रेरित नहीं हुआ। क्या कारण है? कारण यह कि वह प्रेरणा देने वाले लोग स्वयंबद्ध थे पर स्वयं मोह से बन्धे थे और रावण को छोड़ने की उनमे हिम्मत या शक्ति न थी। गुरु द्रोणचार्य या भीष्म पितामह दुर्योधन की पापमय जीवन की कमाई के भागीदार थे। वह उसकी कमाई का अन्न खाते थे। उन का मनोबल टूट चुका था। वह सशक्त हो कर प्रेरणा न कर सकते थे क्योंकि वह अपने आप को गुरु न जान कर दुर्योधन के दरबार का एक सदस्य मानते थे जो कि राजा के आधीन हो कर कार्य करता है।

इसलिये बन्धमुक्त होने के लिये मनुष्य किसी ऐसे अध्यापक किसी ऐसे गुरु, किसी ऐसे आचार्य का किसी ऐसे पथ प्रदर्शक या मित्र का चयन करे जो स्वयं बन्धनों से मुक्त हो तब ही उस की प्रेरणा से मनुष्य बन्धनों से छूटने के लिये स्वयं को प्रेरित कर सकता है।

(२) विष्णु—दूसरे प्रकार के लोगों को विष्णु कहा जाता है। विष्णु का अर्थ है कर्मों में व्यापक। कर्मों के धर्माधर्म को जानने वाले न्यायधीश। ऐसे व्यक्ति जो यह बता सकें कि धर्म क्या है अधर्म क्या है ? जो न्याय की दृष्टि से मन्त्रणा दें। मोहवश व्यक्ति कभी न्याय नहीं कर सकता। धृतराष्ट्र आंखों से अंधा तो था ही परन्तु मोह ने उसकी ज्ञान रूपी आंख भी छीन ली। बुद्धि पे पर्दा पड़ गया। न्याय नहीं कर सका कि पुत्रों का पक्ष अनुचित है। नहीं कह सका कि न्याय पाडवों के पक्ष में है। पुत्रों को नहीं कह सका कि पांडवों को उनका अधिकार मिलना चाहिये। मोह रूपी जाल ने धृतराष्ट्र को ऐसा फंसाया कि पांच गांव क्या समस्त राज्य भी गया और साथ-साथ, सभी के सभी पुत्र भी रणभूमि में मारे गये। भगवान कृष्ण दूत बन कर और पांडवों का संदेश लेकर कौरवों के पास गये पर दुर्योधन न्याय व्यवस्था को न समझ पाया। परिणाम हुआ भीषण युद्ध।

केवल प्रेरित होने से काम नहीं बनता। प्रेरक को धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, न्याय एवं अन्याय का भी ज्ञान होना आवश्यक है। कैकेई ने प्रेरणा करके महाराज दशरथ से भरत के लिये राज्य और राम के लिये वनवास मांग लिया। दशरथ को कैसे प्रेरित किया कि आपने वचन दिया हुआ है कि जो मांगोगी दूंगा। वास्ता दिया रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाये पर वचन न जाई। वचन बध हो कर दशरथ मान गये। कैकेई की प्रेरणा ने पुत्र मोह को त्याग दिया पर कैकेई के प्रेरणा धर्म पर न्याय पर अथवा सत्य पर आधारित न थी। परिणाम क्या हुआ पति भी खो बैठी और पुत्र का प्यार भी। कैकेई की अनुचित प्रेरणा से अयोध्या का रामराज्य १४ वर्ष के लिये पिछड़ गया। राम को वन का कष्ट सहना पड़ा, सीता हरण और फिर एक धोबी के कहने पर राम द्वारा सीता का त्याग।

इसलिये पथ प्रदर्शक वहां सविता हो वहां विष्णु भी हो। ऐसा प्रेरक जो सत्य, न्याय और धर्म अवस्था में चलता हुआ मार्ग दर्शन करे।

(३) विश्वे मरुतः—अर्थ है वह मित्र जो दिलासा देने के लिये कहते हैं मत रोवो। दूसरों को कौन कह सकता है मत रोवो-केवल वही व्यक्ति जो स्वयं नहीं रोता। रोना क्या है—परमात्मा का अपमान। परमात्मा ने कितने सुन्दर पहाड़, नदी, नाले, वनस्पति, फूल-फल बनाये हैं कितनी अनमोल वस्तुएं बनाई हैं जो कि दिल लुभाती हैं जो व्यक्ति इन को देख कर रोता है वह अभागा है। रोता कौन है जो कमजोर है। जब कोई किसी से कहता है कि मत रोवो तो वह मित्र रोने वाले व्यक्ति की सहायता के लिये वचनबद्ध हो जाता है और रोने वाले व्यक्ति को एक आशा की किरण दिखाई देती है। जब कोई व्यक्ति किसी का रोना नहीं देखना चाहता तो स्पष्ट है वह उस व्यक्ति का कोई दुःख देखना नहीं चाहता। या यूं कहा जायेगा कि ऐसा व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सुख की कामना करता है।

सुग्रीव और बाली के झगड़े का निपटारा तब ही हुआ जब भगवान राम ने सुग्रीव के आंसू पोंछे। अमेरिका जब पाकिस्तान को धड़ाधड़ युद्ध सामग्री दे रहा था तो रूस ने आ कर भारत के साथ मित्रता का हाथ बढ़ाया और भारत को सशक्त किया। जब कोई व्यक्ति किसी के आंसू पोंछता है तो अपनेपन का भाव पैदा होता है उसको केवल महसूस किया जा सकता है बताया नहीं जा सकता।

(४) स्वर्का—स्वर्का शब्द सु+अर्क अर्थात् तपस्वी लोगों से है। धूप में खड़े होने का, सर्दी मे बर्फ पर बैठने एक पांव पर खड़े होने का, न नहाने का या सदा जल में रहने इत्यादि का नाम तप नहीं। यह तो हठ है। शरीर गर्मी-सर्दी सहन करने मे सक्षम हो इस बात को शरीर का तप अवश्य कहा जा सकता है। जिस व्यक्ति के धर्माचरण में गर्मी-सर्दी सुख-दुःख राग-विराग बाधा नहीं डालते और वह इन सब को सहते हुए सत्य मार्ग पर अग्रसर होता जाता है वह तपस्वी है। तपस्या मन से शरीर से एवं वाणी से होती है।

(क्रमशः)

सम्पादकीय...

25 मार्च को मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म दिवस सारे भारत वर्ष मे ही नहीं सारे ससार मे मनाया जा रहा है। यह दिन हमारे देश मे पर्व के रूप मे मनाया जाता है। इसे रामनवमी का पर्व कहते है। चैत्र सुदि प्रतिपदा से हमारा नव सवत्सर आरम्भ होता है और इसके ठीक आठ दिन बाद चैत्र सुदि नवमी को यह पर्व आता है। इस दिन श्री राम का जन्म हुआ था । हमारे देश के लगभग सभी शहरो मे इस दिन बडी–बडी शोभा यात्राएं निकाली जाती है और बहुत ही हर्षोल्लास प्रकट किया जाता है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम भारत की सस्कृति के एक महान स्तम्भ है। रामायण उनकी महानताओ को प्रकट करने वाला एक महान ग्रन्थ है जिसको पढ कर पता चलता है कि उस काल मे भारत की धार्मिक सामाजिक और राजनैतिक दशा कितनी उन्नत थी। रामराज्य की बहुत महान विशेषताए इस ग्रन्थ के अन्दर विद्यमान है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जीवन चरित्र बहुत ही प्रेरणाओं से भरपूर है। वह एक आर्य पुरुष है और वह सभी विशेषताए उनमे विद्यमान है जो एक आर्य मे होनी चाहिए। वह एक आज्ञाकारी पुत्र है। माता–पिता की प्रत्येक आज्ञा को उन्होंने शिरोधार्य माना है। भाईयों मे बडा होने से व सबसे बुद्धिमान होने से महाराज दशरथ उनका राजतिलक करना चाहते है उन्हे अपने स्थान पर राजा बनाना चाहते है और इस बात की सार्वजनिक घोषणा भी कर देते है महारानी कैकेई जो महाराज दशरथ की प्रिय थी उसने अचानक पूर्व दिए गए अपने दो वर राजा से माग लिए एक मे अपने बेटे भरत को राजतिलक और राम को चौदह वर्ष का वनवास। महाराज दशरथ राम वनवास की बात सुनकर परेशान हो गए और वह राम को यह न कह सके कि तुम वन मे चले जाओ परन्तु जब राम को सारी स्थिति का माता कैकेई से पता चला तो उन्होने पिता को नमस्ते करते हुए वन जाने की आज्ञा मागी पिता ने मौन स्वीकृति दी परन्तु राम ने इसे ही शिरोधार्य किया और वह वन को चल दिए। जब वह चलने लगे तो उनकी धर्म पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण भी उनके साथ चल पडे। राम ने उन्हे बहुत रोकना चाहा पर वह नही रुके।

राम अपने तीनो भाईयो से बहुत प्यार करते थे और भाई भी राम से बहुत प्यार करते थे। इसी प्यार के वशीभूत लक्ष्मण उनके साथ वन मे गया और जब भरत ननीहाल से आया और उसे पता चला कि मेरी माता की कुबुद्धि हो जाने से और उसके द्वारा दो वर मागे जाने से राम को 14 वर्ष का वनवास हो गया है और पिता जी का राम के वियोग मे स्वर्गवास हो गया है तो आते ही वह वन मे से राम को लेने को दौड पडे। वह अपने अयोध्या वासियो व अपनी माताओ व उच्चाधिकारियों सहित चित्रकूट मे पहुचे जहा राम वन मे ठहरे हुए थे। उन्होने राम को वापिस अयोध्या मे चलने का आग्रह किया। राम ने स्पष्ट किया कि 14 वर्ष से पूर्व वह अयोध्या मे वापिस नहीं जायेगे। इस पर भरत ने भी राज गद्दी पर बैठने से इन्कार कर दिया। इस पर निश्चय हुआ कि राम अपनी खडाऊ दे दे उन्हे राजगद्दी पर रख दिया जाएगा। भरत राजगद्दी पर नही बैठेगा परन्तु 14 वर्ष तक राम की अनुपस्थिति मे राज्य की रक्षा करेगा। यह था भाईयों का आदर्श। एक भाई का दूसरे भाई के लिए त्याग। आज हम कहा खडे है यह जरा विचार कर देखे क्या आज भी ऐसे भाई कही नजर आते है जिनमे इतनी त्याग की भावना हो। आज तो एक–एक फुट भूमि के लिए एक भाई दूसरे भाई का वध तक कर देता है। आज राम को मानने वाले रामनवमी का पर्व मनाने वाले राम से क्या शिक्षा ले रहे है इस पर जरा विचार करे।

राम एक आदर्श पति है वन मे धोखे से रावण सीता का हरण करके ले जाता है। राम एक राजकुमार है उनके पिता ने तीन विवाह किए है वह भी दूसरा विवाह कर सकते है परन्तु वह नही करते और सीता की खोज करते है। जब यह पता चलता है कि लका पति रावण सीता को उठाकर ले गया वह उसकी खोज करवाते है और सीता को प्राप्त करने के लिए लका पर चढाई कर देते है। इसमे वह अयोध्या से सेना नही मगवाते अपनी शक्ति अपने बल पर ही वानर जाति के कुच्छ सैनिको को साथ लेकर रावण से युद्ध करते है और अपने प्राणो को व लक्ष्मण के प्राणो को सकट मे डाल कर भी वह सीता को प्राप्त करते है यह है उनका एक पत्निव्रत था जिस की जितनी सराहना की जाए कम है।

वह एक सच्चे मित्र है जिसको भी उन्होने अपना मित्र बना लिया उसको पूरा–पूरा साथ दिया। उन्होने सुग्रीव को अपना मित्र बनाया तो बाली को मार कर सुग्रीव को किष्कन्धा की राजगद्दी पर बिठा दिया। उसके बाद उन्होने सुग्रीव को अपना मित्र बनाया तो रावण को मार कर उसको लका का राजा बना दिया। वह अपने मित्र के लिए कठिन से कठिन कार्य करने के लिए तैयार है। जिसको जो वचन दे दिया उसको पूरा किया।

वह एक श्रेष्ठ राजनैतिज्ञ है। सीता हरण के पश्चात यदि वह चाहते तो रावण से लडने के लिए वह अयोध्या से सेना मगवा सकते थे परन्तु उन्होने ऐसा इसलिए नही किया क्योंकि यदि वह ऐसा करते तो रावण भी अपनी सहायता के लिए अपने सहयोगी राजाओ को बुला सकता था। वह युद्ध की बहुत बडी तैयारी करता परन्तु जब उसे पता चला कि राम केवल वानर जाति के लोगो को लेकर युद्ध के लिए आ रहा है तो उसने युद्ध की कोई तैयारी न की वह यही समझता रहा कि लका मे आने के बाद वह वापिस नही जा सकेगा। परन्तु राम अपनी पूरी तैयारी के साथ लका मे गये और रावण जैसे राक्षस को समाप्त करके पृथ्वी को राक्षसो से खाली किया।

राम एक श्रेष्ठ राजा थे। उनके राज्य मे कोई दु खी नही था वह छोटे बडे सभी का सम्मान करते थे। अपने चारो भाईयो को तो उन्होने प्रसन्न रखा ही है इसके साथ ही उन्होने अपनी सारी प्रजा को सुखी रखा।

इस प्रकार राम का जीवन एक आदर्श जीवन है जो प्रेरणाओ से भरा पडा है वह शौर्य व पराक्रम के एक पुञ्ज है बडे–बडे बलशाली राक्षस भी उनके सामने नही ठहर सके उनका दृढता से मुकाबला करते हुए उन्होने उन्हे समाप्त किया।

इस प्रकार 25 मार्च को रामनवमी का पर्व मनाते हुए हमे राम के जीवन से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। अपने बच्चो को राम के जीवन से प्रेरणा लेने के लिए हमे प्रोत्साहित करना चाहिए। हमे पारिवारिक मर्यादाओ का पालन करने का निश्चय करना चाहिए। आतताईयों और दुष्टों का नाश करने व श्रेष्ठो को ऊचा उठाने का प्रयास करना चाहिए। हम इस दिन केवल राम का गुणगान ही न करे बल्कि उनके जीवन से प्रेरणा लेने का इस दिन व्रत ले तभी यह पर्व मनाना हमारे लिए सार्थक होगा।

धर्मदेव आर्य
सह–सम्पादक

गृहस्थाश्रम-वैदिक स्वर्ग का मूलाधार

ले श्री अखिलेश कुमार सुभाष बाजार मवाना (मेरठ)

गताक से आगे

(६) **गृहस्थाश्रम मे गोत्रो का प्रभाव** – माता के कुल की छ पग्न तथा पिता क गोत्र की न हो ा कन्या से स्त्री तथा पुरुष का विवाह हाना उचित है। जिस प्रकार पाना म पानी मिलने स विलक्षण गुण नहा हाता वैस एक गोत्र पितृ व माता क कुल म विवाह हाने मे धातुओ मे अदल बदल न होन स उन्नति नहीं हाती तथा जैस दूध में मिश्री व सोठ आदि औषधियों के मिलाने से उत्तमता हाना ह उसा प्रकार अलग अलग गात्रा स स्त्रा तथा पुरुष का विवाह हाना उत्तम हे

(७) **स्त्री तथा पुरुष के विवाह मे दूरी का प्रभाव** कन्या का नाम दुहिता इस कारण हा है कि कन्या का विवाह दूर दश म होना हितकारा ह जिसको निम्न उदाहरणो से समझा जा मकता है।

(1) जिस प्रकार एक देश का रागा दूसर दश मे वायु तथा खान पान क बदलन से रोग रहित होता है।

(2) निकट सम्बन्ध करने म सुख दु ख का आभास तथा विरोध हाना भा सम्भव हे जबकि दूर देश मे विवाह करन पर सम्बन्ध बढता है।

(3) दूसरे देशो के पदार्थों की प्राप्ति भा दूर देश मे विवाह होने पर सहजता से होती है।

(4) कन्या क पिता के कुल म दरिद्रता भा हो सकती है। कन्या का विवाह निकट होने पर कन्या जल्दी जल्दी आवेगी तब भी उसके दरिद्र पिता का कन्या को कुच्छ न कुछ दना हागा

) स्त्रियो का स्वभाव प्राय तीक्ष्ण तथा मृदु होता हे ओर जब स्त्रा तथा पुरुष म आपस का वैमनस्य होगा ता स्त्रा पिता क कुल म चला जायगी। जिसक कारण वमनस्य बढेगा।

(८) **स्त्री तथा पुरुष का विवाह किस कुल मे न हो** –जा कुल सत्क्रिया स हान सत्पुरुषा से रहित वदाध्यन से विमुख शरार पर बड बड लाभ बवासार दमा खासी क्षयी श्वेत कुष्ठ व गलित कुष्ठयुक्त हा ता उन कुलो मे कन्या व वर के साथ विवाह नही हाना चाहिए क्याकि य सब दुर्गुण और रोग विवाह करन वाल के कुल मे प्रविष्ट हो जात ह इसलिए उक्त कुलो मे स्त्री तथा पुरुषो का विवाह नहीं होना चाहिए।

(९) **स्त्री तथा पुरुष का विवाह किस कुल मे हो** – जिस कुल मे स्त्री से पुरुष तथा पुरुष से स्त्री सदा प्रसन्न रहते हैं उस कुल मे आनन्द लक्ष्मी और कीर्ति निवास करती है तथा जहा विरोध कलह होता है वहा दुख दरिद्रता और निन्दा निवास करती है विवाह को सुखमय बनाने के लिय स्त्री तथा पुरुष दोनो को विद्या विनय शील रूप आयु बल कुल शरीर का परिणाम आदि यथा योग्य होना चाहिए। जिसके अन्य उदाहरण निम्न प्रकार हैं।

(1) सब ओर से यज्ञोपवीत ब्रह्मचर्य सेवन उत्तम शिक्षा तथा विद्या से युक्त सुन्दर वस्त्र धारण किये पूर्ण जवान होकर विवाह होना उत्तम है।

(2) जो किसी ने दुही न हो बाल्यवस्था से रहित सब प्रकार स उत्तम व्यवहारो से परिपूर्ण कुमारवस्था का उलघन करने वाला नवीन नवीन शिक्षा तथा पूर्ण जवान होके स्त्री तथा पुरुष का विवाह होना उत्तम है।

(10) किस तरह का शारारिक कन्या से विवाह करे जिसक सरल सीधे अग हो जिसका नाम सुन्दर हो हस हथिनि के तुल्य जिसकी चाल हो सूक्ष्म लोम वाली हो लम्बे लम्बे केश तथा दात युक्त हो जिसके सब अग कोमल हो वैसी स्त्री के साथ विवाह करे।

(11) **किस तरह की शारीरिक कन्या से विवाह न करे** –पीले रग वाली पुरुष स अधिक लम्बी चौडी तथा बलवान रोगी लोभ रहित अधिक लोभ वाली अधिक बोलने वाली तथा भूर नेत्रो वाली कन्या से विवाह नहीं करना चाहिए।

(12) **किन नामो वाली कन्या से विवाह न करे** अश्विनी भरणी रोहिणीदेई रवतीवाई चित्तारी आदि नक्षत्र नाम वाली तुलसिया गेदा गुलाब चम्बा आदि वृक्ष नाम वाली गगा यमुना आदि नदी नाम वाली चाडाली आदि अन्त्य नाम वाला विन्धया हिमालया पार्वती आदि पर्वत नाम वाली माधोदासी मीरादासी आदि पुष्प नाम वाली और भीमकुमारी चण्डिका काली आदि भीषण नाम वाली कन्या के साथ विवाह न करना चाहिए। यशोदा सुखदा आदि नाम वाली कन्या क साथ विवाह करना चाहिए।

(13) **विवाह किसके आधीन होना चाहिए** –लडका व लडकी के आधीन विवाह उत्तम है। जो माता पिता कभी विवाह करना विचारे तब भी लडका तथा लडकी की प्रसन्नता के बिना नहीं होना चाहिए। क्योकि एक दूसरे का प्रसन्नता से विवाह होने मे विरोध बहुत कम होता है तथा सन्तान उत्तम होती है। अप्रसन्नता के विवाह मे नित्य क्लेश ही रहता है। विवाह मे मुख्य प्रयोजन वर तथा कन्या का है माता पिता का नहीं। क्योकि आपस मे प्रसन्न रहने मे सुख तथा अप्रसन्न रहने म दु ख होता है।

(14) **विवाह के प्रकार** – विवाह आठ प्रकार के होते हैं।

(1) **ब्राह्मण** –वर तथा कन्या दोनो यथावत ब्रह्मचर्य से पूर्ण विद्वान धार्मिक तथा सुशील हो उनका परस्पर प्रसन्नता से विवाह होना ब्राह्म कहाता है।

(2) **दैव** - विस्तृत यज्ञ करने मे ऋत्विक कर्म करते हुए जमाता का अलकार युक्त कन्या को देना दैव विवाह कहलाता है।

(3) **आर्ष** वर से कुछ लेके विवाह होना आर्ष विवाह कहलाता है।

(4) **प्राजापत्य** –जब वर तथा कन्या का विवाह धर्म की वृद्धि करने के लिए होता है तो ऐसे विवाह को प्राजापत्य विवाह कहते हैं।

(5) **आसुर** –वर तथा कन्या को कुछ देके किये जाते हैं ऐसे विवाह को आसुर विवाह कहते हैं।

(6) **गान्धर्व** –अनियम तथा असमय दोनों की इच्छापूर्वक वर तथा कन्या का परस्पर सयोग होना गान्धर्व विवाह कहलाता है।

(7) **राक्षस** –लडाई करके बलात्कार अर्थात छीन झपट व कपट से कन्या का विवाह होना राक्षस विवाह होता है।

(8) सोई हुई तथा नशे मे धुत पागल कन्या से बलात्कार सयोग करना पैशाचिक विवाह कहलाता है।

(15) **विवाह की गुरुकुल रीति** –जब एक वर्ष व छ माह ब्रह्मचर्याश्रम और विद्या पूरा हान मे शेष रहे तब कन्याओ का प्रतिबिम्ब कन्याओ का अध्यापिकाओ के पास तथा कुमारा के प्रतिबिम्ब कुमारो के अध्यापक के पास भेज देवें। जिस जिस का रूप मिल जाये उस उस के इतिहास अर्थात जन्म से लेके उस दिन तक उसकी (जन्म चरित्र पुस्तक) अध्यापक लोग मगवा के देखे जब दोनो के गुण कर्म तथा स्वभाव सदृश्य हो तब जिस जिस के साथ जिस जिस का विवाह होना योग्य समझें उस उस पुरुष व कन्या का इतिहास कन्या व वर के हाथ म देवे इसमे जो तुम्हारा अभिप्राय हा सो हमको विदित कर देना। जब उन दोनो का निश्चय परस्पर विवाह करने का हो जाये तब उन दोना का समावर्तन एक ही समय मे होवे। जो वह दोनो अध्यापक के सामने विवाह करना चाहें तो वहा नहीं तो कन्या के माता पिता क घर मे विवाह होना योग्य है। जब वे समझे तो तब उन अध्यापका व कन्या के माता पिता आदि भद्र पुरुषो के सामने उन दोनो का आपस मे बातचीत शास्त्रार्थ कराना और जो भी गुप्त व्यवहार पूछे वह भी सभा मे लिखकर एक दूसरे के हाथ मे देकर प्रश्नोत्तर कर लवें सन्तुष्टी होने पर दोनो को परस्पर विवाह करना उत्तम हे।

(16) **विवाह की स्वयवर रीति** –आर्यावर्त्त दश मे स्वयवर की प्रथा चली आ रही है जा सबसे उत्तम रीति होती है

(17) **विवाह से पूर्व वर तथा कन्या का एकान्त मे मिलना वर्जित** – कन्या तथा वर का विवाह से पूर्व एकान्त मे मल नही होना चाहिए। क्याकि युवावस्था मे स्त्री तथा पुरुष का एकान्त वास दूषण कारण है।

(18) **कन्या के विवाह का उत्तम समय** जिस दिन कन्या रजस्वला होकर शुद्ध हा तब वेदा और मण्डप रच के अनक सुगन्ध्यादि द्रव्य तथा घृतादि का होम करन चाहिए तथा विद्वान पुरुषों तथा स्त्रिया का यथा योग्य सत्कार करना चाहिए

शास्त्रार्थ का खुला चैलंज

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर स्त्रियो को अपमानित होने से बचाने का सकल्प

सत्यकाम आर्य-सुधीर (यमुनानगर)

गत 8 मार्च 99 का अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओ को और अधिक सम्मान एव अधिकार दन का सकल्प स्थान 2 पर लिया गया। वैदिक सस्कृति मे तो आदिकाल स ही स्त्रियो को ज्येष्ठ श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। गार्गी लापा मुद्रा मैत्रेया न जाने कितनी विदुषी देवियां हमारे नक्षत्र पर चमक रही हैं। राष्ट्र उत्थान मे महिलाओ का स्थान किसी भी दृष्टि से न्यून नहीं हे यही कारण है कि स्त्रियो को ससद मे भी 33 प्रतिशत आरक्षण का व्यवस्थआ पर गहन चितन हो रहा है।

परन्तु दुर्भाग्य है कि जिन सकुचित सकीर्ण अवैदिक विचारो न हमारी वैदिक सस्कृति को कलकित करन का कुप्रयास किया था आज भी कुछ तत्व उस दिशा में प्रयत्नशाल हैं। उन्होन इतिहास से कुछ सीखा नहीं कि हम कितना भयकर परिणाम भुगत चुके हैं। ऐसा ही एक घृणित कुप्रयास गत दिनो हमारे नजदीक ही अमादलपुर यमुनानगर के सूर्य मन्दिर के कथा समारोह मे देखने को मिला जिसका आयोजन ब्रह्मचारी अखिलानन्द जा ने किया था। हजारो का सख्या के साथ प्रमुख शकराचार्य भी वहा उपस्थित थे। विद्वानो मे वहा एक बटुक शास्त्री जिन्हे वास्तव म भटक शास्त्री कहना ज्यादा न्यायोचित है। वह भी प्रवचन करता था। जिन्होने पाण्डाल से घोषणा कर दी कि स्त्रिया वेद मन्त्र नही बाल सकती गायत्री मन्त्र बोलने का भी उन्हे अधिकार नही इतना ही नहीं उन्होने चैलेज की शैली मे कहा स्त्रियो का ओ३म् नहीं बोलना चाहिए। ओ३म् नम शिवाय नही स्त्रिया केवल नम शिवाय कह सकता हैं। आरती मे भी ओ३म् जय जगदाश को भी जय जगदीश कहे। उन्हान सात प्रथा को भी उचित और वेद सम्मत बता कर इस कुप्रथा की वकालत की और प्रेरित किया कि स्त्रिया इस सति प्रता को श्रद्धा की भावना से देखे। उस अन्धकार युग का बात के औचित्य को सिद्ध करन के लिए कोई वैदिक शास्त्रीय प्रमाण न होते हुए भी उन्होने जिस निर्लज्जता से सब कुच्छ कहा सामान्य श्रोता (सोता) तो सुनते रह उनकी तो कोई प्रतिक्रिया न हुई परन्तु विवेकशील स्वाध्यायी सामाजिक समानता के समर्थक वैदिक जनो को इस प्रवचन से मानसिक पीडा हुई वह तो तिलमिला उठे जिस नारि जाति को मा का स्थान देते हैं उसका घोर अपमान। बात बढते फैलत आर्य समाज के लोगो व गायत्री परिवार के लोगो तक पहुची वो सब सैंकडो की सख्या मे पाण्डाल स्थल पर गायत्री मत्र बोलते हुए पहुचे जिनका नेतृत्व महिलाए कर रही थीं जो उच्च स्वर से वेद मन्त्र गायत्री मन्त्र व ओ३म् बोलती जा रही थीं। पाण्डाल मे पहुचे ही थे कि पुलिस ने चारो ओर से घेरा डाल कर जाने से रोक दिया। बार बार अनुरोध करने के बावजूद श्री भटक शास्त्री जी बाहर सडक पर पधारे। वैदिक विद्वानो ने (बहुत नाम है स्थानाभाव के कारण नहीं लिख रहा) श्री शास्त्री जी से अनेक प्रश्न किए परन्तु एक प्रश्न का भी युक्ति पूर्ण समाधान वो नही कर पाए। गायत्री परिवार के महानुभावो के प्रशसनीय योगदान से पुन वेद के 2 मन्त्र विद्वानो ने प्रस्तुत किए कि इसमें स्त्रियो को वेद मन्त्र पढने का अधिकार है आप कोई प्रमाण दे। जिसम निषेध हो। परन्तु वो कोई प्रमाण न दे सके काफी विचार विनिमय हुआ परन्तु कोई सन्तोष जनक समाधान प्रस्तुत न कर वह धीरे से पाण्डाल को लौट गए। तत्पश्चात अनेक बार प्रयास के बावजूद वो सार्वजनिक विचार विमर्श के लिए तैयार नही हुए। तब से स्त्रियो मे मानसिक पीडा अपमान भावना एव विद्रोह पनप रहा है आखिर क्यो इस समारोह मे नारी जाति को तिरस्कृत किया गया।

आर्य समाज इस कुप्रयास की भरसक निन्दा करता है एव ब्रह्मचारी अखिलानन्द जी सूर्य मन्दिर अमादलपुर यमुनानगर से प्रार्थना करता है कि वह अपने द्वारा आयोजित इस समारोह मे हुए नारी जाति के घोर अपमान के लिए समस्त महिलाओ स सार्वजनिक क्षमा याचना करे। ताकि महिला दिवस जैसे आयोजनो का कुछ महत्व बन सक यह केवल नाटक बन कर न रह जावे।

द्वितीय जैसा उन्होने पूर्व कार्यक्रम आयोजित कर स्त्री जाति का सार्वजनिक अपमान का कुकृत्य कराया है उस पाप के निवारणार्थ श्री शास्त्री जी (बटुक) से आर्य विद्वानो का खुला शास्त्रार्थ करा सत्यासत्य का निणर्य करावें प्रमाण केवल 'वेद हो जिन्हे आर्य समाज व स्वय श्री बटुक शास्त्री जा न स्वीकार किया है हजारो का उपस्थिति मे समारोह पूर्वक सत्य असत्य क निर्णय हतु शास्त्रार्थ हा किसी कटुता या द्वष स हम ऐसा नहीं कर रह वेद प्रमाण स जा सिद्ध निर्णय हो उस सब स्वाकार करे सति प्रथा पर भा हम शास्त्रार्थ का खुला निमन्त्रण देते है अगर सप्रमाण सिद्ध नहीं कर सकते ता श्री शास्त्री जी मच स तमाम महिलाओ से क्षमा मागे।

मैं समझता हू स्त्रियो का हम अगर इस भेद भाव अपमान व पुन सति जैसी बुराई से बचा पाये तब ही अर्न्तराष्ट्रीय महिला दिवस मनाना सार्थक होगा।

ऋषि दयानन्द को याद करो

ले प मक्खनलाल निर्भय सिद्धान्त शास्त्री भजनोपदेशक ग्राम व पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

आर्य वीरो जगत गुरु ऋषि दयानन्द को याद करो।
करो वेद प्रचार विश्व मे समय न अब बर्बाद करो॥
नव सवत्सर आ गया जग मे नव सन्देश लिए।
स्वामी विरजानन्द के सच्चे शिष्य धर्म के लिए जिए।
ऋषि वर दयानन्द ने सचमुच जीवन भर उपकार किए।
वेदामृत पिलाया जग को स्वय भयकर जहर पिए॥
दयानन्द के वीर सैनिको निर्भय हो सिह नाद करो।
करो वेद प्रचार विश्व मे समय न अब बर्बाद करो॥
आज जगत मे वेद विरोधी पाखण्डी है जोरो पर।
मानवता तो विलख रही है घूम रहे है दुष्ट निडर।
मासाहारी और शराबी बढते जाते है पामर।
यवन और ईसाई पापी मस्ती मे है रहे विचर॥
कृष्ण बनो लो चक्र सुदर्शन मन मे नही विशाद करो।
करो वेद प्रचार विश्व मे समय न अब बर्बाद करो॥
याद रखो इस दुनिया मे जो भले काम कर जाता है।
अबला दीन अनाथो को जो अपने गले लगाता है।
विघ्न और बाधाओ से जो कभी नही दहलाता है।
धन्य उसी का तो जीवन है जग मे आदर पाता है॥
स्वामी श्रद्धानन्द बनो तुम वीरो मत प्रमाद करो।
करो वेद प्रचार विश्व मे समय न अब बर्बाद करो॥
युवक-युवतिया बिगड गए है गन्दे गाने गाते है।
गीता रामायण वेदो को कल्पित ग्रथ बताते है।
स्वास्थ्य-चरित्र दिया खो पगले निर्बल हो दुख पाते है।
राम लक्ष्मण से भ्राता अब कही नजर न आते है॥
अर्जुन भीम नकुल सी पैदा फिर से तुम औलाद करो।
करो वेद प्रचार विश्व मे समय न अब बर्बाद करो॥
अगर भलाई चाहो तो तुम नियम एक ये अपनाओ।
कथनी करनी एक बनाओ दुनिया मे इज्जत पाओ॥
वेदो का स्वाध्याय करो विद्वान अनूठे बन जाओ।
अपने प्यारे आर्यावर्त को भूमडल पर चमकाओ॥
पाखण्डो के बधन तोडो जन-जन को आजाद करो।
करो वेद प्रचार विश्व मे समय न अब बर्बाद करो॥

गगरेट में वैदिक संस्कृति सम्मेलन

मित्तल उद्योग ऊना रोड़ गगरेट (हि प्र) मे चैत्र सुदि प्रतिपदा नव सवत्सर 2056 तदनुसार 18 मार्च 1999 से 24 मार्च 1999 तक प्रातः 7 से 9 बजे तक राष्ट्रभृत यज्ञ, भजन तथा उपदेश होगे जिसके ब्रह्मा पूज्यपाद स्वामी दीक्षानन्द जी होगे। भजन श्री निर्मल नरेश भजनोपदेशक के होगे। रात्रि 7.30 से 9.30 बजे तक वेद कथा होगी। 20 मार्च को प्रात. 11 बजे से सायँ 4.30 बजे तक सस्कृत सम्मेलन होगा। जिसमें मुख्यातिथि श्री ईश्वर दास जी धीमान शिक्षा मन्त्री हि प्र होंगे। 21 मार्च रविवार को प्रातः 9.30 बजे से दोपहर दो बजे तक वैदिक संस्कृति सम्मेलन पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी की अध्यक्षता में होगा। मुख्यातिथि श्री ईश्वर दास जी धीमान शिक्षा मन्त्री, श्री विजय जी चोपड़ा पंजाब केसरी होंगे। श्री जगजीत सिंह जी महाराज (भैनी साहब वाले) श्री महन्त राम प्रकाश दास, दातार पुर वाले, श्री प्रो सुरेश वात्स्यायन, डा राम अवतार तथा अन्य कई महानुभाव सम्मेलन को सम्बोधित करेंगे।

मेरी सभी आर्य महानुभावो एव बहनो से प्रार्थना है 20 व 21 मार्च के विशेष कार्यक्रमों मे अवश्य गगरेट पहुंचे भोजन व ठहरने की पूरी व्यवस्था होगी।

—चतुर्भुज मित्तल

ओ परोपकारी महान हैं सन

ले. श्री किशोरी लाल प्रेम बन्धु (हि. प्र.)

विच सारे ससार दे ऋषि जया, न कोई पीर होया न फकीर होया।
न कोई साधु सन्त अवतार होया, न कोई धीर होया न कोई वीर होया।
ओ दया आनन्द दी मूर्ति सन, ओ मानवता दे अवतार हैं सन।
भुले भटकिआ नु राह विखाण वाले, सच्चे ज्ञान दे ओ भण्डार है सन।
ओ सुन्दर सुशील गुणवान है सन, ओ बाल ब्रह्मचारी बलवान है सन।
ओ निर्लोभ निर्मोहि निर्वैर है सन, ओ परोपकारी महान है सन।
अज्ञान दे घुप हनेरे दे विच ऋषि ज्ञान दी जोत जगा दीति।
सारे जग नू प्रेम दा राह दस के, ऋषि प्रेम दी गगा बहा दिति।
उस निडर नू किसी दा डर नहीं सी, खरी-खरी ओ सब नू सणाऊदा सी।
ओ पाखण्ड दिया जड़ा हिलाऊदा सी, वेद ज्ञान दा अमृत पिलाऊदा सी।
सच्च झूठ दा निर्णा करण दे लई, सत्यार्थ प्रकाश ओ लिख गए ने।
वेद अर्था नू समझण समझाण दे लई वेद भाष्य दी भूमिका लिख गए ने।
जिस ने दुध विच घोल के जहर दित्ता, ऋषि उस नु भी छाती लगा लित्ता।
अपने कोलों रुपये दे करके, उस नू बचणे लई दूर भगा दित्ता।
इटा पत्थरा गालियां खा के भी, ऋषि वेद प्रचार नू छडिया नई।
अपनी जान दी बाजी लगा करके ऋषि परोपकार नू छडिया नई।
सुणों प्रेम दी गल नू ध्यान धरके, जेकर ऋषि दा ऋण चुकावणा ए।
करो प्रण ए वेदा दे चानणे नू, सारे जग दे विच फैलाऊणा ए।

बुढलाडा में ऋषिबोधोत्सव

आर्य समाज बुढलाडा मे दयानन्द बोध रात्रि (महाशिवरात्रि) [illegible] गया। इस पावन दिवस पर दिनांक 14 2 99 को प्रातः हवन यज्ञ प्रार्थना एवं प्रवचन का कार्यक्रम हुआ, जिसमे डी ए वी आर्य स्कूल के बच्चो व अध्यापिकाओ व आर्यसमाज के प्रधानमन्त्री जी ने बहुत ही श्रद्धा व भक्ति से भाग लिया। सुशील कुनार आर्य ने ऋषि जी के जीवन पर प्रकाश डाला व भजन गाये। डी ए वी आर्य स्कूल बुढलाडा की अध्यापिका मधुबाला ने "बाहर की तू माटी फांके, अपने अन्दर क्यूं न झांके" भजन सुनाकर मन्त्र मुग्ध कर दिया। श्री कृष्ण जी व डाक्टर साहब ने आर्य समाज के नियमों पर प्रकाश डाला व ऋषि जी का जीवन चरित्र सुनाया।

—सुशील कुमार

लुधियाना में आर्य समाज स्थापना दिवस

जिला आर्य सभा लुधियाना के तत्वावधान में 21 मार्च 1999 रविवार को आर्य कालेज लुधियाना मे आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया जा रहा है। यह कार्यक्रम दोपहर बाद 2.30 से 5 बजे साय तक चलेगा जिसमे, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा, महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा महापौर नगर निगम लुधियान के स उपेन्द्र सिंह ग्रेवाल स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती स्वामी सुमनायति जी, कु नम्रता सोनी गायक, प्रिं वी के मेहता तथा अन्य कई विद्वान पहुंच रहे हैं। लुधियाना जिला की सभी आर्य समाजो के अधिकारियों से प्रार्थना है कि अपनी आर्य समाज के अन्य सदस्यो सहित अधिक से अधिक सख्या मे समय पर पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाए।

—विजय सरीन मन्त्री

लुधियाना में आर्य वीर दल शिविर

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का वार्षिकोत्सव 1 जून से 6 जून 1999 को मनाना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर लगाया जायेगा जो कोई इस शिविर मे भाग लेना चाहे आयु 15 वर्ष से 30 वर्ष तक होनी चाहिए, आने के लिए अपना पता आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार के मन्त्री प्रधान को भेज देवे। शिविर मे भाग लेने वाला किसी आर्य समाज से स्वीकृतिक होना आवश्यक है।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना को सुयोग्य विद्वान पुरोहित की आवश्यकता है। संगीतज्ञ को पहल दी जायेगी, दक्षिणा योग्यता एव अनुभव के अनुसार दी जाएगी। मन्त्री/प्रधान आर्य समाज से सम्पर्क करे।

—[illegible] प्रधान

उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव सम्पन्न

युग प्रवर्तक महर्षि दयानंन्द की अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश की सृजन स्थली, पावन सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर में 26 फरवरी से 28 फरवरी 99 तक भव्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का आयोजन धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस पंचम महोत्सव में आर्य जगत् के संतशिरोमणि वयोवृद्ध सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती को जब श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्वबोध सरस्वती, समारोह की मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय उपमत्री डा गिरिजा व्यास एवं समारोह संयोजक के देवरत्न आर्य ने शाल, श्रीफल के साथ 31 लाख रुपए का चैक भेंट किया तो आर्यजनो से खचाखच भरा भव्य पांडाल वैदिक धर्म की जय के उद्घोषों से गुंजायमान हो गया। पूज्य स्वामी जी ने यह राशि सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल के विकास हेतु प्रदान कर दी।

इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी ने अपने उद्‌बोधन मे सत्यार्थ प्रकाश की आवश्यकता व प्रासंगिकता को बताते हुए प्रत्येक भारतीय के घर में इस मानवोपयोगी ग्रन्थ को पहुंचाने का आग्रह किया, क्योंकि यही ऐसा ग्रन्थ है जिसका प्रणयन ब्रह्मचारी, युवा, गृहस्थी सभी के लिए लाभकारी है। उन्होने सत्यार्थ संदेश घर-घर पहुचाने हेतु आर्य कार्यकर्त्ताओ का आह्वान किया।

—अशोक आर्य

पौड़ी गढ़वाल में श्रद्धांजलि सभा

7 3 99 को आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी गढ़वाल के उपप्रधान स्व श्री थानसिंह जी के सम्मान में श्री हेमराज प्रियव्रत प्रधान आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी की अध्यक्षता में प्रातः 11.00 बजे से "दयानन्द भारतीय स्मारक भवन" ज्यपुरी मे एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न स्थानों से गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

स्वर्गीय श्री थानसिंह जी विगत वर्षों से आर्य सभा सावली आदि पंचपुरी गढ़वाल के उपप्रधान पद पर थे। अपने पद की गरिमा को समझते हुए समाज के प्रत्येक कार्य में सहानुभूति पूर्वक रुचि लेते थे। वे एक स्वाध्याय शील व्यक्ति थे। कुछ माह से अस्वस्थता के कारण दिनांक 28.2.99 को उनका अपने ही निवास पर निधन हो गया है। उपस्थित सभी व्यक्तियों ने अपनी-अपनी ओर से दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

नैशनल कालेज फार गर्ल्ज गढदीवाला में पर्यावरण दिवस

2.3.99 को नैशनल कालेज फार गर्ल्ज गढदीवाला (जिला होशियारपुर) मे पर्यावरण दिवस बहुत उल्लास और उत्साह से मनाया गया। इस शुभ अवसर पर शहर के गणमान्य बुद्धिमान लोग व ओकाडा आर्य पुत्री पाठशाला सीनियर सैकेण्डरी स्कूल का स्टाफ और प्रिंसीपल भी आये हुए थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा किसी कारण नहीं पहुच सके इसलिए मुख्य अतिथि के रूप मे श्री मनोहर लाल जी अधिष्ठाता साहित्य विभाग ने सभा की ओर से भाग लिया। कालेज और स्कूल की मैनेजिंग कमेटी के सदस्य और मैनेजर श्री हसराज जी सराफ जैन साहिब डा जोगिन्द्र सिंह ढड जत्थेदार श्री हरिसिंह जी एम सी गढदीवाला सरदार सम्पूर्ण सिंह जी Retd BDO आदि बहुत से सदस्य वहा आये हुए थे। प्रिंसीपल श्री धर्मसिंह जी सहोता डा जोगिन्द्र सिंह ढड आदि ने सबका फूल मालाओ से स्वागत किया। इस कालेज में लडकियो को पढाई के साथ सिलाई कढाई और कम्प्यूटर की शिक्षा भी दी जाती है। श्री मनोहर लाल जी ने वहा कपडो की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। श्री डा ढड ने प्रिंसीपल धर्म सिंह जी द्वारा पर्यावरण पर लिखी पुस्तक का विमोचन किया।

प्रिंसीपल धर्म सिंह जी ने कालेज की वार्षिक रिपोर्ट पेश की। यह कालेज लोगो के दान से चलता है इसको किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता नहीं मिलती है। लोग बाहर के देशो से इसे पैसे भेजते रहते हैं यह सब प्रिंसीपल जी की मेहनत और लगन है हिम्मत है जो कि इस कालेज को चला रहे हैं। 35 छात्राये वजीफे प्राप्त कर रही हैं और बाहर की बहुत सी सस्थायें इसे वजीफे आदि दे रही हैं।

कालेज की छात्राओं ने रगारग कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसका लोगो पर बहुत प्रभाव पडा। इस पर डा ढड साहिब और सरदार सम्पूर्ण सिंह Retd BDO ने बहुत प्रभावशाली विचार दिये। पानी को और हवा को हम कैसे शुद्ध रखे इस पर श्री हरि सिंह जी एम सी ने बहुत सुन्दर विचार दिये।

रगारग प्रोग्राम के हर शो मे अच्छे काम करने वाली छात्राओ को पहले दूसरे तीसरे न पर आने पर सम्मानित किया गया ट्राफी के साथ और भी सभी छात्राओ को जिन्होने इस कार्यक्रम मे भाग लिया को सम्मानित किया गया। इसके साथ ही प्रतिष्ठित महानुभावो को भी सम्मानित किया गया। अन्त मे श्री मनोहर लाल जी ने सबको सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज का शिक्षा क्षेत्र मे महान योगदान है। स्त्री शिक्षा के लिए आर्य समाज ने बहुत कार्य किया है। इस कालेज का पढाई मे काफी नाम है इसीलिए सीनियर सैकण्डरी स्कूल और नैशनल कालेज आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की देख रेख मे चलाये जा रहे हैं। प्रिंसीपल धर्म सिंह सहोता जी का भी धन्यवाद किया जो Retd सरकारी प्रिंसीपल हैं। इस स्कूल और आर्य समाज को उन्होने जीवन दान दिया हुआ है यह बगैर वेतन के काम करते हैं। अपने रिश्तेदारो से बाहर से पैसे मगवा मगवा कर इस कालेज को चला रहे हैं।

—मनोहर लाल आर्य

वैदिक सिद्धान्त शिविर सम्पन्न

आज आर्य समाज आर्य गुरुकुल सै 33 मे महर्षि दयानन्द सिद्धान्त रक्षिणि सभा की ओर से 14 दिवसीय वैदिक सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ जिसमे आर्य जगत के महान त्यागी तपस्वी महात्माओ नेताओ ने भाग लिया जिनमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान डा शिव कुमार शास्त्री दर्शन विषय मे भारत सरकार से सम्मानित दिल्ली विश्वविद्यालय की श्रीमती शशी प्रभा कुमार और श्री वीरपाल विद्यालकार आदि नेताओ ने भाग लिया।

पाच कर्मठ कार्यकर्ताओ ने वानप्रस्थ लेकर अपने आपको आर्य समाज व राष्ट्र को समर्पित किया और देश के कोने कोने से आये हुए 80 शिविरार्थियो ने वैदिक सिद्धान्तो का प्रशिक्षण प्राप्त किया। —आर्य मुनि

ईसाई मिशनरियों को धर्म परिवर्तन से रोका जाए

आर्य समाज सैक्टर 9 पचकूला की अतरग सभा अपनी बैठक दिनाक 1 2 99 तथा रविवारीय अधिवेशन की साधारण सभा दिनाक 7.2.99 सर्वसम्मति से भारत सरकार से माग करती है कि भारत मे ईसाई मिशनरियो द्वारा धर्म परिवर्तन के कारण उत्पन्न जन आक्रोश और ईसाईयो द्वारा दगे भडकाने की पुनरावृति को रोकने के लिए भारत सरकार निम्नलिखित पग तुरन्त उठाए।

1 भारत के सविधान मे धारा 46 तथा 51 ए (एफ) के अनुसार भारत सरकार का यह सविधानिक कर्त्तव्य है कि सम्पूर्ण भारत मे जन जातियो अनुसूचित जातियो और वनवासियो की सस्कृति की रक्षा की जाए। ईसाई मिशनरियो द्वारा धर्म परिवर्तन द्वारा उनकी सस्कृति नष्ट की जा रही है। इसलिए ईसाई मिशनरियो की इस प्रकार की गतिविधियो पर पूर्ण प्रतिबध लगाया जाए।

2 इस हेतु विदशो से समाज सेवा स्वास्थ्य तथा शिक्षाप्रसार के नाम पर प्राप्त धन का दुरुपयोग ईसाई सस्थाए धर्म परिवर्तन के लिए कर रही हैं और देश के उत्तर पूर्व मे आतकवाद को प्रोत्साहित कर रही है। इनकी इस प्रकार की गतिविधियो पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाए।

3 यह सभा उन सभी विरोधी राजनीतिक दलो की निन्दा तथा भर्त्सना करती है जो अल्प सख्यको के वोट के लोभ मे ईसाई मिशनरियो का समर्थन कर रही हैं और हिन्दू सस्थाओ के विरुद्ध विषैला दुष्प्रचार कर रही हैं उनकी जानकारी के लिए महात्मा गान्धी के ईसाई मिशनरियों के बारे मे लिखे गए विचार नीचे दिए जाते हैं –

"IF Instead of confiatng themselves purely to humanitarian work such as education, Medical services to the poor and the like they would use these activities for the purpose of prosely tising I would certailny like them to with draw Every nation con siders its own faith to be good as that of any other Certainly the great faith held by people of India are adequate for the people " (M K Gandhi" foriegn Missionaries" Yong India April23 1931 Page 83)

अर्थात – यदि यह ईसाई मिशनरी समाज सवा जेसे शिक्षा स्वास्थ्य इत्यादि द्वारा निर्धनो की सहायता करने के स्थान पर अपनी इन गतिविधियों द्वारा धर्म परिवर्तन करते हैं तो मैं निश्चित रूप से कहूगा कि वह चले जाए। प्रत्येक राष्ट्र के पास अपना धर्म होता है और वह उतना ही श्रेष्ठ होता है जितना किसी दूसरे का। निश्चित रूप से भारत के लोगो का ऊचा धर्म तथा विश्वास भारत के लोगो के लिए पर्याप्त है।

यह हिन्दू विरोधी राजनैतिक दल जो कि अपने को महात्मा गाधी का अनुयायी मानते हैं उक्त विचारो पर ध्यान दे और हिन्दू विरोध को त्याग दे।

पारित हुए प्रस्ताव की एक प्रति प्रेषित की जाए भारत के राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री गृह मन्त्री सूचना एव प्रसार मन्त्री राज्यपाल हरियाणा/पजाब/हिमाचल प्रदेश मुख्य मन्त्री हरियाणा/पजाब/ हिमाचल प्रदेश सभी राजनीतिक दलो के प्रधान Administrator Chandigarh Deputy Commissioneer Panchkula, प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा चण्डीगढ आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब/हरियाणा सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली।

यश पाल आर्य मत्री

नव संवत्सर 2056 की शुभ कामनायें

चैत्र शुक्ल गुरुवार का, आया प्रातः काल।
दो हजार छप्पन हुआ, शुरू विक्रमी साल॥
शुरू विक्रमी साल, करें पूजन की थाली।
तज आलस्य प्रमाद करो भगती विधाता की॥
देश रहे खुशहाल, लक्ष्मी गृह विराजे।
दिग दिगन्त यशमान विजय के बाजे बाजे॥
प्राप्त रहे धन सम्पदा स्वास्थ्य शौर्य यश हर्ष।
रहे सौख्यकारी प्रिय विक्रमी नव वर्ष॥
—[illegible]

आर्य समाज नवाकोट का उत्सव

गत वर्षों की भाति इस वर्ष भा ऋषि बोधोत्सव (महाशिवरात्रि पर्व) आर्य समाज नवाकोट अमृतसर म बडी श्रद्धा व धूमधाम से मनाया गया बच्चों ने ऋषि दयानन्द क जीवन पर भजन गाये पडित जगत वर्मा जी के मनोहर भजन हुए व महोपदेशक पडित निरजन देव जा इतिहासकारी ने प्रभावशाली उपदेश दिया व ऋषि के बताए हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी इस सभा की अध्यक्षता श्री सुभाष जा भाटिया प्रधान आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द ने की व समाज की भलाई के लिए 11000 रुपए आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार का ओर से दान दिया अन्त मे अटूट ऋषि लगर भी वितरण किया गया। इसमे शक्ति नगर आर्य समाज हरीपुरा आर्य समाज लक्ष्मणसर आर्य समाज माडल टाऊन आर्य समाज व रामदास आर्य समाज का भी अभूतपूर्व सहयोग मिला

—बालकृष्ण

दयानन्द पब्लिक स्कूल में यज्ञ

27 फरवरी शनिवार का दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनमा रोड लुधियाना में प्रात 11 बजे एक बृहद यज्ञ का आयोजन किया गया यह आयोजन नौंवी दसवीं क्लास के विद्यार्थियो ने मिलकर किया दसवीं क्लास के उन सब विद्यार्थियो जिन्होने अपना वार्षिक परीक्षा मे बैठना है वह श्रद्धापूर्वक यजमान बने

स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द आर्य जी ने विधिपूर्वक यज्ञ सम्पन्न करवाया इस अवसर पर आर्य सीनियर स्कूल के प्रबन्धक श्री ओम प्रकाश जी टण्डन एवम् दयानन्द पब्लिक स्कूल का प्रबन्ध समिति के माननीय सदस्य श्री ओम प्रकाश जा गुप्ता एवम् श्रीमता विनोद गाधा जी ने बच्चो को स्मृति चिन्ह प्रदान किए नौंवी क्लास के बच्चो न दसवीं क्लास क बच्चो का अलविदाई पार्टी दी

दसवीं कक्षा के बच्चो न अपनी अध्यापिकाओ एवम् प्रबन्ध समिति का आभार प्रकट किया एवम् उन सब को उपहार प्रदान किए

—सुनीता मलिक

आर्य समाज कठुआ का चुनाव

आर्य समाज कठुआ (जम्मू और काश्मीर) का वार्षिक चुनाव दिनाक 21 2 99 को हुआ जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारा सर्व सम्मति से चुन गए

श्री भारत भूषण महाजन सरक्षक श्री करम चन्द महाजन सरक्षक डा दुष्यन्त उब्बट सरक्षक डा कुलदीप कुमार मल्होत्रा प्रधान श्रा राम धन कार्यकारी प्रधान श्री किशोरी लाल महाजन श्रा सरदारी लाल उपप्रधान श्री सुरेन्द्र लाल बजाज महामन्त्री श्री ओम प्रकाश गुप्ता मन्त्री श्रा बिशन दास भारती प्रचार मन्त्री श्री सुभाष उब्बट कोषाध्यक्ष श्री सुमेश कुमार पुस्तकालयाध्यक्ष श्री मनोहर लाल स्टोरकीपर श्री मदन लाल रैना श्री दुर्गा दास श्री गायत्री प्रसाद सदस्य अतरग - ओम प्रकाश गुप्ता मन्त्री

श्री अश्विनी कुमार जा शमा एडवोकेट महामन्त्री सम्पादक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस/एलिकेट प्रिंटर्ज जालन्धर से मुद्रित होकर आय मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ

सवत् 1972949098 रजि० न० NI I 504 56

रजि न PB L 5

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

दूरभाष ☎ 292926

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वष 8 अक 5 5 चैत्र सम्वत् 2056 तदनुसार 25 28 माच 999 दयानन्दाब्द 75 वार्षिक शुल्क 0 रुपय आजीवन 5 रुपय

आर्य समाज रूपी भट्टी

ले० श्री सोमदेव शास्त्री आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई

मैं एक आग देखता हू जो सार्वभौमिक और अविनाशी प्रेम की अग्नि है जो कि घृणा को भस्मसात कर रही है तथा समस्त वस्तुओ को शुद्ध कर रही है अमरिका के मैदानो पर अफ्रीका के रगिस्तान पर एशिया के बडे बड पर्वतो और यूरोप के बडे बड राज्यो म इस शुद्धि करने वाली अग्नि का प्रकाश देख रहा हू मैं जीवन मे आनन्द युक्त उत्साह अनुभव करता हू वैदिक धर्म की अपनी पहली सर्वोत्तम अवस्था म पहचान के लिए यह अग्नि आर्य समाज रूपी भट्टी म जल रही है ये भारत के महान सपूत महर्षि दयानन्द सरस्वती के हृदय म उत्पन्न हुई है हिन्दू मुसलमान और ईसाई मिलकर इस पवित्र अग्नि को बुझाने के लिए लगे परन्तु यह प्रभु की जलाई हुई अग्नि बढती ही जाती है ये शब्द थे अमरीका वासी डा इन्ट्राडक्शन डेविस के जिन्होने आर्य समाज के प्रारम्भिक काल म इस सस्था और इसके सस्थापक महर्षि दयानन्द के बारे म लिखे थ

आर्य समाज के विषय म देश विदेश के रहने वाले मनुष्य क्या सोचते थे यह इन शब्दो से स्पष्ट होता है महर्षि दयानन्द के पश्चात् प गुरुदत्त विद्यार्थी प धर्मदेव लेखराम आर्य मुसाफिर स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा हसराज आदि महानुभावो के अथक प्रयास तथा इनके समकालीन आयजनो का चारित्रिक जीवन उपरलिखित भावनाओ के अनुरूप था थ जिससे सभी को आर्य समाज के सदस्यो से विशेष आशाए थी आज क्या स्थिति बन गई ह इससे सभी परिचित हैं तथा प्रत्यक निष्ठावान् आर्य चाहे धनी हो या निर्धन विद्वान हो या सामान्य ज्ञान रखन वाला गृहस्थी हो या सन्यासी नेता हो या कार्यकर्ता सभी चिन्तित है कि आय समाज की गरिमा को किस प्रकार सुरक्षित रखा जाय

यदि आर्य समाजी दौडता है तो हिन्दू चलता है आर्य समाजी चलता है तो हिन्दू बैठता है आर्य समाजी बैठता है तो हिन्दू सो जाता है जब आर्य समाजी सो जायगा हिन्दू मर जाएगा इसलिए आर्य सम जियो दौडते रहो दौडते रहो य उद्गार हिन्दू नेता प मदन मोहन जी मालवीय ने व्यक्त किए थ आज आर्य समाज और हिन्दू समाज की यही स्थिति हो रही ह जिसकी चर्चा मालवीय जी ने की थी

आय समाज के सदस्यो की तन्द्रा दूर करने के लिए आर्य समाज स्थापना दिवस प्रेरणा दे रहा है आर्य समाज के अमर हुतात्माओ के बलिदान का स्मरण करके आयी हुई शिथिलता को दूर करने का प्रत्येक आय सकल्प ले व्यक्तिगत् जीवन आर्य मर्यादा के अनुरूप हो वदिक धर्म पारिवारिक धर्म बन समाज एवम् राष्ट्र म पनपे तथा पाखण्ड और अन्धविश्वास को दूर करने का निश्चय करे सकल्प ले सामाजिक विषमता राष्ट्र विरोधी गतिविधियो से सघर्ष करने के लिए आय समाज का नेतृत्व अन्य उत्साह एवम् क्षमता का परिचय देकर स्वामी श्रद्धानन्द एवम् लाला लाजपतराय के समान राष्ट्रीय नेतृत्व के द्वारा राजनेताओ का मार्ग निर्देश करे यति मण्डल के महात्मा वानप्रस्थी सन्यासी आदि महानुभाव अपनी तपस्या साधना सन्यस्त वृत्ति के आचरण से सभी मनुष्यो को आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा दे जिससे आर्यों के चारित्रिक जीवन को देखकर सभी देशवासी जन अपन जीवन को भी उत्तम बनान के सकल्प ले सके तभी यह एक अमेरिकावासी के उद्गार जो उसने आर्य समाज के बारे मे व्यक्त किये थे सार्थक हो सकेगे

जीवन उत्तम कैसे बनायें

ले प्रा इन्द्रदेव सिंह आर्य

मनुष्य जीवन एक सुनहरा अवसर है जिसमे अपने जीवन के परम उद्देश्य अर्थात् सच्चिदानन्द स्वरूप परमपिता को प्राप्त कर सकते हैं वही हम सत्प्रेरणा प्रत्येक क्षण प्रदान कर रहा है परन्तु हम उसकी अनसुनी करने के आदत पड गई है जिस सच्चिदानन्द स्वरूप प्रभु के साथ हम एकरूप होना चाहते है वह हमसे बहुत दूर नहीं है क्योकि शास्त्रो के अनुसार उस प्रभु के स्वरूप को जानन का अर्थ है तद्रुप हो जाना ब्रह्मविद ब्रह्मैव भवति बुद्धिमानी इसी बात मे है कि इस महान उद्देश्य की सिद्धि के लिए हम सतत प्रयत्नशील रहे बुद्धिमान मनुष्य जीवन को शान्त सुखी निर्भय और सतुष्ट बनाने के लिए पूरे उत्साह और लगन से प्रयत्न करता है जीवन म प्रतिदिन हम सुख दु ख सफलता और विफलता शान्ति और परेशानी का सामना करना पडता है परन्तु वीरता इसी म है कि हम इन सभी का कटिबद्ध होकर सामना कर व हम पराभूत न कर पाय

सादा जीवन और उच्च विचार ही हमारा ध्येय होना चाहिए जीवन सघर्ष म हम मुस्कराते हुए आगे बढते रहे क्या हम अपनी मधुर मुस्कान के साथ सुमधुर गीत गाते हुए स्वय आनदित रहते हुए और दूसरो को भी आनदित करते हुए आगे नहीं बढ सकते यदि जीवन म कोई चुनौती अपने हार्दिक लक्ष्य पर पहुचने मे हमारे सामने आती है तो उसे प्रभु की आज्ञा मान कर प्रमपूर्वक स्वीकार करने म ही हमारी भलाई है यह जीवन एक यात्रा है जिसमे अपने लक्ष्य पर पहुचने मे कठिनाइया आना स्वाभाविक है उसम निरतर आगे बढते हुए लक्ष्य पर पहुच कर ही हम विश्राम कर लगे एसा दृढ विश्वास हमे रखना है

प्रतिदिन सुबह शाम होता है यो ही जिन्दगी तमाम होता है अत हम यह भी स्मरण रखना चाहिए य सुबह शाम दिन रात बराबर आते जाते हुए हमारी आयु का अपहरण कर रहे है कुछ दिन हुए मरे एक मित्र जिनके साथ म प्रतिदिन साय प्रात घूमने जाता था हमारे बीच स उठ गए उनकी स्मृति बरबस इस जीवन की क्षणिकता का स्मरण दिला रही जब हमे इस बात का सच्चा विश्वास हो जाएगा कि हम अन्ततोगत्वा उस मृत्यु के जाल म फसने ही वाले है तो हम अपने कर्तव्य और ध्येय का ध्यान म रखना आवश्यक हो जाएगा फिर हम आलस्य और प्रमाद को छोडकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर बढने म तत्परता से लग जायगे क्योकि किसी कवि ने कहा है जो कल करे सो आज कर जो आज कर सो अब पल म प्रलय होगी बहुरि करेगा कब यह सब जानकर मनुष्य को चाहिए कि कि जितना जल्दी हो सके उत्तम श्रेयस्कर कार्यो को कर ले ऐसा न हो कि वह काल कवलित हो जाए काल इस बात की प्रतीक्षा नही करता कि इस व्यक्ति ने अपने कर्त्तव्य कर्म पूरे किए है या नही

यज्ञ विषयक कुछ वैदिक सूक्तियां

ले. श्री डॉ० भवानी लाल भारतीय जोधपुर

ऋषि दयानन्द ने वैदिक शब्द यज्ञ को एक नई अर्थवत्ता प्रदान की है। उनके ग्रन्थों में यह शब्द अत्यन्त व्यापक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। उनसे पहले यज्ञ का अर्थ केवल यज्ञवेदी में कुछ पदार्थों की आहुति डालना ही माना जाता है। यज्ञ और अग्निहोत्र पर्याय माने जाते थे। अग्नि नामक एक विशिष्ट देवता कल्पित किया गया तथा 'स्वाहा' को उसकी पत्नी माना गया है। ऋषि ने यज्ञ के धात्वर्थ को ग्रहण किया। यज् धातु से निष्पन्न इस शब्द मे देवपूजा संगतिकरण तथा दान का भाव निहित है। देवपूजा भी दो प्रकार की मानी गई है। अपने से श्रेष्ठ विद्वानों तथा पूज्य पुरुषों का सत्कार तथा परमदेव परमात्मा का गुणकीर्तन वास्तविक दवपूजा है। उधर पृथ्वी आदि जड देवताओं का यथोचित उपयोग लेना तथा जल एव वायु को स्वच्छ रखना भी देव पूजा है। यज्ञ में हुत किए गए सुगन्धिवर्धक, रोगनाशक तथा पुष्टिकारक पदार्थ सूक्ष्म होकर समस्त वायुमण्डल को स्वच्छ तथा पवित्र बनाते हैं। यह पर्यावरण शोध यज्ञ का प्रत्यक्ष लाभ है। यज्ञ के अवसर पर समाज के सभी वर्गों का परस्पर वैचारिक आदान प्रदान होता है यह सगतिकरण है। यज्ञ स्वय के लिए न किया जाकर लोकहित तथा परोपकार की भावना से किया जाता है इसलिए उसमे दान की प्रवृत्ति भी निहित है। यज्ञ की समाप्ति के पश्चात् विद्वानो का सम्मान तथा जनहितकारी कामो के लिए धन देना आवश्यक माना गया है। यही दान कहलाता है।

मध्यकाल मे यज्ञ केवल कर्मकाण्ड का रूप लेकर ही जीवित रहा। ऋषि दयानन्द को ही इस बात का श्रेय दिया जाना चाहिए कि उन्होने यज्ञ के वास्तविक अभिप्राय को समझा तथा स्वग्रन्थो मे इसके व्यापक अर्थ किये।

यहा हम यज्ञ विषयक कतिपय महत्वपूर्ण वैदिक सूक्तियों का विचार करते हैं। प्रथम सूक्ति है।

यज्ञस्य दोहो विततः पुरुत्र ।

अर्थात् यज्ञ का श्रेष्ठ फल सर्वत्र फल जाता है। जैसा कि हम कह चुके हैं यज्ञ कर्म स्वार्थ या अपने ही हित के लिए नहीं किया जाता। वह पारमार्थिक कर्म है। यज्ञ मे डाले गये पदार्थ जलकर केवल हमारे घर या परिवेश को ही शुद्ध नहीं करते वे समग्र वातावरण को सुगन्धि युक्त कर देते हैं। इस प्रकार यज्ञ धूम से उत्पन्न सुरभि समग्र वायुमण्डल को सुरभित करती है। अतः यह कहना उचित है कि यज्ञ का श्रेष्ठ फल सर्वत्र फैलता है। इसके लाभ सभी को प्राप्त होते हैं।

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।

शतपथ ब्राह्मण का यह वाक्य प्राय: यज्ञ की प्रशंसा में उद्धृत किया जाता है। यों तो मनुष्य अपने हित के लिए अनगिनत कार्य करता है किन्तु वे उसके स्वयं के हित के लिए होते हैं। प्राणी मात्र के सुख की वृद्धि के लिए किया जाने वाला यज्ञ ही श्रेष्ठतम् है। वह मनुष्य मात्र के लिए करणीय तथा आचरणीय है।

अयज्ञियो हतवर्चा भवति।

यज्ञ कर्म अवश्य करना चाहिए। इस कार्य में कभी कोई अवकाश नहीं होता। जो लोग नित्य यज्ञ करते हैं उनके मुख पर एक विशिष्ट प्रकार का तेज और दीप्ति रहती है। मनुष्य के मानसिक भाव उसकी मुखाकृति से परिलक्षित हो जाते हैं। जो व्यक्ति सदा संकीर्ण स्वार्थ में लिप्त रहता है, जिसके मन मे अन्यों की हितकामना नहीं होती उसके चेहरे पर कभी प्रफुल्लता तथा तेजस्विता दिखाई नहीं देगी। यह तो स्वानुभूत तथ्य है कि जब हम कोई परोपकार का कृत्य करते हैं तो उससे हममें आनन्द की लहर उत्पन्न होती है और यही आत्मिक आनन्द हमारे मुख पर वर्च (तेज) के रूप मे लक्षित होता है। जो परोपकार रूपी यज्ञ नहीं करते वे निश्चय ही इस तेज, ओज और दीप्ति से रहित होंगे।

शुद्धा पूता भवन्ति यज्ञियास:

वेद का आदेश है–हे यज्ञ करने वाले याज्ञिको, तुम शुद्ध और पवित्र बनो। निश्चय ही अपने लिए किये जाने वाले कर्म हमें उतना गौरव प्रदान नहीं करते जितने परोपकार के लिए किए गये यज्ञ रूपी कर्म हमें गौरवान्वित करते हैं। यज्ञ के द्वारा हमें मानसिक पवित्रता और शुद्धता मिलती है। यज्ञ में प्रवृत्त होने से पहले हम अपने शरीर की शुद्धि करते हैं तथा मन एवं आत्मा को भी पवित्र बनाते हैं। मनु का प्रसिद्ध कथन है–

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मन: सत्येन शुध्यति।

विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥

शरीर की शुद्धि जल से होती है जबकि सत्याचरण, सत्य व्यवहार तथा सत्य वाचन से मन पवित्र होता है। हमारी आत्मा की शुद्धता के लिए विद्या और तप आवश्यक है जबकि ज्ञान के द्वारा बुद्धि को पवित्र किया जाता है। यज्ञ के द्वारा हम अपनी दुष्प्रवृत्तियों का नाश करते हैं। यज्ञ का मुख्य कार्य आरम्भ करने से पहले याचक गण ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना करते हैं। तत्पश्चात् स्वस्तिवाचन तथा शान्तिकरण के मंत्रों का पाठ करते हैं। इन मंत्रों में निहित दिव्य और पूत भावनाएं हमारी समस्त दुर्वासनाओं तथा दूषित प्रवृत्तियों का विनाश करती हैं तथा हममें पवित्रता का भाव लाती हैं।

ईजाना स्वर्ग लोकं यन्ति।

यज्ञ करने वाले स्वर्ग लोग को प्राप्त करते हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में इससे मिलती-जुलती एक अन्य उक्ति इस प्रकार मिलती है–

अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकाम:।

जो स्वर्ग की इच्छा रखते हैं उन्हें अग्निहोत्र करना चाहिए। स्वर्ग का अर्थ भौतिक तथा आत्मिक सुखों को प्राप्त करना है। किसी स्थान विशेष का नाम स्वर्ग नहीं है। यदि स्थान विशेष को ही स्वर्ग माना जाये तो गृहस्थ के आधार पर घर को ही स्वर्ग मानना चाहिए,जहां मनुष्य को विभिन्न प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। ऋषि दयानन्द यज्ञो के द्वारा भौतिक तथा पारलौकिक दोनों प्रकार के सुखों की प्राप्ति मानते हैं जबकि मध्य काल के याज्ञिको ने किसी अलौकिक तथा अदृष्ट को प्राप्त करना ही यज्ञ का फल माना था। इस अदृष्ट नाम के तत्व को पाने के लिए जो यज्ञ किये जाते थे उनमें पशु बलि जैसे दूषित कृत्य भी किये जाते थे। ऐसे ही पाशविक कुकृत्यो का यज्ञ के नाम पर प्रचार देख कर आलोचकों को कहना पड़ा था।

वृक्ष छित्वा पशून हत्वा कृत्वा रुधिरंकर्दमम्।

यद्येवं गम्यते स्वर्गं नरकं केन गम्यते॥

वृक्षों को काटकर हे याज्ञिको तुम यूप बनाते हो। उन यूपों से बांधकर पशुओं को मारते हो और सारी यज्ञ वेदी को खून से लथपथ कर देते हो। यदि ऐसे पाप पूर्ण कर्मों से तुम्हें स्वर्ग मिलता है तो बताएं नरक कैसे मिलता है ? वास्तव में पशु हिंसा तो नरक रूपी दुखों को प्राप्त कराने वाली है। उससे स्वर्ग प्राप्ति तो असम्भव ही है। निश्चय ही यज्ञ करने वालों को सुख मिलते हैं, किन्तु यज्ञ सर्वथा अहिंसक, स्वार्थ भावना से रहित तथा परोपकार के भावों से पूर्ण होने चाहिएं।

अत्रा युज कृणुते यो हविष्मान।

परमात्मा उसी को अपना सखा बनाता है जो यज्ञ में बोले जाने वाले मंत्रों में प्राय: इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि परमात्मा के विभिन्न नामो का उल्लेख करता है। परमात्मा का एक नाम इन्द्र है। मनुष्य परमात्मा के अत्यन्त निकटस्थ है। वेदों में अन्यत्र व्यापक विष्णु परमात्मा को इन्द्र रूपी जीव का जोड़ीदार अर्थात सखा कहा है–इन्द्रस्य युज्य: सखा। परमात्मा का यह साथ, उसकी मैत्री हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? स्वार्थ से परिपूर्ण जीवन को व्यतीत करने वालों को परमात्मा की मैत्री हासिल नहीं होती है । परमात्मा को अपना सखा तभी बना सकते हैं जब हम उसकी भांति लोकहित के कार्य करें। परमात्मा स्वय सृष्टि यज्ञ का कर्त्ता है। सृष्टि का निर्माण, पालन तथा संहार उसका अलौकिक तथा पावन कृत्य है। यज्ञ मे जो हवि अर्पित की जाती है वह भी प्राणियो के हित तथा उनकी अभिवृद्धि के लिए ही दी जाती है। ऐसी प्रत्येक आहुति को देते समय हमारे मुख से 'इदं न मम' का वाक्य उच्चारित होता है।इसका भाव यह है कि हम अपने स्वार्थ के लिए यज्ञ आहुति नहीं दे रहे हैं। अतः सिद्ध हुआ कि नित्य हवि देने वाला हविष्मान यज्ञकर्त्ता परमात्मा का निकटस्थ विश्वसनीय मित्र बन जाता है।

अमतेर्यजमानस्य प्रजा भूयात्।

यजमान की प्रजा ग्लानि रहित होवे या होती है।

हमारे मन में ग्लानि तथा विषाद का भाव कब आता है। यह भाव तभी उत्पन्न होता है जब हम केवल स्वार्थ के लिए ही कोई काम करते हैं। अपने हित के लिए स्वयं के शुद्ध स्वार्थ की पूर्ति के लिए तो कुत्ते, बिल्ली आदि जानवर भी कर्म में प्रवृत्त होते हैं किन्तु समस्त

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

पुण्य भूमि हरिद्वार का उत्सव

गुरुकुल कागडी को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जिस स्थान पर हरिद्वार मे सर्वप्रथम आरम्भ किया था जो बिजनौर रोड पर कागडी ग्राम के समीप गगा की धार के उस पार स्थित है उस स्थान को पुण्य भूमि कहा जाता है । यहा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा बनवाया गया विद्यालय का भवन अब तक विद्यमान है। शेष भवन गगा की धारा मे बह गए है। गौशाला का भवन फार्मेसी का भवन तथा दूसरे कई भवनो का कहीं नामों निशान नहीं है परन्तु विद्यालय भवन सुरक्षित है। यह तब सुरक्षित है कि इस भवन की ओर गगा की धारा को बहता हुआ देख कर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने इसकी रक्षा का दायित्व अपने ऊपर ले लिया था। सभा ने गगा की धारा के बहाव को कम करने के लिए व विद्यालय भवन की ओर से मिटटी के कटाव को रोकने के लिए कई ठोकरे बनवाई इससे मिटटी का कटाव रुक गया और इससे यह भवन तो सुरक्षित हो ही गया है इसके साथ ही पुण्य भूमि का कटाव भी रुक गया तथा यह भूमि भी सुरक्षित हो गई। अब यह स्थान एक टापू सा बना हुआ है इसके दोनो ओर गगा की धाराए बहती है बीच मे यह स्थान है। यदि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब पत्थरो की ठोकरे न बनवाती तो यह पुण्य भूमि व विद्यालय भवन कभी का गगा की धारा मे बह गया होता।

इस भवन के कई कमरे गिर चुके थे छते लग भग सभी कमरो की टूट चुकी थी चूने का पलस्तर दीवारो को छोड चुका था खिडकिया दरवाजे सब लोग उठा कर ले गए थे यह एक खण्डहर मात्र रह गया था। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री हरवस लाल जी शर्मा ने इसकी मुरम्मत की जिम्मेवारी अपने ऊपर ली और इस सारे भवन की मुरम्मत करवानी आरम्भ कर दी गत दो वर्षों मे मुरम्मत का कार्य पूरा हुआ है अभी भी कुछ कार्य शेष है। इस भवन की सुरक्षा के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने वहा एक व्यक्ति को अपने व्यय पर रखा हुआ है जो भवन और भूमि की देख भाल करता है।

मान्य पण्डित हरवस लाल जी शर्मा का इस भूमि से विशेष लगाव है जहा इसकी सुरक्षा के लिए उन्होने बहुत सा व्यय किया है वहा प्रति वर्ष वैसाखी के अवसर पर 12 अप्रैल को पुण्य भूमि मे एक दिन का उत्सव किया जाता है। इस अवसर पर वहा बृहद ऋषि लगर किया जाता है जिसमे हजारो स्त्री–पुरुष भोजन करते है आस पास के गाव के लोग भी वहा ऋषि लगर मे पहुचते है। इस ऋषि लगर पर जितना भी व्यय आता है वह सारा प हरवस लाल जी शर्मा स्वय वहन करते है। गत कई वर्ष से वह यह व्यय करते आ रहे है। योगी फार्मेसी कनखल के अधिकारी भोजन का सारा प्रबन्ध पण्डित जी की ओर से करते है। प्रतिवर्ष पजाब से भारी सख्या मे वहा आर्य महानुभाव पहुचते रहे है और इस उत्सव को सफल बनाते रहे है। गत वर्ष भी जालन्धर लुधियाना अमृतसर बठिण्डा धूरी बरनाला मोगा नवाशहर तथा चण्डीगढ आदि कई स्थानो से भारी सख्या मे लोग हरिद्वार पहुचे थे।

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी वैसाखी के अवसर पर एक दिन का उत्सव पुण्य भूमि मे किया जा रहा है। इस उत्सव मे पजाब से बहुत सारे महानुभाव गत वर्षों की भाति वहा पहुचने चाहिए। रात्रि निवास ठहरने की व्यवस्था गत वर्ष की भान्ति गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय मे होगी। मेरी पजाब की सभी आर्य समाजो के अधिकारियो से प्रार्थना है कि पुण्य भूमि के उत्सव मे अवश्य पहुचे। पुण्य भूमि की रक्षा सुरक्षा व उसकी उन्नति का दायित्व आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने अपने ऊपर लिया हुआ है क्योंकि इसके सस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज पजाब के रहने वाले थे और इस भवन के निर्माण मे पजाब के लोगों ने अपना महान योगदान दिया है आज भी इस भवन मे लगे पुराने नामपटों को देख कर पता चलता है कि कितना आर्थिक सहयोग पजाब के लोगो ने इस भवन के बनने मे दिया है।

इस स्थान पर अभी बिजली की व्यवस्था नहीं है कागडी ग्राम तक अब बिजली पहुच चुकी है गगा की धारा जो कागडी ग्राम के पास से बहती है उसका बहाव बडा तेज है और उसका पाट भी बहुत चौडा हो गया है इस कारण पुण्य भूमि तक बिजली पहुचने के लिए खम्बे लगाने मे कठिनाई आ रही है। परन्तु हमारा प्रयास है कि किसी प्रकार इस समस्या का हल करके वहा बिजली भी पहुचाई जाए जिस समय इस स्थान पर बिजली पहुच जाएगी उस समय यह स्थान बहुत रमणीय व उपयोगी बन जाएगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब अपने कर्त्तव्य का पालन कर रही है परन्तु अन्य भी ऋषि प्रेमी महानुभावो को इस ओर ध्यान देना चाहिए यह वह स्थान है जहा पर महर्षि दयानन्द का गुरुकुल खोलने का स्वप्न पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने वहा गुरुकुल खोल कर पूर्ण किया था। सारे भारत मे सर्व प्रथम यहा गुरुकुल की स्थापना हुई थी यह स्थान वर्षों वीरान पडा रहा परन्तु अब इसे फिर आबाद किया जा रहा है। इसे उन्नत करना केवल प हरवस लाल जी शर्मा व आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का ही कर्त्तव्य नहीं है यह प्रत्येक आर्य समाजी का कर्त्तव्य है। हमे इस ओर ध्यान देना चाहिए। आर्य भाई बहने इस कार्य को उन्नत करने के लिए आर्य प्रनिनिधि सभा पजाब को अपना सहयोग दे।

मै फिर पजाब के सभी आर्य–भाई बहनों से प्रार्थना करुगा कि वह पुण्य भूमि हरिद्वार के उत्सव मे अवश्य पहुचे और इस उत्सव को सफल बनावे।

अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट
सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा का शुल्क भेजें

मैने पहले भी लिखा था पुन फिर लिख रहा हू जिन ग्राहक महानुभावो ने 1999 का अपना शुल्क अभी तक नही भेजा वह शीघ्र अति शीघ्र बैक ड्राफ्ट या मनी आर्डर द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नाम सभा कार्यालय मे भेज दे सभा कार्यालय से इसके लिए पत्र भी लिखे जा रहे है। नैतिकता इसी मे है कि ग्राहक महानुभाव स्वय बिना लिखे ही अपना शुल्क भेजे। शुल्क वार्षिक 50 रुपये है जो आसानी से भेजा जा सकता है। यदि आप 500 रुपए भेज दें तो आप आजीवन सदस्य बन जायेगे इससे बार–बार शुल्क भेजने का झझट ही समाप्त हो जायेगा। आर्य समाजो व शिक्षा सस्थाओ को तो आजीवन शुल्क 500 रुपये अवश्य भेज देना चाहिए। आशा है बार–बार न लिखना पडेगा आप अपना शुल्क शीघ्र भेज देगे

अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट
सभा महामन्त्री

अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट
सभा महामन्त्री

बन्धन से मुक्ति

ले श्री आनन्द अभिलाषी जी वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर हरिद्वार

गतांक से आगे

तपस्वी त्याग मनुष्य को इन बन्धनो से मुक्त करा सकते है स्वामी दयानन्द के अपने ही एक जगन्नाथ ने उन्हें विष दिया तो स्वामी जी ने अपने इस हत्यारे को पास रुपये जल्दी कर दिया कि पुलिस उसे पकड़ न ले क्योंकि स्वामी जी ने अपना सिद्धान्त बनाया कि मै संसार के लोगो को जेलों में बन्द करवाने के लिये नहीं बल्कि संसार वालो को मुक्त करवाने के लिये आया हू स्वामी जी से पूछा गया कि स्वामी जी आप तो अवश्य मा... इसी प्रकार ... स्वामी ... स्वाथी

मेरा मार्ग लिखा कर उनका साथ ... मार्ग में चलेगे और ... स्वामी जी ने ... कुछ लाभमात्र के लिये किया वह कभी भुलाया नहीं जा सकता महात्मा बुद्ध स्वामी शकराचार्य गुरु नानक देव इत्यादि जितने भी महापुरुष हुए उन सब ने अपने तप के आधार पर मानव जाति को इन बन्धन से मुक्त होने की राह बताई है और मानव को दानव बनने से बचाने का प्रयत्न किया यह और बात है राक्षसी शक्तियां अधिक शक्तिशाली होने के कारण मनुष्य के बन्धनो की ओर कस रही है यह समय है तपस्वियो के लिये कि अपनी तपस्या को स्वयं तक सीमित न रखते हुये मानव कल्याण के लिये कार्य करें ताकि अन्धकार के काले बादल छट जाये और चमकदार साफ सुन्दर निर्मल आकाश एक बार फिर दिखाई देने लगे परन्तु इसमे बहुत सघर्ष करना पडेगा एक रावण को मारने के लिये कितने यत्न करने पड़े थे उच्च एव महान् आत्मा भगवान राम को आज रावण अनेक है पर हर सुख के पश्चात दुख और दुख के बाद सुख रात के बाद दिन और दिन के बाद रात इसी प्रकार मलिनता के पश्चात पवित्रता आना अनिवार्य

रात भर का है मेहमान अंधेरा
किस के रोक रुकेगा सवेरा
रात जितनी भी सगीन होगी
सुबह उतनी ही रगीन होगी
गम न कर गर है बादल घनेरा
किस के रोके रुकेगा सवेरा

इस मत्र मे इश्वर को वरुण के नाम से सबोधित किया गया है वेद मत्रो मे यह एक विशेष गुण है कि ईश्वर से यदि कोई माग की गई है तो ईश्वर का उस गुण सम्बन्धित नाम से याद किया गया है वरुण का

अर्थ है वरण करना चयन करना वर वधू को और वधू, वर को वरण करता है पर यह सबन्ध या नाते अस्थाई है पत्नी गई तो पति को दुख पति गया तो पत्नी को दुख बच्चे से साईकिल छिन गया तो दुख इसलिये ऐसे साथी का वरण किया जाये जो कभी न छिने और वह वरणीय कौन है परम पिता परमात्मा जिस को कभी भी कोई किसी से छीन नहीं सकता इसलिये उस का नाम वरुण है वर और वधू के यदि एक जैसे गुण होंगे तो परस्पर स्नेह बना रहता है इसलिये

ईश्वरीय गुणो को अपने अन्दर लाना होगा ईश्वर तब ही हम से प्यार करेगा ईश्वर सब बन्धनो से मुक्त है इसलिए ईश्वर का वरण तब ही हो सकता है जब हम भी बन्धनो से छुटकारा प्राप्त करें तभी हम ईश्वर के स्नेह उसकी कृपा के पात्र बन सकते है

वरुण का दूसरा अर्थ है सुन्दर मनुष्य का झुकाव सुन्दर वस्तु की ओर शीघ्र होता है जब मै परमपिता की बनी प्रकृति सुन्दर वन फूल झरने पर्वत समुद्र इत्यादि देखता हू तो स्वयं विचार आता है कि इतने सुन्दर ससार को बनाने वाला कारीगर स्वयं कितना सुन्दर होगा और फिर जब उस सुन्दर प्रभु से मिलने को तड़प पैदा होती है तो स्वय इन बन्धनो को छोड़ने को दिल चाहता है इसलिये ईश्वर को सत्य शिव सुन्दरम् कहा गया है वह पिता सत्य स्वरूप है कल्याण कारक है और सुन्दर है

वरुण का तीसरा अर्थ है अनुशासन मे रहने वाला परमात्मा के जब इस गुण का स्मरण करते हैं तो हमे स्वय भी अनुशासन मे रहना होगा और जब तक व्यक्ति अनुशासन मे नही रहता किसी प्रकार से बन्धनो से मुक्त नही हो सकता इसलिये परमात्मा को वरुण जान कर इस मत्र द्वारा प्रार्थना की गई है कि वरुण परमपिता परमात्मा आपके सृष्टि के जो नियम हैं और जो बन्धन है उनसे हमे उन लोगो के माध्यम से जो सुप्रेरणा देने वाले है सत्य असत्य धर्म अधर्म न्याय अन्याय का ज्ञान रखते है छुटकारा दिलाये हमारे मित्र वे लोग है जो हमे सदा उत्साहित करते रहे और तपस्वी लोग हमारा इस विषय पर मार्ग दर्शन करते रहे

आर्य मर्यादा के स्वामीत्व का विवरण

(फार्म 4—नियम 8 देखें)

प्रकाशन स्थान	गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर
प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
प्रकाशक व मुद्रक	आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर
सम्पादक	अश्विनी कुमार शर्मा एडवाकट भारतीय नागरिक
पता	आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर
स्वामीत्व	आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब इस पत्र का स्वामिनी है अन्य कोई हिस्सेदार नहीं है

मै अश्विनी कुमार शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हू मेरा अधिकतम जानकारी के अनुसार ऊपर दिया विवरण ठीक है

—*अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट*

धर्म पत्नी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के भू पू महोपदेशक प राम नाथ जी सिद्धान्त विशारद मोरिण्डा की धर्म पत्नी श्रीमती सरस्वती देवी का 9 मार्च 999 को 80 वर्ष की आयु मे निधन हो गया है पिछले कई वर्ष से वह बीमार चली आ रही थी गत दिनो से वह चारपाई पर एक ही करवट पड़ी रहती थी दूसरी करवट भी नही बदल सकती थी उनमे सहनशीलता इतनी थी कि इतना कष्ट होते हुए भी कभी उन्होने हाय तौबा नहीं की वह सारे कष्ट को सहती रहीं उनकी सहनशीलता को देख कर सभी हैरान होते थे वह रुग्ण अवस्था मे भी परमात्मा का नाम लेती रही उनके चले जाने से श्री रामनाथ जी सि वि अब अपने आप को अकेला सा महसूस कर रहे हैं उन्होने अपने पत्र मे अपनी धर्म पत्नी को सम्बोधित करते हुए लिखा है

छ दिन से लापता हो न जाने कहा हो तुम
बदली वह कौन सी है जिसमे निहा हो तुम

• श्री प राम नाथ जी सि वि भी पिछले काफी समय से बीमार चले आ रहे है वह भी आत्मिक शक्ति के आधार पर शारीरिक बीमारियों की परवाह न करते हुए कार्य कर रहे है

हम आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि वह दिवगतात्मा को सद्गति प्रदान करें और श्री प राम नाथ जी को तथा उनके परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे

धर्मदेव आर्य
सह सम्पादक

पृष्ठ 2 का शेष

प्राणियो मे स्वय को श्रेष्ठ मानने वाला खुद को अशरफुल मखलूकात कहने वाला मनुष्य जब दूसरो के हित का कोई काम करता है तो उसके चेहरे पर एक विशिष्ट आभा तथा तेज आ जाता है उसके मन मे ग्लानि दुख या पश्चाताप का कोई भाव नहीं रहता यज्ञ कर्म करने वालो की सन्तान भी अपने याज्ञिक माता पिता के गौरवपूर्ण लोकहित के लिए किए गये यज्ञ कार्य को देख कर आत्म सम्मान से परिपूर्ण होती है तथा उसमे कोई ग्लानि का भाव नहीं आता

देवा अन्यान्यस्मिन् जुहोतश्चेरु
देवता एक दूसरे मे हवन करते हुए विचरण करते है

यज्ञ करने वालो को देव सज्ञा होती है उन्हे देव कह कर पुकारा जाता है ये देवगण एक दूसरे के हित करने मे सदा प्रवृत्त रहते है देवगण परस्पर द्वेष तथा ईर्ष्या के भावो से मुक्त होकर जब पारलौकिक तथा पारमार्थिक दिशा मे प्रवृत्त होते है तो मानो वे यज्ञ ही करते है यज्ञ की भावना का सर्वत्र प्रसार करना एक देवी कृत्य है उपयुक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि केवल एक द्रव्य घृत शाकल्य पुरोडाश अग्नि से किया जाने कर्म ही यज्ञ नही है अपितु सभी प्रकार के पारमार्थिक अन्य प्राणियो के हित के लिए किए जाने वाले कर्म यज्ञ सज्ञक है इसी अभिप्राय से गीता मे ज्ञान योग उपासना आदि को भी यज्ञ कहा गया है साथ ही प्राणायाम जप सात्विक आहार इन कृत्यो को भी यज्ञ की सज्ञा दी गई है

स्त्री आर्य समाज मोहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर का उत्सव

स्त्री आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ जालन्धर का वार्षिक उत्सव पहली मार्च 99 से 7 मार्च 99 तक बडा धूमधाम से मनाया गया। आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण यज्ञ पहली मार्च 99 स प्रारम्भ हुआ। 1 मार्च 99 क मुख्य यजमान श्री वीरेन्द्र गोयल एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती किरण गोयल द्वारा यज्ञ प्रारम्भ किया गया। श्री वीरेन्द्र गोयल की पूज्य माता जी श्रीमती रूपरानी आर्या (प्रधान स्त्री आर्य समाज अड्डा होशियारपुर) भी साथ पधारी और यजमान बनी। श्री वीरेन्द्र ने प्रतिदिन प्रात पत्नी सहित यज्ञ म पधार कर यज्ञ का शोभा बढाई। प्रात यज्ञ भजन प्रवचन 6 30 स 8 30 तक प्रतिदिन होता रहा। सायकाल यज्ञ 4 स 6 बज तक जिसमे सायकाल आचार्य अखिलेश्वर जी का प्रवचन गीता पर होता रहा। प्रात पहली मार्च स 7 मार्च तक 5.30 से 6 बजे तक साधना मा अखिलेश्वर जी करवात रहे साधक साधको न समय पर पधार कर साधना का लाभ उठाया वेद पाठ करतारपुर के ब्रह्मचारियो न किया। प्रतिदिन भजन श्री जगत वर्मा भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब) क दोनो समय होत रहे। पू स्वामी सुमना यति सन्यासिन (लुधियाना) ने पधार कर यज्ञ की शोभा बढाई। शनिवार 6 मार्च 99 को महिला सम्मेलन 2.30 ज स 5 30 बज तक मनाया गया। महिला सम्मेलन का अध्यक्षता श्रीमती स्वर्ण जी यश (मिलाप) न की। इस सम्मेलन मे लुधियाना से श्रीमति कमला जी आर्या व स्त्री आर्य समाज दाल बाजार स्त्री आर्य समाज साबुन बाजार स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन की बहनो न समय पर पधार कर हमारा उत्साह बढाया एव उत्सव की शोभा बढाई

मा स्वर्ण यश (मिलाप) के मच पर पधारने पर उनका स्वागत आशीर्वाद सहित स्वामी सुमना यति जी न किया मा सुमनायति जी का आशीर्वाद सभा न प्राप्त किया।

उसक पश्चात् श्रीमति कमला जी आर्या (लुधियाना) श्रीमती ललक जी लुधियाना श्रीमती राजेश शर्मा प्रधान जिला आर्य सभा लुधियाना श्रीमती इन्द्रमती गौतम (नवा शहर श्रीमति सरला भारद्वाज प्रोफैसर एस डी कालेज जालन्धर श्रीमति सत्यभामा जी एव बहन कृष्णा जी करतार पुर श्रीमति सुशीला भगत एव श्रीमति कमल कान्ता आनन्द माडल टाऊन जालन्धर श्रीमति सन्तोष धवन प्रधान स्त्री आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ जालन्धर श्रीमति लाजवन्ती अग्रवाल सरक्षिका श्रीमति आनन्द पुरी एव अन्य बहनो ने फूल मालाओं से श्रीमति यश का स्वागत किया जिसमे कुमारी सन्तोष सूरी जी कमला आर्या पक्का बाग भी सम्मिलित थी। माडल टाऊन लुधियाना की बहनो न भी स्वागत किया।

महिला सम्मेलन का उद्घाटन भाषण मा स्वामी सुमनायति जी ने किया। श्रीमति कमला आर्या (लुधियाना) श्रीमती सरला भारद्वाज जी राधेश्याम मन्दिर की सन्यासिन मा दमयन्ती जी ने अपने अपने विचार बडे ही अच्छे ढग से रखे। मा आचार्य अखिलेश्वर जी ने गीता पर प्रवचन दिया। मच का सचालन श्रीमति सुषमा नागपाल (कोषाध्यक्ष) स्त्री आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ ने बड ही सुचारु रूप से किया। भजन श्री जगत वर्मा जी एव श्रीमती आनन्द पुरी के हुए । भजनो में इतना रस था कि सभी झूम उठे जालन्धर की लगभग सभी स्त्री आर्य समाजो ने भाग लिया पडाल खचाखच भरा हुआ था। अन्त म श्रीमति स्वर्ण यश जी ने अध्यक्षीय भाषण म कहा कि हमे वेद प्रचार क कार्य को और अधिक बढाना चाहिए। वेद का प्रचार घर घर अवश्य होना चाहिए। धन्यवाद एव शान्ति पाठ के पश्चात् महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सबको प्रशाद बाटा गया एव जलपान करवाया गया।

रविवार 7 मार्च को प्रातःकाल 7 बज यज्ञ प्रारम्भ हुआ पूर्णाहुति 9 बज डाली गई।

पाच हवन कुण्ड पडाल में लगाए गए छठा यज्ञशाला मे था। 6 हवन कुण्डो पर चारो ओर यजमानो ने बैठकर यज्ञ किया। सभी ने गले मे पीत वस्त्र डाले हुए थे समय बडा ही सुहावना व सुन्दर लग रहा था। सभी ने बडे ही शान्त वातावरण से हवन यज्ञ किया। पूर्णाहुति के पश्चात् मा आचार्य अखिलेश्वर जी यज्ञ के ब्रह्मा एव स्वामी सुमनायति जी न सभी यजमानो को आशीर्वाद दिया फूलो की वर्षा की गई सभी को आशीर्वाद के फल दिए। पूरे दस बजे ध्वजारोहण श्री वीरेन्द्र गोयल जी ने सपरिवार किया। सब से प्रथम आचार्य अखिलेश्वर जी एव पू सुमनायति जी ने आशीर्वाद दिया। इसके पश्चात् सरक्षक श्री राम प्रताप जी प्रधान श्री मुन्नीलाल जी कोषाध्यक्ष श्री भीष्मदेव धवन एव श्री नरेश जी मन्त्री सभा इन आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ के अधिकारियो ने वीरेन्द्र गोयल जी का पुष्प मालाओ स स्वागत किया प हरबस लाल जी शर्मा प्रधान (आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब) ने भी समय पर पधार कर गोयल जी का स्वागत किया और कहा कि इसी प्रकार नौजवानो मे उत्साह होना चाहिए श्री चतुर्भुज जी मित्तल मन्त्री गुरुकुल विरजानन्द स्मारक उन्होने करतारपुर श्री राम कोहली प्रधान सत्य नारायण मन्दिर ने भी श्री वीरेन्द्र गोयल जी का स्वागत पुष्प मालाओ स किया। बहनो मे श्रीमति स्नेह अग्रवाल श्रीमति कमला आर्या श्रीमति सन्तोष धवन श्रीमति राज मोहनी सोधी श्रीमति सुशीला भगत श्रीमति सत्य भामा तथा अन्य बहनो ने भी पुष्प मालाओ द्वारा स्वागत श्री वीरेन्द्र गोयल जी का किया ध्वजगीत करतार पुर के छात्रो ने गाया जयघोष बहुत लगाए गए उसक पश्चात् सभी को प्रातराश एव प्रशाद बाटा गया।

अगल कार्यक्रम म लगभग 11 बजे सब से प्रथम प्रधान प हरबस लाल जी शर्मा क मच पर पधारने पर स्वागत किया गया भजन श्री जगत वर्मा तथा श्री वीरेन्द्र कुलदीप साथी के हुए। मा प्रधान जी न स्त्री आर्य समाज को 5100 रुपया दान दिया और अपने विचार जनता के सामन रखे। हम मा प्रधान प हरबस लाल शर्मा जी क बहुत आभारी हैं जो कि उन्होन अपने अमूल्य समय मे से हम समय देकर हमारा उत्साह बढाया और हमारी प्रार्थना पर पहुचने की स्वीकृति दी।

मा सुमनायति जी प धर्मदेव आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री मा चतुर्भुज मित्तल जी आचार्य नरेश जी प्रोफेसर दोआबा कालेज जालन्धर श्रीमति सरला भारद्वाज जी जो कि फगवाडा न चलकर आई सब न अपने सुन्दर विचार जनता के सामने रखे मा सालिगराम पराशर जी न भी अपने विचार दिए। बच्चो क भजन एव गुरुकुल करतारपुर क बच्चो न भजन गाए। अन्त मे मा आचार्य अखिलेश्वर जी ने गीता पर प्रवचन दिया। बच्चो को पारितोषिक दिया गया दो बहनो को सम्मानित किया गया श्रीमति प्रवेश जी एव श्रीमति सुमन जी (मास्टर तारा सिह नगर) आर्य समाज माडल टाऊन अड्डा होशियारपुर रेलवे कालोनी बस्ती गुजा भार्गव नगर गाधी नगर फगवाडा स श्री ग्रोवर जी एव दयानन्द मठ ढन मोहल्ला आदि के लगभग सभी आर्य समाजो क अधिकारियो न पधार कर अपने सदस्यो सहित जहा उत्सव की शोभा बढाई बहनो का उत्साह भी बढाया। श्रीमति रेणु मित्तल श्रीमति स्वदेश मित्तल श्रीमति निशा एव मास्टर तारा सिह नगर की बहनो ने पूरा सप्ताह बढ चढ कर भाग लिया और सभी कार्य म सहयोग दिया स्त्री आर्य समाज का सभी अधिकारी बहनो व सदस्याओ न बडा श्रद्धा व लगन स काम किया अन्त म 2 4 पर धन्यवाद व शान्ति पाठ के पश्चात् ऋषि लगर का कार्यक्रम शुरू हुआ ऋषि लगर सायकाल 4 बज तक चलता रहा श्री वीरेन्द्र गोयल एव श्रीमति किरण गोयल न पूरा साथ दिया उत्सव प्रत्यक प्रकार स सफल रहा उपस्थिति बहुत ही अच्छी रही

कृष्णा काछड़ मन्त्री

हरपाल नगर लुधियाना में 21वां वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी हरपाल नगर वैलफेयर सोसायटी लुधियाना की ओर से गुलमोहर होटल के विशाल प्रांगन में 14.3.99 को प्रात: 9 बजे से 1 बजे बाद दोपहर तक एक विशाल वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया।

3 कुण्डों के गिर्द 12 यजमान सपरिवार बैठे हुए थे। उनमे अधिक जोडे वे थे जिनका शुभ विवाह इसी वर्ष हुआ था। यज्ञ के ब्रह्मा पं. बाल कृष्ण जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज जवाहर नगर थे उनका साथ प योगराज जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज हबीबगज दे रहे थे।

सबसे पहले सभा के प्रधान श्री धनराज थापर, मन्त्री श्री जगदेव लाल भण्डारी, कोषाध्यक्ष वेद प्रकाश गुप्ता, आर्य समाज साहनेवाल के प्रधान श्री वजीर चन्द शर्मा, श्री राजेन्द्र बेरी, श्री बृजमोहन अरोड़ा, श्री निझावन ने पुष्प मालाएं पहना कर विद्वानों को सम्मानित किया।

प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सुरेन्द्र कुमार जी सन्दीप नगर वालों ने ज्योति प्रचन्ड की और इस कार्य के लिए 2100/- एवं यज्ञ के लिए एक टीन देसी घी का दिया।

यज्ञ के प्रबन्धक श्री आशा नन्द जी आर्य ने समारोह का उद्घाटन करते हुए कहा कि आज से 21 वर्ष पूर्व हमने वार्षिक यज्ञ आरम्भ किया था। दो तीन वर्ष तो हमे काफी परिश्रम करना पड़ा। परन्तु अब तो यह समारोह सारे नगर का समारोह बन गया। जनता बड़े चाव से इसकी प्रतीक्षा करती है और श्रद्धा एवं उत्साह दिखाती है।

यज्ञ के ब्रह्मा प बाल कृष्ण शास्त्री ने यज्ञमानो को यज्ञोपवीत डलवाए एव यज्ञ की कारवाई आरम्भ हुई। शास्त्री जी मन्त्रो का सरल अर्थ ही जनता को बता रहे थे प योगराज जी शास्त्री बड़े सुरीले ढंग मे वेद पाठ कर रहे थे बीच मे वेद मन्त्रों की व्याख्या एवं विद्वानों के भाषण भी होते रहे। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान प्रसिद्ध कथा वाचक ने अपने भाषण में कहा कि आज मैं देख रहा हूं कि यज्ञ में मेरी बहनें भी बराबर बैठी हैं और वेद मन्त्र पढ़ रही हैं। यह सब महाऋषि दयानन्द एवं आर्य समाज की कृपा है। इतने बड़े यज्ञ में आने पर मुझे बहुत खुशी हुई। हमारे बुजुर्ग श्री आशानन्द आर्य लुधियाना में कई स्थानों पर यज्ञ करवाते हैं और हम सबको यज्ञ व वेद प्रचार के लिए प्रस्तुत करते रहते हैं मैं उनका आभार प्रकट करता हूं।

पूज्य स्वामी यज्ञमुनि जी महाराज मुजफ्फरनगर वालों ने अपने एक घण्टे के भाषण में यज्ञ के लाभ एवम् ऋषि-दयानन्द की विचार धारा पर ओजस्वी भाषण दिया जिसे जनता ने बहुत पसन्द किया। एक बजे यज्ञ की पूर्णाहुति डाली गई जिसमे सैंकडों स्त्री, पुरुषों ने नारियल सामग्री इत्यादि डाल कर भाग लिया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय अध्यक्ष पं धर्मदेव जी आर्य, प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यानन्द मुञ्जाल, श्री मदन लाला चोपड़ा प्रधान मन्दिर कमेटी एव कई संस्थाओ आर्य समाजों के अधिकारियों ने भाग लेकर समारोह की शोभा बढ़ाई उसके पश्चात हजारों लोगों ने भण्डारे मे भोजन किया इस समारोह को सफल बनाने में गुलमोहर होटल के मालिक श्री सुनील कुमार थापर तथा उनका परिवार, जगदेव लाल भण्डारी वेद प्रकाश गुप्ता, श्री राजेन्द्र बेरी, श्री बृज मोहन अरोडा एव अनिल निझावन ने अत्यंत सहयोग प्रदान किया।

आशानन्द आर्य
यज्ञ प्रबन्धक

लौरिया में वार्षिकोत्सव सम्पन्न

बिहार राज्य के चम्पारण जिला स्थित लौरिया नगर मे स्थानीय आर्य समाज का उत्सव-60वे वार्षिकोत्सव के रूप मे मनाया गया। 11, 12, 13, 14 एव 15 मार्च 1999 को यह उत्सव सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान श्री स्वामी अग्निव्रत नालदा, श्री मुनी इन्द्र कवि सारण, श्री सदानन्द शास्त्री वैरागनिया, श्री राम चन्द्र क्रान्तिकारी नेपाल, पं रामकृष्ण लखनऊ तथा स्थानीय प्रचारक ध्रुव जी एवं पारस नाथ जी के प्रोग्राम होते रहे।

हजारों की संख्या में लोगों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम से लाभ उठाया।

सत्यदेव आर्य

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, 249404 प्रवेश सूचना 1999-2000

निम्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित हैं :-

मास्टर आफ साइन्स (रसायन, भौतिकी, गणित, माइक्रोबायलोजी, पर्यावरण विज्ञान, द्विवर्षीय, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम)

अर्हताएं :- एम.एस.सी.- (सभी विषय)

बी.एस.सी. (त्रिवर्षीय) द्वितीय श्रेणी तथा सम्बन्धित विषय/वर्ग में 50 प्रति अंक (अ.जा./अ.ज.जा./गु.का.वि.वि. के स्नातकों के लिए 45 प्रतिशत)

सीटों की संख्या :-

एम.एस.सी :-(सभी विषय)

छात्र वर्ग 20 (+10 प्रायोजित/अप्र. भारतीय)

छात्रा वर्ग 20 (+ 10 प्रायोजित/अप्र भारतीय)

आवेदन कैसे करें :-

प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन पत्र तथा अन्य जानकारी निम्न पतों पर रु. 100/- (प्रायोजित/अप्र अभ्यर्थियों के लिए रु 250/-) नकद-भुगतान द्वारा 30 अप्रैल, 99 तक प्राप्त की जा सकती है। डाक द्वारा रजिस्ट्रार के नाम रु 130/- का बैंक ड्राफ्ट (प्रायोजित/अप्र. भारतीय अभ्यर्थियों के लिए 280/-रुपए) प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन पत्र तथा अन्य जानकारी निम्न पतों पर ही 20 अप्रैल तक भेजकर प्राप्त की जा सकती है। अन्तिम वर्ष की अर्हता परीक्षा दे रहे अभ्यर्थी भी प्रवेश परीक्षा में बैठ सकते हैं।

एम एस सी छात्र वर्ग : प्रिंसीपल, विज्ञान महाविद्यालय, गु.कां.वि.वि हरिद्वार।

एम एस-सी छात्रावर्ग : प्रभारी कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, रुड़की रोड, ज्वालापुर, हरिद्वार।

आवेदन पत्र जमा करने की अन्तिम तिथि-30 अप्रैल, 99 है।

प्रवेश परीक्षा तिथि :-

एम.एस-सी (भौतिकी एवं पर्यावरण विज्ञान) : 5-6-99 (8.00 बजे से 10.00 बजे प्रात:)

एम एस-सी. (गणित एव माइक्रोबायोलोजी) : 5-6-99 (11.00 बजे से 1 00 बजे तक)

एम एस-सी (रसायन शास्त्र) : 5-6-99 (2.00 बजे से 4 00 बजे साय)

परीक्षा केन्द्र :-

1 विश्वविद्यालय भवन, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-(छात्र वर्ग-एम.एस-सी सभी विषय)

2 कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, रूड़की रोड, ज्वालापुर, हरिद्वार-(छात्रा वर्ग-एम एस-सी सभी विषय)

3. दिल्ली -(छात्र व छात्रा वर्ग एम.एस-सी)

नोट :-अभ्यर्थियों की संख्या वांछित-स्तर से कम होने पर दिल्ली केन्द्र हरिद्वार अथवा देहरादून स्थानान्तरित किया जा सकता है।

(डा.एस एन सिंह) कुलसचिव

लुधियाना आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नवविक्रमी संम्वत् 2056 दिनाक 18.3.99 को बड़े समारोह के साथ मनाया गया। प्रात: विशेष यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा पं सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री थे यज्ञ की अग्नि आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री देव पाल जी आर्य ने प्रज्वलित की साथ में श्री अशोक जी गोगिया, श्री विनोद जी ढींगरा, श्री डा. देविन्द्र जी सूद का परिवार श्री सुरेन्द्र जी वध्वा सपरिवार यजमान बने। यजमानो की संख्या बहुत होने के कारण एक हवन कुण्ड और लगाया गया। समारोह के मुख्यवक्ता डा बाल कृष्ण जी शास्त्री एम.ए पी एच डी ने अपने सम्बोधन में कहा हम सब को महर्षि के कार्यों को आगे बढ़ाना चाहिए। महर्षि ने जो उपकार किये उन्होने संक्षिप्त स वर्णन किया श्रद्धेय महात्मा सुमनायति जी का सारे कार्यो को सफल करने में हमें पूरा आशीर्वाद प्राप्त रहता है शान्ति पाठ के पश्चात सबको यज्ञशेष वितरित किया गया।

—मतवाल चन्द आर्य प्रधान

आर्य बन्धु विचार करें

आओ हम सब मिलकर विचार करें हमने सब ने बोधरात्रि मनाई है। हमें क्या बोध हुआ है शिवरात्रि चिरकाल से मनाई जा रही है। महर्षि दयानन्द के काल से भी बहुत पहले से बहुत से लोग इसे मनाते आ रहे हैं, परन्तु महर्षि को छोड़ कर और किसी को इससे कोई बोध नहीं हुआ। केवल 14 वर्ष के मूलशंकर ने जब चूहों को शिव पर चढ़े भोग को खाते देखा और उस पर मल-मूत्र त्याग करते हुए देखा तो उनका विवेक जागा। एक राजकुमार भरी जवानी में शाही ठाठ-बाठ के साथ जाता हुआ रास्ते मे एक बूढ़े को देखता है, एक अर्थी को दखता है वह विचार सागर में डूब जाता है उसका विवेक जाग जाता है वह महात्मा बुद्ध बन जाता है। बहुत से लोग बूढ़े लोगों को देखते हैं। जाती हुई अर्थी को देखते हैं परन्तु आज तक और किसी को बोध नहीं हुआ।

महर्षि दयानन्द के जीवन काल में बोधरात्रि नहीं मनाई जाती थी। महर्षि की मृत्यु के बाद ही दीपावली पर्व ऋषि निर्वाण दिवस और शिवरात्रि पर्व को ऋषि बोधरात्रि के रूप में मनाया जाने लगा। इसे तब से अब तक लगभग 116 वर्ष हो गए हैं हमें इस पर्व को मनाते हुए, परन्तु आज तक हम सब में से किसी को कोई बोध नहीं हुआ आखिर क्यों ? किसी का विवेक नहीं जागा आखिर क्यों ? हमें कब बोध होगा ? किस प्रकार होगा? इस पर विचार करें। हम विशेष रूप से टंकारा में बोध पर्व और अजमेर में ऋषि निर्वाण दिवस मनाते आ रहे हैं। यह दोनो स्थान अब तीर्थ स्थान बने हुए हैं परन्तु हम इन पर्वों को मनाते हुए कोई प्रेरणा नहीं ले रहे। आज हम महर्षि के सिद्धान्तों को छोड़ रहे हैं। उनके आदर्शों को छोड़ रहे हैं। आज हम महर्षि से दूर हटते जा रहे हैं। उनकी मान्यताओं को छोड़ रहे हैं। आपस में लड़ रहे हैं आखिर क्यों ?

आओ विचार करें कि यह बोधरात्रि हम सब के लिए कब बोधरात्रि बनेगी।

-[illegible] वानप्रस्थी 95-सुथराशाही मोहल्ला, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)

टंकारा यात्रा

हे शिवरात्रि आई है शिवरात्रि आई है। चलो मेरी बहनों-चलो मेरी भाई
चलो उस धरती को फिर से सर निवायें। चलो फिर से शिव से करें प्रार्थनायें।
वह दे फिर से हम सबको प्यारा दयानन्द। जो था निर्बलों का सहारा दयानन्द।
वह फिर देश का आके उद्धार कर दे। भंवर में पड़ी किश्ती को पार कर दे।
पताका ओ३म् की हर जगह जावे लहराई। हे शिवरात्रि आई
ट्रेनें बसें भर के जाने लगीं फिर। बसो में भी गूंजे वेद मंत्रों के स्वर।
कभी मिल के खाना-कभी मिल के गाना। कभी झूमते सुनने को मिल रहे स्वर।
कहीं वेद चर्चा-कहीं हवन सन्ध्या। ऋषि ध्यान में मग्न थे सब नारी-नर।
गया दिन तो फिर खुशियों की रात आई । हे शिवरात्रि आई
रुकी ट्रेन मन को सकून आ रहा था। प्लेटफार्म पर ओ३म् का झण्डा लहरा रहा था।
उस स्वागत से मन को अति आनन्द आया। बैठे बस मे ऋषिवर का नारा लगाया।
भव्य स्वागत आश्रम में देखकर हम। लगा आन पहुंचे हैं ऋषि के घर मे हम।
चहुं ओर मन में बज उठी शहनाई । हे शिवरात्रि आई
तपस्या ब्रह्मचारियों की वहा देखी। आश्रम में कहीं भी कोई कमी न थी।
कहीं गर्म पानी के टब भर रहे थे। दयानन्द के प्यारे सेवा कर रहे थे।
रसोई घर में भी अद्‌भुत था इन्तजाम देखा। कहीं चाय-नाश्ता-कहीं दूध मिल रहा था।
नित्य नये पकवानों का भण्डारा ऋषि का। हर कोने-कोने मे था नजारा ऋषि का।
लगे ऐसे में स्वर्ग में चल के आई। हे शिवरात्रि आई
प्रात. ऊंचे-ऊचे गूजे मन्त्रो के स्वर। देखी यज्ञ वेदी और प्यारे ऋषि का घर।
वह छोटा सा गाव वह छोटा सा मन्दिर। वह चौकी जिसपे कभी बैठे थे मूलशंकर।
वह भोले से मानव गांव की दुकानें। लगे सब जगह अपने जाने पहचाने।
शोभा यात्रा में जब हम सब चल रहे थे। जगह-जगह पानी लिए वह खड़े थे।
वह अद्‌भुत मिलन की घड़ी दी दिखाई । हे शिवरात्रि आई
वह बच्चों के प्रोग्राम वचन विद्वानों के। मन मोहक भजन सुनने को मिल रहे थे।
वस्त्र पीले और पगड़ियां पीली पहने। चेहरे सबके सूर्य की भांति खिल रहे थे।
कोई आया दिल्ली से-पंजाब से कोई। खुशी-खुशी से सब गले मिल रहे थे।
ऋषि मेले में खूब लगी थीं दुकानें। हर तरह की पुस्तके कलैण्डर मिल रहे थे।
लगे जैसे जीवन में सोगात पाई है । हे शिवरात्रि आई
फिर आई विदा वेला लगे लोग जाने। छटी भीड़ फिर लगे छाने विराने।
एक-एक कमरे होने लगे खाली। कैसे जायें राजकोट सहगल जी से सलाह ली।
धन्य है भाई रामनाथ इन्तजाम करने वाले। किसी का भी कहना कभी न वह टाले।
किसी को दी गाड़ी और किसी को टैम्पो। हस-हस के कर रहे विदा हर किसी को।
दयानन्द का सच्चा सिपाही लग रहा था। दयानन्द का काम पूरा कर रहा था।
फिर चलने की हमारी बारी भी आई । हे शिवरात्रि आई
फिर बैठ टैम्पू मे चल पड़े हम भी। बडी ही वह सुन्दर विदा की घडी थी।
रामनाथ भाई जी ने की फूलों वर्षा। सचमुच उन्होंने तो मन मोह लिया हम सबका।
चल पड़े तो रास्ते की छटा थी निराली। चहु ओर काली घटाये थी छाइ।
वह ओलो की टप-टप, वह पानी का गिरना। वह आधी की तरह हवाओ का चलना।
पुरोहित जी ने उस वर्षा में गीत गाया। लगे जैसे धरती पे स्वर्ग उतर आया।
कह कैसे वर्णन मैं तो उस घड़ी का। कभी न भूलने वाला वह दृश्य ही था।
टंकारा की यात्रा क्या रंग लाई । हे शिवरात्रि आई
लिखूं क्या-क्या शोभा मैं इस यात्रा की। मिले कोई न शब्द न ताकत कलम की।
मिले चांद सूरज करोड़ों सितारे। मिले शक्ति सारी इस धरती गगन की।
फिर भी उस ऋषिवर की धरती की शोभा, की जाये वर्णन न शक्ति किसी की।
जुबां लड़खड़ाई, कलम चल न पाई। शक्ति राज की भी नहीं काम आई।
हे शिवरात्रि आई......

राज सूखरा
आर्य समाज, दिलशाद गार्डन,
दिल्ली-110095

फिरोजपुर शहर में सामवेद पारायण यज्ञ

महर्षि दयानन्द जी के जीवनकाल में उनकी हार्दिक इच्छा रही कि प्रत्येक आर्य बन्धु के घर में चारों वेदों का विधिवत पठन पाठन हो। उनकी भावना से प्रेरित होकर श्री मोहन लाल जी के गृह में महर्षि बोधोत्सव के अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ करवाया गया जिसमे आचार्य विश्वमित्र मेधावी कुलपति ब्रह्मा के रूप में विराजमान हुए और यज्ञ विधिवत सम्पूर्ण करवाया। श्री मोहन लाल जी ने बाकी के तीन वेदों का विधिवत यज्ञ करवाने की भी इच्छा प्रकट की जो निकट भविष्य में होने की आशा है।

इस मौके पर "आर्य समाज रानी का तालाब" में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस को और बोधोत्सव को बड़े उत्साह से मनाया गया। बच्चो ने महर्षि के जीवन पर हृदय स्पर्शी भजन बोल कर आये हुए आर्य प्रेमियों को भावविभोर कर दिया। जिससे आर्य प्रेमियों ने उन्हें उचित रूप से पुरस्कृत किया।

सन्तोष कुमार "मन्त्री"

गण्डा सिंह वाला में शिवरात्रि पर्व

आर्य समाज गण्डासिंह वाला अमृतसर में दिनांक 7.3 99 रविवार को ऋषिबोधोत्सव बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री इन्द्रपाल आर्य प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर ने की। उन्होंने इस शुभ अवसर पर बोलते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द जी युगपुरुष थे। उन्होंने उस समय देश में फैली कुरीतियों, अन्धविश्वासों, पोपलीलाओं का खण्डन कर वैदिक मान्यताओं की स्थापना की। श्री जगदीश लाल प्रधान, श्री नरदेव जी सचिव, श्री राजपाल जी, वेद प्रकाश जी ने भी अपने उद्गार रखे। श्री राजकुमार जी उपप्रधान गंडा सिंह वाला ने आये हुए गणमान्य व्यक्तियों का अभिनन्दन किया व सभी समाजों से आये हुए महानुभावों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया व कार्यक्रम के पश्चात ऋषि लंगर बांटा गया। स्त्री आर्य समाज गंडा सिंह वाला की तरफ से शारदा वर्मा, माता दुर्गा देवी, सुषमा पसाहन व सत्या देवी को सम्मानित किया गया।

राजकुमार उपप्रधान

स्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना की गतिविधियां

स्त्री आर्य समाज की ओर से पारिवारिक यज्ञ का सिलसिला पिछले ० वर्ष से सिविल लाइन ग्रान पार्क मे चल रहा है रविवार 21 तारीख का यज्ञ श्री नद लाल पुरुथी परिवार म 22 न म प्रात 9 से 10 30 तक हुआ। यज्ञ श्री धर्म पाल जी खन्ना क सरक्षण मे चलता है। स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमति इन्द्रा जी शर्मा व मन्त्री श्रीमती ननक रानी आर्या यज्ञ करवाती हैं।

पारिवारिक सत्सग बाजवा नगर म श्री महेन्द्र पाल विज क घर भी बडो श्रद्धा स सम्पन्न हुआ श्रीमति सुषमा जी के घर उनक विवाह की वर्षगाठ। बहुत प्रेम से यज्ञ सत्सग स्त्री आर्य समाज ने बडो निष्ठा स किया। ऐसे सत्सगो का सिलसिला चलता रहता ह श्री श्रवण जी ने बेटा की शादी के उपलक्ष्य मे यज्ञ किया गया। यह यज्ञ सत्सग कमरा क जरिए चलता है। सभी बढ चढ कर भाग लेते हैं। सब बहनें पूरा सहयोग देता हैं। स्त्री आर्य समाज गरीब बीमार आवश्यकता वश आए लोगो की यथाशक्ति सहायता करता रहता है। अभी अभी प गगाप्रसाद क लडके के एक्साडेन्ट पर मदद की एक बीमार को दवाई के लिए मदद की प उमेश (प्रज्ञाचक्षु) का बहन का शादी पर भी सहायता का यत्न यही रहा है कि कुछ न कुछ मदद कर दी जाए

महात्मा मीरा यति जी को भी उनका आयु भर का तपस्या सेवा उपकार साहित्य सेवा को याद करक बहनो न भावभीनी श्रद्धाजलि भेंट की। जनकरानी आर्या व सुमनायति जी ने कहा आर्य जगत के लिए यह जो कमी आई है उसे पूरा नहीं किया जा सकता हम उनक मार्ग पर चलन की प्रेरणा लेनी चाहिए

जनकरानी आर्या मन्त्री

केन्द्रीय सभा का गठन

पलवल नगर क तीनो आर्य समाजो न मिलकर आर्य समाज क वैदिक सिद्धान्तो के प्रचार व प्रसार हतु आर्य कन्द्रीय सभा पलवल का गठन करक सर्व सम्मति से अधिकारियो का चयन किया जो इस प्रकार है

प्रधान श्री धनपत राय जी आर्य सरक्षक आर्य समाज जवाहर नगर पलवल।

मन्त्री श्री वीरेन्द्र जी आर्य

पुरोहित श्री हसराज जी शास्त्री।

प्रवक्ता श्री सजीव जी मगला अधिवक्ता एव पत्रकार

जय प्रकाश आर्य

लुधियाना में ऋषि बोधोत्सव

14 2 99 रविवार प्रात 8.30 बजे से 10.30 बजे तक आर्य समाज हबीब गज लुधियाना मे बड समारोह में मनाया गया। यज्ञ मे जहा समाज के सदस्य भारी सख्या मे उपस्थित हुए वहा आर वी प्राईमरी स्कूल का स्टाफ एव छात्र श्रद्धापूर्वक शामिल हुए। यज्ञ के पश्चात् आर्य समाज क पुरोहित श्री योगराज जी शास्त्री ने अपने सुरीले भजनो एव ओजस्वी भाषण में कहा कि आज के दिन एक छोटी सी घटना को देखकर बालक मूलशकर के मन मे सच्चे शिव को पाने के लिए अभिलाषा जागी और कई मुश्किले झेल कर सच्चे ज्ञान को प्राप्त करके उस ज्ञान को फैलाने के लिए उन्होने आर्य समाज की स्थापना की अन्त समय तक उस वेद ज्ञान को फैलाने मे उन्होने भरपूर यत्न किया। आज के दिन हमें उनके मिशन को फैलाने के लिए प्रण करना चाहिए।

जनक राज मन्त्री

मुद्रक प्रकाशक ... द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रेस ... जालन्धर स मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर स इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ

वर्ष 49 अक 1 22 चैत्र सम्वत् 2056 तदनुसार 1/4 अप्रैल 1999 दयानन्दाब्द 175 वार्षिक शुल्क 50 रुपये आजीवन 500 रुपये

पंच महा यज्ञों का महत्त्व

(श्री अरुण कुमार शास्त्री वैराग्यानन्द मठ घण्डरां (हि० प्र०)

धर्म प्रिय आर्य सज्जनो मैं आप लोगो को बता देना चाहता हू कि भारत के जगद्गुरु देव दयानन्द सरस्वती ने अनकू मत मतान्तरों को देखा सम्प्रदायों को देखा और अनुभव किया कि इनसे मनुष्य और प्राणी मात्र दुखी है और इनसे मनुष्य का कल्याण नहीं हो रहा है। अर्थात् सभी मनुष्य और प्राणी मात्र दुखी हैं। यज्ञ के नाम पर पशु पक्षी आदि जीवो की हत्याये की जा रही हैं। तब उन्होने वेदानुकूल मनुस्मृति का प्रमाण देते हुए पच महा यज्ञ करने मनुष्य मात्र के लिए बताए हैं। यह यज्ञ न कि मनुष्य के लिए उपयोगी हैं बल्कि प्राणी मात्र के लिए उपयोगी हैं।

ऋषि यज्ञ देव यज्ञ भूत यज्ञ च सर्वदा
पितृ यज्ञं नृ यज्ञं यथा शक्ति न हापयत्

ब्रह्म यज्ञ देव यज्ञ अतिथि यज्ञ पितृ यज्ञ बलिवैश्वदेव यज्ञ

ब्रह्मयज्ञ—प्रात सूर्य उदय से पूर्व शौच स्नान आदि से शुद्ध पवित्र होकर एकान्त स्थान में आसन् लगाना तथा प्राणायाम द्वारा प्राणो को वश मे लाना एव ईश्वर का स्तुति प्रार्थना उपासना व गुण गान से अपने मन व चित्त को स्थिर व एकाग्र बनाना इसी प्रकार प्रतिदिन प्रात साय दोनो समय ईश्वर भक्ति मे लीन होकर वास्तविक आनन्द उठाना तथा वेद आदि सत्य शास्त्रो के स्वाध्याय से ज्ञान बढाना ये सन्ध्या आदि नित्य कर्म करना यह ब्रह्म यज्ञ कहता है। अर्थात् यह मानव चोला जो मनुष्य को दिया है तो प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि प्रात काल उठ कर उस परमेश्वर का धन्यवाद करे यह भी ब्रह्म यज्ञ कहलाता है।

कविता—ब्रह्म मुहुर्त जागिए न रहिए पड सोय
शौच कर्म स्नान से जब तन निर्मल होय ।
ऋषिकृत ग्रन्थ और वेद का करना नित् स्वाध्याय
आत्मिक उन्नति के लिए यह उत्तम है उपाय।
रात्रि दिवस सन्धि समय करे सध्या मन लाय।
ईश्वर भजन प्रभाव से मन निर्मल हो जाय।
ब्रह्म यज्ञ इसको कहैं पहिला यज्ञ महान।
अर्पण ईश्वर को करे कर्म उसी का मान् ।

देवयज्ञ—अब आगे कहते हैं देव यज्ञ सूर्य उदय होने पर सुगन्धित स्वास्थ्य वर्धक रोगनाशक पौष्टिक सामग्री एव शुद्ध घृत से जो वेद मन्त्रो द्वारा हवन यज्ञ किया जाता है इसको देव यज्ञ कहते हैं। यह सर्वश्रेष्ठ कर्म है इस श्रेष्ठ कर्म से संसार का समस्त प्राणी लाभ उठाता है। क्योंकि जब शुद्ध घृत की आहुतियां अग्नि प्रज्वलित करके दी जाती हैं एव रोगनाशक व कीटाणुनाशक स्वास्थ्य वर्धक सुगन्धित तथा पौष्टिक सामग्री को अग्नि में डाला जाता है तो अग्नि देवता इसे अति सूक्ष्म बनाकर वायु देवता की सहायता से सर्वत्र फैलाता है। सूर्य देवता हवन के इन शुद्ध व अति सूक्ष्म तत्वों को व जल देवता मिश्रित सूक्ष्म परमाणुओं को अपनी आकर्षण शक्ति से बादल बनाता है तथा पृथ्वी पर बरसाता है। अर्थात् प्रत्येक जड देवता अपने दिव्य गुण की सार्थक करता हुआ प्राणी मात्र का कल्याण करके अपने कर्त्तव्य को निभाता है। इस हवन द्वारा शुद्ध जल की वर्षा से शुद्ध वनस्पतियां औषधियां उत्पन्न होती हैं और इनसे संसार के समस्त प्राणी लाभ उठाते हैं। यह एक ऐसा वेद का सिद्धान्त है कि जिसे प्रत्येक विद्वान बुद्धि अनुकूल मानता है ।

कविता—हवन यज्ञ द्वितीय कहा देव यज्ञ यह मान
इससे सारे देवता करो प्रसन्न सुजान ।
जल वायु सब शुद्ध हो रोग न लागे कोय
स्वास्थ्य रहे इससे बना इसका यह फल होय।
प्राणी मात्र का ही सदा इस यज्ञ से कल्याण
इसी कारण अति श्रेष्ठ यह उत्तम कर्म महान् ।।

पितृ यज्ञ—पितृ शब्द पा रक्षणे धातु से सिद्ध होता है इस यज्ञ के अन्तर्गत जीवित माता पिता आचार्य आदि पुज्य बडे बूढो की भोजन एव श्रद्धा पूर्वक सेवा आदि से उन्हे तृप्त करना और समय समय पर उनका आवश्यकताओ की पूर्ति करते रहना और उनको प्रसन्न रखना यह पितृ यज्ञ कहलाता है ।

कविता—तृतीय यज्ञ पितृ कहा श्रद्धा युक्त श्राद्ध।
जिसके करने से सदा मिटते हैं अपराध।
जीवित गुरु माता पिता सभी पितर कहलावें
इनकी सेवा धर्म है तजे तो पाप लग जावे
माता पिता गुरुदेव धर्म शास्त्र अनुसार
अन्न वस्त्र से कीजिए सदा उनका सत्कार।
अपने से पहले सदा उनको भोग लगा।
हैं यह सच्चे देवता भूल कभी मत जा।
आयु विद्या यश बल के हैं यह दातार
हर लेवे इन चार को जो करदे तिरस्कार।

और मनु महाराज ने मनुस्मृति के अन्दर बताया है मनु जी कहते हैं

अभिवादन शीलस्य नित्य वृद्धोपसेविन
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयु विद्या यशो बलम्

अर्थात्, बडे बूढों माता पिता का आचार्य का सत्कार करना नमस्ते करना सम्मान करना यह कार्य जो भी मनुष्य जो कोई भी करता है। उसके पास मे चार चीजे बढ जाती हैं। आयु विद्या यश और बल।

अतिथि यज्ञ—न तिथि अतिथि जिसकी आने की कोई तारीख निश्चित न हो उसे अतिथि कहते हैं। वेद के विद्वान पण्डित सन्यासी वानप्रस्थी सन्त महात्मा को भोजन आदि वस्तुओ से तृप्त करना और उनकी सच्चे मन से सेवा करना यह भी यज्ञ कहाता है। जो विद्वान धर्मात्मा योगी सन्त महात्मा आदि जो महापुरुष नैष्टिक आदि कोई भी आदमी देश समाज व जाति के लिए काय कर रहा हो उनकी सेवा करना यह भी अतिथि यज्ञ के अन्तर्गत आता है।

कविता—चतुर्थ यज्ञ अतिथि है महिमा या की अपार
धन्य भाग उस गृहस्थ के जो करे अतिथि सत्कार
बिना तिथि निश्चित किए आए अतिथि कहलाए
ज्ञानी ध्यानी वेदविद सत्य कार्य कहलाए ।
प्रेम भक्ति से कीजिए धर्म समझ सत्कार
सबसे पहिले दीजिए उसे भोग आहार
उनसे पहिले खाए जो महा अनर्थ हो जाए
लोक और परलोक के सब सुख ले गवाय
धन विद्या बुद्धि बढे पुत्र पौत्र सुख धाम्
होवे लोक परलोक सुख बह आदर सम्मान्

बलिवैश्वदेव यज्ञ—महर्षि दयानन्द ने पाचवा यज्ञ बलिवैश्वदेव यज्ञ बतलाया है। इसके अन्तर्गत गाय कुत्ता बिल्ली कौआ कीट आदि पशु पक्षियों की भूख की तृप्ति करना यह बलिवैश्व देव यज्ञ कहलाता है। जिस के गृह में कोई भी पशु पक्षी रहता हो। तो उसके घर वालों को चाहिए कि अपना भोजन करने से पहले पशुओं को भोजन दे। उनको भोजन कराने के बाद ही स्वय भोजन करें । यह बलिवैश्व देव यज्ञ के अन्तर्गत आता है ।

समस्त प्राणियों की [illegible]

श्री [illegible]

गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित महाभारत के आधार पर सृष्टि की उत्पत्ति को पढ़ कर आश्चर्य होता है आज भी हमारी पुस्तकों से इन अनर्गल बातों को निकाला नहीं गया। [illegible] विज्ञान का युग है इसमें भी यह अनर्गल बाते पढ़ी जा रही हैं।

सत युग मे दक्ष प्रजापति ने अपनी तेरह कन्याओं का विवाह कश्यप ऋषि से किया। उन कन्याओं का नाम इस प्रकार है। अदिति दिति दनु, काली दनायु सिंहिका क्रोधा प्राधा विश्वा विनता कपिला मुनि कद्रु ।

1 अदिति के बारह पुत्र हुए जिन में एक विष्णु भगवान्भी ।

2 दिति का एक पुत्र हिरण्य कश्यप हुआ वह विष्णु का भाई था एव राक्षस था।

3 सिंहि का पुत्र राहु हुआ जिसे राक्षस एव ग्रह भी कहते हैं।

4 विनता का पुत्र गुरुड पक्षी और अरुण आदि छ पुत्र हुए।

5 ताम्रा की पाच कन्याए हुई। काकी श्येनी भासी धृतराष्ट्री शुकि। काकी से उल्लु श्येनी से बाज सपाति जटायु पैदा हुए। भासी से कुत्ते एव गिध धृतराष्ट्री से हस शुकि से तौते उत्पन्न हुए।

6 क्रोधा से नौ कन्याए उत्पन्न हुई। मृगी मृगमदा हरी भद्रमना मातगी शार्दूली श्वेता सुरभी सरसा। मृगी से मृग मृगमदा से रीछ भद्रमना से हाथी हरी से घोडे एव बन्दर शार्दूली से सिह बाघ एव भेडे मातगी से हाथी उत्पन्न हुए।

7 सुरभी से चार कन्याए पैदा हुई। रोहिणी गन्धर्वी विमला अनिला रोहिणी से गाय बैल गन्धर्वी से घोडे अनिला से खजूर ताल सुपारी। नारियल आदि वृक्ष उत्पन्न हुए। अनिला की पुत्री शुकि से तौते पैदा हुए।।

8 सुरसा से कक पक्षी और नागो और सर्पो का जन्म हुआ।

9 पुलस्त्य ऋषि से राक्षस बन्दर किन्नर और यक्ष उत्पन्न हुए।

10 पुलह ऋषि से सिह, व्याघ्र भेडिये तथा [illegible] पैदा हुए।

11 [illegible] से शेष नाग वासुकि तक्षक आदि [illegible] उत्पन्न हुए।

12 मुनि से देव गन्धर्व [illegible] पुत्र पैदा हुए प्राधा से देव गन्धर्व एव अप्सराए पैदा हुई। कपिला से गौ ब्राह्मण गन्धर्व एवं अप्सराए पैदा हुई ।

13 सूर्य की पत्नि घोडी की उस से अश्विनी कुमार का जन्म हुआ।

समीक्षा से पूर्व सृष्टि नियम का बताना अति आवश्यक है। सृष्टि का यह नियम है कि मनुष्य से मनुष्य उत्पन्न होते हैं। पशु पक्षी जलचरों से पशु पक्षी जलचर पैदा होते है । वृक्षो और वनस्पतियो से वृक्ष और वनस्पतियां पैदा होती हैं। चेतन से जड और जड से चेतन पैदा नहीं हो सकते। ईश्वर ने जिन नियमानुसार सृष्टि की रचना की है वह नियम अटल हैं। इन नियमो को बडे से बडा योगी ऋषि मुनि सत महात्मा कोई भी नहीं टाल सकता न बदल सकता है ।।

समीक्षा 1 अदिति के पुत्र विष्णु को भगवान ईश्वर माना जाता है। परन्तु विष्णु में ईश्वर के कोई गुण नहीं हैं। ईश्वर निराकार शरीर रहित सर्व व्यापक है विष्णु साकार शरीरधारी है और एक स्थान पर अर्थात विष्णु धाम में अपनी पत्नि लक्ष्मी के साथ निवास करते हैं। ईश्वर एक क्षण में प्रलय कर सकते हैं ईश्वर को किसी दुष्ट के नाश करने के लिए जन्म नहीं लेना पडता विष्णु को किसी दुष्ट को मारने के लिए जन्म लेना पडता है। वास्तव में विष्णु ईश्वर का नाम है नाम के सिवा विष्णु का अलग कोई अस्तित्व नहीं है। ईश्वर का कोई माता पिता पत्नि भाई आदि नहीं है। विष्णु की माता अदिति पिता कश्यप ऋषि पत्नि लक्ष्मी और भाई दिति का पुत्र हिरण्य कश्यप था ।

2 दिति का पुत्र हिरण्य कश्यप था उसे राक्षस कहते थे राक्षस भी मनुष्य ही होते हैं परन्तु दुष्ट और क्रूर होने के कारण उन्हें राक्षस कहते हैं।

[illegible] राहु हुआ, [illegible] और [illegible] भी [illegible] सूर्य को [illegible] है [illegible] सूर्य ग्रहण [illegible] अपनी धुरी पर [illegible] सूर्य के चारों ओर [illegible] पृथ्वी के चारों [illegible] किसी अमावस्या के दिन जब घूमते हुए चांद, सूर्य और पृथ्वी के बीच में आ जाता है तब चांद सूर्य की किरणों को पृथ्वी पर आने से रोक लेता है [illegible] चांद की छाया सूर्य पर पड़ती है इस प्रकार सूर्य ग्रहण होते हैं। राहु न राक्षस है न ग्रह है राहु की कथा ही असत्य है राहु की कोई सत्ता नहीं है।

4 विनता से गरुड पक्षी का पैदा होना सृष्टि नियम के विरुद्ध असंभव कल्पना है।

5 ताम्रा से पाच कन्याए पैदा हुई काकी श्येनी भासी धृतराष्ट्री शुकि। इन कन्याओ से उल्लु, बाज सम्पाति एव जटायु पक्षी कुत्ते गिध हस और तौते का उत्पन्न होना सृष्टि नियम के विरुद्ध विज्ञान के विपरीत बुद्धि के विरुद्ध असम्भव है।

6 क्रोधा से नौ कन्याए पैदा हुई। मृगी मृगमदा हरी भद्रमना मातगी शार्दूली श्वेता सुरभी सरसा। इन कन्याओ से मृग रीछ गायें घोडे बन्दर सिह बाघ भेडे हाथी आदि पशुओं का पैदा होना विज्ञान के विरुद्ध सृष्टि नियम के विरुद्ध बुद्धि के विपरीत असत्य असम्भव मन घडन्त कल्पना है।

7 सुरभी से चार कन्याए पैदा हुई। रोहिणी गन्धर्वी विमला अनिला। इन कन्याओ से गाय बैल घोडे तौते एवं खजूर ताल सुपारी नारियल आदि वृक्ष पैदा हुए। स्त्रियों से पशु पक्षी और वृक्षों का पैदा होना सर्वथा असम्भव है। ऐसी बाते सृष्टि नियम के विपरीत हैं।

8 सुरसा से कक पक्षी और नागों, सर्पों का जन्म सर्वथा असम्भव सृष्टि नियम के विरुद्ध है। नागों सर्पों से सुरसा को डर नहीं लगता था।

9 पुलस्त्य ऋषि से राक्षस किन्नर यक्ष और [illegible] का पैदा होना विचित्र बात है [illegible]

[illegible] की नहीं [illegible], परन्तु [illegible] के [illegible] का पैदा होना असम्भव है [illegible]

10 पुलह [illegible] भेडिये एव [illegible] बुद्धि की [illegible] ? [illegible] आदि का [illegible] सर्पों ने [illegible] 2 कई प्रकार के [illegible] एक स्त्री के गर्भ से पैदा होना अनर्गल प्रलाप है। सृष्टि उत्पत्ति का यह वर्णन सृष्टि नियम, तथा बुद्धि और तर्क के विरुद्ध मन घडन्त गप्पोडे हैं और सर्वथा असंभव हैं ।

11 कद्रु के गर्भ से शेष नाग वासुकि तक्षक आदि नागों का उत्पन्न होना सर्वथा असम्भव है। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रिया नागो से अधिक डरती हैं। तदपि जिस स्त्री के गर्भ से साप बाप उत्पन्न हो उस का क्या हाल होगा। स्त्री के गर्भ से नागों का पैदा होना सृष्टि नियम के विरुद्ध विज्ञान के विपरीत गप्पाष्टक है ।

12 मुनि प्राधा कपिला से देव गन्धर्व नारद मुनि ब्राह्मण तथा अप्सराए पैदा हुई कपिला से गौए पैदा हुईं मुनि और प्राधा भाग्य शाली थी कि उनके गर्भ में मनुष्य तो पैदा हुए । कपिला के गर्भ से जो गौए पैदा हुई इस से तो वह बहुत दुखी हुई होगी। मनुष्य से गौए का पैदा होना असम्भव है।

13 सूर्य की पत्नि घोडी घोडी के पुत्र अश्विनी कुमार पैदा हुए। सूर्य जलती हुई गैसो का पुञ्ज है क्या सूर्य के ताप से घोडी भस्म नहीं हुई ? वह सूर्य चेतन घोडी का पति कैसे हो सकता है ? और घोडी से मनुष्य अश्विनी कुमार कैसे पैदा हो सकते हैं? यह सृष्टि नियम के विरुद्ध असम्भव तो है ही किन्तु इस से बडा असत्य गप्पोडा हो ही नहीं सकता। मेरे प्रिय पौराणिक भाईयो [illegible] विज्ञान के युग मे आप को इन असम्भव बातो पर विश्वास नहीं करना चाहिए। आपको इन सृष्टि नियम के विरुद्ध विज्ञान के विपरीत बुद्धि और तर्क के विरुद्ध असम्भव कथाओं को त्याग कर सत्य को ग्रहण करना चाहिए और अपने ग्रन्थों से इन बातों को निकाल देना चाहिए। •

सम्पादकीय

आज भी धर्मान्तरण होता है

आज से जब हम एक सौ या दो सौ वर्ष या उससे पीछे की अपने देश की तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों पर विचार किरते हैं तो हमे पता चलता है कि देश की गुलामी के समय भारत वासियों की क्या स्थिति थी। मुस्लमानों ने लग–भग 700 वर्ष हमारे देश पर राज्य किया और इसका कारण था हमारे देश के छोटे–छोटे राज्यो मे आपस की फूट। कई राजाओं ने अपने पडोसी राजा से दुश्मनी निकालने के लिए हमलावर मुगलो का साथ दिया और हिन्दु राज्यो पर उनका कब्जा करवाया। बाद मे मुगलों ने उस राजा को भी जिसने उनके साथ दिया था यह कह कर उसे भी समाप्त कर दिया कि जो अपनो का नहीं हो सका वह हमारा कैसे बन सकता है। ऐसे एक बाद दूसरे और दूसरे के बाद तीसरे राज्य पर मुगलो ने अधिकार जमा लिया और इस प्रकार सारा देस उनके अधीन हो गया। इस काल मे लाखों हिन्दु स्त्री पुरुषों को गजनी के बाजारों तथा दूसरे मुस्लिम देशों मे एक–एक दो–दो रुपये मे बेचा गया। उन्हे गुलाम बनाया गया कत्ल किया गया और भारत मे तलवार के जोर से धर्मान्तरण करके हजारो हिन्दुयों को मुस्लमान बनाया गया। तलवार की जोर पर औरगजेब ने सबसे अधिक धर्मान्तरंण किया।

इसी प्रकार ईसाइयों ने अग्रेजो के भारत मे आने से पूर्व से अपना भारतीयों को ईसाई बनाने का कार्य आरम्भ कर दिया था परन्तु अग्रेजों के काल मे जब हमारा देश उनके अधीन हो गया तो भारतीयों को ईसाई बनाने का काम बहुत तेज हो गया। मुस्लमानो ने तलवार के जोर पर धर्मान्तरण किया और ईसाईयों ने धन देकर अन्न देकर दवाए देकर नौकरिया देकर सेवा के बहाने से लोगों को फुसला कर डरा धमका कर लोभ लालच देकर धर्माण्तरण का कार्य आरम्भ रखा जो आज तक चल रहा है। देश की गुलामी के अवसर पर मुस्लामनों व ईसाईयों द्वारा धर्मान्तरण का कार्य जोरों से चलता रहा । इसी के परिणाम स्वरूप भारत मे ईसाइयों व मुस्लमानों की सख्या निरन्तर बढती रही। आजादी के बाद यह कार्य रुक जाना चाहिए था परन्तु नहीं रुका मुस्लमानों के द्वारा धर्मान्तरण का कार्य इस काल मे कम हुआ परन्तु ईसाइयो ने देश की आजादी के बाद अपने कार्य को और अधिक तेज कर दिया। मिजोरम मे ईसाइयों की वर्तमान सख्या के बारे मे सभी को पता है उडीसा और बिहार के दूरस्थ गावों मे निर्धन लोगों को लालच देकर आज भी ईसाई बनाया जा रहा है। करोडों रुपया ईसाई पादरी इसके लिए खर्च रहे है। पैसे के बल बूते पर और सेवा के नाम पर नागालैण्ड मिजोरम अरुणाचल मेघालय सिक्किम त्रिपुरा मणिपुर आदि प्रान्तों मे नब्बे प्रतिशत हिन्दु ईसाई बनाए जा रहे है। इस कार्य मे मदर टेरेसा का सब से बडा हाथ रहा है।

दि लासेट के सम्पादक ने लिखा है कि मदर टेरेसा सेवा के नाम पर व्यापार करती है। रोगियों का इलाज करने की बजाए उनकी लाशो पर प्रार्थना करती है । सेवा के नाम पर हिन्दुओ को इसाई बनाने का कार्य करती है। इससे स्पष्ट होता है कि हिन्दुओं को ईसाई बनाने के लिए मदर टेरेसा ने भी कोई कसर नहीं छोडी। प्रत्येक ईसाई मिसनरी रात दिन हिन्दुओं को इसाई बनाने मे लगा हुआ है। इसके विरोध में कुछ प्रतिक्रिया भी हुई जो होनी स्वभाविक है। आखिर कब तक हिन्दु लोग आखे बन्द करके यह ईसाइयों का तमाशा देखते रहते। अब तो ईसाइयो ने अपने प्रचार का ढग ही बदल दिया है वह कई प्रकार के आडम्बर रच कर झूठ–मूठ के चमत्कार दिखा कर लोगों को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। कई भोले भाले लोगो को बहका कर फुसला कर कई प्रकार के सब्जबाग दिखा कर लोगों को प्रभावित करते हैं और उन्हे ईसाई बनाने का प्रयास करते हैं। इसके साथ ही ईसाइयों द्वारा जो शिक्षा सस्थाए चलाई जा रही है। उनमे भी ईसाई सम्प्रदाय का प्रचार बडे अनोखे ढग से किया जा रहा है। राजकोट के आई बी मिशन गर्ल्ज हाई स्कूल में अध्यापिकाओं ने हिन्दु छात्राओं को बाईबल मे रख कर एक परचा (फार्म) दिया और उसे भरने के लिए कहा गया। इस परचे (फार्म) मे लिखा गया था कि यीशु मेरा मुक्ति दाता है। इस नाते मै कबूल करती हू और विश्वास करती हू कि प्रभु यीशु की मेरे पापो के कारण वध स्तम्भ पर मृत्यु हुई और मुझे न्यासी सिद्ध करने के लिए वे तीसरे दिन सजीवन हुए। इस लिए मै उनको अपना व्यक्तिगत तारण हार स्वीकार करती हू। इसके नीचे प्रत्येक लडकी को हस्ताक्षर करने के लिए कहा गया। इस फार्म को भर कर वापिस करने के लिए कहा गया परन्तु जब लडकियों के अभिभावको को इस बात का पता चला तो उन्होन विद्यालय मे जा कर इस का कडा विरोध किया। इस विरोध को भी कई अखबारों ने गल्त ढग से प्रचारित किया। जो कार्य इसाइ करते जा रहे है उनकी करतूते अखबारो वाले नही छाप रहे परन्तु विश्व हिन्दु परिषद और दूसरी हिन्दु धर्म समर्थक सस्थाओं के सम्बन्ध कई अनर्गल बाते छापी जा रही है। ऐसा करके यह लोग देश सेवा नही कर रहे बल्के देश को हानि पहुचा रहे है। ईसाई म्शिनरियो की गतिविधिया हमारे देश मे बढती जा रही है। यदि इसी प्रकार इनका यह धर्मान्तरण का कार्य चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब कि कइ प्रदेशों मे ईसाइयों का बोल–बाला हो जाएगा। भारत मे बोटों का राज्य है इस आधार पर वही व्यक्ति एम एल ए या एम पी बनगा जिसको ईसाइयों का वोट मिलेगा और वोट देकर ईसाई उसी व्यक्ति को आगे लाएगे जो उनकी बाते मानेगा। हो सकता है ईसाई मत वाल व्यक्ति को ही वह एम एल ए व एम पी बनाए । ऐसी स्थिति मे उस प्रदेश मे वही होगा जो ईसाई मिशनरी चाहेगे ।

ईसाई मिशनरी अपने साहित्य के द्वारा व प्रचार साधानो के द्वारा ईसाई मत का प्रचार बडे जोरों से कर रहे है। आज तो टेलीविजन पर भी बाईबल की कहानियो के नाम से ईसाई धर्म का प्रचार किया जा रहा है। कल ही जब मैने डी डी टु चाईनल का बटन दबाया तो देखा कि चित्र के माध्यम से बाईबल मे लिखित सृष्टि उत्पत्ति देखाई जा रही थी। आदम का खुदा द्वारा पैदा करना उसकी पसली से औरत का बनाना दोनों का बौद्धि वृक्ष के फल खाना और खुदा द्वारा उन्हे धरती पर भेजना आदि दिखाया जा रहा था। आज तो टेलिविजन को भी ईसाई अपने मत के प्रचार के लिए प्रयोग कर रहे है। साधारण बुद्धि के स्त्री पुरुष इनके झासे मे जल्दी आ जाते है और ईसाई लोग इस कमजोरी का लाभ उठा रहे है। साधारण लोगों की बुद्धि यह निर्णय नहीं कर सकती कि ठीक क्या है और गलत क्या है ? जितन ईसाई मत का प्रचार स्वतन्त्र भारत मे हो रहा है उतना पराधीन भारत मे भी नहीं हुआ। जब अग्रेजों का अपना राज्य था तो उस समय जो ईसाई नहीं कर सके वह आज स्वतन्त्र भारत मे बडे धडाले से कर रहे है। यदि कोई हिन्दु सस्था या हिन्दु इसका विरोध करता है तो हमारे राजनैतिक लोग उसे साम्प्रदायिक सस्था या साम्प्रादयिक व्यक्ति कह देते हैं और सारा दोष उसी के सिर पर मढ दिया जाता है। जो अपने देश की सस्कृति की रक्षा के लिए कार्य करता है और अपने देश की रक्षा करना चाहता है ।

यह वोटों की राजनीति आज हमारे देश के लिए घातक सिद्ध होती दिखाई दे रही है क्योंकि वोटो के लिए रा नैतिक लोग प्रत्येक व्यक्ति को खुश करने का प्रयास कर रहे है प्रत्येक सम्प्रदाय को प्रोत्साहन दे रहे है उनकी प्रत्येक बात को मनने के लिए तैयार हो रहे है चाहे वह कल को देश के लिए घातक ही सिद्ध क्यों न हो ।

गत50 वर्षों मे ईसाइयो द्वारा लाखो हिन्दुओं का धर्मान्तरण किया गया और आज भी वह करते जा रहे है परन्तु कोई भी राज नैतिक पार्टी इसके लिए कोई विचार नहीं कर रही कि आगे चल कर यह धर्मान्तरण हमारे देश के लिए कितनी बडी समस्या पैदा कर देगा। पहले ही धर्म के नाम पर देश के दो टुकडे पाकिस्तान और बगला देश बन कर भारत से अलग हो चुके है। अब आगे चल कर ईसाईस्तान की भी माग हो सकती है इससे देश टुकडे–टुकडे हो जाएगा। सरकार को जैसे भी हो हिन्दुओं के धर्मान्तरण को रोकना चाहिए ईसाइयों की उन गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए जो हिन्दुओं को ईसाई बनाने के लिए वह कर रहे है। भारत की जनता को भी सावधान रहना चाहिए। प्रत्येक देश प्रेमी व देश हित चिन्तक को धर्मान्तरण को रोकने के लिए प्रयास करना चाहिए।

धर्मवीर आर्य
सह-सम्पादक

१५४१ में पादरी जेवियर ने साठ हजार हिंदूओ को ईसाई बनाया

(श्री जगदीश प्रसाद वैदिक, वैदिक सदन, भंवरकुआ, इन्दौर-४५२००१

भारत में ईसाई पादरियों का पदार्पण १४९८ से प्रारंभ होता है। इनका उद्देश्य भारत में ईसाइयत फैलाना था इसलिये प्रारम्भ में गरीब जनता से संबध स्थापित कर धीरे-धीरे हिन्दुओं को ईसाई बनाते रहे। जब अंग्रेजों ने भारत में अपना शासन स्थापित कर लिया उसके पश्चात तीव्र गति से हिन्दुओं को ईसाई बनाना प्रारभ कर दिया। जो हिन्दू ईसाई नहीं बनते थे उन पर हमले किये जाते थे उनके मदिरों को तोड दिया जाता था। अग्रेज सरकार का उपयोग किया जाता था और करोडों रुपये ईसाई राष्ट्रों से भारत में आते थे। भारत के किसी एक प्रात में ही नहीं सपूर्ण भारत में ईसाइयों का धर्म परिवर्तन का कार्य सतत् चलता रहा।

१५४१ में फ्रेंसिस जेवियर भारत आया। इस दिन को भारत में रोमन केथोलिक मिशन का जन्म दिवस कहा गया। इसने भारत मे केवल साढे चार वर्ष ही कार्य किया-उसने इतने अल्पकाल में ६०,००० हिन्दुओं को सामूहिक रूप से ईसाई बनाया। ये हिन्दू समुद्र किनारे के मछुआरे थे। जेवियर साठ हजार हिन्दुओं को ईसाई बनाने से संतुष्ट नहीं हुआ उसने पुर्तगाल के राजा को लिखा कि हिन्दुओं को ईसाई बनाने के लिये राज्य की पूरी सत्ता का प्रयोग किया जावे। इस सुझाव को राजा ने मान कर आदेश जारी कर दिया कि गोवा और पुर्तगाल की बस्तियों में हिन्दुओं की समस्त मूर्तियों की तलाश की जावें और उनको नष्ट कर दिया जावे और जो कोई मूर्ति बनाने का प्रयत्न करे उसको कठोर दण्ड दिया जावे तथा जो किसी ब्राह्मण को छिपावे उसको अपराधी ठहराया जावे (पृष्ठ ५४ हिस्ट्री ऑफ मिशन्स) राजा ने यह भी आदेश दिया कि ईसाइयों को विशेष सुविधायें दी जावें जिससे हिन्दू ईसाई बनने का मन बनाए ।

एक पादरी राबर्ट डी नोबिली मदुरा शहर में आया उसने गेरूए वस्त्र पहनकर साधु का वेश धारण कर ब्राह्मणों की बस्ती में रहना प्रारंभ किया उसने ब्राह्मणों से कहा कि मैं रोम से आया हू और ब्राह्मण जाति का हू ओर मेरे पूर्वज भारत से रोम गये थे। इसने तमिल, तेलगू और संस्कृत भाषा सीख ली थी इस व्यक्ति ने एक लाख हिन्दुओं को ईसाई बनाया।

१६९० में ईस्ट इडिया कंपनी ने अपने अतर्गत समस्त पादरियों को आदेश किया कि वे भारत की भाषाओं को सीखें जिससे भारत के कर्मचारियों में ईसाइयत का प्रचार भली भांति हो सके। इस प्रकार ईसाइयत फैलाने का कार्य होता रहा। १७१३ नवम्बर में विलियम केरी की कलकत्ता में नियुक्ति हुई। कलकत्ता के पास श्री रामपुर में यह बस गया। इसको कॉलेज में सरकारी नौकरियों के उम्मीदवारों को पढ़ाने का कार्य सौंपा गया। डॉ० डफ ने अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा सरकारी नौकरियां देने का लालच देकर हिन्दुओं को ईसाई बनाने का कार्य किया और आगामी पचास वर्षों में समस्त भारत में हाई स्कूल और कॉलेज स्थापित कर दिये।

१८५७ के पश्चात् इंग्लैण्ड के प्रधानमत्री लार्ड पामर्स्टन ने कहा कि केवल हमारा कर्त्तव्य ही नहीं किन्तु हमारा हित है कि हम समस्त भारत में ईसाईयत का प्रसार करें । लार्ड हेलीफैक्स जो उस समय सेक्रेटरी ऑफ स्टेट के पद पर थे, उसने अपनी ओर से यह जोड़ दिया कि प्रत्येक नया ईसाई देश की एकता की कडी में एक नया जोड़ है और साम्राज्य के लिए एक नई शक्ति का स्रोत है । १८७६ में मुबई निवासी लार्ड रेने प्रिंस ऑफ वेल्स से भारतीय ईसाइयों के शिष्ट मंडल (जो हिन्दुओं से ईसाई बनाये गये थे) को मिलवाया। तब लार्ड ने कहा कि सैनिकों, न्यायाधीशों, गवर्नरों से अधिक ईसाई बनाने का कार्य इन नागरिकों ने किया है, तब प्रिंस ऑफ वेल्स ने लार्ड रे की बहुत प्रशसा की। सर चार्ल्स इलियट ने पादरियों की प्रशंसा करते हुये कहा कि जिसके आधार पर अग्रेजी शासन भारत पर राज्य कर रहा है ये पादरी लोग गैर सरकारी होकर भी हमारे छुपे अग हैं। इस प्रकार जहां जहां अग्रेजी शासन था वहा वहां निरतर आतंक, लालच से हिन्दुओं को ईसाई बनाने का कार्य चलता रहा। देशी रियासतों के राजाओं ने ईसाई पादरियों को प्रारंभ में अपने राज्यों में घुसने नहीं दिया। लेकिन अंग्रेजों के दबाव के कारण देशी रियासतों में भी ईसाइयों का कार्य प्रारंभ हो गया।

स्वतत्रता के पश्चात बहुत तेज गति से पादरियों ने हिन्दुओं को ईसाई बनाने का कार्य प्रारभ कर दिया।

मध्य भारत व मध्यप्रदेश सरकार को निरतर शिकायत मिल रही थी कि ईसाई मिशनरियां वनवासी भाइयों को आतंक व लोभ देकर बड़ी संख्या में ईसाई बना रहे हैं। तब सरकार ने ईसाई मिशनरी गतिविधि जांच समिति बनाई ।

मध्यप्रदेश सरकार के प्रस्ताव संख्या ३१८/७१६ दी काम १४ अप्रैल १९५६ के द्वारा ईसाई मिशनरी गतिविधि जांच समिति नियुक्त की गई। जिसके अध्यक्ष डॉ० भवानी शंकर जी नियोगी तथा सदस्य घनश्यामसिंह जी गुप्त भूतपूर्व अध्यक्ष विधान सभा मध्यप्रदेश, श्री एस के जार्ज, रतनलाल जी मालवीय सांसद, भानुप्रतापसिंह जी सांसद और श्री बी पी पाठक मत्री मध्यप्रदेश सरकार थे। इस जाच समिति से पूर्व मध्यभारत के समय भी एक समिति बनाई गई थी जिसके अध्यक्ष श्री रेगे जी थे। दोनों जाच समितियों ने संपूर्ण मध्यप्रदेश व मध्यभारत का भ्रमण कर जानकारी प्राप्त की और प्रमाण एकत्र किये कि ईसाई मिशननिरया आतंक व लोभ के आधार पर हिन्दुओं को ईसाई बना रहे हैं कुछ प्रमाण प्रस्तुत हैं।

झाबूआ जिले के खीमा डावर, भील की कन्या वधू का विवाह हरिसिंह के साथ हुआ था। एक वर्ष बाद कन्या का पिता ईसाई पादरी नरोना के बहकावे में आकर हरिसिंह और वधू को ईसाई बनाना चाहता था। अदालत में जाने पर न्यायाधीश ने फैसला दिया कि १७ वर्ष की नाबालिग लड़की को जबरदस्ती गैर कानूनी तरीके से गिरिजाघर में रोक रखा है जिसे धारा ५५२ के अंतर्गत हरिसिंह को सौंपने की आज्ञा दी और विशेष रूप से लिखा कि पादरी नरौना की प्रवृत्तियों पर निगरानी रखनी आवश्यक है।

जयपुर में एक हिन्दू युवक और ईसाई युवती अपनी स्वेच्छा से विवाह करना चाहते थे लेकिन ईसाई पादरी बुलकास हिन्दू युवक को ईसाई बनने के लिये विवश कर रहा था किन्तु दोनों युवक-युवती इस बात के लिए तैयार नहीं थे। इस पर फादर बुलकास ने इस युवक को सात दिन तक गिरिजाघर में बद रखा और उसकी चोटी काट दी। इस प्रकरण को न्यायालय में ले जाया गया। न्यायाधीश श्री के के नायडू ने फादर बुलकांस को २००/- रुपया जुर्माना किया और पांच पादरियों को २५-२५ रुपये का दण्ड किया।

२८ अगस्त १९५८ में हजारीबाग जिले के दोतोग्राम में सात ईसाई प्रचारकों को गिरफ्तार किया और दंडित किया । छोटा नागपुर के बनगांव के पादरी ने ३०० हिन्दुओं को ईसाई बनाया। इस पादरी को न्यायालय ने ७५ रुपये दण्ड किया। टोबद के परेल गिरिजाघर में ३०० हिन्दुओं को ईसाई बनाने की तैयारी की गई थी लेकिन अन्य हिन्दुओं को पता चल गया इन्होंने ईसाई बनने वाले हिन्दुओं को रोका। इस पर ईसाइयों ने झगड़ा किया। कुछ लोग घायल हो गये इस प्रकार हिन्दुओं को ईसाई होने से बचाया। मेरठ जिले के गांव वाधू में ईसाई पादरियों ने हिन्दुओं को ईसाई बना लिया। पता चलने पर आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने उनको पुनः हिन्दू बना लिया इस पर से ईसाई पादरियों ने न्यायालय में प्रकरण प्रस्तुत कर दिया। न्यायाधीश ने मुकद्दमा खारिज करते हुए लिखा कि पादरी लुई पीटर स्वयं हिन्दुओं को ईसाई बनाता है और कोई ईसाई हिन्दू बनना चाहता है तो पीटर को बुरा लगता है और विशेष टिप्पणी की कि पादरियों की यह अराष्ट्रीय प्रवृत्तिया राष्ट्र के लिये घातक हैं।

१८-४-१९५८ को विशनु मुंडे तथा रामदास साहू ने चाईबासा जिला सिंहभूमि (छोटा नागपुर) एस डी ओ के समक्ष ईसाई मिशनरी ई एच नैश के विरुद्ध प्रकरण प्रस्तुत कर निम्न आरोप लगाये-

1. फादर नैश और अन्य ईसाई मिशनरी वन गांव में हिन्दुओं के धर्म को गाली देते हैं और उनको नीचा दिखाते हैं।

2 ये अपने विद्यालयों में बालक-बालिकाओं को हिन्दू धर्म के विरुद्ध भड़काते रहते हैं।

3 हिन्दुओं को कहते हैं कि तुम ईसाई बन जाओगे तो हम तुम्हारे को खाने के लिये अनाज देंगे। इस प्रकार लोभ देकर ईसाई बनाते हैं। एस डी ओ ने उन लोगो को गवाही के लिये बुलवाया तो ईसाई प्रचारकों ने उस गाव चाईबासा के लोगों को डराया धमकाया जिससे वे लोग एस डी ओ के यहां गवाही देने नहीं आये। तब एस डी ओ ने स्वयं उस गांव में जाकर बयान लिये तब पता लगा कि पादरी लोग इस ग्राम वासियों को धमकाते रहे हैं। एस डी ओ ने अपने फैसले में लिखा है कि शिक्षा देने तथा अनाज बांटने की आड में अनुचित उपायों द्वारा भोले-भाले हिन्दुओं को ईसाई बनाते हैं।

साइमन कमीशन की सिफारिश पर १९३१ की जन गणना में मूल हिन्दुओं से वनवासियों को अलग कर दिया गया और १९३५ में कानूनी रूप देकर पाकिस्तान के ढंग पर एक अलग झारखण्ड की मांग प्रस्तुत कर दी गई। (क्रमशः)

आर्यो! गऊ माता की रक्षा करो

(ले० श्री प० नन्द लाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य ग्रा० पो० बहीन जि फरीदाबाद (हरियाणा))

हमारा प्यारा देश आर्यवर्त (भारत) ससार में देव भूमि के नाम से जाना जाता है किसी समय आर्यों का सकल विश्व में सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य था। ससार के नर नारी परम पिता परमात्मा से आर्य वर्त मे जन्म देने की विनती किया करते थे। महाभारत काल तद ससार मे हमारा राज्य रहा। इसका ही तो परिणाम था कि महाभारत के युद्ध में आर्यो का आदेश मान कर विदेशियो का युद्ध म सम्मिलित होना। वास्तव में आर्यों के समान गुणवान विद्वान धनवान बलवान त्यागी और तपस्वी दूसरी कोई भी जाति नहीं थी। इसका मूल कारण था हमारा सात्विक आहार। हमारा खान पान पहरावा उत्तम था हम सब गऊओ का गुणकारी दूध पीते थ। इसीलिए हमारे विचार उच्च थे तथा हमारा व्यवहार देवो जैसा था। सारा जगत हमारा हर प्रकार सम्मान करता था। हम हर प्रकार सुखी थे यहा कोई भी व्यक्ति निर्धन नहीं था। यह प्यारा भारत वर्ष सोने की चिडिया कहलाता था। इस देश मे दूध दही की नदिया बहती थीं। करोडो की सख्या मे भेड बकरिया थीं। सबसे बडी बात जो ध्यान देने योग्य है वह यह है कि इस देश मे एक भी भैंस नहीं थी।

गऊओ का दूध अतीव गुणकारी मा के दूध के समान होता है। गऊओ का गोबर मूत्र भी हजारो रोगो का नाश करने वाला होता है। जिगर तिल्ली क्षयरोग पीलिया मिर्गी दौरा चाप हृदय रोग आदि जान लेवा बीमारिया गऊओ का दूध पीने वालो को कभी होती ही नहीं। गऊो का दूध मधुर निरोगता प्रदान होता है। गऊ दूध का पीने से बुद्धि कुशाग्र बनती है। विचारो मे भव्यता आती है। भैंस का दूध कसैला ईर्ष्यालु सुस्ती प्रदान करने वाला होता है। भैंसो का दूध पी पी करके हमारी वृतिया भी भैसो जैसी ही बन गई है। हम स्वार्थी प्रमादी ईर्ष्यालु बन गए हैं इसी लिए हम परस्पर एक दूसरे के खून के प्यासे बने हुए हैं। बात बात पर लडना झगडना मुकदमेबाजी बेईमानी करना हमारा आम व्यवहार बन गया है। किसी कवि ने कितना सुन्दर कहा है जैसा खाए अन्न वैसा होवे मन और जैसा पीवे पानी वैसे होवे वाणी। अर्थात् खान पान का प्रभाव हमारे जीवन पर अवश्य पडता है।

गऊओ का सम्मान हमारे देश में सदा से रहा है यहा गऊ ब्राह्मण के हत्यारो को मृत्यु दड दिया जाता था। रघुकुल नरेश दिलीप ने नन्दना गऊ की प्राण रक्षा करने मे अपनी जान दे दी थी। महाराज दशरथ वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र सच्चे गऊ भक्त थे जिनके शासन काल मे गऊ ब्राह्मण की हत्या कभी नहीं हुई बाल्मीकि जी ने रामायण मे म राजा दशरथ और श्रीराम चन्द्र जी के राज्य का सुन्दर वर्णन किया है। जिसे पढ कर हृदय गद् गद् हो जाता है।

जगत गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महाभारत काल को पतन का काल बताया है किन्तु महाभारत काल मे भी गऊ हत्या होने का महाभारत ग्रथ मे कही भी वर्णन नहीं मिलता। महाभारत काल मे नन्द आनन्द महा नन्द की पदवी गऊओ का स्वामी होन पर दी जाती थी। युगनायक यदुनन्दन योगराज श्री कृष्ण चन्द्र महाराज वेदो के प्रकाण्ड विद्वान थे। उनका एक गुणवाचक नाम गोपाल भी था। जिसका अर्थ है गऊओ की सेवा करने वाला वास्तव मे योगीराज श्री कृष्ण चन्द्र महाराजा ने जीवन भर गऊओ का पालण पोषण किया था। इसीलिए वे प्रकाड विद्वान महान ईश्वर भक्त देश भक्त महाबली धर्मात्मा पुरुष थे। महाभारत और गीता पढने पर उनका महान त्यागी तपस्वी होने का प्रमाण मिलता है। भीष्मपिता मह जी ने श्री कृष्ण चन्द्र के सद्गुणो की मुक्त कठ से महिमा गाई है। इनके समान महान् पुरुष उस समय ससार मे कोई दूसरा नही था। महर्षि दयानन्द महाराज ने उन्हे सत्यार्थ प्रकाश मे आप्त पुरुष बताया है। प्रत्येक व्यक्ति को सत्यार्थ प्रकाश पढना चाहिए।

महाबली विक्रमादित्य चन्द्र गुप्त मौर्य आचार्य चाणक्य महाराजा अशोक चन्द्र आदि वीर राजा सभी गऊ भक्त धर्मात्मा थे। दिल्ली के महाराजा पृथ्वी राज चौहान महान गऊ भक्त महा पराक्रमी थे। वे मौहम्मद शाह बुद्दीन गौरी से गऊओ की रक्षा करने के कारण ही परास्त हो गए थे किन्तु अपने प्राण सकट में डाल करके उन्होने गऊओ की प्राण रक्षा की थी।

गऊ के महत्व को तो विदेशियों ने भी माना है। प्रथम मुगल सम्राट बाबर ने स्वय गऊ रक्षा का कानून बनाया था तथा मरते समय अपने पुत्र हुमायु को पास बुला कर समझाते हुए कहा था- मेरे प्यारे बेटा हुमायु मेरी एक बात आज ध्यान से सुन ले। भारत वासी गऊ भक्त धर्मात्मा हैं। ये गऊ को माता मानते हैं। अगर तू यहा सुख से रहना चाहता है तो गऊ रक्षा का कानून बनाना अन्यथा बाद में पछताएगा। बताते हैं हुमायु ने जीवन भर गऊ रक्षा के नियम की पालना की थी। अन्तिम मुगल सम्राट मौहम्मद शाह जफर ने भी गऊ रक्षा का कानून बनाया था तथा गऊ सेवा का उदाहरण ससार के सामने प्रस्तुत किया था। महारानी लक्ष्मी बाई नाना साहब तात्याटोपे राव तुलाराम नाहर सिह वीर कुवर सिह आदि भारतीय वीर सभी गऊ भक्त थे। इन वीर देश भक्तो के सूत्राधार स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश मे गऊ आदि उपकारी पशुओ की हत्या को महा पाप बतलाया है। जिन्होने सब से प्रथम गऊ करुणा निधि नामक पुस्तक लिखी थी तथा रिवाडी (हरयाणा) के राव युधिष्ठिर से कह कर रेवाडी मे गऊ शाला की स्थापना कराई थी

दादा भाई नोरा जी बाल गगाधर तिलक पण्डित मदन मोहन मालवीय प० मोती लाल नेहरू स्वामी श्रद्धानन्द लाला लाजपत राय आदि देश भक्त नेता सच्चे गऊ भक्त थे। आजादी से पहले मुसलमानो का एक भजन मडली थी जो मेरठ मुजफ्फर नगर अलीगढ दिल्ली पजाब मे प्रचार करते हुए गऊ हत्यारे अंग्रेजों को भारत से शीघ्र भगाने का बाते कहा करती थी।

महान क्रान्तिकारी भक्त सिह के दादा सरदार किशन सिह का पूरा परिवार गऊ भक्त देश भक्त था। राम प्रसाद बिस्मिल चन्द्र शेखर आजाद राजगुरु भक्त सिह सुखदेव रोशन लहरी आशफाक उल्ला मदन लाल धीगडा ऊधम सिह आदि क्रान्तिकारी महान देश भक्त गऊ भक्त थे।

पडित मोती लाल नेहरू से एक बार एक अंग्रेज अधिकारी ने पूछ था-क्या आप गऊ मास खा लेते हो? इतना बात सुन कर पडित मोती लाल ने उसे बुरी तरह फटकार दिया था-ओ पापी। मेरी बात ध्यान से सुन ले। मैंने गऊ का मास तो कभी नहीं खाया और कभी भी नही खाऊगा। अगर कोई मुझे गऊ हत्यारे कसाई का मास लाकर देगा तो जरूर खा लूगा। पडित मोती लाल नेहरू की यह गर्जना सुन कर अंग्रेज अधिकारी की बोलती बद हो गई ऐसे नेता थे पडित मोती लाल नेहरू

पडित बाल गगा धर तिलक आजादी से पहले घोषणा किया करते थे कि स्वतत्रता मिलते ही कलम की एक नोक से गऊ हत्या का कलक मिटा दिया जाएगा।

राष्ट्र पिता महात्मा गाधी से एक बार वायसराय ने पूछा था आप भारत के आजाद होने पर सबसे पहला क्या कानून बनायोगे? महात्मा गाधी ने उस समय जो उत्तर दिया था ध्यान देने योग्य है गाधी जी न कहा था- हम भारत माता के स्वतन्त्र होने पर सबसे पहला कानून गऊ रक्षा का बनाएगे तथा दूसरा कानून हम नशाबन्दी का बनाएगे खेद की बात है कि गाधी जी के चेले काग्रेसी फिर भी गऊ रक्षा और नशाबन्दी के कानून नहीं बना पाए

आजादी के ५१ वर्ष पश्चात भी गऊ हत्या का कलक हमारे सब के मस्तक पर लगा हुआ है। सरदार भाई पटेल अगर भारत के प्रधान मत्री बन जाते तो गऊ हत्या का पाप भी बन्द हो जाता। जवाहर लाल नेहरू का भारत का प्रधानमत्री बनना देश के लिए घाटे का सौदा साबित हुआ। जवाहर लाल नेहरू कहा करते थे मैं सभ्यता से ईसाई हू सस्कृति से मुसलमान हू और बदकिस्मती से हिन्दू हू।

श्री लाल बहादुर शास्त्री श्री मोरार जी देसाई दोनो गऊ भक्त धर्मात्मा थे किन्तु स्वार्थी बेईमान लोगो ने उन्हे कभी नही टिकने दिया। श्रीमति इन्दिरा गाधी राजीव गाधी विश्वनाथ प्रताप सिह चन्द्र शेखर महास्वार्थी कुर्सी के भूखे निकले। नर सिह राव भी ऐसा ही निकला इस लिए गऊ रक्षा का कलक भारत माता के मस्तक से अब तक नहीं मिटा।

इस वक्त श्री अटल बिहारी वाजपेयी भारत के प्रधानमत्री हैं जो विपक्ष मे बैठ कर कभी गऊ रक्षा की बात कहा करते थे उनके शासन काल मे भी गऊ हत्या निरन्तर हो रही है। प्रतिदिन लाखो गऊए मारी जा रही हैं कोई भी राजनैतिक दल गऊ रक्षा का कानून बनाने की बात

(शेष पृष्ठ 7 पर)

जिला आर्य सभा लुधियाना द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस

जिला आर्य सभा लुधियाना द्वारा नव विक्रमी संवत २०५६ के सुभारम्भ तथा आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 21 मार्च 1999 रविवार को आर्य कालेज, लुधियाना में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ यज्ञ से हुआ जिसे श्री श्रवण कुमार जी बत्रा ने सम्पन्न करवाया और यजमान श्री अजय कुमार जी बत्रा सपत्नीक, श्री विजय सरीन सपत्नीक और श्रीमति राजेश शर्मा जी बने।

यज्ञ के उपरान्त मंच का संचालन डॉ० विजय सरीन ने किया। सर्व प्रथम कुमारी नम्रता सोनी ने मधुर भजन सुनाकर आर्य जनता को आनन्दित किया। समारोह के अध्यक्ष पं० हरबंस लाल जी शर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, मुख्य अतिथि श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब एवं सरदार अपिन्द्र सिह जी ग्रेवाल, महापौर नगर लुधियाना का जिला आर्य सभा के तथा भिन्न-भिन्न आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों के अधिकारियों एव प्रतिष्ठित नगर वासियों द्वारा फूल मालाएं डालकर हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

सरदार अपिन्द्र सिंह जी ग्रेवाल, महापौर ने अपने भाषण में कहा कि आर्य समाज का शिक्षा प्रसार तथा समाज सेवा के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान है। आर्य समाज ने नारी उत्थान के लिए भी सराहनीय कार्य किया है। पूज्य स्वामी सुमनायति जी ने समारोह में बोलते हुए कहा कि मनुष्य का चोला बड़ी मुश्किल से प्राप्त होता है। इसलिए मनुष्य को ऋषियों की आज्ञा का पालन करते हुए अपनी आत्मा को जानना चाहिए और आत्मा को जानने के बाद परमात्मा को जानना चाहिए। यही मानव जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। इसके पश्चात् जिला आर्य सभा की प्रधान, श्रीमति राजेश शर्मा जी ने मधुर गीत सुनाया।

डॉ० अवतार सिंह जी लूथर (नामधारी) ने अपने वक्तव्य में कहा कि परमात्मा का मुख्य नाम ओ३म् है। ब्रह्मा, विष्णु व महेश उसके गुणों के आधार पर नाम हैं। उन्होंने आगे कहा कि जैसे स्वामी दयानन्द जी ने गुरु विरजानन्द जी से कहा था कि मैं कौन हूं इसे ही तो मैं जानने आपके पास आया हूं। ऐसे ही प्रत्येक मनुष्य को अपने आप को पहले जानना है और फिर आगे बढ़ना है। आर्य कालेज (महिला विभाग) की प्रभारी, श्रीमति सतीश शर्मा जी ने समारोह में बोलते हुए कहा कि आज हमें सोचना है कि हमें क्या करना था और हमने क्या किया। अगर हम ने महर्षि दयानन्द के प्रति आभार प्रकट करना है तो हमें हिन्दी का आदर करना चाहिए और अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी व पंजाबी का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि हमें नारी का सम्मान करते हुए उसे समाज में उचित स्थान देना चाहिए। नारी का भी कर्तव्य है कि वह अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दे ।

श्री सत्यानन्द जी मुन्जाल मालिक हीरो साईकिल्ज ने कहा कि गुरु को भगवान नहीं समझना चाहिए। लेकिन यह सत्य है कि कोई मार्ग दर्शक अवश्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक आर्य समाजी को प्रचारक होना चाहिए। आज हमें प्रण लेना चाहिए कि हम आर्य समाज का कार्य और अधिक करेंगे तथा स्वामी दयानन्द जी की आज्ञा का पालन करेंगे। हमें युवकों को आगे आने के लिए उत्साहित करना चाहिए। इसके बाद आर्य कालेज (महिला विभाग) की छात्राओं ने सामूहिक भजन गाया। जिसे सुनकर पं० हरबंस लाल जी शर्मा ने और श्री नरेन्द्र सिंह जी भल्ला ने सभी छात्राओं तथा उनके गुरुजनों को एक-एक सौ रुपया पारितोषिक दिया। जिला सभा की ओर से श्री रणबीर जी भाटिया, कोषाध्यक्ष ने उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किए।

पूज्य पाद स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने अपने उपदेश में कहा कि अकेले स्वामी दयानन्द जी ने समाज सुधार के इतने कार्य किये जितने सारी सरकार अभी तक नहीं कर पाई। उन्होंने कहा कि स्वामी जी ने वेद ज्ञान को मूल आधार माना। क्या उनके शिष्यों ने उनकी बातों को आत्मसात किया? स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि विदेशी शासन चाहे माता पिता की तरह सुख देने वाला हो तब भी विदेशी शासन स्वदेशी शासन से कभी अच्छा नहीं हो सकता। वह सच्चे देश भक्त थे और समाज सुधारक थे। वह त्यागी थे व कर्मयोगी थे। स्वामी जी ने सबसे बड़ा काम यह किया कि हमें आर्य समाज के माध्यम से अपनी संस्कृति से और धर्म से जोड़ दिया । स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना खण्डन के लिए नहीं बल्कि मण्डन के लिए की । पूज्य स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने आगे कहा कि हमें अपने बच्चों को अपने गौरवमय अतीत के बारे बतलाना चाहिए ताकि उन पर अच्छे संस्कार पड़ें और वे भी वैदिक सूर्य के प्रकाश को संसार में फैलाने में सहायक हों।

पं० हरबंस लाल जी शर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने भाषण में कहा कि हमें अपने मनमुटावों को भूल कर मिल कर आर्य समाज का कार्य करना चाहिए। उन्होंने जिला आर्य सभा लुधियाना की प्रशंसा की और कहा कि प्रत्येक जिले की आर्य सभा को ऐसे ही कार्य करना चाहिए। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा किये जा रहे वेद प्रचार के कार्यों का उल्लेख किया तथा आगामी योजनाओं के बारे में बतलाया कि कैसे वेद प्रचार के कार्य को सभा तेज करना चाहती है । प्रधान जी रु 5100/- अपनी ओर से तथा रु 5100/- आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से जिला आर्य सभा को दिये।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमें निराश नहीं होना चाहिए। आर्य समाज ने बहुत कार्य किया है और कर रहा है। उन्होंने कहा कि संस्थाएं व पार्टियां बनती हैं और टूटती है लेकिन आर्य समाज संस्था वैसे ही कार्य कर रही है। महामंत्री जी ने कहा कि आज हमने प्रण लेना है कि हमने आर्य समाज के लिए काम करना है । किसी व्यक्ति के लिए नहीं। हमने शिक्षण संस्थाओं में प्रचार करना है और नगरों के साथ गांवों में भी वेद प्रचार के कार्य को करना है। उन्होंने जिला आर्य सभा लुधियाना की प्रधान श्रीमति राजेश शर्मा जी की तथा अन्य सदस्यों की सराहना की और कहा कि उनके प्रधान बनने से जिला आर्य सभा और सक्रिय हुई है।

अन्त में जिला आर्य सभा की प्रधान श्रीमति राजेश जी शर्मा ने वक्ताओं को स्मृति चिन्ह भेंट किये तथा सब का हार्दिक धन्यवाद किया। कार्यक्रम के पश्चात् सबने जलपान किया। परमपिता परमात्मा की कृपा से समारोह पूर्णरूप से सफल रहा ।

इस समारोह में लुधियाना रायकोट, समराला और साहनेवाल की आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों के अधिकारी तथा सदस्य बढ़-चढ़ कर सम्मलित हुए। कार्य क्रम को सफल बनाने में श्री श्रवण कुमार आर्य, श्री रमेश सूद, श्री आत्म प्रकाश अरोड़ा, श्री रोशन लाल आर्य, श्री हर्ष सूद, श्री अयोध्या प्रकाश जी, श्री मदनलाल चन्द, प्रिं० वी. के. मेहता, श्री देवपाल आर्य, श्री भीमसेन, श्री अमर नाथ तांगरा, श्री बशीर चन्द, श्री प्रेम सिंह, श्रीमति जनक रानी आर्या, श्रीमति मीना बेरी, श्री अजय कुमार बत्रा, श्री अजय सूद का और आर्य कालेज एवं आर्य कालेज (महिला विभाग) के स्टाफ का विशेष सहयोग रहा।

विजय सरीन—महामंत्री

अधुनिक-गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रारुप?

ले० महात्मा प्रेम प्रकाश जी पुरी

भारतीय संस्कृति का मूल तो गुरुकुल शिक्षा प्रणाली रहा है और रहेगा। जहां वैदिक शिक्षा का सम्बन्ध जीवन पद्धति से निर्माण उत्थान और कल्याण करना होता है, वहां अपने कर्मों द्वारा समाज का मार्ग दर्शन करना भी ब्रह्मचारी का कर्त्तव्य होता है। गुरुकुल का ब्रह्मचारी, कालेज के स्टूडेण्टों की भान्ति उदण्ड, उश्रृंखल नहीं होता, अपितु गुरु भक्ति मातृ पितृ भक्ति की उसमें झलक ठाठें मारती हैं, अतः गुरुकुलों में कभी तोड़ फोड़ नहीं होती, हड़ताल नहीं होती। अतः यह मानना ही चाहिये, कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली मानव मात्र के लिये (जो भारत की देन है) वरदान है, वरदान है, वरदान है ।

समय और परिस्थितियों के अनुकूल चलना भी समाज का परम कर्त्तव्य है। जैसे पहले कभी सतयुग "सत्य का युग" था कभी ब्रह्मचर्य का युग था, कभी विद्वानों का युग था कभी भक्ति का युग था, ऐसे ही वर्तमान (आर्थिक) पैसे का युग है। अतः उसके अनुरूप ही हमें शिक्षा प्रणाली बनानी चाहिये। ताकि ब्रह्मचारी गुरुकुल से स्नातक बनते ही संसारिक जीवन में अपनी आर्थिक कठनाईयों का समाधान कर सकें, क्योंकि वर्तमान युग में मुख्य समस्या "आर्थिक" बन कर ही रह गई है। गुरुकुलीय शिक्षा के साथ-साथ हमें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये कि ब्रह्मचारी अपनी योग्यता के अनुसार शिल्पकारी बने अध्यापक बने, इंजनियर (विश्व कर्मा) बने, डाक्टर बने, परन्तु यदि कोई जीवन दानी बन कर समाज को सुमार्ग पर चलाने के लिये "उपदेशक" बनता है तो यह गुरुकुल की महान गरिमा होती है, परन्तु ऐसे जीवन दानियों के लिये किसी दानी के द्वारा कुछ सुरक्षित निधि अवश्य करवानी चाहिये । ताकि वह निःसंकोच अपने कार्य का प्रचार प्रसार कर सके।

गुरुकुल शिक्षा में ब्रह्मचारी जहां जंगल में मंगल मनाता हुआ, शुद्ध वायु का सेवन व्यायाम व्यस्त दिनचर्या से विद्या के साथ-साथ धार्मिक जीवन और नम्रता से अपने जीवन में सुगन्धि भर लेता है, फिर उसी सुगन्धि से समाज को सुगन्धित कर देता है और राष्ट्र की शोभा बढ़ा देता है, अतः कहा भी है "विद्या धर्मेण शोभते।"

अधुनिक शिक्षा प्रणाली को सफल बनाने के लिये परमावश्यक होगा या है कि गुरुकुलों का नवीनिकरण हो, टाईप की शिक्षा, कम्प्यूटर की शिक्षा एवं अन्य अधुनिक शिक्षाओं का भी प्रशिक्षण दिया जाये। ऐसा पग उठाते ही, वर्तमान गुरुकुल शिक्षा का जहां प्रचार प्रसार और प्रभाव बढ़ेगा वहां पुनः वरदान बन जायेगी।

आर्य समाज बठिण्डा में आर्य समाज स्थापना दिवस

सब सेवक एवं आर्य समाज स्थापना दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ आर्य समाज बठिण्डा के महर्षि दयानन्द सत्संग भवन में श्री पी डी गोयल प्रधान आर्य माडल हाई स्कूल की अध्यक्षता व उपमंत्री श्री महेन्द्रपाल जी अरोड़ा के संचालन में मनाया गया। सर्व प्रथम हवन यज्ञ पूज्य ओम प्रकाश जी वानप्रस्थी एवं आचार्य सुशील कुमार जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में हुआ। हवन यज्ञोपरान्त श्रीमति पुष्पा मंगला धर्म पत्नी बिहारी लाल जी मंगला मंत्री ने भजन सुनाया। इस पश्चात् आर्य माडल हाई स्कूल के बच्चों ने एक भजन हे दयामय हम सबों को प्रस्तुत किया। बच्चो के भजन प्रस्तुति पर प्रसन्न होकर आज की सभा के अध्यक्ष श्री पी डी गोयल श्री प्रेम भाटिया ला० कुलवन्तराय अग्रवाल व श्री अशोक जी अग्रवाल ने नकद पारितोषिक से उनका उत्साह बढ़ाया। ला कुलवन्त राय अग्रवाल एव दोनों शिक्षण संस्थाओं के प्राचार्य श्रीमति शान्ति बिन्दल व श्री हुकुम चन्द गोयल ने क्रमशः एवं आर्य समाज स्थापना दिवस पर अपने विचार रखते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द जी के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही होगी कि हम उनके बताये दस नियमो को अपने जीवन में सच्चे मन से अपनाए। पुरोहित आर्य समाज ने अपने प्रवचन मे बार बार भजन शैली द्वारा आर्य समाज की महिमा का सन्देश दिया। पूज्य वानप्रस्थी जी ने श्रावणी एव आर्य समाज स्थापना दिवस क्यों और कैसे मनाये इस पर उपदेश दिया। उपस्थित आर्य जन उनके विचार एकाग्रता से सुनते रहे समय स्थिर सा हो गया वातावरण शान्त एव सुगन्ध मय सा हो गया था। सभाध्यक्ष जी ने कहा कि आर्य समाज द्वारा यह पर्व बड़ी मेहनत एव लगन से मनाया जाता है परमपिता परमात्मा आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं को बल दे ताकि वे इससे भी ज्यादा बृहत्तर पर कार्य क्रम करें। यह कार्य क्रम इतना बड़ा हुआ कि समयाभाव के कारण प्रधान आर्य समाज श्री प्रेम भाटिया जी ने उपमंत्री आर्य समाज से प्रार्थना कि उनकी एव आर्य समाज की ओर से सभी आर्य प्रेमियों का इस कार्यक्रम में पधारने पर वे तह दिल से धन्यवाद करें। इस सारे कार्यक्रम में चौ० बाबू राम जी गर्ग वरिष्ठ उपप्रधान कोषाध्यक्ष श्री इन्द्रजीत जी गुप्ता एव प्रो० ओ पी मंगला उपप्रधान इसके अतिरिक्त आर्य समाज की तीनों शिक्षण संस्थाओं आर्य गर्ल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल आर्य माडल स्कूल एव गुरुकुल शिल्पविद्यालय की अध्यापिकाओं ने भी बढ चढकर हिस्सा लिया। अन्त में कार्य क्रम की समाप्ति पर शान्तिपाठ जय घोष करते हुए प्रसाद बांटा गया।

प्रेम भाटिया
प्रधान आर्य समाज बठिण्डा

1. ब्रह्मचर्य के तप से देव मृत्यु को जीत लेते हैं–वेद ।
2. ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा में वीर्य (शक्ति) का लाभ होता है पातञ्जलि मुनि ।
3. ब्रह्मचर्य से शक्ति बुद्धि तेजस्विता साहस स्वास्थ्य धन और राज्य प्राप्त होते हैं–महर्षि दयानन्द सरस्वती ।
4. ब्रह्मचर्य धारण में जीवन है और नष्ट करने मे मृत्यु शास्त्र ।
5. एक मन भोजन से एक बूद वीर्य बनता है स्वामी ओमानन्द ।
6. ब्रह्मचर्य ही साधना है और दुर्बलता पाप स्वामी विवेकानन्द ।
7. इन्द्रियो के विषयो में सुख नहीं है–स्वामी रामतीर्थ ।
8. नवयुवको ! बल और बुद्धि के बिना अधिकार नहीं मिल सकते और उसके लिए ब्रह्मचर्य ही एक सर्वोत्तम साधन है लोकमान्य तिलक ।
9. ब्रह्मचर्य को जब हम खोते हैं तब निराशा होती है अपवित्रता आती है जब हम संरक्षण करते हैं तब उत्साह और विचार बढ़ता है । ब्रह्मचर्य (प्रजनन शक्तिवीर्य) मनुष्य को बुद्धि वीरता पवित्रता और अन्य फलो से भी फलित करता है महात्मा थोरो
10. सदाचार पालन मे ही सुख है सुकरात
11. हनुमान भीष्म और भीम जैसे ब्रह्मचारियों के चरित्र मेरी शक्ति को बढाने मे बिजली का काम करते हैं प्रो० राममूर्ति ।
12. जब हमें प्रत्येक स्थान पर थूकने का अधिकार नहीं तो ब्रह्मचर्य जैसी अजेय शक्ति का दुरुपयोग कैसे कर सकते है डा० बाल विवरु ।
13. ब्रह्मचर्य पालन मे सर्वाधिक उपयोगी हैं सात्विक विचार आहार योगाभ्यास और खाली न रहना ।

कुलदीप विद्याभास्कर
आर्य सी सै स्कूल धूरी

(पृष्ठ 5 का शेष)

तक नहीं करता। सब कुर्सी बचाओ के मौज उडाओ बंगाली भगाओ जनता को पागल बनाओ। अभियान मे जुटे हुए हैं। जो लोग राम राज्य लाने के नारे रोजाना लगाया करते थे वे रावण राज्य ले आए काग्रेसी और जो भारतीय सभ्यता संस्कृति की रक्षा का राग अलापा करते थे तथा जो जय श्री राम के नारे हर समय लगाया करते थे वे जनसघी (भारतीय जनता पार्टी) वाले भी योग्यसिद्ध नहीं हुए अब कौन करेगा। गऊ रक्षा ?

राम कृष्ण दयानन्द गाधी के भारत मे गऊ हत्या प्रतिदिन हर स्थान पर हो रही है और इनके वशज चुप बैठे हुए हैं इससे बडा आश्चर्य और दुख की बात क्या होगी ? गऊ हत्या का जघन्य पाप इस देश को ही नहीं ससार को ले डूबेगा । याद रखो।

आर्यो ! केवल अब तुमसे ही विश्व की धार्मिक गऊ भक्त जनता को कुछ आशाए है इसलिए गऊ रक्षा के लिए सक्रान्ति करने के लिए तुम अब कमर कस कर तैयार हो जाओ । कवि के शब्दो में

आर्य कुमारो ! सद्गुणधारो वैदिक धर्म निभाओ तुम ।
महानाश की दावानल से यह ससार बचाओ तुम ।।
उग्रवाद आतंक वाद ने जग मे डेरा डाला है।
गुण्डागर्दी बदमाशी को खुदगर्जों ने पाला है ।।
आर्य वर्त महान हमारा पिसता ही नित जाता है ।
डाकू गुण्डे चोरो से अब चैनाओ का नाता है ।।
अबलाओ की चीत्कारे यह गऊए मारी जाती हैं।
राम कृष्ण के भारत में विधवाए रुदन मचाती हैं।
समय नहीं है सोने का अब हे वीरो ! अब तो जागो तुम ।
करो परस्पर मेल फूट पापिन को अब तो त्यागो तुम ।।
गऊ हत्यारे दुष्टों का दुनिया से नाम मिटाओ तुम।
मासहारी हत्यारों के वीरो! शीश उडाओ तुम।।

"दयानन्द पब्लिक स्कूल आर्य समाज स्थापना दिवस"

18 3 99 रविवार प्रात 10.30 बजे से 12.30 बाद दोपहर तक दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना के विशाल आगन मे आर्य समाज स्थापना दिवस बडे समारोह से मनाया गया। जिसमे स्कूल का स्टाफ छात्र और नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने भाग लिया। यज्ञ आर्य समाज सिविल लाईन्ज की प्रधाना श्रीमति सरला लुम्बा ने कराया। यज्ञमानो को अशीर्वाद के पश्चात् प्रबन्ध समिति की सदस्या श्रीमति विनोद गान्धी तथा श्री रमेश जी सूद ने अपने भजनो द्वारा आर्य समाज के कार्य का वर्णन किया।

श्रीमति यशवती जी भल्ला रिटायर्ड प्रिंसिपल ने अपने भाषण म कहा कि आर्य समाज की कृपा से हम देवियो का यज्ञ करने एवम् वेद पढ़ने का अधिकार मिला है। आर्य समाज की स्थापना से पहले हमें पढने का अधिकार नहीं था। हम देवियां पर विशेष रूप से आर्य समाज का ऋण है। स्कूल के प्रबन्धक आत्मानन्द आर्य ने कहा कि आर्य समाज की स्थापना से पहले हमारी हिन्दू जाति की अत्यन्त दुर्दशा था। देवियो को वेद पढने का अधिकार नहीं था देश मे अज्ञान अविद्या व बुराईया भरी हुई थी। आर्य समाज ने बुराईयो को दूर करने का पूरा प्रयत्न किया। आज देश मे जो जागृति दिखाई दे रही है उसमें आर्य समाज का बहुत योगदान है। हम सब को आर्य समाज को पूरा पूरा सहयोग प्रदान करना चाहिये।

सुनीता मलिक

आर्य समाज वेद मन्दिर गढ़ा का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज वेद मन्दिर दयानन्द नगर गढ़ा जालन्धर का वार्षिक उत्सव 67 वर्ष को बडे समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न उपप्रधान श्री कर्मचन्द जी शास्त्री ने पहुच कर जनता का मार्ग दर्शन किया। ध्वजारोहण प० हरबस लाल जी शर्मा ने किया।

इस अवसर पर श्री तिलकराज शास्त्री श्री वेद प्रकाश जी टकारा वाले श्री भगत चुन्नी लाल जी एम एल ए श्री बूटाराम जी डा० ज्ञान चन्द जी तथा दूसरे कई महानुभावो ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस उत्सव मे आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर बस्ती दानिशमन्दा बस्ती बावाखेल बस्ती गुजा आर्य नगर कबीर नगर गाधी नगर 1 गुरुकुल करतारपुर मॉडल हाऊस सन्त नगर माधी नगर न 2 गढा तथा दूसरी कई आर्य समाजों के आर्य भाई व बहने वहा पहुची थी। कार्य क्रम की समाप्ति पर दोपहर दो बजे सारे गढा नगर मे शोभा यात्रा निकाली गई। इसमें सभी आर्य समाजों से पधारे महानुभावों व गुरुकुल करतारपुर के विद्यार्थियो ने भाग लिया।

इस शोभा यात्रा में सनातन धर्म मन्दिर कमेटी का भी पूरा सहयोग रहा। रास्ते में कई स्थानो पर पानी पिलाया गया तथा खाने को वस्तुए बाटी गईं। गढा नगर के सभी लोगो ने शोभा यात्रा का स्थान स्थान पर स्वागत किया। इसमे गढा नगर वासियो का बहुत सहयोग रहा है।

शोभा यात्रा की समाप्ति पर वृहद ऋषि लगर हुआ जिसमें आए हुए सभी महानुभावो ने प्र व भोज किया।

इस उत्सव मे पधारे सभी महानुभावो का धन्यवाद किया गया। इस उत्सव की सफलता का श्रेय प्रधान श्री सम्मन राम उपप्रधान श्री जय गोपाल श्री मेला राम मत्री पडित बनारसीदास उप मत्री श्री जनक राज कोषाध्यक्ष श्री रतन लाल वेद प्रचार मत्री सत राम तथा साधु राम व अन्य सभी सदस्यो व आर्य महानुभावो को जाता है।

सन्त राम

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामन्त्री सम्पादक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस/प्रिंटिंग सैंटर्स जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

संवत् 1972949099 रजि० नं० NP 17504/58

वर्ष 49 अंक 2, 29 चैत्र सम्वत् 2056 तदनुसार 8/11 अप्रैल 1999 दयानन्दाब्द 175 वार्षिक शुल्क 50 रुपये आजीवन 500 रुपये

महिलाओं को मन्त्रपाठ करने व उपदेश करने का अधिकार है

शास्त्रार्थ की खुली चुनौती

इन्द्रजीत देव, पुरानी सब्जी मण्डी मार्ग, यमुनानगर-135001

सूर्यकुण्ड, अमादलपुर जि यमुनानगर के एक कार्यक्रम में 8.2 99 को वाराणसी के श्री बटुक शास्त्री ने श्री माधव आश्रम, शंकराचार्य की उपस्थिति में कहा–

अ) महिलाओ को यह अधिकार नहीं है कि वे श्रोताओं को उपदेश करें।

आ) गायत्री मन्त्र के पाठ करने का भी इन्हें अधिकार नहीं है।

इ) ओ३म् बोलना ही नहीं चाहिए।

ई) जो कोई मेरे कथन को गलत सिद्ध करना चाहता है, उसे मैं मंच पर शास्त्रार्थ के लिए आमन्त्रित करता हूं।

गायत्री परिवार व आर्य समाज के कुछ सदस्य व विद्वान 11 2 99 को जब कुछ महिलाओं को आगे रखकर सभा स्थल पर गए तो न केवल वहां हमें पण्डाल की ओर जाने से रोका गया अपितु प्रबन्धकों व कार्यकर्ताओं ने धक्के मारकर बाहर धकेल दिया। वहां उपस्थित पुलिस ने वायरलैस सन्देश द्वारा अधिक पुलिस व प्रशासन के अधिकारियों को बुलाने के लिए कहा। ऐसा किया ही किया गया और देखते ही देखते 2–3 जीपों में पुलिस के उच्चाधिकारी व और कर्मचारी भी आ गए। हमने उच्चाधिकारियों से निवेदन किया कि इस मच से महिला व शास्त्र विरोधी बातों का प्रचार किया जा रहा है व शास्त्रार्थ के लिए ललकारा गया था। हम शास्त्रार्थ करने के लिए आज आए हैं परन्तु ललकारने वाला इनका विद्वान् अपनी घोषणानुसार हमें मंच पर नहीं बुला रहा। उच्चाधिकारियों ने उपरोक्त श्री बटुक शास्त्री को बाहर आने को कहा। तब उन्हें बाहर आना पड़ा व पंडाल के बाहर सड़क पर बिना किसी निर्णायक के सैंकड़ों दर्शकों की उपस्थिति व पुलिस के अधिकारियों के संरक्षण में लघु शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। तीन बार मैंने प्रश्न किया कि आप हमे अब मंच पर क्यों नहीं लेकर चलते ? इसका कोई उत्तर नहीं दिया गया. विवश होकर वहीं शास्त्रार्थ करना पड़ा। मैंने निम्नलिखित दो वेद मन्त्र तीन बार सुना कर पूछा कि इनके आधार पर स्त्रियों को मंत्रपाठ करने व जनेऊ धारण करने का अधिकार है :–

1. यथेमां वाचम् कल्याणीम् आवदानि जनेभ्यः। (यजुर्वेद 26/2)

अर्थात् मैं (ईश्वर) यह वेदज्ञान मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए दे रहा हूं। सिद्ध है कि वेदज्ञान सभी के लिए है किसी भी प्रकार के वर्ण, लिंग व देश–काल के भेदभाव के बिना। फिर स्त्रियां वेदमन्त्रों का पाठ क्यों नहीं कर सकतीं ?

इस का उत्तर बटुक शास्त्री ने कुछ नहीं दिया। अत– एक और वेदमन्त्र का प्रमाण दिया गया :–

2. भीमा जाया ब्राह्मणस्य उपनीता। (ऋ०10/109/4)

अर्थात् वेदपाठी वेदाध्येता की पत्नी यज्ञोपवीत धारण करके ज्ञान बल वाली बनती है। इससे स्पष्ट है कि स्त्री भी यज्ञोपवीत धारण कर सकती है। यज्ञोपवीत विद्या ग्रहण करने का प्रतीक है। बिना वेद पाठ के स्त्री विद्यावती कैसे बनेगी ? वेद पढ़ने का उसे पूर्ण अधिकार है।

इस प्रमाण का भी कोई उत्तर नहीं दिया गया व असंगत बातें ही कही गईं। हम बार–बार प्रमाण दोहराते रहे व वे अपनी इधर–उधर की असंगत बातें कहते रहे। अन्त में वे और उनके संगी–साथी हो–हल्ला करते हुए पण्डाल की ओर चले गए।

प्रमाण तो और भी हैं परन्तु इस लेख में अब हम दो प्रमाण रामायण के प्रस्तुत करते हैं :–

3. सा क्षौमवसना हृष्टा नित्यं व्रतपरायणा।
अग्निं जुहोति स्म तदा मन्त्रवत्कृतमङ्गला॥

यह वाल्मीकि रामायण, अयोध्या काण्ड, बीसवें सर्ग के 15वे श्लोक का प्रमाण है। इसके अनुसार नित्य व्रत–परायण माता कौशल्या अपने पति के बिना महल में रामचन्द्र के राज्याभिषेक की घोषणा के बाद रेशमी वस्त्र धारण किए हुए मन्त्रोच्चारण–पूर्वक अग्निहोत्र कर रही थीं। हमारा पूछना है कि यदि माता कौशल्या अग्निहोत्र कर सकती थीं, यज्ञानुष्ठान कर सकती थीं तो हमारी आज की माताएं क्यों नहीं कर सकतीं ?

4. सन्ध्याकालमना· श्यामा ध्रुवमेष्यति जानकी।
नदीं चेमां शिवजलां सन्ध्यार्थे वरवर्णिनी॥

यह भी रामायण का ही प्रमाण है। जब हनुमान सीता जी की खोज में लंका में गए तो इधर–उधर भटकने व असफल रहने के बाद अशोक वाटिका में एक पेड़ पर चढ़कर स्वयं को छिपा लिया व सोचने लगे–मैं सीता को यहां देख सकूंगा। प्रातः–सायं दोनों समय सध्या करने वाली नवोढा तथा सुन्दर वर्ण वाली सीता वाटिका में (स्थित नदी के) स्वच्छ जल में स्नानादि व संध्या करने अवश्य आएगी इस स्थान पर। हम पूछते हैं कि जब सीता सन्ध्या कर सकती थी तो आज की सीताओं से मन्त्रपाठ करने का अधिकार छीनने वाले ये शंकराचार्य व इनके सगी–साथी सीता जी व राम के अनुयायी कैसे कहला सकते हैं ?

इन प्रमाणों के आधार पर मनुष्य मात्र को मंत्र बोलने का अधिकार है। संसार में पहले भी बहुत–सी विदुषी देवियां हुई हैं जिनमें गार्गी, अदिति, लोपामुद्रा, अत्रेयी, मैत्रेयी आदि के नाम हैं भाईयो और बहनो। अब हम नीचे वेद गीता के कुछ प्रमाण अपने कथन पुष्टि मे प्रस्तुत कर रहे हैं :–

1. ओ३म् क्रतो स्मर (यजु 40/15)

हे प्राणी। ओ३म् का स्मरण कर।

2. ओ३म् इति एकाक्षरम् ब्रह्म (गीता 8/13) जो मनुष्य ओ३म ऐसे एक अक्षर ब्रह्म का उच्चारण करता है।)

उपरोक्त स्पष्ट प्रमाणो के बाद भी श्री बटुक शास्त्री जी मत्र और ओ३म् का उच्चारण करने का अधिकार महिलाओं को नहीं देते। अगर इन के कथन को सत्य मान लिया जाये तो :–

- ससार के बहुत बडे वर्ग को मंत्र पाठ से वंचित रहना पडेगा।
- महिला उपदेशिकाओं को उपदेश करने से रोकना होगा।
- अन्य सामान्य महिलाओं को अनपढ़ रखना होगा।
- हमारी भावी पीढियां अशिक्षित व मूर्ख होगीं।

क्या हमारा समाज साध्वी ऋतम्भरा, निर्मला देवी डा सुनीति देवी, उमा भारती, मेधा देवी, डा सावित्री देवी, साध्वी कमलेश भारती, सुश्री कुसुम लता, अरूणा सिन्हा व सुभाषिणी देवी आदि के उपदेशों से वंचित होना चाहेगा ? क्या ऐसी देवियां इन भ्रामक प्रचारको की तानाशाही को चुपचाप सहन करेंग या हमारी तरह इनको शास्त्रार्थ के लिए ललकारेंगी ? समय व इतिहास इन प्रश्नों के उत्तर की प्रतीक्षा करेगा। इन शंकराचार्यों के विरुद्ध विदुषियो को स्वय मोर्चा संभालना होगा।

हम सभी बुद्धिजीवी वर्ग एव सर्वसाधारण को आह्वान करते हैं कि ऐसे भ्रमित व स्वार्थी उपदेशको का भाण्डा फोड़ करें व बहिष्कार करें। हम ऐसे विचारों वाले किसी भी उपदेशकों को शास्त्रार्थ के लिए खुली चुनौती देते हैं। वे पूर्व निश्चित स्थान, समय पर शास्त्रार्थ के लिए आएं ताकि सत्य–असत्य का निर्णय सार्वजनिक हो सके।

विश्व को श्रेष्ठ बनाना है या ईसाई

ले० श्री विमल वधावन एडवोकेट, दिल्ली

महर्षि दयानन्द जी ने तीन शब्दो में एक विशाल लक्ष्य हमारे सामने रखा कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम्। यदि हम महर्षि दयानन्द जी को मानवता का सच्चा हितैषी समझते हैं [illegible] के पीछे छुपी [illegible] से समझ लेना चाहिए। विश्व के नागरिको को श्रेष्ठ बनाने का आह्वान किया था उस महान ऋषि ने। अपने उस आह्वान के क्रियान्वयन हेतु आर्य समाज नाम का सगठन बनाकर विरासत में हमे यह महान कार्यक्रम दिया। श्रेष्ठ व्यक्ति बनाने की इस प्रक्रिया मे आर्य समाज ने जितने भी सुधार वादी या मानवतावादी कार्यक्रम आयोजित किये उनमे कहीं किसी स्थान पर भी यह नियम नहीं जोडा गया कि भलाई उसी की की जायेगी जो आर्य समाज का सदस्य बनेगा या किसी विशेष प्रक्रिया के तहत यह घोषित करेगा कि वह दयानन्द को मानता है उसमे ईमान लाता है या यज्ञ आदि अन्य किसी प्रक्रिया का बपतिस्मा लेगा। आर्य समाज ने जितनी भी मानवतावादी सेवाये विश्व को अर्पित की हैं उनके बदले मे आर्य समाजियो ने कभी किसी वस्तु या सहायता की कामना नहीं की।

दूसरी तरफ किसी भी मत मतान्तर या मजहब का नाम आते ही एक ऐसी प्रक्रिया या घोषणा की तस्वीर मस्तिष्क मे उभरती है जिससे गुजरने के बाद ही व्यक्ति स्वय को उस मत या मजहब से जोड सकता है। इस जोड के लिए वे मत और मजहब भी उत्सुकता से ऐसे व्यक्तियो की प्रतीक्षा करते हैं।

आजकल चर्च बडी चर्चा मे है। चर्च का नाम आते ही एक यक्ष प्रश्न किसी भी भारतीय राष्ट्रवादी के मस्तिष्क मे उठना स्वाभाविक है कि जिस विशेष स्थान या प्रान्त के चर्च की बात हो रही है वहा पर एक या दो दसक पूर्व हिन्दुओ की सख्या क्या थी ईसाईयो की सख्या क्या थी और आज यह सख्या का खेल कहा तक पहुचा है दूसरा विशेष पहलू चर्च के साथ जुडा हुआ यह भी है कि चर्च का धर्म प्रचार पिछडे या अनपढ गरीब नागरिकों के मध्य ही क्यो है ? उत्तर स्पष्ट है-चर्च के अवैज्ञानिक किस्से कहानियां पढ़े लिखे लोगों को फुसला नहीं पाते। दूसरे चर्च के प्रलोभन भी गरीबो में ही कारगर सिद्ध होते हैं।

हमें तो यहां तक पता चला है कि विदेशो से करोडो अरबो रुपये प्राप्त करने वाला चर्च भारत की सरकारो द्वारा उपलब्ध कराये जाने वाले अनुदान को भी बहुत बडी मात्रा मे हडप रहा है। इन सब तथ्यो के बावजूद कुछ मनगढन्त या जबरदस्ती पैदा की गई अव्यवस्थाओं को उजागर करके यह दिखाने का प्रयास किया जा रहा है कि भारत मे ईसाइयो की जान खतरे मे है। जब कि वास्तविकता कुछ और है।

विगत माह फिर एक समाचार सुर्खियो मे आया कि उडीसा मे कुछ ईसाइयो के घर जला दिये गए।

इससे पूर्व एक विदेशी मिशनरी की हत्या के कारण भी तूफान खडा किया गया था। केन्द्र सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री डी पी वधवा जी के नियन्त्रण मे एक आयोग भी गठित किया है। इस आयोग की रिपोर्ट ने यदि हत्या के कारणो की भी छानबीन की तो स्पष्ट हो जायेगी कि मिशनरियो के विरुद्ध स्थानीय जनता मे आक्रोश क्यो पैदा होता है और किस प्रकार हिंसा की नौबत आ जाती है। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार इस मृतक के विरुद्ध पहले से ही स्थानीय जनता के द्वारा पुलिस मे शिकायते दर्ज थीं। पुलिस जब कार्यवाही नहीं करती तो जनता को स्वय पहल करनी पडती है इसी को सीधी कार्यवाही कहा जाता है। इस विदेशी मिशनरी की हत्या से पूर्व के तथ्यो पर उडीसा के तत्कालीन मुख्यमत्री श्री पटनायक ने भी अपना वक्तव्य दिया था।

सोनिया गाधी की अध्यक्षता मे चल रही काग्रेस नामक खिसियानी बिल्ली ने पटनायक बाबू को ही नोच डाला और नया मुख्यमत्री गिरधर बाबू को नियुक्त किया। मुख्यमत्री कोई भी हो प्रशासनिक तथ्यों से मुह फेरना किसी भी समझदार राजनेता को रास नहीं आयेगा।

यही कारण है कि घर जलाने वाले घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए इस वर्तमान मुख्यमत्री को भी यह स्वीकार करना पड़ा कि जिन ईसाइयों के घर जलाये गये थे उन्होंने स्वय पहले हिन्दू परिवारों पर हमला किया था। त्रिशूल और क्रास की लडाई हिंसात्मक रूप में अधिक दिन नहीं चलेगी ऐसा हमारा विश्वास है क्योंकि हर स्थान पर पहली गलती क्रास के द्वारा ही होती है। त्रिशूल का प्रयोग तो रक्षात्मक शैली में किया जाता है। यदि क्रास का वास्तविक लक्ष्य शान्ति की स्थापना करना है तो उन्हें वास्तविक तथ्यों के दृष्टिगत आत्मावलोकन करना चाहिए और जबरदस्ती धर्मान्तरण की नीतियों पर रोकथाम लगानी चाहिए।

श्रीमती कौशल्या ऋषि का देहावसान

आर्य समाज के प्रसिद्ध व कर्मठ कार्यकर्ता चौ ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट की धर्म पत्नी श्रीमती कौशल्या ऋषि का 29.3.99 को रात्रि में देहावसान हो गया। 30.3.99 को उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से दोपहर दो बजे सम्पन्न हुआ।

श्रीमती कौशल्या ऋषि एक बहुत ही धार्मिक महिला थीं आर्य समाज के कार्यों में वह पूर्ण रुचि लेती थीं। स्त्री आर्य समाज चचका बाग [illegible] की वह अधिकारी रहीं। उन्होंने अपना जीवन अध्यापन कार्य करते हुए समाज सेवा के कई कार्यों में व्यतीत किया। वह आर्य समाज के कार्यों में अपने पति चौ० ऋषिपाल सिह जी को पूर्ण सहयोग दिया करती थी। उनके चले जाने से जो स्थान खाली हुआ है उसकी पूर्ति असम्भव है। उनके चले जाने से जहा परिवार को दु ख है वहा हम सब को भी है। उनका अन्तिम शोक दिवस 3 4 99 को मनाया गया और उन्हें श्रद्धांजलि भेंट की गई। हम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य मर्यादा साप्ताहिक की ओर से उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हुए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह उस दिवगतात्मा को सद्गति प्रदान करें और चौ० ऋषिपाल सिह जी को तथा उनके परिवार को उनके वियोग को सहन करन की शक्ति प्रदान करें।

हरबंस लाल शर्मा
सभा प्रधान

अश्विनी कुमार शर्मा
सभा महामन्त्री

फिरोजपुर शहर में रामनवमी पर विशेष शोभा यात्रा

आर्य समाज रानी का तालाब फिरोजपुर शहर में आर्य समाज स्थापना दिवस तिथि 18.3.99 से राम नवमी तिथि 25 मार्च 1999 तक प्रतिदिन विशेष यज्ञ की व्यवस्था की गई जिसमे कई यजमानो और आर्य बन्धुओ ने बढ चढ कर भाग लिया और पूरे 8 दिन यज्ञ की व्यवस्था को सुशोभित किया।

आर्य समाज स्थापना दिवस के मौके पर आर्य समाज को 21 वर्ष बाद जीर्णोद्धार करके विशेष रूप से सजाया और सवारा गया। वैसे तो इस अवसर पर इस समाज के रखरखाव के लिए बहुत से आर्य प्रेमियो ने दान दिया परन्तु 500 रुपए और उससे अधिक की राशि वाले आर्य प्रेमियो की सूचि इस प्रकार है।

श्री ओम मुनि जी -1111 00
श्री डी आर गोयल-1100 00
ओम प्रकाश बवन-1100 00
श्री एच एल शर्मा-1100 00
श्री सन्तोष कुमार-1000 00
श्रीमती सन्तोष कुमारी-500
श्री विजय कुमार गलोत्रा-500
श्री सुभाष चन्द्र- 500 स्त्री आर्य समाज-3100 रुपये

राम नवमी के शुभ अवसर पर सनातन धर्म युवक सभा फिरोजपुर शहर के सहयोग से आर्य समाज की तरफ से शोभा यात्रा में हवन यज्ञ तथा आध्यात्मिक भजन करते हुए सारे शहर को सुगन्धित तथा पवित्र वातावरण दिया गया।

सन्तोष कुमार खेडा (मन्त्री)

सम्पादकीय

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन

पिछले पाच सालों से आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब (रजि०) गुरुदत्तभवन चौक किशनपुरा जालन्धर का कार्य आदरणीय पडित हरबस लाल जी शर्मा सभा प्रधान जी के नेतृत्व मे बडे सुचारू रूप से चल रहा है। इन पाच वर्ष के कार्यकाल मे पजाब सभा के अधिकारियों एव अन्तरग सदस्यो के चुनाव विधिवत रूप से सविधान के अनुसार सर्वसम्मति से हुये और पजाब सभा का पिछला चुनाव 27 अप्रैल 1997 को आर्य कालेज लुधियाना मे हुआ था और यह चुनाव तीन वर्ष के लिये हुआ था जिस मे श्री पडित हरबस लाल जी शर्मा प्रधान चुने गये थे और इसी प्रकार सभा महामत्री एव सभा वरिष्ठ उप प्रधान का भी चुनाव हुआ था और बाकी के पदाधिकारियो व अन्तरग सदस्यों को इन चुने हुये तीनो अधिकारियो ने साधारण सभा द्वारा प्रदत्त अधिकार के आधार पर मनोनीत किया था और इस प्रकार से सभा का काम ठीक ढग से चल रहा है। पिछले कुछ समय से पजाब मे कई लोगो के मन मे थोडा सा भ्रम पैदा हो गया था जिस को मै दूर करना चाहता हू ताकि आर्य समाजी भाई व बहिने किसी प्रकार की भ्रान्ति का शिकार न हों। इसलिये मै बताना चाहता हू कि माननीय पडित हरबस लाल जी शर्मा सभा प्रधान के नेतृत्व मे हम सभी मिल कर एक जुट होकर काम कर रहे है और इसी प्रकार से कार्य करते रहेगे। हमारे सभा प्रधान जी बडे सुलझे हुये व्यक्ति है और बडे दानी सज्जन है । कई बार लोग उन को ऐसी बाते टैलीफोन पर बताते रहते है जिन का कोई आधार नहीं होता और कई बार ऐसे पत्र भी लिखते रहते है जो बिल्कुल झूठे और बेबुनियाद होते हैं। जिससे सभा प्रधान जी को कई बार अनावश्यक कठिनाई का सामना करना पडता है और बात बीच मे कुछ नही होती। इसलिये मेरी सभी से प्रार्थना है कि सभा प्रधान जी को कोई भी व्यक्ति ऐसे टैलीफोन या पत्र न लिखे जिससे उन को अनावश्यक परेशानी हो। पिछले पाच वर्षों मे आर्य समाज का बहुत काम हुआ है । पजाब प्रान्त मे और दूसरे प्रान्तो मे आर्य समाजो ने बहुत से वार्षिक उत्सव किये जिस मे सभा अधिकारियों ने बढ चढ कर भाग लिया । पिछले दिनो आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर का उत्सव हुआ। इस समाज के कार्यकर्त्ताओं ने सभा की सहायता से बहुत बडा उत्सव मनाया जिससे आर्य समाज का बहुत प्रचार हुआ। इसके लिये मै आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर के अधिकारियों को बहुत बहुत बधाई देता हू। इसी प्रकार से 21 मार्च 1999 को जिला आर्य सभा लुधियाना ने एक बहुत बडा सम्मेलन आर्य समाज के स्थापना दिवस पर किया जिसमे लुधियाना जिला के आर्य भाई व बहिनों ने बढ चढ कर भाग लिया और यह सम्मेलन जिला सभा के पदाधिकारियो ने श्रीमति राजेश शर्मा प्रधान जिला सभा के नेतृत्व मे और माननीय पंडित हरबस लाल जी शर्मा की अध्यक्षता मे किया और इस सम्मेलन को कामयाब करने के लिये आदरणीय सत्यानन्द जी मुञ्जाल ने बहुत सहायता की है । मै जिला आर्य सभा लुधियाना के अधिकारियों को भी मुबारकबाद देता हू । इसी प्रकार पजाब मे और भी बहुत सी आर्य समाजो ने अपने अपने वार्षिक उत्सव किये जो बडे सफल रहे। उनको भी मैं सभा की ओर से बहुत बहुत बधाई देता हू। 12-4-99 को पुण्य भूमि गुरुकुल कागडी हरिद्वार मे उत्सव हो रहा है और यह उत्सव भी सभा प्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा की अध्यक्षता मे होगा। श्री हरबस लाल जी शर्मा ने पिछले वर्ष इस उत्सव पर बहुत बडा लंगर लगवाया था जिस में आठ-नौ हजार व्यक्तियों ने भोजन किया था और पंडित जी ने सारा खर्च स्वयं सहन भी किया था और इस बार भी श्री पडित हरबस लाल जी शर्मा की ओर से हरिद्वार मे पुण्य भूमि के उत्सव पर एक बडा वृहद लगर लगाया जायेगा। इसलिये जो जो महानुभाव वहा पर जाना चाहें वह अवश्य जाये। लेकिन सभा को इस की पूर्व सूचना दे दे ताकि उनके रहने और भोजन इत्यादि की व्यवस्था की जा सके। मै एक बात आर्य जनता का बताना चाहता हू कि श्री पडित हरबस लाल जी शर्मा के साथ मेरे पिछले 25 वर्षों से सम्बन्ध है और शुरू से ही मै उनको अपने पिता समान समझता हू और वह भी मुझे अपने पुत्र के समान समझते है और इसी कारण हमारे मे कभी भी कोई मतभेद नही होता इसी प्रकार आदरणीय डा० के के पसरीचा जी श्री सरदारी लाल जी प्रिंसीपल अश्विनी कुमार जी शर्मा श्री कर्म चद जी माली आदि से भी मेरे पिछले 25 वर्षों से बहुत गहरे सम्बन्ध है और हम सभी एक दूसरे के बहुत नजदीक है इसलिये हमारे मे मतभेद पैदा होने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। कई बार कई लोगो को लगता है कि शायद इन मे मतभेद पैदा हो जाये इसलिये वह इन सभी महानुभावो को तरह तरह की झूठी बाते आ कर बताते रहते है लेकिन मै ऐसे लोगो को बताना चाहता हू कि यह सभी महानुभाव मेरे अपने है इसलिये हमारे मे कभी कोई मतभेद पैदा नही हो सकता। मुझे इन सभी का आशीर्वाद प्राप्त है और सब से बडी बात यह है कि मेरे बुजुर्ग सभाप्रधान श्री हरबस लाल जी का मुझे पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त है। इसलिये मै सभी आर्य समाज के भाई व बहिनो से प्रार्थना करना चाहता हू कि आप प्रत्येक आर्य समाज मे जहा जहा भी थोडे बहुत मतभेद है उन्हे दूर करने का प्रयत्न करे और सभी सगठित होकर आर्य समाज के प्रचार व प्रसार के लिये काम करे और आर्य समाज मे से किसी भी व्यक्ति को सदस्यता से निकाला न जाये और जिन व्यक्तियों को किसी कारणवश आर्य समाजों की सदस्यता से स्थानीय आर्य समाजो ने निकाला है उनको तुरन्त वापिस ले लिया जाये ताकि सभी मिल जुल कर प्रेम पूर्वक आर्य समाज का काम कर सके। पिछले दिनो चौधरी ऋषिपाल सिह जी की पत्नी का देहान्त हो गया। मै बाहर गया हुआ था। जब मै वापिस आया तो मुझे पता चला। मुझे यह दुखद समाचार सुन कर बडा गहरा दुख पहुचा । चौधरी ऋषिपाल सिह जी भी हमारे भाई है। इस दुख की घडी मे हम सब उन के साथ है। मै उन से भी निवेदन करूगा कि आप भी श्री पडित हरबस लाल जी शर्मा के नेतृत्व मे आर्य समाज का काम करे। मेरी आयु भी अब 57 वर्ष की हो गई है और पता नहीं अब आगे की आने वाली आयु मे किस तरह होता है। इसलिये हमे एक दूसरे से लडना नही चाहिये । समाज का काम करना चाहिये। इसलिये और भी जितने व्यक्ति मन मुटाव के कारण आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से किसी कारण वश अलग हो गये हैं उनको भी मै निवेदन करना चाहता हू कि वह आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा के नेतृत्व मे शामिल होकर काम करे। एक बात मै आर्य जनता को बताना चाहता हू कि सारे भारत वर्ष मे केवल आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब (रजि०) गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर ही है जो नियमानुसार सगठित हो कर विधिवत रूप से और सुचारु रूप से आर्य समाज के प्रचार व प्रसार का कार्य कर रही है और इस सभा का सगठन बहुत मजबूत है और इस सभा की ओर कोई भी व्यक्ति आख उठा कर नहीं देख सकता। इसलिये मेरी सभी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि वह सगठन को मजबूत करे और इकटठे मिल कर आर्य समाज का काम करे।

अश्विनी कुमार शर्मा
एडवोकेट सभा महामत्री

अंग्रेजी से भारतीयता को खतरा

श्री राजकरण सिंह महासचिव अखिल भारतीय भाषा सरक्षण सगठन

देश की अस्मिता के लिए उसकी भाषा बडा महत्वपूर्ण होती है उसका परम्परा एव सस्कृति की वाहिका अपनी भाषा ही होती है। अपनी भाषा के प्रति गौरव की भावना का दर्शन भारत स लुप्त होता जा रहा है भारत जैस देश मे जहा साक्षरता आज भी एक सपना है जहा सरकारा आकडो क अनुसार देश का आबादी क कुल 2 प्रतिशत लाग ही अग्रेजी जानत एव समझत है वहा अग्रेजी को सपक भाषा की वकालत करने वाले कहा का सच्चाई उजागर कर रहे ह यह चितन का विषय हे अपन राष्ट्रहित आर स्वाभिमान को गिरवी रखकर ये लोग जा अपना मातृभाषा का उपमान करत हैं क्या ये कभी देश का भला कर सकते हैं? जा लाग अपनी मातृ भाषा छोड देत हैं व दशद्रोही हैं और जनता के साथ विश्वासघात करत हैं हिन्दी का प्रश्न क्षत्रीय राजनीति के कारण ही उलझा हुआ है अन्यथा हिन्दी केवल देश मे ही नहीं विदेशो मे भी सम्पर्क सूत्र का दायित्व पूरा करती है फिजा मारिशस मलेशिया जोर्डन ईराक सिगापुर जैसे अनेक देशो मे भा दैनिक आवश्यकताओ की पूर्ति म सहायक हिन्दा हा है यूरोप के विद्वाना मे स्वतत्र चितन की होड ह भारताय विद्वानो म अनुकरण का अन्धा प्रतियोगिता का समावेश ह उनमे भाषायी स्वाभिमान है जबकि भारताय विद्वानो मे भाषाई दासता (अग्रजा को गुलामी) छाई हुई ह

देश की एकता मे बाधक

अग्रेजी के प्रति नौकरशाही का व्यवहार देखकर ऐसा लगता है कि मेकाले जात गया आर हम आज भी गुलाम हे सवाल अग्रजा क विरोध का नहीं है सवाल ता अग्रजियत क प्रति मोह का है। अपन ही भाईयो पर अग्रेजी के सहारे हुकूमत करने वाले अग्रजा मे ही सोचने वाले काल अग्रेजो को पेदा करने वाली मैकाल की शिक्षा नाति भारत पर इस लिए थोपी गई थी कि ये अग्रेजो के मानस पुत्र भारत का सस्कृति को नष्ट करेगे अग्रेजी देश मे एकता नहीं लाती देश का विभाजन करती है। हिन्दी का विरोध मात्र सकुचित दृष्टि और राजनैतिक कारणो से हो रहा है यदि सभी भारतवासी सबसे पहले देश का हित सोचे देश की उन्नति सर्वोपरि माने और राष्ट्रीय एकता मे शक्ति का दर्शन करे उसी मे सन्निहित कल्याण को देखे तो यह भाषा विवाद स्वयमेव समाप्त हो जायेगा।

शोषण का हथियार

भारतीय भाषाओ से समीपता का दृष्टिकोण अपना कर ही हिन्दी को स्थापित किया जा सकता है। अट्ठारह सौ सत्तावन के गदर का विरोध करने वाले मुट्ठी भर अग्रेजी परस्त बाबू लोग आज भी नौकरशाही के प्रतिनिधि बनकर हिन्दी का विरोध कर रहे हैं। कोई भी देश एक विदेशी भाषा के आधार पर उन्नति नहीं कर सकता एक विदेशी भाषा आम जनता की भाषा नहीं बन सकती। अग्रेजी ने देश को दो वर्गों मे विभाजित किया है। एक वर्ग शोषक है जो अग्रेजी के माध्यम से दूसरे भारतीय भाषाभाषी शोषित वर्ग का शोषण कर रहा है यह देश की प्रगति के लिए घातक है।

एक ओर आयरलैंड है जो इग्लैंड के समीप होते हुए भी अपनी भाषा आयरिश अपनाए हुए है और दूसरी ओर इजराइल है जो अपनी मातृभाषा हिब्रू को अपनी राष्ट्रभाषा घोषित कर व्यवहार मे लाने की हिम्मत रखता है तो क्या भारत इतना कायर है जो आजादी के ५२ वर्षों के बाद भी अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी को व्यवहार मे लाना तो दूर देश की सभा उच्च नौकरियो की प्रतियोगी परीक्षाओ मे अग्रेजी को अनिवार्य बनाए हुए है।

राष्ट्रीय अस्मिता का हनन

जो पब्लिक स्कूल कभी भारत मे अपनी भाषा एव सस्कृति को उन्नत बनाने के लिए शुरू किए गये थे वही स्कूल आज देश मे अग्रेजियत के गढ बनकर राष्ट्रीय अस्मिता को मिटाने मे लगे हुए हैं। आकडों के इतिहास ने यह प्रमाणित कर दिया है कि कोई भी मौलिक शोधकर्ता (प्रतिभाशाली) इन अग्रेजियत के गढ पब्लिक स्कूलों से देश को नहीं प्राप्त हुआ।

प्रतिभा की दौड मे अवरोधक

इन पब्लिक स्कूलो ने एक ऐसे अभिजात्य वर्ग को जन्म दिया है जिनकी भाषा अग्रजी है। अग्रेजी के हा बल पर यह वर्ग सरलता से कुर्सी पाता है। इसीलिए जैसे भी हो अग्रेजी को बनाए रखने के लिए यह वर्ग हमेशा कोशिश मे लगा रहता है। प्रतिभा मूल्याकन की खुली दौड मे इस वर्ग का स्वय पर विश्वास नहीं है। इसी कारण प्रतिभा मूल्याकन मे खुली दौड का यह वर्ग हमेशा से विरोध करता आ रहा है।

देश का निर्माण भारतीय भाषाओ से ही

अग्रेजी के प्रभुत्व का शिकार अकेले हिन्दी ही नहीं है सभी भारतीय भाषाये अग्रेजी की दासी बनकर रह गई हैं। हर प्रदेश मे अग्रेजी भाषी अभिजात्य वर्ग ने उच्च सरकारी पदो पर कब्जा जमा रखा है। इनकी भूमिका अग्रेजो की तरह फूट डालो और राज करो की साम्राज्यवादी भूमिका से अलग नहीं है। ससार में कोई भी देश ऐसा नहीं है जिसने अपनी मातृभाषा को भुलाकर किसी विदेशी भाषा के माध्यम से प्रगति की हो स्वतत्र भारत के नागरिक भाषा के नाम पर रचे गये अग्रेजो के षड्यत्र को पहचान कर ही अस्मिता की रक्षा कर पायेगे। भारत का स्वाभिमान भाषाई मृत्यु शैय्या पर अतिम सासे गिन रहा है जिसे व्यवहार का अमृत पिलाकर अमर करने के लिए देश की युवा शक्ति को स्वाभिमानी पूर्वजो से प्रेरणा लेकर कर्तव्यो की बागडोर अपने हाथों में लेने की अत्यन्त आवश्यकता है। राष्ट्रीय एकता एव गौरव की पहचान हिन्दी ने ही स्वतत्रता के आन्दोलन को परिणति तक पहुचाया था आधुनिक भारत का निर्माण अग्रेजी से नही भारतीय भाषाओ के माध्यम से ही सभव हो सकता है

सगठन को सघर्ष की शक्ति दे

अखिल भारतीय भाषा सरक्षण सगठन ने इस मर्म को समझा है इसीलिए देश की सर्वोच्च नौकरियो प्रतियोगी परीक्षाओ मे भारतीय भाषाओ को लागू कराने एव अग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कराने के लिए ससद के दोनो द्वारा सर्वसम्मति से पारित ससदीय सकल्प (18 जनवरी 1968 को लागू कराने के लिए पिछले दस वर्षों से सघ लोक सेवा आयोग भवन के मुख्य द्वार पर धरना देकर सघर्ष कर रहा है सघर्ष के इस दौर मे कई अन्य महत्वपूर्ण परीक्षाओ से अग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कराने मे तो सफलता प्राप्त हुई है किन्तु सर्वोच्च नौकरियो पर अपना प्रभुत्व बनाए रखने वाले अभिजात्य वर्ग ने आयोग की परीक्षाओ से अग्रेजी का वर्चस्व समाप्त करने की दिशा मे कोई ठोस कार्यवाही नहीं की है जो कि भारताय भाषा भाषियो के लिए दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है इसीलिए हम सभी भारतवासियो का आह्वान करत हैं कि भारतीय भाषाओ की अस्मिता की रक्षा क लिए आप आगे आए और सगठन के इस सघर्ष मे शामिल होकर आधुनिक भारत का निर्माण करन मे सहभागी बन

ऋषि दयानन्द के सराहनीय कार्य

ऋषि दयानन्द की कौन सी बात आपको स्वीकार नहीं ?

1 **ईश्वर :** आर्य समाज एक ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करता है। ईश्वर सच्चिदानन्द तथा सृष्टिकर्ता है, एक ईश्वर को सारा संसार मानता है। कोई मत, मजहब एक ईश्वर का विरोध नहीं करता। मनुष्य मात्र की एकता का प्रतीक एक ईश्वर को मानना ही है।

2 **वेद :** वेद ईश्वर की वाणी है। वेद ईश्वर का पहला धर्मग्रंथ है। किसी एक मत या सम्प्रदाय के लिए नहीं बना मनुष्य मात्र के लिए ज्ञान का भण्डार है।

3 **शिक्षा :** शिक्षा के निमित्त स्कूल, कालेज, गुरुकुल खुलवाये स्त्रियां शिक्षित हो, उनमे भी शिक्षा का प्रचार किया। ज्ञान विज्ञान को फैलाया। मनुष्य मात्र ज्ञानवान बने ताकि देश, जाति, समाज, परिवार का उद्धार कर सके।

4 **विधवा :** विधवाओ की सहायता करके समाज परिवार के दु:खों का निवारण किया। आज आर्य समाज की सारा देश सराहना करता है। विधवा स्त्री के दु:खो पर मरहम लगाई। विधवा आश्रम बनवाये।

5 **अनाथ बच्चे :** बे-घर, बेसहारा अनाथ बच्चो को सहारा दिया जिनको कोई न पूछे उन बच्चो के लिए अनाथालय खुलवाये।

6 **महिला :** महिलाओ को शिक्षित किया। पुरुष का आधा अंग बताकर समाज मे मान दिलाया। मातृशक्ति का नाम दिया। बाल विवाह, सती प्रथा का विरोध किया। आज महिला शिक्षित होकर ऊचे ऊचे पदो पर उत्तरदायित्व सभाल रही है। मुख्यमंत्री व देश की प्रधानमंत्री तक बनीं।

7 **वृद्ध :** वृद्ध, बूढो बड़ो की इज्जत और मान बढ़ाया और कहा, ईश्वर की बनाई जीवित मूर्तियो की उपासना करो। जीवन पर दया करो। जो सुख-दुख अनुभव करती है। वृद्धों का मरने के बाद श्राद्ध करना व्यर्थ है। जीवितों की पूजा सेवा करने से बढ़ कर कोई पुण्य नहीं।

8 **सनातनधर्म :** आर्य समाज वेदों को मानता है। वेद ईश्वर की वाणी है। वेदों को मानने वाला वैदिक धर्मी है। वेद ईश्वर के ज्ञान का, सृष्टि के आरम्भ से पहला ग्रंथ है। वेद सनातन है। आर्य समाजी उसी एक ईश्वर को मानता है जिसने वेदवाणी उजागर की। ईश्वर सत्य है, सनातन है इसलिए हम आर्य समाजी सनातनी, सनातन धर्मी हैं।

9 **उपासना :** उपासना व भक्ति एक ईश्वर की करो। सन्ध्या हवन, यज्ञ, गायत्री मत्र, महामत्र का जाप करो यह ईश्वर की भक्ति व ज्ञान है । चारो वेदों मे इसका गुणगान है।

10 **आर्य समाज :** आर्य समाज केवल एक ईश्वर की भक्ति व उपासना करता है। कुछ लोगो को निराकार, एक ईश्वर की भक्ति अच्छी नही लगती, इसलिये वह निन्दा करते हैं। पूजा करो तो एक ईश्वर की करो और किसी की पूजा ईश्वर पूजा नहीं है। ऋषि दयानन्द ने कहा मान दो, सम्मान दो, इज्जत दो । देश के महापुरुषो के उपदेशो पर चलो। अत: बुद्धिजीवियो। सत्य को सत्य कहो। देश धर्म, समाज को आगे बढाओ।

11 **भेदभाव :** छूआ छूत, जात पात, ऊच-नीच का भेद मिटाया। मनुष्य को मानव का दर्जा दिया । खून का रंग सबका एक है। धड़कन सबके दिलो की एक है। मनुष्य मात्र का ईश्वर एक है। सब एक होकर रहो । एकता को बढावा दिया।

12 **मांस :** ऋषि दयानन्द ने मास खाने को पाप कहा है। मास खाने वाला रहमदिल नहीं होता। बहादुर आदमी कमजोर का मास नही खाता अपितु कमजोर की मदद व रक्षा करता है।

13 **भाषा देश** भारतवासियों की मातृभाषा हिन्दी है मातृभाषा मां है, देश पिता है जैसे माता-पिता अनेक बच्चों को एक साथ पालते हैं इसी तरह भाषा छोटे से लेकर बड़े तक अनपढ़ से लेकर पढ़े तक देश के हर वर्ग को जोड़ती है। देश को जब मेरा कहते हो तो देश पर मर मिटने, कुर्बान होने, बलिदान होने, शहीद होने को तैयार रहना है । ऋषि दयानन्द ने कहा भाषा और देश मा बाप है।

14 **गाय :** गाय हमारी माता है। क्योंकि गाय से मिलने वाली हर चीज हमारे लिए लाभकारी है। गाय का दूध पूर्ण आहार है, गोबर से ईधन मिलता है, मूत्र से औषधिया बनाई जाती हैं। यहा तक कि मरणोपरान्त भी गाय की हर चीज काम आती है ।

15 **शुद्धि :** मेरा धर्म ईश्वरीय ज्ञान है सारे ससार को मानने का अधिकार है । अपना वेद ज्ञान सारे ससार को सुनाओ, आर्य बनाओ। पाकिस्तान नहीं बनता अगर शुद्धि की होती । जितने मुसलमान, औरगजेब ने बनाये उन सबको वापिस अगर लिया होता उनको शुद्ध कर दिया होता, तो न पाकिस्तान बनता न भारत माता कटती। आज भी देश मे हिन्दुओ की आबादी घटाने की चेष्टा कर रहे हैं। लाखो करोडा रुपया दूसरे देशो से आ रहा है। देश के नौजवानो, देश के धनवानों होशियार हो जाओ फिर दोबारा पाकिस्तान बनने की गलती न होने पाये।

16 **ऋषि दयानन्द** · ऋषि दयानन्द ने कहा, मेरी मूर्ति न बनाना मेरी पूजा ना करना । मैं ईश्वर का भक्त हू। मेरी मुक्ति ससार क कल्याण मे है। ऋषि दयानन्द ने अपने लिए कोई मन्दिर, समाधि धर्मगद्दी नहीं बनवायी, दौलत खजाने इकट्ठे नहीं किए । ऋषि दयानन्द ने जो कुच्छ कहा बुद्धि से समझो ज्ञान विज्ञान से परखो। जो सत्य हो उसको मानो । अंध विश्वास से बचो। ज्यादा समझना हो तो आय समाज में आओ। आपका स्वागत है।

ओम प्रकाश खन्ना आय,

भारत में नौ लाख चर्च बनाने का लक्ष्य

ईसाइयों की योजना का पता चलता है ईसाइयों के लिए जारी मिशन मैंडेट (आज्ञापत्र) से । मिशन मैंडेट पृष्ठ 447 'हमारा लक्ष्य भारत के प्रत्येक गांव (भारत में पाच लाख गाव हैं) में और शहरो की प्रत्येक कालोनी (बस्ती मोहल्ले) मे कुल मिला कर नौ लाख चर्च निर्माण करके उन क्षेत्रो मे ईसा को मानने वाले समुदायो का निर्माण करने का है।'

मिशन मैंडेट मे ही मिशनरियो द्वारा किए जा रहे कार्यो का खुलासा इस प्रकार है–

पृ 471 नागपुर का फैडरेशन आफ एवेन्जलिकल चर्च अपने 2,60,000 रुपये के वार्षिक बजट के द्वारा प्रति वर्ष 700 लोगों को ईसाई मत की दीक्षा देता है।

पृ० 470 चेन्नई की फ्रेण्डस मिशनरी प्रेअर बैंड प्रतिवर्ष के अपने 1 45 करोड रुपये के बजट के द्वारा 3400 लोगो को ईसाई बनाता है।

पृ० 475 नई दिल्ली की इण्डियन एवेन्जालिकन टीम अपने 40 लाख रुपये के वार्षिक बजट के द्वारा प्रतिवर्ष 2000 लोगो को ईसाई बनाती है ।

पृ० 477 मणिपुर का राजधानी इम्फाल का कूकी करिश्चयन चर्च 20 लाख रुपये के अपने वार्षिक बजट के द्वारा प्रतिवर्ष 100 लोगो को ईसाई बनाता है और कूकी चर्च ने आगामी दस वर्षों मे 100 चर्च बनाने का लक्ष्य निश्चित किया है।

पृ० 476 अमलापुरम के मन्ना फुल गास्पेल मिनिस्ट्रीज अपने एक करोड रुपये के वार्षिक बजट के द्वारा प्रतिवर्ष 3000 लोगों को ईसाई बनाती है। विगत पाच वर्ष मे उसने 15 हजार लोगो को ईसाई बनाया है।

कोटा (राजस्थान) की एम्मेन्यूअल बाइबिल इन्स्टीट्यूट अपने 70 लाख रुपये के वार्षिक बजट से प्रतिवर्ष 4 हजार लोगो को ईसाई बनाती है।

आखिर ये मिशनरिया भारत को ईसाई राज्य क्यो बनाना चाहती है? इसका उत्तर मिलता है मिशन मैडेट के इस वाक्य से कि "आने वाले सन् 2000 तक भारत मे बहुत बडी सख्या मे प्रभु ईसा के अनुयायी बनेगे और भारत में सामाजिक व राजनीतिक जीवन मे अपना प्रभाव स्थापित करेगे।" भारत के राजनैतिक नेता जो ईसाईयो को प्रोत्साहन दे रहे है वह इस रिपोर्ट पर विचार करे ।

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज पीपाड का नव निर्वाचन श्री देवराज जी धोका की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमे निम्न व्यक्ति सर्वसम्मति से चुने गये।

प्रधान : श्री जवाहर लाल जडिया। उप प्रधान : श्री पदमसिह आर्य। मत्री : श्री चम्पा लाल आर्य। उपमत्री : श्री राधेश्याम वैष्णव। कोषाध्यक्ष : श्री शिवरत्न आर्य। पुस्तकाध्यक्ष : श्री अमरचन्द टाक। लेखानिरीक्षक : श्री बृजवल्लभ खण्डेलवाल। प्रचार मंत्री : श्री भंवरलाल।

कार्यकारिणी के सदस्य

1 सर्वश्री देवेन्द्र टांक, 2. शंकर लाल आर्य, 3 जगदीश आर्य, 4 मंगीलाल आर्य, 5 भेराराम मेघवाल, 6 प्यारे लाल आर्य, 7 अमरचन्द आर्य, 8. मदन लाल वैष्णव, 9. विजय कुमार आर्य 10 घनश्याम सोनी 11 राम किशोर सोनी।

—चम्पा लाल आर्य मन्त्री

वैदिक उपदेशक विद्यालय चम्बा में प्रवेश प्रारम्भ

गत वर्ष से आर्य समाज चम्बा मे वैदिक उपदेशक विद्यालय चलाया जा रहा है। इस विद्यालय का पाठ्यक्रम पूर्णतया आर्ष (गुरुकुलीय) है। वेद, वेदाङ्ग, दर्शन आदि सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय पठन पाठन का मनोरम एव उपयुक्त स्थल है। इस विद्यालय का लक्ष्य पुरोहित, प्रचारक, भजनोपदेशक एव आर्य समाज के लिए ठोस विद्वान् बनाना है।

इस विद्यालय की व्यवस्था पूर्णतया निःशुल्क है इस विद्यालय मे अध्ययन हेतु योग्य छात्रों का आह्वान किया जाता है प्रवेश आरम्भ है।

प्रवेशार्थी आठवीं या दसवीं कक्षा उत्तीर्ण हों अपने साथ अपना पूर्व शैक्षणिक प्रमाण पत्र, चरित्र प्रमाण पत्र एवं परिचय पत्र साथ लावे। पठानकोट से बस द्वारा चम्बा पहुचे। विशेष जानकारी हेतु दूरभाष 01899,23313 या पत्राचार से सम्पर्क करे।

धर्मदेव आर्य आचार्य

नवम्-श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार-1999

आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा सचालित नवम् श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार के लिए प्रविष्टिया आमन्त्रित की जाती हैं। यह पुरस्कार मस्कत निवासी श्री मेघजी भाई नैनसी की स्मृति मे उनके सुपुत्र श्री कनकसिह मेघजी भाई के आर्थिक सहयोग से प्रारम्भ किया गया था। पुरस्कार समारोह प्रतिवर्ष जुलाई माह के प्रथम सप्ताह मे मनाया जाता है

उद्देश्य :— आर्य साहित्य के लेखको को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इस पुरस्कार को प्रारम्भ किया गया है। जिन लेखको ने आर्य समाज की सेवा अधिकतम साहित्य लिखकर की है, उन्हे इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

पुरस्कार :—पुरस्कार प्राप्त लेखक को रुपये 15,001/- की राशि रजत् ट्राफी व शाल से सम्मानित किया जायेगा।

नियम :—1. जिस आर्य विद्वान ने जीवन पर्यन्त वैदिक साहित्य के द्वारा आर्य समाज की अधिकतम सेवा की हो।

2 जिनके प्रकाशित ग्रन्थों का सम्बन्ध आर्य समाज के दर्शन, इतिहास, सिद्धान्त अथवा आर्य महापुरुषो के जीवन आदि से है, वे ही पुरस्कार की सीमा में माने जायेंगे।

3 ग्रन्थ लेखक को अपनी समस्त रचनाओं की दो-दो प्रतिया आर्य समाज सान्ताक्रुन्ज (प.) मुम्बई को भेजनी होंगी। एक बार ग्रन्थ प्राप्त होने के पश्चात पुनः अगले वर्ष भेजने की आवश्यकता नहीं होगी।

4 लेखक का चयन एक समिति करेगी जिसका मनोनयन आर्य समाज सान्ताक्रुज करेगा। आर्य समाज सान्ताक्रुज की अन्तरंग सभा का निर्णय अन्तिम निर्णय माना जाएगा।

5 इस पुरस्कार हेतु लेखक अपने ग्रन्थों की दो-दो प्रतियां संयोजक आर्य साहित्य पुरस्कार आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई 54 को दि. 30 मई 1999 तक भेजने की कृपा करें।

देव रत्न आर्य (संयोजक)

ईसाई संस्थाओं का षड्यन्त्र

जब से भाषा सत्याग्रही दिल्ली में संघ लोक सेवा आयोग के द्वार पर विश्व का सबसे लम्बा धरना देकर बैठे हैं और अ० भा० प्रतियोगी परीक्षाओं मे देशी भाषाओं को माध्यम स्वीकार करने संबंधी उनकी प्रमुख मांग के समर्थन में व्यापक राष्ट्रीय दबाव पैदा हो रहा है, तब से ईसाई मिशनरियो द्वारा संचालित शिक्षा सस्थाओं की नींद उड़ गई है। भारत में भारतीय भाषाओं का अभिषेक उन्हें देश निकाले जैसा प्रतीत हो रहा है इसलिए उन्होंने हिन्दी के विरुद्ध युद्ध का आह्वान किया है।

इस अराष्ट्रीय और देशघाती मनोवृत्ति का रहस्योद्घाटन ईसाई विद्यालयों और अस्पतालां के कामकाज से सम्बद्ध सुप्रीम सोसायटी ऑफ क्रिश्चियन्स के एक गोपनीय पत्र से हुआ है। इस संस्था का कार्यालय एर्नाकुलम (केरल) मे है। उक्त पत्र सस्था के अध्यक्ष डेविड थामस ने देशभर के ईसाई स्कूलों के सचालकों (जिन्हें वे 'फादर', 'मदर' कहते हैं) को लिखा है। यह पत्र उन सेकुलरो की भी आखे खोलने वाला है जो ईसाई स्कूलो और अस्पतालों के 'उच्च स्तर' तथा 'सेवा भाव' की प्रशंसा करते नहीं थकते क्योंकि इससे ईसाई मिशनरियों की कुटिलता, सेवा और शिक्षा के मुखौटे में भारत की सस्कृति पर हमले, अपनी सस्थाओं के माध्यम से अभारतीय बना दिए गए उच्च अधिकारियो द्वारा सरकार पर प्रभुत्व जमाने तथा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से मिलीभगत का पर्दाफाश होता है। यह पत्र स्वय मे अपनी कहानी खुद कहता है, जिस पर अधिक टिप्पणी की आवश्यकता नहीं यहा उस मूल पत्र का अविकल हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है—

'प्रिय फादर/मदर'

कुछ समय से यह देखा जा रहा है कि कुछ हिन्दी समर्थक संगठन सरकारी सेवाओं में उच्चतम स्थान अर्जित करने की दृष्टि से प्रवेश परीक्षाओं/प्रतियोगिताओ मे अग्रेजी जारी रखने का कड़ाई से विरोध कर रहे हैं। उनका मुख्य नारा यह है कि अंग्रेजी को आई० ए० एस०, आई० पी० एस०, आई० एफ० एस०, आई० ए० आर० एस०, इजीनियरिंग, एम० बी० बी० एस०, आदि से पूर्णतया खत्म कर उसकी जगह हिन्दी को अनिवार्य बना देना चाहिए।

यह बहुत गम्भीर स्थिति है और पब्लिक स्कूलों के अस्तित्व के लिए खतरा बन गई है।

ऐसा प्रतीत होता है कि ये संगठन अपने प्रयासों में सफल हो जाएंगे तथा हमारे पब्लिक स्कूलों और मिशनरी सस्थाओं के हितों तथा कल्याण के लिए बाधक सिद्ध होंगे।

आई० आई० टी० द्वारा संचालित इंजीनियरिंग परीक्षाओं से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने के बाद पब्लिक स्कूलों को बहुत भारी धक्का पहुंचा है। परिणामस्वरूप, जहां पहले आई० आई० टी० में हमारे ६४ प्रतिशत छात्र जाते थे, वहां उनकी संख्या घटकर मात्र ४३ प्रतिशत रह गई है। यदि वर्तमान स्थिति को और जारी रहने दिया गया तो भारत सरकार न सिर्फ प्रवेश परीक्षाओ से अग्रेजी की अनिवार्यता खत्म कर देगी बल्कि वह दिन भी दूर नहीं होगा, जब वह यू० पी० एस० सी०/ एस० एस० पी० और ऐसी ही अन्य शिक्षा सस्थाओं द्वारा संचालित परीक्षाए अग्रेजी माध्यम देने पर ही प्रतिबंध लगा देगी।

इसका हमारे छात्रों पर गम्भीर असर होगा क्योंकि वे बिना अंग्रेजी माध्यम के इस प्रकार की प्रवेश/प्रतियोगी परीक्षाओ में प्रतिस्पर्द्धा करने योग्य नहीं रहेंगे। इससे कान्वेंट शिक्षा व्यवस्था पर प्रभाव पडेगा तथा अतत हमारे पब्लिक/कान्वेंट स्कूल बद हो जाएगे। इसके बाद हमारे बच्चे भारत सरकार मे उच्चतम स्थान प्राप्त करने योग्य नहीं रह जाएगे। जबकि वर्तमान स्थिति में जो अधिकारी इन उच्चतम स्थानो पर हैं, वे हमारे अपने छात्र हैं, और केवल उनके कारण, ही जो हमारे आज्ञाकारी अनुयायी हैं, यू० पी० एस० सी० (सघ लोक सेवा आयोग) की परीक्षाओ में अग्रेजी माध्यम जारी है। यद्यपि ससद इन परीक्षाओं मे हिन्दी को अभिव्यक्ति के अनिवार्य माध्यम के रूप मे थोपने का प्रयास कर रही है।

यदि हमारे कान्वेंट शिक्षित अनुयायी, जो आई० ए० एस०, आई० पी० एस०, आई० एफ० एस० आदि हैं और अब सरकार में उच्चतम स्थिति पर है, वहा भविष्य में नहीं हुए तो हमारी समस्त सामाजिक व्यवस्था और कार्यक्रमो का अंत हो जाएगा और न केवल सरकारी सहायता वित्तीय स्वीकृतियां, भूमि और ऋण की सुविधाए आदि जो अब उपलब्ध हैं, बन्द हो जाएगी, बल्कि हम भविष्य मे बहुराष्ट्रीय सगठनों/कम्पनियो का सहयोग और आशीर्वाद भी नही प्राप्त कर सकेंगे।

ससद में अंग्रेजी हटाने के लिए बार-बार उठने वाले प्रश्न और हमारी अग्रेजी माध्यम लॉबी पर लगातार दबाव हमारे लक्ष्य और उद्देश्य को कमजोर कर रहे हैं। इसलिए सावधानीपूर्वक सोच-विचार के बाद अब हमारे सामने एकमेव यही रास्ता बचता है कि हम स्वयं को तुरंत ही इन दबावों के विरुद्ध तैयार करें और इसके लिए हमें अपने छात्रों में चेतना जगानी होगी कि वे हिन्दी माध्यम की वकालत करने वाले तत्वो के विरुद्ध अपनी आवाज उठाए। इसके लिए तरीकत से युद्ध स्तर पर कार्यवाई करने की आवश्यकता है, वरना हमें सम्भलने में बहुत देर हो जायेगी।

इस संबंध में आपसे प्रार्थना है कि आप हमें अपने छात्रों द्वारा वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए भविष्य के कदमों के बारे में अपनी सम्मति भेजें। कृपया यह भी हमें बताएं कि हमारे छात्रों द्वारा शुरू होने वाला संघर्ष गाँधीवादी दर्शन पर आधारित हो या अन्य रूप में आपके तुरन्त उत्तर की प्रतीक्षा में।

भवदीय—डैविड थामस, अध्यक्ष

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना में आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना मे 21.3 99 को दोपहर बाद 2 से 6.30 बजे तक आर्य समाज के प्रधान डा रमेश जी गुप्ता की अध्यक्षता में आर्य समाज स्थापना दिवस बडे ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। वेद मन्त्रोच्चारण के साथ इस समारोह का शुभारम्भ हुआ प योगराज जी शास्त्री ने हवन करवाया व स्वामी जी के जीवन से संबंधित भजन प्रस्तुत किए। आर्य समाज साबुन बाजार के मन्त्री श्री भीम सरीन व भीष्म वर्मा को यजमान का पद ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। विभिन्न सस्थाओ एव समाजो के अधिकारियो व सदस्यो ने पुष्प मालाओ द्वारा उनका हार्दिक स्वागत किया। आर्य समाज के परिश्रमी व सुयोग्य प्रधान डा रमेश गुप्ता जी ने मोमैन्टों द्वारा आर्य समाज दाल बाजार के वरिष्ठ नेताओं सर्वश्री राजेन्द्र जी दीवान श्री सत कुमार जी आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा आर्य समाज हबीबगज के प्रधान अथक परिश्रमी आर्य विचारधारा के प्रबल समर्थक श्री आशानन्द जी आर्य तथा श्रीमती विनोद गाधी आर्य समाज फील्डगज के प्रधान श्री चानन राम जी एव श्रीमती लीलावती कपूर आर वी स्कूल से श्रीमती राज रानी आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल (लुधियाना) के पूर्व प्रधानाचार्य व आर्य समाज के महामत्री ओम् प्रकाश टण्डन आर्य समाज के वरिष्ठ उपप्रधान तथा भारतीय जनता पार्टी लुधियाना के प्रधान श्री हरबस लाल सेठी उप प्रधान श्री अमरनाथ जी शर्मा जी शाम लाल जी व श्री गौरीशकर जी छिब्बर श्री नवदीप जी भारद्वाज कोषाध्यक्ष व श्री हीरालाल जी मोदगिल ने मुख्य अतिथि को शाले भेट कर सम्मानित किया। महर्षि दयानन्द का विचारधारा के लौह स्तम्भ आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उपप्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न ने आर्य समाज के प्रकाण्ड विद्वान् डा बाल कृष्ण जी श्री हरबस लाल सेठी व श्री कमल किशोर को शाले भेट कर सम्मानित किया। डा बाल कृष्ण जी शास्त्री ने अपने प्रभावशाली भाषण द्वारा महर्षि दयानन्द और उनके जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला और जन साधारण को उनके द्वारा दर्शाए गए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी श्री आशानन्द जी आर्य ने अपने भाषण में कहा कि यदि हम अपना जीवन सफलता पूर्वक व्यतीत करना चाहते हैं तो इसके लिए महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं पर चलना अति अनिवार्य है। नकोदर से आए प्रसिद्ध आर्य समाजी विद्वान् श्री हस राज जी आर्य ने सभी श्रोताओं को आर्य बनने की प्रेरणा दी। महामन्त्री श्री ओम् प्रकाश टण्डन ने आर्य समाज के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जो लोग अपने अतीत से प्रेरणा लेकर भविष्य के लिए अग्रसर होते हैं वे विश्व इतिहास मे अपनी अमिट छाप लगाते हैं। हमे आर्य समाज के समृद्ध व उज्ज्वल इतिहास से प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए। मुख्य अतिथि श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न ने कहा कि महर्षि दयानन्द पहले भारतीय बाल ब्रह्मचारी थे जिन्होने केवल भारतीय समाज एवं भारत देश के लिए ऐसा प्रण लिया और आजीवन राष्ट्र एव समाज कल्याणार्थ प्रयत्नशील रहे और इसी प्रयत्न में उन्होने अपना जीवन बलिदान कर दिया। आज आवश्यकता है कि उनकी शिक्षाओ पर चलने का प्रयत्न किया जाए।

अत मे आर्य समाज के महामन्त्री श्री ओम् प्रकाश जी टण्डन ने आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार आर्य समाज फील्ड गज आर्य समाज हबीब गज आर्य समाज अग्र नगर आर्य समाज फोकल प्वायंट एव विभिन्न लुधियाना की आर्य समाजो से आए अधिकारीगण एव सदस्यगणो का समारोह में पधारने के लिए धन्यवाद किया और विभिन्न सस्थाओ आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल दयानन्द पब्लिक स्कूल आर वी स्कूल के अधिकारियो प्रधानाचार्यों [illegible]कगण के पूर्ण सहयोग के लिए उनका धन्यवाद किया। तत्पश्चात् शान्ति पाठ हुआ और [illegible] हेतु ठहरने के लिए प्रार्थना की [illegible] अति उत्तम प्रबध था। कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

–ओम प्रकाश टण्डन महामन्त्री

आर्य समाज अजनाला का उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज अजनाला (जिला अमृतसर) का वार्षिक उत्सव बडे समारोह से 21.3 99 से 28.3 99 तक मनाया गया। इ। अवसर पर 28.3 99 को नव निर्मित यज्ञ शाला का उद्घाटन किया गया। इस यज्ञशाला को बनाने मे माता प्रकाशवती जी स्त्री आर्य समाज के सदस्य व पुरुष आर्य समाज के सदस्यो का विशेष सहयोग रहा।

28.3 99 को इस समारोह मे आर्य केन्द्रीय सभा अमृतसर आय समाज शक्ति नगर अमृतसर आर्य समाज लक्ष्मणसर आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर आर्य समाज माडल टाऊन अमृतसर के सभी अधिकारियो व सदस्यों ने भाग लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार जी शास्त्री व श्री सतीश सुभाष मण्डली के उपदेश व भजन हुए। अमृतसर से पधारे केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री दर्शन लाल जी श्री दिनेश जी सुपुत्र श्री सत्यपाल पथिक के भजन श्री नरदेव राज जी तथा दूसरे कई महानुभावो ने अपने विचार प्रकट किए।

अमृतसर की सभा आर्य समाजो ने आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया और उत्सव की सफलता के लिए भी पूर्ण सहयोग दिया। दयानन्द धाम अमृतसर से पधारी माता जगदीश रानी का भी पूर्ण सहयोग रहा।

इस अवसर पर आर्य समाज अजनाला की तरफ से अमृतसर से पधारे महानुभावो तथा कई स्थानीय महानुभावो को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम हर प्रकार से सफल रहा। अन्त मे बृहद ऋषि लगर हुआ। राम पथिक भिक्षु

संगरूर में रामनवमी पर्व

आर्य समाज मन्दिर सगरूर मे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जन्म दिवस (रामनवमी) दिनाक 25.3 99 दिन वीरवार प्रात 8 00 बजे से प्रात 10 00 बजे तक बडे ही उत्साह एव धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर सर्वप्रथम यज्ञ किया गया जिसमें मुख्य यज्ञमान श्रीमति माधुरी शर्मा मुख्याध्यापिका लाजपत राय आर्य कन्या विद्यालय सगरूर थी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री प दयानन्द कुमार जी आर्य पुरोहित आर्य समाज सगरूर थे।

यज्ञ के पश्चात महाशय श्री महेश कुमार जी प्रचार मन्त्री आर्य समाज सगरूर श्रीमती राजरानी जी अध्यापिका श्रीमती सीता गर्ग जी अध्यापिका आर्य कन्या विद्यालय सगरूर श्रीमती कमलेश रानी जी मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज संगरूर एवं आर एल मोंडला जी के रामनवमी पर बडे ही सुन्दर प्रभावशाली भजन हुए।

पश्चात श्रीमान मास्टर धर्मवीर जी द्वारा मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र जी के जीवन पर बडा हा सुन्दर ज्ञानवर्धक प्रवचन हुआ

रामशरणार्य

मोगा में रामनवमी

आर्य समाज मोगा मे दिनाक 25.3 99 दिन बृहस्पतिवार प्रात 7 से 9 बजे तक रामनवमी पर्व बडे ही हर्षोल्लास से मनाया गया। सर्वप्रथम हवन यज्ञ किया गया इसके पश्चात सत्सग भवन मे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र जी के जीवन पर पुरोहित जी ने एक [illegible] गीत गाकर सुनाया एवम् रामायण की पारिवारिक गाथाओं से प्रेरणा लेकर प्रत्येक व्यक्ति परिवार और समाज को व्यावहारिक रूप से इसे अपनाने पर जोर दिया। श्री प्रियतम देव जी एवम् डा विजय कुमार जी ने रामायण की मुख्य घटनाओ पर आलोकपात् करते हुए तत्कालीन राजनैतिक सामाजिक द्वन्द्वो का समाधान करने के लिए राम बनवास का कारण बताया। स्वामी सच्चिदानन्द जी ने श्री रामचन्द्र जी के जीवन वर्णन के साथ [illegible] रामायण के अन्य पात्रो क[illegible] सम्बन्ध मे भी अपने गहन चिन्तन को प्रस्तुत किया

शान्तिपाठ के पश्चात् सभा ने जलपान ग्रहण किया।

सत्य प्रकाश उप्पल
(मन्त्री)

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

अपने बच्चों को सुसस्कार सम्पन्न बनाने के इच्छुक अभिभावको को सूचित किया जाता है कि श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर (जिला जालन्धर) पजाब का नया सत्र एक जून से प्रारम्भ हो रहा है। छटी सातवीं तथा आठवीं कक्षा मे प्रवेश लेने के लिए इच्छुक विद्यार्थियो की प्रवेश पराक्षा सात चौदह तथा इक्कीस जून का होगा। यदि अपेक्षित छात्र सख्या सात या चौदह जून की परीक्षा में पूरी हो गइ तो इक्कीस जून को परीक्षा नहीं हागी। प्रवेशार्थियो को पूर्व परीक्षा की सफलता का प्रमाण पत्र (जिसमें जन्म तिथि भी अकित हो) लाना आवश्यक है। विद्याविनोद (समक्ष इण्टर) विद्यालकार (बी ए) कक्षाओ में प्रवेश चाहने वाले सम्बन्धित छात्र प्रमाण पत्रो सहित जुलाई के प्रथम सप्ताह में पहुचे।

इस गुरुकुल मे आवास शिक्षा एव भोजन की सुविधा नि शुल्क उपलब्ध है। अतिरिक्त व्यय छात्र को वहन करना पडता है।

आचार्य

लुधियाना में शहीदी दिवस

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे 23.3 99 को शहीदेआम भगत सिह जा राज गुरु जी सुखदेव जी का शहीदी दिवस आर्य समाज ने मनाया। इस अवसर पर श्री प सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री श्री रणवीर जी भाटिया मतवाल चन्द आर्य श्री आत्म प्रकाश जी आर्य महामन्त्री आर्य समाज बहन जनक रानी जी आर्या श्री राजेन्द्र जी आर्य श्री कुलदीप राय जी आर्य ने इन महान क्रान्तिकारी देश भक्तो की जीवनीयो पर प्रकाश डाला। इन शहीदो की कुर्बानी के कारण ही देश स्वतन्त्र हुआ यह शहीद आर्य समाज की देन थे। इन शहीदो के प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानन्द जी महाराज थे।

आज देश को सदाचारी चरित्रवान नेताओ की आवश्यकता है। सभी सज्जनो ने बहुत श्रद्धापूर्वक इन शहीदो को श्रद्धाजलि अर्पित की।

मतवाल चन्द आर्य (प्रधान)

आर्य समाज नया नंगल में वेद सप्ताह

गत वर्षों की भाति इस वर्ष भी स्थानीय आर्य समाज नया नगल ने वेद प्रचार सप्ताह 18 मार्च 1999 (बृहस्पतिवार) आर्य समाज के 124वें स्थापना दिवस से 25 मार्च 1999 (बृहस्पतिवार) राम नवमी तक बडी धूमधाम से समारोह पूर्वक मनाया गया इस वेद सप्ताह के शुभ अवसर पर आमन्त्रित आर्य विद्वानो मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान प विजय कुमार शास्त्री जी एक आर्य भजनोपदेशक प सतीश/सुभाष भजन मडली आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर से पधार कर उत्सव को चार चाद लगा दिये हवन यज्ञ आर्य समाज नया नगल के पुरोहित प सुशील कुमार आर्य जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम प्रति प्रात आर्य समाज में 6 00 से 7.30 बजे तक रविवार 21 मार्च प्रात 7 30 से 9.30 बजे तक सध्या प्रार्थना हवन यज्ञ भजन एव वेद उपदेशो का कार्यक्रम रहा।

बृहस्पतिवार 18 मार्च को नव सवत्सर एव आर्य समाज के 124वें स्थापना दिवस का विशेष कार्यक्रम रहा।

18 मार्च से 24 मार्च तक सायकाल 6 00 से 8 00 बजे तक अलग अलग परिवारो मे दैनिक यज्ञ भजन और वेद प्रवचनो का कार्यक्रम रहा। 25 मार्च (बृहस्पतिवार) रामनवमा वाले दिन प्रात 8 00 से 11 45 बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति भजनो और वेद प्रवचनो का कार्यक्रम हुआ जिसमे भाग लिया प सुशील कुमार आर्य जी प सतीश कुमार/सुभाष जी प कृष्णकात आर्य पुरोहित आर्य समाज नगल श्री आसकरन दास सरदाना जी प विजय कुमार शास्त्री जी। दयानन्द पब्लिक स्कूल के बच्चो एव अध्यापिकाओं तथा अन्य विद्वानो ने उत्सुकतापूर्वक उत्सव को सम्पन्न किया अन्त मे आर्य समाज का ओर से बाहर से आये हुए विद्वानो को सम्मानित किया और ऋषि लगर का प्रसाद बाटा गया और सब का धन्यवाद किया गया।

गुमान चन्द सालूजा (मन्त्री)

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामन्त्री सम्पादक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस/ऐलिमेंट प्रिंटर्स जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ ।

संवत् 1972949099 रजि० नं० NP 17504/58

वर्ष 49 अक 3, 5 वैशाख सम्वत् 2056 तदनुसार 15/18 अप्रैल 1999 दयानन्दाब्द 175 वार्षिक शुल्क 50 रुपये आजीवन 500 रुपये

त्याग एवं सेवा की प्रतिमूर्ति-महात्मा हंसराज

□ डा० रघुवीर जी वेदालंकार बी-२६६, सरस्वती विहार, दिल्ली-३४

अतीत को हमने देखा तो नहीं, किन्तु उससे सम्बन्धित एक कहानी सुनते हैं कि इस विराट् देश के प्रधानमंत्री महामतिमान् चाणक्य एक रात्रि में अपनी कुटिया में बैठे दीपक के प्रकाश में राजकीय कार्यों से सम्बन्धित कागज देख रहे थे। एक व्यक्ति उनसे मिलने आया। ज्यों ही आगन्तुक ने प्रणामानन्तर बैठ कर अपनी बात कहनी प्रारम्भ की, आचार्य चाणक्य ने उस दीपक को बुझा कर दूसरा दीपक जला लिया। आगन्तुक ने इसका कारण पूछा तो महामत्री ने जो उत्तर दिया, वह आज भी हमारा मार्ग प्रशस्त करने वाला है। आचार्य बोले : 'अब तक मैं राजकीय कार्य कर रहा था, इसलिए राजकीय दीपक जल रहा था। अब व्यक्तिगत वार्तालाप होगा, इसलिए उसे बन्द कर के निजी दीपक जलाया गया है।' क्या आदर्श था इस देश के प्रधानमंत्री का! काश, आज के राजनेता इसे अपने जीवन मे उतार पाते ।

अर्थ शुचिता–मेरे भारत महान के वर्तमान शासक तो महान व्यक्ति है। उनको इस प्रकार की छोटी-छोटी बातो पर ध्यान देने की फुर्सत ही कहा है! हां, स्वामी दयानन्द के एक शिष्य ने इसे अपने जीवन में उतारा। उनका नाम था महात्मा हंसराज । सुना है कि इनके पास लिखने के लिए स्याही की दो दवातें होती थीं। कार्यालय का कार्य एक दवात की स्याही से किया जाता था, तो निजी कार्य के लिए दूसरी दवात प्रयोग में लायी जाती थी। महात्मा जी ने अपना पूरा जीवन निःशुल्क पहले स्कूल को, तथा बाद में डी० ए० वी० कालेज को अर्पित कर दिया। त्याग का यह अनूठा उदाहरण था। इसी का परिणाम था कि प्रिंसीपल के पद पर लम्बे समय तक रह कर भी महात्मा जी न तो अपने लिए कोई कोठी ही बना सके, न ही २ गज भूमि उसके लिए खरीद सके।

ब्रह्मयज्ञ–महात्मा हंसराज महायज्ञ समझ कर ही दोनों समय सन्ध्या करने में नियमित रहे। इसके साथ ही प्रतिदिन स्वाध्याय करना भी उनका व्रत था। यही कारण था कि उनका जीवन संयमित, संतुलित एव ईश्वर परायण था। ऐसा ईश्वर भक्त ही अपने पुत्र बलराज को सरकार द्वारा मुकदमें में फंसा देने पर लिख सकता है : '*यदि तुम दोषी हो, तो तुम्हें दण्ड भुगतना चाहिए। यदि निर्दोष हो, तो शासन तुम्हें यों ही छाड़ दे। क्षमा मांगने का प्रश्न ही नहीं उठता।*' आज हमें महात्मा जी की नियम-परायणता तथा ईश्वर भक्ति से शिक्षा लेनी चाहिए।

आपके इस शुचि जीवन से उस समय के विख्यात सन्त स्वामी सर्वदानन्द जी इतने प्रभावित थे कि वे महात्मा हसराज से मिलने उनके घर चले जाते थे, जबकि अन्य व्यक्तियों के पास वे केवल मिलने के लिए नहीं जाते थे। निर्लोभ भाव से महात्मा जी ने २५ वर्षों तक अत्यन्त दक्षता पूर्वक कालेज के प्रधानाचार्य का पद सभाला तथा इसके बाद उन्होंने इस पद को छोड दिया। यद्यपि उस समय उनकी आयु ५० वर्ष से भी कम थी। आज तो लोग ६०-६५ वर्ष तक भी पदों पर चिपके रहते हैं। न केवल इतना ही, अपितु आयु पर्यन्त ही उनकी इच्छा इन पदों को छोड़ने की नहीं होती।

कुर्वन् एवेह कर्माणि– कालेज से सेवामुक्त हो कर महात्मा हसराज न तो निष्क्रिय बैठे, तथा न ही कहीं अन्यत्र सेवा करके धनोर्जन का यत्न किया, जैसा कि आजकल हम करते हैं। उन्होंने इस पद से मुक्त हो कर शेष सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज की सेवा के लिए ही अर्पित कर दिया। जिस समाज में इस प्रकार के त्यागी, तपस्वी, निःस्पृह व्यक्ति होते हैं, वही समाज उन्नति करता है । यही है वास्तव में आश्रम मर्यादा कि ५० वर्ष तक गृह कार्य, नौकरी आदि करके शेष जीवन को समाज एवं राष्ट्र की सेवा में लगा दे। आज समाज में इन मर्यादाओं का लोप होता जा रहा है।

शरीर से भी ममत्व नहीं– महात्मा हंसराज ने दयानन्द कालेज को जीवन दान केवल मौखिक रूप में नहीं दिया था, अपितु यह दान दे कर अपने शरीर पर से अपना मोह ममत्व, अधिकार भी हटा लिया था। यही कारण है कि कार्याधिक्य के कारण रोगी होने पर जब उन्हे स्वास्थ्य लाभ हेतु पहाड़ पर जाने का परामर्श दिया गया, तो वे बोले: 'यह जीवन मेरा नहीं है। इसे मैं कालेज को सौंप चुका हू। समर्पण का कैसा अनूठा उदाहरण है । आज तो अनेक जीवनदाता इस प्रकार की संस्थाओ एव राष्ट्र से सभी प्रकार की उन सुविधाओ का उपभोग करते देखे जाते हैं, जो उन्हें जीवन दान के बिना उपलब्ध न हो सकती थी।'

कथनी करनी एक–महात्मा जी की कथनी तथा करनी मे एक रूपता थी। आज मनुष्य के जीवन में इसकी महती आवश्यकता है । अपनी कालेज सेवा के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए भी महात्मा जी स्मरण किये जाते रहेंगे। मलकानों को पुनः हिन्दू बनाने में उन्होंने विशेष कार्य किया। इसी प्रकार कागड़ा, क्वेटा तथा बिहार के भूकम्प पीड़ितों की सेवा, राजस्थान तथा गढ़वाल के अकाल पीडितों की सेवा मे भी आपका अविस्मरणीय योगदान था। महात्मा हंसराज बहुआयामी व्यक्ति थे। आर्य समाज का कार्यक्षेत्र अति विस्तृत है । शुद्धि, सेवा, शिक्षा, प्रचार आदि ऐसे क्षेत्र हैं, जिन्हें साथ साथ ले कर चलने से ही आर्य समाज का स्थायी प्रभाव जनता में हो सकता है। ईसाई सेवा एवं शिक्षा के माध्यम से ही तो हमारे भाइयो को ईसाई बना रहे हैं। यदि हम म० हसराज जी जैसे सेवाव्रती बन सकें, तो इनका मुकाबला किया जा सकता है।

विवेकानन्द और ईसाई मिशनरियां

डा. कमल किशोर गोयनका

बासवा शताब्दा क इस अन्तिम ग म एक बार फिर भारत म गाए 'मशनिरियो' क धर्मान्तरण और उसस उपज सकट समस्याओ एव धम क मूलभूत स्वतत्रता को लकर एक राष्ट्राय बहस क स्थिति बन' भारत का स्वतत्रता स पूव स्वामा दयानन्द विवकानन्द महात्मा गाधा तथा अनक राष्ट्राय नताओ न धर्मान्तरण पर लम्बा बहस चलाया था और इसाइ पादरियो एव मिशनरिया ने इसमे भाग लिया था किन्तु धर्मान्तरण का आवग और दुराग्रह निरन्तर बढता रहा और स्वतत्रता क इन पचास वर्षो म यद्यपि कुछ नताओ और दशप्रमियो धर्मान्तरण स उत्पन्न समस्याओ की ओर सरकार का ध्यान दिलाया लाकन पहला बार प्रधानमत्रा अटल बिहारा वाजपया न इस पर एक राष्ट्राय बहस का आह्वान किया इसका सवत्र स्वागत होना चाहिए था लकिन आश्चर्य है कि यह प्रस्ताव कुछ नताओ और दलो को अप्रिय लगा और उन्होन इसका खुलकर विराध किया भारत जैस प्रजातात्रिक दश म किसा राष्ट्राय समस्या का समाधान राष्ट्राय बहस म हा निकाला जा सकता है लकिन कमजार लाग सदव बहस स बचत ह स्वामा विवकानन्द न भा यहा अनुभव किया था जब व अमरिका म हिन्दू धम का व्याख्या कर रह थ और इसाई मिशनरा तथा पादरा लागा स सवाद करना चाहत थ उन्होन 12 जनवरा 1895 का अमरीका स लिख अपन पत्र मे लिखा था मिशनरा लाग गाला बकना जानत ह बहस करना नहा विवकानन्द साहित्य खण्ड 3 पृ 37 य जब तक अमरका म रह इसाई मिशनारया न उनक साथ क ठार भद व्यवहार किया गाला दिया और अपशब्दा का प्रयाग किया तथा अनक प्रकार क आराप लगाए भारत म श्री वाजपया क प्रस्ताव पर उनका पाटा पर अनेक आराप लगाए जा रह ह लकिन बहस स बचन का नाति उनका दुबलता दिखाता

स्वामा विवेकानन्द सम्भवत पहल भारताय थ जिन्होन अमरीका तथा यूरापाय दशो म जाकर हिन्दू धम का आध्यात्मिकता सार्वभामिकता सहिष्णुता ईश्वरपरकता श्रष्ठता आदि का स्थापना क साथ ईसा मसाह इसाइ धर्म पादरियो एव मिशनारया पर खुलकर विचार रखा कि पथ्वी क सभा धर्म समान हैं प्रत्यक धम म इश्वर है (विवकानन्द साहित्य खण्ड 3 पृ 2389) इसलिए सभी धर्म पवित्र हैं यदि विभिन्न धर्म पथ न हो ता कोइ धर्म जीवित नही रह सकता (विवकानन्द साहित्य खण्ड 10 पृ 273) वे प्रश्न करत हैं कि पृथ्वा के महान धार्मिक वाद्य वृन्द म केवल एक हा वाद्य वृन्द क्या हो? इसलिए वे विश्व म सम्पूर्ण मानव जाति के एक हा धार्मिक विचार हो जान को दिवास्वप्न कहते हैं (विवकानन्द साहित्य खण्ड 10 पृ 252) और इस आधार पर वे कहत हे कि कवल कोई एक मार्ग ही मुक्ति का मार्ग नहा हो सकता ससार क विभिन्न धर्म पथ और धार्मिक सिद्धान्त एक ही ईश्वर मे विलीन होते हे (विवेकानन्द साहित्य खण्ड 1 प 276) यहा कारण ह कि प्रत्यक देश और पथ म पवित्रतम स्त्री पुरुष मिलत हैं अत व कहते हैं कि ईश्वर को गाड कहो अल्लाह कहो जिहोवा कहा या प्रम या आत्मा कहा वह एक है जो निम्नतम जन्तु से लेकर उच्चतम मनुष्य तक सब जावो का प्राणवान बनाता है विवकानन्द साहित्य खण्ड 4 पृ 233)

विवेकानन्द धर्म की सत्ता न ता मता म दखते है न पथो म और न तार्किक विवाद म वे धर्म का स्पष्ट करत हुए कहते ह कि धम का अर्थ ह ब्रह्मस्वरूपता का जान लेना उसका प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर लना और तद्रूप हो जाना (विवेकानन्द साहित्य खण्ड 3 पृ 248 व धम को ग्रन्थो एव मता तक परिमित नहा करत (विवकानन्द साहित्य खण्ड 3 पृ 323 क्योकि वे पात हैं कि कइ धार्मिक ग्रन्थो के कारण विवाद और रक्तपात होता रहा है वे कहत हैं कि ईसाई बाइबिल का सत्य मानते हैं और मुसलमान कुरान का और ऐसी स्थिति म सत्य क्या ह इसका विवाद बना रहता है। अत ग्रन्थ धर्म प्रमाण नहीं बन सकते (विवेकानन्द साहित्य खण्ड 2 पृ 279) और इसलिए हमें स्वाकार करना चाहिए कि इन ग्रन्थो स पर कोई ऐसा तत्व है जो अधिक सार्वभौमिक है जो ससार मे प्रचलित नीति सहिताओ म भी अधिक उत्तम है और जो विभिन्न राष्ट्रो के अन्त स्फुरण क बलाबल का निर्णय करन म समर्थ है (विवकानन्द साहित्य खण्ड 2 पृ 279)

सार्वभौमिक तत्व

विवेकानन्द इस सार्वभौमिक तत्व का खोज करत हैं और पाते है कि हिन्दू धर्म मे एसी सार्वभौमिकता विद्यमान ह वे मद्रास मे एक भाषण मे कहत हैं हमारा धर्म (हिन्दू धर्म) सार्वभौमि है यह इतना उदार इतना प्रशस्त ह कि य सब प्रकार क आदर्शो को आदर पूर्वक ग्रहण कर सकता ह वदान्त धर्म ही अपनी विशाल भुजाओ को फैलाकर सबको हृदय स लगा लेगा (विवेकानन्द साहित्य खण्ड 5 पृ 146) हिन्दू धम मे ही हमारा जातीयमान है हमारा जाताय जावन प्रवाह हे (विवेकानन्द साहित्य खण्ड 5 पृ 63) और अन्य पथा तथा धार्मिक विश्वासो क प्रति सहिष्णु (विवकानन्द साहित्य खण्ड 4 पृ 232 विवेकानन्द सन् 1896 म लदन मे एक वक्तव्य दत हुए कहत है कि हिन्दू धर्म विधमियो का कभा कष्ट नहा पहुचाता यह एक एसा दश ह जहा सब धम शान्ति ओर सद्भावाना क साथ रह सकत ह मुसलमान अपन साथ हत्या ओर वध लाए पर उनक आन स पहल शान्ति का शासन था इश्वर का सत्ता का अस्वाकार करने वाल जन भा सहन किए गए और व आज भा हैं भारत वास्तविक शक्ति नम्रता का उदाहरण उपस्थित करता हे (विवकानन्द साहित्य खण्ड 4 पृ 232) इस सहिष्णुता का कारण वे अनेक बार स्पष्ट करते ह भारत का धर्म एक व्यक्ति एक ग्रन्थ एक मत पर आधारित नहा है वह मूलभूत सिद्धात को लता है इसलिए व राम कृष्ण बुद्ध इसा मुहम्मद आदि सभा को इश्वर और महान अवतार मानते हैं (विवेकानन्द साहित्य खण्ड 7 पृ 193) हिन्दू धर्म का यह विशिष्टता हा उसे सार्वभौम बनाती है

विवेकानन्द अपनी धम यात्राओ के समय अनेक बार ईसा मसाह का ईश्वर महान गुरु तथा सन्दशवाहक होन का स्वाकार करत हैं व सन् 1900 म अमराका म ईशदूत ईसा पर लम्बा भाषण दत है और इसा पर लिखा पुस्तक का अनुवाद भा करत ह जब याशु क्रिश्चियन के बाद जासस क्राइस्ट हो जात हे ता व इस दिव्य स्फुरण कहते है और उन्ह ईश्वर का कोटि मे रखत ह (विवकानन्द साहित्य खण्ड 2 पृ 274 तथा खण्ड 7 पृ 193) लेकिन व कृष्ण बुद्ध और मुहम्मद आदि को भा इसी कोटि म रखत है और साथ हा प्रत्यक मनुष्य को भा क्योकि उनका दृढ मत हे कि यदि वे इश्वर पुत्र ह और अवतार हे तो हम भा वही ह और इसलिए हमें सकल्प लना चाहिए कि म पैगम्बर भगवान का सन्दशवाहक ईश्वर पुत्र हा नहा स्वय ईश्वर स्वरूप बनूगा विवकानन्द साहित्य खण्ड 7 पृ 93 उनक विश्वास है कि जो दिव्य स्फुरण तथा दिव्य ज्ञान इसा तथा मोहम्मद का हुआ था वह विश्व क किसा भा व्यक्ति का हो सकता ह इसलिए विवकानन्द इसा स पूर्व ईसा के बाद तथा भविष्य मे जन्म लेन वाले ईश्वराय अवतारा का सभा स्वाकार करत ह व इस इश्वराय पूजा ओर सम्मान का सीमाबद्ध नहा करना चाहत और प्रत्यक महापुरुष का अनन्त इश्वर की विभिन्न अभिव्याक्त कहत ह (विवेकानन्द साहित्य खण्ड 7 पृ 230)

विवकानन्द ईसा मसाहक महान उपदशा एव शिक्षाओ का बडे आदर क साथ चर्चा करते ह व बार बार ईसा के इन उपदशो का उद्धृत करत हैं प्रस्तुत रहा स्वर्ग राज्य अत्यन्त समाप ह जिनक अन्त करण पवित्र ह व धन्य ह गराबो को सब कुछ द दा और मेरा अनुसरण करा वे इसा क इन उपदशो म निहित प्रेम त्याग सदाचार आदि का शिक्षा का अमर एव पवित्र तथा ईश्वराय सन्दश मानत हे उन्ह प्रणाम करत ह (विवकानन्द साहित्य खण्ड 1 191 तथा खण्ड 8 पृ 3 34 एव 152) परन्तु व अमराका म भाषण दत हैं (क्रमशः)

पाञ्चजन्य से साभार

सम्पादकीय

महान तपस्वी महात्मा हंसराज

तप का जावन म बहुत बडा महत्व ह। बहुत स लोग अपने जीवन म तपस्या का धारण करत ह और उस तपस्या क द्वारा कुच्छ लोग परमपिता परमा मा का पाना चाहत ह इसक लिए वह कही जल मे खडे हाकर तपस्या करत ह कही एक टाग क भार खड होकर तप करते हे ता कही अपन चारा भार अग्नि जला कर तप करत है परन्तु वह फिर भा एसा तपस्याआ स परमा मा का नही प्राप्त कर सकत ओर कइ लोग धन सम्पत्ति एव एश्वय का पाना चाहत है ओर इसक लिए अपना नीद भी हराम कर लत ह परन्तु फिर भा कुच्छ प्राप्त नही हाता परन्तु कुछ लाग एसे भा होत ह जा अपन त्याग और तप म कवल अपना हा उद्धार न करक दश जाति व समाज का कल्याण कर जात ह उनम से हा एक थे महात्मा हसराज जी २ नवम्बर 1883 का महषि दयानन्द सरस्वती के देहावसान क पश्चात जब लाहोर म एक शोक सभा हुइ ता उसमे निश्चय किया गया कि महषि का स्मृति म उनकी भावनाओ क अनुकूल एक शिक्षा सस्था की स्थापना की जाय आर यही उन्ह स चा श्रद्धाजलि हागी। यह निश्चय 8 नवम्बर 1883 का जनसभा म हुआ और दयानन्द एग्ला वदिक स्कूल खोलन का निश्चय हुआ और बाद म इस आरम्भ कर दिया गया। 31 जनवरी 1886 का विधिवत रूप स दयानन्द एग्लो वदिक कालज की स्थापना हो गई। इस पकार क स्कूल व कालज का चलान क लिए किसी त्यागी तपस्वी ओर कमठ पढ लिख नोजवान की आवश्यकता थी इसके लिए महा मा हसराज जा जिन्हान उस समय प्रथम श्रणा म रह कर एम ए पास किया था आर जा किसा उचा सरकारा नाकरा का बडा आसाना से प्रास कर सकत थ उन्हान यह घाषणा कर दा कि व इस सस्था को अपना सारा जावन दत ह ओर वह निशुल्क जावन भर इसम अध्यापन का काय करग

यह घाषणा सुन कर बहुत स लोग स्तब्ध रह गय कि बिना कुछ लिए यह नाजवान हसराज किस प्रकार स इस सस्था का काय कर सकग क्याकि जावन निवाह क लिए प्रत्यक व्यक्ति का प्रत्येक वस्तु का आवश्यकता पडता ह आर सभा आवश्यकताए धन क द्वारा पूर्ण होती ह जब महा मा हसराज जा इस सस्था म निशुल्क पढायेगे ओर कोइ वेतन नहा लग तो एसी अवस्था म उनका व उनक परिवार का जीवन निवाह कस हागा परन्तु यह घाषणा महा मा हसराज जा न अपने भाई मुलखराज जा स विचार विमश करन क पश्चात का था उनक भाइ श्रा मुलखराज जा भा बड त्यागी तपस्वी व्यक्ति थ वह 80 रूपए वेतन लेते थ। उन्हान अपन वतन म स 40 रुपय प्रति माह श्री हसराज जा क निवाह क लिए दना स्वीकार कर लिया था इसलिए मा हसराज जा अपन जीवन निवाह की तरफ स निश्चिन्त थ जहा हम महा मा हसराज जा क त्याग ओर तप का चचा करत ह वहा हम श्रा मुलखराज जा क त्याग ओर तप का कभी भूल नहा सकत क्याकि वह जीवन भर अपना आधा वेतन महा मा हसराज जी क परिवार क निवाह के लिए उन्ह दत रह।

महा मा हसराज जा न जब दयानन्द एग्ला वदिक स्कूल व कालज का कार्यभार सम्भाला ता उसक पश्चात इस कालेज को चलाने के लिए उनक साथ कइ ओर कमठ ओर त्यागी तपस्वा अध्यापक जुड गय जिसस कालज केवल पजाब मे हा नही सारे भारत वष म प्रसिद्ध हो गया और प्रत्यक व्यक्ति का यह इच्छा होन लगी कि उसका पुत्र इस कालज ही म पढ कुछ हा दिनो मे इस कालज न बहुत उन्नति की और इसक साथ ही अन्य नगरा मे भा दयानन्द एग्लो वदिक स्कूल व दयानन्द एग्ला वदिक कालज खुलन आरम्भ हो गय। इन कालजो मे जहा सरकारी स्कूल कालजा की तरह शिक्षा दा जाती थी वहा इसके साथ साथ धामिक शिक्षा ओर सामाजिक शिक्षा व दशभक्ति की शिक्षा दी जाता था। दश का स्वतत्रता क लिए काम करने वाल नोजवान पर जब हमारी दृष्टि जाता ह तो उनम स कइ डा ए वी सस्थाओ की देन दिखाई पडत है। यदि उस समय म डी ए वा कालेज व डी ए वी स्कूलो की स्थापना न हाता तो हा सकता था कि हमारा दश इतना जल्दा स्वतत्र न होता। डी ए वी सस्थाओ व आय समाज का अन्य शिक्षा सस्थाआ न नोजवाना मे देश प्रेम की भावना व दश भक्ति की भावना पेदा की।

इन सस्थाओ ने सब से बडा काय यह किया ह कि उस समय हमार हमार दश म जा राजनीतिक धामिक व सामाजक परिस्थितिया चल रहा थी उनका बहुत प्रभावत किया। डी ए वा सस्थाआ म पढ नोजवान प्रत्येक दिशा मे काय करन लग जहा राजनातिक काय कइ नोजवान कर रहे थे वहा धामिक व सामाजिक काय भा कइ नोजवान न अपन हाथो मे ले लिय थे जिसक कारण अग्रजा का यह मनसूबा पूरा नहीं हा सका कि सार भारत का शीघ्र अति शाघ्र शिक्षा क माध्यम स इसाइ बना दिया जाय। क्याकि इन सस्थाआ न हिन्दुत्व का जारदार प्रचार किया आर सरकारा शिक्षा सस्थाआ म पढन क कारण स पढ लिखे नोजवानो का जा रूख इसाइयत का आर बढ रहा था उस आय शिक्षा सस्थाओ न राक दिया समाज सवा के कार्यो क माध्यम स जा इसाई मिशनरी अपना कुप्रचार कर क लोगो का इसाइ बना रह थ उन्ह राकन क लिए वहा आय समाज क कायकत्ताओ न भा मिल कर समाज सुधार का काय आरम्भ कर दिया अकाल पीडित भूकम्प पीडित व दूसरा दैवी आपत्तियो क आन पर आय समाज क कायकत्ता आग बढ कर काय करने लग इसस पूव इसाइ अकाल पाडित इत्यादि लोगा को अपन सवाभाव से प्रभावित कर क उनस अनुचित लाभ उठा रह थे इसक साथ हा जात पात व छूआछत का एक जाल सा हमार दश मे फला हुआ था उस भा इन सस्थाआ मे पढन वाल व्यक्तिया न ताड दिया क्याकि इन सस्थाआ म सभा जातिया क विद्यार्थी पढन लग और सबको समान शिक्षा दा जान लगा

प्रारम्भिक काल म हमारा डी ए वी सस्थाआ म जितन भा प्रिसापल अध्यापक व प्राध्यापक हुए ह सभा मे त्याग आर तप की बहुत बडा भावना था क्योकि उन सब के आदश महान तपस्वी महा मा हसराज जा थे उनक त्याग ओर तप का प्रभाव अन्य प्रिसापला अध्यापका व प्राध्यापका पर भा पड बिना नहा रहा। इसलिए कवल भारत म हा नहा सार ससार म डा ए वा सस्थाआ का नाम गूजन लगा आज भा भारत के अतिरिक्त कइ अन्य दशा म डा ए वा पब्लिक स्कूल व डा ए वा कालज चल रह हे परन्तु आज जब हम अपन अध्यापक व प्राध्यापक वग पर दृष्टि डालत हे ओर उनका पुरान अध्यापका व प्राध्यापको स मुकाबला करत ह ता उस अवस्था म आज हम दखग कि आज क अध्यापक वग म बहुत सारी त्रुटिया आ गइ ह ओर इसा कारण स शिक्षा का वह स्तर अब हमार डा ए वा स्कूल कालजो म नहा रहा जा पहल हुआ करता था। आज इन सस्थाआ के अधिकारा इस आर ध्यान द

19 अप्रेल 1864 को बजवाडा (हाशियारपुर) म महा मा जा का जन्म हुआ था प्रतिवष हम 19 अप्रल का महा मा जा का जन्म दिवस मनात ह

आज 19 अप्रल का सभा डी ए वा सस्थाओ म आर आय समाजा म महा मा हसराज जी का जन्म दिवस प्रतिवष का भान्ति मनात हुए हम इस दिन लखा जाखा करें कि 1886 स लकर 1912 तक महा मा हसराज जा डा ए वा कालेज के प्रिसापल रह। उस काल म हमारा सस्थाआ का स्तर केसा था कस प्राध्यापक व अध्यापक हात थ आर 1912 स लकर 1947 तक अथात् दश का स्वतत्रता तक कसा रहा आर 1947 स लकर 199 तक अब हमारा सस्थाआ का शिक्षा स्तर किस प्रकार का हे। इस पर सभा बुद्धिजाविया को व प्रबन्ध समितिया क अधिकारिया का विचार करना चाहिय। जब गम्भीरता स सारा स्थिति पर विचार किया जायगा ता पता चलगा कि हम शिक्षा क क्षत्र म आग तो बढ ह लेकिन आय समाज क सिद्धान्ता की दृष्टि स बहुत पाछ हट गए ह। यह ठाक ह कि हमारी आज की शिक्षा सस्थाआ क प्रिसापल अध्यापक व प्राध्यापक महा मा हसराज जी ता नही बन सकत परन्तु वह अपना शिक्षा सस्थाआ क स्तर का ऊचा ता कर सकत ह

आज हमारा शिक्षा सस्थाओ ओर सरकारा शिक्षा सस्थाआ म कोई अन्तर नही रहा। जब कि पहल बहुत अन्तर हाता था आज आवश्यकता हे कि हमारा अध्यापक प्राध्यापक वग व प्रिसीपल महानुभाव उस महान् तपस्वी त्याग की साक्षात मूति सरलता व सादगा क अवतार धन दालत सुख सम्पदा भाग एश्वय क महान् त्यागी महात्मा हसराज जा क जीवन स कुच्छ ता शिक्षा ग्रहण कर। उनका जावन एक खुला किताब ह जिसका पढन स हमे अपने जीवन का टटालन का अवसर मिलगा कि हम कहा तक उनके पद चिन्हो पर चल रहे ह।

धर्म देव आर्य
सह सम्पादक

प्रेस और पादरियों के [illegible]

पिछले दिनों ईसाइयों के बारे में [illegible] कर दिया है कि पश्चिमपरस्त भारतीय [illegible] प्रहरी संकेतपरस्त पादरी झूठ [illegible] हुए हैं। यहां हम उनके [illegible] झूठ [illegible] जो उन्होंने बहुत जोर-शोर से प्रचारित किया, [illegible] सामने आया तो वे अपनी खोह में दुबक गया।

झूठ न० 1
राजकोट मे बाइबले जलायी गई

देश क कुछ समाचारपत्रो मे यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि गुजरात क राजकोट जिले में जुलाई 1998 मे बजरग दल के कार्यकत्ताओ ने मिशन के एक विद्यालय म बाईबल का प्रतिया जलाया

सच यह निकला

राजकोट के आई पी मिशन गर्ल्स हाई स्कूल मे अध्यापकाओ न हिन्दू छात्राओ को बाइबिल मे रख कर परचा दिया और उस भरन क लिए कहा इस परचे मे लिखा गया था कि यीशु मरा मुक्तिदाता ह इस नात म कबूल करती हू और म विश्वास करता हू कि प्रभु याशु का मर पापो के कारण वधस्तम्भ पर मृत्यु हुई और मुझे न्यासा सिद्ध करन क लिए व तासर दिन सजावन हुए इसलिए मै उनको अपना व्यक्तिगत तारणहार स्वाकार करना हू जब छात्राओ क अभिभावको को यह बात पता लगा ता उन्होन विद्यालय जाकर उसका कडा विरोध किया फिर विश्व हिन्दू परिषद् से सम्पर्क किया परिषद् के विरोध का उक्त प्रकार स प्रचारित किया गया

झूठ न० 2
झाबुआ मे ननो से बलात्कार

समाचार छपा कि झाबुआ म नना स बलात्कार हुआ और बलात्कार करन वाल बजरग दल क कार्यकत्ता थ

सच यह निकला

ननो पर आक्रमण करन वाल वह क निवासी थे इन जनजाताय नाग' म अधिकाश इसाइ थ। वहा विश्व हिन्दू परिषद ओर बजरग दल का काइ अस्तित्व नहा है। इसक कुछ दिन बाद हिन्दुस्तान टाइम्स म सुर्खिया म छपा झाबुआ रिपोर्ट इन झज्जर याना हरियाणा क झज्जर म इसाई नना साथ वहा ना ना झाबुआ मे हुआ था

बाद म बिजनस एण्ड पालिटिकल आब्जवर क पत्रकारा का दल जब झज्जर पहुचा तो ननो स बातचीत मे उन्हे बताया कि उनके साथ बलात्कार या दुर्व्यवहार नहीं हुआ असली मुद्दा यह था कि वे नने सिलाई कढाई का जो केन्द्र चलाती थी उसमे सामान बेचने के मामले पर झगडा हुआ था।

झूठ न० 3
उड़ीसा मे आस्टेलियाई मिशनरी और उसके दो बेटो को जिन्दा जलाया

24 जनवरी को देशभर के समाचारपत्रो मे बडे बड शीर्षको म यह समाचार प्रकाशित हुआ कि आस्ट्रेलियाई मिशनरी और उसके दो बेटो को उडीसा के मनोहर पुर गाव मे जिन्दा जला दिया गया। ये हत्याए बजरग दल के कार्यकर्त्ताओ न की जिनका नेतृत्व दारा सिह कर रहा था।

एशियन एज ने स्टींस की पत्नी ग्लेडिस का बयान सुर्खियो मे छापा कि मेरे पति और पुत्रो का हत्या मे राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ का हाथ है

सच यह निकला

एशियन एज मे उक्त रपट प्रकाशित हाने के अगले दिन सभी समाचारपत्रो मे स्टींस की पत्नी ग्लडिस का बयान छपा मैं किसी का दोषी नहा ठहराती। जाच से पता चला कि हत्यारो का बजरग दल स कोई लेना देना नही था हत्या के आरोपी छह लोगो म स पाच के सम्पर्क किसी न किसी रूप म काग्रेस स रहे हैं। मुख्य आरोपी दारा सिह भी स्थानीय विधायक और राज्य सरकार म मत्री जयदेव जैना क काफा निकट रहा है

झूठ न० 4
बारीपदा मे नन से बलात्कार

6 फरवरी को राष्ट्रीय सहारा सहित हिन्दी अग्रेजी के सभी समाचारपत्रो ने मुखपृष्ठ पर छापा उडीसा म मयूरभज जिले के बारीपदा मे 30 वर्षीय एक नन क साथ अज्ञात बदमाशो ने कार मे बलात्कार किया य बदमाश महिलाओ का वेश धारण किए हुए थे। कार के बारीपदा कस्बे से बाहर निकलने पर नन को पता चला कि कार में महिलाओ के वेश में पुरुष हैं तो वह शोर मचाती इससे पहले ही बदमाशो न उसका मुह दबोच दिया। बैसिगा के पास चालक ने जब कार रोकी तो नन किसी तरह उनके चुगल से बच निकली

सच यह निकला

13 फरवरी के इडियन एक्सप्रेस और हिन्दुस्तान टाइम्स के अदर के पृष्ठ पर कोने मे छोटा सा समाचार छपा नन वाज नाट रेप्ड । इसी समाचार के अनुसार श्री राम चन्द्र मेडिकल कालेज कटक के फोरेसिक मेडिसीन एण्ड टोक्सीकोलाजी विभाग क एसोसिएट प्रोफेसर डा एन के मोहन्ती द्वारा तैयार चिकित्सा रपट मे कहा गया कि नन के साथ कोई बलात्कार नही हुआ ता।

झूठ न० 5
उड़ीसा मे दो ईसाइयो की हत्या

8 फरवरी के इडियन एक्सप्रेस मे मुख्य पृष्ठ पर छपा टू क्रिश्चियस किल्ड वन इन्ज्योर्ड इन उडीसा । उसी दिन के दैनिक जागरण सहित सभी अखबारो के मुखपृष्ठ पर यह समाचार सुर्खियो मे छपा कि उड़ीसा के कधामल मे अज्ञात हमलावरो ने गग कुटी के जगलो मे अपने तीन किशोर साथियो के साथ लकडा काटने गया एक ईसाई किशोरा के साथ बलात्कार का प्रयास किया गया और बाद मे उसकी तथा उसक साथ आए किशोरो मे से एक की पीट पीट कर हत्या करदी।

सच यह निकला

10 फरवरी को राष्ट्रीय सहारा न एक कालम का छाटा सा समाचार छपा ईसाई युवती व बच्चे की हत्या करने वाला ईसाई ही निकला । उक्त ईसाई युवती और बच्चे का हत्यारा कोई और नहीं उसका अपना ही रिश्तेदार था और वह ईसाई था।

झूठ न० 6
उत्तर प्रदेश के गाव मे अमरीकी समाज सेवी दम्पति के साथ दुर्व्यवहार

3 फरवरी को टाइम्स आफ इडिया के प्रथम पृष्ठ पर उक्त समाचार प्रमुखता से छपा जिसमे कहा गया कि इलाहाबाद म बजरग दल और हिन्दू जागरण मच क कार्यकर्त्ताओं की धमकियो के बाद अमरीकी समाज सेवी सिल्वेस्टर दम्पति ने बैपाटस्ट सेमिनरी म शरण ली। उन्हे धमकी दी गई था कि वे अपना स्कूल आर चिकित्सालय बन्द कर दें

सच यह निकला

उक्त समाचार देखकर सिल्वेस्टर दम्पत्ति दग रह गये और उन्होने इसका तुरन्त खडन किया जो अगले ही दिन 4 फरवरा का टाइम्स आफ इडया के पृष्ठ 8 पर दो कालम मे छपा। जान सिल्वेस्टर ने बताया था कि न ता वह कोई मिशनरी हैं ओर न हा उन्होने इलाहाबाद के बैपटिस्ट सेमिनरी मे शरण ली है इतना ही नहीं इलाहाबाद मे तो एसा कोई सेमिनरी है हा नहीं। डा० सिल्वेस्टर और उनको पत्ना हेलेन सिल्वेस्टर ने बताया कि व कभा एसोसिएटिड प्रेस के सवाददाता स मिले ही नहीं।

प्रेषक—श्री दयारामपोद्दार (रांची)

(पाञ्च जन्य के अक 28 फरवरी 1999 से साभार)

आर्य समाज स्थापना दिवस व रामनवमी पर्व

आर्य समाज जामनगर मे 18.3.99 को नव सवत्सर तथा आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया तथा दिनाक 25.3.99 तदनुसार चैत्र शुक्ला नवमी गुरुवार को आर्य पर्व रामनवमी मनाया गया। जिसमे प अरुण शास्त्री जी ने प्रासगिक प्रवचन करते हुए आर्य समाज की स्थापना के सम्बन्ध मे व मर्यादा पुरुषोत्तम राम चन्द्र जी के जीवन के सम्बन्ध मे अपने विचार जनता के सामने रखे।

इस अवसर पर श्री प्रेम जी भाई राणा ने भजन प्रस्तुत किए। कन्या विद्यालय की अध्यापिकाओं ने भी इन कार्यक्रमों में भाग लिया

धर्मवीर खन्ना

(मन्त्री)

134वें जन्म दिवस पर

महात्मा हंसराज के अन्तिम वचन

□आचार्य धर्मवीर विद्यालंकार आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार

सन् १९३८ के कुम्भ में महात्मा जी हरिद्वार गये थे उनके साथ आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कई उपदेशक और भजनीक भी गये थे ये सब मोहन आश्रम में ठहरे वेद प्रचार की अच्छी धूम रही लाला धनीराम भल्ला ने चतुर्वेद पारायण यज्ञ करवाया था

कुम्भ में महामारी सन् १९३८ के कुम्भ में पहले तो रोड़ी बाजार में भीषण आग लगी उसके बाद हैजे की महामारी फैली से अधिक व्यक्ति मर गये लोगों ने महात्मा जी से आग्रह किया कि वह तुरन्त लाहौर चले जाय परन्तु महात्मा जी को अपने से अधिक आश्रम में ठहरे उपदेशकों भजनीकों और यात्रियों की चिन्ता थी जब तक वे सब सकुशल वापस न लौट जायें तब तक हरिद्वार छोड़ कर चले जाने से उन्होंने दृढ़तापूर्वक इन्कार कर दिया तभी उन्हें अतिसार दस्त की शिकायत हो गई

मामूली बीमारी समझ कर महात्मा जी ने अतिसार की ओर विशेष ध्यान न दिया परन्तु अतिसार मामूली रोग नहीं है यह कष्टदायक तो हो ही सकता है प्राणघातक भी हो सकता है महात्मा जी निरन्तर दुर्बल होते गये

पहाड़ी जलवायु से लाभ लाला यशवन्तराय जी के निमन्त्रण पर वह कुछ समय के लिए सलोघड हिमाचल के सोलन जिले में चले गये वहां के जलवायु से स्वास्थ्य में सुधार हुआ शरीर में शक्ति आई परन्तु अतिसार में विशेष फर्क नहीं पड़ा सितम्बर में वह लाहौर लौट आये

अक्टूबर में पेट का रोग फिर बढ़ गया २५ अक्टूबर को प्रातः भ्रमण से लौटने के बाद उन्हें एकाएक उदरशूल हुआ साथ ही ज्वर भी हो गया हालत चिन्ताजनक हो गई डा विश्वनाथ ने इलाज शुरू किया महात्मा जी के पुत्र बलराज जी लाहौर में नहीं उन्हें तार द्वारा सूचना दी गई

महात्मा जी की बीमारी की खबर सारे आर्य जगत् में पहुंच गई लोगों की चिन्ता की सीमा न रही एक ओर तो अच्छे से अच्छे चिकित्सकों ने अपनी सेवाएं प्रस्तुत की दूसरी ओर उनके स्वास्थ्य के लिए जगह जगह प्रार्थनाएं की जाने लगी पुत्र बलराज और याधराज पुत्रियों और पुत्र वधुओं ने सेवा में कोई कसर रखी ३ नवम्बर को महात्मा जी के बड़े जामाता दीवान रामकृष्ण जी भी ईदर रियासत से विमान द्वारा आ गये लाला देवीचन्द लाला साइदास पंडित मेहरचन्द आदि आर्य नेता भी आ गये

महात्मा जी ने पं मेहरचन्द जी से कहा अच्छा निभ गई अच्छा गुजर रहा है कुछ तो कर्त्तव्य पूर्ण हुआ ही है

अभी और पूर्ण होगा पंडित मेहरचन्द ने हौसला बढ़ाते हुए कहा

नहीं अब तो अन्तिम बीमारी है महात्मा जी को भविष्य दिखाई पड़ रहा था

महात्मा खुशहालचन्द जी से वार्तालाप महात्मा खुशहालचन्द जी आर्य समाज के उत्सव के प्रसंग में जोधपुर गये थे ३ अक्टूबर को वहां से लौट कर महात्मा जी से मिले महात्मा हंसराज जी ने बातचीत में कहा रियासत जोधपुर में आर्य समाज का प्रचार ज्यादा जोर से होना चाहिए स्वामी दयानन्द इस रियासत को बहुत ऊंचा ले जाना चाहते थे

हैदराबाद दक्षिण के बारे में भी वार्तालाप हुआ महात्मा खुशहालचन्द जी ने बताया कि वहां आर्य समाज के प्रचार पर रियासत की ओर से प्रतिबन्ध है और आर्य समाज की ओर से सत्याग्रह की योजना बनाई जा रही है म हंसराज जी ने कहा पहले एक बहुत बड़ा प्रतिनिधि सम्मेलन आर्यों को कर लेना चाहिए जिसमें सब पक्षों और दलों के लोग हों तब कोई निश्चय करना चाहिए हिन्दू महासभा और कांग्रेस की भी सहानुभूति प्राप्त करनी चाहिए

महात्मा जी का स्वास्थ्य फिर गिरने लगा बख्शी टेकचन्द राय बहादुर दुर्गादास डाक्टर महाराजकृष्ण लाला मेहरचन्द महाजन आदि हितैषी लोग बहुत चिन्तित हो उठे तीनों पुत्रियां श्रीमति रत्नदेवी श्रीमति चन्दवी और श्रीमति धर्मदेवी भी पहुंच गई रोग कभी घटता प्रतीत होता फिर एकाएक अकारण ही बढ़ने लगता

कुछ पूछना है तीन नवम्बर को म खुशहालचन्द जी महात्मा जी के पास बैठे थे म हंसराज जी ने कहा आप से आर्य समाज के बारे में कुछ पूछना है

म खुशहालचन्द जी ने कहा आर्य समाज की ओर हम सब की इच्छा है कि आप ही आर्य समाज की नौका के खेवनहार बने रहें

महात्मा जी बोले इच्छा अच्छी है लेकिन मेरी आपकी इच्छा पूर्ण होनी है इच्छा तो केवल परमात्मा की पूर्ण होगी

अभी आपकी बहुत आवश्यकता है म खुशहालचन्द जी ने कहा

म हंसराज जी बोले होगी लेकिन जब समय आ जाता है तब आवश्यकता नहीं देखी जाती उसी की इच्छा पूर्ण होती इसलिए कुछ पूछना

उच्च व्यक्तियों के बलिदान से ही यह काम हो सकता म हंसराज जी कहते

आर्य समाजियों शान्ति के लिए कोई बात बताइये

बुरे या अच्छे कर्म ही अशान्ति और शान्ति का कारण बन सकते हैं या फिर प्रार्थना करने से शान्ति मिलती है म हंसराज जी ने कहा

नवम्बर को म खुशहालचन्द जी जब प्रातः काल महात्मा जी को देखने गये तो पता चला कि रात में डेढ़ बजे महात्मा जी ने उन्हें याद किया था मास्टर जस्साराम जी पास ही बैठे थे एक ओर महिला भी थी महात्मा जी ने कहा मास्टर जी आप जरा बाहर चले जाइये वह गये तो पूछा क्या कमरे में कोई और है है तो वह भी उठ कर चली जाय वह महिला भी चली गई

एकान्त चर्चा जब वे दोनों अकेले रह गये तब महात्मा जी ने कहा सांस का कोई भरोसा नहीं है

म खुशहालचन्द जी का दिल भर आया संभलते हुए उन्होंने कहा हम सब चाहते हैं कि आप रोग पर विजय प्राप्त करें

महात्मा जी के चेहरे पर तेज था बोले कामना अच्छी है लेकिन फिर भी कुछ बात कहता हूं

मुझे प्रसन्नता है कि प्रादेशिक सभा का काम तुमने संभाल लिया है वेद प्रचार का ध्यान रखने वाले तुम मौजूद हो भविष्य में भी चाहे योगाभ्यास छोड़ना भी पड़े तो भी वेद प्रचार का ध्यान रखना

मुझे यह भी प्रसन्नता है कि कालेज का काम अब अच्छा चल रहा है मेहरचन्द जी और गोवर्धनलाल जी अच्छे काम करने वाले हैं मुझे यह भी सन्तोष है कि विनकल कालेज भी ... जायगा परन्तु मुझे कुछ भी है

एक तो यह कि कालेज कमेटी में आर्य समाजी व्यक्ति कम हो रहे हैं हमें इस ओर ध्यान रखना चाहिए

दूसरा

तीसरा समाज के ... लिखा ... मिश्र ... अन्त ... कि बख्शी जी ... कर कालेज और समाज की सेवा करें

भटिण्डा स्कूल में आवश्यक कमरे बन जाय साधु आश्रम होशियारपुर और मोहन आश्रम हरिद्वार का ध्यान रखना रियासतों में वेद प्रचार की ओर अधिक ध्यान देना आवश्यक है **मेरा संस्कार विधि के अनुसार हो हो कोई फालतू या आर्य समाज विरुद्ध बात न हो** समाज का काम बराबर करते रहना मुझमें तो कोई शक्ति नहीं म खुशहालचन्द ने कहा

परमात्मा शक्ति देगा

आपने जो बात कही उसको मैं यथाशक्ति पूर्ण करूंगा आप कोई चिन्ता न करें

महात्मा जी मुस्कराये और ... रहे म खुशहालचन्द जी ने पूछा कुछ और

बस और क्या तुम्हें कुछ पूछना हो तो पूछ लो

आप किसी का नाम बताइये जिसे मैं आपका स्थान समझूं

बहुत कठिन है

अच्छा ... पर आप कोई मन्त्र पढ़े

इक्कीस बार मन्त्र पाठ ... मास ... महात्मा जी ने ... का ... इक्कीस बार

म खुश ... न

इक्कीस बार मन्त्र का पाठ किया

नवम्बर को ग्यारह बजे अन्तिम ... महात्मा खुशहालचन्द जी के अलावा वहां महात्मा जी का परिवार पुत्र पुत्रियां पौत पौतियां बहुएं ... दौहित्र महाराज कृष्ण डा विश्वनाथ लाला मुलकराज बख्शी टेकचन्द आदि उपस्थित थे महात्मा जी ने सिर और माथे पर से टोपी उतार कर एक ओर रख दिया एक हिचकी आई और उसके बाद श्वास बन्द हो गया

इस प्रकार एक गौरवशाली जीवन का अन्त हुआ

भारतीय भाषाएं कब तक अंग्रेजी की गुलाम बनी रहेंगी

□भानु प्रताप शुक्ल

हिन्दी केवल भाषा ही नहीं देश की जीवन का महत्वपूर्ण माध्यम भी है हिन्दी भाषा का प्रमुख उद्देश्य देश की एकता को मजबूत रखना है केवल हिन्दी ही देश का एक राष्ट्र के रूप में बनाए रख सकती है गांधी जी के स्वदेशी अभियान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने का काम प्रमुख मुद्दा था राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा 28 अक्तूबर 1995 विज्ञान भवन दिल्ली

पिछले एक हजार साल से हिन्दी हमारे देश की सम्पर्क भाषा रही है अमीर खुसरो गुरु नानक देव कबीर रहीम गुरु गोबिन्द सिंह और महात्मा गांधी आदि महापुरुषों ने हिन्दी की विरासत मजबूत करने में योगदान दिया केन्द्र सरकार हिन्दी के प्रसार के लिए कोई कसर नहीं छोडेगी गृहमंत्री शंकरराव चव्हाण 28 29 अक्तूबर 1995 विज्ञान भवन

अभी समाचार पूरा पढा नहीं था कि उसी के साथ साथ एक और समाचार शीर्षक छपा दिखाई दिया कि पुष्पेन्द्र की हालत ठीक नहीं क्या नहीं ठीक है या थी पुष्पेन्द्र की हालत ? उक्त समाचार कहते हैं कि हिन्दी भाषा सत्याग्रही पुष्पेन्द्र चौहान की हालत ठीक नहीं है विज्ञान भवन में राष्ट्रपति के सामने पीटे गए इस युवक का उपचार डाक्टर राम मनोहर लोहिया अस्पताल में हो रहा है डाक्टरों ने आंतरिक चोटों के कारण उसकी हालत को गंभीर बताया है

इसके अतिरिक्त लोक सेवा आयोग के बाहर हिन्दी भाषा (भारतीय भाषाओं) के लिए धरना दे रहे अखिल भारतीय भाषा संरक्षण संगठन के महासचिव राजकरण सिंह को भी धमकी दी गई है कि वह अपने तम्बू हटा लें अन्यथा उसका भी पुष्पेन्द्र जैसा हाल किया जाएगा और तम्बू उखाड कर फेंक दिया जाएगा। 21 नवम्बर की घटना और 30 अक्तूबर 1995 को प्रकाशित समाचार

क्यों पीटे गए पुष्पेन्द्र ? किसने पीटे और पिटवाया पुष्पेन्द्र को ? किसने धमकी दी और दिलाई राजकरण को कि यदि उसने तम्बू नहीं हटाया तो उसका हाल पुष्पेन्द्र जैसा ही कर दिया जाएगा ? क्या मांगा था पुष्पेन्द्र ने ? किसलिए सात आठ साल से सतत धरना दिए बैठे हैं भारतीय भाषा संरक्षण संगठन के युवक ? न राष्ट्रपति जी ने इसे जाना समझा और न केन्द्रीय गृहमंत्री श्री शंकरराव चव्हाण ने पुष्पेन्द्र को पीटा गया इसलिए कि वह हिन्दी सहित समस्त भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी की गुलामी से आजाद कराने की मांग कर रहा था राजकरण को धमकी दी गई और धमकी दी जा रही है इसलिए कि वह चाहते यह हैं कि हम भारत के लोग अपनी भाषा बोलें अपनी भाषा में अपना कामकाज करें भारतीय प्रज्ञा का सहज प्रस्फुटन हो यही तो राष्ट्रपति जी भी कह रहे थे उस दिन यही बात उस दिन गृहमंत्री जी ने भी तो कही थी इसी आशय का संकल्प भारतीय संसद में भी एक नहीं दो बार पारित किया है यही संकल्प लोकसभा ग्राम सभा और जनसभा में भी प्रत्येक चौदह सितम्बर को किया जाता है यह भारत की आजादी का मुख्य मुद्दा था देश की आजादी की लडाई अंग्रेजी ने नहीं हिन्दी सहित भारत की समस्त राष्ट्रीय भाषाओं ने लडी थी भारतीय संविधान में भी अंग्रेजी को अनन्तकाल तक चलने की कोई बात और व्यवस्था नहीं है सभी राजनीतिक दलों के नेता देश के तमाम बुद्धिजीवी और आम आदमी भी चाहता है कि हम अपनी भाषा बोलें अपनी भाषा में कामकाज करें ताकि देश के विकास में सभी की जानी समझी सहभागिता हो सके वोट की भाषा हिन्दी और भारतीय भाषाएं हैं तो राज की भाषा अंग्रेजी क्यों है और क्यों रहे ? समाज की भाषा कुछ और शासन की भाषा कुछ और क्यों हैं क्यों रहे ? यह भारत के सम्वादी परम्परा के विरुद्ध है इसके कारण सम्वादहीनता बढती है तो भी भारतीय भाषाओं को दरकिनार करके अंग्रेजी को संरक्षण और बढावा क्यों दिया जाता है ? लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता क्यों है? जबकि इसे देश की दो प्रतिशत आबादी भी नहीं जानती अंग्रेजी की आवश्यकता को अनिवार्य बनाने और मानने का कारण क्या है

आठ साल हो गए धरना देते गिडगिडाते मिन्नते करते लोकसभा के सभा कक्ष में कूद कर पुष्पेन्द्र को अपनी हड्डी पसली तुडवाते पुलिस की मार खाते जेल जाते तम्बू उखडवाते सर्दी गर्मी वर्षा मे ठिठुरते तपते और भीगते भूख की पचाते बीमारी से लडते अभावग्रस्त असहाय जिन्दगी जीते देश के तथाकथित नेताओं बडे लोगों विद्वानों सम्पादकों पत्रकारों और समाज विज्ञानियों की परिक्रमा करते ? क्या मिला इन युवकों को ? ये न अपनी रोजी रोटी के लिए संघर्ष और साधना कर रहे हैं और न ही किसी राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए ये न पुरस्कार प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं न कोई पद पाने के लिए इनका एक मात्र उद्देश्य है देशवासियों को सुसंस्कारित और परिष्कृत करना उनको उनकी देनदारियों से अवगत कराना

क्या यह अपराध है ? यदि हां तो फिर मानना होगा कि वह भी अपराध ही था और है जो उस दिन विज्ञान भवन में देश के प्रथम पुरुष महामहिम राष्ट्रपति जी और गृहमंत्री जी ने कहा और यदि उनका कथन या बयान अपराध नहीं हो तो भारतीय भाषा में संरक्षण संगठन के पदाधिकारियों और युवकों का यह अनुष्ठान और उनकी मांग अपराध क्यों है जोकि उनकी हड्डी पसली तोड दी गई? एक ही समान कार्य के लिए किसी का अभिनन्दन और अभिवादन और किसी को दण्ड क्यों ? यदि यह सच है कि हिन्दी से राष्ट्र की एकता है और यदि केवल हिन्दी ही भारत को एक राष्ट्र के रूप में बनाए रख सकती है तो हिन्दी अभी तक अंग्रेजी की दासी क्यों है ? तो फिर हिन्दी और हमारी राष्ट्रीय भाषाओं को लोक सेवा आयोग के गलियारे में भिखारियों की तरह अपमानित क्यों किया जाता है ? यदि हिन्दी भाषा को गांधी जी ने देश की विरासत माना था तो उनके वारिसों को अंग्रेजी के बाहुपाश में सुखानुभूति क्यों होती है

मैं यह जानता हूं कि मेरे इन प्रश्नों का उत्तर मुझे और देश को कभी नहीं दिया जाएगा अपने देश में मुंह और मन के बीच की अन्तर दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है अवसरवादिता हमारा दूसरा स्वभाव बन गई है गंगा गए गंगादास जमुना गए जमुनादास की प्रवृत्ति प्रबल हो उठी हमारे देश के नेता जो बोलते हैं उसे मानते नहीं करते नहीं और जो करते हैं उसको उनकी बोली से कोई तालमेल होता नहीं हिन्दी का मंत्र हो तो हिन्दी की प्रशंसा अंग्रेजी का मंत्र हो तो अंग्रेजी का गुणानुवाद प्रत्येक स्तर पर पाखण्ड हर क्षेत्र में छल कपट पाखण्ड की राजनीति और राजनीति का पाखण्ड समानार्थी हो गए हैं यह पाखण्ड छिपा हुआ नहीं है जगजाहिर है देश का हर खास और आम आदमी इससे परिचित भी है और इसका शिकार भी

हमारे देश के नेताओं को देश को तोडना होता है तो देश की एकता की बात शुरू कर देते हैं कि जब देश टूटे तो उसके टूटने का पाप या आरोप उन पर नहीं किसी और पर लगे या लगाया जाए बात सामाजिक समरसता और न्याय की करते हैं और जातिवाद का जहर फैलाकर समाज को परत दर परत तोडने का कोई अवसर नहीं चूकते सैद्धान्तिक स्तर पर सार्वजनिक जीवन की शुचिता पर प्रतिपादन और राजनीति के अपराधीकरण भ्रष्टाचार एवं कालेधन की भूमिका का विरोध करते हैं किन्तु व्यावहारिक स्तर पर काला धन एकत्र करते हैं भ्रष्टाचारी को और भ्रष्टाचार को बढावा देते हैं अपराधकर्मियों का पालन पोषण करते हैं देश की आंतरिक और बाह्य सुरक्षा की लेकर चिन्ता प्रकट करते हैं किन्तु उसे आग लगाने का कोई अवसर नहीं चूकते। लोकसभा में बंगलादेशी घुसपैठियों और उनके कारण सीमावर्ती राज्यों में बेहिसाब बढत आबादी के असंतुलन के कारण

(शेष पृष्ठ 7 पर

(पृष्ठ 6 का शेष)

उत्पन्न हो रहे खतरे पर चिन्ता व्यक्त करते हैं तो जनसभा मे घुसपैठियो की वकालत करते हैं पाकिस्तान द्वारा प्रेरित आतकवाद कश्मीर ही नहीं देश के अनेक भागो म अराजकता और अलगववाद की आग जला रहा है भारत सरकार सेकुलरी नेता और बुद्धिजीवी सभा जानते हैं कि इन आतकियों को पाकिस्तान मे प्रशिक्षण दिया जाता है यह सबको पता है कि ये कहा रहते हैं इनका पालन पोषण कौन करता है और इन्हे अपने घरो मे छिपाकर कौन रखता है किन्तु उस ओर ध्यान नहीं दिया जाता तो कवल इसलिए कि यह उनके पाखड का अग है यहा उनकी सत्ता राजनीति का मूलाधार ह वे देश की भूमि गवा सकते ह गवा दते है लेकिन वोट नहा गवा सकत ? गरीबा हटाओ का सवेदनशील वक्तव्य बीमारो मिटाओ का करुणा और बेरोजगारी स जुडी व्यथा का वहा कोइ अर्थ नहीं है इनको बनाए रखने से ही इनका स्वार्थ सिद्ध होता है गरीबी भूख बीमारी ओर बरोजगारी का बीज बोकर वोट का फसल काटना राजनीतिक नताओ का मूल चरित्र है ये मच पर स साम्प्रदायिक ताकतो से लडन और उन्हे मिटा देने के लिए एकजुटता का आह्वान करत हैं और मच क पीछ हिन्दू मुस्लिम ईसाई क बीच झगडा कराने का रणनीति बनाते हैं किसे सच माने दशवासी? नताओ द्वारा बोल और कह गए शब्दो को कि अपन अनुभव को ? दश के इन तथाकथित नेताओ पर विश्वास करत करते देशवासियो का अब अपन ऊपर हा अविश्वास हान लगा ह

देश का भाषा का लेकर राष्ट्रपति जी चिंतित और गृहमत्री जी दु खा हैं तो क्या ? ससद द्वारा पारित सकल्प का राष्ट्रपति जा स्वाकृति प्रदान क्यो नहा करत ? उसका क्रियान्वयन करने में गृहमत्री का परेशानी और बाधा क्या है ? जो कार्य 15 अगस्त 1947 और उसक बाद 26 जनवरी 1965 को हा जाना चाहिए था वह 26 जनवरी 1995 तक क्यो नहा हुआ या किया गया ? देश की भाषा को राजनीतिक रग किसने और क्यो दिया सखियो का सौत किसने बनाया ? भाषा के नाम पर देश को किसने बाटा था और वे ही अब भी देशमाता पर भाषा और मजहब का राजनीतिक खजर चला रहे हैं फिर भी महामहिम राष्ट्रपति जी को साधुवाद कि उस दिन उन्होने अपना भाषण बद करक भारतीय भाषा सरक्षण सगठन के युवको को अपनी बात कहने दी उन्होने उनकी बात सुनी तो इससे सरकारी अमला परेशान हुआ तो क्यो ? देशवासी अपनी बात अपने प्रथम पुरुष से नही कहे करेगे तो किससे कहे करेगे ? राष्ट्रपति जी की शालीनता को सरकारी अमले न अपने वहशीपन का शिकार बनाया तो क्या ?

दिल्ली के इडिया गेट क पास शाहजहा मार्ग पर स्थित सघ लोक सेवा आयोग के कार्यालय क सामन की पटरी पर धरने पर बैठे बालको क ही नहीं देश क दूसर लोगो के साथ भी समय समय पर और बार बार इस प्रकार का व्यवहार और छल प्रपच किया जाता रहता है देश के नामी गिरामी अधिकाश बुद्धिजीवी नेता पत्रकार कलाकार युवक और वृद्ध इन युवको के धरनास्थल पर जाकर अपन फोटो खिचवा चुके है समर्थन दे चुके हैं सकल्प ले चुके हैं लेख और सम्पादकीय लिखे जा चुके हैं कई बार महाभियान की धमकी दे चुके हैं लेकिन शब्दो के आगे कोई नहीं बढा इसस आगे कोई कदम नही बढता उठता तो क्यो ?

क्या इसलिए कि यह सचमुच सत्याग्रह है पूर्णतया राजनीति निरपेक्ष शात सत्याग्रह ? क्या इनका बात करने के लिए तभी बुलाया जाएगा जब ये युवक निराश होकर गुस्से म अपना हाथ ऊपर उठा लगे जब इनके हाथ मे स्मरण पत्र नहा आग्नेयास्त्र होगे ? भारत राष्ट्र की गरिमा और एकता अक्षुणता बनाए रखने की शातिपूर्ण साधना मे रत इन युवको को हिसा के मार्ग पर धकेलने का कार्य क्यो किया जा रहा है कि यदि तुम्हे अपनी बात को सुनाना है तो वाणी से नही बम से काम लो ? क्या अब तर्क का समय समाप्त हुआ और ताकत का समय आरम्भ हो गया है ?

देशवासी चिन्ता चिता पर बैठे हुए हैं। चिताओ और सकटों की कमी नहीं है। प्रत्येक सवेरा एक नया सकट लेकर आता है और प्रत्यक शाम एक गभीर समस्या का जन्म दता है चारो ओर स अब क्या हागा क्या होगा का आवाज सुनाइ दती है हर बात की तान अब इस सवाल पर हा टूटने लगी है कि क्या होगा इस देश का ? यह स्थिति चिताजनक भी है और आशान्वित करन वाला भी चिताजनक इसलिए कि यदि शीघ्र कोई समाधान या रास्ता दिखाई न दिया तो देशवासी निराशा का शिकार होकर कोई गलत और अराजक मार्ग अपना सकत है और आशा का कारण इसलिए है कि जब सभी चिन्ताए समान हो जाती हैं सभी का मन किसी एक बिन्दु पर केन्द्रित हो जाता है तो परिवर्तन होता ह है तभी परिवर्तन का दवता अवतरित होता है लोकमानस की कोख स तभी लोकनायक का जन्म हुआ करता है। ऐसी ही परिस्थितियो मे इस देश को कभी श्री राम गौतम बुद्ध चाणक्य शकराचार्य दयानन्द विवेकानन्द तिलक और गाधी मिले थे और जय प्रकाश नारायण लोकनायक कहलाये थे। लोकमन की व्यथा ही व्यवस्था का बदलने और सुधारने का आधार बनती आई है बढते पाखड पुष्पन्द्रो को दी जा रही यातनाओ और राजकरणो का दी जा रही धमकियो का यह सकत है कि अब किसी एस लोकनायक का उन्नयन होन का है जो बस अब बहुत हो चुका की घोषणा करके इस बिगडे को बनाएगा शर्त केवल यह है कि हम निष्काम न होकर निष्काम कर्म करते रहे हम परिवर्तन का निमित्त बने नियति नहा क्योकि वह व्यक्ति की नियतापन ही तो है जो हम सब का बाधने नहा दे रहा है जो अपने कहे का भी करने नहीं देता ओर यदि कोई पुष्पेन्द्र उस करना चाहता है तो उसका हड्डिया पसलिया तुडवा दता है यदि हम चाहते है कि दश म कोई सार्थक बदलाव हो तो यह प्रश्न अब किसी एक का नहा सबका होना चाहिए कि कब तक तोडा जाता रहेगा न्याय का हड्डिया और कब तक सहते रहेगे हम इसे मूकदर्शक की तरह ? यह समवत प्रश्न ही समाधान का कारण और कारक होगा कारक हो सकता है कारक होता आया है ।

(आर्य जगत् 3 दिसम्बर 1995 से साभार)

भटिण्डा में हवन यज्ञ

आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल भटिण्डा के प्रागण मे नया दाखला प्रारम्भ करने से पूर्व एक महायज्ञ का आयोजन किया गया हवन यज्ञ मान्य आम् प्रकाश जी वानप्रस्थी जी एव आचार्य सुनील कुमार जी शास्त्री पुरोहित के ब्रह्मत्व मे हुआ यह कार्यक्रम ला कुलवन्तराय जी अग्रवाल की अध्यक्षता म हुआ हवन यज्ञ के यजमान ला कुलवन्तराय जी अग्रवाल प्रधान श्री अशोक अग्रवाल मनेजर श्री अनिल कुमार जी श्री प्रेम भाटिया जी सपत्नीक एव श्रीमती शान्ति जिन्दल प्रिंसीपल आर्य गर्ल्ज सीनियर सकेण्डरी स्कूल बने

यज्ञोपरान्त श्रीमती शान्ति जिन्दल जी ने व श्रीमती कौशल्या ने मधुर भजन सुनाये भजनोपरान्त श्री हुकुमचन्द जी गायल श्री वजीरचन्द जी श्रीमती शान्ति शान्ति जिन्दल श्री मोहन लाल जी गग चौ० बाबू राम जी ने बोलत हुए बच्चो के भविष्य उज्जवल होने की कामना की श्री प्रेम भाटिया जी उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने कहा कि स्टाफ व बच्चे बधाई के पात्र हैं जिन्होने मेरी प्रार्थना पर यह हवन यज्ञ करवाया मनेजर अशोक जी अग्रवाल ने शिक्षा का बढाने एव मेहनत से कार्य करने का सकल्प दोहराया इस कार्यक्रम म श्री अजीत मित्तल श्री निहाल चन्द जी एडवाकेट श्री ओ पी मगला तथा आर्य समाज के मान्य सदस्य सम्मिलित हुए आदरणीय ला कुलवन्तराम जी अग्रवाल ने महर्षि द्वारा किए गए कार्यो की चर्चा करत हुए स्त्री शिक्षा दलितोद्धार के बारे म विस्तार म बताया उन्होन कहा हम ऋषि द्वारा दिखाये पथ पर चले प्रधान जी एव प्राचार्या जी ने सम्मिलित हुए सभा सदस्या विशेषकर श्री प्रेम भाटिया जी श्रीमती सन्तोष जी सुपत्नी अशोक जी स्टाफ एव बच्चो का हार्दिक धन्यवाद किया शान्तिपाठ स पूर्व वानप्रस्थी जी ने सभा का आशीर्वाद देते हुए कार्यक्रम का जय बुलवाई कार्यक्रम सम्पन्न होने पर ला कुलवन्तराय जी व श्री अशोक जी अग्रवाल का ओर से लाये गये लड्डुओं का प्रसाद वितरित किया गया

अशोक कुमार अग्रवाल मनेजर
आर्या गर्ल्ज सी से स्कूल भटिण्डा

आर्य समाज बठिण्डा में रामनवमी पर्व

आर्य समाज बठिण्डा के महर्षि दयानन्द सत्सग भवन मे राम नवमी का पर्व भी प्रम भाटिया जी प्रधान आय समाज का अध्यक्षता मे उल्लास क साथ मनाया गया। सवप्रथम हवनयज्ञ पूज्य ओम प्रकाश ज वानप्रस्थ' जी क ब्रह्मत्व मे हुआ हवन यज्ञोपरान्त श्रामता बीना रानी न प्रभु भक्ति क भजन बड ही मधुर कण्ठ स प्रस्तुत किए और सभा ने उनक पीच्छ भजन का दोहरायी का हवन यज्ञ के ब्रह्मा वानप्रस्थी जा न श्री राम नवमी पर्व के बारे मे विस्तार पूवक विचार दिये।

इस कार्यक्रम मे लाला वजीरचन्द जी ला कुलवन्त राय अग्रवाल श्री पी डी गोयल श्री अशोक जी अग्रवाल चौ० बाबू राम जी गर्ग श्री इन्द्रजीत जी श्री निहाल चन्द जी व गौरी शकर जी आदि महानुभाव उपस्थित थे मच सचालन श्री बिहारी लाल जी मगला न किया।

प्रधान आर्य समाज श्री प्रेम भाटिया जी ने इस पर्व के कार्यक्रम मे सम्मिलित होने पर सभी उपस्थित जनो का हार्दिक धन्यवाद किया इस पर्व पर आर्य समाज के भवन को बिजली की लडिया लगाकर सजाया गया।

आ० स० स्वामी दयानन्द बाजार, लुधियाना का उत्सव

आय समाज महर्षि दयानन्द बाजार दाल बाजार लुधियाना के वार्षिकोत्सव 1 जून से 6 जून 1999 के अवसर पर आय वीरदल का प्रशिक्षण शिविर लगाया जाएगा इस शिविर मे भाग लेने वाले सनिका की आयु 14 वष से ऊपर हो आर किसा आय समाज का प्रमाण पत्र साथ लाना हागा और अपना नाम मई 15 तक आय समाज महषि दयानन्द बाजार के पता पर भेजना होगा। आने वाले शिक्षार्थी को अपने साथ मौसमानुसार बिस्तर और कम्बा के बराबर लाठी कापी पैन्सल खाका नीकार सफैद बुनियान साथ लानी हागी बर्तन समाज से मिल जाएगे

इस शिविर मे शिक्षा लेने वाले युवक को पचास रुपये (50 प्रवेश शुल्क देना होगा। भाजन की व्यवस्था आर्य समाज का आर से होगी इस शिवर मे 50 युवक रखने हैं इस लिए जो नाम पहले आएग उनको पहले रखा जावेगा। —मतवाल चन्द

गुरुकुल आर्य माडल स्कूल का परीक्षा परिणाम

गुरुकुल शिल्प विद्यालय बठिण्डा मे स्थित गुरुकुल आर्य माडल स्कूल के विद्यार्थियो का वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित करने हेतु एक भव्य समागम का आयोजन किया गया। इससे पूर्व की यह समागम प्रारम्भ हो प्रात 9 बजे गुरुकुल यज्ञशाला मे हवन यज्ञ पूज्य ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी जी के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। श्री बिहारी लाल जी मगला मत्री आर्य समाज सपत्नीक इस यज्ञ के मुख्य यजमान रहे। हवन यज्ञ मे गुरुकुल क्षेत्र के अडोसी पडोसी स्कूल के विद्यार्थियो एव उनके माता पिता तथा आर्य समाज के सदस्य सम्मलित हुए। इस समागम की मुख्यातिथि श्रीमती ऊषा गोयल सुपत्नी श्री पी डी गोयल प्रधान आर्य माडल स्कूल एव श्री अशोक जी अग्रवाल मैनेजर आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल अध्यक्ष बने। श्रीमती शान्ति जिन्दल प्रिसीपल आर्य गर्ल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल ने विद्यार्थियो के वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित किए। उन्होने बच्चो एव उनके माता पिता को बधाई दी कि वह विद्यार्थी जो कि परीक्षा के समय गैर हाजिर रहे के अतिरिक्त स्कूल की सभी कक्षाओ का परिणाम शत प्रतिशत है उन्होने स्कूल का अध्यापिकाओ का धन्यवाद किया एव उनसे परामर्श किया कि वे स्कूल का दाखिला मेहनत से करे और विद्यार्थियो की सख्या बढाये। आज के इस समाज के अध्यक्ष श्री अशोक जी अग्रवाल ने पास हुए बच्चों को बधाई दी एव उन्होने प्रथम द्वितीय तृतीय आने वाले सभी कक्षाओ के विद्यार्थियो को पारितोषिक दिए। अधिकतर पारितोषिक पूज्य वानप्रस्थी जी के कर कमलो द्वारा दिये गये। इस स्कूल के बच्चे अधिकतर गरीब परिवारो के हैं इसलिए श्री अशोक जी अग्रवाल श्रीमती शान्ति जिन्दल श्रीमती ऊषा गोयल एव श्री प्रेम भाटिया जी ने बच्चो के लिए आवश्यकतानुसार नकद राशि प्रदान की।

प्रेम भाटिया मैनेजर

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामन्त्री सम्पादक द्वारा जय हिन्द प्रिटिंग प्रैस/ऐलिवेट प्रिटर्ज जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ ।

वर्ष 49 अक 4 12 वैशाख सम्वत् 2056 तदनुसार 22/25 अप्रैल 1999 दयानन्दाब्द 175 वार्षिक शुल्क 50 रुपये आजीवन 500 रुपये

मानव को 100 वर्ष जीने का परमात्मा का निर्देश

यजुर्वेद मन्त्र 40/2

ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

मानव बुद्धिपूर्वक ज्ञानपूर्वक और वेदानुकूल कर्म करते हुए 100 वर्ष जीने की इच्छा करे। ऐ मानव परमात्मा ने तुम्हारे बारे ऐसा ही निश्चय किया है। यह जीवन का सब से बड़ा गुण है कि वह अपने कार्य म सदा जुटा रहे। आलस्य प्रमाद को कभी भी आमन्त्रित न करें। जो मनुष्य सख्त परिश्रम करते हुए थक नहीं जाता समझ लो कि उसके परिश्रम मे कहीं न कहीं से त्रुटि है। ऐसा मानव न धन न प्रशसा और न ही ससार की वाह वाह प्राप्त कर सकता है। निठल्ला आदमी पुण्य नहा कमा सकता। उसका मन बुराई की ओर लगा रहेगा। कहा भी है (Evil doer lodge n he Satans Work shop)

पाप करने वाले शैतान के कारखाने मे निवास करते हैं। परमात्मा उसी का मित्र है जो वेदानुकूल कर्मों में अपना श्रम प्राप्त करते हैं। पुण्य कर्म करना परमात्मा की सच्ची ईबादत है और वह प्रभुभक्ति ईश्वर की ... है उसका शरीर हृष्ट-पुष्ट नहीं हो सकता। यदि शरीर भी हमारा निरोगता को प्राप्त होता है और दयावान प्रभु की दया के हम पात्र बनते हैं। कितने लाभ हैं परिश्रम करने के। परिश्रमी बनो और फिर दूसरों को भी बनाओ ऐसा परम पावन प्रभु का प्यार भरा सदेश है। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती दिन रात राष्ट्र के कल्याण के लिए सोचते रहते थे और उन्होने अपना सर्वस्व कुर्बान कर दिया मानव मात्र के कल्याण के लिए।

उनकी एक चमकती हुई मसाल हमारे सामने है और उनका आदेश है कि ससार के प्राणियो और अप्राणियो के हित के लिए जा कुच्छ भी तुम कुर्बान कर सकते हो करो। केवल परिश्रमी मनुष्य ही जो वेदानुकूल कर्म करते है परमात्मा के दर्शन के भागीदार बनते हैं। कर्म से जी चुराने वाले मनुष्य परमात्मा के भरोसे निठल्ले बैठे रहते हैं यह उनकी विचारधारा वेद विरुद्ध है राम भरोसे बैठे के पडा खाट पर सोय अनहोनी होनी नहीं होनी हो सो होए। परमात्मा ऐसे मनुष्य की कभी महायता नहीं करता। यह परमात्मा का हुकम है कि ऐ मेरे अमर पुत्रो और पुत्रिया काम करो काम करा और काम से जी मत चुराओ।

गीता में तीन प्रकार के कर्म बताए हैं।

1 स्वार्थयुक्त कर्म। 2 स्वार्थरहित कर्म। 3 अतिनीच कर्म Self'sh Actions, Selfless Ac u ns Condemnable Actions

स्वार्थयुक्त कर्म मानव के बन्धन का कारण बनते है। स्वार्थरहित कर्म मानव को मोक्ष का मार्ग दिखाते हैं और अति नीच कर्म मानव को अन्धकार से लिप्त योनियो मे धक्का देते हैं। इसलिए सदा निष्काम भाव से ही कर्म करने चाहिए और प्रत्यापकार की भावना कभी मन मे न आवे जब हम शुभ कर्म करे। परमात्मा ने वेद के भीतर आदेश किया है कि मानव का कम से कम 100 वर्ष की आयु तक जीना चाहिए।

मनुष्य मे सब से बडा चिन्तक्षाभ मृत्यु का डर है परन्तु जब वेदानुकूल जीवन बिताना आरम्भ कर दे और ब्रह्मचर्य का पूर्ण रूप से पालन करे तो वह मौत का चुनौती दे सकता है। अथर्ववेद मे कहा है

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमोपाघ्नत।

ब्रह्मचर्य के प्रताप से देवताओ ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की। वेद इस दलील की पुष्टि करता है कि मानव की आयु 100 वर्ष से ऊपर भी हा सकती है। जो लोग इस विचार धारा को मस्तक मे लिए बैठे हैं कि आयु न लम्बी हो सकती है और न ही छोटी हा सकती है वह लोग वेद विरुद्ध दुनिया मे रहते हैं। मानव हमेशा स्मरण रखे कि जिन सिद्धान्तो और साधना का परमात्मा ने वेद मे आदेश दिया है यदि उनको मन वचन और कर्म से अपनाया जाए तो मानव सो वर्ष से ऊपर जीवन का उपभोग कर सकता है। यह वेद का निर्देश है कि मनुष्य अकाल मृत्यु को प्राप्त न हो। जो मनुष्य वेद मे दिए गए साधनो को नहीं अपनाता है उनका कुसमय मरना सम्भव है।

हम इस ससार मे आए हैं केवल खाने पीने के लिए नहीं अपितु उतना ही खाए जिससे जीवन यात्रा मे विघ्न न पड़े और जीवन काल मे बड़े बड़े श्रेष्ठ कर्मों की झडी लगा दे। अश्रेष्ठ कर्म करने का कभी स्वप्न भी न ले। नित्यप्रति हम ऐसे कर्म करे कि जिससे हमारे परिवार को समाज को आत्मा को सन्तुष्टि मिले और हमारा राष्ट्र उन्नत हो। वेद कभी भी आदेश नहीं करता कि हम दु ख भरा और धन रहित जीवन व्यतीत करे। वेद तो यह उपदेश करता है कि मानव तू 100 हाथो से कमा और 1000 हाथो से बखेर। धन जीवन चलाने के लिए बडा आवश्यक है पर शर्त यह है कि हमारे धन कमाने के साधन प्रशसनीय हा कुसाधना से धन को एकत्र न करे।

गीता मे भी श्रेष्ठ कर्म करने का ही आदेश है। फल की इच्छा का बिल्कुल त्याग दा। स्वय ऐस कर्म करा और दूसरो से भा कराआ तब हमारे कर्म निष्काम हागे बाल गगाधर तिलक जा ने जा गीता रहस्य पुस्तक लिखी है उन्हाने उम मे ऊपर लिखे शब्दो पर बहुत बल दिया है। इससे आप कर्म का निष्कामता का अच्छी तरह समझ गए हागे।

कुछ लोगा ने कर्मों के त्याग को (Abandonmen of A on. का सन्यास से मिला रखा है परन्तु जरूरत इस बात को समझने की यह है कि हम कर्मों का त्याग न करे परन्तु कर्मों के फल का त्याग करे। गीता तो हमे पुकार पुकार कर कह रही है

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गो ऽस्त्वकर्मणि॥ गीता 2 |47

तेरा कर्म करने मे ही अधिकार हो फल मे कभी नहीं तू कर्मफल की वासना वाला भी मत हा। तेरी कर्म न करने मे भी प्रीति न हावे तीन नित्यप्रति कर्मों पर भगवान कृष्ण जी ने बहुत बल दिया है जो वेद के आधार पर हैं।

यज्ञ दान तप कर्म न त्याज्य कार्यमेव तत्।

यज्ञो दान तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम॥ 18/5

यज्ञ दान और तप रूप कर्म त्यागने योग्य नहीं है यह करना कर्त्तव्य है। यज्ञ दान और तप बुद्धिमान पुरुष को पवित्र करने वाले हैं।

फिर भगवान कृष्ण जी ने और कहा

एतान्यपि तु कर्माणि सङ्ग त्यक्त्वा फलानि च।

कर्त्तव्यानीति में पार्थ निश्चित मतमुत्तमम्॥ 18 |6 ॥

(शेष पृष्ठ 2 पर)

योग से मधुमेह दूर करें

☐ श्रीमती डॉ [illegible] गुप्त एम. ए (योग), [illegible], नई दिल्ली

मधुमेह से ग्रसित लोगों की सख्या बींसवी सदी में विज्ञान की उन्नति के साथ निरन्तर बढ रही है। इसका कारण साधारण रूप से मालूम नहीं है। मीठा खाने से मधुमेह होने का भय लोगो के दिलो मे अधिक घर कर रहा है। इसलिए इस भय के कारण लोग मीठा खाना कम कर रहे हैं।

कारण–हमारे शरीर मे आमाशय तथा छोटी अन्त के बीच अग्नाशय नामक का हारमोन स्रावित करता है। रक्त मे शरीर की आवश्यकता के लिए एक निश्चित मात्रा मे ग्लूकोज को शरीर सस्थान हर समय रखता है। जैसे ही वह मात्रा बढती है इसुलिन निकलती है बढी हुई मात्रा ग्लाइकोजन की मासपेशियो में जमा रहती है जैसे ही ग्लूकोज की मात्रा शरीर क्रियाओ मे खर्च होने से रक्त में पहुचती है। यकृत की ग्लाइकोजन दूसरे हारमोन के स्रावित होने पर ग्लूकोज मे बदल जाती है। किसी भी कारण से यदि इसुलिन स्रावित होनी बन्द हो गई तो मधुमेह का रोग आरम्भ हो जायेगा क्योकि भोजन मे लिया कार्बोहाईडेट पचने के बाद ग्लूकोज में बदल जायेगा छोटी आत इसको चूसकर रक्त में मिला देगी। ग्लूकोज की रक्त मे मात्रा बढ जायेगी। इसुलिन के स्रावित न होने पर बढी ग्लूकोज की मात्रा शरीर के रक्त के साथ चक्कर लगाते हुए वृक्क में पहुचेगी वहा अवशिष्ट पदार्थों के साथ छन जायेगी और पेशाब द्वारा शरीर से बाहर निकल जायेगी। इस को हम मधुमेह का रोग कहते हैं।

इसुलिन स्रावित न होने के कारण विज्ञान के युग ने हमारी सुविधाओ को बढाया है । जीवन कार्यों मे हम शरीर का काम कम और मशीनो का अधिक उपयोग करते हैं भोजन करते समय शरीर आवश्यकता का कम जिह्वा के स्वाद का अधिक ध्यान रखते हैं। शरीर से काम कम और शरीर के लिए तथा गरिष्ठ भोजन अधिक लेने के परिणाम से पेट बढ जाता है पाचन तन्त्र मे वसा जमा होना शुरू हो जाती है। अग्नाशय की क्रियाशीलता धीरे धीरे कम होकर बन्द हो जाती है। इसुलिन निकलनी बन्द हो जाने से मधुमेह का रोग आ घेरता है।

परिणाम–मधुमेह से पीडित आदमी चाहे स्टार्च (गेहू चावल आलू आदि) खाये या गुड शक्कर अमूर आदि मीठी चीजें खाए जल्दी या देर से ग्लूकोज में बदल जाती हैं। रक्त मे मिलकर वृक्क द्वारा छनकर शरीर से बाहर आती हैं। ऐसे व्यक्ति के शरीर में क्यो रक्त में कुछ न होने के कारण जैसे ग्लूकोज की मात्रा शरीर कार्यों में खर्च रक्त मे कम होनी भूख जोर से लगती है कुछ खाने को न मिलने पर चक्कर आ सकता है।

दूसरा कारण है–चिन्ता मानसिक चिन्ता का शरीर के अगों तथा क्रियाओं पर बुरा प्रभाव पडता है। अधिक चिन्ता के कारण जो मस्तिष्क शरीर की क्रियाओं को नियान्त्रत करता है तथा टूट फूट की मुरम्मत करता है अपना काम चिन्ता मे व्यस्त रहने के कारण कर नहीं पाता। इसका दुष्परिणाम शरीर के किसी अग पर क्रिया पर पडता है। मधुमेह के रोगी पर चिन्ता का प्रभाव अग्नाशय ग्रन्थि पर पड सकता है। इसके दुष्परिणाम से इसुलिन निकलनी बन्द हो सकती है और मधुमेह का रोग हो सकता है।

सावधानियाँ तथा उपाय–यदि पेट बढ गया है तो कुछ योगसन तथा व्यायाम क्रियाए आरम्भ करनी चाहिए जो पेट पर प्रभाव तथा दबाव डाल। ऐसे व्यक्ति को प्रात साय एक समय तेज गति से जितना सम्भव हो टहलना चाहिए यदि चलने मे कठिनाई हो तो लेटकर टागो को शरीर के 60 अंश पर उठाकर जैसे साइकल चलाते समय टागो की गति होती है चलाना चाहिए। अर्द्धमत्स्यन्दि्र आसन मरीच्यासन से पेट पर दबाव पडता है। मयूर आसन से भी इसी प्रकार का प्रभाव होता है इसलिए मधुमेह के रोगी के लिए अच्छे हैं इसके साथ उष्ट्रासन पश्चिमोत्तानासन सर्पासन शलभासन धुनरासन चक्रासन आदि आसन जिनमे पेट मुडता है या खिचाव आता है करने से लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं।

प्रात साय 10 15 लम्बे गहरे श्वास लेना जिसमें सास अन्दर आते समय पेट फूलता है तथा बाहर निकलते समय सिकुडता है यह लाभकारी है। एक दो मिनट अग्निसार क्रिया करना अच्छा है।

कपाल भाँति नाडी शुद्धि करना भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यदि चिन्ता के कारण से अग्नाशय ग्रन्थि काम करना बन्द कर दे तो उसमें ध्यान करना उपयोगी रहता है।

मदिरा पीना घोर पाप है

☐ श्री पं. [illegible] निर्भय, [illegible], [illegible],
जिला, [illegible] ([illegible])

सुख का पथ मैं बतलाता हूं, सुनलो बात बहुत प्यारी।
मदिरा पीना घोर पाप, मानो बात हमारी ।
इसको सराब भी कहते हैं, वजन हुआ है पानी ।
अपार खराब मनुष्य की करती है, कहते हैं ज्ञानी ।।
बड़ों-बड़ों का नाश किया है, मदिरा नाश निशानी ।
इस पापिन से बचो, बचाओ, क्यों मिटने की ठानी ।।
दूध, दही पीओ, घी खाओ, बनो वीर, ब्रह्मचारी।
मदिरा पीना घोर पाप है, मानो बात हमारी।।
इस पापिन मदिरा को जिसने, अपने गले लगाया।
पद करके इतिहास देख लो, वह न बचने पाया।
राजाओं का, विद्वानों का, इसने किया सफाया।
जिसने मदिरा गले लगाई, उसका वंश मिटाया।।
इस मदिरा ने नष्ट किए, रावण से बलधारी।
मदिरा पीना घोर पाप है, मानो बात हमारी ।
यादव थे विख्यात जगत में, बल, विद्या के स्वामी।
श्री कृष्ण, बलराम, भक्त थे, जगदीश्वर के नामी ।
सात्यकी प्रद्युम्न वीर प्रतिष्ठित थे, बलशाली ।
जिनका सुनकर नाम कांपते थे, पापी, छलबलशाली।।
मिट गए, यादव मदिरा ने जो थे योद्धा भारी,
मदिरा पीना घोर पाप है, मानो बात हमारी ।।
मुगल मराठे, राजपूतों के, जग में ठाठ निराले।
महा पराक्रमी, बलशाली, प्रण पर अड़ने वाले।।
दुनिया में थी धाक, वीर थे, बेसमझ मतवाले।
वीरों की केसर के लोरियां, माताओं ने पाले ।।
मदिरा ने बर्बाद किये थे, महावीर उपकारी,
मदिरा पीना घोर पाप है मानो बात हमारी ।।
अब भारत के युवक-युवतियों, मदिरा पीना छोड़ो।
जो मद्यप, मांसाहारी हैं, उनसे नाता तोड़ो।।
जीवन सफल बनाओ प्यारो ? प्रभु से नाता जोड़ो।
चरित्रहीन डाकू, गुण्डों के, हे वीरो? मुख मोड़ो ।।
[illegible] निर्भय बन जाओ, वेदों के प्रचारी।
मदिरा पीना घोर पाप है, मानो बात हमारी ।।

(पृष्ठ 1 का शेष)

हे पार्थ यह यज्ञ दान और तप रूप कर्म और भी सम्पूर्ण श्रेष्ठ कर्म आसक्ति को और फलो को त्याग कर करने चाहिए ऐसा मेरा निश्चय किया हुआ उत्तम मत है।

ऊपर लिखी हुई (Discourses) वार्तालाप से यह सिद्ध हो गया कि मानव की आयु घटती बढती रहती है। यदि शरीर स्वस्थ है और फिर इस को वेदानुकूल इसकी रक्षा (Maintenance) नहीं की जाती भोजन सात्विक नहीं है ब्रह्मचर्य का पालन नहीं ब्रह्ममुहूर्त में उठना नहीं है यज्ञ दान और तप करना नहीं है तो फिर यह मानव शरीर बहुत देर तक नहीं चल सकता फिर अकाल मृत्यु अवश्यम्भावी है। यदि हमारा जीवन वेदानुकूल है तो हम 100 वर्ष से अधिक भी जीवन का उपभोग कर सकते हैं यह सब कुछ हमारे हाथ में है (Our Future is in our own Hands)

परमात्मा ने तो म्हारे कर्मों का फल देना है जैसे कर्म वैसा फल। यह मानव को स्मरण रहे कि जो भी नये काम का प्रारम्भ करे ईश्वर स्तुति प्रार्थना और उपासना के आठ मन्त्रों का उच्चारण अवश्य करे। यहा तक कि परिवार का कोई सदस्य भी दो चार दिनो के लिए घर से बाहर जाये तो जाने से पहले परिवार के सब सदस्य ऊपर उक्त 8 मन्त्रों का उच्चारण जरूर करें। इससे बाहर जाने वाले को और परिवार के सब सदस्यो को सुख शान्ति प्राप्त होगी ऐसा मेरा मत है।

सम्पादकीय...

गुरुकुल कांगड़ी पुण्य भूमि का उत्सव सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब (रजि) द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगडी प्राचीन परिसर कांगड़ी ग्राम हरिद्वार में स्थित है जिसको स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने स्थापित किया था। स्वामी जी का सपना था कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति शुरू की जाये और इस के लिये उनको ऐसी जगह की तलाश थी जो शहर से दूर हो और गगा नदी के किनारे पर हो। अत में स्वामी जी के सम्पर्क मे चौधरी अमन सिंह जी आये जो स्वामी जी से प्रेरित होकर के कहने लगे कि मैं गुरुकुल की स्थापना के लिये आप को अपनी जमीन देने के लिये तैयार हूं। चौधरी अमन सिंह जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी 1400 बीघे भूमि गुरुकुल की स्थापना के लिये दे दी। इसके पश्चात स्वामी जी ने गुरुकुल का शुभारम्भ किया और सर्वप्रथम वहा पर कुछ झोपडिया डाल कर 34 ब्रह्मचारियों के साथ गुरुकुल आरम्भ कर दिया और धीरे-धीरे यह सख्या 300 तक बढ़ गई। स्वामी जी ने अपने जीवन काल में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की स्थापना की और वहा पर ब्रह्मचारियों को गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आधारित शिक्षा दी गई। इस गुरुकुल को पूज्य महात्मा गांधी जी भी देखने के लिये गये। 1924 में गगा नदी में भीषण बाढ आ गई। जिसके कारण गुरुकुल प्राचीन परिसर से हटा कर के ज्वालापुर के पास हरिद्वार में स्थानान्तरित कर दिया गया। तब से लेकर गुरुकुल प्राचीन परिसर वीरान पड़ा था। गगा नदी का पानी प्राचीन परिसर को बहा कर के ले जा रहा था। बहुत सा भवन तो पानी में बह गया और जो बचा था उस की हालत बहुत खस्ता थी। सभाप्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा श्री वीरेन्द्र जी और मैं कुछ साथियों के साथ आज से 10 साल पहली वहा गये तो देखा कि जो बची हुई इमारत है उस की हालत बहुत खस्ता है और जमीन को गंगा नदी का पानी बहा कर ले जा रहा है। सभाप्रधान श्री हरबंस लाल जी शर्मा की प्रेरणा से श्री वीरेन्द्र जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से बांध पर सफाई के काम करवाने और जिस पर लगभग 12 लाख रुपया सभा की ओर से खर्च किया गया। सभा प्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा ने अपनी ओर से लाखो रुपया खर्च कर के इमारत की मुरम्मत करवाई और अब यह इमारत बहुत सुन्दर हो गई है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुकुल कागडी प्राचीन परिसर एव कागडी ग्राम में स्थित समस्त भूमि की स्वामिनी है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब द्वारा प्रति वर्ष 12 अप्रैल को गुरुकुल कागडी प्राचीन परिसर में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की याद मे एक उत्सव किया जाता है जिस में सभा प्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा हर वर्ष हजारों रुपया खर्च कर के सुन्दर ऋषि लगर की व्यवस्था करते हैं।

इस वर्ष 12 अप्रैल 1999 को गुरुकुल कागड़ी प्राचीन परिसर में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की याद में उत्सव रखा था। मैं वहा पर सारा प्रबन्ध करने के लिये 10 अप्रैल 1999 को हरिद्वार चला गया और वहा पर जा कर उत्सव के लिये सारा प्रबन्ध किया जब मैं 11 अप्रैल को प्राचीन परिसर में गया तो वहा पर रास्ता बिल्कुल ठीक ठाक था और गगा में पानी भी बहुत कम था। तो हम ने वहा पर उत्सव मनाने का प्रबन्ध कर दिया। मैं दोपहर को वापिस गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय सीनेट हाल में आ गया तो लगभग साढ़े पांच बजे पता चला कि गगा नदी में पानी तेज हो गया है और गुरुकुल कागडी प्राचीन परिसर में जाने का रास्ता बद हो गया है। हमारा जो लगर का सारा सामान वहा पर था वह 11 तारीख सुबह ही गुरुकुल कागडी प्राचीन परिसर मे ट्रैक्टर ट्राली द्वारा पहुच गया था। अचानक गगा नदी में पानी बढ जाने के कारण जब रास्ता बद हो गया तो मैंने श्री सभा प्रधान जी से परामर्श किया और उस के उपरान्त हमने निश्चय किया कि यह उत्सव वेद मदिर गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय मे ही मनाया जावे और ऋषि लगर का प्रबन्ध भी गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय परिसर मे ही किया जावे।

12 अप्रैल 1999 को प्रात साढे 10 बजे गुरुकुल कागडी पुण्य भूमि का उत्सव आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से सभाप्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा की अध्यक्षता में वेद मदिर में शुरू हुआ जिसमें सैंकडो नर नारियो ने भाग लिया। इस उत्सव में माननीय प्रो शेर सिंह विजीटर आदरणीय सूर्य देव जी कुलाधिपति माननीय डाक्टर धर्मपाल जी कुलपति श्री वेदप्रत शर्मा डाक्टर भारत भूषण विद्यालकार डाक्टर जयदेव विद्यालकार प्रो वेद प्रकाश शास्त्री बहिन इन्दु जी ज्वालापुर आश्रम बहिन कमला आर्या जी प्रधानाचार्य कन्या गुरुकुल विद्यालय हाथरस डाक्टर के के पसरीचा वरिष्ठ उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब व उनकी धर्म पत्नी डाक्टर प्रेम पसरीचा जी डाक्टर सच्चिदानन्द जी शास्त्री कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा श्रीमति राजेश शर्मा प्रधान जिला आर्य सभा लुधियाना श्री आत्मानन्द जी आर्य श्री ओम प्रकाश पासी विजय सरीन श्री मतवाल चद जी प्रधान आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना आदि ने भाग लिया। लुधियाना से लगभग 60 भाई और बहिनें श्रीमति राजेश शर्मा के नेतृत्व मे लुधियाना से एक बस लेकर गये थे। इसी तरह बठिडा से श्री प्रेम भाटिया जी उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नेतृत्व मे बहुत से आर्य बहिने व भाई बठिडा से गये। पजाब से और भी कई लोग वहा गये थे। इस उत्सव मे प्रो शेर सिंह जी, श्रीसूर्य देव जी और डाक्टर धर्मपाल जी ने कहा कि हमे मिल जुल कर काम करना चाहिये और गुरुकुल की उन्नति के लिये काम करना चाहिये। सभा प्रधान श्री हरबस लाल शर्मा जी ने कहा कि मैंने गुरुकुल की उन्नति के लिये बहुत काम किया है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से गुरुकुल प्राचीन परिसर मे बहुत जल्दी ही सभा द्वारा काम शुरू किया जायेगा और अगले वर्ष बहुत बडा उत्सव किया जायेगा। श्री सभा प्रधान जी ने सभी आर्य भाई व बहिनो को इकट्ठे मिल कर काम करने की प्रेरणा दी और आर्य समाज का प्रचार एव प्रसार करने के लिये आह्वान किया। डाक्टर के के पसरीचा जी ने भी अपने बहुत ही अच्छे विचार रखे और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की योजना के सम्बन्ध मे विस्तार से बताया। आर्य माडल हाई स्कूल बठिडा की बच्चियो ने बहुत ही मीठा और सुन्दर भजन सुनाया। श्री विश्व प्रेमी जी जो दिल्ली से आये थे उन्होने बहुत ही सुन्दर कविता पेश की। लुधियाना की बहिन राजेश शर्मा ने बहुत ही सुन्दर भजन सुनाया और वेदो पर प्रकाश डाला और कहा हम सभी को मिल जुल कर काम करना चाहिये। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के भजनोपदेशक द्वारा भजन प्रस्तुत किया गया। इसी प्रकार बहिन इन्दु जी जो वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर से आई थी उन्होने अपना बहुत ही प्रभावित सदेश दिया और बताया कि मनुष्य सारी उम्र इस ससार के भोग विलास मे समय बर्बाद करता रहता है । मनुष्य को अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहिये। उस को अच्छे काम करने चाहियें और परमात्मा के नाम को स्मरण करना चाहिये जिससे मनुष्य ससार के इस भवसागर से पार हो सके। बहिन इन्दु जी बहुत ही विद्वान हैं और उन से सभी उपस्थित बहिने और भाई बहुत ही प्रभावित हुये। मैंने प्रतिनिधि सभाओ के अधिकारियो से विनम्र प्रार्थना की कि लडाई झगड़े बद करो और सभी इकट्ठे मिल कर काम करो। जो नेता लोग आपस मे लडते हैं उनको मिल बैठ कर समस्याओ का समाधान निकालना चाहिये। मैंने कहा कि सभा के तथाकथित विभाजन से गुरुकुल कागडी को बहुत नुकसान हुआ है । इसलिये हमे इस का हल ढूढना चाहिये। क्योंकि विभाजन से समस्याए बढी हैं। अत मे श्री सभाप्रधान हरबस लाल जी शर्मा ने सभी आए हुये भाई व बहिनो का धन्यवाद किया। इस के पश्चात श्री आत्म प्रकाश अरोडा लुधियाना ने शाति पाठ कराया जिससे उत्सव की कार्यवाही सम्पन्न हुई। उत्सव के पश्चात सभी उपस्थित भाई व बहिनो ने ऋषि लगर में प्रीति भोज किया जो सभा प्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा द्वारा लगाया गया था। इस प्रकार गुरुकुल कागडी प्राचीन परिसर पुण्य भूमि का उत्सव बडे शानदार ढग से आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब द्वारा मनाया गया। जो भाई व बहिने लुधियाना से बठिडा से और पजाब के दूसरे भागो से वहा पर गये थे और जिन प्रतिनिधि सभाओ के अधिकारियो ने दिल्ली व हरियाणा से आ कर इस उत्सव मे भाग लिया और जिन माननीय सन्यासियो ने इस उत्सव मे भाग लिया उन सब का मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से व अपनी ओर से बहुत बहुत धन्यवाद करता हू।

अश्विनी कुमार शर्मा (एडवोकेट)
सभा महामत्री

विवेकानन्द और ईसाई मिशनरियां

□ डा. कमल किशोर गोयनका

(गतांक से आगे)

कि उनके असख्य अनुयायियों ने इन उपदेशों का पालन नहीं किया और फिर भी ईसा उनके 'धर्म के महानगुरु हैं' (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-9, पृ 152)। वे 29 अक्तूबर, 1896 को लदन में दिए गए भाषण में इसी बात को बढ़ाते हुए कहते हैं, 'ईसा के उस शैलोपदेश का स्मरण करो। जो व्यक्ति इस उपदेश को कार्यरूप में परिणत करेगा वह उसी क्षण देवता हो जाएगा। सुनते हैं पृथ्वी पर इतने करोड ईसाई हैं तो क्या तुम कहना चाहते हो, ये सभी ईसाई हैं ? इसका वास्तविक अर्थ है कि ये किसी-न-किसी समय इन उपदेशों के अनुसार कार्य करने की चेष्टा कर सकते हैं। दो करोड लोगों में एक भी सच्चा इसाई है या नहीं, इसमें सन्देह है' (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-2 पृ 167)। विवेकानन्द अमरीका और इग्लैण्ड में ईसाइयों के बीच कई बार इस प्रश्न और सन्देह को उठाते है, लेकिन कोई बुद्धि-सम्मत उत्तर सामने नहीं आता।

वे ईसा मसीह के व्यक्तित्व को दो रूपों में बाटते हैं आध्यात्मिक शक्ति, उनका उपदेश जो दिव्यता से पूर्ण है, आसुरी शक्ति, जो मूर्खतापूर्ण चमत्कारिक कार्य करती है (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-9, पृ 33-34)। वे इसी प्रवचन में कहते हैं कि इसा की 'विराट प्रेम और सत्य उपदेशो' की 'सर्वशक्तिशाली' तथा आध्यात्मिक शक्ति सदैव जीवित रहेगी, परन्तु उनकी यह 'महान शक्ति' उनके आरोग्य दान के चमत्कारों मे नहीं है।

बौद्ध धर्म प्रथम मिशनरी धर्म

विवेकानन्द का मत है कि ईसाई मत हिन्दू धर्म से प्रादुर्भूत' हुआ है (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-8, पृ 294 तथा इसकी नींव 'बुद्ध धर्म' मे है (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-10 पृ 283) ईसा की सब शिक्षाए पूववर्ती बुद्ध की शिक्षाओं में देखी जा सकती है। बौद्ध धर्म दुनिया का प्रथम मिशनरी धर्म था और उसने रक्तपात के बिना प्रेम से बडी सख्या मे लोगों को दीक्षित किया (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-10, पृ ..)। एक कैथोलिक पादरी ने ..न साम्य को देखा और एक पुस्तक लिखी तो उसे पदच्युत कर दिया गया। इस्लाम और ईसाई धर्म भी मिशनरी धर्म है परन्तु दोनों ने ही ..सा का प्रयोग किया (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-1, पृ. 278) तथा 'दुकानदारी धर्म' (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-3, पृ 238-239) कहते हैं। उनके अनुसार तलवार में ईसाई धर्म का प्रसार हुआ, पूरे ईसाई इतिहास में एक उदाहरण भी इसके विपरीत नहीं है। 'तुम लोग इस्लाम से क्या अच्छा कर सकते हो' ? (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-1, पृ 278) वे ईसाई समाज को व्यापार प्रधान पाते हैं और कहते हैं कि जिनका धर्म व्यापार है, वे धर्म में भी व्यापारिक स्वार्थों, धूर्तताओं और संकीर्णताओं को ले आते हैं। (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-3, पृ 387)। वे प्रमाण देते हैं कि अमरीका में ईसाई पादरी नब्बे हजार वार्षिक वेतन तक पाते हैं और इस तरह करोड़ों रुपए खर्च करते हैं। इसके साथ वे सदैव ईश्वर से कुछ-न-कुछ मागते रहते हैं। पश्चिम में पाखंडी अधिक हैं। चर्च जाना एक फैशन है। वे पूछते हैं यदि ईश्वर तुम्हारे पास होता तो इतने अपराध क्यों होते। (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-3 पृ 238)? विवेकानन्द ईसाइयों के बपतिस्मा संस्कार की भी परीक्षा करते हैं। वे कहते हैं कि 'बपतिस्मा' का अर्थ है-आध्यात्मिक जीवन में सीधा प्रवेश, ईश्वरीय प्रकाश तक पहुचना (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-3, पृ 197) कुछ मिशनरी विवेकानन्द को 'बपतिस्मा' देना चाहते थे तो उन्होंने उनसे कहा कि यदि दे सकते हो तो मुझे आत्मा का बपतिस्मा दो। यदि नहीं, तो तुम ईसाई नहीं हो।

विवेकानन्द ईसाइयों के मुखारिस्ट नाम अनुष्ठान को भी 'असभ्य जातियों की एक अति प्राचीन प्रथा का अवशेष' मानते हैं और कहते हैं कि इस प्रथा के कारण ईसाई मत ईसा का यथार्थ शिक्षा से दूर हो गया और उसमें दूसरों के ऊपर अत्याचार तथा रक्तचाप करने का निष्ठर भाव आ गया। (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-8, पृ 85-86)। विवेकानन्द ईसाई मत की तुलना हिन्दू धर्म से करके देखते हैं और दोनों के अन्तर को बार-बार रेखांकित करते हैं। उन्होंने अमरीका, इंग्लैण्ड, भारत जहा भी धर्म की चर्चा की और ईसाई मत आदि मत-पंथों को समझाने का प्रयत्न किया, वहा हिन्दू धर्म से उनके दृष्टिकोण को समझने में सहायता मिलती है। उनके विचार में हिन्दू धर्म और ईसाई मत में कुछ मूलभूत अन्तर निम्नलिखित हैं :-

1 हिन्दू धर्म किसी व्यक्ति पर आश्रित नहीं है, जबकि ईसा के अभाव में ईसाई मत और मोहम्मद के अभाव में इस्लाम खड़ा नहीं रह सकता। (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-4, पृ 278)।

2 हिन्दू शास्त्र ऐतिहासिक न होने के कारण सत्य हैं और ईसाई मत ऐतिहासिक है तथा मनुष्य प्रणीत है (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-5, पृ 225)।

3 हिन्दू ईसा के 'शैलोपदेश' पर श्रद्धा रखता है, किन्तु प्राय: ईसाई 'हिन्दू पवित्र आत्माओं' के बारे में कुछ नहीं जानते (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-1-पृ. 284)।

4 हिन्दू धर्म में उद्धारवाद का कोई स्थान नहीं है, जबकि ईसाइयों में इसका विशेष महत्त्व है। (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-10, पृ 272)।

5 ईसाइयत ने अपने भाइयों का गला काटकर समृद्धि प्राप्त की, किन्तु हिन्दू इस कीमत पर अपनी उन्नति नहीं चाहेगा। (विवेकानन्द साहित्य खण्डा-10, पृ 236)।

6 ईसाई 'बुतपरस्त के धर्म परिवर्तन' के लिए हजारों डालर देता है, परन्तु हिन्दू ऐसा नहीं कर सकता। हिन्दू पूर्णत: नि:स्वार्थ होकर आध्यात्मिक सहायता करता है (विवेकान्द साहित्य खण्ड-10, पृ 16)

7 ईसाइयों में ईसा मसीह के रक्त द्वारा मोक्ष अथवा मेमने के बलिदान से स्वय को सुरक्षित रखने की प्रवृति हिन्दू धर्म में कभी मान्य नहीं हो सकी। विवेकानन्द ने कहा कि वे ऐसा मोक्ष, ऐसा उद्धार कभी स्वीकार नहीं कर सकते जो दूसरे के रक्त से मिलता हो, चाहे नरक ही क्यों न मिले (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-1, पृ 275)।

8 हिन्दू धर्म सहिष्णु है। यहा तक कि भारत में पहले हिन्दुओं ने मिशनरी का स्वागत किया था, जबकि अंग्रेज उसे रोकना चाहते थे। इसके विपरीत ईसाई मिशनरिया हिन्दू धर्म के प्रति घोर असहिष्णु हैं (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-1, पृ 281 तथा खण्ड-10, पृ 254)।

9 ईसाई बिशप हाथ फेरकर ईसा की शक्ति को सप्रेषित करने का दावा करते हैं, स्वामी विवेकानन्द के अनुसार यह शक्ति प्रत्येक मनुष्य के पास हो सकती है (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-3, पृ 196)।

स्वामी विवेकानन्द 'धर्म परिवर्तन' की धारणा को ही 'अपमानजनक' कहते हुए उसे अस्वीकार करते हैं (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-10, पृ. 243)। इसी कारण वे अमरीका आदि देशों मे बार-बार कहते हैं कि वे मिशनरी नही हैं और न धर्म-परिवर्तन उनका लक्ष्य है। वे भारत आने वाले ईसाई मिशनरियों से भी यही कहते हैं कि वे मत प्रचार के लिए, ईश्वर का ज्ञान देने के लिए न आए, क्योंकि उनका मत ऐसा है जो भगवान को सभी जीवो के प्रति प्रेमशील, विचारशील, सौम्य और मधुर मानता है। (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-1, पृ 271 तथा खण्ड-3 पृ 240)। वे चाहते थे, यदि ईसाई मिशनरी आते हैं तो वे स्वय को शिक्षा तक सीमित रखें (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-1, पृ 282 तथा खण्ड-10 पृ. 231)। हिन्दुओं को जितने धर्म की आवश्यकता है, वह उनके पास है। विवेकानन्द मानते हैं कि वे निम्न वर्गों की स्थिति ईसाई बन जाने से नहीं सुधरी है। विवेकानन्द 6 मई, 1895 को अमरीका से भारत मे अपने मित्रों और शिष्यों को एक पत्र में लिखते हैं, 'यदि तुम तीस करोड लोग मिशनरी लोगों की धमकियों में आ गए, तो तुम सब कायर हो और कुछ भी कहने के अधिकारी नहीं हो।' (विवेकानन्द साहित्य खण्ड-4, पृ 282)

निष्कर्षत: स्वामी विवेकानन्द के धर्म दर्शन में एक ही धर्म, पंथ या पुस्तक सत्य नहीं है। धर्मो की विभिन्नता ही प्रकृति का सत्य है क्योंकि वैषम्य जीवन का प्रतीक है। अत. ईसाइयत या इस्लाम जो एक अपने ही पथ किसी न किसी महान सार्वभौमिक सत्य के ही अंश हैं। इनका 'बहुत्व' हमें ईश्वर के 'एकत्व' की ओर ले जाता है। यदि एक धर्मान्ध सम्प्रदाय पृथ्वी पर छा जाए, तो मनुष्यों की दशा क्या होगी ? हिन्दू धर्म सहिष्णु है, इस कारण वह बुद्ध, ईसा, मुहम्मद सभी को स्वीकार करता है। अत: जो मत हिन्दू समाज को अपने जाल मे फंसाना चाहते हैं, वे कभी सफल नहीं होगे। हिन्दू धर्म मे पूर्ण स्वाधीनता है और यह बात दूसरे मत के प्रचारकों को समझनी चाहिए। ये ईसाई मिशनरी ईसा के जीवन के विपरीत चल रहे हैं। ये डालर की शक्ति से हिन्दुओं का धर्म बदल रहे हैं। इसलिए विवेकानन्द इन मिशनरियों के प्रतिकार के लिए हिन्दु समाज को खड़ा करते हैं।

(पांच जन्य से साभार)

प्रेषक : दयाराम पोद्दार (राची)

आर्य समाज तलवाड़ा की गतिविधियां और वेद-प्रचार

18-3-99 को आर्यसमाज मन्दिर तलवाड़ा में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया पहले यज्ञ किया गया। यज्ञ के उपरान्त स्त्री आर्य समाज और नन्हें मुन्ने बच्चों ने बहुत अच्छे भजन सुनाये। इसके उपरान्त आर्य समाज की स्थापना ऋषि जी ने क्यों की आर्य समाज ने पिछले समय में संसार में जागृति पैदा करने के लिये क्या-क्या कार्य किये इस पर विचार दिये गये। बाद में प्रीति भोज किया गया जो लोग और सदस्य घरों से लेकर आये थे।

25-3-99 को रामनवी का उत्सव भी बहुत धुमधाम से किया गया इस अवसर पर श्री पं० विजय कुमार जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री सतीश सुभाष राही भजन मण्डली भी आर्य समाज मन्दिर में पधारी हुई थी। यज्ञ उपरान्त श्री रामचन्द्र जी के जीवन पर श्री अमर नाथ जी और श्री मनोहर लाल जी ने भी बहुत अच्छा प्रकाश डाला। सभा की भजन मण्डली द्वारा बहुत अच्छे भजन सुनाये गये जिन्को सदस्यों ने बहुत पसन्द किया। इसके उपरान्त श्री विजय कुमार जी ने बहुत प्रभावशाली, विद्वतापूर्ण बहुत अच्छे विचार और प्रवचन आर्य समाज और श्री राम चन्द्र जी की मर्यादा पर वैदिक धर्म के स्वरूप पर दिया। बाद में सब ने मिल कर प्रीति भोज किया। 4-4-98 रविवार के सत्संग का आयोजन तलवाडा से 5 किलोमीटर दूर गांव कराडी में श्री ओम प्रकाश जी पचांयत अफसर के घर पर किया गया। यज्ञ 10 बजे शुरू हुआ। हमारे वहां पहुँचने से पहले ही लोगों में यज्ञ के प्रति इतनी श्रद्धा थी कि सारा गांव वहां पहुंच चुका था। उनके रिश्तेदार सगे सम्बन्धी सब पहुँचे हुऐ थे। पं० परमानन्द जी ने यज्ञ करवाया। स्त्री आर्य समाज के सदस्यों ने और बच्चों ने नवदीप कुमार जी ने बहुत अच्छे भजन गाये। गांव के लोगों ने भी बहुत अच्छे भजन सुनाये। श्री मनोहर लाल जी आर्य और श्री अमर नाथ जी आर्य ने यज्ञ पर और वैदिक ज्ञान की हमें क्यों अवश्यकता है ? पर बहुत सुन्दर विचार दिये। तलवाड़ा से श्री रमेश चन्द जी भाटिया प्रधान, किशोरी लाल जी, जदुनाथ जी, जगमोहन कंवर जी, हरिश चन्द्र जी, सुरेन्द्र जी, नवदीप जी, डा० वैद्यनाथ जी आर्य और स्त्री समाज की बहुत सी सदस्य उर्मला जी, कृष्णा जी, शन्ति जी, मधु जी आदि बहुत से सदस्य और अधिकारी वहां गये हुये थे। वहां पंजाब से सारे इलाके के अफसर और प्रतिष्ठित व्यक्ति पहुंचे हुये थे। मानों मेला लगा हो। सभी ने आर्य समाज के कार्यक्रम की और यज्ञ के ढ़ंग की बहुत तरीफ की और सराहा। बाद में घर वालों की ओर से भण्डारा किया गया। सब ने मिल कर भोजन किया जो सांय 5 बजे तक चलता रहा। इस प्रचार का गावों में बहुत प्रभाव हुआ।

10-4-99 को आर्य समाज मन्दिर में महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल को विधिवत्त शुरू किया गया। पहले यज्ञ किया गया यज्ञ मे स्कूल के प्रिंसीपल श्री सुरेश कुमार जी पत्नी सहित यजमान बने और यज्ञ के ऊपर सभी अध्यापकों को यजमान बनाया गया। आर्य समाज मन्दिर का हाल छात्रों से और उनके अभिभावकों से खचाखच भरा हुआ था। आर्य समाज तलवाड़ा के सदस्य और अधिकारीगण, स्त्री आर्य समाज तलवाडा के सदस्य और अधिकारीगण छुट्टी ले कर प्रोग्राम में सभी आये। आर्य समाज मन्दिर में अच्छी रौणक लगी हुई थी। यज्ञ उपरान्त श्री अमर नाथ जी और श्री मनोहर लाल जी ने स्कूल के पिछले इतिहास पर भी विचार दिये और कहा कि यह श्री वीरेन्द्र जी की याद है हमारे पास, क्योंकि उन्होने अपने पवित्र करकमलों द्वारा इसका उद्घाटन किया था। इसकी रक्षा करना हम सब का कर्त्तव्य है और स्वामी दयानन्द जी की शिक्षा नीति क्या है ? कैसी वह शिक्षा चाहते थे, इस पर विचार दिये। बाद मे पं० जी ने वेद मंत्रों से प्रिंसीपल को आशीर्वाद देकर स्कूल के कार्यालय का उद्घाटन करवाया। अन्त में आये हुये सभी सज्जनों को आर्य समाज द्वारा चाय-पान करवाया गया।

दोपहर को प० निरजन देव जी इतिहास केसरी महोपदेशक आ० प्र० निधि सभा पंजाब भी आर्य समाज मन्दिर में पधारे उन्होंने स्त्री सत्सग में और 11-4-99 को सुबह आर्य समाज के सतंग मे और रात्री को भी 9 से 10 बजे तक बहुत सुन्दर और सरल ढंग से वेद मंत्रों की व्याख्या कर मानव जीवन पर प्रकाश डाला।

मनोहर लाल आर्य मंत्री

गान्धी नगर जालन्धर का उत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर गान्धी नगर नं०1 का वार्षिक उत्सव व आर्य समाज स्थापना दिवस 1 अप्रेल 99 से 4 अप्रैल 99 तक वीरवार से रविवार तक बडी श्रद्धापूर्वक व उत्साह से मनाया गया। प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी आर्य समाज के सभी अधिकारी वर्ग श्री बाबू बूटा राम जी प्रधान की अगवाही में दिन रात काम करने में लगे रहे।

22 मार्च से 31 मार्च 99 तक प्रभात फेरियो का कार्यक्रम सुबह 5 बजे से 7 बजे तक लगातार जारी रहा। काफी सख्या में स्त्री, पुरुष व बच्चे इस प्रभात फेरी में साथ चलते रहे। यह प्रभात फेरी कबीर नगर गान्धी नगर न०2 तथा एक में निकाली गई। लोगों ने काफी उत्साह दिखाया यहा तक कि चाय व जलपान से इस प्रभात फेरी का स्वागत किया व धन से सहायता भी की।

श्री बाबू बूटा राम जी श्री चूनी लाल जी, श्री जनकराज जी, श्री गिरधारी लाल जी, श्री राम लाल जी, श्री भोला जी दुकानदार इन सभी ने चाय व जलपान से स्वागत किया।

1 अप्रैल 99 से 3 अप्रैल 99 तक लगातार प्रात. 7 से 8 बजे तक हवन यज्ञ व रात को 8 से 10 बजे तक पवित्र वेद कथा श्रद्धेय पडित विजय कुमार जी शास्त्री महोपदेश आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा होती रही साथ में सुभाष व सतीश जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के भजन लोगों को सुनने को मिले। श्री पडित राज कुमार जी व श्री राजेश जी ने महर्षि दयानन्द के भजनों का गुणगान किया।

4-4-99 अर्थात् रविवार को मुख्य उत्सव प्रात: 9 बजे शुरु हुआ जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा थे पंडित श्री विजय कुमार जी, शास्त्री व पडित राजकुमार आर्य समाज के पुरोहित। चार हवन कुण्डों पर 16 यजमान बैठे जिनके नाम हैं। श्री बाबू राम जी, श्री तिलकराज जी, श्री ईशर दास जी, श्री सतीश जी, श्री साई दास जी, श्री हवेली राम जी, श्री नरेन्द्र कुमार, श्री अरविन्द, श्री वीरचन्द, श्री अशोक कुमार जी, श्री गंगाराम जी श्रीमति सुरजीत कौर जी, अनिल गुप्ता जगदीश काला ।

श्री पडित विजय कुमार जी शास्त्री द्वारा सभी यजमाना को यज्ञोपवीत पहनाया गया, तत्पश्चात एक एक मत्र की सुचारु रूप से व्याख्या की गई। यज्ञ की सामग्री जुटाने में श्री सांईदास जी व राजेश जी का विशेष योगदान रहा। यज्ञ के पश्चात् पंडित श्री विजय कुमार जी शास्त्री द्वारा सभी यजमानों को फूलों से व फलों से आशीर्वाद दिया गया। तत्पश्चात् सभी बैठी सगत में देसी घी का हलवा बांटा गया।

तत्पश्चात ठीक 10-30 बजे आर्य महा सम्मेलन शुरू हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री बाबू सरदारी लाल जी आर्य रत्न उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने की। सबसे पहिले पडित राज कुमार जी, बहिन पुष्पा, सत्या व पडित हरबंस लाल जी शमा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा श्री सुरजीत व पडित अमर नाथ, (गढा) प मनोहर लाल जी, भार्गव नगर की देवियो बस्ती बावाखेल की भजन मण्डली सभी ने ऋषि की महिमा का गुणगान किया। इसमें मुख्य वक्ता थे, श्री प० धर्म देव जी आर्य कार्यालय अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब 3 श्री अवतार जी हैनरी MLA 4 श्री चूनी लाल जी भगत MLA 5 श्री विजय जी शास्त्री महोपदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व 6 सतीश व श्री सुभाष भजन मण्डली ने सभी ने ऋषि दयानन्द को आर्य समाज की स्थापना क्या करनी पडी इस विषय पर अपने *अपने विचार जनता को बताए।*

तत्पश्चात आर्य समाज की ओर से निम्नलिखित महानुभावो को सम्मानित किया गया-श्री हरबस लाल जी शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, श्री अवतार जी हैनरी MLA श्री चूनी लाल जी भगत MLA व सेवा भारती के प्रधान, श्री द्वारका नाथ जी गुप्ता व महामत्री श्री मनोहर लाल जी शर्मा इन सभी को दोशाला व ट्राफी देकर सम्मानित किया गया, तथा साथ ही छोटे-छोटे आठ बच्चों को व इनकी अगवाही करने वाले श्री राजेश को महर्षि दयानन्द जी का स्मृति चिन्ह (Trophy) देकर सम्मानित किया गया। 2-30 बजे ध्वजारोहण श्री हरबस लाल जी शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब द्वारा किया गया साथ ही इनके द्वारा 5100/- की दान राशि आय समाज को दान के रूप में दी गई। श्री अवतार जी हैनरी MLA ने भी आर्य समाज को 2100/- की राशि तथा आ स भार्गव नगर की तरफ से आर्य समाज को 1100/- रुपए की राशि दी गई, और भी बहुत सी आय समाजो ने दान दिया।

तत्पश्चात श्री बाबू सरदारी लाल जी आर्य रत्न ने अपना अध्यक्षीय भाषण दिया तथा बाद में ऋषि लगर शुरू हुआ जो पाच बजे समाप्त हुआ। तत्पश्चात श्री बाबू बूटा राम जी प्रधान ने आई हुई सगत का अपार सहयोग देने पर सारे नगर वासियों का धन्यावाद किया, जिन्होंने इस पवित्र आर्य समाज वेद मन्दिर में आकर इस उत्सव की शान को बढाया शान्तिपाठ के साथ सम्मेलन की समाप्ति की गई। सभी बाहिर से आए लोगों ने इस उत्सव को सराहा। यह उत्सव सभी पर अपनी अमिट छाप सदा-सदा के लिए छोड़ गया।

राजेश कुमार प्रचार मंत्री आय

विद्यार्थियो के लिए उपयोगी बाते

□ श्री देवेन्द्र कुमार बजाली, डी० 262 सैक्टर-28 नोएडा, 201301

वार्षिक परीक्षा में आपके कितने नम्बर आने की सम्भावना है इसका अनुमान अभी से आप लगा सकते हैं। नीचे प्रश्न रूप में दस कार्य तथा उसके अधिकतम अक दिए गए हैं। जिस कार्य का जितना अश आप निभाते हैं उसके लिए उसी अनुपात मे नम्बर लगाए, फिर जो इनका जोड बनेगा आपके प्रतिशत औसत नम्बर आने की सम्भावना उसके आस पास ही होगी।

प्रश्न क्या आप— अधिकतम अंक 30

1 पढाई को प्राथमिकता देते हैं पहले पढाई फिर कुछ और के नियम पर चलते हैं ? जहा भी हो सके कुछ सीखने की ताक में रहते हैं? समय का पूरा सदुपयोग करते हैं?
2 याद करते समय आखें बन्द करके पढे हुए विषय पर मनन करते हैं तथा जो मुश्किल हो उसे लिखते जाते हैं? याद कर लेने के बाद चौबीस घण्टे के अन्दर उसे दोहरा लेते हैं? 10
3 पढाई का खूब अभ्यास करते हैं परीक्षा के लिए लालायित करते हैं ? 10
4 भोजन सीमित करते हैं इसमें नखरे नहीं करते जो मिल जाता है उसी में सन्तोष करते हैं? मीठा चटपटे खाने से कतराते हैं ? 10
5 स्वास्थ्य ठीक रखते हैं प्रात उठने पर ताजगी महसूस करते हैं? 5
6 सौन्दर्य प्रसाधन इस्तेमाल नहीं करते? आवश्यकता से अधिक दिखावा करने का प्रयत्न नहीं करते ? 5
7 टेलीविजन बहुत कम देखते हैं ? 5
8 अपना सामान तथा किताबें सुव्यवस्थित रखते हैं ? 5
9 प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण करते हैं तथा पढाई की समीक्षा समय समय पर करते रहते हैं।
10 सबसे प्रीति पूर्वक यथायोग्य वर्तते हैं वाणी में मिठास रखते हैं तथा बडों का आदर करते हैं । 10

उपरोक्त अक केवल एक ही बार कर लेना काफी नहीं है समय समय पर इस तरीके से अपना अकन करके प्रयत्न से आप अपने अक बढा सकते हैं। अकन सही होने के लिए कम से कम तीन माह के जुडे नम्बरों का औसत लेना जरूरी है।

सबसे बड़ा दुश्मन—विद्यार्थियों की पढाई में टाग अडाने वाला उनका सबसे दुश्मन पेटूपन है। अक्सर उनकी तबीयत इसलिए नाशाद रहती है कि किसी समय एक रसगुल्ले या रसमलाई के गिडगिडाने से अगाह न होने पर भी परमिट दे दिया गया था। भोजन कर लेने के बाद कई बार ऐसा लगता है कि अधिक खा लिया कुछ कम खाना चाहिए था। अब तो ये अन्दर जाकर जम गए और पढाई का रास्ता बन्द। पर अब क्या हो सकता है अब तो ओखली मे सिर दे ही दिया है न अब मूसलो से क्या डरना। भाई कुछ करना है तो पहले करिए, पीछे पछताने से क्या लाभ।

असल में दोष उतना विद्यार्थियों का नहीं है जितना उनके मन का है। ये मन तो है ही ऐसा सभी को खूब तग किया करता है। परन्तु ऐसा नहीं है कि इसे तमीज न सिखाई जा सके। इसे काबू में करने का भी एक तरीका है। इसके लिए अपनाए इस भोजन क्रम से और लाभ उठाए, सफलता मिल जाएगी। भोजन के बाद कभी ऐसा न कहना पडे कि बस और नहीं खाया जाता बल्कि यह कहें कि अभी इतना ही और खा सकता हू अब खाऊगा नहीं।

आधा चौथाई भोजन क्रम—भोजन को चार हिस्सों में बाट लें। इसमें से आधा भोजन कर लेने पर रुकें। यदि भोजन की तीव्र इच्छा बनी हुई हो तब एक चौथाई भोजन और कर लें। जब एक चौथाई भोजन बच जाए तब इसमें से अधिक से अधिक हिस्सा पशु पक्षियों के लिए निकाल कर अलग रख दें तथा बाकी का भोजन इस प्रकार करें कि भोजन समाप्त करने पर भी इसका स्वाद बना रहे। प्रात तृप्ति के सकेत आने में देर लगती है। यहीं हम धोखा खा जाते हैं। अत पेट के भरने से कुछ पहले तथा थोडी इच्छा के रहते भोजन त्याग दें। बचे भोजन को पशु पक्षियों में बाट दें—वे आप को दुआए देंगे। थोडी तकलीफ तो होगी। इसे सहें यही तप है। इसी से आपका लक्ष्य सिद्ध होगा। इसीलिए चरकसहिता में भी कहा है—

त्रिविधं कुक्षौ स्थापयेदवकाशांशमाहारस्याऽऽहारमुपयुञ्जान । तद्यथा—एकमवकाशांश मूर्त्तानामाहारविकाराणामेकं द्रवाणामेक पुनर्वातपित्तश्लेष्मणाम्।। (च०वि०2/3)

अर्थात् भोजन करने वाला अपने पेट (आमाशय) के तीन भाग करे। एक भाग रोटी आदि ठोस पदार्थों के लिए, दूसरा भाग दूध रस पानी आदि द्रव्य पदार्थों के लिए और तीसरा भाग रिक्त रखें जिससे उस भाग में वात पित्त कफ का सचार हो सके।

विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अत्यधिक मीठे चटपटे और मसालेदार व्यजनों को छोडकर उत्तम प्रकार के सात्विक ताजे तथा गर्म भोजन का चयन करें तथा भोजन करने से पहले यजुर्वेद के इस मन्त्र का उच्चारण करें

ओ३म् अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिण ।
प्र प्रदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।। (यजु०11/83)

अब भोजन प्रारम्भ करें। बडे बडे ग्रास लेते हुए जल्दबाजी में न खाए। छोटे छोटे ग्रास लेते हुए बडे शान्ति से भोजन करें इसके लिए पूरा समय दें तथा भोजन करते समय मन में ये भाव लाए

हे प्रभु यह अन्न मेरे लिए स्वास्थ्यवर्धक एव पुष्टिकर हो इससे मेरा शरीर रोग रहित एव बलवान बने। सभी प्राणियों को पोषक अन्न की प्राप्ति हो इसलिए मेरे लिए उचित है कि मैं इस भोजन को सयम से करू कभी भी अपने हिस्से से अधिक न खाऊँ । भोजन पर नियन्त्रण मेरा पहला तप हो। ये अन्न मुझे तृप्त करने वाला हो कम से कम भोजन में ही मैं सन्तुष्ट रहकर ससार की उन्नति मे सहायक बन सकू। यह ही उपरोक्त मत्र का भाव है।

प्राचीन काल से ही विद्यार्थियों को कुमार्ग से बचाने के लिए अनेकानेक प्रयत्न किये जा रहे हैं। इस कार्य में अग्रणी महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में लिखते हैं

विद्यार्थियों को चाहिए जो विद्या पढने के विघ्न हैं वे उन्हें छोड दें। जैसे कुसग अर्थात् दुष्ट विषयी जनों का सग दुष्टव्यसन पूर्ण ब्रह्मचर्य न होना अति भोजन अति जागरण पढने पढाने परीक्षा देने में आलस्य या कपट करना सर्वोपरि विद्या का लाभ न समझना अर्थात् विद्या से बल बुद्धि पराक्रम आरोग्य राज्य तथा धन की वृद्धि न मानना ईश्वर का ध्यान छोड अन्य पाषाणादि जड मूर्ति के दर्शन पूजन में व्यर्थ काल खोना माता पिता अतिथि आचार्य और विद्वान् को सत्यमूर्ति मानकर सेवा सत्संग न करना मिथ्या पुराण नामक भागवतादि की कथादि से मुक्ति का मानना लोभ से धनादि में प्रवृत्ति होकर विद्या में प्रीति न रखना तथा इधर-उधर व्यर्थ घूमते रहना जो इन मिथ्या व्यवहारों में फस जाते हैं वे ब्रह्मचर्य और विद्या के लाभ से रहित होकर रोगी और मूर्ख बने रहते हैं।"

स्वामी जी विद्यार्थियों के लक्षण बताते हुए सत्यार्थ प्रकाश के चौथे समुल्लास तथा व्यवहारभानु में लिखते हैं—आलस्यं मदमोहौ च चापल्यं गोष्ठिरेव च । स्तब्धता चाभिमानित्वं तथाऽत्यागित्वमेव च।। एते वै सप्त दोषाः स्युः सदा विद्यार्थिनां मता । सुखार्थिन कुतो विद्या, विद्यार्थिन कुतो सुखम्। सुखार्थी वा त्यजेद्विद्यां, विद्यार्थी वा त्यजेत्सुखम्।
(महाभारत विदुर प्रजागर अध्याय 99)

आलस्य अभिमान नशा करना मूढता चपलता व्यर्थ इधर उधर की अण्डबण्ड बातें करना जडता अभिमान और लोभ लालच ये सात विद्यार्थियों के लिए विद्या के विरोधी दोष हैं। क्योंकि जिसको सुख चैन करने की इच्छा है उसको विद्या कहा और जिसका चित विद्या ग्रहण करने में लगा है उसको विषय सम्बन्धी सुख चैन कहा? इसलिए सुखार्थी विद्या को छोडे और विद्यार्थी विषय सुख से अवश्य अलग रहें। नहीं तो परमधर्म रूप विद्या का पढना पढाना कभी नहीं हो सकेगा।

शास्त्रकारों ने भी अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं—

कामक्रोधौ तथा लोभ , स्वादु शृंगारकौतुके।
अतिनिद्रातिसेवे च, विद्यार्थी ह्यष्ट वर्जयेत्।।

प्रत्येक विद्यार्थी को उचित है कि वह प्रयत्नपूर्वक इन आठ दुर्गुणों का परित्याग कर दे—1 काम 2 क्रोध 3 लोभ 4 स्वाद 5 शृगार 6 कौतुक 7 अतिनिद्रा तथा 8 अतिसेवा अर्थात् अधिक परिश्रम।

काकचेष्टा बकोध्यानम् श्वान निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी ब्रह्मचारी विद्यार्थी पंचलक्षणम्।

कौए के समान चेष्टा करने वाला अर्थात् स्फूर्तिमान बगुले के समान ध्यान वाला (एकाग्रचित) कुत्ते के समान निद्रा वाला कम भोजन करने वाला तथा ब्रह्मचारी इन पाच लक्षणों वाला विद्यार्थी होता है।

मनु महाराज ने विद्या ग्रहण में शिष्टाचार की बडी महिमा बताई है—

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविन ।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम् ।। मनु।।

शिष्टो का सम्मान करने वालों की आयु, विद्या यश और बल बढता है।

नोट—1 काम—लडकों को लडकियों की तरफ तथा लडकियों का लडकों की तरफ ध्यान देना
2. कौतुक—कौतुकी हसी मजाक एवं ठट्ठा ।

हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी

हमारे देश को स्वतन्त्र हुए 50 वर्ष हो चुके हैं लेकिन अभी तक हम अपने देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी को लागू नहीं कर सके जबकि हमारे सविधान मे हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी ही है। अग्रेज तो चले गये अग्रेजियत छोड गए। राजनैतिक तौर पर हम स्वतन्त्र हैं लेकिन मानसिक तौर पर गुलाम। स्वतन्त्रता से पहले तो हमारे देश में अग्रेजी पढाने वाले इतने पब्लिक स्कूल नहीं थे जितने आज हैं। तब तो हम अग्रेजो को दोषी मानते थे कि वे हमारी सभ्यता और सस्कृति का विकास नहीं होने देते अब तो वे चले गए हैं लेकिन अब भी हम उनकी भाषा और सस्कृति से केवल चिपके हुए ही नहीं है बल्कि उसे अपनी भाषा और सस्कृति से बढिया मानते हैं। हम बच्चों को पैदा होते ही आईज (Eyes) नोज (Nose) सिखाना शुरू कर देते हैं। अब हमारे देश मे पब्लिक स्कूलों की भरमार हो गई है। स्कूलों के नाम भी अग्रेजों के दिए हुए हैं जैसे कि सैंट पाल स्कूल सैंटमेरी सेट पाल लेडी फातमा आदि। क्या हमें अपने देश के सन्त भी अच्छे नहीं लगते ?

भारतीय सभ्यता और सस्कृति की पक्षधर सस्थाएं भी इसी कतार मे आ गई हैं और धडा धड अग्रेजी माध्यम के स्कूल खोल रही हैं जैसे दयानन्द पब्लिक स्कूल एस डी पब्लिक स्कूल गुरु नानक पब्लिक स्कूल आदि और समाचार पत्रो मे विज्ञापन निकाले जाते हैं कि उन्हे धारा प्रवाह अग्रेजी बोलने वाले अध्यापको की आवश्यकता है। जब घरो मे अग्रेजी नहीं बोली जाती तो उसका प्रवाह कैसे बनेगा। दक्षिण भारत से अग्रेजी बोलने वाले अध्यापक मगवाए जाते हैं जो बच्चों को अपनी भाषा बोलने से मना करते हैं। यह तो ऐसे हुआ जैसे हम गुलाब के फूल मे किसी और फूल की सुगन्ध डालने की कोशिश कर रहे हैं। माता पिता भी ऐसे स्कूलों मे बच्चो को दाखिल करवाते हैं ये स्कूल भी मनमाने ढग से अभिभावकों से फीसें वसूल करते हैं। जो स्कूल जितना अधिक अंग्रेजी वातावरण देगा उसकी फीस उतनी अधिक होगी। ये शिक्षा केन्द्र एक तरह के व्यापारिक केन्द्र बने हुए हैं। बच्चे के चरित्र की उन्हे कोई चिन्ता नहीं। ये सब कुछ केवल अग्रेजी के नाम पर होता है। अपनी भाषा और सस्कृति के प्रति इस तरह की हीन भावना शायद ही किसी देश मे देखने को मिले। हमें रेलों बसो चौराहो दुकानों दफ्तरो और बैंको के नाम अग्रेजी में लिखे हुए मिलते हैं। ऐसे लगता है कि जैसे हम भारत मे नहीं इग्लैंड में रह रहे हो। जब कभी विदेशी पर्यटक यहा आते हैं तो उन्हे पूछना पडता है कि "आपके देश की भाषा कौन सी है ?' 2 प्रतिशत लोग 98 प्रतिशत लोगों पर हावी हो रहे हैं और हिन्दी को लागू नहीं होना देना चाहते।

हमारे देश के नेता चाहे वे राजनैतिक धार्मिक या सामाजिक हो दोहरे मापदण्ड अपनाते हैं। हिन्दी दिवस और हिन्दी पखवाडे मनाते हैं लेकिन अपने बच्चो को अग्रेजी स्कूलों में पढाते हैं। स्वदेशी का नारा लगाते हैं और विदेशी अपनाते है।

हिन्दी प्रेमी और स्वय सेवी सस्थाए दोहरे मापदण्ड छोड कर आगे आए और हिन्दी के प्रचार मे जुट जाए। विश्व के 316 से अधिक देशो के विश्वविद्यालयो मे हिन्दी अध्ययन और अध्यापक की व्यवस्था है। हिन्दी अब एक देश की नहीं बल्कि ससार की तीसरी सब से बडी भाषा है। हम अपने दैनिक जीवन मे निम्नलिखित बाते अपना कर हिन्दी के प्रचार में योगदान दे सकते हैं -

1 हस्ताक्षर हिन्दी में करें। 2 पत्र व्यवहार हिन्दी में करें 3 समाचार पत्र हिन्दी का पढें। 4 निमन्त्रणपत्र और बधाई पत्र हिन्दी में छपवाएं। 5 नाम पट्ट हिन्दी में लिखवाएं।

शोभा राजपाल, 43 ए पुरी गेट के बाहर निकट महावीर चौंक संगरूर (पजाब)

संगठन चालीसा

ले० श्री हरि कुमार साहू, मन्त्री आर्य समाज बॉक्साइट, बिलासपुर (म.प्र.)

1 अपनों को ऐसे न भुलाओ आर्यों।
हाथ जोड उनको बुलाओ आर्यों॥

2 अन्दर से उन्हें पास लाओ आर्यों।
रुठे दिल दिल से मिलाओ आर्यों॥

3 सगठन नहीं है तो शक्ति न होगी।
स्नेह प्रेम नहीं है तो भक्ति न होगी॥

4 जोड तोड में ही यदि लगे रहे तो।
ऐसे भोगी भाव से विरक्ति न होगी॥

5 एक आर्य केवल एक और लाइये।
छुआ छूत ऊच नीच भूल जाइये॥

6 उगलियों में गिनती होती है आपकी।
बीस को पचास पहले बनाइये॥

7 आर्य हो तो फिर ऊच नीच कैसे ?
आर्य आज बैठा आखें मीच कैसे ?

8 याद करो लेखराम राजपाल को
अपने लहू से इसे सींचा कैसे ?

9 पद के दीवाने बनिए न आर्यों।
दम्भ में यू आप तनियो न आर्यों॥

10 पद से बडा तो कर्तव्य होता है।
आपस मे वैर ठानियो न आर्यों॥

11 भाव जिसमें नहीं वो छन्द नहीं है।
सुरभि न हो वो मकरद नहीं है॥

12 सब के लिए यज्ञ का द्वार है खुला।
किसी के लिए कभी ये बद नहीं है॥

13 ऊच नीच करोगे तो खोते जाओगे।
दम्भ के नशे में आप सोते जाओगे॥

14 सगठन बिन दीन होते जाओगे।
सिमट के दो या तीन होते जाओगे॥

15 प्रवचन भजन ही काफी नहीं है।
मात्र वेद पठन ही काफी नहीं है॥

16 सध्या और हवन ही काफी नहीं है।
भूमि और भवन ही काफा नहीं है॥

17 द्वेष दम्भ दिल से निकालो साथियो।
गीत सगठन के भी गा लो साथियो॥

18 भेद भाव करोगे तो लुट जाओगे।
बिछडों को फिर से बुला लो साथियो॥

19 उन्हे फिर से गले लगा लो साथियो।
ऐसी सत्य भावना जगा लो साथियो।

20 स्वार्थ सकीर्णता से टूट जाओगे।
कुठित विचारों को भगा लो साथियो॥

21 भवन के बाहर भी जाओ आर्यों।
शक्ति सगठन की दिखाओ आर्यों॥

22 सभी को शराब ने खराब किया है।
भाव नशाबदी के जगाओ आर्यों॥

23 जन जागरण करना जरूरी है।
वैदिक आचरण करना जरूरी है॥

24 यू ही बैठने से बात बनती नहीं।
कर्म सुकर्म आचरण करना जरूरी है।

25 गति नहीं हो तो ये पवन सूना है।
फूल जो नहीं तो ये चमन सूना है॥

26 सगमरमर ही तो लगाना काफी नहीं है।
भावना नहीं है तो यह भवन सूना है।

27 व्यर्थ तकरार अब बद कीजिए।
शिक्षा में व्यापार अब बन्द कीजिए।

28 ऊच नीच भेदभाव भूल जाइये।
कटु व्यवहार अब बद कीजिए।

29 हाथ जोड कहता हू मान जाइये
अपने अवगुणो को जान जाइये।

30 आपस मे छींटाकशी बद कीजिए।
पद् हेतु रस्साकशी बन्द कीजिए॥

31 वेद कहे सारा विश्व आर्य करिए
सगठित होके यह कार्य करिए।

32 राह मे बाधाए तो बहुत आएगीं।
बाधाओं से आप न तनिक डरिए॥

33 दयानन्द के दीवानों सो गए हो क्या ?
श्रद्धानन्द के दीवानो खो गए हो क्या ?

34 सूख गया जोश और होश का चमन
वीर मर्दानगी के खो गए हो क्या ?

35 आपको है वेदो वाले स्वामी की कसम।
हवन को समझो न फकत रसम॥

36 आर्य बने हैं तो वैसा कार्य कीजिए
दृढ हो के ये शपथ ले लें सब हम।

37 रुठ जो गए उन्हे मना लो आर्यो।
उन्हे फिर अपना बना लो आर्यो।

38 मीठे बोल बोल के बुला लो आर्यो।
भाई की तरह सीने से लगा लो आर्यो॥

39 अभिमान करने से नाश होता है
सगठन का भी यहा ह्रास होता है॥

40 प्रेम से सभी को साथ ले के चलिए।
एकता की शक्ति से विकास होता है॥

आर्य समाज श्री गंगानगर का वर्षिक चुनाव

आर्य समाज श्री गगानगर का वर्ष 1999 का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से निम्नानुसार सम्पन्न हुआ।

1 सरक्षक श्री खैरायती राम श्री नौरग राय। 2 प्रधान श्री रवि कुमार। 3 उपप्रधान श्री स्वदेश राज श्रीमती राजरानी सहगल। 4 मत्री . गौरमोहन। 5 संयुक्तमत्री श्री भूपेन्द्र खन्ना। 6 वद प्रचार अधिष्ठाता श्री सुरेन्द्र कुमार। 7 पुस्तकाध्यक्ष श्री हर्षवर्धन शास्त्री 8 कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र आर्य

लुधियाना मे महाशय राजपाल बलिदान दिवस

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे महाशय राजपाल जी का बलिदान दिवस मनाया गया। प्रात आर्य समाज के प्रधान श्री मतवालचन्द आर्य का अध्यक्षता मे विशेष समारोह किया गया प्रथम विशेष यज्ञ किया गया उसके पश्चात समारोह आरम्भ हुआ अपने सम्बोधन मे श्री मतवाल चन्द जा ने महाशय राजपाल के जीवन के सम्बन्ध मे विचार रखे उनके जीवन का विशेष घटनाओ का उल्लेख किया समारोह के मुख्य वक्ता श्री सुरेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने कहा कि महाशय राजपाल ने अपने प्राणो का बलिदान कर दिया पर भेद नहीं खोला। उन्होने एक पुस्तक रगीला रसूल प्रकाशित की थी जिसमें लेखक का नाम नहीं था उन्होने लेखक को वचन दिया था कि आपका नाम नहीं बतायेगे यहा तक मुकदमा भी चला पर वहा भी उन्होने लेखक का नाम नहीं लिया और कहा यही मेरा कर्त्तव्य है श्री शास्त्री जी ने कहा कि आज हम सब आर्यों को महाशय राजपाल के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए कि आज हम बिना प्रयोजन बिना पूछे एक दूसरे की बात को कहते फिरते हैं उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए आर्य समाज का प्रचार करना चाहिए, शान्ति पाठ के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

—आत्म प्रकाश मन्त्री

शानदार परीक्षा परिणाम

मस चौधरी आर्य माडल हाई स्कूल धूरी का पाचवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा विक्रान्त यादव 408/450 (90.66%) अक लेकर ब्लाक में प्रथम आया है। जिसमें कुल 51 बच्चो ने परीक्षा दी। 80% से ऊपर 14 बच्चे 70% से 80% तक 28 बच्चे और 60% से 70% तक 9 बच्चे आये हैं।

मेधावी परिश्रमी छात्रों और योग्य अनुभवी स्टाफ बधाई के पात्र हैं। कृष्णा आर्या प्रिंसीपल

वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ द्वारा हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी आर्य समाज के छठे नियम के आधार पर वनवासी युवक युवतियो का वैचारिक क्रान्ति शिविर 15 मई से 30 मई 1999 तक आर्य समाज रानी का बाग दिल्ली 34 मे श्रीमती प्रेमलता खन्ना शास्त्री जी अध्यक्षता मे लगाया जाएगा।

शिविरार्थियो हेतु पालनीय नियम

1 शिविरार्थी की योग्यता नवीं कक्षा के ऊपर।

2 हल्का बिस्तर एव तेल साबुन इत्यादि साथ लावे।

3 शिविर में दिनचर्या एव अन्य नियमों का पालन करना अनिवार्य होगा।

4 नियमों का पालन न करने पर शिविर से वापिस भेज दिया जाएगा।

5 शिविरार्थी अपने आने की पूर्व सूचना लिखित रूप मे भेजें।

6 शिविरार्थियों को वापसी का मार्ग व्यय दिया जाएगा।

शिविर सयोजक 1 ब० जीववर्धन आर्य 2 श्री कपिल देव आर्य 3 श्रीमती ईश्वररानी जी मेहता

आर्य समाज का छठा नियम

ससार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

मण्डी डबवाली मे वेद प्रचार

आर्य समाज मण्डी डबवाली मे 30 अप्रैल से 2 मई 1999 तक बृहद यज्ञ व आध्यात्म प्रवचनो का आयाजन किया गया है इस अवसर पर महर्षि दयानन्द योगाश्रम दिल्ली के आचार्य श्री अर्जुन देव जी के उपदेश व बिजनौर के प रजेशार्य भजनोपदेशक के भजन हुआ करेगे

गत दिना भी वेद प्रचार का आयोजन किया था जो बडा सफल रहा है आशा है कि इस आयोजन मे भी सभी महानुभावों का सहयोग मिलेगा। डा अशोक आर्य

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामन्त्री सम्पादक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस/ऐलिवेट प्रिंटर्स जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ ।

सम्वत् 1972949099 रजि० नं० NP 17504/58

वर्ष 49 अंक 5, 19 वैसाख सम्वत् 2056 तदनुसार 29/2 मई 1999 दयानन्दाब्द 175 वार्षिक शुल्क 50 रुपये आजीवन 500 रुपये

मानव का ध्येय मोक्ष प्राप्ति

□ पं० वेद प्रकाश टंडन वाले 73/6 भार्गव कैम्प जालन्धर

पराचः कामाननुयन्ति बालास्ते
मृत्योर्यन्ति विततस्य पाशम्।
अथ धीरा अमृतत्वं विदित्वा
ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते ॥
कठोपनिषद् ४/२

बाला–अविवेकी पुरुष, अथ–और, पराचः – बाह्य, धीरा – विवेकी पुरुष, कामान् – विषयों के, ध्रुव – नित्य, अनुयन्ति – पीछे चलते हैं, अमृतत्वं – मोक्ष को, विततस्य–विस्तृत, विदित्वा – जानकर, मृत्योः – मृत्यु के, इह – यहां, पाश – पाश को, अध्रुवेषु – अनित्य पदार्थों में सुख, यन्ति – प्राप्त होते हैं, न प्रार्थयन्ते – नहीं चाहते।

कठोपनिषद् का यह श्लोक हमारे जीवन के मूल तत्वों की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित करता है। इन्सान रसिया है परन्तु इस का आनन्द कैसे प्राप्त किया जा सकता है, इस का कुछ इसे पता नहीं। इन्सान चाहता है मोक्ष परन्तु कर्म नरक की तरफ ले जाने वाले करता है। सदियों से विषयों के पीछे चलने की प्रवृत्ति ने इन्सान को मृत्यु के नजदीक ला खड़ा किया है। ऐसा भी नहीं कि हम इन विषयों को न जानते हों बल्कि जानते हुए भी हम गलती पर गलती किये चले जा रहे हैं और उस पर तुर्रा यह कि हम स्वयं की गलती को मानने को तैयार नहीं। एक शराब के आदी को बोतल के ऊपर लगी लेबल के येह शब्द पढ़ा दें कि "शराब पीना सेहत के लिए हानिकारक है" वह नहीं मानेगा, भले ही इस कुकृत्य में उस की जान ही क्यों न चली जाए। सत्य तो यही है कि इस भयानक जहर से जान चली ही जाती है। तेली के पास जो कपड़ा होता है जिस से तेल को वह साफ करता है उस कपड़े में तेल तथा मैल पर्याप्त मात्रा में चली जाती है तथा उस कपड़े में इतनी चिकनाई हो जाती है कि पानी उस पर ठहर नहीं सकता। इसी प्रकार विषयों की मैल इन्सान ने अपने अन्दर जमा कर ली है और इतनी मैल जमा कर ली है कि अब इन्सान को विषयों में ही मजा आने लग गया है जिसकी बदौलत संसार में बुरे कार्यों की बाढ़ सी आई दिखाई देती है। इस मैल को समाप्त करने का एक ही तरीका है कि हम जिस जिस काम को करें उसे सहर्ष स्वीकार करें अर्थात् मान ले कि हम ने ये ये कार्य किया है। ख्याल रखना कहीं बेहोशी में ही न मान लेना बल्कि पूरे होशोहवास में मानना। अक्सर आदमी मान तो लेता है कि मुझ से यह कार्य गलत हो गया है परन्तु थोड़े समय के पश्चात फिर भूल जाता है और फिर रोज की तरह उसी काम को करता चला जाता है ऐसा व्यक्ति जो भी काम करेगा वह बेहोशी में किया कर्म होगा। जो बेहोशी में कर्म करता है उसे उपनिषद् की भाषा में अविवेकी पुरुष कहा गया है। पशु व इन्सान में कुछ तो अन्तर होना चाहिए। यह कैसी विडम्बना है कि ईश्वर ने इन्सान को सब से सर्वोत्तम बनाया है परन्तु इन्सान अपने ही कर्मों से निकृष्टतम स्थिति में चला जाता है। जैसा कि हम सभी जानते है कि पशु भोग योनि में हैं परन्तु इन्सान तो सिर्फ भोग योनि मे नहीं। इन्सान को परमात्मा ने बुद्धि दी है। इन्सान पूरी सक्षमता के साथ सोच सकता है। स्वय के लिए सुख सुविधाओ के अम्बार लगा सकता है जैसा कि वर्तमान युग का इन्सान कर रहा है क्योंकि बुद्धि का काम तो सोचना है चाहे गलत हो या ठीक। गलत और ठीक के बीच का अन्तर तो इन्सान को स्वयं ही जानना है। सम्पत्ति शब्द बहुत प्यारा है। सम्पत्ति का अर्थ है सम+पत्ति अर्थात् सम का अर्थ है अच्छी प्रकार तथा पत्ति का अर्थ है गति। अब जिस सम्पत्ति की अच्छी गति नहीं होगी अर्थात् ठहराव ही ठहराव होगा उस सम्पत्ति से तो विपत्तिया ही इकट्ठी की जा सकती हैं। सम्पत्ति का ठहराव तब आता है जब हम मानने को तैयार नहीं होते कि हम सम्पत्ति इकट्ठी कर के गलती पर गलती करते चले जा रहे हैं। न मानने की प्रवृत्ति से अहकार पैदा होता है। रावण इस का जीता जागता उदाहरण है। रावण मानने को तैयार ही नहीं था कि उस ने सीता हरण कर के घोर अपराध किया है। बल्कि रावण तो सीता को बार बार यही कहता चला गया कि मैं तुझे अपनी पटरानी बनाऊंगा। रावण के गुरु शुक्राचार्य ने अपने अन्तिम प्रयास में रावण को यही सलाह दी थी कि "बस तुम सीता को लौटा दो ताकि अनावश्यक युद्ध समाप्त हो जाए" परन्तु रावण ने इस सलाह को भी मानने से इन्कार कर दिया। किसी युग में भी रावण जैसा व्यक्ति मानने को तैयार नहीं होगा क्यों कि मानने से अहकार को चोट पहुचती है जब अपने अहम् को चोट पहुचती है तो बहुत पीडा होती है असहनीय पीडा होती है। इस का इलाज है यह कोई लाईलाज बिमारी नहीं जिसे समाप्त न किया जा सके बस आप को एक कदम भर ही तो उठाना है कि आप जिस भी काम को करे मान ले।

काम को सिर्फ समय की कसौटी पर ही कसा जा सकता है ज्यों ज्यों समय गुजरता जाता है त्यों त्यों कर्म का परिणाम सामने आने लगता है हा यह जरूर है कि कुछ कार्यों का परिणाम तुरन्त ही मिल जाता है परन्तु ज्यादातर कार्यों का परिणाम लेट ही मिलता है और खास कर अच्छे कार्यों का नतीजा तो लेट ही निकलता है। इस लेट परिणाम मिलन का वजह से आप सब के मन में तरह तरह के ख्याल आने लगते हैं जिस से इस सोच को बल मिलता है कि अच्छे काम करने का फायदा ही क्या जिसका परिणाम पता नहीं कब मिले ? नहीं नहीं इस सोच को समाप्त करना होगा। हम अपने मन मे ठान ले कि परिणाम चाहे लेट मिले या न भी मिले परन्तु करने हैं हम को सिर्फ अच्छे ही कार्य। इस लिए अब समय आ गया है कि हम अपने द्वारा किये कामो को माने। जिस दिन हम ये मान गये उसी दिन हमारी विषय के पीछे दौड़ने की दौड समाप्त हो जाएगी और जिस दिन हमारी विषयो के पीछे चलने की प्रवृत्ति समाप्त हो गई उसी दिन से मृत्यु के बन्धनों को अच्छी प्रकार समझ पायेंगे। मृत्यु को समझने का मतलब है हमने मोक्ष को प्राप्त करने का रास्ता पा लिया।

वैदिक सिद्धान्त चर्चा–

अवतारवाद की समीक्षा

☐ श्री [illegible] देव पुरुषार्थी [illegible] [illegible] अनुपम नगर [illegible]

दैनिक ट्रिब्युन चण्डीगढ़ के २७ दिसम्बर ९८ के अंक में धर्मसंस्कृति पृष्ठ पर यश खन्ना नीर द्वारा लिखित एक लेख अवतार क्या लेते हैं प्रभु ? शीर्षक मे छपा है पढ़कर आश्चर्य हुआ कि लेखक महोदय ने अपने लेख म रामचरितमानस की छ पंक्तियों के अतिरिक्त कोई भी प्रमाण प्रभु के अवतार लेने का प्रस्तुत नहा किया। न ही इस बात का स्पष्ट किया गया है कि अवतार शब्द का तात्पर्य क्या है तथा किस कथित अवतार ने कब कैसे व किस अभिमानी असुर की हानि की थी ? प्रभु का स्वरूप क्या है वह कथित अवतार लिए बिना प्रभु दुष्टा का सहार क्यों नहीं करता

सम्पूर्ण ससार यह मानता है कि वेद ससार की प्राचीनतम विद्या है ग्रन्थ है। सम्पूर्ण हिन्दू समाज यह मानता है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है इस आधार पर हमारा निवेदन है कि यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के आठवे मत्र स पर्य्यगाच्छुक्रमकायम् के अनुसार ईश्वर सर्वव्यापक है सर्वथा शुद्ध व पवित्र है अकाय अर्थात् कायारहित शरीर के बिना है। वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से सर्वथा सत्य ज्ञान है क्योंकि ईश्वर कभी असत्य बात नहीं कहता वेद पहले भी थे अब भी हैं तथा भविष्य में भी रहेंगे तात्पर्य यह है कि ईश्वर भूत वर्तमान व भविष्यत् में तीनों कालो में शरार रहित ही रहेगा इसी मत्री के अनुरूप आदि शंकराचार्य ने भी ईश्वर के साकारत्व अर्थात् अवतार लेने पर वेदान्त दर्शन के 2 2 33 सूत्र नैकस्मिन्न सम्भवात् की व्याख्या करते हुए असहमति प्रकट की है। वे लिखते हैं एक ही वस्तु में एक ही समय में दो विरोधी गुण सर्दी गर्मी की भाति नहीं रह सकते। भाव यह है कि साकारता और निराकारता दो विरोधी गुण हैं [illegible] ईश्वर में नहीं हो सकते। अपने इसी विचारप्रवाह व जारी रखते हुए वे यह भी लिखते हैं कि शरीर सहित साकार होने पर संसारी पुरुष के समान भोगादि के प्रसग से ईश्वर होने पर उसमें भी अनीश्वरत्व हो जाएगा। आदि शकराचार्य के आधुनिक शिष्य इन स्पष्ट विचारों के होते हुए अविद्या अज्ञान व स्वार्थवश अवतारवाद का समर्थन करते हैं। यह गुरुद्रोह है।

आधुनिक विचारकों में योगी अरविन्द महर्षि दयानन्द सरस्वती साधु वासवानी स्वामी श्रद्धानन्द ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महात्मा ज्योतिबा फूले स्वामी विरजानन्द डॉ० हेडगेवार केशवचन्द्र सेन तथा अन्य अनेक के नाम उल्लेखनीय हैं। जिन्होंने अवतारवाद को वेदों उपनिषदों छ दर्शनों व वाल्मीकि रामायण के आधार पर अतार्किक असत्य युक्तिहीन स्वीकार किया है।

ईशोपनिषद् का प्रथम व यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का भी प्रथम मत्र यह है ईशा वास्य इद सर्व यत् कि च जगत्या जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्य स्विद्धनम् ।।

अर्थ–इस संसार के कण कण में ईश्वर का वास है। सर्वत्र विद्यमान सत्ता ही ईश्वर हो सकती है। जो सर्वत्र व्यापक नहीं होगा वह सर्वज्ञ नहीं हो सकता। जो सर्वज्ञ नहीं होगा वह न्यायकारी व सृष्टिकर्ता भी नहीं हो सकता। जो आकाशवत् सर्वत्र व्यापक अनन्त और सुख दुःख इत्यादि से रहित है वह छोटे से वीर्य गर्भाशय व शरीर में क्योंकर आ सकता है? आता जाता वह है जो एक स्थान पर विद्यमान है। जो अचल अदृश्य है व ससार का एक परमाणु भी जिसके बिना नहीं है उसका अवतार लेना एक बांझ के पुत्र का विवाह कर उसके पौत्र के दर्शन करने जैसा ही है। सर्वव्यापक सर्वनियन्ता सर्वरक्षक [illegible] प्रभु को एक शरीर में सीमित करना अर्थात् एक [illegible] पुरुष को ईश्वर मानना ऐसा ही है जैसे एक चक्रवर्ती सम्राट् को एक लघु डिब्बी में कैद करना यह प्रभु का घोरतम अपमान है अनन्त को सीमित करना है। अनादि को सादि बनाना है। निर्विकार को विकारयुक्त बनाना है।

अवतार शब्द का अर्थ है अवतरण नीचे आना उतरना। यह संस्कृत भाषा का पुल्लिंग शब्द है हम पूछते हैं कि ईश्वर जब सर्वव्यापक है जल थल आकाश वायु शरीरों के भीतर व शरीर के बाहर भी पहले से ही विद्यमान है तो कथित अवतार धारण करने के लिए वह कहां से उतरता है? जहा से उतर आया है क्या वहा फिर नहीं रहता ? एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना जाना तो उसका ही सम्भव है जो एक स्थान पर रहता है वह दूसरे स्थान पर आने जाने पर पहले स्थान पर नहीं रह पाता। सन्त तुलसीदास ने रामचरितमानस में स्वयं स्वीकार किया है–

बिनु पद चलै सुनै बिन काना।
बिन कर कर्म करै विधि नाना ।।
तन बिन स्पर्श नयन बिन देखा।
गृहै घ्राण बिन बास अशेषा ।।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु बानी वक्ता बड़ जोगी।
विधि अस भान्ति अलौकिक करनी।
महिमा जासु जाय नहीं बरनी ।।

सन्त तुलसीदास ने जिस वेद का अपने ग्रन्थ में यत्र-तत्र गुणगान किया है उसमें एक भी मन्त्र ऐसा नहीं है जिससे सिद्ध किया जा सके कि ईश्वर साकार भी होता है उसे अवतार भी लेना पड़ता है। तुलसीदास की जो छ पंक्तियां उपरोक्त लेख में उद्धृत की गई हैं वे वेद विरुद्ध व युक्तिहीन हैं। अत अमान्य हैं। शरीर धारण किए बिना ही जब प्रभु अपने सभी कार्य कर रहा है तो उसके शरीर धारण करने का क्या औचित्य है? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जो प्रभु बिना शरीर धारण किए [illegible] सकता है व प्रलयावस्था में संहार कर सकता है वह प्रभु एक सामान्य दुष्ट व्यक्ति का सहार करने के लिए शरीर क्यों धारण करेगा ? किसी पापी व दुरात्मा का सहार करना प्रभु के लिए बहुत सरल है। वह प्रभु उस पापी दुष्ट व दुरात्मा के शरीर में पहले से ही विद्यमान होने के कारण [illegible] कोई सामान्य दुर्घटना करके उसकी मृत्यु कर सकता है। साधारण तरीके से किसी पिता के वीर्य किसी माता के गर्भाशय में आकर व बाद में जन्म लेकर पच्चीस तीस वर्षों तक अपने शरीर में जवान व प्रतिष्ठित होकर फिर पापी को मारने में हार्ट अटैक या दुर्घटना करके पापी दुष्ट को मारने की अपेक्षा बहुत अधिक समय लगता है। तब तक पापी दुष्ट व दुरात्मा और कितने ही पाप कर लेता है व उसके पापों से अन्य जनता त्रसित दुःखी व परेशान भयभीत बनी रहती है। पापी को अधिक समय तक पापकर्म करने व पुण्यात्माओं को अधिक समय तक पापकर्मों के परिणाम भोगने के अवसर देना प्रभु की असुरों का कथित नाश करने की कथित घोषणा के सर्वथा विपरीत है।

उक्त लेखक ने प्रभु को इन्द्रियातीत अगोचर अजर आदि विशेषणों से भी अभिहित किया है। हम इसका पूर्णत समर्थन करते हैं क्योंकि ये गुण व विशेषण वेदानुकूल व युक्तियुक्त हैं परन्तु लेखक यह भी साथ लिख गए हैं कि प्रभु अवतार अर्थात् शरीर भी धारण करते हैं तो लेखक अपनी पहले लिखी बात को स्वयं ही अमान्य कर देते हैं। जो शरीर धारण करेगा वह प्रभु इन्द्रियातीत नहीं रहेगा। शरीरधारी सत्ता जरा को भी प्राप्त होगा। तब वह अजर नहीं रहेगा। अगोचर अव्यक्त को कहते हैं अप्रकट को कहते हैं। जो इन्द्रियों से अनुभव न हो सके परन्तु कथित अवतार शरीरधारी प्रभु तो साकार व्यक्त [illegible] इन्द्रियों से ही अनुभव [illegible] [illegible] [illegible] एक हा [illegible] [illegible] [illegible] व स्वयं लेखक के हित में नहा है

सम्पादकीय...

श्री वेद प्रकाश जी सरीन नहीं रहे

आर्य समाज के प्रसिद्ध व कर्मठ कार्यकर्त्ता धीरे धीरे जा रहे है और उनका स्थान लेने वाले उन जैसे कार्यकर्त्ता आर्य समाज मे नहा आ रहे यह चिन्ता का विषय है । गत वर्षों मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कई कार्यकर्त्ता हमसे सदा के लिए बिछुड गए हैं। नवाशहर के ही पहले श्रा प देवेन्द्र कुमार जी चले गए। उनके बाद श्रा के के सैंगर चले गए और अब श्री वेद प्रकाश जा सरीन चले गए। यह समाचार जब श्रा अनिल लडोईया ने 26 4 99 को साए दिया कि श्रा वेद प्रकाश जी सरीन नहा रहे उनका आज देहान्त हो गया तो सुन कर अत्यन्त दु ख हुआ शायद ही पजाब का कोई ऐसा व्यक्ति हो जो श्रा वेद प्रकाश जा सरीन को न जानता हो। वह जहा वर्षों आर्य समाज नवाशहर के अधिकारी रहे वहा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के भा अधिकारी व सदस्य रहे। नवा शहर मे स्थित आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से सम्बन्धित लग भग सभी शिक्षा सस्थाओ के वह अधिकारा रहे। प्रत्येक शिक्षा सस्था का उन्नति के लिए उन्होने कार्य किया और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को अपना पूरा पूरा सहयोग दिया। वह सभा अधिकारियो के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर चलते रहे। यदि किसी कारण से कभा उन्हे किसा शिक्षा सस्था का अधिकारी नहीं बनाया तो वह तब भा सभा को अपना सहयोग देते रहते थे। कहा मिलेगे ऐसे उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता जैसे श्री वेद प्रकाश जा सरान थे ।

श्रा वेद प्रकाश जी सरीन उस आर्य समाज के उत्सव पर व समारोह पर अवश्य जाते थे जिसकी उन्हे सूचना मिल जाती थी पजाब और पजाब से बाहिर कई शिक्षा सस्थाओं और आर्य समाजो के उत्सवो पर वह जाया करते थे। गुरुकुल कागड़ा विश्व विद्यालय के उत्सव पर वह अवश्य जाते थे और अकेले हा नहीं और आर्य बहनों व भाईयो को साथ लेकर पहुचते थे । गुरुकुल करतार पुर के उत्सव पर प्रतिवर्ष वह जाया करते थे। स्वय भी जाते थे व अपने परिवार को भा साथ लाते थे और अन्य आर्य समाज के सदस्यो को भा साथ लाते थे। गुरुकुल के लिए वह धन सग्रह भी करते थे अन्न भी भिजवाते थे। गुरुकुल करतार पु' से भी उनका विशेष स्नेह था। वह काम मे विश्वास रखते थे भले ही उसका फल उन्हे मिले या न मिले

श्रा वेद प्रकाश जी सरीन का सारा परिवार आर्य विचारो से ओत प्रोत है। उनके सुपुत्र उनके पद् चिन्हो पर चल रहे है। विशेष रूप से उनके सुपुत्र सुलक्षण सरीन जा आर्य समाज का बहुत कार्य कर रहे हैं। उनके सुपुत्र सुदर्शन कुमार सरीन भा आर्य समाज का कार्य कर रहे हैं उनके दूसरे सुपुत्र भी आर्य समाज के कार्य क्रमो मे उत्साह से भाग लेते है। यह सब श्री वेद प्रकाश जा सरीन की प्ररेणा का ही फल है कि उनका सारा परिवार आर्य समाज से जुडा हुआ है। श्री सरीन जा अपने पीछे पुत्र पौत्रो से भर पूर परिवार छोड गए हैं। वह एक नेक पुरुष थे और नेकी कमा कर ही ससार से गए हैं। यो ता ससार से सभी ने जाना हे ओर सभी जाएगे परन्तु कुछ लोग अपने पीछे कई नेक यादे छोड जाते हैं उनम से एक श्री वेद प्रकाश जी सरीन थे

श्री सरान जी का यज्ञ से बहुत प्यार था वह जहा भा यज्ञ होता था वहा अवश्य जाया करते थे। आगे बेठ कर मत्र पाठ किया करते थे कई बडे बडे यज्ञ स्वय करवा देते थे नवा शहर मे हाने वाले पारिवारिक सत्सगो मे वह अवश्य जाया करते थे । एक सप्ताह पूर्व तक वह यज्ञ व सत्सग मे जाते रहे बीमार होने पर भा उन्होने यज्ञ को नहा छोडा इसी से पता चलता हे कि यज्ञ प्रति उनका कितना श्रद्धा था।

जिस भी व्यक्ति को श्री सरीन जा का मृत्यु का समाचार मिला उसी ने कहा कि एक नेक इन्सान चला गया श्रा सरीन जी के चले जाने से आर्य समाज मे जो स्थान खाली हुआ है उसका पूर्ति होना असम्भव है। यह ठीक है कि उनके सुपुत्र भा आर्य समाज मे अच्छा कार्य कर रहे हे परन्तु फिर भी उनका स्थान ले पाना किसा के लिए सम्भव नहीं है जैसी उनमे आर्य समाज के प्रति लग्न था शायद ही किसी व्यक्ति मे होगी।

हम आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का ओर से आर्य विद्या परिषद पजाब की ओर से व पजाब का सभा शिक्षा सस्थाओ व आर्य समाजो का ओर से उन्हे अपना श्रद्धाजलि भेट करते हैं और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि प्रभु उस पवित्र आत्मा को सद्गति प्रदान करे ओर उनके सारे परिवार को तथा हम सब को उनके वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

हरबस लाल शर्मा
सभा प्रधान

अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट
मुख्य महामन्त्री

देश में मध्यावधि चुनाव

जिस का जनता का डर था वहा हुआ गत दस दिन म हम देश म जो राजनीतिक गतिविधिया चल रहा था उन का देख कर बुद्धिजावी लोग बहुत चिंतित थे भाजपा का ससद मे एकमत स पराजित हा जाना और सरकार का गिर जाना एक दुर्भाग्यपूर्ण बात थी गत 3 महाने स जा सरकार निरन्तर काम करता चला आ रही था और जिस पर जनता बहत मारा आशाए लगाये बैठा था उस का एकदम से इस प्रकार गिरा दिया जायगा एसा किसा ने साचा भा न था सुश्री जयललिता ने जब अपनी पार्टी का समर्थन वापिस ल लिया तो सरकार को बहुमत सिद्ध करन के लिय बार बार कहा जान लगा जिस म कइ राजनातिक पार्टिया सक्रिय हुई और उन्हान दावा किया था कि भाजपा का सरकार गिरत हा वह पाच मिनट म अपना नई सरकार बना लेगे परन्तु सभी बुद्धिजावी इस बात का जानत थ कि जा भा सरकार बनेगी वह कइ पार्टियो को साथ लेकर बनगा और जिस प्रकार म कइ पार्टिया वाला भाजपा की सरकार नहा चल सका उसा प्रकार नइ बनने वाली सरकार भा नहा चल सकेगा और मध्यावधि चुनाव भारत पर थोप दिये जायेंगे यही अब हुआ हे कांग्रेस ने गत दिना सरकार बनाने के लिय बहुत प्रयास किया परन्तु उस भी बहुमत प्राप्त नहीं हो सका सयुक्त मोर्चा के अन्य घटको ने भी सरकार बनाने का प्रयास किया परन्तु वह भी सफल नहीं हुए और अन्त मे राष्ट्रपति ने प्रधानमत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी स मत्रणा कर क लाक सभा भग कर दी ओर अब सभा राजनातिक दल आगामी चुनाव के लिये तैयारिया मे जुट गय

हमारे देश का दुर्भाग्य है कि यहा अनेको छोटी छोटा राजनातिक पार्टिया बन गइ हैं अर्थात राजनीति भा कइ टुकडो म बट गइ है और राजनाति के जो छोटे छोटे घटक बने हैं वह एक दूसरे को नीचा दिखाने में लग हुए हैं गत दिना भाजपा गठबन्धन मे जो राजनीतिक पार्टिया बधा थी उन मे से कई ने पिछले 3 महीना मे भाजपा सरकार को खुल कर कार्य नहा करने दिया इसके साथ हा कांग्रेस समाजवादी पार्टी और मार्क्सवादी पार्टिया ने एक ही राग अलापना ... हुआ था कि भारतीय जनता पार्टी साम्प्रदायिक पार्टी है और इस के राज्य म अल्पमत जातियो के लोग सुरक्षित नहीं है जब कि कहा भा देश म इन महीनो मे ऐसा स्थिति देखने को नहीं मिली जिस मे भाजपा का आर स कहा साम्प्रदायिकता प्रदर्शित की हो कइ राजनीतिक पार्टिया अपन आप का धर्म निरपेक्ष कहती हैं और इस का बार बार राग अलापती है सच्चाइ यह हे कि हमार देश के बहुत सारे लोगो का इस बात का भी पता नहा है कि धर्मनिरपक्ष कौन और कैसे माना जाता है हमार देश म तुष्टीकरण की नीति हे कुछ लोग मुसलमाना को खुश करन के लिय तथा इसाइया का खुश करन क लिय व कुछ अन्य मता क लोगो को खुश करन के लिये धर्मनिरपेक्ष का बात करते है सच्चाइ यह है कि धर्म से विहीन कोइ भी इन्सान नहा रह सकता धर्म एक ऐसा तत्व है जो प्रत्यक वस्तु के साथ में व प्रत्यक जाव क साथ जुडा हुआ है और धर्म के निकल जान पर उस वस्तु का और जाव का कोइ अस्तित्व नहा रहता अग्नि का धर्म प्रकाश देना और गर्मी देना है यदि अग्नि मे स गर्मी निकल जायेगी और प्रकाश निकल जायेगा ता उस के बाद केवल राख रह जायगा जिस का कोइ महत्व नहीं हागा इसा प्रकार से सूर्य का धर्म सारे ससार को प्रकाश देना और जीवन देना है इसी तरह स चन्द्रमा का धर्म सारे ससार को शातलता प्रदान करना और रस प्रदान करना हे पृथ्वी का धर्म सारे ससार को औषधिया वनस्पतिया और फल फूल और अन्न देना है जब सूर्य भी अपने धर्म को छोड देगा चन्द्रमा भी अपन धर्म को छोड देगा पृथ्वी भा अपने धर्म को छोड देगा जल भी अपने धर्म को छोड देगा अग्नि व वायु भी अपने धर्म को छोड देगे तो ससार कहा ठहरेगा जहा प्रत्यक जीव जन्तु का अपना धर्म है वहा प्रत्येक इन्सान का भी एक धर्म है जिसे हम इन्सानियत कहते हैं कर्त्तव्य परायणता कहत हे जब इन्सान अपने इन्सानपन को छोड देगा अर्थात जो उसका कर्त्तव्य है दूसरो की सेवा करना दूसरो को सहयोग देना सब के कल्याण के लिये कार्य करना ता ऐसा अवस्था मे वह इन्सान इन्सान नहा रहेगा राक्षस बन जायेगा अर्थात दूसरा को जावन देने के स्थान पर जीवन लेने वाला बन जायेगा धर्म के तत्व को समझ बिना हा बहुत से लोग धर्म का विरोध कर रहे हैं जो अच्छी बात नहा है हम मानते हैं कि साम्प्रदायिक होना गलत बात है किसी एक सम्प्रदाय क व्यक्तिया के लिये हा कार्य करना उन्हा के बारे म सोचना ठीक नहा है सभा क कल्याण के लिये प्रत्येक राजनीतिक पार्टी का कार्य करना चाहिये परन्तु जा दूसरा का साम्प्रदायिक कह रहे हैं हम उनको देख रहे हैं कि वह भा किसा एक सम्प्रदाय विशेष क लिय कार्य करत हुए दिखाइ पडते उनकी वकालत करते हुए दिखाइ पडते हैं शेष सम्प्रदाय वालो के लिये उन के हृदय मे कोई आस्था व श्रद्धा नहा है जो लाग दूसरो पर आरोप लगा रहे हैं अगर वह अपने आप को ध्यान से देख ता वह अपने आप को भा साम्प्रदायिक पायेंगे

इसलिये प्रत्यक राजनातिक पार्टी को सम्प्रदायवाद स ऊपर उठ कर प्रत्यक व्यक्ति के लिये प्रत्येक भारत वासा के लिए कार्य करना चाहिए चाहे वह किसी भा जाति से सम्बन्धित हा या किसी भी समुदाय से सम्बन्धित हो धर्म के नाम पर राजनीतिक पार्टियो का लोगो को गुमराह नहीं करना चाहिये और सम्प्रदाय वाद का जाल फेला कर लोगो को आपस मे लडाना नहा चाहिये

अब फिर जनता के हाथ में बागडोर आ गई है यह ठीक है कि इस चुनाव स भारत की जनता के ऊपर एक बहुत बडा आर्थिक बोझ पड रहा है लेकिन यदि जनता अपनी वोट का ठीक प्रयोग करे और उन्हीं लोगो को अपना वोट दे जो भ्रष्टाचारी नहीं है जो देश के हित म सोचने वाले जिनके हृदय म प्राणी मात्र के लिये श्रद्धा विश्वास हो और जो देश की एकता व अखण्डता के लिए कार्य करने वाले हों ऐसे नेक इन्सानो को अपना वोट देकर उन्हें लोक सभा में भेजे जैसे भी अच्छे या बुरे लोग चुन कर जनता लोक सभा मे भेजेगी वैसे ही हमारे देश के नेता होंगे और वैसी ही हमारे देश की सरकार होगी ।

धर्मवीर आर्य
सह सम्पादक

ईश्वर से मिलने के लिए कोशिश

गताक से आगे

किसी कवि ने कितने सुन्दर शब्दों मे कहा है

नशा पिला के गिराना तो सबको आता है।

मजा तो तब है जो गिरतो को थाम ले साकी ।।

और जिन्होंने दूसरो के दु ख में दुःखी होना सीखा वे लोग महान हो गये। स्वामी दयानन्द ने देखा कि दलित और पिछडी जाति के लोग समाज से अलग थलग होकर रह गये हैं। लोग उन्हे अछूत के नाम से पुकारने लगे हैं और वैसा ही व्यवहार करने लगे हैं यदि उनको कोई छू लेता तो वह अपने आप को अपवित्र समझता और फिर शुद्ध करने के साधन सोचता। मन्दिरा में इन लोगों का जाना बन्द था। स्वामी जी ने इस पीडा को महसूस किया। उनकी पीडा को अपनी पीडा जाना वेद और मनुस्मृति के प्रमाण देकर बताया कि यह लोग समाज के उतने ही माननीय भाग हैं जितने के ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य। यह अवस्था जन्म से नहीं कर्म से है। जो व्यक्ति पढाता है दान देता है दान लेता है शिक्षक है सस्कार करवाता है वह ब्राह्मण है चाहे किसी भी कुल मे पैदा हुआ हो। जो व्यक्ति देश की सेवा करता है फौज मे है सेना का अग है देश की रक्षा करता है वह क्षत्रिय है चाहे किसी भी घराने मे पैदा हुआ हो जो व्यक्ति व्यापार करता है खेती करता है वह वैश्य है चाहे किसी भी कुल मे उसका जन्म हुआ है और जो व्यक्ति सेवा करता है पढ न सका हो वह शूद्र है चाहे किसी घराने का हो । ब्राह्मण का पुत्र शूद्र हो सकता है शूद्र का पुत्र ब्राह्मण दलित वर्ग के लोगो का अपने भाइयों (अन्य जाति के लोगा) के बराबर खडा कर दिया स्वामी जी ने विधवा विवाह बाल विवाह आदि कुरीतियो के दुःख का माना और आवाज उठाई। स्त्रियो को शिक्षा न दिये जाने पर उन बेचारियों पर अन्याय और अत्याचार हो रहा था उसकी टीस को महसूस किया और फलस्वरूप आज नारी को वह उचित स्थान मिल चुका है जिसकी कि वह हकदार है। केवल मानव जाति के दुःखों को ही स्वामी जी ने नहीं बाटा बल्कि यदि कोई पशु भी दु खी होता तो भी स्वामी जी को दु ख होता था। एक बार एक बैलगाडी वाला बैलगाडी ले जा रहा था कि गाडी कीचड मे धस गई। बैल पूरा जोर लगा रहा था कि गाडी निकल आवे पर सब प्रयत्न निष्फल। गाडीवाला बैल को कोडे पे कोडे मार रहा था। पर बेचारा बैल पूरा जोर भी लगा रहा था और मार भी खा रहा था। सयोगवश स्वामी जी पास से गुजरे। बैल की अवस्था देख कर मन भर आया। आगे बढकर बैल को गाडी से खोल दिया स्वय बैल के स्थान पर जुत गये और गाडी को खींचकर बाहर निकाल दिया।

व्यास गुरु को मानने वाले लोग भी पूरी तरह सेवा मे जुटे रहते हैं परन्तु जो सेवाभाव ईसाई धर्म को मानने वालो का होता है। उतना किसी मे नहीं। मदर टेरेसा इतनी दीर्घायु होने के पश्चात भी इतनी सेवा कर रही थी कि वह अपने आप मे एक उदाहरण थी और सेवा के साथ साथ अपने धर्म का प्रचार भी कर रही थी। परन्तु खेद है कि आर्य समाज मे सेवाभाव की बहुत कमी आ गई। दूसरे के दु ख को जान कर उसे दूर करने का प्रयत्न ही सेवा है।

(५) प्राण लेना सरल है पर प्राण देना बहुत कठिन है आज विश्वभर मे जहा भ्रष्टाचार का बोलबाला है वहां पर हिसा भी जोरो पर है। राजनीति की सत्ता को हथियाने के लिए क्या कुछ हथकण्डे नहीं किये जाते। सरकार को बदनाम करने के लिए विरोधी दल गाडिया उलटवा देते हैं। पुलो को बमो द्वारा टुकडे टुकडे करवा दिया जाता है । बाजारों में बम रख दिये जाते हैं। हजारों की गिनती में लोग एक पलक के झपकते ही अपनी जान गवा बैठते हैं और फिर वही विरोधी दल शोकसभा करके मगरमच्छ के आसू बहाकर सरकार को गालिया निकालते हैं कि सरकार कानून की अवस्था सम्भालने में नाकाबिल है । भूल जाते हैं वह लोग कि हाथ से गई सत्ता तो वापिस आ जायेगी पर किसी मा की उजड़ी गोद फिर से न बसेगी किसी का उजडा सुहाग फिर से न बस सकेगा। बच्चों को पिता दुबारा न मिल सकेगा। बहन का भाई गया किसी का जंवाई गया किसी के सपनो का महल उजड गया तो किसी को रोटी के लाले पड गये । उन दरिन्दो से कोई यह पूछे कि एक मिनट मे हजारो व्यक्तियों के प्राण तो ले लिए क्या किसी मृतक के प्राण लौटा भी सकते हो यदि तुम में प्राण लौटाने की क्षमता नहीं शक्ति नहीं तो प्राण लेने का तुम्हें क्या अधिकार है। पजाब बडे कठिन दौर से गुजरा है। उत्तराखण्ड के नाम पर क्या कुछ नहीं हो रहा। कभी आसाम है तो कभी कोई प्रात। परन्तु यह भारत तक ही सीमित नहीं यही हाल पाकिस्तान मे है यही अफगानिस्तान मे। यही एशिया में यही योरोप में यही रूस में यही अमेरिका मे। हिंसा उग्रवाद आज विश्व की समस्याए बन चुकी हैं पर मानव मस्त है अपने नगे नाच को नाचने मे। परिणाम स्वरूप आज विश्व भर में अशान्ति है॥ हर मन अशान्त है। इसीलिए रक्तचाप का बढना घटना दिल का दौरा मानसिक तनाव और अवसाद आदि बीमारिया बढ रही हैं।

यह सब कुछ कैसे प्रारम्भ हुआ। पहले हिसा छोटे स्तर पर थी। लोग मासाहारी बने। जानवरो को मार कर शिकार करते थे और फिर उन्हे खाते थे। वे लोग कभी यह सोचते ही न थे कि जिस जीव की हत्या कर रहे हैं उस जीव मे जान है। जब उस की जान लेते हैं तो उस को भी उतना ही कष्ट पहुचता होगा जितना हमें पहुचता है और जब व्यक्ति सात्विक भोजन नहीं खाता तो रजोगुण और तमोगुण का बढना स्वाभाविक है। ऐसे मनुष्यो के लिए हिंसा एक स्वभाव बन जाती है और वह बीज एक वृक्ष के रूप मे उभर कर अब सामने आ चुका है। इसीलिए अब विदेश वाले गहरी सोच में डूब गये हैं कि इस समस्या का क्या समाधान है। कभी वे लोग भारत मे आकर किसी शान्ति मिशन के सदस्य बनते हैं कभी किसी भारतीय सम्प्रदाय में प्रवेश पाते हैं। आज विदेश में शाकाहारी भोजन को उत्तम भोजन के रूप मे मान्यता दी जा रही है।

केवल परमात्मा प्राणाधार है वह भी है अर्थात् ससार को पैदा करने वाला है। प्राण लेना और प्राण देना उसी के हाथो में है। प्राण लेना तो बहुत सरल है पर प्राण देने मे हम सहायता तो कर सकते हैं पर है यह बहुत कठिन काम सडक पर एक व्यक्ति सर्दी से ठिठुर रहा है । उसके पास धनराशि नहीं कि एक कम्बल खरीद ले। जिस दिन कडाके की सर्दी पडी उस का प्राणान्त निश्चित है । उसे एक कम्बल देकर हम उसे अवश्य प्राण दे सकते हैं । हस्पताल मे एक बीमार व्यक्ति मर रहा है केवल इसलिए कि उसके पास दवाई के लिए पैसे नहीं। हम उसके लिए दवाई उपलब्ध करवा कर उसे निश्चित रूप से प्राण देने उसके प्राण बचाने के पात्र बन सकते हैं किसी भी व्यक्ति के दु ख को बाटना उस व्यक्ति को एक नया जीवन देना है। कभी किसी बूढे व्यक्ति को जो सडक पार करना चाह रहा हो पर सडक पर चल रहे ट्रैफिक के कारण पार करने मे असमर्थ हो तो हाथ पकड कर सडक पार करा दो फिर देखो तुम्हारे मन को कितनी शान्ति मिलती है पर है यह काम कठिन क्योंकि किसको आजकल समय है ऐसे कामो के लिए ।

पर यदि ऊचा उठना है तो सरल काम छोड कठिन काम ही करने पड़ेंगे। ईश्वर प्राप्ति का यह पहला सोपान है। कोशिश करो और इस सोपान पर चढ जाओ

उदीयमान आर्य प्रतिभाओ के लिए स्वर्ण अवसर

कल्याण के मार्ग पर चलें

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्या चन्द्र मसाविव

□ प्रो० चन्द्र प्रकाश जी आर्य अध्यक्ष हिन्दी विभाग दयाल सिंह कालेज (करनाल)

सत्संगति की बड़ी भारी महिमा है। इससे मनुष्य की बुद्धि की जड़ता दूर होती है। सत्संगति मनुष्य को सत्य बोलना सिखाती है। हमारे पापों को दूर करती है। मन को प्रसन्न करती है। सत्संगति हर प्रकार से मनुष्य का भला करती है। संस्कृत का कवि कहता है:–

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यम्
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।।

संसार में मनुष्य को माता पिता मिल सकते हैं। पुत्र और भाई मिल सकते हैं। सुखदाई पत्नी मिल सकती है, राज मिल सकता है। हाथी घोड़े तथा मनोवांछित वस्तुएं मिल सकती हैं। संसार में सब प्रकार के सुख मिल सकते हैं किन्तु सज्जनों की संगति दुर्लभ है। संत सुन्दर दास कहते हैं:–

तात मिले पुनि मात मिले सुत भ्रात मिले जुवती सुखदायी। राज मिले गज बाजि मिले सब साज मिले मनवांछित भाई। लोक मिले सुरलोक मिले विधिलोक मिले बैकुंठहु जाई। सुन्दर और मिले सब ही सुख सन्त समागम दुर्लभ भाई।।

सत्संगति के बिना मनुष्य को विवेक नहीं होता। सत्संगति सब आनन्द मंगल का मूल है। सब फलों को सिद्धियों को देने वाली है। तुलसी कहते हैं :–

सतसंगति मुदमंगल मूला।
सोई फल सिधि सब साधन फूला।

यदि मनुष्य अच्छी संगति में लग जाता है तो उसका कल्याण हो जाता है, उसका लोक परलोक सुधर जाता है। यदि दुर्जनों के संग में पड़ जाता है तो उसका पतन हो जाता है। संस्कृत का कवि कहता है–

यदि सत्संग निरतो भविष्यसि भविष्यसि।।
अथ दुर्जनसंसर्गे पतिष्यसि पतिष्यसि।।

परन्तु संगति किनकी करनी चाहिए? आज जगह-जगह सन्तों के डेरे लगे हैं, स्थान-स्थान पर संतों के मेले लगे हैं। हरिद्वार ऋषिकेश आदि स्थानों पर कितने ही आश्रम, कितने ही केन्द्र वहां बने हुए हैं। तीर्थों और मेलों में संतों की भारी भीड़ मिलती है। अब तो सन्त लोग भी योजनाबद्ध तरीके से समूह के रुप में लश्कर बनाकर नगरों में आ रहे हैं। उनके प्रचार तथा उनकी व्यवस्था के लिए, पंडाल के लिए, उनके स्वागत के लिए, सजावट के लिए, फिर उनके लिए अलग से नगर बसाने के लिए लाखों रुपया खर्च किया जाता है और फिर लाखों रुपया उनको भेंट किया जाता है। टी. वी. दूरदर्शन कैमरों द्वारा उनके भाषणों का प्रसारण होता है। फिर उनके भाषणों के वीडियो कैसेट बनाकर बेचे जाते हैं। क्या ये सब सन्तों के लक्षण हैं। संस्कृत का कवि कहता है कि ये सब साधु नहीं है। क्योंकि प्रत्येक पर्वत पर मणि नहीं मिलती, प्रत्येक हाथी से मौक्तिक या मुक्ता प्राप्त नहीं होता। इसी प्रकार साधु और चन्दन सब जगह नहीं होते–

शैले-शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे। साधवो हि न सर्वत्र-चन्दनं न वने वने।।

आज सन्तों की गद्दियां अधिक हैं जगह-जगह मठ हैं और अखाड़े हैं किन्तु संतभाव कम है। जिनके पास माया, धन-सम्पत्ति अधिक है, वही बड़ा सन्त है। अतः हमें संत असत की पहचान करनी होगी। इस बारे में वेद कहता है कि हमें ऐसे लोगों की संगति करनी चाहिए जो दानी हो, अहिंसक हो तथा ज्ञानी हो।

पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि
(ऋ० 5/51/5)

सत्संगति की पहली शर्त यह है कि हम दानियों का संग करें। ऐसे लोगों का संग करे जो कुछ दे सकते हों। संग्रह करने वाले न हो धन सम्पदा इकट्ठी करने वाले न हों। दान कई प्रकार के होते हैं– धन दान, विद्यादान आदि उनमें विद्यादान, ज्ञानदान, ब्रह्मदान सर्वश्रेष्ठ माना गया है–

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते।

प्रकृति निरन्तर दान देती है। सूर्य चन्द्रमा प्रकाश देते हैं वृक्ष फल देते हैं। नदियां जल देती हैं, गाएं दूध देती है। संस्कृत का कवि कहता है–

परोपकाराय वहन्ति नद्यः
परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः
परोपकारार्थमिदं शरीरम्।।

स्वयं वेद कहता है कि सौ हाथों से कमाओ और हजार हाथों से दान करो–

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर

दान देते समय किसी प्रकार का घमण्ड या मैं की भावना न हो। कवि रहीम के शब्द में–

देने वाला कोई और है देता जो दिन रैन। लोग भ्रम मुझ पर करें तातें नीचे नैन।।

सत्संगति की दूसरी शर्त यह है कि हम अहिंसक (अघ्नता) लोगों का संग करें। महात्मा बुद्ध ने अहिंसा का सन्देश दिया। महावीर स्वामी ने अहिंसा का उपदेश दिया। ईसा ने अहिंसा का दान दिया। ऐसे लोगों की संगति हम करें। जितने भी संत महात्मा हैं वे सब अहिंसा का उपदेश देते हैं। आज सारा संसार हिंसा और द्वेष की अग्नि में जल रहा है। व्यक्ति व्यक्ति का शत्रु बना हुआ है। संसार में विभिन्न रुपों में हिंसा का तांडव जारी है। लाखों लोग हिंसा की बलि चढ़ चुके हैं। इसके अतिरिक्त कितने ही अन्य जीवों की हिंसा मनुष्य प्रतिदिन कर रहा है। अतः हिंसा और हिंसक लोगों को त्यागना होगा। ऐसे लोगों की संगति हमें करनी चाहिए जिनके मन मे अहिंसा और मैत्री की भावना हो। इसी लिए अहिंसा को परम धर्म कहा गया है:–

अहिंसा परमो धर्म :

वेद के अनुसार सत्संगति की तीसरी शर्त यह है कि हम उन लोगों की संगति करें जो विद्वान ज्ञानी हों (जानता) ज्ञान की शास्त्रों, धर्म ग्रन्थों में बड़ी भारी महिमा है। आहार, निद्रा और सन्तान पैदा करना तो पशुओं में भी मिलता है, ज्ञान के कारण ही मनुष्य की विशेषता है। ज्ञान के बिना मनुष्य पशु के समान है–

आहारनिद्रा भय मै थुनं च सामान्य मेतत्पशुभिर्नराणाम्।
ज्ञानं हि तेषामधिको विशेषो ज्ञानेन हीनाः पशुभिःसमानः।

गीता (4/34) में कहा है कि ज्ञान के समान संसार में और कोई भी वस्तु पवित्र नहीं है–

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्र मिह विद्यते है–

ज्ञान के बिना मनुष्य सारी आयु भटकता रहता है। धार्मिक आडम्बरों तथा मिथ्या माया जालों में उलझा रहता है। ऐसे ही अज्ञानी लोगों के बारे में कबीर दास ने सावधान किया था–

बहुत मिले मोहिनेमी धर्मी, प्रात करें असनाना। आतम छोड़ि पाषाणे पूजें, तिनका थोथा ज्ञाना। पीपल पाथर पूजनलागे तीरथ-बरत भुलाना। माला पहिरे टोपी पहिरे, छाप तिलक अनुमाना। साखी शब्दै गावत भूले आतम खबर न जाना।

ऐसे अज्ञानी लोगों का संग मनुष्य को नहीं करना-चाहिए जो ज्ञान का दम्भ भरते हों। दिखावा करते हों परन्तु स्वयं माया से अभिभूत हों। ऐसे लोगों का संग करने से बाद में पछताना पडता है। कबीर कहते हैं

घर-घर मंत्र जो देत फिरत है, माया के अभिमाना। गुरुवासहित शिष्य सब बूड़े अंतकाल पछिताना।।

अतः हम ऐसे लोगो का संग करना चाहिए जो वास्तव मे ज्ञानी हो। आत्मा परमात्मा के बारे में कुछ जानते हों, जो हमारे मोह और अज्ञान को मिटा सकते हों। गीता (15/5) में कहा है कि जो मान और मोह से रहित हैं, संग दोष राग द्वेष आदि से परे हैं, जिन्होंने कामनाओं को त्याग दिया है और जो नित्य आत्म अध्यात्म ज्ञान मे लगे रहते हैं। सुख दुःख मान अपमान आदि द्वन्द्वों से मुक्त हैं वे ही ब्रह्मज्ञानी हैं और वे ही अमरपद-मोक्ष को प्राप्त करते हैं :–

निर्मानमोहाः जितसंगदोषा अध्यात्मनित्य विनिवृतकामाः
(गीता 15/5)

ऐसे ही ज्ञानी लोगों के लिए कबीर ने कहा था कि आत्म ज्ञानी संत कोई होता है जो काम, क्रोध लोभ से रहित हो तथा जो तीन गुणों से परे हो। कबीर कहते हैं

तेरा जन एक आध है कोई काम क्रोध अरु लोभ विवर्जित हरिपद चीन्है सोई। राजस तामस सातिग तीन्यू ये सब तेरी माया चौथे पद को जे नर चीन्है, तिन्हि परम पद पाया। असतुति निंद्या आसा छोड़े तजै मान अभिमान। लोहा कंचनसमि करि देखै ते मूरति भगवाना। जिन्सा अरु अभिमान रहित है, कहे कबीर सो दास।।

अर्थात् ज्ञानी संत कोई विरला ही होता है, जो काम, क्रोध, लोभ से रहित है, वही हरिपद। ईश्वर को प्राप्त करता है। वह रजस, तमस आदि तीनों गुणों से परे है। जिसने निन्दा स्तुति मान-अपमान को छोड़ दिया है। जिसने कामनाओं को त्याग दिया है जो लोहे और

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सुरक्षित भविष्य का आधार-प्रतिभा अन्वेषण

□ डॉ० पुष्पा शास्त्री जी संचालिका मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी

आर्य समाज का वर्तमान दशा म स्वार्थी धन लालुप बचका का गड कर सभी निष्ठावान आर्य दु खा चिन्तित व सन्तप्त हैं । अपने मन्ताष के लिए भले ही हम ऊपर म उल्लसित दाखते है तथा ऊचे उच स्वरा मे अपना सफलताआ का उद्घाष भी करते हे पर अन्त म हम शून्यता व अभाव का अनुभव करते हुए अवसन्न हे । इसका कारण है कि भावी पीढा हमार हाथ से बाहर हो रही है। आर्य समाज ने नूतन प्रतिभाआ के अन्वेषण परिरक्षण एव प्रात्साहन का ओर ध्यान हा नहीं दिया। फलत आज आर्य समाज का घर भावी पाढी (युवा शक्ति) से रिक्त हा रहा हे। इस समय जा युवा शक्ति अविकसित रूप मे कही दृष्टिगाचर हा भी रही है उससे काम नहा चलन वाला ।

यह हमसे अनजाना पाप/अपराध/भूल हुइ है। इमका परिमार्जन अभी सभव हे कि हम नूतन प्रतिभाआ की खोज करे उन्हे आगे बढने के साधन दे ग्राम ग्राम नगर नगर घर घर मे पुकार करे कि आय समाज रुपी घर का उदीयमान प्रतिभाआ से भरना है। धन सग्रह क साथ साथ हम नूतन प्रतिभाओ [illegible] माग कर। उनका स्नेह व लगन [illegible] करे आर्य जन इधर [illegible] गे ता कुछ ही वर्षो मे [illegible] विश्व का अग्रणी बन [illegible] उत्साह नज आज व [illegible] कण्वन्ता विश्वमार्यम के का आर ताव्र गति से बढ [illegible]

[illegible] म आर्य जन बने बनाए [illegible] का आर आकृष्ट हाने [illegible] चुके हैं नव निर्माण [illegible] आर उनकी रूचि नही हे। [illegible] क मार्ग का अवराध हटा कर सहारा दकर उसे आगे बढा [illegible] आर्यो की प्रवृत्ति नहीं रही है। काई सकट मे उलझन मे फसा है [illegible] ता सब उस से दूर दूर ही [illegible] उसका विनाश तटस्थ भाव स [illegible] रहगे पर सहयाग का आगे नहीं आयेंगे। इसी से अनेक प्रतिभाए नष्ट हो गई हैं हो रही हैं । इस आलस्य प्रधान घातक मनोवृत्ति को त्याग कर अब पुरुषार्थ भाव को ग्रहण करना हागा। पैनी दृष्टि से देखना हागा जहा कही भी प्रतिभाशाली युवा अथवा उदीयमान प्रतिभा दिखाई दे उस का चयन कर ओर ससाधन देकर उसे प्रशस्त करे आज कितने चाटुकार निकम्मे विद्यार्थी पूर्ण सुविधाआ का उपभोग कर रहे हैं। और विद्याध्ययन मे परिश्रम न करके नकल व घूस देकर उत्तीर्ण हा जाते हैं तथा ऊची ऊची उपाधिया प्राप्त कर विभिन्न हथकडो से नौकरिया भी प्राप्त कर लेते है परन्तु प्रतिभा शाली बच्चे व युवा साधना के अभाव मे भटकते ही रह जाते हैं। मन मसोस कर रह जाते हैं। इन उदीयमान प्रतिभाआ मे न जाने कितने दयानन्द श्रद्धानन्द गुरुदत्त विद्यार्थी रवीन्द्र नाथ टैगोर मनीषी योगी छिपे हैं जो ससाधना के अभाव मे अविकसित ही रह जात हैं। जो कोई एकाध अपनी अदम्य सकल्प शक्ति से आगे बढ जाता है तो उसे या तो पीछे ही धकेलने का प्रयास किया जाता है या उसी पर सन्तोष करके उसके यशोगान मे लगे रह जाते हैं इससे नूतन प्रतिभाओ की लम्बी परम्परा नही चल पा रही है। समाज का जीवन नदी के प्रवाह की भान्ति निरन्तर गतिशील होता है। नदी का जल बह जाता है दूसरा जल आता रहता है जिससे वह सदा परिपूर्ण रहती है ठीक यही स्थिति समाज की है। नई प्रतिभाओं के न आने से समाज रुपी नदी सूख जाती है वर्तमान मे आय समाज की ऐसी ही अभाव मय स्थिति हुई जा रही है।

आर्यों को अब सभलना है उदीयमान प्रतिभाओं को आर्य समाज से जोडना है। यही वास्तविक निधि है इसकी उपेक्षा अत्यन्त है। क्षतिकर होगी और हमे नष्ट ही कर देगी।

परमाणु-शक्ति सम्पन्न भारत

□ डॉ० [illegible] कुमार शास्त्री वेद व्याकरण[illegible] एम. ए पी. एच. डी., [illegible] विभाग, [illegible] कालेज जालन्धर

पोखरन अणुविस्फोटों से भारत मान बढा है ।
अग्नि–अग्नि का सफल परीक्षण शक्ति प्रमाण बना है ।
हथियारों की दौड़ नहीं यह प्रश्न सुरक्षा का है ।
दादा बनना नहीं क्षेत्र का प्रश्न अस्मिता का है ।।
नहीं समय के साथ स्वय को राष्ट्र ढाल जो पाते ।
दुनिया की ठोकर खाते है और पीछे पछताते हैं।
लाठी जिसके हाथ उसी की भैस हुआ करती है ।
बली भुजाओं मे ही वीरो विजय हुआ करती है ।।
सीमा पर जब शत्रु अडा हो भजन न गाए जाते ।
प्रबल प्रहारक क्षमता वाले अस्त्र चलाए जाते ।
घर मे आग लगी होने पर कुए न खोदे जाते।
शत्रु आक्रमण से पहले हथियार सजोये जाते ।।
अणु अस्त्रों वाले देशो से भारत घिरा हुआ है ।
भारत फिर अणु–शक्ति बना तो क्या कुछ बुरा हुआ है
आत्म सुरक्षा का भी हमको क्या अधिकार नहीं है ?
हम भी स्वाभिमान से जीए क्यों स्वीकार नहीं है ?
परमाणु अस्त्रों का अपने अन्दर ढेर लगाकर ।
सी टी बी टी जाल घिनौने पर चाहते हस्ताक्षर ।
उनकी मक्कारी के है ये अग्नि पोखरन उत्तर ।
आत्म सुरक्षा पर ही करते है विकास सब निर्भर ।।
पाक चीन या अन्य देशों की आखे न फिर ललचाए ।
युगोस्लाविया समझ न हम पर कोई आख उठाए ।
भारत के अस्तित्व अस्मिता पर फिर आच न आए ।
इसी लिए पोखरन अग्नि–अग्नि के विस्फोट कराए।
स्वय युद्ध करने की कोई अपनी चाह नहीं है
थोपा युद्ध न लडने का भी निज इतिहास नहीं है।
प्रतिबन्धों की धमकी से यह भारत नहीं झुकेगा ।
आत्म सुरक्षा साधन मे निर्भय निर्बाध बढेगा ।

(पृष्ठ 5 का शेष)

स्वर्ण को बराबर समझता हा जो तृष्णा से रहित है। ऐसे लोग वास्तविक सत है। ये साक्षात मानो भगवान की मूर्ति हैं। ऐसे लागो का सग हमे करना चाहिए। सत्सगति के लिए कल्याण मार्ग के लिए एक शर्त और है जिसका वेद मत्र के आरम्भ मे उल्लेख है और वह है हमे कल्याण मार्ग पर स्वस्ति पथ पर निरन्तर चलना होगा–स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्या चन्द्रमसौ इव। सूर्य और चन्द्रमा की तरह जिस प्रकार सूर्य और चन्द्रमा निरन्तर अबाधगति से अपने मार्ग पर चल रहे हैं और प्रकाश द्वारा अग्नि द्वारा ताप द्वारा शीतलता द्वारा सारे ससार का कल्याण कर रहे हैं उसी प्रकार हमें निरन्तर स्वस्ति पथ कल्याण मार्ग का अनुसरण करना होगा। यह नहीं कि कुछ दिन सत्सगति। कल्याण के मार्ग पर चल पडे और फिर छोड दिया। इस मार्ग पर लगातार सतत चलना होगा तभी जाकर सत्सगति का लाभ हागा। सूर्य ओर चन्द्रमा से हम बहुत कुछ सीख सकने हैं । ये हमारे पथ प्रदर्शक हैं। तभी तो वेद मे ही अन्य कहा है कि हम मैं और आप सूर्य ओर चन्द्रमा की तरह अपने व्रत पर चलेगे । व्रत का नियम का पालन करे गे–

सूर्यो व्रतपते व्रत चरिष्यामि
चन्द्रो व्रतपते व्रत चरिष्यामि।

अत मे आओ हम सूर्य चन्द्रमा की तरह निरन्तर स्वस्ति पथ कल्याण मार्ग पर चले स्वस्ति पन्थाम् (ऋ. 5//51/5)

करना चाहो तो कुछ ऐसा करो

खाना चाहो गम को खाओ आसू पीकर मस्त रहो गम सहने की चीज है बन्धु गम दूबे से नहीं कहो थूक सको तो गुस्सा थूको गुस्सा प्रेम घटाता है गुस्सा करने वाले से हर कोई कटता जाता है डरना हो तो बुरे कर्म से डरना सीखो मतवाले उनको चैन कभी नहीं मिलता जिनके होते मन काले बोल सको तो हिन्दी बोलो अपनी भाषा है सारा जग ही हिन्दी बोले हर हिन्दु की अभिलाषा है झुकना हो झुको गुणी पर गुणी न ऐंठ दिखाता है पेड पर जब फल बढ़ता है वह त्यो त्यो झुकता जाता है गाना हो तो प्रभु गुण गाओ प्रभु गुणगान में आनन्द घना जीभ न घसती ओम् नाम से विवेक न होता सत्संग बिना खोल सको तो पहले खोलो बिन खोले कुछ मत बोलो मौन रहो जितना सम्भव हो जितना बोलो मीठा बोलो। करना हो करो भूल का पश्चाताप। नहीं झिझको दुःख तकलीफ हस कर झेलो उसे देख कर मत सिसको। जल्दी सोकर जल्दी उठते जो पाते हैं समृद्धि तन और मन होते हैं बल शाली धन की होती अभिवृद्धि। छूना चाहो हर रोज सवेरे मात पिता के चरण छूओ लेना हो तो आशीर्वाद लो सब को झुक कर नमन करो। यह जीवन है सुन्दर इससे प्यार करो।

अन्त समय तक उस परमेश्वर को याद करो

जनक रानी आर्या मंत्री
स्त्री आर्य समाज
महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार)
लुधियाना

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा इन्टरनेट पर

आज के आधुनिक युग में कम्प्यूटरीकरण से पूरा विश्व इतना छोटा हो गया है कि हर व्यक्ति इन्टरनेट और ई मेल से जानकारी एव सम्पर्क करता है। इसी आशय से टकारा स्थित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय के पूर्व आचार्य सत्यदेव विद्यालंकार जी के सुपुत्र श्री विनोद शर्मा जो कि अमरीका में बसे हुए हैं ने इस कार्य को पूर्ण किया है। आर्य जनता को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा Tankar Com पर उपलब्ध है।

राम नाथ सहगल मंत्री

वार्षिकोत्सव एवम् महायज्ञ

आर्य समाज जन्ता कालोनी लाजपत नगर सोनीपत विश्व कल्याण की भावना तथा आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक आनन्द की प्राप्ति हेतु, दिनाक 24 मई 1999 से 30 मई 1999 (सोमवार से रविवार) तक वार्षिकोत्सव एवम् सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन कर रहा है। इस यज्ञ के ब्रह्मा पद को आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान आचार्य ओम् दत्त जी शर्मा (मेरठ) सुशोभित करेंगे। इनके अतिरिक्त प्रवक्ता सुश्री निष्ठा जी वेदालंकार (कानपुर) भजनोपदेशक श्री दिनेश दत्त जी दिल्ली वेद आर्य वीरांगना कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली) पधार रहे हैं। श्री मदन मोहन जी सलूजा एवम् श्री लाजपत राय आर्य दिल्ली यज्ञ के संयोजक होंगे। श्री हरिचन्द स्नेही वैदिकाध्यक्ष प्रान्तीय आर्य वीर दल हरियाणा एवम् उपमंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा हरियाणा स्टेज सैक्रेटरी के रूप में कार्यक्रम का सचालन करेंगे। दिनाक 30 5 1999 को यज्ञ की पूर्णाहुति एवम् इसके पश्चात् ऋषि लंगर का आयोजन किया जाएगा।

हरि चन्द स्नेही

संस्कार प्रशिक्षण शिविर

आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ में नि शुल्क ध्यान योग वैदिक दम्पत्ति निर्माण संस्कार प्रशिक्षण शिविर दिनाक 20 जून रविवार को साय 4 बजे शिविर उद्घाटन होगा। रविवार 27 जून को प्रात 10 बजे समापन समारोह होगा। इस शुभावसर पर आश्रम भव्य बाल कल्याण सदन उद्घाटन (असहाय निराश्रित) बालकों का प्रवेश होगा। योग साधना निर्देशक एव यज्ञ ब्रह्मा पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी मुख्य मिष्ठाता आत्म शुद्धि आश्रम। शिविराध्यक्ष श्री प विद्यासागर जी शास्त्री। शिविरार्थी योगदर्शन संस्कार विधि सत्यार्थ प्रकाश वस्त्र अनुसार बिस्तर साथ लेकर आयें। भोजन एव निवास का प्रबन्ध आश्रम की ओर से निःशुल्क होगा।

आचार्य देव स्वामी आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामन्त्री सम्पादक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

सवत् 1972949099 रजि० नं० NP 17504/58

वर्ष 49 अंक 6, 26 वैशाख सम्वत् 2056 तदनुसार 6/9 मई 1999 दयानन्दाब्द 175 वार्षिक शुल्क 50 रुपये आजीवन 500 रुपये

परमेश्वर की प्रार्थना और आचमन

ले० डा० नरेश कुमार शास्त्री वेदव्याकरण-साहित्याचार्य एम.ए, पी-एच.डी. अध्यक्ष-संस्कृत विभाग, कन्या कालेज, जालन्धर

शास्त्रकारों का मत है कि प्रत्येक धार्मिक कृत्य के आरम्भ में आचमन अवश्य करना चाहिए। धार्मिक कृत्य किसी स्वीकृत परम्परा का निर्वाह नहीं होता अपितु व्रत को धारण करना होता है। और नित्य प्रति करने से ये व्रत या संकल्प उत्तरोत्तर दृढ़ होते हैं तथा जीवन में आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इसीलिए ऋषिवर दयानन्द ने भी सन्ध्या के आरम्भ में आचमन का विधान किया है-"ओं शन्नो देवी. ." इस मन्त्र से परमेश्वर की प्रार्थना करके तीन आचमन करें। यदि जल न हो तो न करें"-पंचमहायज्ञ विधि।

ऋषि ने यहां आचमन के विधान के साथ विकल्प भी प्रस्तुत किया है "यदि जल न हो तो न करें"। यह विकल्प ऋषि ने इसलिए दिया है क्योंकि सन्ध्या मुख्य है और आचमन आदि क्रियाएं गौण हैं, सहायक मात्र हैं। अत: जलादि के अभाव में कहीं मुख्य सन्ध्या ही न छोड़ दी जाए, इसलिए ऐसा विधान किया है।

इसी प्रकार अग्निहोत्र के आरम्भ में भी आचमन का विधान करते हुए ऋषिवर कहते हैं।

"अपने-अपने जलपात्र से सब जनें जो कि हवन-यज्ञ अर्थात् अग्निहोत्र करने को बैठे हों, वे इन मन्त्रों से तीन-तीन आचमन करें अर्थात् एक-एक से एक-एक बार आचमन करें।" (संस्कारविधि)

आचमन का प्रयोजन-मनुष्य सांसारिक प्राणी है, क्रतु है (ओं क्रतो स्मर-यजु० 40 17)। सांसारिक काम धन्धों में लगा रहता है, असत्य भाषणादि करता है, जिससे मनुष्य अमेध्य-यज्ञ के अयोग्य अर्थात् अपवित्र हो जाता है।

"अमेध्य वै पुरुषो यदनृतं वदति"-शतपथ ब्रा० 1.1.1 1

आचमन का जल साधक को आन्तरिक शुद्धि प्रदान करता है।

(तेन पूति: अन्तरत:-शतपथ ब्रा० 1.1 1.1)। शका हो सकती है कि जल तो बाह्य शुद्धि करता है, आन्तरिक शुद्धि तो सत्यभाषण से होती है।

"अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मन: सत्येन शुध्यति"-मनु०5 109

शंका उचित है । स्नान का जल बाह्य शुद्धि ही करता है। परन्तु आचमन का जल आन्तरिक शुद्धि प्रदान करता है। मन में अनुकूलता के लिए जल का आचमन आवश्यक है। जल मेध्य के लिए हितकर भी है, और पवित्र भी उपासक व्रती जब मेध्य-पवित्र जल को हथेली में लेकर आचमन करता है तो उसके अन्त:करण में यह भाव पैदा होता है कि मैं भी मेध्य-यज्ञीय हो कर, पवित्र होकर व्रतोपासना करुं-

"मेध्यो वा आपो मेध्यो भूत्वा व्रतमुपायानीति, पवित्रं वा आप: पवित्रपूतो व्रतमुपायानीति, तस्माद् अप उपस्पृशति।"-शतपथ ब्रा० 1 1.1.1

मन में क्रोधादि दुर्भाव उठ रहे हों, मन अशान्त हो तो व्रतोपासना में मन नहीं लगता। जल पावक है, कण्ठ मार्ग से हृदय तक पहुंचते ही शान्ति प्रदान करता है। यह आन्तरिक शान्ति या मन की अनुकूलता ही आन्तरिक शुद्धि है। जो आचमन का प्रथम प्रयोजन है।

साधक जब व्रतोपासना में प्रवृत्त होता है तो एक प्रकार से वह स्वयं को संसार से तोड़ कर परमार्थ से जोड़ने का प्रयास करता है। आचमन इन दोनों अवस्थाओं में एक भेदक रेखा खींचता है। पावक शीतल जल का आचमन करते समय साधक अपने अन्त:करण में इस भावना को दृढ़ करता है कि मैं अब पवित्र होकर, सांसारिकता से ऊपर उठकर परमार्थ जगत् में प्रवेश करने लगा हूं। सभी धार्मिक कर्त्तव्य भावना से जुड़े होते हैं। आचमन करते समय ऐसी भावना रखने से उदात्तता आती है तथा साधक की साधना सुगम होती है तथा आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति और अधिक होती है। यह आचमन का द्वितीय प्रयोजन है।

आचमन का तृतीय प्रयोजन कण्ठस्थ कफ की निवृत्ति है। कफ निवृत्ति होने पर ही प्राणायाम आदि क्रियाएं सुविधा पूर्वक की जा सकती हैं। इसी के साथ पावक जल का आचमन स्वास्थ्य के लिए भी हितकारी होता है। इसीलिए महर्षि मनु भोजन के आरम्भ और अन्त में आचमन का विधान करते हैं। (मनुस्मृति 2 53)

परमेश्वर की प्रार्थना-सृष्टि का प्रत्येक छोटा-बड़ा पदार्थ परमात्मा के विराट् रूप का अंग है। उनमें जल व आप· भी हैं। यजुर्वेद (32 1) में 'आप.' को परमात्मा का वाचक माना गया है-'सा आप: स प्रजापति:'। इस प्रकार 'आप:' एक साथ ही जल और ब्रह्म दोनों का वाचक है। आप: ज्योति: इस: अमृत, ब्रह्म, भू:, भुव: स्व: तथा ओम्-ये शब्द परस्पर समान अर्थ के वाचक हैं-"ओं आपो ज्योतिरसोऽमृत ब्रह्म भू: स्वरों स्वाहा" तै० आरण्यक 10/27 इनमें ब्रह्म का वाचक जहां 'आप:' पद है, वहीं रस भी है। तैत्तिरीयोपनिषद् (ब्र० वल्ली, अव-7) में कहा है-

"रसो वे स:। रस ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति"

अर्थात् वह ब्रह्म निश्चय ही रस रूप है। इस रस को पाकर ही उपासक आनन्दी होता है।

निघण्टु (1 12) में 'रस' शब्द जल के लिए पढा गया है। इस प्रकार आचमन में प्रयुक्त जल जहां पूर्वोक्त प्रयोजनों का साधक है वहीं परमात्मा के रसरूप, सर्वव्यापकत्व (आप्लृ व्याप्तौ) का द्योतक होता हुआ परम शान्ति तथा परमानन्द को प्राप्त कराने वाला भी है। और ऐसा भाव ग्रहण करने पर ही परमेश्वर की प्रार्थना और आचमन दोनों परस्पर युक्ति संगत सिद्ध होते हैं। उस परम रस परब्रह्म की उपलब्धि ही सब प्रकार की प्यासों को बुझाने में समर्थ है।

व्यक्ति की पहचान

☐ ले श्री आनन्द अभिलाषी जी आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर

हर व्यवसाय या धधे के लोगो की पहचान है किसी की भाषा से किसी की वेश भूषा से किसी की पहचान चिन्ह से। यदि एक व्यक्ति ने काला काट पहन रखा है काली टाई लगी है और ऊपर काला गाऊन है ता झट से पता चलेगा कि यह व्यक्ति एक वकील या न्यायाधीश है। यदि किसी व्यक्ति ने सफेद काट पहना है तो पहचान आ जाएगी कि यह डाक्टर है । नर्सें भी सफेद कपडे पहनती हैं परन्तु उनकी वेशभूषा डाक्टरो की वेशभूषा से भिन्न है और झट पता चल जायेगा कि यह व्यक्ति डाक्टर है या नर्सिंग स्टाफ का सदस्य । पुलिस कर्मचारियो की भी खाकी वर्दी है डाक कर्मचारियो की भी परन्तु इनमें इतना अधिक भेद है कि बिना समय नष्ट किये बिना बुद्धि पर जोर डाले निर्धारित हो जाता है कि व्यक्ति पुलिस मे है या डाक सेवा मे। यदि खाकी रग कुछ और गहरा हो तो पता चलता है कि व्यक्ति फौज मे है। और यह भी ज्ञान हुआ कि फौज की थल सेना के विभाग मे है क्योकि वायु सेना की पोशाक और है और जल सेना की और । यात्रा के पश्चात जब यात्री बाहर आता है तो उसे यह पूछने की कभी आवश्यकता नहीं होती कि उस का सामान कौन बाहर निकालेगा। लाल कपडे पहने व्यक्ति को स्वय कुली कह कर पुकार कर सामान बाहर निकलवा लेता है।

केवल व्यवसाय या धधे के लोक ही अपनी विशेष वेश भूषा से पहचान नहीं बनाते बल्कि स्कूलों के विद्यार्थी भी अपनी पहचान बनाने के लिए विशेष प्रकार के कपडे पहनते हैं। विद्यार्थी को केवल देखने से पता चल जाता है कि वह स्कूल का छात्र है । हर स्कूल ने अपने ढग की वर्दी बनाई हुई है। किसी की सफेद तो किसी की नीली इत्यादि । इसी प्रकार राजसी पार्टीयों ने भी अपनी पहचान कपडो से बनाई हुई है। यदि खद्दर के कपडे हैं सर पर गाधी टोपी है तो समझ लें व्यक्ति काग्रेस पार्टी का है। यदि सिक्ख भाई समुदाय से सम्बन्धित व्यक्ति है तो वह प्राय काली पगडी या सफेद पगडी बाधेगे। यदि उसकी नीली पगडी है तो समझा जा सकता है कि वह अकाली दल का सदस्य है । यदि एक व्यक्ति सफेद कमीज आधी बाहों वाली पहने है और नीचे खाकी निकर है तो उस व्यक्ति का राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ का सदस्य होना निश्चित है। हर राजसी पार्टी ने हर देश ने हर सम्प्रदाय ने हर धार्मिक सस्था ने अपनी पहचान बनाये रखने के लिए अपना ध्वज बनाया हुआ है जो कि उनके कार्यालयों मे लहराता है।

धार्मिक व्यक्ति भी अपनी वेश भूषा से अपनी पहचान बनाये रखते हैं। पीत वस्त्र धारी युवक झट से पहचाना जाएगा कि किसी गुरूकुल का ब्रह्मचारी स्नातक है। इसी प्रकार पचास वर्ष से ऊपर यदि किसी ने पीत वस्त्र धारण किये हुए हैं तो वह वान प्रस्थी जाना जाता है। यदि उस ने गेरुए वस्त्र पहने हैं तो उसे सन्यासी जान कर श्रद्धा से उसके प्रति गर्दन झुक जाती है। कुर्ता लाँग वाली धोती माथे पर तिलक झट से अनुमान हो जायेगा कि वह व्यक्ति ब्राह्मण है। तुर्रेदार टोपी से मौलाना ही पहचाने जायेंगे। यहूदियों तुर्को की अपनी वेश भूषा है। गुरु नानक देव जी के अनुयायियों का पगडी बाधने का ढग और निहग सिक्ख की अपनी ही पहचान है और गिरजाघर के पादरी की अपनी।

केवल वेशभूषा के माध्यम से ही नहीं अपितु और भी साधन हैं पहचान के। भाषा भी एक साधन है पहचान का कि यह व्यक्ति हरियाणवी है पजाबी है सिन्धी है लखनवी है इत्यादि। शरीर की बनावट भी पहचान का एक अन्य साधन है। मध्यम ऊचाई का गोरा सफेद व्यक्ति अग्रेज है और लम्बा व्यक्ति जो गोरे रग का है अमेरिकन है । चीन के लोगों की अपनी ही आकृति है तो जापान के लोगो की अपनी। कई बार वातावरण भी पहचान करा देते हैं। शहनाई बज रही हो तो निश्चित है कि कोई शादी विवाह का उत्सव है। यदि लोग चुप करके किसी घर से बाहर आ रहे हों जमीन पर दरी बिछी है रोने चीखने चिल्लाने की आवाजे आ रही हो तो मान लो कोई व्यक्ति ससार छोड कर चला गया। यदि लोगों ने अपनी कमीज पर या कोट पर या कुर्ते पर काले बिल्ले लगाये हों तो समझा जा सकता है कि किसी निर्णय के प्रति रोष प्रकट किया जा रहा है।

कई बार विशेष प्रकार के चिन्ह पहचान का काम देते हैं। एक छात्र विद्यालय में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त करता है । उपहार रूप में उसे स्वर्ण पदक दिया जाता है या एक व्यक्ति किसी सेना में या पुलिस में कोई भी श्लाघा योग्य कार्य करता है तो उसे कोई पदक प्रदान किया जाता है तो ऐसा पदक स्वय मे एक पहचान बन जाता है कि व्यक्ति के कार्य की अधिकारियों द्वारा सराहना की गई है । क्लब एव रोटरी क्लब के सदस्य एक विशेष चिन्ह को अपने वस्त्र पर लगाते हैं जिस से पहचान आ जाती है कि व्यक्ति किस सस्था का सदस्य है। सरकार अपने कर्मचारियो को पहचान पत्र बना कर देती है और अब तो चुनाव आयोग ने भी हर मतदाता के लिए पहचान पत्र का बनाया जाना अनिवार्य कर दिया है।

सक्षिप्त रूप मे यदि कहा जाये कि सब की पहचान है किसी की वस्त्रों से किसी की भाषा से किसी की चिन्ह से तो किसी की पहचान पत्रो से किसी की शरीर की आकृति से तो किसी की वातावरण की स्थिति से । पर मानव की क्या पहचान है? कैसे ज्ञात हो कि यह व्यक्ति मानवता के निर्धारित स्तर पर पूरा उतरता है या नहीं ।

फरिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना । मगर इस में लगती है मेहनत ज्यादा। कैसे पता चले कि व्यक्ति पूर्ण रुपेण आर्य है या नहीं। आर्य का अर्थ समाज का सदस्य नहीं । आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ पुरुष। और अनार्य का अर्थ है असुर वृत्ति का व्यक्ति । दानव व्यक्ति। अनार्य शब्द बिगड कर अनाडी बन गया है। आर्य की क्या पहचान है।

आर्य की एक बडी पहचान है कि व्यक्ति के स्वभाव से कृतज्ञता हो। किसी के लिए उपकार को कभी न भूले। किसी से लिये कर्जे को लौटाने की भावना से ओत प्रोत हो। यह नहीं कि जो कर्जा ले लिया उस को भूल गये। पराया धन कभी अपना नहीं होता। कुछ ऐसे भी व्यक्ति हैं जो कहते हैं I do not pay Interest because it is against my Principal and I do not pay Principal because it is against my interest

इस वाक्य में केवल शब्दों का हेर फेर है। अंग्रेजी भाषा में Principal का अर्थ मूलधन भी है और नियम भी है । Interest का अर्थ है ब्याज भी और हित भी है। कहने वाला यह कहता है कि मैं सूद या ब्याज इसलिए नहीं देता क्यों कि यह मेरे नियम के विरुद्ध है। और मूलधन इसलिए नहीं लौटाता क्योंकि इस का लौटाना मेरे हित मे नहीं है। अर्थात वह व्यक्ति कर्जा लेकर वापिस करना ही नहीं चाहता। इसी प्रकार एक व्यक्ति किसी से एक हजार रुपये उधार ले गया। वापिस करने को नहीं आता था। कई बार माग की गई पर बात वहा की वहीं तक ही रही । एक दिन कर्जा वसूल करने के लिए वह व्यक्ति उस के घर गया तो कर्जदार ने कहा कि चलो आप का कर्जा अभी चुकाता हू। तुम मेरे साथ चलो। दोनो साथ साथ हो लिए। चलते चलते जगल आ गया। एक स्थान पर ठहर गये। कर्जदार ने जेब से रस्सी निकाली और पेड पर बाधने लगा। दूसरे ने पूछा भाई क्या करते हो । उसने कहा तुम्हारा कर्जा वापिस नहीं किया जाता । शर्म बहुत आती है । गले मे रस्सी डाल कर आत्म हत्या करना चाहता हू। अब कर्जा वापिस लेने वाले ने सोचा कि यदि यह मर गया तो इस की मौत मेरे गले पडे जायेगी । पुलिस कहेगी कि यह कर्जा लौटा न सका इसलिए साहूकार ने गले में फदा डाल कर उसे जान से मार दिया। कत्ल का मुकदमा पल्ले पड जायेगा। उसने कहा भई कोई बात नहीं एक महीने बाद दे देना दो के बाद या छ महीने के बाद दे देना। उसने कहा कि मैं तो इस योग्य हू ही नहीं कि कर्ज लौटा सकू। अतत यह समझौता हुआ कि चलो तुम आधा दे दो और आधा तुम्हे छोड दिया। दाना जगल से वापिस आ गये। अब जब घर के निकट पहुचे तो कर्जदार ने फिर कहा कि भाई सुन लो मैंने तुम से एक हजार कर्ज लिया था। उस ने कहा हा और सुनो मैंने पाच सौ लौटा दिया। उसने फिर कहा हा। और फिर बाकी अब केवल पाच सौ ही रह गये। साहूकार ने कहा हा भई हा तेरा हिसाब ठीक है। अब तो केवल पाच सौ ही रह गये हैं पर पाच सौ कब लौटायेगा । उस कर्जदार ने उत्तर दिया। भाई क्यो चिता करते हो। जैसे मैंने पहले पाच सौ लौटा दिये उसी तरह समय आने पर बाकी पाच सौ भी लौटा दूगा। यह है आज कल के लोगों की वृत्ति।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय...

यह वाक्य सत्य है कि संगठन में शक्ति है। इस वाक्य को हमारे देश के विद्वानों ने, ऋषियों ने, मुनियों ने तथा समाज के देश हित चिन्तकों ने, अनेकों बार दोहराया है। विघटन में दुःख है, क्लेश है, संगठन में सुख है, प्यार है, स्नेह है, कर्त्तव्य परायणता है।

आर्य समाज के विद्वानों ने आर्य समाज की स्थापना से ही देश वासियों को संगठन का पाठ पढ़ाया है क्योंकि आर्य समाज वेद का प्रचार करता है और ऋग्वेद में एक पूरे सूक्त का नाम ही संगठन सूक्त है। इसलिए आर्य समाज में सबसे बड़ा संगठन देखने को मिलता था। आर्य समाज न प्रान्तवाद को मानता है न जातिवाद को मानता है। आर्य समाज भारत देश में बसने वाले सभी जातियों के लोगों को एक सूत्र में बान्धना चाहता है। सारे समाज में एकता स्थापित करना चाहता है। आर्य समाज सब के लिए कार्य करता है। बल्कि आर्य समाज तो सारे संसार की एकता चाहता है, सार्वभौमिकता स्थापित करना चाहता है।

ऋग्वेद के संगठन सूक्त के दूसरे मन्त्र में कहा गया है :- संगच्छध्वं सं वदध्वं स वो मनासि जानताम्। देवा भागं यथापूर्वे सं जानानां उपासते।

परमात्मा संसार के सब लोगों को कहता है कि मिलकर चलो, मिलकर एक जैसी वाणी बोलो, अपने मनों को मिला कर चलो। अर्थात् परमात्मा कहता है कि सभी लोगों को संगठित होकर पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक कार्य करने चाहिएं। परिवार में सब कार्य आपस में मिलजुल कर करें। एक दूसरे को सहयोग दें ,एक दूसरे को साथ लेकर चलें। समाज में भी समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलें। मिलजुल कर सामाजिक कार्य करें। परमात्मा कहता है कि धार्मिक कार्य भी सभी मिलजुल कर करें, धर्म के नाम पर आपस में कोई विवाद न करें, धर्म के रहस्य को समझें धर्म क्या है इसे जानें। वेद में धर्म की जो परिभाषा दी है उसे समझें। धर्म आपस में लड़ना नहीं सिखाता धर्म तो आपस में इन्सानों को जोड़ता है। जो धर्म मानवों को आपस में लड़ाता है वह धर्म नहीं है। परमात्मा कहता है राजनैतिक कार्य भी मिलजुल कर करो। देश की, राष्ट्र की, उन्नति के लिए प्रत्येक मानव को कार्य करना चाहिए। प्रत्येक मानव को अपनी उन्नति से पहले राष्ट्र की उन्नति के लिए विचार करना चाहिए, फिर अपनी उन्नति के सम्बन्ध विचार करे। यदि हमारा देश सुरक्षित होगा, रक्षित होगा, उन्नत होगा तो हम स्वयं ही सुरक्षित होंगे और उन्नत होंगे।

आज इसके विपरीत हो रहा है आज हमारे परिवार भी बिखर रहे हैं, भाई-भाई, बाप-बेटा, पति-पत्नी, सास-बहू सभी में तनाव बढ़ता जा रहा है। विघटन पैदा होता जा रहा है। आज विरला ही कोई परिवार होगा जिसमें संगठन होगा, आपस में स्नेह होगा, सहयोग होगा। भाई-भाई आपस में टकरा रहे हैं, बाप बेटे में ठनी हुई है, पति-पत्नी, सास-बहू के तो आप जितने चाहे झगड़े प्रतिदिन सुन लें। समाज में आज भी भेद-भाव चल रहा है। हमारे देश का सामाजिक ढांचा लड़खड़ा गया है प्रत्येक सामाजिक घटक विघटन की ओर जा रहा है।

धार्मिक रूप में तो हमारे देश की स्थिति बड़ी दयनीय हो गई है। इतने धर्म हमारे देश में हैं जिनको गिना जाना भी कठिन है। धर्म के नाम पर बहुत से आडम्बर चल रहे हैं। सभी मत, सम्प्रदाय अपने आपको धर्म माने बैठे हैं। धर्म के नाम पर बड़े-बड़े अत्याचार हो रहे हैं। कई धर्माचार्यों को धर्म के स्वरूप का भी पता नहीं। जब महर्षि दयानन्द सरस्वती ने काशी के पण्डितों से पूछा था कि धर्म के लक्षण बताओ तो कोई नहीं बता पाया था और अधर्म के लक्षण पूछे तब भी सभी मौन रह गये थे। यही स्थिति आज के धर्माचार्यों की हो रही है। कुछ लोगों को पता ही नहीं कि धर्म और अधर्म क्या होता है। हमारे देश की बहुत बड़ी संख्या ऐसी है जिसे धर्म का कुछ पता नहीं है। हमारे देश की कई राजनैतिक पार्टियों को भी यह पता नहीं कि धर्म क्या होता है वह बिना कुच्छ सोचे समझे बिना कुछ जाने धर्म निर्पेक्षता का नारा लगा रही हैं। क्या बनेगा इस देश का जिस देश के लोगों को धर्म की भी जानकारी नहीं है।

राजनैतिक रूप में तो हमारा बहुत ही बुरा हाल है। गत दिनो जो कुछ ड्रामा हमारे देश के राजनैतिक लोगो ने किया है उसे देख कर तो प्रत्येक देश भक्त व्यक्ति की आंखों में आंसू आ गए। जैसे हमारे देश में अनेकों धर्म बन गए हैं वैसे अनेकों राजनैतिक पार्टिया बन गई हैं। प्रत्येक पार्टी एक दूसरी पार्टी को नीचा दिखाने में लगी हुई है। देश की किसी को भी चिन्ता नहीं है केवल अपनी पार्टी के लिए ही प्रत्येक राजनैतिक व्यक्ति कार्य कर रहा है। आज की राजनीति दिशा हीन हो गई है। राजनैतिक लोग अपने उद्देश्य से भी भटक गए हैं। यह लोग मिल कर आज अपने ही देश के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। एक अच्छी भली सरकार चल रही थी परन्तु स्वार्थी राजनैतिक लोगों ने उसे गिरा दिया और देश को मध्यकालिक चुनाव की ओर धकेल दिया और देश में अनिश्चितता सी पैदा कर दी। आज राजनीति में अपराधी तत्व हावी हो रहे हैं धार्मिक प्रवृति के लोग राजनीति से दूर भाग रहे हैं अधार्मिक लोग व अपराधी लोग आगे आ रहे हैं। इससे देश का भविष्य और बिगड़ेगा तथा बिगड रहा है।

आज हमारे देश की जनता में भी संगठन नहीं है। छोटे-छोटे राजनैतिक दलों को अपना वोट देकर जनता स्वयं देश मे अनिश्चितता पैदा कर रही है। आज हमारे देश की जनता कई भागों में बटी हुई है और राजनैतिक लोग इस विघटन का लाभ उठा रहे हैं। हमारे देश की जनता को एकता के सूत्र में बन्ध जाना चाहिए। प्रत्येक नागरिक यह निश्चय करे कि वह अपना वोट किसी भी भ्रष्ट राजनैतिक व्यक्ति को नहीं देगा। वह अपना वोट उसे ही देगा जो भारत देश की उन्नति के लिए व संगठन के लिए कार्य करेगा और जो सदाचारी होगा। जनता को राजनैतिक पार्टियों के जाल से बाहिर निकलना चाहिए तभी देश बच सकेगा। हमारे लिए देश सर्वोपरि होना चाहिए कोई राजनैतिक पार्टी नहीं। यह मत देखें कि किस पार्टी का व्यक्ति खड़ा है बल्कि यह देखें कि कौन खड़ा है। यदि इस बार भी किसी एक राजनैतिक पार्टी को बहुमत नहीं मिला तो पहले वाली स्थिति देश की होगी।

इसलिए संगठन की सभी क्षेत्रों में आवश्यकता है क्योंकि संगठन में ही शक्ति है। हमारे देश की सारी जनता को आपसी सभी मत-भेद भूला कर एक हो जाना चाहिए और देश के हित में विचार करना चाहिए और सभी क्षेत्रों में संगठन पैदा करना चाहिए तभी देश को बचाया जा सकेगा।

धर्मदेव आर्य
सहसम्पादक

सूचना

ऑल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन, ऊना रोड, होशियारपुर निर्धन, अनाथ तथा योग्य विद्यार्थियों से छात्रवृत्ति हेतु प्रार्थना पत्र आमन्त्रित करता है। प्रार्थना पत्र 15 जून 1999 तक अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य अथवा स्थानीय आर्य समाज के प्रधान द्वारा तस्दीक करवा कर हरदयाल सिंह प्रधान, मिशन के पास भेजे जा सकते हैं।

धर्मदेव आर्य
सहसम्पादक

महिलाओं की वर्तमान स्थिति

□ श्रीमती [illegible] नई दिल्ली-३

बीसवीं सदी में हमने बहुत अधिक तरक्की की है, परन्तु बहुत अधिक ह्रास भी इस सदी में हुआ है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि पिछले पूरे मानव इतिहास में वस्तुएं इतनी तेजी से नहीं बदली, जितनी तेजी से वे बीसवीं सदी में बदली हैं। अभी कुछ ही वर्ष पूर्व १०४ वर्ष की एक अमेरिकी महिला का इंटरव्यू लिया गया, तब उसने बतलाया कि जब वह बच्ची थी, उस समय साइकिल का भी पूरी तरह से अविष्कार नहीं हुआ था और आज मनुष्य १२०० किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ने की क्षमता रखता है। यही नहीं, वह चांद पर हो आया है और मंगल ग्रह पर भी अपना यान उतार चुका है।

हमें रहना तो धरती पर ही है

लेकिन मनुष्य को रहना तो धरती पर ही है। जहा एक ओर मनुष्य की औसत आयु बढी है और उसके स्वास्थ्य की सुरक्षा करने के लिए एक से एक औषधियां और यंत्र मौजूद हैं, वहीं यह भी सत्य है कि शहरों में बेतहाशा भीड है और लोगों में असहायता, अप्रासंगिकता, महत्वहीनता, उपभोक्तावाद, नीरसता एव भावशून्यता भी घर कर ले रही है। गावों में वनों की कटाई की वजह से जलस्तर घट रहा है और पशुओं के लिए चारे की भी कमी हे। अक्सर पानी और चारा लाने की जिम्मेवारी महिलाओं की ही होती है और वे दूर दूर इसके लिए भटकती हैं। यह स्थिति गढवाल, और कुमाऊ से लेकर हिमालय के अन्य इलाको में भी पाई जाती हैं।

असली सुख दुर्लभ

परिवार केवल पति-पत्नी और दो बच्चों तक सीमित हो गये हैं, जिसकी वजह से उनमे सवेदनशीलता और संवाद की कमी हो चुकी है, जिसे घर-घर मे उपलब्ध कम्प्यूटर, टेलीविजन की उपस्थिति ने और गहरा कर दिया ह। इस प्रकार की जीवन पद्धति से पैसा भले ही अधिक प्राप्त हो जाये, लेकिन असल सुख, जो कि व्यक्ति समाज में रह कर और उसमें सक्रिय भागीदारी करके पाता है, वह मिलना कठिन होता जा रहा है।

महिलाओं की स्थिति में भी काफी अन्तर्विरोध मौजूद है। एक ओर शहर में उनसे उम्मीद की जाती है कि वे अच्छी अच्छी नौकरियों [illegible] कार्यरत रहेंगी, दूसरी ओर यह [illegible] आशा रखी जाती है, वे सद्गृहिणी [illegible] घर मे हर प्रकार की सुख [illegible] उपलब्ध करायेंगी, भले ही [illegible] लिए उन्हें अपना पूरा समय [illegible] करना पड़े। आवश्यकता इस [illegible] की है कि जब महिला परिवार [illegible] आय में बराबर से योगदान देती है, तो घर के कामकाज में भी उसे दूसरे सदस्यों से मदद मिलनी चाहिए।

ग्रामीण महिलाओं की कठिनाइयां

अब तक भी ७५ प्रतिशत भारत गांवों में निवास करता है। गांव में खुली हवा आदि का तो सुख है, परन्तु वहां शिक्षा की कोई सुविधा नहीं है, आवागमन के साधन अधूरे हैं। महिलाओं की प्रगति में समूचे समाज का विश्वास न होने के कारण उन्हें छोटी-छोटी बाधाओं से गुजरना पड़ता है। आज स्थिति यह है कि कुल में से ४३.२ प्रतिशत बालिकाएं ही प्राथमिक शिक्षा के लिए दाखिला लेती हैं, जबकि माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक के लिए यह प्रतिशत ३९ से ३५.३ प्रतिशत है। यद्यपि १९८०-८१ के मुकाबले में सुधार हुआ है, परन्तु यदि हम इसी गति से चलते रहे, तो सम्भवतः ४० वर्ष और लग जायेंगे, जबकि हमारी १०० प्रतिशत बच्चियां प्राथमिक स्कूलों में दाखिला ले सकेंगी। एक और चिन्तनीय विषय है कि स्कूलों में दाखिला लेते ही ३७.८ प्रतिशत बच्चियां प्राथमिक विद्यालयों से भी निकल जाती हैं तथा माध्यमिक विद्यालय में यह दर और भी अधिक है-५३८ पतिशत । जबकि हाई स्कूल में यह दर ७३.८ प्रतिशत है। इस प्रकार से मोटे तौर पर यह देखा गया है कि हाई स्कूल तक शिक्षा अर्जित करने वाली बालिकाओं की सख्या ३ से ५ प्रतिशत से अधिक नहीं है। इसका परिणाम यह होता है कि स्कूल के पश्चात् उच्चतर शिक्षा ग्रहण करने के लिए बहुत ही कम बालिकाए आगे आ पाती हैं। यही कारण है कि इंजीनियरिंग में बालिकाओं का प्रतिशत करीब १३ प्रतिशत है, शिक्षा में ४३ २ प्रतिशत, वाणिज्य में २५ प्रतिशत विज्ञान में ३३ ३ प्रतिशत एवं कलाओं में ३९ ८ प्रतिशत है और चिकित्सा में उनका प्रतिशत ३३ ९ अर्थात् एक तिहाई है।

रोजगार के साधन नहीं

महिलाएं काम करने को तो इच्छुक होती हैं, किन्तु इसके लिए उन्हें साधन नहीं मिलते। भारत में लगभग ३५ प्रतिशत परिवार गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करते हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार की जीविका चलाने के लिए २० प्रतिशत परिवारों में महिला का ही बडा योगदान होता है। अतएव उसे काम भी करना है और उसे शिक्षा का लाभ भी नहीं मिला। अतएव महिलाएं अधिकतर अनौपचारिक रूप से खेत खलिहानों में मजदूरी अथवा घरेलू परिचारिका तथा पशु पालन आदि में [illegible] रह कर अपना काम चलाती हैं।

ऋण मिलने की सुविधा

ऐसी महिलाओं को छोटे-छोटे उधार मिलना बहुत जरूरी है। यह बहुत हर्ष का विषय है कि १९८६ से ही भारत सरकार ने महिला एवं बाल विकास विभाग की स्थापना की है और इस विभाग ने महिलाओं की विभिन्न समस्याओं पर ध्यान देना प्रारम्भ किया है। महिलाओं को एक महत्वपूर्ण मानव संसाधन के रूप में देखते हुए उन्हें केवल कल्याणकारी कार्यक्रमों का भागीदार न मानना विचारों में एक नई चेतना दर्शाता है।

राष्ट्रीय महिला आयोग

इस विभाग के बनने के उपरान्त राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की गई, जिसका कार्य है महिलाओं के बारे में विभिन्न कानूनी प्रावधानों की समीक्षा करना और यदि कोई असमानताएं हैं, तो उन्हें दूर करने के लिए प्रयास करना। साथ ही इस आयोग को किसी भी व्यक्ति को, चाहे वह किसी विभाग का अधिकारी क्यों न हो, सम्मन करने का अधिकार है, ताकि यदि उसके विभाग में किसी महिला पर अत्याचार हो रहा है, तो उसका निवारण किया जा सके।

इसके साथ ही भारत सरकार ने राष्ट्रीय महिला कोष की भी स्थापना की, ताकि निर्धन महिलाओं को स्वैच्छिक सस्थाओं के माध्यम से ऋण सुलभ कराया जा सके। इस योजना का बहुत अधिक स्वागत हुआ है, क्योंकि इसमें कोष द्वारा महिलाओं को इस बात की पूर्ण स्वतंत्रता दी जाती है कि वे अपनी आय वृद्धि के लिए क्या काम करें।

महिलाओं की आर्थिक स्थिति

पुरुषों के मुकाबले में भारत में कुल कमाई गई आय में से २४ ८ प्रतिशत महिलाओं के हिस्से की होती है, जबकि थाइलैण्ड देश में ३७.२ प्रतिशत आय महिलाओं की होती है और इण्डोनेशिया में यह प्रतिशत ३२ ९ तथा श्रीलंका में ३३ ८ प्रतिशत है। भारत में पिछली लोकसभा में ८ प्रतिशत महिलाएं थीं, जबकि उच्चतर पदों पर यहां २ ३ प्रतिशत ही महिलाएं हैं, जबकि थाइलैण्ड में यह प्रतिशत २९.८ है। तकनीकी एवं विशेषज्ञ के पदों में २० ५ प्रतिशत पदों पर महिलाएं हैं, जबकि थाईलैण्ड में ५२ ४ प्रतिशत महिलाएं हैं । इस प्रकार से देखा यह जाता है कि भारत में महिलाओं का प्रतिनिधित्व महत्वपूर्ण स्थानों पर कम है और इसका सबसे बड़ा कारण अशिक्षा है।

यद्यपि वैदिक काल में तथा हमारी सांस्कृतिक धरोहर के रूप में हमें अनेक विदुषी, कुशल नेतृत्व वाली और बहादुर महिलाएं मिलती हैं, किन्तु कुछ कारणों से जिनमें भारत में बाहर से होने वाले आक्रमण भी शामिल हैं, स्थिति कुछ बिगड़ती गई है। आज भी हमारे बीच बहुत सी तेजस्वी महिलाएं मौजूद हैं। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बड़ी गम्भीरता और दृढ़ता तथा बहादुरी का परिचय देने वाली सैकड़ों हजारों वीरांगनाओं के योगदान को भी हम भुला नहीं सकते। तथापि सामान्य रूप से महिलाओं की स्थिति स्व-निर्भरता व आत्मगौरव दिलाने वाली नहीं है।

बेटी को बोझ मानते हैं -

महिलाओं के साथ अन्याय यह होता है कि पहले तो उन्हें शिक्षित नहीं किया जाता, जिसकी वजह से वे अच्छी अच्छी आय वाले पदों को प्राप्त नहीं कर पाती और न ही संगठन आदि चला पाती हैं और पुरुष प्रधान समाज में बेटी को तथा बेटी के विवाह को अपना गौरव प्रदर्शित करने का एक अवसर बनाया जाता है और उसके विवाह के लिए अपनी औकात से बढ़ कर खर्च करने का पिता प्रयास करता है। इसका परोक्ष रूप से प्रभाव यह पड़ता है कि अपवादों को छोड कर बेटी का जन्म परिवार में बोझ स्वरूप माना जाता है। सन् १९०१ में ही प्रति हजार पुरुषों के मुकाबले में ९७२ महिला हुआ करती थीं। यह प्रतिशत २ को छोड़ कर पिछले सारे दशकों में घटता चला गया है और आज यह ९२७ है। यह प्रतिशत इसलिए कम नहीं हुआ है कि बच्चियों का जन्म कम हुआ है, बल्कि इसलिए कि बाल्यकाल में उनकी अवेहलना हुई है। जब हम आगे के हजार वर्षों के बारे में सोचते हैं, तो यह चिन्ता होती है कि अभी तो २००० में से ९२७ पुरुषों को विवाह योग्य कन्याएं मिल सकेंगी, पर अगर यही क्रम जारी रहा तो आगामी हजार वर्षों में २००० में से ४५० युवकों को शादी का सुअवसर नहीं मिलेगा। इसलिए जरूरी है कि सबसे पहले महिलाओं की स्थिति सुधारी जाए, उन्हें पढ़ने लिखने का अवसर दिया जाये, चाहे वे गांव में हों या शहर में। यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए। गांव की बच्चियों के लिए किसी उपयुक्त स्थान पर होस्टल की सुविधा उपलब्ध कराना जरूरी है। यदि समाज में लोग ६-७ लाख रुपये एक कार पर खर्च कर सकते हैं, जबकि वे २ लाख की कार से भी काम चला सकते हैं, तो क्या हमारा समाज जगह-जगह ये छात्रावास चलाने के लिए साधन नहीं जुटा सकता ? प्रश्न तो केवल इच्छा का है।

सुरक्षा की समस्या

दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न बालिकाओं की सुरक्षा का है। अभी समाज में उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है। उनके गुण-अवगुण को एक समग्रता की दृष्टि से न देखते हुए एकांगी दृष्टि से ही देखा जाता है, जो बहुत ही स्थूल है और जिसमें बाहुबल (मसल पावर) को अधिक महत्व दिया जाता है। यद्यपि स्त्री में पुरुष की अपेक्षा एक तिहाई मसल पावर कम होती है, फिर भी उसकी औसत आयु पुरुष से अधिक होती है। उसमें सहनशीलता और धैर्य पुरुष से अधिक होता है। उसमें करुणा और सेवा भाव, अथक परिश्रम करने का गुण पुरुष से अधिक होता है और मानव समाज को चलाने के लिए ये सब गुण इतने अधिक आवश्यक हैं कि कुल मिला कर स्त्री का ही पलड़ा भारी रहता है। समाज को विकसित करने में महिला को अपनी शक्ति लगाने का पूर्ण अवसर दिया जाना चाहिए।

महर्षि दयानन्द के सपनों का आर्य समाज

☐ ले० श्री [illegible]

भारत में समय-समय पर संस्थापित विभिन्न संस्थाओं में फिर चाहे वे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक ही क्यों न हों, आर्य समाज एक श्रेष्ठतम संस्था है। ऐसा मैं ही नहीं कहता वरन अधिकांश प्रख्यात एवं विद्वान व्यक्ति कहते एवं मानते रहे हैं तथा आज भी मानते हैं। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती एक अलौकिक व्यक्तित्व के महापुरुष थे। उन्होंने भारत एवं विश्व को जो दर्शन दिया उसमें मानव के सर्वांगीण विकास की अनुभूति होती है-अर्थात् संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। उनका ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' भी अपने आप में अनूठा एवं अलौकिक है। उसको जितनी बार भी पढा जाये उतनी ही बार उसे पढ़ने की और जिज्ञासा बनी रहती है। स्वामी दयानन्द ने अपने विवेचन के आधार पर जो सिद्धान्त संस्थापित या प्रतिपादित किये वे कोई सामान्य नहीं हैं। वे मानव को आदर्श (श्रेष्ठ) तथा समाज को एक कल्याणकारी राष्य या समाज बनाने की दिशा में बड़े सार्थक एवं महत्वपूर्ण माने जाते हैं। स्वामी जी ने आर्य समाज को श्रेष्ठ पुरुषों की समाज के रूप में परिभाषित किया न कि धार्मिक संस्था या किसी सम्प्रदाय के रूप में, उनका कहना था-"मेरी कोई नवीन कल्पना या मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसे मानना-मनवाना, जो असत्य है उसे छोड़ना-छुड़वाना मुझे अभीष्ट है।" अतः जीवन में सत्य प्रकाशित करना ही उनका लक्ष्य रहा। उन्होंने सदैव सत्य को सत्य और असत्य को असत्य ही कहा, सत्य ज्ञान के लिए उन्होंने सम्वत् 1903 में घर त्यागा, 1912 में गढ़मुक्तेश्वर में एक शव चीर कर उसका परीक्षण किया, 1923 में हरिद्वार में 'पाखण्ड खण्डिनी पताका' फहराई, विभिन्न विचारों के विद्वानों एवं धर्मावलम्बियों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा और अन्त में आर्य ज्योति के महान उद्धारक, व्याकरण के सूर्य, अलौकिक महामनस्व गुरु विरजानन्द से सत्य ज्ञान एवं उनका आशीर्वाद प्राप्त किया, बेहिचक एवं स्पष्ट बात कहने में स्वामी जी सदैव निर्भय रहते थे। 16 जनवरी 1916 को गुजरात में अपने भाषण में उन्होंने स्पष्ट रूप से कह दिया था-'मेरी बात सत्य हो तो मानो,' चाटुकारिता करना छोड़ दो।' स्वामी जी ने अपने आपको कभी 'गॉड फादर' प्रतिबिम्बित नहीं किया। उन्होंने बार-बार यही कहा-'जो मैं कह रहा हूं, वह सत्य है। किन्तु उसमें कभी असत्य लगे तो वह न मानो जो सत्य हो किन्तु सत्य को प्रकाशित भी करो, ताकि सभी उसे जान सकें एवं परख सकें। गीता पर हाथ रखकर कुछ कह देने से कुछ सत्य नहीं हो जाता क्योंकि वह अधिवक्ताओं के संकेत पर बोला गया सत्य होता है और प्रत्येक जानता है कि अदालत में दो पक्षों में से एक सत्य होगा, दूसरा असत्य महर्षि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की यह स्थिति नहीं है-उसमें जो अंकित है वह अकाट्य सत्य है और सत्य ही रहेगा। यह ग्रन्थ सूर्य की भांति सबको प्रकाशित करता ही रहेगा।

आर्य समाज किसी मनुष्य को आन्तरिक एवं बाह्य रूप से शुद्ध एवं निर्मल करने वाली एक औषधि है। इस रामबाण औषधी का सेवन करने वाला प्राणी जीवन में कभी निराश एवं हताश नहीं होता। उसमें आत्मिक, मानसिक एवं शारीरिक शक्ति इतनी बढ़ जाती है कि वह जीवन के सभी दुख-दर्द से जूझने की ऊर्जा अपने में समाहित पाता है। एवं सदैव हंसते हुए उसका सामना करता है। पूर्व प्रधानमंत्री चौ० चरण सिंह ने एक बार कहा था-मेरे जीवन में जितनी अच्छाईयां हैं वे सब आर्य समाज की बदौलत और बुराईयां राजनीति की बदौलत।' उनके द्वारा ऐसा कहा जाना कोई साधारण बात नहीं है। एक आर्य समाजी सदैव सीधी-सच्ची राह पर चलकर अन्य व्यक्तियों में भी उस ऊर्जा को जागृत करने का प्रयास करता है। जब कोई व्यक्ति आर्य समाज में आता है तो वह वहां स्वर्ग प्रकाशित होता है और उसके कुछ समय बाद वह टार्च बनकर अन्य को प्रकाशित करने लगता है। यही किया था आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने, जो इस तथ्य को जान गये वे श्रद्धानन्द, नारायण स्वामी, ला० लाजपत राय, राम प्रसाद बिस्मिल सरीके बन गये और जिन्होंने इस तथ्य की ओर से मुंह मोड़ लिया वे उसी प्रकार भटक गये जैसे चौराहे पर कोई राहगीर सही मार्ग की अज्ञानता के अभाव में भटक जाता है और स्वर्ग जाने की अपेक्षा नरक में पहुंच जाता है। इसी कारण योगीराज अरविन्द ने महर्षि दयानन्द को महापुरुष रूपी पर्वत की चोटियों में सबसे ऊंची चोटी और देवतास्वरूप जी भाई परमानन्द ने उन्होंने समाज की रोशनी देने वाली सबसे ऊंची मीनार माना।

पर आज ऐसी अनूठी संस्था में दिनोदिन पनपती बुराईयां या समाज में उसकी घटती प्रतिष्ठा एक चिन्ता का विषय है। आखिर वह किस भूकम्प के हिलोरे हैं जो इसके आलीशान भवन को डगमगा रहे हैं। या आज इस रामबाण औषधी का प्रभाव क्यों समाप्त हो रहा है? आखिर कौन कारण हैं इसकी जड़ में 1 बम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना होते ही सर्वत्र भारत में आर्य समाजें स्थापित होती चली गईं और पूरे विश्व में आर्य समाजों का विशाल जाल बिछा है। आम जन ने अपनी अमूल्य सम्पत्तियां इस संस्था को दीं, मकान व भवन दिये, धन दिया स्थान-स्थान पर लोगों ने अपने खून-पसीने से आर्य समाज एवं उसकी संस्थाओं को स्थापित एवं पोषित किया, जन सेवार्थ डी ए वी कालेज, गुरुकुल, कन्या पाठशालायें, पुस्तकालय एवं वाचनालय, औषधालय, अनाथालय, विधवा आश्रम, विशाल आश्रम, बारात घर आदि की स्थापना कर असाधारण कार्य किये। जितनी विशाल सम्पत्तियां आज आर्य समाज के पास हैं, वह देखते ही बनता है, अतः आज तो इसे विश्व की और भी उपयोगी संस्था होकर उभरना था और देश के शासकों को भी दिशा देनी थी। फिर क्यों यह पतन की ओर अग्रसर हो रही है। कारण अनेक हैं किन्तु इसकी जड़ में प्रमुख तीन कारणों को चर्चा मैं यहां करना चाहूंगा।

प्रथम कारण-एक समय था जब समाज में व्यक्ति शरीर रक्षा और उसे ढकने के लिए कपड़े पहनते थे किन्तु आज यह फैशन के लिए पहने जा रहे हैं-अर्थात् मान्यता बदल गई है, इसी तरह एक ---- था जब समाज की सेवार्थ व्यक्ति आर्य समाज के सदस्य बनना अपना गौरव समझते थे जबकि आज इस संस्था का पदाधिकारी बनना मात्र ही समाज सेवा बन गया है। अर्थात् यहां भी मान्यता में अन्तर आ गया है और इस सब की जड में आर्य समाज उसकी संस्थाओं की अतुल सम्पत्तियां और उनकी आय है। जब सगे भाई सम्पत्ति के कारण आपसी दुश्मन बन सकते हैं तो फिर आर्य समाजियों में तो खून का रिश्ता भी नहीं है। यही कारण है उसके चुनावों मे धक्का-मुक्की, मारपीट, कुर्सी फेंका-फेंकी या झगड़ा करना एक आम बात हो गई है।

द्वितीय कारण-समय समय पर आर्य समाज के सदस्यो एव संस्थाओं के सदस्यों के आपसी होने वाले विवादों का हल न्याय सभा बनाकर पंच फैसलों से नहीं किया गया। यदि ऐसा किया जाता तो उनमें मेल-मिलाप होता रहता। झगड़े हर परिवार, हर संस्था मे होते रहते हैं-यह कोई अस्वाभाविक नहीं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस आपसी झगड़े रूपी फोडे की कील निकाल देने के लिए जिन न्याय सभाओ की व्यवस्था नियम-उपनियमो मे करवायी थी, उसे प्रभावी बनाने की ओर कभी ध्यान न दिये जाने से ही आज आर्य समाजों में यह स्थिति बन गई है। इसके वि[illegible] आर्य प्रतिनिधि सभाओ ने अपने स्वार्थवश इन झगडो को आपसी सुलह सफाई से निपटाने की अपेक्षा किसी विशेष वर्ग को सरक्षण देकर अपना प्रभुत्व वहां भी बनाने की कु[illegible] प्रारम्भ कर दी। झगड़े घटाने की अपेक्षा उन्हे बढाने में हवा दी गई और मौका पाते ही धन के लालच मे अपना प्रशासक नियुक्त कर उक्त समाज या संस्था को अपने [illegible] की राजनीति [illegible], धार्मिक [illegible] उसके [illegible] एवं महत्ता को [illegible] कर दिया क्योंकि आर्य समाज के झगड़ों की कहानी उनकी पिटाई, जेल जाने की कहानियां आदि अब समाचार पत्रों में छापी जाने लगी हैं।

(शेष पृष्ठ [illegible]

(पृष्ठ 5 का शेष)

इससे भी एक कदम आगे बढ़ कर प्रादेशीय सभाओं ने अपने विरोधियों को किनारे लगाने के लिए उन्हें सभासदी से पृथक करना आरम्भ कर दिया। आर्य जन को जोड़ने की जगह उन्हें तोड़ने का कार्य प्रादेशीय प्रतिनिधि सभाओं ने करना प्रारम्भ कर दिया, परिणाम स्वरूप अब आर्य समाजों में महर्षि दयानन्द की जय की बजाये प्रधान एवं मंत्रियों की जय के नारे लगने प्रारम्भ हो गये, यहां भी मान्यताएं बदल गईं।

तृतीय कारण—आर्य सभासदों की आपसी लड़ाई के कारण समाज में अपना बहुमत बनाने के लिए स्वार्थी तत्वों ने आर्य समाज में अपने-अपने लोगों को भरना प्रारम्भ कर दिया जिनमें अधिकांश मूर्तिपूजक सदस्य बन गये। समाज हित की बजाये 'स्वहित' की उन्हें अधिक चिंता थी। धीरे-धीरे आर्य समाज एवं उसकी संस्था की सम्पत्तियों को देख अनेक आतकवादी भी आर्य समाजों में प्रवेश पा गये। उनका ध्येय आर्य समाज से कुछ लेना देना नहीं था। मात्र उसकी सम्पत्ति पर कब्जा कर उन्हे लूटना-खसोटना था। जब मूर्ति पूजक को सदस्य बनाया जा सकता था तो अन्य को कैसे रोका जा सकता था। आज 80 प्रतिशत सनातन धर्मियों एवं आतकवादियों का आर्य समाज एवं उसकी सम्पत्ति पर कब्जा है। काश कि हम उनसे मूर्ति पूजा छुड़ा पाते। यह हमने नहीं किया—बिना शुद्धि आन्दोलन चलाये उन्हें अपने आर्य समाज रूपी परिवार में सम्मिलित कर लिया। ऐसे ही कुछ लोग समय-समय पर घुसपैठ कर जिला उप सभाओं, प्रादेशीय सभाओं, सार्वदेशिक सभाओं तक में प्रवेश कर गये। परिणाम स्वरूप उसकी अनेक संस्थाओं में काबिज हो वे उनकी नियमावलियों को अपने पक्ष में संशोधित कर चुके हैं। अतः आर्य समाज रूपी इकाई से लेकर सार्वदेशिक स्तर तक की संस्थाओं तक में यह कैंसर की बीमारी प्रवेश कर गई है। (आतकवादी से मेरा अभिप्राय: ऐसे लोगों से है जो धौंस व डंडे के बल पर समाज एवं संस्थायें चला रहे हैं।)

उपाय-सुझाव—जहां तक प्रथम कारण के निवारण का प्रश्न है उसके लिए आवश्यक है कि आर्य समाज के नियम-उपनियम में परिवर्तन कर यह सुनिश्चित कर लिया जाये कि दस वर्ष से कम सभासदी का आर्य समाजी कोई मंत्री ही न बन पाये और इसी तरह प्रधान पद के लिए न्यूनतम 15 वर्ष की आर्य सभासदी का नियम हो। साथ ही यह भी स्पष्ट हो कि अपने जीवन में कोई व्यक्ति तीन बार मंत्री या तीन बार से अधिक प्रधान पद पर रह ही न पाये। प्रधान बनने के लिए एक वर्ष मंत्री पद का अनुभव भी अनिवार्य हो। (नयी समाजों पर यह नियम शिथिल रहेगा) आर्य सभासदों, मत्री एव प्रधानों को न्यूनतम प्रार्थना एवं संध्या मौखिक याद हो और वे इसे लिख सकने में भी समर्थ हों। साथ ही मंत्री व प्रधान वही बन सकेंगे जिनके पुत्र-पुत्रियों का विवाह या जिनके घर सभी संस्कार वैदिक रीति से हों। नियमों में ढील देने से ही आज यह स्थिति बनी है कि अनेक मंत्री, प्रधानों को संध्या-प्रार्थना भी याद नहीं है और उनके घर में संस्कार भी वैदिक पद्धति से नहीं हो पा रहे।

द्वितीय कारण के निवारणार्थ आवश्यक है कि आर्य समाज के सदस्यों के सभी मतभेद न्याय सभा के द्वारा ही निर्णीत हों और उन्हें उक्त निर्णय को मानना आवश्यक हो। आर्य समाज द्वारा दिये निर्णय के विरुद्ध अपील प्रादेशीय सभा में तथा उसके निर्णय के विरुद्ध सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में हो सके। न्याय सभायें सभी विवादों को आम सहमति के आधार पर निर्णीत करें ताकि सदस्यों में प्रेम एव स्नेह तथा आपसी सौहार्द बना रहे, किसी समाज, प्रादेशीय सभा या सार्वदेशिक सभा का अदालत में जाने पर पूर्णतया प्रतिबन्ध हो। किसी समाज में उस समय तक किसी को प्रशासक नियुक्त करने का अधिकार ही न हो जब तक यह निश्चित न हो जाये कि कोई दूसरा वर्ग या संगठन आर्य समाज की सम्पत्ति पर काबिज होने का प्रयास कर रहा है।

सार्वदेशिक सभा एवं प्रादेशीय सभा को आर्य समाज के किसी भी आर्य सभासद को हटाने या पदच्युत करने का अधिकार नहीं है क्योंकि सभासद ने उनकी सदस्यता के लिए कभी आवेदन ही नहीं किया, सदस्यता के लिए आवेदन पत्र निर्धारित है और वह किसी निश्चित आर्य समाज को प्रेषित होता है। सर्वोच्च उच्च न्यायालय का स्पष्ट निर्णय है कि किसी व्यक्ति को अपनी सदस्यता से वही संस्था या संगठन हटा सकता है जिसके लिए उसने आवेदन किया हो। अतः सम्बन्धित आर्य समाज मात्र ही उसे अपनी समाज के अयोग्य घोषित कर सकती है किन्तु एक सुनवायी का अवसर देने के बाद (कांग्रेस, भाजपा आदि अनेक संगठन हैं जिनकी सदस्यता के लिए सभी अखिल भारतीय संस्था को संबोधित कर प्रार्थना पत्र देते हैं अतः वे उसे पदच्युत भी कर सकती हैं) सार्वदेशिक सभा या प्रादेशीय सभा अपनी नियमावली में भले ही ऐसा नियम क्यों न पारित कर लें किन्तु वह अवैध ही कहलायेगा। यह संस्थाएं यदि किसी आर्य सभासद को सदस्यता के अयोग्य पाती हैं तो उन्हें उक्त आर्य समाज को यह निर्देशित करना होगा कि वह अमुक व्यक्ति को समाज की सदस्यता से पृथक या स्थगित करें। यह दूसरी बात है कि सार्वदेशिक या प्रादेशीय सभा किसी को केवल अपनी बैठक में भाग लेने के लिए अयोग्य घोषित कर दे।

तृतीय, 26 जनवरी 1935 से पूर्व आर्य समाज का सदस्य कोई भी ऐसा व्यक्ति बन सकता था जो आर्य समाज के 10 नियमों को मानता था जब आर्य समाज में विभिन्न धर्माव-लम्बियों का प्रवेश इसलिए होने लगा कि वे आर्य समाज से सहानुभूति रखते थे तो सार्वदेशिक सभा के कान खड़े हो गये। आर्य समाज के नियम सं० दो को छोड़ अन्य नियम सभी सामान्य थे और नियम संख्यों में भी उसी की उपासना करनी योग्य है" कहा गया है जिसे बन्धन नहीं कहा जा सकता था। अतः सार्वदेशिक सभा की एक उपसमिति की बैठक 26 मार्च 1933 को आर्य समाज मन्दिर चावड़ी बाजार दिल्ली में इस समस्या पर विचारार्थ हुई, और तीन घंटे के गहन विचार विमर्श के बाद आखिर यह तय कर लिया गया कि किसी आर्य समाज में प्रविष्ट होने के लिए 10 नियमों के साथ-साथ उन सिद्धान्तों का मानना भी आवश्यक होगा जिन्हें महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर अपने ग्रन्थों में लिखा है। इस संशोधन के 1935 में स्वीकृत होने के परिणाम स्वरूप आर्य समाज के नियम-उपनियम में संशोधन कर यह सम्मिलित कर लिया गया—"मैं प्रसन्नता पूर्वक आर्य समाज के उद्देश्यों (जैसा की नियमों में वर्णन किये गये हैं) तथा मन्तव्यों एवं सिद्धान्तों को (जो वेद के आधार पर ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में लिखे गये हैं) मानता और उसके अनुकूल आचरण स्वीकार करता हूं। मेरा नाम आर्य समाज में लिख लेवें।" इसके स्वीकृत होते ही मूर्ति पूजा को एवं अन्य धर्मावलम्बियों के लिए आर्य समाज की सदस्यता का रास्ता सदा के लिए बन्द हो जाता है। सार्वदेशिक सभा का यह एक अहं निर्णय था। किसी मूर्तिपूजक के आर्य समाज का सदस्य बनने पर प्रतिबन्ध नहीं है यदि वह मूर्ति पूजा को त्याग कर सदस्य बनता है। यदि आज इस नियम का कड़ाई से पालन कराया जाये तो जो आर्य सभासद आर्य सिद्धान्तों का आज पूर्णतया: पालन नहीं कर रहे, उन्हें अगले दिन से उनका पालन करने को विवश होना पड़ेगा। या उन्हें आर्य समाजों की सदस्यता त्यागनी होगी, आर्य संस्थाओं पर गैर आर्य समाजियों के कब्जे रोकने का भी एकमात्र उपाय यही है। आर्य समाज के सदस्य भले ही 'पांच प्यारे' रह जायें किन्तु हो तो वे पक्के आर्य समाजी जिससे महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित इस संस्था की गरिमा बनी रह सके। हम आर्य समाज की सदस्य संख्या बढ़ाने का प्रयास न करें उसमें गुणात्मक सुधार करें। जिस दिन हम ऐसा कठोर पग उठा लेंगे उस दिन आर्य समाज में निष्ठावान बन कर लोग आने लगेंगे। सदस्य संख्या भी निश्चित बढ़ेगी।

आज एक अजीब स्थिति और बनी है। कोई-कोई प्रादेशीय सभा सार्वदेशिक सभा के अस्तित्व को ही नकार रही है। उनका कहना है कि उनकी अपनी नियमावली है और उसमें उन्होंने सार्वदेशिक सभा के निर्देशन को दर किनार किया हुआ है। वे यह क्यों भूल गये हैं कि आर्य समाज के नियम-उपनियम सार्वदेशिक सभा बनाती है और उसमें संशोधन भी कर सकती है। आर्य समाज के नियम-उपनियम में एक पंक्ति के संशोधन से उनका अहं चूर हो सकता है जिस सार्वदेशिक सभा ने नियम पारित किया है या अन्य नियम बनाये हैं। उनमें वे परिवर्तन भी कर सकती है मेरा सुझाव है कि प्रत्येक प्रादेशीय सभा को सार्वदेशिक के अस्तित्व को स्वीकार करना चाहिए और अनुशासन एवं मर्यादा में रहना सीखना चाहिए। एक सच्चा आर्य ऐसा कभी कह नहीं सकता। ऐसा वही कहेगा जिसकी रगो में अशुद्ध रक्त होगा। वैसे पाप को पाप न मानने वाले कम ही होते हैं मेरा अपना मत यह भी है कि हम आर्य समाज के संगठन में सन्यासियों को सर्वोच्च स्थान दें उनका सम्मान करना सीखें वे हमारी पूंजी है। अपने मतभेद या विवाद उन्हें सरपंच बनाकर निपटायें अदालत में या न्याय सभा में जाने से पहले उनकी बाते मानें। सन्यासियों को भी निष्पक्ष एव तपस्य रहकर आदर्श सन्यासी बनकर आर्य समाज के संगठन को सशक्त बनाना चाहिए एवं प्रचार को गति देनी चाहिए। सन्यासियों को सार्वदेशिक सभा या प्रादेशीय सभा का पद उस समय तक स्वीकार भी नहीं करना चाहिए जब तक उनमें विवाद है उनका सर्वसम्मति चुनाव न हो। विवाद से दूर रहकर ही वे अपने सम्मान एवं गरिमा को बनाये रख सकते हैं। तभी वे पूजनीय भी कहलायेंगे। अब वह समय आ गया है जब हमारे देश के आर्य सन्यासियों को आर्य समाज के सम्मान की रक्षा के लिए और महर्षि दयानन्द के सपने को साकार करने के लिए सभी समाजों के भ्रमण पर स्वयं निकल पड़ना चाहिए इस संकल्प के साथ कि वे आर्य समाज की खोई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करके ही रहेंगे। यदि वे संकल्प कर लें तो आज दयानन्द के प्रतिबिम्ब बनकर आर्य समाज की काया पलट कर सकते हैं। हमारे सन्यासी बहुत बड़ी शक्ति हैं।

ईश्वर हमें सद्बुद्धि दे ताकि हम अपने आपसी मतभेद भुलाकर आपसी सहयोग एवं सद्भाव से अपनी शिरोमणि सार्वदेशिक सभा के वर्तमान मतभेद को दूर करने में भी सफल हों और उस महान विभूति महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्मान एवं गरिमा को अपने आचरण से लज्जित होने दें।

ओ३म् समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥

संस्कृत और वेदाध्ययन एक दूसरे के पूरक हैं

□ ले. श्री [illegible] पोद्दार, मंत्री छोटानागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी श्रद्धानन्द पथ रांची।

जनवाणी में ११ नवम्बर के अंक में किशोरी सिंह जी का एक पत्र संस्कृत और वेदाध्ययन की अनिवार्यता की सनक क्यो ? विषय पर प्रकाशित हुआ था। इस पत्र के प्रत्युत्तर में १६ नवम्बर को डा० वेदभूषण के और २६ नवम्बर को यमुना प्रसाद सिंह यादव के पत्र में व्यक्त विचारों से मेरी पूर्ण सहमति है । संस्कृत और वेद के सम्बंध में किशोरी सिंह द्वारा व्यक्त विचार वाले बहुत से लोग होंगे पर किशोरी सिंह ने यदि सचमुच यह पत्र लिखा है तो आश्चर्य होना स्वाभाविक है, क्योकि किशोरी सिंह जी जमशेदपुर की सोनारी आर्य समाज के शाखा के प्रधान हैं। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द की सबसे बडी देन जवाहर लाल नेहरू की दृष्टि में यह है कि उन्होंने वेदों की ओर लौटो का नारा प्रदान किया था। आर्य समाज कोई नया मत या सम्प्रदाय नहीं है बल्कि वेद में लिखी गयी बातों को स्वतः प्रमाण मानकर वेदों की प्रचारक संस्था है। आर्य समाज के दस नियमों में से तीसरे नियम के अनुसार वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद को पढना-पढाना सुनना-सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म है। चूकि संस्कृत में लिखा हुआ है अतः संस्कृत और वेदाध्ययन एक दूसरे के पूरक हैं। यदि संस्कृत और वेदाध्ययन के सम्बंध में आर्य समाज की मान्यता से किशोरी सिंह सहमत नहीं हैं तो न हों पर एक आर्य समाज के प्रधान होने पर उनसे यह अवश्य पूछा जाना चाहिए कि यदि उनके विचार ऐसे ही हैं तो किन स्वार्थों के वशीभूत होकर ऐसी संस्था से वे चिपके हुए हैं? किशोरी सिंह के सदृश विचार वाले व्यक्ति को नैतिकता के नाते स्वयं आर्य समाज से पृथक हो जाना चाहिए। यदि वे स्वेच्छा से त्याग पत्र देकर पृथक न हों तो आर्य समाज सोनारी के सदस्यों से मेरा आग्रह है कि आर्य समाज के उप नियमों में दिये गये प्रावधानों के अंतर्गत उन पर अविश्वास प्रस्ताव लाकर उन्हें प्रधान पद के साथ-साथ आर्य समाज की सदस्यता से भी मुक्त कर दें, क्योंकि वेदाध्ययन के संबध में ऐसे विचार रखने वाला व्यक्ति तो आर्य समाज का सहायक सदस्य बनने के भी सर्वथा अयोग्य है।

किशोरी सिंह जैसे लोगों को शायद यह जानकर हार्ट अटैक हो जायेगा कि न केवल भारत में बल्कि विश्व में बहुत से देशों के विश्वविद्यालयों में संस्कृत का अध्ययन और अध्यापन का विशेष प्रबंध है। क्योंकि मानव जाति का उत्कृष्ट और प्राचीनतम वाङ्मय संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध है। १६वीं शताब्दी में यूरोपियन विद्वानों ने संस्कृत अध्ययन कर इसके श्रेष्ठ साहित्य की जानकारी शेष विश्व को दी। फलतः संस्कृत की लोकप्रियता नित्य प्रति बढ़ती जा रही है। विश्वविख्यात वैज्ञानिक आइंसटाइन के निजी पुस्तकालय में संस्कृत के कई प्रमुख ग्रंथ विद्यमान थे। वे इनका स्वाध्याय करते थे। स्वय उनके कथानुसार उन्हें संस्कृत ग्रंथों के अध्ययन से वैज्ञानिक अनुसंधानों में मदद मिलती थी। कुछ जानकार लोगों का कथन है कि जर्मनी में संस्कृत व्यवस्था है उतनी भारत में भी नहीं है। जर्मनी रेडियो दॉयेचे वेले विश्व का पहला रेडियो संस्थान था, जिसने १६६७ ई० में संस्कृत में 'संस्कृति' शीर्षक से प्रसारण करना प्रारभ किया। आकाशवाणी ने १६७४ ई० में प्रतिदिन पांच मिनट का प्रसारण करना प्रारंभ किया। पाउल थीम नामक एक जर्मन प्राच्यविद् विद्वान ने वदों और भारतीय साहित्य पर मौलिक कार्य किया, फलतः १९८८ ई० में उन्हें ३ लाख ६० हजार डालर का क्योटो पुरस्कार प्रदान किया गया। इस पुरस्कार को जापान का नोवेल पुरस्कार माना जाता है।

संस्कृत अध्ययन की आवश्यकता और वेदों में विज्ञान विषय पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है। पर इस स्तम्भ में स्थानाभाव के कारण अधिक लिखना सम्प्रति प्रासंगिक प्रतीत नहीं होता है। फिर भी चारों वेदों में वर्तमान विज्ञान की एक झलक देखें ऋग्वेद (१०/७२/४) के अनुसार पृथ्वी सूर्य से उत्पन्न होती है । ऋग्वेद (१/३४/२) मे तीन चक्र एव तीन स्तम्भ वाले ऐसे विमान, का वर्णन है जो तीन दिन, तीन रात में चक्रमा की यात्रा कर सकता है। ऋग्वेद (१/११६/१५) में शल्य चिकित्सा द्वारा टूटी हुई टांग (पैर) लगाने का वर्ण है तथा ऋग्वेद (१/११६/१६) में नेत्र की शल्य चिकित्सा का वर्णन है। अथर्ववेद (१०/८/३१) के अनुसार 'अवि' नामक पदार्थ के कारण पत्ते हरे दिखते हैं, जो अंग्रेजी शब्द क्लोरोफिल का सूचक है। अथर्ववेद (१४/१/१) एवं यजुर्वेद (२३/१०) में कहा गया है कि चंद्रमा, सूर्य से प्रकाशित होता है। यजुर्वेद (३२/४३) के अनुसार सूर्य आकर्षक शक्ति से लोगों। ग्रहों को वर्तमान रखता है। जबकि यजुर्वेद (३/६) के अनुसार पृथ्वी अपनी दो गतियों के साथ सूर्य की परिक्रमा करती है। सामवेद पूर्वार्चिका (६/५/१३) में कहा गया है कि सूर्य के प्रकाश में सात रगों की किरणें हैं और सामवेद के ही पूर्वार्चिका (१/२/९ः में सूर्य किरणों से अग्नि प्रदीप्त करने की बात कही गयी है, जो सौर ऊर्जा के उपयोग की ओर संकेत करता है। भारद्वाज ऋषि कृत यंत्र सर्वस्यम के वैमानिकी प्रकरण में विमान के ऊपर सौर यत्र लगाने का निर्देश है। (विमानस्योपरि सूर्यस्य शक्त्याकर्षण पंजरम)।

उपर्युक्त प्रमाणों की उपस्थिति मे वेदों को सामान्य पुस्तक मानना किशोरी सिंह जैसे विद्वानों से ही सम्भव है। अंत में मैं यह कहना चाहूंगा कि इन विषयों पर पूर्वाग्रह से मुक्त होकर विचार किया जाना चाहिए

(पृष्ठ 2 का शेष)

यदि कर्जदार का कर्जदाता स्वर्गवास हो जाये तो, या तो कर्जदार कहेगा कि मैंने कर्जा लिया ही न था। या यह कहेगा कि मैंने तो उस के जीवन काल में लौटा दिया था। यदि उसके कर्जे का किसी अन्य व्यक्ति को ज्ञान न हो तो वह चुप्पी ही साध लेगा और बस पैसा हज्म। कृतज्ञता की भावना तो दूर आजकल तो लोग कर्जा वापिस ही नहीं करना चाहते। मानवता की आर्यत्व ही सब से बड़ी पहचान है कि व्यक्ति में कृतज्ञता की भावना हो और कर्जा उतारने में सदैव तत्पर रहे।

कई बार लोग बाजार जाते समय रुमाल में गांठ बांध लेते हैं और ऐसा इसलिए करते हैं कि उन्हें बाजार से कुछ लाना होता है। कहीं लाना भूल न जायें। रुमाल में गांठ बांधते हैं ताकि वह गांठ देख कर उन्हें याद आ जाये कि बाजार से अमुक वस्तु लानी थी। मानव को यह याद कराने के लिए कि तुझ पर कुछ कर्जे हैं, तुम्हें उतारने हैं याद के लिए यज्ञोपवीत पहना दिया जाता है। यह यज्ञोपवीत उसे सदा याद दिलाता है कि मानव तुझ पर भारी ऋण है। मां का, पिता का, आचार्य का जो कि तुमने उतारना है। यज्ञोपवीत में तीन धागे होते हैं। पहला धागा याद कराता है कि माता के ऋण का, दूसरा याद दिलाता है पिता के ऋण का, और तीसरा याद दिलाता है आचार्य के ऋण का । इसलिए यज्ञोपवीत पहन कर ही यज्ञ पर बैठा जाता है और आहुति दी जाती है। यज्ञ स्वयं में एक परोपकार है। परम पिता परमात्मा के प्रति कृतज्ञता की भावना है:-

ओम् यज्ञोपवीतं परम पवित्रम्
प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रति मुञ्च शुभ्रं
यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।

अर्थात्-यज्ञोपवीत परम पवित्र है क्योंकि परम पवित्र यज्ञ रूप प्रभु के समीप पहुंचने का साधन यज्ञीय जीवन अर्थात् श्रेष्ठतम कर्म का प्रतीक है। यज्ञ को प्रजापति ने सृष्टि के प्रारम्भ में मानव के साथ उत्पन्न किया । यह पवित्र सूत्र निर्मल निष्पाप तथा उन्नति की दिशा में निरन्तर अग्रसर होने वाले जीवन की ओर मानव को प्रेरित करके त्रिविध बल तथा ओज की वृद्धि में सहायक होता है। और फिर-

यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा
यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ।

हे बालक ! ये यज्ञ रुप भगवान के सृष्टि यज्ञ का स्मरण कराने के लिये मैं तुझे यह तीन सूत्र वाला यज्ञोपवीत धारण कराता हू। यह तीन सूत्र प्रभु की वाणी वेद के प्रतीक हैं।

यह यज्ञोपवीत ब्रह्मचय अवस्था में पहनाया जाता है। जिस का विधिवत् सस्कार होना चाहिए जिस को उपनयन संस्कार कहते हैं। इस की महत्ता के बारे में बताया जाये कि यह क्यों पहनाया जा रहा है। तीनों ऋणो के बारे में बताया जाये कि बालक तुझ पर मां का, पिता का, एवं आचार्य का ऋण है। माता ने तुझे जन्म दिया, पिता ने पाला, आचार्य तुझे शिक्षित कर रहा है।

मनुष्य ब्रह्मचर्य अवस्था में यह कर्जा लेता है। गृहस्थ आश्रम में इस कर्जे का प्रयोग करता है। इस से लाभ उठाता है। इस से अपनी जीवन नौका को चलाता है। यश बल तेज इत्यादि का पात्र बनता है। और फिर वानप्रस्थ मे इस कर्जे को चुकाता है। वापिस अदा करने के पश्चात् सब परनोट या कर्ज की लिखतें फाड़ दी जाती हैं। उसी प्रकार जब मनुष्य वानप्रस्थ से सन्यास में प्रवेश करता है अर्थात जब सब ऋणों से मुक्त हो जाता है तब यज्ञोपवीत के तागे तोड़ दिये जाते हैं। इसलिये सन्यासियों के कभी भी यज्ञोपवीत नहीं होता। इस यज्ञोपवीत का पहनना अनिवार्य है ताकि यह हमें सदा याद दिलाता रहे कि ए मानव तेरे सिर पर कर्जे हैं तूने उन्हें उतारना है । तूने आर्य बनना है। तूने अपनी पहचान पर पूरा उतरना है। न भूल माता पिता और अपने आचार्यों के उपकारों को। यह ऋण पूरे के पूरे तो चुकाये नहीं जा सकते पर मुक्त होने की चेष्टा तो कर । भावना तो मन में रख। बस यही तेरी पहचान है।

आर्य समाज कोटकपूरा में वेद प्रचार सप्ताह व गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज वेद मन्दिर काटकपूरा मे 19 4 99 से 25 4 99 तक वेद प्रचार सप्ताह एवम् गायत्री महायज्ञ बडी धूमधाम व श्रद्धा से सम्पन्न हुआ

19 4 99 से 24 4 99 तक रात्रि मे 8 30 से 10 30 तक मान्य सत्यपाल जी पथिक भजनोपदेशक श्री सुन्दर लाल शास्त्री जी एवम् महात्मा प्रेम प्रकाश धूरी वालो ने प्रवचन किया मान्य सत्यपाल जी पथिक के भजन सुनकर लोग मुग्ध हो जाते थे। दो दिन के बाद श्री सुन्दर लाल जी शास्त्री भी आ गये थे तब महात्मा प्रेम प्रकाश जी व सुन्दर लाल जी शास्त्री के प्रवचन सुन कर लोग भारी सख्या मे आने लग पडे। प्रात सवा 6 से 7 बजे तक महात्मा प्रेम प्रकाश जी ध्यान शिविर भी लगाया करते थे। लोगो मे भजनो व प्रवचन की सुनने की इच्छा बनी रहती थी। 20.4 99 प्रात साढे 8 से साढे 10 बजे तक डा देवराज जी बुद्धिराजा कोषाध्यक्ष आर्य समाज वेद मन्दिर कोटकपूरा के घर पर हवनयज्ञ भजन व प्रवचन हुए जिसमें भारी संख्या मे नर नारी सम्मिलित हुए। अन्त मे सभी आए हुए नर नारी को भोजन भी परोसा गया। सभी ने अति स्वादिष्ट भोजन ग्रहण करके डा० देवराज जी व उनकी धर्मपत्नी श्रीमति कमला बुद्धिराजा जो कि अत्यन्त श्रद्धालु व मिलनसार है का धन्यवाद किया। उनके लडके विशेष ने भी एक भजन बोला था जिसकी सभी ने अत्यन्त प्रशसा की 21 4 99 को श्री विजय कुमार जी बासल के घर भी प्रात साढे 8 से साढे दस बजे तक बडी श्रद्धा से हवन यज्ञ व भजनोपदेश व प्रवचन किए गए वहा भी भारी सख्या मे लोग आए। अत्यन्त श्रद्धा से सभी ने श्री विजय बासल जी का धन्यवाद किया। 22 4 99 से प्रात 8.30 से 10.30 बजे तक गायत्री यज्ञ भजन प्रवचन होते रहे। 25 4 99 को प्रात 8 बजे 8 दम्पति हवनकुण्डों पर बैठे व यज्ञ के ब्रह्मा मान्य सत्यपाल जी पथिक ने सवा 10 बजे तक हवन यज्ञ गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति करवाई। जिसमे सम्मिलित लोगा ने अति श्रद्धा से बैठ कर यज्ञ किया व प्रवचन सुना। फरीदकोट से आर्य समाज के प्रधान जी मन्त्री जी व अन्य अधिकारियो के साथ स्त्री आर्य समाज फरीदकोट की प्रधाना व सदस्य भी आई थी। मोगा से श्री जगदीश जी अपनी बेटी व अन्य सदस्यो के साथ पधारे थे। भजनो व प्रवचनो को अति प्रसन्नता से लोगो ने सुना व प्रशसा की। देसी घी के हलवे का प्रशाद बाटा गया। हवन यज्ञ गायत्री महायज्ञ पूर्णाहुति मे भाग लेने वाले यजमानो ने सपत्नीक यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यपाल जी पथिक श्री सुन्दर लाल जी शास्त्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी के आगे नत मस्तक होकर आशीर्वाद लिया व आर्य समाज वेद मन्दिर कोटकपूरा की तरफ से कोषाध्यक्ष डा देवराज जी द्वारा भेट भी प्राप्त की (पुस्तकों का सैट ऋषि दयानन्द जी के चित्र वाला व महापुरुषो वाला कैलेंडर) मच सचालन श्री महेन्द्रपाल मैंगी जी ने किया। अन्त मे आर्य समाज वेद मन्दिर कोटकपूरा के सगठन मन्त्री श्री ललित जी बजाज ने आए हुए सभी विद्वानो व लोगो का अति श्रद्धा से धन्यवाद किया। उसके बाद देसी घी से बना ऋषि लगर बडी श्रद्धा से सभी ने ग्रहण किया। लगर परोसने मे प्रधान श्री रविराज दिख्या उपप्रधान श्री वीरेन्द्र शर्मा मैनेजर श्री रजिन्द्र कुमार छिदाडा श्री शादी लाल व दूसरे सदस्यो के साथ स्कूल की प्रिसीपल श्रीमति सत्या मककड जी व दूसरी सभी अध्यापिकाओ ने भाग लिया। सभी बन्धुओ को एक एक कैलण्डर आर्य समाज वेद मन्दिर की तरफ से भेट स्वरूप दिया गया।

महिन्द्र पाल मैंगी मन्त्री

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामन्त्री सम्पादक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस/ऐलिवेट प्रिंटर्ज जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ ।

वर्ष 50 अंक 7, 27 वैशाख सम्वत् 2056 तदनुसार 13/16 मई 1999 दयानन्दाब्द 175 वार्षिक शुल्क 50 रुपये आजीवन 500 रुपये

आर्य समाज आगे बढ़ाना है तो...

ले० श्री डॉ० महेश विद्यालंकार दिल्ली

वर्तमान आर्य समाज के संगठनों, सभाओं, संस्थाओं और समाज मन्दिरों की, जो यथार्थ स्थिति है। जिस तरह के विवाद, समस्याएं तथा चुनावी उलझनें सामने आ रही हैं। जिस तरह के लोग तेजी से अधिकारी बनकर कब्जे कर रहे हैं। एक बार अधिकारी बनकर हटने का नाम नहीं लेते। उन्हें देख, सुन तथा जानकर, वैदिक विचारधारा मे आस्था रखने और ऋषिभक्त व्यक्ति आज दुखी, चिन्तित एवं परेशान है। कुछ लोग, निराश, हताश तथा उपराम होकर तटस्थ हो रहे हैं। उनकी मानसिकता यह बनती जा रही है कि अब आर्य समाज का सुधार, उत्थान तथा प्रभावी संगठन संभव नजर नहीं आता है। इसीलिए जलसे जलूस सत्संगों एवं कार्यक्रमों में उपस्थिति घटती जा रही है। किसी संगठन का वास्तविक मूल्यांकन होता है– विचारधारा का कितना दूसरों पर प्रभाव पड़ा है ? कितने लोग हमारे साथ जुड़े हैं ? कितनों ने हमारे सिद्धान्तों को अपनाया है ? कितनों ने संगठन की सहायता स्वीकार की है ? धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्र में हमारा कितना महत्व, सम्मान और मूल्यांकन है। कितना संगठन को रेखांकित किया जाता है। हम अपने घर में बैठकर कितना भी शोर मचा लें। हमने ये किया ? हमने इतने स्कूल खोल दिये असली मूल्यांकन तो जनता संगठन शक्ति से करती है। संगठन की दृष्टि से आज आर्य समाज अन्दर और बाहर दोनों दृष्टियों से लड़खड़ा रहा है ?

चारों ओर स्वार्थ, पदलिप्सा, अहंकार तथा कब्जे की बदनियत बलवती हो रही है। जो आर्य समाज की जीवन्त चेतना और प्रेरणा की शक्ति था। वह आज हमारे आचरण, स्वार्थ तथा कर्मों के कारण बंट व बिखर रहा है। कोई संभालने वाला नजर नहीं आता। किसी ने सभा, किसी ने ट्रस्ट, किसी ने संस्थान, किसी ने आश्रम, किसी ने गुरुकुल, किसी ने स्कूल, किसी ने परिषद, किसी ने कुछ, तो किसी ने कुछ पकड़ लिया है। अपने कब्जे और व्यक्ति बैठा दिये हैं। जो वहां बैठ गया हिलने का नाम नहीं लेता। उससे पद लाभ, स्वार्थ, मान, सुख सुविधा आदि ले रहा है। इसी कारण झगड़े, विवाद तथा समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं। जब एक व्यक्ति किसी एक सभा, संगठन, संस्था ट्रस्ट आदि पर काबिज हो जाता है। फिर उससे जो लाभ, सुविधा, अधिकार, मान, सम्मान आदि प्राप्त करता है। इन सब चीजों को देखकर दूसरों का मन ललचाता है। यहां से झगड़े, विवाद और उलझने आरम्भ होती हैं। जो पद, अधिकार, सुख सुविधा व सम्मान में बैठा है, वह छोड़ना नहीं चाहता है बाहर का व्यक्ति, उस पद से प्राप्त साधन सुविधाओं को पाना चाहता है। यह झगड़ों और परेशानी का मूल कारण है। समूचे आर्य जगत की सभा, संगठनों, संस्थाओं, गुरुकुलों, आश्रमों आदि में ये प्रवृति फैली हुई है। इसी कारण हम गुणात्मक, रचनात्मक एवं प्रभावात्मक दृष्टि से पिछड़ रहे हैं। जनता से कट रहे हैं। मेरा किसी व्यक्ति, सस्था, संगठन आदि पर दोषारोपण, गुटबाजी एवं पार्टीबाजी की दृष्टि से टीका टिप्पणी करने का रंचमात्र भी उद्देश्य नहीं है। मैं तो जो देख, सुन व अनुभव कर रहा हूं। उन्हीं सत्य तथ्यों के आधार पर ऋषि भक्तों, आर्य समाज के भावनाशील अनुयायियों को अगाह, सचेत तथा निवेदन कर रहा हूं। उठो! जागो। संभलो। कुछ मिल बैठकर विचार करो। हम कहां जा रहे हैं ? क्या ऋषि ने इसीलिए जो वर्तमान में सर्वत्र हो रहा है उसी के लिए आर्य समाज बनाया था। इसीलिए जहर पिया था। हम आने वाली पीढ़ी और संसार को क्या विरासत तथा वसीयत देंगे। क्या हम कुछ ऐसा कर रहे हैं, जिसमें त्याग, बलिदान, सेवा, परोपकार आदि की प्रेरणा जागृत हो। दुःख और आश्चर्य है कि कई सभा, संगठनों, संस्थाओं, ट्रस्टों, परिषदों आदि पर सालों से लोग चिपके बैठे हैं ? कार्य नगण्य है। शरीर साथ नहीं देता। फिर भी छोड़ने का नाम नहीं लेते। नैतिक पतन की भी पराकाष्ठा है कि धर्म प्रचार, वेद प्रचार, दान और चन्दे के पैसे को खाते, डकारते, हड़पते और अपने ऊपर खर्च करते हुए लज्जा तथा आत्म ग्लानि नहीं आती है। पाप बोध की सोच उत्पन्न नहीं होती है ऐसे लोगों के आचरण तथा करनी और कथनी के अन्तर को, जब दूसरे लोग देखते हैं तो वे तटस्थ व घृणाभाव मन में ले आते हैं। हमसे जुड़ने की बजाय कट जाते हैं।

वर्तमान आर्य समाज में एक त्रासदी यह भी हो रही है कि कोई किसी की न मानता है और न सुनता है। न अनुशासन है, न व्यवस्था है। नियम केवल बोलने और लिखने मात्र के लिए सुरक्षित है। कोई पालन नहीं करता। अपनी-अपनी डफली, अपनी-अपना राग की उक्ति चरितार्थ हो रही है। इसी कारण कर्मकाण्ड, सिद्धान्त तथा नियम व्यवस्था में एक मति व एक रूपता कहीं नहीं है। जो भी उठता है, अपना संगठन, संस्था, ट्रस्ट, परिषद आश्रम आदि बनाकर धन बल और जनबल को बढ़ाने लगता है। सब अपने-अपने आश्रमों, संस्थाओं, ट्रस्टों आदि के रास्ते लोगो को दिखा रहे हैं। दयानन्द और आर्य समाज के रास्ते की किसी को चिन्ता, बैचेनी व परेशानी नहीं हो रही है। इसीलिए बड़ी तेजी से आर्य समाज में भी महन्त, महाराज, सन्त गुरु ज्ञानी आदि बनने व फैलने लगे हैं। व्यापार दृष्टि तेजी पकड़ती जा रही है। ऋषि ने जिन बातों का विरोध किया था, वे ही बातें तेजी से फैल रही हैं। आर्य समाज पुनः पौराणिकता की चपेट में आ रहा है। आर्य समाज ने भवन, स्कूल, बारात घर, गुरुकुल संस्थाएं आदि तो बना लिए। इन संस्थाओं को चलाने वाले ईमानदार, सच्चरित्र, कट्टर सिद्धान्तवादी दयानन्दी सेवाभावी लोग न बना सका। यहा आर्य समाज पिछड़ गया। इसीलिए गैर आर्य चरित्र वाले लोग गिद्ध दृष्टि से इन पर कब्जे करने के लिए बेताब हो रहे हैं। यदि आर्य समाज को आपने न संभाला तो भविष्य निराशाजनक और अन्धकार में होगा। मैं निराश-हताश की बात नहीं कर रहा हूं। मैं तो सचेत और जागरूक होने के लिए कह रहा हूं। ऋषि ने जो सत्यज्ञान का दीया जलाया था। उसे बुझाने के षड़यन्त्र हो रहे हैं। हमारी पहचान, स्वरूप और सिद्धान्तों को मिटाने के लिए लोग, हमारे ही लोगों को प्रलोभन देकर तोड़ रहे हैं। अलग कर रहे हैं। यदि ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के अस्तित्व, स्वरूप सिद्धान्त तथा परम्परा को बचाना है। रक्षा करनी है। आने वाले समय को प्रेरक धरोहर सौंपनी है, तो ईमानदारी, त्यागभाव तथा दृढ़ता से मिल बैठकर सोचना होगा। आत्म निरीक्षण करना होगा। दोष और दुर्बलाओं को हटाना होगा। सिद्धान्तों से समझौता किसी कीमत पर नहीं करना होगा।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

हालैण्ड देशीय एक कर्मकाण्ड प्रवीण आर्य- पं० देवी प्रसाद भगवान दत्त

□ ले: श्री भवानी लाल जी भारतीय 8/423 नन्दनवन जोधपुर

उपनिषद् में यज्ञ, अध्ययन और दान को धर्म का प्रथम स्कन्ध बताया है दो वर्ष पूर्व जब मैं वेद प्रचारार्थ हालैण्ड गया था तो मुझे 42 वर्षीय पं देवीप्रसाद भगवान दत्त से मिलने का अवसर मिला। 25 सितम्बर 1996 को हालैण्ड के नगर राटरडम में पं देवनारायण शुभधन के गृह पर एक पारिवारिक सत्संग किया गया था। यहीं पर मेरी भेंट उक्त पं देवीप्रसाद से हुई। यज्ञ के प्रति उनमें असीम श्रद्धा है, उसका प्रमाण मुझे तब मिला जब मैंने उनके निवास की चौथी मंजिल पर यज्ञशाला देखी। वे नित्य प्रति यज्ञ करते हैं और उनकी गृहणी श्रीमती विद्यावती भी अग्निहोत्र में उनका साथ देती हैं। दैनिक यज्ञ का यह सिलसिला उन्होंने 1984 में आरम्भ किया था जो अनवरत चल रहा है। इस यज्ञ कक्ष के धुएं से काजल बनी दीवारें इस बात की साक्षी हैं कि इस घर के स्वामी की यज्ञ में कितनी निष्ठा है। समय-समय पर उन्होंने अन्यत्र बड़े बड़े यज्ञों का आयोजन किया। राटरडम के हिन्दुस्तान कल्चरल सेंटर स्थित गंगा मन्दिर के सभा कक्ष में उन्होने अनेक बार बृहद यज्ञों का आयोजन किया है। मेरे उस नगर में रहने पर पं० देवी प्रसाद के संयोजन में ही त्रिदिवसीय धर्म प्रचार का कार्यक्रम रखा गया जिसमें पर्याप्त सख्या में स्त्री पुरुष उपस्थित थे।

मैंने हालैण्ड के जिन आर्य पुरुषों के घरों में सुन्दर पुस्तकालय देखें उनमें पं० देवी प्रसाद का नाम अन्यतम है। इसी प्रकार के बृहद् पुस्तक संग्रह राटरडम के पं० देव नारायण शुभधन, एम्सटर्डम के पं० सुन्दर प्रसाद शुभधन तथा राजधानी दि हेग (देनहाख) में हिन्दू सांस्कृतिक केन्द्र के संचालक डा. के यहां भी है। पं० देवीप्रसाद ने अपने पुस्तकालय में वेद, उपनिषद, दर्शन, आर्य विद्वानों के ग्रन्थादि का सुन्दर संग्रह किया है। वे स्वाध्याय में रुचि रखते हैं और जब भी उन्हें भारत जाने का अवसर मिलता है वे ग्रन्थ क्रय करना नहीं भूलते। पं० देवी प्रसाद का जन्म सुरीनाम देश में 6 सितम्बर 1954 को श्री रवीन्द्रनाथ तथा द्रोपदी देवी के यहां हुआ था। जब सुरीनाम देश में राजनैतिक परिवर्तन आया तो 1975 में ये हालैण्ड चले आये। श्रीमती विद्यावती से इनका विवाह 1977 में हुआ। देवी प्रसाद दम्पति की तीन सन्तानें (2 पुत्रियां गार्गी तथा प्रज्ञा एवं एक पुत्र विद्यासागर) हैं। उन्होंने अपने बच्चों के सारे संस्कार वैदिक पद्धति से कराये हैं। 1983 में जब राटरडम की आर्य समाज का भवन खरीदा गया तो उसमें रंगाई, पुताई एवं वेद मंत्र लेखन आदि का कार्य पं० देवी प्रसाद ने बड़ी तत्परता से किया। इसी वर्ष अजमेर में आयोजित ऋषि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी में भी इन्होंने सपत्नीक भाग लिया। राटरडम नगर के उक्त गंगा मन्दिर में साप्ताहिक सस्कृत पाठशाला चलती है। इसके संचालन में उनकी मुख्य भूमिका है। हालैण्ड जाने वाले सभी भारतीय आर्य विद्वानों के कार्यक्रम पं० भगवान दत्त द्वारा आयोजित किये जाते हैं। वे स्वगृह पर भी इन विद्वानों को आमन्त्रित कर प्रचार की व्यवस्था करते हैं तथा हालैण्ड के अन्य नगरों में जब-जब प्रचार कार्यक्रम होते हैं तो ये अपनी कार में वहां जाते हैं और उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं।

आज हालैण्ड में पं० ओम प्रकाश सामवेदी पं० विजयप्रकाश शास्त्री तथा पं० नरदेव आर्य तीन भारतीय आर्य युवक स्थायी रूप से रह रहे हैं और उत्तरी यूरोप के इस लघु देश में आर्य धर्म तथा वैदिक संस्कृति का प्रचार करने में लगे हैं। पं० सामवेदी राटरडम में रहते हैं, विजय शास्त्री ने लेवरदीन नाम नगर को अपना कार्यक्षेत्र बनाया है जब कि पं० नरदेव आर्य राजधानी दिहैग में रह कर धर्म प्रचार में संलग्न हैं। इन तीनों को पं० देवी प्रसाद का पूर्ण सहयोग प्राप्त है। भारत से हालैण्ड की यात्रा पर गये आचार्य हरिदेव, पं० धर्मपाल, डा० धर्मेन्द्र शास्त्री, डा० सत्यव्रत सकेत तथा इन पंक्तियों के लेखक को पं- देवी प्रसाद का सान्निध्य और समर्थन निरन्तर प्राप्त होता रहा। मेरी पुस्तक यजुर्वेदीय अध्यात्मक शतक के प्रकाशन के लिए भी उन्होंने एक अच्छी राशि प्रदान की थी।

पं० देवी प्रसाद हालैण्ड के विद्युत विभाग के एक उच्च पद पर कार्यरत हैं। अपने शासकीय एवं जीविका कार्यों से निवृत्त होने के पश्चात वे अपना सारा समय आर्य समाज को ही देते हैं। यदि उन्होंने हालैण्ड का सर्वाधिक कर्मठ पुरुषार्थी, जागृन एवं निष्ठावान, आर्य समाजी कहा जाये तो अनुचित नहीं होगी। भारत की ही भांति हालैण्ड के आर्य और आर्य संस्थायें परस्पर के मतभेदों और वैमनस्य से ग्रसित हैं। यदि उस देश के समस्त आर्य पं० देवी प्रसाद जैसे जागरूक तथा सिद्धान्तनिष्ठ आर्य पुरुष का नेतृत्व स्वीकार करें तो इस देश में वैदिक धर्म तथा आर्य समाज का सर्वाधिक प्रचार सम्भव है।

(पृष्ठ 1 का शेष)

भाषणबाजी बहुत हो चुकी। अब तो करके दिखाना होगा। खोई हुई विश्वसनीयता तथा साख को पुनः स्थापित करना होगा। तभी आर्य समाज अपने सत्यरूप में जीवित रहेगा। अपने सम्मान, गौरव, आकर्षण एवं प्रेरणा को प्राप्त होगा। निम्न सुझाव तुरन्त ईमानदारी से करणीय है।

1. आर्य समाज का चुनावी ढांचा प्रजातान्त्रिक है। जो कि स्वार्थ, पदलिप्सा और लोभ के कारण चरमरा गया है। टूट कर बिखर रहा है। उसे तुरन्त कठोरता से सुधारना होगा। मजबूती से लागू करना होगा।

2 एक व्यक्ति, एक पद, अधिक से अधिक तीन साल। जो कुछ करना और कर्त्तव्य दिखाना है। इसी समय में दिखा ले। इसके बाद दूसरे को अवसर दिया जाये। इसमें भाई, भतीजा, परिवार गुट आदि को दूर रखा जाये। जो तीन साल के बाद पद न छोड़े, उसे बेईमान करार दिया जाये। सामाजिक भर्त्सना की जाये। अनुशासनात्मक कठोर कार्यवाही की जाये। इससे आर्य समाज में एक नई लहर उत्साह व कार्य होगा।

3. वेद प्रचार को सर्वोपरि प्रमुखता दी जाये। विद्वान्, पुरोहित, उपदेशक, भजनोपदेशक आदि को तैयार करने को प्रमुखता दी जाये। प्रत्येक प्रान्तीय सभा आदर्श उपदेशक विद्यालय चलाये। जिसमें उचित रहन-सहन के साधन हों।

4. समस्त गुरुकुलों, स्कूलों, कालेजों में वैदिक विचारधारा और मिशनरी भावना को प्रमुखता दी जाये। ये ही स्थान है, जहां आर्य विचारधारा के लोग बनाये जाते हैं। संस्कार दिये जाते हैं। यदि गुरुकुल और डी ए वी स्कूल कालेज ईमानदारी से आर्य समाजी विचार फैलायें तो बड़ा कार्य हो सकता है। हजारों युवक आर्य समाज को मिल सकते हैं।

5 जितने भी आश्रम, संस्थायें, संगठन, ट्रस्ट, संस्थान आदि हैं और जितने भी स्वयंभू नेता महाराज, विद्वान सन्यासी आदि हैं। जिन्होंने अपने स्वतन्त्र संगठन बना रखे हैं उन्हें सर्वोच्च संगठन से जुडने के लिए बाध्य किया जाये। आचार संहिता का कठोरता से पालन हो

6 आर्य समाज अपने विद्वानों सन्यासियों, उपदेशकों और कार्यकर्त्ताओं को सभाले। उनका मान, सम्मान, सुविधा साधन आदि का प्रबन्ध करे। विद्वान भी अपनी चारित्रिक गरिमा और आदर्श का सदा ध्यान रखें। आज आर्य समाज में दोनों पक्षों से भूल हो रही है।

आज आर्य समाज को जनता से जुड़ने की जरूरत है। वर्तमान जीवन जगत की समस्याओं के समाधान में सहयोगी बनना होगा। समाज मन्दिरों के कार्यक्रमों को प्रभावपूर्ण प्रेरक एवं आकर्षक बनाने होंगे। समाज मन्दिरों को विवाद व झगड़ों से अलग करना होगा।

उक्त बातों का ईमानदारी व कठोरता से पालन किया जाये तो निश्चय ही आर्य समाजी आगे बढ़ेगा।

सम्पादकीय...

हमारे देश में पिछले कई वर्षों से राजनीतिक अस्थिरता बनी हुई है क्योंकि हमारे देश में अनेकों राजनीतिक पार्टियां बन गई हैं। हमारे देश की जनता भिन्न-भिन्न पार्टियों के उम्मीदवारों को अपना वोट देकर सफल बना देती है। किसी भी एक राजनीतिक पार्टी को इस कारण से बहुमत प्राप्त नहीं होता। गत चुनाव में भी ऐसा ही हुआ था जिसमें भाजपा को सब से अधिक सीटें मिली थी और भाजपा ने फिर छोटी-छोटी कई राजनीतिक पार्टियों को अपने साथ मिला कर अपना बहुमत सिद्ध किया था जिससे भाजपा की सरकार बन पाई थी। इससे पूर्व भी जो चुनाव हमारे देश में हुए थे, उनमें भी भाजपा को सब से अधिक सीटें मिलीं थीं, परन्तु भाजपा अपना बहुमत सिद्ध न कर सकी थी और अटल बिहारी वाजपेयी को जिन्हें प्रधानमंत्री बनाया गया था, बहुमत सिद्ध न होने पर त्यागपत्र देना पडा था। इसके पश्चात कांग्रेस के सहयोग से तीसरे मोर्चे ने अपना बहुमत सिद्ध किया और श्री एच डी, देवेगौड़ा को भारत का प्रधानमंत्री बनाया था परन्तु श्री एच डी देवेगौड़ा की सरकार भी पूरी तरह से न चल सकी और कांग्रेस के हस्ताक्षेप से ही श्री एच डी देवेगौड़ा को प्रधानमंत्री पद से हटाया गया और उसके पश्चात् श्री इन्द्र कुमार जी गुजराल को फिर कांग्रेस के सहयोग से प्रधानमंत्री बनाया गया परन्तु श्री इन्द्र कुमार गुजराल की सरकार भी थोड़े समय तक चल कर कांग्रेस के हस्ताक्षेप से गिर गई और फिर यह नये चुनाव हुए थे जिनमे फिर श्री अटल बिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री बनाया गया था परन्तु तीसरे मोर्चे और कांग्रेस ने मिल कर फिर वाजपेयी की सरकार को गिरा दिया और अब देश में मध्यावधि चुनाव सितम्बर में होने निश्चित हो गये हैं। सरकार बनाने व गिराने का सिल-सिला कई वर्ष से चल रहा है जो हमारे देश में अस्थिरता पैदा कर रहा है।

आजकल सभी राजनीतिक पार्टियों ने अपना प्रचार तेज कर दिया है और प्रत्येक राजनीतिक पार्टी किसी न किसी दूसरी राजनीतिक पार्टी से समझौता करने में लगी हुई है। इस समय भाजपा के साथ भी कई अन्य राजनीतिक पार्टियां इस चुनाव मे आपस समझोता करके अपने-अपने उम्मीदवार खडे कर रही हैं। इसी प्रकार से कांग्रेस तथा अन्य राजनीतिक पार्टिया भी चुनाव लडने के लिए अपने सयुक्त मोर्चे बना रही है। जिससे लगता है कि अगामी आने वाले इन चुनावो मे भी किसी एक राजनीतिक पार्टी को बहुमत नहीं मिलेगा ओर यदि किसी राजनीतिक पार्टी को बहुमत नहीं मिलता तो हमारे देश में फिर भी स्थिर सरकार नहीं बन सकेगी। राजनीतिक अस्थिरता से हमारे देश की बहुत हानि हो रही है और यह स्थिति अगर इसी प्रकार से चलती रही तो आगे चल कर के और भी हानि होने की सभावना है। हमारे देश की राजनीतिक अस्थिरता का दूसरे देश बहुत लाभ उठा रहे हैं और इससे हमारी शक्ति क्षीण हो रही है।

हम कई बार विचार करते है कि सरकार का बनाना जनता के हाथ मे है, जनता अपना वोट देकर किसी भी उम्मीदवार को सफल बनाती है ओर जो उम्मीदवार चुन कर आता है वह जनता का प्रतिनिधि होता है। यदि जनता किसी अच्छे व्यक्ति को चुन कर भेजती है तो सरकार भी अच्छी बनती है और यदि जनता निकम्मे व्यक्तियों को या भ्रष्टाचारियों को चुन कर भेजती है तो सरकार भी वैसे ही बनती है। पिछले दिनों हमारे देश के कई राजनीतिक नेताओं ने बहुत बड़े-बड़े घोटाले किए थे। जिससे उन राजनेताओं की छवि तो खराब हुई है इसके साथ ही उस राजनीतिक पार्टी की भी छवि खराब हुई है जिसकी टिकट पर यह चुन कर संसद भवन तक पहुचे थे। हमें कई बार अपने देश की जनता पर रोष आता है कि उसे पता है कि यह व्यक्ति भ्रष्टाचारी है और गत वर्षों में इस पर भ्रष्टाचार के कई आरोप लग चुके हैं परन्तु यह सब कुछ जानते हुए भी जनता दोबारा उसे फिर अपना वोट देकर सफल बना देती है। जनता के ऐसा करने से ही हमारे देश की राजनीतिक छवि धूमिल होती जा रही है। यह देश ऋषियो मुनियों का, महात्माओं व तपस्वियों का देश है। यहां बडे-बडे धर्मात्मा राजा महाराजा और ऋषि मुनि हुए हैं। कभी हमारा देश सत्यता के उच्च शिखर पर पहुंचा हुआ था। यहां के सभी व्यक्ति अपने निर्णय सत्यता के आधार पर लिया करते थे परन्तु अब चारों तरफ झूठ का ही बोलबाला है। राजनीति में तो झूठे वायदों के सिवाये और कुछ नजर ही नहीं आता। प्रत्येक उम्मीदवार अपने चुने जाने मे पूर्व जब जनता के बीच मे जाता है तो बहुत बडे-बडे वायदे करता है। समाज को खुशहाल बनाने की बात कहता है, जनता को तरह-तरह की सुविधाये देने की बात करता है, परन्तु ज्यो ही वह चुन लिया जाता है फिर वह अपना कोई वायदा पूरा नहीं करता जो कुछ वह जनता में कह कर आता है उस प्रकार का वह एक भी कार्य नहीं करता। उस समय न उस को जनता की परवाह होती है, न देश की परवाह होती है उस का उद्देश्य येन-केन प्रकारेण धन संग्रह करना हो जाता है। आज हमारे राजनीतिक लोगों के पास इतना धन है कि जिस की गिनती की जानी कठिन है। कई बड़े-बडे राजनीतिक लोगों ने अपना धन भारत के बैंकों में नहीं विदेशों मे जमा करवाया हुआ है। जो राजनीतिक नेता गत दिनों दिवगत हो गये हैं उनका भी अरबों खरबों रुपया बाहर के देशो मे जमा है। प्रत्येक राजनीतिक व्यक्ति रात दिन धन संग्रह करके विदेशी बैंको को भर रहा है। हमारे देश की जनता यह सब कुछ जानते हुए भी फिर भी उसे अपना वोट देकर सफल बना रही है। आखिर ऐसा क्यो हो रहा है। इसका कारण है जनता का किसी एक राजनीतिक पार्टी से जुड जाना। जनता भी अनेकों भागों में बटी हुई है तभी ऐसा हो रहा है।

सितम्बर अक्तूबर में हमारे देश में पुनः लोकसभा के चुनाव हो रहे हैं और इन चुनावों पर हमारे देश का कई करोड रुपया खर्च होने वाला है। इस रुपये से देश की उन्नति के लिए कोई कार्य किया जा सकता था। परन्तु अब यह सभी रुपया केवल चुनाव पर व्यय हो जाएगा और इतना खर्च हो जाने के पश्चात भी अभी तक यह नहीं कहा जा सकता कि जो सरकार आगे बनेगी, वह स्थिर होगी या नहीं। इसका कारण यही है कि हमारे देश की जनता के सोचने का ढंग बदला हुआ सा दृष्टिगोचर होता है। पहले हमारे देश का प्रत्येक व्यक्ति देश की उन्नति के सम्बन्ध मे पहले सोचता था और अपने बारे मे या अपनी पार्टी के बारे मे बाद मे सोचता था लेकिन अब किसी भी राजनीतिक नेता को कोई चिंता नहीं है, सब अपने तक व अपनी पार्टी तक सीमित हो गए हैं। सभी अपनी-अपनी तिजोरियों को भरने के लिए लगे हुए हैं। केवल चदेक व्यक्ति होंगे जो ईमानदारी से अपना कार्य कर रहे हैं। इसलिए जनता को एक सुअवसर और मिला है कि वह अपने देश की रक्षा के लिए उसकी उन्नति के लिए व भारत की सरकार को चलाने के लिए अपना ठीक उम्मीदवार चुन कर संसद भवन मे भेजे। इस चुनाव में प्रत्येक व्यक्ति को यह ध्यान रखना चाहिए कि वह अपना वोट किसी पार्टी विशेष को न देकर बल्कि व्यक्ति विशेष को दे। क्योंकि यदि जनता ने फिर अनेको पार्टियो को वोट देकर उन्हें सफल बना दिया तो हमारे देश की स्थिति वही होगी जो गत दिनो हुई है। कई राजनीतिक पार्टियो ने मिल कर सरकार को गिराया और करोड़ों रुपये का बोझ नये चुनाव का जनता पर डाल दिया। यह सिलसिला यहीं समाप्त नहीं होगा। यह आगे भी इसी प्रकार से चलता रहेगा, यदि जनता ने इस ओर ध्यान न दिया। इसलिए हमारे देश के प्रत्येक नागरिक को अपनी वोट की कीमत समझनी चाहिए और अपना वोट न तो बेकार जाने दें और न ही किसी गलत व्यक्ति को देवें। हमे इस चुनाव में किसी एक पार्टी को बहुमत दिलाना चाहिए ताकि उस राजनीतिक पार्टी की सरकार बन सके और वह पूरे पांच वर्ष तक चल सके। आर्य समाज का सम्बन्ध किसी एक राजनीतिक पार्टी के साथ नहीं है बल्कि सभी के साथ है इसलिए हम किसी राजनीतिक पार्टी का विरोध तो नहीं करेंगे परन्तु यह जरूर कहेंगे कि अच्छे व्यक्तियों को वोट दिया जाये और एक ही राजनीतिक पार्टी के लोगों को अधिक से अधिक संख्या में चुन कर भेजा जाए यदि जनता ऐसा कर सकी तो यह हमारे देश का बहुत बडा सौभाग्य होगा।

अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट
सभा महामन्त्री

गावो विश्वस्य मातरः (गाय विश्व की माता है)

☐ ले० श्री बन्धु महर्षि दयानन्द कामधेनु ट्रस्ट टंकारा (श्री सुष्ट)

भारत कृषि प्रधान देश है। यहां के 75 प्रतिशत लोगो के जीवन का एक मात्र आधार कृषि है। देश की आर्थिक प्रगति में गोधन का मूल्यवान योगदान है। इसलिए गाय को राष्ट्रीय प्राणी घोषित करके उसकी सुरक्षा होनी चाहिए। इसी कारण समग्र देश मे एक करोड नागरिकों के हस्ताक्षर करवा के माननीय राष्ट्रपति जी को आवेदन पत्र दिया जाएगा।

अंग्रेजों की कूटनीतिः

विदेशी शासक अंग्रेजों ने गोवध को प्रारम्भ करने में दो लक्ष्यों की पूर्ति देखीं।

1 हिन्दू मुस्लिम दंगे 2 पशुधन की बर्बादी के द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था का विनाश।

अंग्रेज गौ मांसभक्षी थे। भारतवासी किसी भी प्रकार सशक्त एवं स्वावलंबी न होने पायें और सदा गुलाम ही रहें। अंग्रेजों की इस कूटनीति से राष्ट्र की मूल्यवान संपत्ति को कत्ल करना शुरू कर दिया।

अनादि काल से लेकर मुस्लिम काल तक गायों को पवित्र जानकर उसकी सुरक्षा होती रही। हुमायुं, अकबर, बहादुरशाह जैसे कट्टर मुस्लिम सम्राटो ने भी देश की आर्थिक उन्नति और जनता के हितों को लक्ष्य में रखकर गौहत्या पर प्रतिबंध लगाया था। बादशाह जहांगीर ने गौ हत्या करने वालों के लिए फांसी की सजा का कानून बनाया। मैसूर के बादशाह हैदर अली ने गौ हत्यारों के हाथ काटने का आदेश दिया था। मुगल बादशाह बाबर ने गौ हत्या बंद करने का आदेश दिया था। सम्राट अकबर ने अपने विशाल राज्य मे गौहत्या बद कर दी थी। इसका प्रमाण 'आईने अकबरी' नाम की पुस्तक में है। इस आदेश को अकबर के वारिसदारों ने चालू रखा था। इसका प्रमाण औरंगजेब के अदले आलमगीरी या सकात आलमगीरी में देखने को मिलेगा। इसी समय इटली से भ्रमणार्थ आये हुए प्रसिद्ध मुसाफिर बर्नियर ने इसके बारे में लिखा है। शाहजहां ने अपने राज्य में गौ हत्या पर संपूर्ण प्रतिबंध लगाया था। इसी प्रकार प्रसिद्ध इतिहासकार हंटर ने लिखा है कि मुगल शासन के दरम्यान गौहत्या नहीं होती थी। भारत के मुस्लिम बहुल राज्य जम्मू-कश्मीर में गाय काटने पर 10 वर्ष की सजा है। जब कि हिन्दू बहुल राज्य में गाय काटने के लिए लायसन्स दिये जाते हैं।

वेदों में गाय का महत्व :

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पुरुषम्। तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा॥

(अथर्ववेद 1-16-4)

परमपवित्र ईश्वरीय ज्ञान वेद-गौ हत्यारे को शीशे की गोली से बेधने का आदेश कर रहा है।

यूयं गावो मेदयथा कृशं, चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम्।

भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु॥

(अथर्ववेद 4, 21,6)

हे गायों ! तुम कृश, दुबले पतले व्यक्ति को हृष्ट पुष्ट कर देती हो और पुरुषों को सुन्दर रूपवान बना देती हो। तुम्हारी वाणी- रम्भाना भी कल्याणकारी है। सभाओं में तुम्हारा खूब गुणगान किया जाता है।

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।

प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट॥

(ऋ ,7, 101, 15)

इस मन्त्र का देवता 'गौ' है। यह रुद्र 36 वर्ष पर्यन्त अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करने वालों की माता है। वसु० 24 वर्ष पर्यन्त अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करने वालों की स्वसा है। अमृत-अक्षय मोक्ष सुख का नाभि-केन्द्र है। मैं ऐसे जिज्ञासा सम्पन्न मनुष्यों को यह उपदेश करती हूं कि अनागाम् निष्पाप अदिति-अखण्डित सुखों की खान गाय का कभी भी वध न करो।

इस मन्त्र में कहे माता आदि शब्दों का भाव यह है-ब्रह्मचारी तीन प्रकार के होते हैं। उनमें वसुओं के लिए गाय दुहिता-शक्ति को दुहनेवाली, रुद्र ब्रह्मचारियों के लिए माता निर्माण करने वाली और आदित्यों के लिये स्वसा-अज्ञान को दूर फैंकने वाली है।

प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तीः शुद्धाः अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः।

मा वस्तेन ईशत माघशंस परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु॥

(अथर्व-7,75, 1)

इस मन्त्र का देवता 'अघ्न्या' है। जो कि वैदिक कोश के अनुसार गाय का मुख्य नाम है। इसका निर्वाचन करते हुए लिखा है-न हन्तव्या भवति अर्थात् गाय इतना अधिक उपकारी पशु है कि इसका वध करना महा पाप है।

अर्थ : हे मनुष्यों ! तुम्हारे घरों में प्रजावतीः उत्तम सन्तान वाली, सुयवसे (जौ) के क्षेत्रों में चरने वाली और शुद्ध जलों को पीने वाली गौ हो और उनकी सुरक्षा ऐसी हो कि कोई चोर उन्हें चुरा न सके और पापी डाकू आदि गाय को अपने वश में न कर सके। रुद्र-परमात्मा की हेति - वज्रशक्ति तुम्हारे चारों तरफ सदा विद्यमान रहे।

पयः पशूनां रसमोषधीनाम्।

बृहस्पतिः सविता मे यच्छतात्॥

(अथर्ववेद-19,31,5)

अर्थ : हे सर्वोत्पादक परमेश्वर ! हम सबको जीवन निर्वाह के लिए गाय का दूध और औषधियों का रस भोजन के लिए प्रदान करो।

घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रमभिरक्षताद् इमान् स्वाहा॥

(यजु 35, 17)

अर्थ :-हे (अग्ने) राजन् ! जैसे पिता अपने पुत्रों की रक्षा करता है वैसे आप गाय के मधुर और रोगनाशक दूध घृत आदि की व्यवस्था कर हमारी रक्षा करें।

दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽन......... जायताम्। (यजु. 22, 22)

इस मन्त्र में राष्ट्रीय प्रार्थना है-हमारे देश में प्रचुर दूध देने वाली गौएं भार ढोने में समर्थ तथा कृषि के योग्य बैल और यानों में सक्षम और शीघ्रगामी घोड़े पैदा हों।

गवां सेवा तु कर्तव्या, गृहस्थे पुण्यलिप्सुभि।

गवां सेवापरोयस्तु, तस्य श्रीर्वर्धतेऽचिरात्॥

अर्थात् पुण्य प्राप्ति के इच्छुक गृहस्थ का कर्त्तव्य है कि वह गौ सेवा करे। जो गौ सेवा करता है, उसके घर में लक्ष्मी की वृद्धि, यथाशीघ्र होती है।

किसी भी पन्थ-सम्प्रदाय में गौ मांस खाना नहीं लिखा है।

गाय की महिमा बताते हुए कुछ विभिन्न पंथ-विचारकों के मंतव्यः

1) बाईबिल-ईसाई मत में गौ रक्षा का संदेश :

तू किसी को मत मारे। तू मेरे समीप मनुष्य होकर रह।

जंगलों के प्राणियों का वध करके उनका मांस मत खा। (ईसा मसीह)

एक बैल को मारना एक मनुष्य के कत्ल के समान है। (ईसा इयाह(66-3)

मांस के लिए ईश्वर की बनाई सृष्टि का संहार नहीं करना चाहिए।

(रोमन्स 16-20)

भगवान ईसा मसीह का जन्म एक गौ शाला में हुआ था। इससे ईसाई लोगों को गाय के प्रति आदर भावना रखनी चाहिए। सेन्टपॉल ने कहा था कि हमारे (हिन्दू) भाईयों का मेरे भोजन से अगर दिल दुखता है तो हम जीवन भर मांस नहीं खायेंगे।

ईसाइयों के धर्म ग्रन्थ बाईबल में वृषभ को देव माना है। ईसा मसीह ने स्पष्ट कहा है कि, 'तुम किसी की हत्या मत करना। तुम मेरे साथ पवित्र बन कर रहो। जंगलों में प्राणियों का वध कर, उनका मांस भक्षण मत करना।'

2. पारसी मत में. गौ रक्षा संदेश-

ईश्वर मनुष्य जाति के अभ्युदय तथा गौओं का हित करने के लिए आवश्यक बुद्धि सदाचार और दृढ़ता प्रदान करें। (जरथुस्त्र यश्न 4-7)

पशुओं को न खाना और पशुओं का शिकार न करना यह हमारा जरथुस्ती नेक धर्म है। (फिरोदसी संत)

3 इस्लाम-मुस्लिम मत में गौ रक्षा संदेश-

गाय का दूध और घी तुम्हारी तन्दरुस्ती के लिए बहुत जरूरी है, उनका गोस्त नुकसान देह है। (पैगम्बर साहब-नाशियादहादी पुस्तक से)

गाय की कुर्बानी इस्लाम धर्म का नियम नहीं है। (फतवेहुमायूनी भाग 1-360)

तुम्हें अपने मन से धार्मिक पक्षपात को अलग कर देना चाहिए। प्रत्येक धर्म के नियम के अनुसार उसके साथ न्याय करना और गौ हत्या से परहेज रखना।

(बाबर का हुमायूं को पत्र, जमा दिया ओअल 930 हिजरी)

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पहचान

ले० श्री [illegible] ज्वालापुर (हरिद्वार)

यज्ञोपवीत का पहला धागा हमें स्मरण कराता है कि हमारे सिर पर मां का ऋण है जो कि हमने चुकाना है। यज्ञोपवीत के हर धागे को यदि खोला जावे तो हर धागे में तीन और छोटे छोटे धागे हैं। अर्थात् मां के, पिता के, या आचार्य के भी तीन प्रकार के ऋण हैं। इसलिए पहले हमने यह जानना है कि वह कौन-कौन से ऋण हैं जिससे हम ने मुक्त होना है। मां शब्द का अर्थ संकुचित रूप में नहीं सोचना चाहिए। केवल जननी को ही मां नहीं कहते। जननी भी मां है पर हमें मां के विस्तृत रूप को जानना है। विचार करो चिंतन करो तो यज्ञोपवीत अपने आप में एक ऐसा प्रतीक है जो कि मनुष्य की सोच को बदल कर रख दे और यदि औपचारिकता के साथ यह पहना जाता है तो केवल धागा है। बात तो मूल्यांकन करने की है। चेतना पैदा करने की है। जगाने की है। स्वयं को पहचानने की है। जरा मां के स्वरूप पर चिन्तन किया जाये कि मां क्या है ? क्या करती है ? क्या मांगती है क्या देती है, क्या लेती है ? सर्वप्रथम तो मां के गुणों पर विचारें जिस मां ने जन्म दिया।

पहली मां-जननी

किसी भी स्त्री को मां कह कर पुकारें। न जाने कितनी श्रद्धा स्वयं पैदा हो जाएगी और उस मां के दिल में न जाने कितना स्नेह पैदा हो जाएगा। फिर वह मां अपना सब कुछ न्योछावर कर देगी उस मुंह बोले बेटे पर और मां अपने उस पुत्र के लिए क्या नहीं जिसने उसकी कोख से जन्म लिया हो। मां तो प्रतीक है-ममता की, तप की त्याग की, तपस्या की। बालक जिस भाषा को बिना किसी विद्यालय में जाये बिना किसी अध्यापक के सीखता है उस भाषा को मातृ भाषा कहते हैं पितृ भाषा नहीं कहते, क्योंकि वह भाषा वह अपनी मां स सीखता है। यह कहना कि मां एक आचार्य है जरा भी गलत नहीं। जो आरक्षण मां की गोद में है वह किसी अन्य स्थान पर नहीं। बच्चा जब किसी से लड़ कर आता है तो माता की गोद में छिप कर बैठ जाता है। वहां पूर्ण रूपेण अपने आप को सुरक्षित मानता है। माता निर्माता भवति माता बच्चे का निर्माण करती है परन्तु माता केवल बच्चे के शरीर का ही निर्माण नहीं करती उसके जीवन का भी निर्माण करती है। एक कवि ने कितने सुन्दर शब्दों में लिखा है-

देखा नहीं हम ने उसको मगर।
पर इस की जरूरत क्या होगी।
ऐ-मां-तेरी सूरत से अलग।
भगवान की सूरत क्या होगी।

हम भगवान को सर्वव्यापक मानते हैं पर अंग्रेज लोग भगवान को सातवें आसमान पर विराजमान समझते हैं इसलिए एक अंग्रेज ने लिखा है ।

God Couuld not be every where, so he created mother

अर्थात् परमात्मा क्योंकि साकार हो नहीं सकता था इसलिए उसने अपना विकल्प मां के रूप में बनाया। पहले यह विचारा जाये कि मां, जननी, माता किन गुणों से ओत-प्रोत है और उसका हम पर क्या कर्जा है ? आओ यज्ञोपवीत के पहले धागे की तीन तारों में से पहली तार को खोल कर देखें।

पहली तार-सोम

मां का पहला गुण है वह सोम है। शीतल स्वभाव है। चांद की भान्ति सुन्दरता, शीतलता, मृदुता बिखेरती है। चांद की तरह हर आंख को भाती है। चांदनी की भान्ति मीठी लगती है। जिस पर चांद की किरणें पड़ती हैं उसके रंग रूप में निखार आ जाता है। मां का आशीर्वाद जिस व्यक्ति को मिलता है उसका जीवन एक ऐसा अनमोल निर्मल जीवन बन जाता है कि वह सदा उन्नति और सफलता के मार्ग पर अग्रसर होता है। चन्द्र में एक और बड़ा भारी गुण है कि उष्णता लेकर शीतलता देता है। मां भी कटुता लेकर मधुरता देती है। बच्चों के जले कटे शब्द सुनती है पर उत्तर में स्नेह देती है। आशीर्वाद ही देती है सन्तान की दीर्घायु के लिए प्रार्थी होती है। अपना सर्वस्व लुटा कर भी संतान को बचाना चाहती है। चाहे संतान उस मां की परवाह ही न करे। उस बच्चे के लिए भी अपना दिल निकाल कर रखने को तैयार जो बच्चा अपनी पत्नी के पीछे लग कर मां को मारने तक को तैयार हो जाता है।

मां का ऋण चुकाना है तो हमें भी स्वभाव से सोम बनना पड़ेगा। हमें भी चांद सी शीतलता बिखेरनी चाहिए। केवल अपनी सन्तान के लिए ही नहीं अपितु प्रत्येक प्राणी के लिए। सन्तान के प्रति शीतलता रखना तो Investment है। पूंजी को कर्जे पर लगाने की बात है। परन्तु अभी तो पिछला कर्जा उतारना है। मां के ऋण से तभी व्यक्ति उऋण हो सकता है यदि मनुष्य नम्र बोलने, नम्र व्यवहार को अपना स्वभाव बना ले। जीवन का अंग संग बना ले। जो काम मीठा बोलने से एक दिन में हो सकता है वह कड़वा बोलने से शायद वर्षों में भी न हो। गोली का घाव भर जाता है, बोली का घाव नहीं भरता। द्रोपदी के इन शब्दों ने कि अन्धे की औलाद अन्धी होती है अपना परिणाम दिखाया और महाभारत का युद्ध हुआ।

दूसरी तार-भविष्य निर्माता

मां का दूसरा गुण है कि वह अपनी सन्तान के उज्जवल भविष्य की निर्माता है। जिस घर में पिता चरित्रहीन है पर माता चरित्रवती है सन्तान फिर भी आदर्श बनेगी। पर यदि माता चरित्रहीन है और पिता चरित्रवान है तो सन्तान का चरित्र हीन होना लगभग निश्चित है। मां यदि पढ़ी लिखी है और पिता अनपढ़ है तो सन्तान को शिक्षा प्राप्त करने में स्वयं रूचि पैदा हो जाएगी। परन्तु यदि मां की पढ़ाई में रूचि नहीं केवल पिता की है तो सन्तान की पढ़ाई में रुचि रखना कठिन सी बात हो जाती है। यदि मां धर्म में रूचि रखती हो और पिता न रखता हो तो प्राय: बच्चे धर्म प्रेमी बनते हैं और यदि मां की धर्म में रूचि नहीं केवल पिता की हो तो बच्चों का धर्म की ओर झुकाव कम ही देखने में पाया गया है। कारण क्या है ? कारण यह है कि मां के चरित्र का, व्यवहार का, बच्चों के जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। बच्चे ज्यादा समय मां के पास रहते हैं और जो कुछ मां को करता देखते हैं वैसा ही करने का प्रयास करते हैं। वह कुछ संस्कार जन्म से लेकर आते हैं और कुछ संस्कार संगति से लेते हैं। पहले माता-पिता की संगति से फिर मित्र मंडली से। माता के पास अधिक समय बिताने से मां से बहुत कुछ जाने और अनजाने में सीखते हैं। इसलिए बच्चों के निर्माण में उनके भविष्य को उज्जवल बनाने में मां को एक बहुत क्रियात्मक भूमिका निभानी पड़ती है जो कि वह सदा निभाती है। मां पुत्र को राजा बेटा कह कर बुलाती है। बेटी को रानी बिटिया कहती है। उसके मन में यह भावना होती है कि उस का बेटा राजा बने। उसकी बेटी रानी बने। वह अपने पुत्र को ऊंचे से ऊंचे पद पर देखना चाहती है। परन्तु मां अपनी न्यायावस्था को कभी नहीं भूलती। मां के दस पुत्र हों फिर भी यह आशीर्वाद दसों के लिए है कि दस के दस पुत्र ही राजा बनें। पुत्रों का चाहे यह वहम हो जाये कि मां एक पुत्र से कम प्यार करती है दूसरे से ज्यादा। पर मां की दृष्टि में सब बराबर हैं। वह सब को एक जैसा प्यार देती है। महात्मा गांधी के जीवन निर्माण में उनकी मां का एक बहुत बड़ा हाथ था।

मां के इस ऋण को चुकाना है तो आप भी किसी एक व्यक्ति के उज्जवल भविष्य के निर्माण की प्रतिज्ञा करें। किसी बिना मां के बच्चे को अनाथालय से ला कर उसको आप अपने घर में पालन पोषण कर सकें, सुशिक्षित कर सकें तो बहुत अच्छी बात है। नहीं तो उसके भविष्य के निर्माण के लिए आर्थिक सहायता तो दे ही सकते हैं। किसी निर्धन मां का स्वप्न कि उसके पुत्र का भविष्य के निर्माण के लिए केवल आर्थिक सहायता की ही आवश्यकता .नहीं शारीरिक एवं मानसिक सहायता भी दी जा सकती है। (क्रमश:)

लुधियाना में उत्सव

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना

का 79वां वार्षिक उत्सव तथा आर्यु वीर दल शिविर प्रथम जून मंगलवार से 6 जून, 1999 रविवार तक वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में चतुर्वेद शतक महायज्ञ व आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है। जिसमें निम्नलिखित आर्य जगत के महान् संन्यसी विद्वान, संगीताचार्य पधार रहे हैं।

स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज, आचार्य रामानन्द जी महाराज शिमला (हि प्रदेश)।, पं सत्यपाल जी पथिक संगीताचार्य, आचार्य वेद प्रकाश जी शास्त्री शिविर अध्यक्ष, महात्मा सुमनायति जी महाराज, पं निरंजन देव जी इतिहास केसरी महोपदेशक आर्य प्र नि सभा पंजाब, श्री हरि सिंह जी शिक्षक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, पं हरबंस लाल जी शर्मा, प्रधान आर्य प्र नि सभा पंजाब, श्री अश्वनी कुमार जी शर्मा, महामंत्री आर्य प्र नि सभा पंजाब आदि वक्ता पधार कर उत्सव में समय-समय पर अपने अमृतमय विचार देंगे। आप सब कार्यक्रम मे परिवार एव इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

कार्यक्रम

1 जून, 1999 मंगलवार से 6 जून, 1999 रविवार तक:

प्रात: जागरण आर्य वीर दल शिविर 4 से 5 बजे तक स्नानादि तथा 5 से 6-30 बजे तक व्यायाम

यज्ञ, भजन, प्रवचन 6-30 से 8-30 बजे तक

आयोजक : पं सुरेन्द्र कुमार शास्त्री

प्रातराश के पश्चात् आर्य वीर दल का प्रशिक्षण चलता रहेगा।

रात्रि : 8 से 10 बजे तक वेद कथा व भजन।

समापन समारोह -रविवार 6-6-99 को 11 कुण्डीय यज्ञ, हवन यज्ञ प्रात: 7-30 से 9 बजे तक पूर्णाहुति। 9 से 9-15 बजे तक ओ३म् पताका ध्वजारोहण 9-15 से 9-30 तक अल्पाहार। आर्य सम्मेलन 9-30 से 12 30 तक अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जी, मुख्य अतिथि पं हरवंश लाल जी शर्मा श्री अश्वनी कुमार जी शर्मा। ऋषि लगर -- 12-30 आरम्भ।

निवेदक :- मतवाल चन्द प्रधान

फोन : 709428

श्रीमती सुषमा नागपाल के पति जयगोपाल का देहावसान

स्त्री आर्य समाज गोबिंदगढ जालन्धर की कोषाध्यक्ष श्रीमती सुषमा नागपाल के पति श्री जयगोपाल जी का 4-5-99 को देहावसान हो गया। उसका अन्तिम शोक दिवस दिनाक 16-5-99 रविवार को 2 से 3 बजे तक सत्यनारायण मदिर (समीप एस डी गर्ल्ज कालेज) गोबिंदगढ़ जालन्धर मे मनाया जायेगा।

श्री जयगोपाल जी एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनका जीवन बडा सादा था। ऐसे श्रेष्ठ व्यक्ति के चले जाने का सभी को दुख है।

स्त्री आर्य समाज गोबिन्दगढ जालन्धर की सभी सदस्याओं व आर्यसमाज के सभी सदस्यो ने उन्हे अपनी श्रद्धाजलि भेट करते हुए परम पिता परमात्मा से उनकी सद्गति के लिए प्रार्थना की और उनके वियोग को सहन करने तथा परिवार को शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की। हम सभी उन्हे आर्य मर्यादा साप्ताहिक की ओर से अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हैं।

धर्मदेव आर्य सह सम्पादक

वार्षिक चुनाव

21-3-99 को आर्य समाज आनन्द नगर राजपुरा टाऊनशिप का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ :-

सरक्षक श्री मूलचद जी सचदेवा, प्रधान श्री चन्द्र प्रकाश जी वधवा, उपप्रधान श्री विद्या रत्न जी आर्य, उपप्रधान श्री राम देव जी, उपप्रधान श्री खूब चन्द्र जी सेठी, मत्री श्री चन्द्र किशोर आर्य, उपमंत्री श्री वीरेन्द्र जी बतरा, प्रचार मंत्री श्री ज्ञान चन्द जी आर्य, कोषाध्यक्ष श्री नन्द किशोर जी सचदेवा भडारी श्री जयदेव बतरा, लेखा निरीक्षक श्री देव राज, पुस्तकाध्यक्ष श्री नीरज आर्य, सहायक श्री अश्विनी आर्य।

अन्तरंग सदस्य

श्री लाजपत राय बतरा, श्री वेद प्रकाश कपूर, श्री सुन्दर दास, श्री अशोक छाबड़ा, श्री सुभाष चावला, श्री रतन वधवा, श्री सुरेश आर्य, श्री राजपाल वधवा, श्री विनय आर्य, श्री सतीश छाबड़ा, चन्द्र किशोर मंत्री।

(पृष्ठ 4 का शेष)

हिन्दु मुस्लिम को एक प्लेटफार्म पर लाने के लिये गोरक्षा से बढ़कर कोई उपाय नहीं। मैं मुसलमान मित्रों से कहूंगा कि कुरान शरीफ जो खुदा का कलाम है, उसमें कहीं भी गाय के मांस खाने का हुक्म नहीं है। (मौलाना कामिल साहब)

हमें सर्व प्रथम यह जान लेना चाहिए कि गौमांस भक्षण इस्लाम धर्म का अंग नहीं है। यदि कोई मुसलमान गौमांस न खाये तो इससे मुसलमानों की श्रेणी में नीचा नहीं हो जाता। (डा मुहम्मद हाफिज सैयद)

गाय का दूध बदन की खूबसूरती और तन्दुरस्ती बढ़ाने का बड़ा जरिया है। (हजरत मुहम्मद-बेगम हजरत आयशा से)

बिना शक तुम्हारे लिए चौपायों की सीख है। उनके (गाय के) पेट की चीजों में से गोबर और खून के बीच में से दूध, जो पीने वालों के लिए स्वाद वाला है, हम तुम्हें पिलाते हैं। (कुरान शरीफ)

हरगिज नहीं पहुंचते अल्लाह के पास कुर्बानियों के गोस्त और उनके खून, अलबत पहुंचता है अल्लाह के पास, तुम्हारा तकना और परहेजगारी। (कुरान शरीफ - सुर-ए-हज)

अच्छी तरह पाली हुई 10 गायें 16 वर्षों में ने सिर्फ 450 गायें और पैदा करती हैं, बल्कि उनसे हजारों रुपये का दूध और खाद भी मिलता है। गाय दौलत की रानी है। (हजरत मुहम्मद-मौलाना फारुखी द्वारा संकलित बरकत और सरकत से)

गाय का दूध दवा है। इसके मक्खन में शिफा (तन्दुरस्ती) है और मांस में बीमारी। (इमाम जाफर साहब)

मुसलमान को गैया नहीं मारनी चाहिए। ऐसा करना हदीस के खिलाफ हे। (मौलाना साहब खानखाना-हाली समद साहब)

गाय को बुजुर्गी इहतराम किया करो क्योंकि वह नमाम चौपायों की सरदार है। (तफसीर दर मन्सूर)

न तो कुरान और नही अरब की प्रथा ही गैया की कुर्बानी की इजाजत देती है। (हकीम अजमल खान सेनानी)

हजरत इमाम आजम अबु हनिफाने मोहम्मद पैगंबर साहब के एकत्र किये वचन को जिसे हदीस कहते हैं। क्र 474:4 में कहा है, वृद्ध . म्बा याने मौत के सिवाय अल्लाताला ने कोई भी बीमारी धरती पर उतारी नहीं है जिसके साथ दवा न उतारी हो। आप गाय का दूध पियें उसमें भी सभी प्रकार के तत्व मिलते हैं।

1922 में मौलाना अब्दुल बारी मरहूम फिरंगी महली ने गौहत्या पर जब प्रतिबन्ध लगाया था, तब महात्मा गांधी ने उनका शुक्रिया अदा किया था।

इस्लाम प्रवर्तक महम्मद साहब ने कदापि गाय के बलिदान की बात कही नहीं और वर्तमान में भी मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में गाय की हत्या नहीं होती।

सर सुलतान अहमदखान मुस्लिम लीग के संस्थापक प्रधान ने एक बार दृढ़तापूर्वक कहा था, 'गौ की कुर्बानी के मुकाबले में हिन्दु की मित्रता अधिक मूल्यवान है। मुसलमानों के मामले में जिद पहले दर्जे की मूर्खता है।'

मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर : 1857 के स्वातंत्रता आन्दोलन में अखण्ड भारत का नेतृत्व करते हुए अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर ने गौहत्यारो को तोप से उड़ाने का फरमान जारी किया था। यह नियम बकरीईद के त्यौहार पर भी लागू था।

अकबर के लडके जहांगीर के विषय में फ्रेंच यात्री बर्नीयर लिखते हैं, 'अपने विस्तृत राज्य में जहांगीर ने गौवध बन्द कर दिया था। दीवाली के दिन ब्राह्मण शाही बगीचे में गाय लाते थे और ईनाम पाते थे।'

मौलवी कुतुबदीन और बादशाह हैदरअली को कलियुगी विराट कहा जाता था। उसके पास अमृत महल जाति के 60 हजार बैल थे। टीपु सुलतान स्वय गौशाला की देखभाल करता था।

इन निम्न निर्दिष्ट राजाओं और बुजुर्गो ने गौहत्या पर प्रतिबन्ध लगाया था।

मुगल बादशाह बहादुरशाह के खास पीर मौलवी कुतुबद्दीन साहब ने आदेश जारी किया था कि हदीम में कहा गया है कि गौहत्या करने वालों को कभी क्षमा नहीं करना चाहिए। इस आदेश (फतवे) के नीचे निर्दिष्ट बुजुर्गो के हस्ताक्षर हैं।

महम्मद गाजीशाह आलम बादशाह, सैयद उत उल्लातखान फिदवी, पीर मौलवी कुतुबद्दीन, काजी मियां असगर हुसैन दस्तखत खास वल्द मुन्शी इलाहीखान दरोगा आतिशखान हजूरपुरनुर

बाबर, हुमायुं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां, मुहम्मदशाह आलम जैसे शासक उपरांत अब्दुल गुल्फ इब्ने, मरदान सुबेदार, ईराकवाली हकुमत, अफगानिस्तान के शासकों ने सबसे अधिक उलेमा अहले सुन्नत के आदेश (फतवा) अनुसार गायों के कत्ल पर प्रतिबंध फरमाया था। (क्रमशः)

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन राष्ट्रीय स्मारक घोषित करें

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने की मांग को लेकर आर्य युवक परिषद का राजघाट में धरना सम्पन्न

राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने की मांग को संसद में उठाऊंगा

सांसद विजय गोयल

नई दिल्ली (रवि) : 11 अप्रैल, 1999 को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल आर्य के नेतृत्व में तथा स्वामी जगदीश्वरानन्द जी की अध्यक्षता में नया बाजार स्थित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने की मांग को लेकर राजघाट में प्रातः 9 से सायं 5 बजे तक विशाल धरना दिया गया।

धरना को सम्बोधित करते हुए चांदनी चौक सांसद श्री विजय गोयल ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान यह देश हमेशा याद रखेगा। मेरे संसदीय क्षेत्र चांदनी चौक के नया बाजार में स्वामी जी का बलिदान हुआ था। आज यह जगह उजाड़ है व विभिन्न दुकानें बन गयीं हैं। प्रधानमंत्री से हम यह मांग पुरजोर रखेंगे कि जहां स्वामी जी का बलिदान हुआ वहां उनका स्मारक बनाया जाये। यह मामला मैं संसद में भी उठाऊंगा।

स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, स्वामी वरुणवेश जी ने आर्य समूह को सम्बोधित किया तथा आह्वान किया कि जब तक सरकार इसे राष्ट्रीय स्मारक घोषित नहीं करती तब तक हमारा आन्दोलन जारी रहेगा।

पूर्व सांसद आचार्य भगवानदेव, पूर्व सांसद श्री रामचन्द्र विकल, पूर्व विधायक श्री रोशनलाल आर्य, सारस्वत मोहन मनीषी (राष्ट्रीय कवि), सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री बनारसी सिंह, श्रीमती शकुन्तला आर्य (पूर्व महापौर) डी.ए.वी के नेता श्री राजरतन भल्ला, आचार्य डा शिव कुमार शास्त्री, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्य सुखदेव वर्मा, श्री राजेन्द्र वर्मा, श्री इन्द्रसेन मल्होत्रा, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्रीमती चन्द्रकला राजपाल, श्रीमती स्वर्णा गुप्ता, श्री अविनाश कपूर श्री दुर्गा प्रसाद कालड़ा, श्री के.डी. वर्मा, चौ० रघुनाथ सिंह, डा० ओम प्रकाश मान, श्री सोमनाथ कपूर, श्री सुन्दरलाल कालड़ा, श्री रामदिया, श्री आनन्द चौहान आदि ने धरना में समर्थन दिया तथा उपस्थित आर्य जनता को सम्बोधित किया।

इस अवसर पर सुबह से ही स्वर्तंत्रता सेनानी पं० आशानन्द भजनोपदेशक, श्री अशोक शास्त्री (ग्वालियर) पं० श्यामवीर राघव, पं० दिनेश दत्त आदि के भजनों का सुन्दर कार्यक्रम चलता रहा। वैदिक चौपाई मण्डली ग्राम डींग, वल्लभगढ़ का सुन्दर चौपाई कार्यक्रम सभी ने पसद किया तथा धरने में नई जान डाल दी। इसका श्रेय श्री हेतराम आर्य, श्री ईश्वर सिंह आर्य को जाता है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री श्री महेन्द्र भाई जी ने यज्ञ करवा कर किया। सायं 5 बजे बड़े जोश और उत्साह के साथ आर्यजन घर लौटे तथा अपना संकल्प दोहराया कि बलिदान भवन को हम राष्ट्रीय स्मारक घोषित करके रहेंगे।

भवदीय

सुधारक

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर (जालन्धर) का त्रैवार्षिक चुनाव

मान्यवर ट्रस्टी महोदय। सादर नमस्ते।

आपको विदित हो कि श्री गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट करतारपुर की साधारण सभा की एक बैठक "श्री गुरु विरजानन्द स्मारक भवन" करतारपुर में 6 जून 1999, रविवार को बाद दोपहर 3 बजे रखी गई है।

इस साधारण सभा में ट्रस्ट का त्रैवार्षिक (1999-2002) के लिए चुनाव तथा ट्रस्ट के 1998-99 के आय-व्यय की प्रस्तुति मुख्य विचारणीय विषय होंगे।

इस सभा में आपकी उपस्थिति अति महत्वपूर्ण है। अतः आप यथा समय पर अवश्य पधारने की कृपा करें।

विशेष–(क) 3 जुलाई-1993 की साधारण सभा के निर्णय के अनुसार प्रत्येक ट्रस्टी को चुनाव मे पात्रता के लिए प्रतिवर्ष 100/- (एक सौ रुपये) ट्रस्टीशिप नवीनीकरण शुल्क देना आवश्यक है। अतः यदि आपने अभी तक यह शुल्क जमा न करवाया हो तो कृप्या 6 जून 1999 प्रातः 12 बजे तक अपना ट्रस्टीशिप नवीनीकरण शुल्क अवश्य जमा करावें।

(ख) बैठक में सम्मिलित होते समय कृपया इस पत्र को अपने साथ अवश्य लावें जिससे शुल्क मिलान करने में सुविधा हो।

(ग) भोजन तथा आवास का प्रबन्ध ट्रस्ट की ओर से गुरुकुल मे किया जाएगा। **चतुर्भुज मित्तल मन्त्री**

सोनीपत में आर्य वीराङ्गना प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

हिन्दू मच सोनीपत के तत्वावधान में तपोमूर्ति, कर्मनिष्ठ पूज्यपाद महात्मा जी महाराज की पुण्य स्मृति में गायत्री महायज्ञ एवम् आर्य वीराङ्गना ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर दिनांक 12-4-1999 से 18-4-1999 (सोमवार से रविवार) तक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्यपाद परम हस स्वामी जगदीश्वरा नन्द जी (ब्रह्मा), ब्रह्मचरिणी सुमेधा जी (बौद्धिकाध्यक्ष) वेद मन्दिर महात्मा वेद भिक्षु सेवाश्रम दिल्ली, प्रशिक्षक के रूप में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस की ब्रह्मचारिणियों, स्वतन्त्रता सेनानी तपोनिष्ठ श्री आसानन्द आर्य भजनो पदेशक, श्री पं सीता राम आर्य भजनो पदेशक, श्री अखिलेश्वर शर्मा (महाराष्ट्र), स्थानीय महानुभाव सर्व श्री अमरनाथ आर्य, भगत सुन्दर दास, हरि चन्द स्नेही बौद्धिकाध्यक्ष प्रान्तीय आर्य वीर दल हरियाणा, आशा नन्द वधवा, सर्व श्रीमती प्रतिभा शुक्ला, सुनीता अरोड़ा, राज रानी, विदुषी आर्य आदि का सानिध्य एवम् आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

आर्य वीराङ्गनाओ को सन्ध्या यज्ञ, योगासन, लाठी चलाने का प्राशिक्षण दिया गया तथा प्रमाण पत्र भी दिए गए।

इस महोत्सव के अन्तिम दिवस सुप्रसिद्ध योगपति श्री जयदेव जी हसीजा "प्रेमी" की अध्यक्षता मे मुल्तानी (सिराय की) कवि सम्मेलन श्रद्धेय श्री हरीश्चन्द्र जी नाज सोनीपती के मार्ग दर्शन मे आयोजित किया गया। जिसमे स्थानीय और पानीपत तथा दिल्ली के कवियों ने जनता को आनन्दित किया। ऋषि लगर का भी आयोजन किया गया।

हरिचन्द्र स्नेही
"बौद्धिकाध्यक्ष"

आर्य समाज बठिण्डा में पं० गुरुदत्त जन्म दिवस

आर्य समाज बठिण्डा के प्रांगण में पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जी का जन्म दिवस आदरणीय अशोक जी अग्रवाल मैनेजर आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल की अध्यक्षता में बड़ी श्रद्धा से मनाया गया। हवन यज्ञ पं० धर्मवीर जी शास्त्री (हिसार) के ब्रह्मत्व में हुआ। हवन यज्ञ के यजमान प्रो० अशोक कुमार जी गुप्ता व डा. मनोहर लाल जी बंसल सपत्नीक रहे। इन्होंने आर्य समाज को दान भी दिया। हवन यज्ञोपरान्त पं० धर्मवीर जी ने अपने प्रवचन में मानव के जीवन पर महर्षि दयानन्द की छाप बारे विस्तार से चर्चा की उन्होंने कहा मनुष्य को अपने सिद्धान्त पर चलना चाहिए जिस प्रकार ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने अपने सिद्धान्तों पर किसी से समझौता नहीं किया। उन्होंने कहा कि मानव को उन्नति की ओर अग्रसर रहना चाहिए।

आर्य समाज के मान्य पुरोहित पं० सुनील कुमार जी शास्त्री ने पं० गुरुदत्त जी के तपस्वी जीवन की अनेक घटनाएं सुनाईं। पं० गुरुदत्त जी विद्यार्थी ने अपने जीवन में ऋषि दयानन्द जी के ऋण अवस्था में दर्शन किए और गुरुदत्त जी पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि पं० जी आर्य समाज के होकर ही रहे। इससे पूर्व पं० जी नास्तिक थे। ऋषि दयानन्द के दर्शनों से पं० जी की नास्तिकता दूर हुई और कहूं तो नास्तिकता पर आस्तिकता की विजय हुई। पं० जी का जीवन छोटा था परन्तु कार्य बड़ा ही सराहनीय था। हम उनके बताये मार्ग पर चलें।

श्री बिहारी लाल जी मगला मन्त्री आर्य समाज ने मंच का संचालन सुचारु ढंग से किया। आज की सभा के अध्यक्ष अग्रवाल जी ने इस कार्यक्रम में सम्मिलित सभी आर्य जनों का धन्यवाद किया। शान्तिपाठोपरान्त प्रसाद वितरण किया गया।

प्रेम भाटिया
प्रधान

विशाल युवक चरित्र निर्माण शिविर जयपुर में

नई दिल्ली केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली का राष्ट्रीय शिविर इस वर्ष 19 जून से 27 जून 1999 तक डा ए वी पब्लिक स्कूल वैशाली नगर जयपुर (राजस्थान) में लगाने का निश्चय किया गया है। शिविर सचालक व परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने बताया कि शिविर मे लगभग 400 आर्य युवक भाग लेने के लिए आ रहे हैं शिविर के अध्यक्ष प्रिसीपल मोहनलाल गोयल रहेंगे। युवा विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री बौद्धिक अध्यक्ष रहेगे राष्ट्र कवि डा० सारस्वत मोहन मनीषी की कविता व गीतो का आनन्द आर्य युवक उठायेगे।

शिविर में युवको के चरित्र निर्माण राष्ट्र निर्माण आर्य सस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी दी जायेगी तथा योग्य व्यायाम शिक्षकों द्वारा योगासन दण्डबैठक लाठी तलवार जूडो कराटे आदि आत्मरक्षा प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। एक दिन समस्त आर्य युवक महर्षि दयानन्द बलिदान स्थली अजमेर जाकर आर्य समाज के सेवा के सकल्प को दोहरायेंगे। इच्छुक आर्य युवक 100 प्रवेश शुल्क सहित अपना नाम केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्यालय मे श्री महेन्द्र भाई जी राष्ट्रीय महासचिव आर्य समाज कबीर बस्ती दिल्ली 7 फोन 3985456 व 2268565 पर अकित करवा ले। शिविर में अनुशासन का पालन करना अनिवार्य है।

दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना मे यज्ञ

नव वर्ष के आरम्भ में दयानन्द पब्लिक स्कूल में बृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ आर्य समाज सिविल लाईन्ज की प्रधाना सरला लूम्बा जी ने करवाया स्कूल के बहुत से छात्र व छात्राए यजमान के पद पर बैठे हुए थे। यज्ञ के पश्चात् श्री ओम् प्रकाश जी गुप्ता ने बच्चो को आशीर्वाद दिया। स्कूल के प्रबन्धक श्री आशानन्द जी आर्य ने बच्चो को समझाते हुए कहा कि खूब मेहनत करो और खूब उन्नति करते हुए मा बाप का नाम रोशन करो और अपने स्कूल का नाम ऊचा करो इस प्रकार बच्चो ने नव वर्ष की पढाई के शुभारम्भ पर बडी श्रद्धा से यज्ञ मे भाग लिया। सुनिता मलिक प्रिंसीपल

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म दिवस

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना को यह गौरव प्राप्त है कि यह आर्य समाज अपने महापुरुषों के जन्म दिवस और शहीदी दिवस बडे उत्साह पूर्वक मनाता है इसी शृखला में पडित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म दिवस जो 26 अप्रैल को पडता है बडे उत्साह पूर्वक और श्रद्धा से मनाया गया। 25 अप्रैल 99 को सुबह हवन यज्ञ से इसका शुभारम्भ किया गया। प० सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ने यज्ञ को सम्पन्न कराया।

पडित गुरुदत्त विद्यार्थी के जन्म दिवस पर जिला आर्य सभा की प्रधाना श्रीमती राजेश जी शर्मा ने भजन के माध्यम से गुरुदत्त जी की जीवनी पर रोशनी डाली।

आर्य समाज के प्रधान श्री मतवाल चन्द जी आर्य ने विस्तार से पडित गुरुदत्त जी की जीवनी पर प्रकाश डाला कि छोटी सी आयु में उन्होंने आर्य समाज का इतना कार्य कर दिया जो कि आज के समय करना बहुत कठिन है ऐसा महापुरुष पैदा होना बहुत मुश्किल है।

श्री रोशन लाल जी आर्य आर्य समाज के वरिष्ट उपप्रधान ने भी प० गुरुदत्त विद्यार्थी के नैतिक जीवन पर चर्चा की और महर्षि देवदयानन्द की किस प्रकार सेवा की और ईश्वर की सत्ता पर पूर्ण विश्वास जताया।

सनातन धर्म विद्या मन्दिर की बच्चियो ने एक बहुत ही सुन्दर गीत ज्ञान ज्योति को सदा मन में जलाना सीख लो गाकर खचाखच भरे हाल में सब का मन मोह लिया। उनका उत्साह बढाने के लिए काफी सख्या में बच्चियों को पारितोषिक भी दिया गया और उनको आर्य साहित्य भी दिया गया। श्री श्रवण कुमार जी आर्य ने वेद मन्त्र की कथा बहुत ही सुन्दर शब्दो में की और पडित जी की जीवनी पर अपने विचार रखे।

महात्मा सुमनमति जी ने अमृत मय उपदेश दिया। श्री सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ने इस कार्य के लिए बहुत कार्य किया।

अन्त में आए हुए सैंकडो की सख्या मे आर्य जनों ने प्रीतिभोज किया। आत्म प्रकाश
महामन्त्री

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामन्त्री सम्पादक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस/ऐलिमेंट प्रिंटर्स जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

सवत् 1972949099

(0 प्रतिया)
2277 श्री पुस्तकाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)

रजि न PB/JL/55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 50 अक 38 4 मार्गशीर्ष सम्वत् 2056 तदनुसार 16 19 दिसम्बर 1999 दयानन्दाब्द 75 वार्षिक शुल्क 50 रुपय आजीवन 500 रुपय

23 दिसम्बर को जिनका बलिदान दिवस है

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

पी.एच.डी. गुरुकुल कागड़ी वि.वि. हरिद्वार

ब्रिटिश राज्य के भूतपूर्व प्रधानमत्री रैम्चे मैकडानल्ड ने स्वामी श्रद्धानन्द के विषय मे गौरवपूर्ण शब्दो मे कहा था

वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान ईसा की मूर्ति बनाने के लिए सजीव माडल चाहे तो मैं इस भव्यमूर्ति (महात्मा मुशीराम) की ओर इशारा करूगा यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सैण्टपीटर के चित्र के लिए नमूना मागेगा तो मैं उसे इस जीवित भव्यमूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा दूगा।'

जिनके विषय में एक कहानी प्रसिद्ध है अयस् से सुवर्ण बनने की कहानी । पारसमणि के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है। लेकिन सहस्रो मनुष्यो की आत्माए जग लगे हुए लोहे के समान थीं जो स्वामी श्रद्धानन्द रूपी पारसमणि के सम्पर्क से सुवर्ण मे परिवर्तित हो गई। इनसे पूर्व 19वीं शताब्दी के पारसमणि महर्षि दयानन्द थे। जिन्होने अनेक लोगो का उद्धार किया। उन्हीं में सबसे अग्रणी शिष्य थे स्वामी श्रद्धानन्द। अनेक दोषो दुर्व्यसनो में फसे हुए मुशीराम का जीवन स्वामी दयानन्द के उपदेशामृत से बदल गया। वही मुशीराम पूरे विश्व का श्रद्धास्पद स्वामी श्रद्धानन्द बन गया।

महापुरुषो के तपस्वी जीवन प्रकाश स्तम्भ बन कर विश्वव्यापी अविद्या और अधकार को दूर करते हैं मानवता को एक ज्योतिर्मय पथ दिखा कर उनके जीवन को [illegible] करते हैं
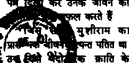
[illegible] मुशीराम का प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त पतित था [illegible] वैदिक क्राति के अग्रदूत, [illegible] सुधारक आर्य [illegible] संस्कृति के उन्नायक योगिराज महर्षि दयानन्द बरेली पधारे। मुशीराम भी अपने पिता के साथ बरेली में ही थे। उनके कहने पर मुंशीराम जी भी सत्सग में आए। धीरे धीरे स्वामी दयानन्द के प्रवचन का मुशीराम पर प्रभाव होने लगा और दो चार दिन के सत्सग से ही मुशीराम का कायाकल्प होने लगा। धीरे धीरे व्यसनो की ओर से मुशीराम ने मुख को मोडा और धार्मिक विचारो मे मन को लगाने लगे। महर्षि कृत सत्यार्थ प्रकाश के नियमित स्वाध्याय से तो इनका अधकार मय जीवन प्रकाश की ओर अग्रसर होने लगा और मुशीराम जी समाज के सच्चे हितैषी सघर्ष मे वीर योद्धा घोर निराशा मे दृढ विश्वास रखने वाले बन गए। अनेकानेक ग्रथो के गहन अध्ययन से वह समाज को राष्ट्रीयता से अलकृत करना चाहते थे। आर्य जगत को भ्रातृभाव की एक माला मे पिरोकर उनमें

सगच्छध्व सवदध्व स वो मनासि जानताम् के वैदिक आदर्शों को स्थापित करने में महात्मा मुशीराम को यह सब महर्षि दयानन्द की ही देन थी।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ऋषि दयानन्द को अपनी श्रद्धाजलि समर्पित करते हुए कहा है ऋषिवर! तुम्हे भौतिक शरीर त्यागे 41 वर्ष हो चुके परन्तु तुम्हारी दिव्यमूर्ति मेरे हृदय पर ज्यो की त्यो अकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी रक्षा की है ? तुमने कितनी गिरती हुई आत्माओ की काया पलट दी? इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है बिना परमात्मा के जिनकी पवित्र गोद मे तुम इस समय विचर रहे हो कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशो से निकली अग्नि ने ससार मे प्रचलित कितने पापो को दग्ध कर दिया है परन्तु मैं अपने विषय में कह सकता हू कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठा कर सच्चा जीवन जीने योग्य बनाया। सब ऋषि की कृपा का ही परिणाम है भगवन्! मैं तुम्हारा ऋणी हू उस ऋण से मुक्त होना चाहता हू। इसीलिए जिस परमपिता की असीम गोद में तुम परमात्मा का अनुभव कर रहे हो उसी से प्रार्थना करता हू कि मुझे तुम्हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करे।

ऋषि के प्रभाव से उनके उद्देश्यो को पूरा करने मे स्वामी श्रद्धानन्द जी जुट गए। सत्यार्थ प्रकाश मे स्वामी दयानन्द ने आर्य शिक्षा पद्धति का जैसा चित्र खींचा था उसको साकार रूप देना था। यजुर्वेद के स्वाध्याय मे उपह्वरे गिरीणा सगमे च नदीनाम् । धिया विप्रो अजायत (26/15) इस मत्र को साकार करना था। स्वामी श्रद्धानन्द ने अगस्त 1898 के प्रचारक में यह घोषणा की थी जब तक गुरुकुल के लिए 30 सहस्र रुपए इकट्ठ न कर लगे तब तक घर मे पैर नहा रखेगे स्वामा जी ने 30 सहस्र के स्थान पर 40 सहस्र रुपए एकत्रित करन क बाद ही अपने घर की ओर मुख किया [illegible] उनको महात्मा पद का उपाधि से विभूषित किया

कल कल निनाद करता गगा के उस पार हरिद्वार के सुरम्य वना मे कागडी गाव के पास गुरुकुल की स्थापना की गई गुरुकुल की स्थापना के लिए मुशी अमनसिह तथा महात्मा मुशीराम ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया जनता ने भी भरपूर सहायता की समय समय पर गुरुकुल की पवित्र भूमि को विश्व की प्रसिद्ध हस्तिया पवित्र करती रही महात्मा गाधी को महात्मा पद से विभूषित इसी गुरुकुल ने किया था गुरुकुल की लोकप्रियता के विषय मे एक उदाहरण देना पर्याप्त है अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री और वकील मि मामरन एच फैल्प्स कहते थे कि यदि मेरा कोई लडका होता तो मैं उसे गुरुकुल मे ही भर्ती करता अथवा मैं ही यदि 8 वर्ष का आयु प्राप्त कर सकता तो गुरुकुल मे भर्ती हो जाता वही छोटा सा गुरुकुल विश्वविद्यालय बन गया

जिस गुरुकुल की स्थापना आर्य शिक्षा पद्धति को ध्यान मे रख कर की गई थी महात्मा मुशीराम न गले मे झोली डाल कर 40 सहस्र रुपए एकत्रित किए थे अपने पुत्रो को गुरुकुल के लिए समर्पित कर दिया था। हमें विचार करना चाहिए कि स्वामी जी के सपनो का वह गुरुकुल आज उसी आलोक पथ पर चल रहा है अथवा नही ? हम सभी को यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि स्वामी जी के कीर्ति स्तम्भ इस गुरुकुल की रक्षा करे और इसका सुगन्ध को विश्व मे दूर दूर तक फैलायें। शेष पृष्ठ 5 पर)

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस स्मृति—

सत्यार्थ प्रकाश के लिए एक तरुण की तड़प

ले० श्री देवनारायण भारद्वाज, भू० कृषि निदेशक (से नि.)
प्रोफेसर्स एम.आई.जी. (फ्लै)-8 अवन्तिका कालोनी, रामघाट मार्ग, अलीगढ़

महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित सत्यार्थ प्रकाश आज सर्वत्र लागत मूल्य पर सुलभ है। प्यासा कुँआ के पास ही नहीं कभी कुँआ भी प्यासे के पास पहुचकर उसकी प्यास बुझाता है जैसे प्रचार वाहनो से सत्यार्थ प्रकाश जनता के द्वार तक पहुचाया जाता है। पुस्तकालय से मिल जाता है यदा कदा उपहार या पुरस्कार मे भी लोगो को उपलब्ध हो जाता है। पुस्तक विक्रेता भी इसकी घूम घूम कर बिक्री करते हैं। यही सत्यार्थ प्रकाश स्वा० श्रद्धानन्द जो सन्यास पूर्व मुशीराम थे कितना तपस्या के बाद प्राप्त कर सके आज उसी की कहानी आपको सुनानी है।

उच्च पुलिस अधिकारी के पुत्र मुशीराम सुख सुविधाओ की भौतिक चकाचौंध मे फसकर नास्तिक हो गए और दुर्व्यसनो मे सलिप्त हो गए। वे 23 वर्ष के नवयुवक बरली मे अपने पिता की प्रेरणा से जब स्वामी दयानन्द का दिव्य दर्शन करते हैं तो 14 दिन उनके सत्सग मे ही व्यतीत कर देते हैं उनसे किए गए शका समाधान से इनकी नास्तिकता की डोर ढीली तो पड जाती है किन्तु टूट नहीं पाती है यहा नवयुवक अब 28 वर्ष के तरुण हो जाते है। विवाहोपरान्त एक पुत्री के पिता होकर जालन्धर मे मुख्तार के कार्य द्वारा पर्याप्त कमाइ भी करने लगते है पुलिस सरक्षित बाल्यकाल रईस पुत्रो का विलासी सग अब वकालो का सुखोपभोग प्याला मे ढल जाता है नास्तिकता के बर्तन से नई नइ अग्रनी मदिराये गले के नाच उतरने लगता हैं। इन्हीं दिनो मुशीराम ने वकालत का शिक्षा के लिए लाहोर जाने का निश्चय किया साथ के वकीलो ने इन्हे अग्रजी ढग का विदाइ भोज दिया। रात्रि मे मदिरा के खूब दौर चले। एकान्त पाकर किसी मदहोश मित्र ने एक युवता को पकड लिया जिसकी चाख पुकार सुनकर मुशीराम ने उसका रक्षा की। तत्क्षण इनके मानस पटल पर स्वामी दयानन्द की मनोहर मूर्ति उदय होकर इनसे प्रश्न करती है क्या तुझे अब भी उस परम रक्षक प्रभु की सत्ता पर विश्वास नहीं हुआ है? कुछ ही माह पूर्व देव दयानन्द तो दिवगत हो चुके थे किन्तु वर्षों पूर्व बरेली मे उनके साक्षात्कार से मिली किरणे आज भी मुशीराम के मानस मे कोलाहल मचाने के लिए पर्याप्त सक्षम थीं। बरेली मे शिथिल हुई नास्तिकता की डोरी आज कट कर तार तार हो गई थी। इन्होने मदिरा के भरे न केवल गिलास को प्रत्युत बोतल को भी उस रात्रि के अन्धेरे मे दीवार पर फेक कर टुकडे टुकडे कर दिया था। दूसरे दिन लाहौर पहुच कर वकालत की कक्षा मे प्रवेश ले लिया।

पहले ही पडने वाले रविवार को ये लाहौर की आर्य समाज के सत्सग में सम्मिलित हुए। इन्हें यहा ब्रह्मसमाज के सायकालीन सत्सग का पता भी लगा। अब ये नियमित रूप से प्रात आर्य समाज मे एव सायकाल ब्रह्मसमाज के साप्ताहिक अधिवेशनो मे भाग लेने लगे। दो मुस्लिम गायक जो प्रात आर्य समाज मे प्रभु गीत गाते थे वहीं सायकाल को ब्रह्म गीत सुनाते थे। भजन गायन के उपरान्त आर्य समाज में जहा एक ओर पौराणिक यवन इसाई मत खण्डन देशोन्नति कुरीति निवारण दलितोद्धार विधवा विवाह का मण्डन एव दैनिक यज्ञ की प्रेरणाये सुनने को मिलती थी वहीं दूसरी ओर इनको ब्रह्मसमाज के उपदेशक आचार्य की शान्त मूर्ति उनके हृदय से सहज प्रवाही प्रेम रस मे रगे प्रभु भक्ति के प्रवचन बहुत अच्छे लगते थे। युवाकाल तक जीवन के 28 वर्ष नास्तिकता मे बिताने वाला तरुण अब आस्तिकता के रग मे ऐसा रगा कि और सब रग फीके पड गए। इन्होने उस समय उपलब्ध ब्रह्म समाज की समस्त पुस्तके क्रय कर लीं और 5 6 दिन तक उन्हीं की पढाई चलती रही। मुशीराम जी आर्य समाजी बने या ब्रह्मसमाजी यही तय कर पाना इनके लिए एक समस्या बन गई थी। ब्रह्म समाजी साहित्य को पढते हुए ये सरलता से आगे बढते जा रहे थे कि एक स्थल पर गाडी अटक गई। ब्रह्म समाज के मत में विविध जीवात्मा की उत्पत्ति और उसकी अनन्त उन्नति का सिद्धान्त इनकी समझ में नहीं आया। इनकी नवलब्ध आस्तिकता दोनों सस्थाओ के सिद्धान्तभेद मे उलझ कर वास्तविकता के लिए मचल उठी। अपनी शकाओ को लेकर जब मुशीराम ब्रह्मसमाज के प्रमुख से मिले तो उन्होने समाधान तो कुछ किया नहीं प्रत्युत अपने अग्रणी नेता बाबू केशव चन्द्र सेन व बाबू प्रताप चन्द्र मजूमदार के ग्रन्थो को पढने का परामर्श दे दिया। इन सब पुस्तको को तो मुशीराम पहले ही पढ चुके थे और इन्हीं को पढकर शका ग्रस्त हुए थे फिर भला इनसे समाधान कैसे सभव होता। मस्तिष्क की उलझन मे इन्हें फिर स्वामी दयानन्द का वह दृश्य याद आ जाता है जिसमे पादरी स्काट से पुनर्जन्म पर उनका बरेली में शास्त्रार्थ हुआ था। इनको आर्य समाज के सस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रणीत सत्यार्थ प्रकाश पढने का सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ था। मुशीराम ने सोचा हो न हो महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में आत्म प्रकरण का वर्णन अवश्य किया होगा। वे इसकी खोज मे चल पडे।

रात्रि की उधेडबुन एव उलझन के बाद प्रात काल बिना कुछ खाए पिए ब्रह्मसमाज के स्थानीय प्रमुख काशीराम से मिलने के लिए निकले मुशीराम अपने डेरे पर वापस न जाकर सीधे बच्छोवाली आर्य समाज मन्दिर की ओर चल पडे। पुस्तकालय और उसका विक्रय विभाग कोई हर समय तो खुला नहीं रहता। चपरासी ने कह दिया कि लाला केशवराम पुस्तकाध्यक्ष जी के आने पर ही आपको पुस्तके मिल सकती हैं। मुशीराम ने उनके घर का पता लिया और दो घण्टे चक्रमण के बाद उनके घर पर पहुच गए। केशव राम जी घर पर नहीं थे। तारघर पर थे जहा वे तार बाबू का कार्य करते थे। ये तारघर का पता करके वहा भी पहुच गए। तब तारबाबू मध्याह्न भोजन के लिए घर आ चुके थे। ये फिर उनके घर लौटे तो तारबाबू केशवराम पुन तारघर जा चुके थे। पूछने पर ज्ञात हुआ कि तार बाबू की डयूटी डेढ घटे मे समाप्त हो जाएगी तभी वे घर पर मिल सकेंगे। मुंशीराम ने वह समय भी पुस्तकाध्यक्ष जी की प्रतीक्षा मे गली के अन्दर टहल कर बिता दिया। जब केशवराम जी से इनकी भेट हुइ तो इन्होने छूटते अपनी माग रख दी महाशय जी! मुझे सत्यार्थ प्रकाश चाहिए। उन्होने निवृत्त होकर खा पीकर समाज मन्दिर चलने का बात कही। मुशीराम ने भूख प्यास मे बीत गए सम्पूर्ण दिन की कहानी उनको सुनाई तो केशवराम का मुख सहानुभूति से चमक उठा और तत्क्षण व मुशीराम को साथ लेकर आर्य समाज मन्दिर पहुच गए तथा उन्हें सत्यार्थ प्रकाश देकर सतोष प्राप्त किया। इस प्रकार मुशीराम को सन्मार्ग दर्शी कोष मिल गया। दिन भर सत्यार्थ प्रकाश के लिए व्रत उपवास का पूर्ति के बाद जब मुशीराम अपने आवास पर पहुचे तो रात्रिकालीन भोजन परोसा जा रहा था। अब कानूनी पुस्तको के अध्ययन के साथ साथ सत्यार्थ प्रकाश का नियमित स्वाध्याय चलने लगा

एक रविवार की प्रभात वेला सत्यार्थ प्रकाश का अष्टम् समुल्लास सामने है। मुशीराम सिर पर हाथ रख कर गम्भीर मुद्रा मे चिन्तन मग्न हैं। तभी भाई सुन्दर दास उनके पास पहुच कर ब्रह्मसमाज के उनके झुकाव म अटकाव के प्रसग मे पूछ बैठत हैं। कहिए कुछ निश्चय हुआ ? पूर्ण आश्वस्त मुशीराम ने उत्तर दिया पुनर्जन्म के सिद्धान्त न तय कर दिया है आज मैं सच्चे विश्वास से आर्य समाज का सभासद बन सकता हू। सुनकर भाई सुन्दरदास के मुख पर विस्मय चमक दौड गई जिसे देखकर मुशीराम के हृदय मे हर्षातिरेक हो उठा। वे उनके साथ जब आर्य समाज के सत्सग म पहुचे तो उस समय चल रहे भजन के बोल उत्तर गया मेरे मनदा ससा जब तेरा दर्शन पायो चरितार्थ हो रहे थे। फिर क्या था सत्यार्थ प्रकाश का एक एक अक्षर दीपक बन मुशीराम के जीवन को जगमगा गया। स्वय स्वामी श्रद्धानन्द दीपक से दिनकर बन गए और गुरुकुल स्थापित कर महन्दीपको का जन्म देने लगे। वे पहले महात्मा मुशीराम फिर स्वामी श्रद्धानन्द होकर विश्व आर्य व्योम के उज्ज्वल नक्षत्र बन गए और देश धर्म पर बलिदान हो गए।

सम्पादकीय...

दिसम्बर मास आते ही हमें कई शहीदो की याद आनी आरम्भ हो जाती है। जिनमें मुख्य रूप से अमर शहीद राम प्रसाद जी बिस्मिल का बलिदान 19 दिसम्बर को हुआ था और स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान 23 दिसम्बर को हुआ था। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज पंजाब के रहने वाले थे और उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती के दर्शन किए थे। स्वामी जी का पहला नाम मुन्शी राम था। इनका जन्म 22 फरवरी सन् 1857 में जालन्धर के पास तलवन ग्राम में श्री लाला नानक चंद जी के घर हुआ था। इनके पिता श्री नानक चंद जी ईस्ट इंडिया कम्पनी के कृपा पात्र सहायक थे। इसलिए उन्हें पुलिस के उच्चाधिकार प्राप्त थे। जब वह उत्तर प्रदेश में सेवारत थे ओर जब वह बरेली में कोतवाल थे तो उस समय स्वामी दयानन्द जी के व्याख्यानों का प्रबन्ध करने के लिए सरकार की तरफ से उन्हें आज्ञा हुई थी। लाला नानक चद जी स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों से बहुत प्रभावित हुए इसलिए उन्होंने अपने नास्तिक पुत्र मुशी राम को कहा कि एक तेजस्वी बाल ब्रह्मचारी सन्यासी बरेली में पधारे हुए हैं। उनके व्याख्यान सुनने के लिए आप मेरे साथ चलें तो मुंशी राम जी ने पूछा कि क्या वह अंग्रेजी जानते हैं। श्री नानक चद जी ने कहा कि नहीं वह संस्कृत के एक बड़े सुलझे हुए विद्वान हैं तो मुन्शी राम जी ने कहा कि फिर यदि वह अंग्रेजी नहीं जानते तो क्या उपदेश देते होंगे। परन्तु पिता जी के बार-बार कहने पर जब मुन्शी राम सभा स्थल पर गये जहां स्वामी जी के व्याख्यान हो रहे थे। मुन्शीराम यह देख कर दंग रह गया कि वहां कई बड़े-बडे अंग्रेज और उच्चाधिकारी स्वामी जी के व्याख्यान सुनने के लिए उपस्थित थे। इन व्याख्यानों का मुशी राम के ऊपर बहुत प्रभाव पड़ा। भाषण सुनने के पश्चात् मुन्शी राम जी ने स्वामी दयानन्द जी के चरणो में उपस्थित होकर अपनी शकाओं का समाधान करना चाहा जिसे स्वामी जी ने स्वीकार कर लिया। मुशी राम जी ने ईश्वर की सत्ता पर स्वामी जी से कई प्रश्न किए और स्वामी जी ने बड़े प्रेम से उनका उत्तर दिया। कुछ प्रश्न करने के पश्चात् मुशी राम जी अवाक होकर बोले कि स्वामी जी आप ने मेरी जुबान तो बंद कर दी है परन्तु मेरे ह्रदय में अभी भी परमात्मा की सत्ता पर विश्वास नहीं हुआ। महर्षि बोले जब ईश्वर की कृपा होगी तो उस पर तुम्हारा विश्वास हो जाएगा। मुन्शी राम स्वामी जी से विदा लेकर घर चले आए परन्तु उनके मन पर स्वामी जी के शब्दों का सदा प्रभाव रहा।

वहीं मुशी राम जी आगे चल कर महर्षि के अनन्य भक्त बनें और उन्होंने अपनी वकालत छोड़ कर अपना सारा जीवन आर्य समाज को अर्पण कर दिया। प्रारम्भ में मुन्शी राम जी के जालन्धर और लाहौर दो कार्य क्षेत्र रहे परन्तु जब उन्होंने गुरुकुल खोलने का लाहौर में रहते हुए निश्चय किया तो उसके पश्चात् 1902 में हरिद्वार की पुण्य स्थली पर उन्होंने गुरुकुल कागडी की जगल में झोपड़ियां बना कर स्थापना कर दी और उसके पश्चात् अपना सारा जीवन गुरुकुल को अर्पण कर दिया। वह मुन्शी राम से महात्मा मुन्शी राम कहे जाने लगे और कुछ समय के पश्चात् वह सन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम से सारे भारत वर्ष में प्रसिद्ध हो गए। सन्यास लेने के पश्चात् वह गुरुकुल कांगडी को सुचारू रूप से चला रहे थे जब गुरुकुल का कार्य अच्छी प्रकार से चल पड़ा तो उन्होंने गुरुकुल का कार्य अन्य सहयोगियो को सौंप कर प्रचार कार्य आरम्भ कर दिया। इसके साथ ही उन्होंने शुद्धि के कार्य को भी आरम्भ कर दिया। वह चाहते थे कि जो हिन्दू मुसलमानों के शासनकाल में किसी दबाव में आकर व लोभ लालच में आकर मुसलमान बने हैं उन सब को पुनः हिन्दू धर्म में वापिस लाया जाए। महर्षि दयानन्द सरस्वती की इन दो बातों को उन्होंने अच्छी प्रकार से अपनाया कि बच्चों के निर्माण के लिए गुरुकुल की स्थापना की जाए और जो हमारे भाई हम से बिछुड़ कर विधर्मी बन गए हैं उन्हें वापिस लाया जाए। इसके लिए वह रात दिन प्रयास करते रहे। ज्यों-ज्यों उन्होंने शुद्धि के कार्य को तेज किया तो इससे कई मतस्वी मुसलमान उनके विरोधी बन गए। स्वामी जी महाराज हिन्दू और मुसलमानों को एकता के सूत्र में भी बाधना चाहते थे इसलिए वह उनके बीच में जाकर अपने धर्मोपदेश देते थे और उन्हें समझाते थे कि उनके बाप-दादा सभी हिन्दू थे ओर अब वह भी पुन. हिन्दू धर्म में वापिस आ जाएं। हजारो की सख्या में उन्होंने मुसलमानो को शुद्ध करके हिन्दू धर्म में प्रवेश करवाया। समझदार मुसलमान स्वामी जी का बहुत सम्मान किया करते थे। इसी के परिणाम स्वरूप दिल्ली की जामा मस्जिद मे स्वामी जी को धर्मोपदेश के लिए आमत्रित किया गया था ओर वह पहले ओर अन्तिम हिन्दू थे जिन्होने दिल्ली की जामा मस्जिद की मिम्बर से अपने विचार दिए थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कुछ समय काग्रेस के साथ मिलकर भी कार्य किया। पजाब में जलियावाला काड के पश्चात् एक खामोशी सी छा गई थी और बहुत भय पैदा हो गया था। किसी की हिम्मत नही पडती थी कि अग्रेज सरकार के विरुद्ध कोई अपनी आवाज उठा सके। इस पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अमृतसर मे काग्रेस का एक अधिवेशन बुलाने का जिम्मा अपने ऊपर लिया ओर उन्होने अमृतसर मे यह अधिवेशन बुलाया और उस के स्वागताध्यक्ष बने। काग्रेस के इतिहास मे सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपना भाषण हिन्दी मे पढा था। इसी प्रकार से 1919 में दिल्ली में भी जब अंग्रेस सरकार की ओर से काग्रेस की सभाए और जुलूस बद करने के आदेश हो गए थे तो उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने एक बहुत बडे जुलूस का नेतृत्व किया था। दिल्ली के चादनी चौंक में घटा घर की ओर आते हुए लोगों की भीड को जब अग्रेज सैनिकों ने रोका और अपनी संगीने तान लीं वह गोली चलाने ही वाले थे कि स्वामी जी महाराज अपनी कुर्ते के बटन खोल कर सीना तान कर भीड को चीरते हुए निहत्थे ही अग्रेज सैनिको के सामने जा कर खड़े हो गए और कहा कि पहले गोली मुझ पर चलाओ। किसी की हिम्मत नहीं पड़ी कि वह गोली चलाए। अग्रेज अफसर ने इस सारी स्थिति को जब देखा तो उसके इशारे से सैनिको ने अपनी सगीनें झुका लीं और जुलूस भारत माता के नारे लगाता हुआ आगे बढ गया। स्वामी जी महाराज बहुत बढ-चढ कर काग्रेस के साथ मिल कर कार्य कर रहे थे परन्तु काग्रेस की मुसलमान पोषक नीति को देख कर वह इससे दूर हट गए। उनकी यह भावना थी कि जितने भी मुसलमान हिन्दुओं में से बने हैं उन्हें पुनः हिन्दू बना लिया जाए तथा हिन्दू मुसलमानों में एकता स्थापित की जाए। जैसा कि मैंने पहले भी लिखा है कि कई मुसलमान नेताओ को यह स्वीकार नहीं था और वह समझते थे कि यदि स्वामी जी महाराज इसी प्रकार कार्य करते रहे तो बहुत से मुसलमान हिन्दू हो जाएंगे इसलिए वह उनके कट्टर शत्रु बन गए और उनको मारने की धमकियां दी जाने लगीं।

23 दिसम्बर 1926 को जब स्वामी जी महाराज कुछ विश्राम कर रहे थे क्योंकि पिछले कई दिनों से वह कुछ रुग्ण चले आ रहे थे। परन्तु अब कुछ स्वस्थ थे। इसी समय में अब्दुल रशीद नाम का एक मुसलमान शुद्धि का बहाना लेकर उनके साथ विचार विमर्श करने के लिए उनके पास आया। स्वामी जी के सेवक ने उन्हें ऊपर जाने से रोका परन्तु स्वामी जी ने उसकी आवाज सुन ली थी और कहा कि इसे आने दो। वह स्वामी जी के पास जाकर बैठ गया और जब स्वामी जी को उसने अकेला पाया तो उसने स्वामी जी की छाती पर तीन गोलिया दाग दीं और इससे स्वामी जी 23 दिसम्बर 1926 को शहीद हो गए।

इसलिए 23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस है। हमें यह बड़ी श्रद्धा से मनाना चाहिए और उन्हें अपनी श्रद्धांजलिया भेंट करनी चाहिएं। क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती के पश्चात् जितना काय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने किया शायद ही किसी और ने किया हो। इसलिए हम स्वामी जी के बलिदान को कभी नहीं भूल सकेंगे।

—अश्विनी कुमार शर्मा, एडवोकेट
सभा महामन्त्री

महान व्यक्तित्व के धनी स्वामी श्रद्धानन्द

ले० श्री [illegible] लाल जी शर्मा [illegible] प्रधान

स्वामा श्रद्धानन्द जी महाराज एक महान व्यक्तित्व के धनी थे। उनक जीवन को पढने से पता चलता है कि वह एक सर्वांगीण व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। वैसे तो उनक जीवन का मूल्याकन करना कोई साधारण बात नही है परन्तु देश के बड बड नेताओ ने उन्हे जा श्रद्धान्जलिया भेट की थी उन्हे पढकर अनुमान लगाया जा सकता था कि वह कितने महान थे। आर्य समाज क नेताओ न तो उनके शहीद होने पर उन्हे अपनी श्रद्धाजलि भेट की ही थी लेकिन दश विदेश के दूसरे नेताओ ने भी बहुत कुछ लिखा था। लेकिन स्वामी श्रद्धानन्द जा महाराज केवल आय समाज के नेता ही नही थे वह एक राष्ट्राय नेता भी थे यही कारण था कि उनके बलिदान के बाद देश के बहुत से बडे बडे नेताओ ने उनके सम्बन्ध मे बहुत कुछ लिखा था जिनमे भारत क प्रथम प्रधानमन्त्रा प जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रपति डा राजेन्द्र प्रसाद डा मुख्त्यार अहमद अन्सारी सरदार बल्लभ भाई पटेल चक्रवर्ती राज गोपालाचार्य श्री मदन माहन मालवाय कविन्द्र रविन्द्र ठाकुर रेम्जे मैकडानल्ड श्री सी एफ एण्डरँस सरोजना नायडू लाला हरदयाल पुरुषोत्तम दास टण्डन विनायक दामोदर सावरकर विनय कुमार सरकार चक्रवर्ती विजय राघवाचाय काक कालेलकर और इस प्रकार क बहुत सारे नेता लोग हैं जिन्होने स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति अपना श्रद्धाजलि भेट करते हुए अपन उदगार प्रकट किए हैं। किसा ने उन्हे मनुष्य जाति का महान पुनर्निर्माता बताया किसा न निभय वार सेनापति बताया किसी न दलितो का उद्धारक बताया किसा न वारता ओर बलिदान की मूति बताया ाकसी ने निर्भयता का पुज बताया किसा न प्राणी मात्र का प्रेमा बताया किसा ने राष्ट्र निर्माता ाकसा ने चरित्र निर्माता ाकसा न सामाजिक और धामिक उद्धारक बताया। बहुत से नेताओ ने स्वामी श्रद्धानन्द जा के जीवन का वणन किया है

स्वामा श्रद्धानन्द जी महाराज का श्रद्धाजलि भेट करने वाले हमारे सभा पूव नताओ न उनके व्यक्तित्व पर बहुत बडा प्रकाश डाला। हमारे देश के नेताओं ने तो उनके बारे में बहुत कुछ लिखा ही है लेकिन ब्रतानिया के भूतपूर्व मन्त्री श्री रैम्जे मैकडानल्ड जो एक बार गुरुकुल को देखने के लिए भी आए थे और स्वामी जी के पास ठहरे थे वहा से वापिस लौटने पर उन्होंने स्वामी जी के विषय मे अपने उद्‌गार प्रकट करत हुए लिखा था

वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई जीवित माडल चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति (स्वामी श्रद्धानन्द) की ओर इशारा करूगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सैंट पीटर के चित्र के लिए नमूना मागेगा तो मैं उसे उस मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा करुगा। श्री रैम्जे मैकडानल्ड एक ईसाई थे इसलिए उन्हे उन व्यक्तियो की याद आई जिन्हे वह ईसाई मत मे सबसे ऊचा समझते थे ईसाईयो मे ईसा मसीह से बडा कोई नही है और न ही हो सकता है इसलिए रैम्जे मैकडानल्ड स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को ईसा मसीह के समान समझते थे और इसी प्रकार अपने एक महान पुरुष सैंट पीटर को भी उन्होने उनसे तुलना की। इस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के चरित्र से यदि हम मूल्याकन करने लगे तो यह निर्णय लेना कठिन हो जाता है कि वह क्या थे ? आज बहुत कम व्यक्ति मिलेगे जिन्होने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के दर्शन किए हो क्योकि आज स 69 साल पूर्व 23 दिसम्बर 1926 को वह हमारे से सदा के लिए विदा हो गए थे। इस समय उनका साथा तो कोई विरला ही मिलेगा लेकिन गुरुकुल कागडी हरिद्वार के उनके कुछ शिष्य कुछ स्नातक ऐसे आज भी विद्यमान हैं जिन्होने उनके चरणो में बैठकर विद्या ग्रहण की थी और वही उनके जीवन का वास्तविक मूल्याकन कर सकते हैं।

मैं स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के प्रति अपनी श्रद्धा के पुष्प भेंट करते हुए यही कहना चाहता हू कि वह एक महान् व्यक्तित्व के धनी थे और उन्होने जो आदर्श कायम किया है उसका पालन करते हुए ही हम उन्हे अपनी श्रद्धान्जलि भेट कर सकते हैं।

19 दिसम्बर को जिनका बलिदान है

अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल

आर्य समाज ने देश जाति और समाज के लिए जो कार्य किया है शायद ही वह किसी और संस्था ने किया हो। आर्य परवाने हसते हसते फासी के फन्दो को चूम गए। रामप्रसाद बिस्मिल भी उन परवानो मे से एक हैं। वह एक कट्टर आर्य समाजी थे। फासी की काल कोठरी मे बैठे उन्होने जो अपनी आत्म कथा लिखी है उसमे उन्होने स्पष्ट लिखा है कि जब उनके पिता ने उनको कहा कि आर्य समाज छोड दो या घर छोड दो ! इस पर उन्होने घर को तत्काल छोड दिया परन्तु आर्य समाज को नहीं छोडा। सत्यार्थ प्रकाश पढने से वह आर्य समाजी बने थे और जीवन भर आर्य समाज के होकर रहे। वह निर्भीक और निडर तथा साहसी नवयुवक थे मृत्यु उनके लिए एक साधारण सा खेल था। फासी की सजा होने के बावजूद भी वह निडर होकर अपनी आत्म कथा लिखते रहे। उनको मृत्यु का कोई गम नहीं था। वह मृत्यु को मात्र चोला बदलना समझते थे। वह जेल मे भी प्रसन्नचित रहते थे।

वह यज्ञ प्रेमी थे प्रमाण के तौर पर आज भा उनका हवन कुण्ड गुरुकुल झज्जर के सग्राहलय मे रखा हुआ है। फासी से पूर्व भी उन्होने अपनी अन्तिम इच्छा में यज्ञ करने की अनुमति मागी थी। वह वेदमन्त्रो का पाठ करते हुए फासी के तख्ते को चूम गए। उन्हे यदि कोई चिन्ता थी तो देश की आजादी की थी। न उन्हे परिवार की चिन्ता थी और न ही किसी और प्रकार की। देश की आजादी के लिए उन्होंने जो कार्य किया है वह स्वर्ण अक्षरो में अंकित है। उनका जीवन एक प्रकाश स्तम्भ है। नवयुवकों के लिए उन्होने जो सन्देश दिया है वह पुस्तक रूप मे प्रकाशित किया जा चुका है। सचमुच ही वह महान् सन्देश है वह चाहते थे कि भारत का प्रत्येक युवक उन्हीं की तरह ब्रह्मचर्य का पालन करके बलवान बलिष्ठ और देश भक्त बने।

उन्होने किसी बेकसूर और निरपराध व्यक्ति पर कभी गोली नही चलाई। उनका निशाना तो केवल अग्रेज थे। काकोरी डकैती मे भी उन्होने लोगो को चिल्ला चिल्ला कर कहा था कि कोई भी व्यक्ति गाडी से नीचे न उतरे हम किसी भी यात्री को कुछ न कहेगे। हमने तो केवल हथियारो के लिए सरकारी खजाना लूटना है। वह आतकवाद फैलाना नहीं चाहते थे हा अग्रेज के कानो तक यह बात जरूर पहुचाना चाहते थे कि वह भारत छोड कर चले जाए और भारत को स्वतत्र कर दे अन्यथा उन्हे गोली का निशाना बना दिया जाएगा।

उन्होने जो कुछ किया देश की आजादी के लिए किया। यह देश भक्ति का पाठ उन्होने आर्य समाज से पढा था। उनके अमर बलिदान के बाद देश आजाद हुआ परन्तु आज फिर देश की आजादी को खतरा पैदा हो गया है यह आजादी इन शहीदो की धरोहर है क्या आज का युवक इन शहीदो से प्रेरणा लेकर देश की आजादी की रक्षा के लिए आगे नहीं आएगा? आज कुछ स्वार्थी लोग देश के फिर टुकडे कर देना चाहते हैं । क्या देश भक्त युवक इसे चुप चाप सहन करते रहेगे जो कुछ आज कश्मीर और दूसरे स्थानो पर हो रहा है पाकिस्तान ने अभी अभी कारगिल मे घुसपैठ करके जम्मू काश्मीर क एक हिस्से को भारत स अलग करन का प्रयास किया जो भारत की सेना ने विफल कर दिया। अनको शहीदो के बलिदानो से प्राप्त हुई इस आजादी की रक्षा करना प्रत्येक नौजवान का कर्त्तव्य है

आज आवश्यकता है फिर भारत को सरदार भगत सिंह जैसे रामप्रसाद बिस्मिल जैसे चन्द्र शेखर आजाद जैसे नौजवानो की जो इस प्राप्त हुई आजादी का रक्षा कर सकें और देश द्रोहियो को मार तोड उत्तर दे सकें।

—धर्मदेवार्य, सह सम्पादक

साक्षी है दिल्ली का घण्टाघर चौक

प्रि० पुष्पा महाजन, जेलरोड, गुरुदासपुर

साक्षी है
दिल्ली का चौक घण्टाघर
इर्द-गिर्द खड़ी बिल्डिंगे
जड़ होते हुए भी
सहस्र नयन रखने वाली
आ रहा है जन प्रवाह बृहत्
उमड़ते सागर सा
गरजते बादल सा
ललकारता
पुकारता
बोल स्वामी श्रद्धानन्द की
जय।
हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई
एक ही स्वर
एक ही लक्ष्य
मुक्ति विदेशी शासन से
अत्याचार के विरुद्ध
एक आवाज
एक पुकार
यह शासन जोरो जुल्लम का
नही चलेगा
नही चलेगा
भारत के दिल ने
लगाई गुहार
गूंजे धरती और आसमान।
नगर सारा भयाक्रान्त
शासन का आसन डोल उठा
अब क्या होगा ?
जन का आक्रोश बड़ा निर्मम
यह ज्वार महासागर का है
विस्फोट महा पर्वत का है।
साक्षी है
दिल्ली का चौक घण्टाघर
जन समूह का नेतृत्व
कर रहा कौन ?
यह वीर यशस्वी योगी सा
है महत काय और भव्य भाल
मानो प्रचण्ड हो भास्कर सा
सह सहम उठे यह रूप देख
कैसा अनुपम यह दिव्य रूप
जैसे साक्षात् हिमालय हो
यह दृढ़ता का साकार निलय
कितना कर्मठ कितना कठोर
प्रत्यक्ष बिम्ब हो
आस्था का
घबराया शासन का प्रहरी
कम्पित उसकी काया सिहरी
भावी का भयानक रूप देख
गोरखा प्रहरी हो गया
स्तब्ध
सीधी कर दी बन्दूक उधर
सब के दिल धक धक धक
धड़क उठे
व सबके बाजू फड़क उठे
देखा निर्भीक सन्यासी ने
मुख पर उभरा रक्तिम विवेक
तानी नंगी छाती
ले मार कह उठा नर शार्दूल
मृत्यु का ऐसा अभिनन्दन ?
था स्तब्ध रह गया स्तब्ध काल
भावी भी कांप उठी कुछ क्षण
यह मनुज नहीं यह मृत्युञ्जय
युग युग तक होगा
अमर अजय।
वह देश धन्य
वह जाति धन्य
जिसमे ऐसे मानव अनन्य
फिर गूंज उठा इक कलरव सा
जनता फिर से हुंकार उठी
चहु दिशि से गूंजी
एक ध्वनि
बोल स्वामी श्रद्धानन्द की जय
साक्षी है
दिल्ली का चौक घण्टाघर

बलिदान

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, दिल्ली

कर गए प्राणो का बलिदान स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी।
तेईस दिसम्बर आया।
शत्रु ने वार चलाया।
धरती पर दई लहू लुहान स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी ॥१॥
सीने पर गोली खाई।
निज तन की भेट चढाई॥
दे गए जन हित अपनी जान स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी ॥२॥
शुद्धि की रीति चलाई।
भारत की शान बढाई॥
जागी ऋषियो की सन्तान स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी ॥३॥
गुरुकुल खोल दिखाया।
समता का पाठ पढाया॥
जग से मिटा दिया अज्ञान स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी ॥४॥

स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदान

ले० श्री सत्यपाल 'पथिक' अमृतसर

स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी ओ तेरे तो जमाना सदके।
बैठी दिला विच तेरी कुबानी ओ तेरे तो जमाना सदके॥
मिले जो बरेली विच ऋषि दयानन्द सी।
मिट गईया शका सब मुह होया बन्द सी।
आई सोचा ते विचारॉं च रवानी।
ओ तेरे तों जमाना सदके स्वामी श्रद्धानन्द
जगला उजाड़ा विच गुरुकुल खोल के।
शिक्षा गवाची होई लभ लइ टटोल के।
आदी मोड़ के तू सभ्यता पुरानी।
ओ तेरे तों जमाना सदके स्वामी श्रद्धानन्द
सच दीया राहवा उत्ते पैर तू बधाया सी।
गोलिया दे अग्गे सीना तान के बखाया सी।
मोटे अखर च लिखी ए कहानी।
ओ तेरे तों जमाना सदके स्वामी श्रद्धानन्द
मजहबी दीवाना इक गोलिया चला गया।
पथिक शहीदा विच ना तेरा आ गया।
वारी देश उत्तो सारी जिन्दगानी।
ओ तेरे तों जमाना सदके स्वामी श्रद्धानन्द

(पृष्ठ 1 का शेष)

हिन्दू धर्म को त्याग कर विधर्मी हो गए भाईयो को फिर से शुद्ध करके हिन्दू बनाने के लिए महात्मा जी जो शुद्धि आन्दोलन चला रहे थे उस समय उनस रुष्ट होकर उनको अनेक धमकी भरे पत्र भेजे गए। अनेक लोगो ने महात्मा जी से कहा कि आप अपनी जान जोखिम मे डाल कर क्यो इस आन्दोलन म पड़े हैं तब महात्मा जी ने कहा क्या हुआ जो धमकी भरे पत्र आते हैं जब परमात्मा मेरे साथ है उनका वरद हस्त मरी पीठ पर है जब उसका वेद ज्ञान मेर साथ है जब ईश्वर पर मेरा दृढ विश्वास है जब मेरा पक्ष सत्य है तो मुझ किसका भय ? मुझे किसकी चिता ? सारा ससार भी मेरे विरुद्ध हो जाए तो भी मैं वैदिक प्रचार से पीछे नहीं हटूगा। ऐसे दृढ निश्चयी थ हमारे स्वामा श्रद्धानन्द जी।

23 दिसम्बर का प्रतिवष हम उनका बलिदान दिवस मनाकर आर श्रद्धाजलि देकर अपन कत्तव्य का इतिश्री समझ लेत ह हम सबका बैठकर यह भी विचार करना चाहिए कि स्वामी दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द की पवित्र वेदा पर खड होकर क्या हम स्वय उनके आदर्शो के अनुरूप चल पा रहे हैं ? अगर नहा ता क्यो ? कहा कमी ह हमार चरित्र मे हम स्वय आत्मनिरीक्षण करना चाहिए

भाईयो अगर हम थोड़ा सा भी इस विषय पर विचार कर और अपन आप को सुधार कर ऋषि क बताए हुए मार्ग का अनुसरण कर ले तभ 23 दिसम्बर का स्वामी जी का बलिदान दिवस मनाना उनका आत्मा का सच्चा श्रद्धाजलि दना होगा

लुधियाना में गायत्री महायज्ञ

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे विश्व शान्ति गायत्री महायज्ञ प्रतिवर्ष की भान्ति समारोह पूर्वक किया गया।

23 नवम्बर प्रात 5 30 आर्य समाज स प्रभात फेरा निकाली गई जिसम बहुत से भाई बहनो ने भाग लिया ऋषि के जयकारो को गुजाती हुइ गली बाजारो म होते हुए गीत गात हुए दवराज आर्य क घर बाजवा नगर म ठहरा जलपान सत्सग के बाद जनकरानी आया न सब भाई बहनो का धन्यवाद किया। इस काय मे आर्य समाज के सभी भाईयो का भी सहयोग रहा।

24 नवम्बर दोपहर 2 बजे यज्ञ श्रद्धापूर्वक शुरू हुआ स्वामी जगदीश्वरानन्द जा द्वारा सुनील कुमार सूद प्रभा जी सूद से यज्ञाग्नि प्रज्जवलित कराई गई। प्रतिदिन 4 कुडो पर 16 यजमान बडी श्रद्धा स आहुतिया डालते रहे 108 आहुति गायत्रा का होती रही। स्वामी जी न गायत्री का महिमा का वर्णन करते हुए कहा ओ३म शब्द जैसा कोई दूसरा प्रभु का ना म नही है न यह एक वचन न बहुवचन न पुलिग न स्त्रीलिग बहुत ही सुन्दरता स भू भुव स्व का अर्थ सत् चित् आनन्द विस्तार से समझाया ओर हमे अपना उच्चारण कैस शुद्ध करना चाहिए यह बताया और कहा कि प्रभु को समर्पण का भावना रख कर यत्न करना चाहिए सभा न मुक्तकण्ठ से स्वामी जा क उपदश को सराहा। श्रद्धेय सुमनायति जी के सरक्षण मे सब कार्य चला उन्होन भी मनुष्य जीवन का अमूल्यता पर बल दिया ओर कहा प्रभु की छाया ही अमृत है हम उसा क नीच रहना चाहिए।

कुमारी नम्रता जी ने बडे ही मधुर भजन सुनाए जिसमे प्रभु का नाम न हो वो गीत गाने के काबिल नहीं है यह गीत जनता ने मन्त्र मुग्ध होकर सुना। श्रीमती राजेश जी के भी भजन होते रहे। उत्कट इच्छा हो मन मे परमेश्वर पाना मुश्किल नही है। आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल की बाच्चयो ने भी ऋषि भक्ति का गीत गाया। फिरोजपुर से पधारे श्री विजय जी आनन्द ने ऋषि का बहुत ही सुन्दर भजन सुनाया उन्होने कहा कि ऋषि बहनो के वकील बन कर आए उनकी बदौलत आज स्कूलों में माता का नाम भी लिखा जाने लगा माताओ पर ऋषि ने बहुत कृपा की उन्हे ऊचे से ऊचा स्थान प्राप्त है। रात को तीन दिन लगातार घरो मे भी सत्सग का आयोजन किया गया स्वामी जी के अन्तर्मन को छूते हुए वचनो से परिवारो मे बहुत श्रद्धा बढी।

समापन समारोह महिला सम्मेलन मे भारी सख्या मे भाईयो व बहनो ने भाग लिया इस सम्मेलन की अध्यक्षा माननीय बहन माधुरी योगमति अमृतसर से पधारी थी। यज्ञ महिमा पर प्रकाश डालते हुए स्वामी जी ने बडे सुन्दर ढग से पूर्णाहुति डलवाई। यजमानो को फल तथा फूलो से आशीर्वाद दिया। श्री विजय आनन्द जी नम्रता जी सोनी के भजन हुए। तत्पश्चात् आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल की बच्चियो को सम्मानित किया गया इन बच्चियो ने सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षा से भारतवर्ष मे प्रथम तथा द्वितीय स्थान प्राप्त किया प्रथम सरिता प्रेम शक्ति दूसरे स्थान पर रजनी बाला सत्यार्थ विशारद में दूसरे स्थान पर रहीं। इनकी प्राचार्या श्रीमती कान्ता सूरी जी व रजनी को माननीय प्रधाना जी स्वामी सुमनायति जी स्वामी जगदीश्वरानन्द जी तथा राजेश जी ने स्त्री आर्य समाज की ओर से टाफिया प्रदान की। तालियों से हाल फिर गूजा माधुरी जी ने इनकी बहुत प्रशसा की। जनकरानी आर्या ने कहा कि इनकी अध्यापिकाए भी सम्मान के योग्य हैं हम उन्हे भी सम्मानित करना चाहेगे। सब को बधाई दी।

अन्त मे समादरणीय अध्यक्षा जी का बडा ही सारगर्भित प्रवचन हुआ। जिसमे उन्होने माताओ को कर्त्तव्यो से अवगत कराया तथा बच्चो के निर्माण पर बल दिया हम सुधरेंगे जग सुधरेगा कहते हुए महिलाओ का बहुत ही सुचारू ढग से मार्ग दर्शन किया और कहा कि हमे मिल कर आगे बढना है। आर्य समाज के प्रधान श्री मतवाल चन्द जी व मन्त्री श्री आत्म प्रकाश जी व श्री सुरेन्द्र जी शास्त्री का पूरा सहयोग रहा। अन्त मे जनकरानी आर्या ने सभी भाईयो का कार्य मे सहयोग देने वाली बहनों का आई हुई सभी बहनो का हार्दिक धन्यवाद किया। माननीय प्रधाना इन्द्रा जी शर्मा ने जनक जी का सब आए हुए अतिथियों का आभार प्रकट किया तथा धन्यवाद किया। प्रसाद वितरण श्री मन्या माधुरी जी ने सुन्दर ढग से कराया जो बहुत सफल रहा। इस यज्ञ पर आदरणीय बहन सुवर्षा जी कालडा भी पधारी जो कि प्रसिद्ध समाज सेविका हैं सब बहनो भाईयो का पुन धन्यवाद करते हुए जनक जी ने प्रभु का धन्यवाद किया। —जनकरानी आर्या, मन्त्री

आओ संगठन को अपनायें

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती, दिल्ली

आओ संगठन को अपनायें।
दूर अंधेरा करें दिलो का ऐक ज्ञान के दीप जलाये
आओ समगठन को अपनाये।
धन धर्म सुकर्म कमाते रहें सबको बोध कराते रहें।
चेतन अविनाशी ईश्वर का सच्चा मार्ग बताते रहें।
पाखण्डों में फसे हुए नहीं जड प्रतिमा को भोग लगायें।
आओ समगठन को अपनाये।।1।।
स्वार्थमयी भौतिकता आकर सबको नाच नचाये रही।
राजनीति में टूट पड़े कुरसी मन को ललचाय रही।।
बेल फूट की बढ़ी प्यार की कली कली मुरझाये।
आओ समगठन को अपनाये।।2।।
अभिमान में चूर हुए और बलबन्दी घर-घर आई।
शिक्षा की भरमार हो रही नास्तिकता ले रही अगड़ाई।
होती है दिन रात यहा आम लूट हत्याये
आओ समगठन को अपनाये।।3।।
खुल्लम खुल्ला चोर डाकें करते है गडबड घोटाला।
दिन दिगना अब सुलग रही है जग में सर्वनाश की ज्वाला।।
यहा स्वरूपानन्द बताओ कहो किसे कैसे समझायें
आओ समगठन को अपनाये ।।4।।

महर्षि दयानन्द पुणे प्रवचन 125वां स्मृति समारोह

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज स १८७५ मे पुणे मे न्यायमूर्ति रानडे के निमत्रण पर पधारे थे यहा उनके डेढ महीने तक व्याख्यान हुए व्याख्यानो के समापन पर 5 सितम्बर 1875 को स्वामी जी महाराज की भव्य शोभा यात्रा निकाली गई थी जिसमे हजारो पुणेवासी सहभागी हुए थे।

इस ऐतिहासिक पुणे प्रवचन की स्मृति में पुणे की समस्त आर्य समाजो की ओर से भव्य स्मृति समारोह मनाया जा रहा है। इसके अतर्गत दिनाक 23 से 26 दिसम्बर 1999 तक विशेष समारोह का आयोजन किया जा रहा है जिसमे भव्य शोभा यात्रा एव 3 दिन तक चलने वाले इस समारोह के अलग अलग सत्रो मे राष्ट्र की धार्मिक सामाजिक एव राजनैतिक समस्याओ के समाधान को लेकर विशेष सम्मेलनो का आयोजन किया गया है इस कार्यक्रम मे आर्य जगत के महान् विद्वान् उपदेशक भजनोपदेशक एव आर्य नेताओ को निमत्रित किया गया है। आर्य बन्धु अधिक से अधिक सख्या में पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढाए।

—कृष्ण चन्द्र आर्य

आर्य समाज के अथक सेवक श्री पूज्य ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी

ले० श्री प्रेम भटिया जी सभा उप प्रधान (बठिण्डा)

आय समाज के अथक सेवक श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी जी का जन्म 10 मागशीष 1974 विक्रमी तदानुसार 1917 इ में रामामण्डी जिला बठिण्डा (पजाब) मे हुआ उनके पिता जी का नाम महाशय रौनक सिह तथा माता का नाम श्रीमती सन्ती देवी था

यह उस युग की बात है जो आय समाज का स्वण युग कहलाता है 8 वष की आयु में श्री ओमप्रकाश जा का मुण्डन सस्कार स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी द्वारा हुआ तथा 8 वष का आयु मे ही महाशय रौनक सिह जा की आज्ञा से वे प्रतिदिन आय समाज मन्दिर मे झाडू लगाने जाते थे यज्ञशाला मे आसन बिछाना पोचा लगाना तथा पश्चात् हवन सन्ध्या में सम्मिलित होना इनकी दिनचया का मुख्य अग था

सन् 1931 इ मे इन्होने उदू मिडिल पास किया तथा आर्य समाज के महान सन्यासी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जा का सान्निध्य प्राप्त किया उनका प्रेरणा से आय वीरदल व आय कुमार सभा का स्थापना का सन् 1938 39 मे आय सत्याग्रह हैदराबाद के लिए तैयारी आरम्भ हुइ जिसमें आपके पूज्य पिताजी श्री रौनक सिह जी भी महाशय खुशहाल चद जी के जत्थे मे शामिल होकर बन्दी बने और गुलबर्गी जेल मे रहे स्वामी स्वत त्रानन्द सरस्वती जी के आदेशानुसार आप जेल से बाहर रहते हुए जन और धन का सहयोग करते रहे राम मण्डी जो कि उस समय एक छोटी सी मण्डी थी सबका सहयोग लेकर आपने शक्ति से अधिक जन और धन सत्याग्रह के लिए भेजा

प्रत्येक रविवार को एक-एक दुकान पर जाकर आपने हैदराबाद सत्याग्रह के लिए सहायता जुटाइ आय महिलाए घर घर जाकर एक एक मुट्ठी आटा इकट्ठा करती थीं सन् 1949 इ मे आर्य समाज की ओर से स्वामी स्वतन्त्रानन्द आय हाइ स्कूल शुरू किया गया ओम प्रकाश जी उस स्कूल के कइ वर्ष तक प्रबन्धक बने रहे और 1955 इ में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का निधन होने पर आपने उनकी याद में आर्य कालेज बनवाने की प्रतिज्ञा की और 1956 में कालेज चालू हो गया जो बा मे बद हो गया

सन् 1957 के हिन्दी सत्याग्रह जो पूरे पजाब में जोर शोर से चल रहा था आपने बढ चढ कर भाग लिया तथा बन्दी बनकर पटियाला जेल भी गए। श्री ओमप्रकाश जी आय ऋषि दयानन्द के पूण अनुयायी और सच्चे इश्वर भक्त थे आर्य साहित्य का आप नियमित रूप से स्वाध्याय करते थे सन् 1960 ई अगस्त मास मे अपने पैतृक गाव तलवण्डी साबो (दमदमा साहिब) मे झोपडी बनवाकर गाव से 2 मील दूर खेतो मे आप एक मास तक रहे और वहा पर पातञ्जलि योग प्रदीप (श्री ओमानन्द जी का भाष्य) पढा और गायत्री मन्त्र का अर्थ सहित चिंतन करते रहे वास्तव मे आप एक योगी प्रवृति के व्यक्ति थे

पूज्य श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी एक सच्चे और स्वाभिमानी व्यक्ति थे यू तो उनका पूरा जीवन आर्य समाज के रग मे रगा हुआ था परन्तु आप मे कुछ विशेषताए ऐसा थी जो प्राय देखने मे नही आता

आर्य समाज रामामण्डी के आप 20 वष से ऊपर मन्त्री रहे और प्रतिनिधि सदस्य रहे उस समय आय समाज की मुख्य गतिविधिया इस प्रकार रहा

1 आय समाज मे जलसे की सूचना की मनादि आप स्वय करते थे

2 किसी आय पर्व पर प्रभात फेरी का प्रोग्राम आप एक दिन पहल सबको बताते और प्रात 4 बजे सबको उठाते थे

3 मन्त्री क पद रहते हुए आप सेवक का काय भा करते रहे

इन सभी कार्यो मे आपक पूज्य पिताजी महाशय रौनक सिह जा का पुण्य प्रेरणा होती थी जो आपके प्रेरणा के मुख्य स्रोत थे आपका पितृ भक्ति प्रशसनीय और अनुकरणीय था पूज्य पिताजी क निधन स कुछ दिन पूव जब आपका आयु 46 वष का था आपके पूज्य पिताजी ने आदेश दिया कि 60 वष का आयु के बाद 6 व वष मे आपने घर गृहस्था को छोडकर वानप्रस्थी जीवन व्यतीत करना है और मृत्यु पयन्त आय समाज का प्रचार प्रसार करना है

आपने अपने स्व पिता का इस अन्तिम इच्छा को पूरा करन क लिए उनका मृत्यु क 5 वष पश्चात् सन् 1978 मे अपने गृहस्थाश्रम जिसमे आपक दो पुत्र व पुत्रिया है को पूण करके अपना पत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी जी के साथ वानप्रस्थाश्रम का ग्रहण किया और एक सम्पन्न घर बार को छोडकर गुरुकुल बठिण्डा मे वानप्रस्थाश्रम का शिक्षा लेकर रहन लगे और तब से आप ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी के रूप मे विख्यात हुए

सन् 1978 इ से लेकर अपनी मृत्यु पयन्त पूज्य वानप्रस्थी जी लगभग 21 वष तक अथात् 17 नवम्बर सन् 1999 तक इसी गुरुकुल मे रहे इस दौरान आपने इस क्षेत्र को अपना प्रचार केन्द्र बनाकर आय समाज का प्रचार प्रसार किया जिसमें बठिण्डा शहर के अतिरिक्त डबवाली सगारिया हनुमान गढ कालावाली पलिविगा रामामण्डी बुढलाडा बरेटा जाखल तलवन्डा गोनियाना गिदडबाहा के क्षेत्र शामिल हैं

समाज मे फैली बुराइयो को रोकने के लिए आय समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा चलाए गए अभियान को आप अपनी अन्तिम श्वास तक लडते रहे

पूज्य ओम प्रकाश जी वानप्रस्थी का जीवन एक आदश जीवन रहा जिससे प्रेरणा लेकर अनेक लोगो ने अपने जीवन को श्रेष्ठ जीवन बना लिया और आज जब पूज्य वानप्रस्थी जी हमारे बीच मे नहीं है उनकी याद हम सब के दिलो मे समाइ हुइ है

पूज्य वानप्रस्थी जी को लेखन का बहुत शौक था व सदैव अपनी डायरी मे कुछ न कुछ लिखते रहते थे 21 वष के वानप्रस्थ जीवन मे आपने कइ छोटी छोटी पुस्तके भी लिखी जिनमे हम क्या थ क्या हो गए शिक्षाप्रद रोचक कथाए (दो भाग) विश्व हितकारी आय समाज कलयुग नही कर युग आदि मुख्य हैं

वास्तव म मानव तो सभी हैं परन्तु सच्चा मानव वो ही है जो मानवमात्र के लिए अपना जीवन अपित कर देता है और जीवन को आदश बनाकर स्वय को अमरत्व का अधिकारी बना लेता है यह सच है कि पूज्य वानप्रस्थी जी आज हमारे बीच मे नहीं रहे परन्तु उनकी याद उनके सत्य वचनो के रूप मे आज भी हमारे दिलो मे समाइ हुइ है और हमे यह महसूस होता है कि वानप्रस्थी जी आज भी हमारे मध्य में हैं आज हम सभी आय जनो का कत्तव्य बनता है कि हम उनके जैसा त्यागमयी और उच्च जीवन जायें जिससे कि ऋषि दयानन्द द्वारा देखे गए स्वप्नो को हम भी वानप्रस्थी जी की तरह पूण करन में अन्तिम श्वास तक जुटे रहे।

यही हमारी सच्ची श्रद्धाजलि होगी कि हम पूज्य वानप्रस्थी जी जैसा त्यागपूर्ण और सच्चा जीवन जीये

ओ३म सगच्छध्व सवदध्व स वो मनासि जानताम्।
देवा भाग यथा पूर्वे स जानाना उपासते॥
(हम सभी प्रेम से मिलकर चलें तथा सभी ज्ञानी बनें एव अपने पूर्वजों की भाति कर्तव्यों का पालन करें)

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

जिला आर्य सभा लुधियाना

के तत्वावधान मे

रविवार, 26 दिसम्बर, 1999 को प्रातः 9.30 बजे से 1.30 बजे तक

आर्य कालेज (मुख्य परिसर) सिविल लाईन्स, लुधियाना में मनाया जा रहा है।

अध्यक्ष	मान्यवर श्री प हरबस लाल जी शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब
मुख्य अतिथि	श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब
विशिष्ट अतिथि	श्री सुनील जी तलवाड (सिटी केबल)
आमन्त्रित विद्व न	पूज्य स्वामी सम्पूर्णानन्द जी सरस्वती (करनाल) स्वामी सुमनायति जी (लुधियाना)
सगीतज्ञ	श्री विजय आनन्द जी (फिरोजपुर) कुमारी नम्रता सोनी एव आर्य कालेज की छात्राए

☆☆☆

11 कुण्डीय यज्ञ	**प्रात 9-30 से 10-30 बजे तक**
पूर्णाहूति एव आशीर्वाद	**10-30 से 11-00 बजे तक**
ज्योति प्रज्जवलित	**11-05 बजे द्वारा श्री सुनील जी तलवाड**
भजन एव सगीत	**11-10 से 12-00 बजे तक**
प्रवचन	**12-00 से 1-30 बजे तक**
ऋषि लगर	**1-35 बजे (दोपहर बाद)**

आप सभी परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठायें तथा समारोह की शोभा बढ़ायें।

निवेदक	राजेश शर्मा (प्रधान) विजय सरीन (महामन्त्री) रणबीर भाटिया (कोषाध्यक्ष)
सहयोगी	समस्त आर्य समाजे, स्त्री आर्य समाजे एव शिक्षण सस्थाये जिला लुधियाना।
सौजन्य	श्री एन एस भेल्ला, ग्रीन पार्क, लुधियाना।

जिला आर्य सभा लुधियाना

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामन्त्री सम्पादक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस/ऐलिवेट प्रिंटर्स जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

संवत् 1972949099

2277. श्री पुस्तकाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)

रजि न PB/JL/55

दूरभाष

☎ : 292926

वर्ष 50 अंक 39, 11 पौष सम्वत् 2056 तदनुसार 23/26 दिसम्बर 1999 दयानन्दाब्द 175 वार्षिक शुल्क 50 रुपये आजीवन 500 रुपये

श्रद्धा एवं त्याग की मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द जी

श्री रणवीर जी भाटिया, सभा उपप्रधान (लुधियाना)

महापुरुषों का जीवन व सन्देश सारे विश्व तथा प्राणी मात्र के लिए कल्याणकारी-हितकारी एव मार्ग दर्शनीय की भावनाओं से ओत-प्रोत होता है। महापुरुष किसी देश-धर्म-जाति-सम्प्रदाय से सर्वोपरि होते हैं। ऐसे ही महापुरुष परम्परा में स्वाधीनता के कर्णधार, महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी, आत्म उन्नति के पथ प्रदर्शक, शुद्धि सुदर्शन के चक्रधर, गंगा के तट पर बसे गुरुकुल के भगीरथ, दलितोद्धारक, दीन-अनाथ-पालक-धीर-वीर-सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द का स्थान अद्वितीय है। वकील मुन्शी राम (स्वामी जी का प्रथम नाम) जी की मानसिक तथा बौद्धिक चेतना का जागना ऐसा ही था जैसे किसी ऊंचे पर्वत की चोटी से एक नवीन स्रोत का फूटना। नवीन चेतना के उस झरने से देश प्रेम, जन कल्याण की जल धारा फूट निकली थी। वह धारा धीरे-धीरे शिवालिक से उतरती गंगा की धारा की भाति पर्वतीय प्रदेश से कल-कल करती हरिद्वार में आई तो उसका पाट फैलने लगा तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के रूप में विकसित होकर विश्व में विख्यात हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल वट वृक्ष को अपने रक्त से सींचा था। इस गुरुकुल की स्थापना के लिए उन्हें जो कष्ट आपत्तियों तथा कठिनाईयों का सामना करना पड़ा मेरी लेखनी में उतना बल नहीं जो लिपिबद्ध कर सके। महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा निति को मूर्तरूप देने के लिए दो वर्ग कार्य क्षेत्र में आमने सामने डट गए। एक वर्ग की अगुवाई ला. लाजपत राय, लाला लाल चन्द एवं महात्मा हंसराज जी करते थे। जो शिक्षा का माध्यम हिन्दी संस्कृत वेद वेदांग तथा प्रचलित शिक्षा पद्धति आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, एवं अंग्रेजी रखना चाहते थे, तो दूसरा पक्ष हिन्दी-संस्कृत एवं वेद वेदांग के अध्ययन एव अध्यापन का ही पक्षधर था। इनमें लाला रला राम एवं लाला मुन्शी राम अग्रणीय थे। महर्षि देव दयानन्द की शिक्षा-पद्धति पर सुधारवादी [illegible] मतान्तर गहरे [illegible] 1886 को [illegible] में प्रथम दयानन्द एंग्लो वैदिक [illegible] (डी.ए.वी.) [illegible] स्थापना हो [illegible] मुन्शी राम [illegible] ने अन्तत: 1896 में प्राचीन शिक्षा-प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लिए आन्दोलन आरम्भ कर दिया। उन द्वारा लिखे लेखों "सन्तानों को आर्य क्यों कर बना सकते हैं?" (जो ला. मुन्शी राम ने अपने पत्र सधर्म प्रचारक में लिखे थे) से गुरुकुल शिक्षा पद्धति को जन साधारण का व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ। इस भांति शिक्षा पद्धति का यह आन्दोलन घर-घर में पहुंच गया। इसका यह परिणाम हुआ कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के 26 नवम्बर 1898 में गुरुकुल स्थापना सम्बन्धी प्रस्ताव पारित कर दिया। इस योजना को मूर्त रूप देने का कार्य ला. मुन्शी राम को सौंपा गया। ला. मुन्शी राम जी ने इस कार्य के लिए वांछित धनराशि को इक्ट्ठा करने का संकल्प भी सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन्होंने लगभग 9 माह के अथक प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप अप्रैल 1899 में 40,000/- रुपया एकत्रित कर लिया था। गुरुकुल की स्थापना हेतु स्थान ला. मुन्शी राम पर्वतों की गोद में नदियों के संगम तट पर ढूंढ रहे थे परन्तु उपयुक्त स्थान की खोज पूरी होने से पूर्व उनके सहयोगियों तथा दूसरे आर्य जनों के उत्साह एवं गुरुकुल की शीघ्र स्थापना की भावना को देखते हुए 19 मई सन् 1900 को गुजरांवाला की वैदिक पाठशाला में गुरुकुल की विधिवत् स्थापना कर दी गई। नव स्थापित गुरुकुल में ला. मुन्शी राम ने अपने दोनों पुत्रों हरिश्चन्द्र और इन्द्र को प्रविष्ट करा के प्रवेश का प्रारम्भ किया। इसके अतिरिक्त अन्य प्रतिष्ठित घरानों के 20 बालकों ने भी प्रवेश लिया। परन्तु स्वामी जी के हृदय में पर्वत के मध्य नदी के तट पर गुरुकुल खोलने की कामना समाप्त न हुई। कांगड़ी ग्राम के जमींदार मुन्शी अमन सिह जी ने 1400 बीघा भूमि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को दान देकर ला मुन्शी राम के इस सपने को साकार किया। सन् 1902 को कांगड़ी ग्राम के जगल को साफ करके नदी के ठीक मध्य में घास-फूस की झौंपड़ियां बना कर महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रतिपादित गुरुकुल शिक्षा प्रणाली द्वारा गुरुकुल कांगड़ी ग्राम में प्रारम्भ कर दिया गया। निरन्तर प्रगति व उन्नति के पथ पर अग्रसर परिसर में फूस की झुग्गियों का स्थान ईंटों से बने कमरों ने ले लिया। पठन-पाठन के लिए एक बड़े हाल के अतिरिक्त ब्रह्मचारियों के निवास के लिए भवन का प्रावधान किया गया। भंडार गृह-भोजन का स्थान चिकित्सालय अतिथि गृह-यज्ञ शाला एव अध्यापकों के निवास स्थानों का निर्माण कराया गया। यह गुरुकुल आज पुण्य भूमि के नाम से प्रसिद्ध है। पंजाब के आर्यजनों तथा दूसरे आर्य लोग जो पुण्य भूमि देख कर आए हैं। हैरान हैं कि आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व जब कि उस स्थान पर पहुंचना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव था शेर-हाथी दूसरे जंगली जानवर सरेआम घूमते थे, जहां आज भी उस स्थान पर पहुंचने के लिए कोई मार्ग नहीं। नदी को पैदल पार करना पड़ता है। हमें पिछले वर्ष पुण्य भूमि पर आयोजित अपना उत्सव इसलिए स्थगित करना पड़ा कि नदी में पानी आ गया था। कल्पना कीजिए ? उस स्थिति-को वातावरण खूंखार जानवरों के बीच स्थान, बिना बिजली-साफ पानी, भोजन सामग्री व आवश्यक वस्तुओं के अभाव के साथ स्वामी जी ने गुरुकुल किस तरह चलाया होगा। इसीलिए हम उनको निर्भीक-धीर-साहसी-सयममयी-युग प्रवर्तक सन्यासी-गुरुकुल शिक्षा पद्धति के अग्रणीय-महर्षि दयानन्द जी के सच्चे अनुयायी के रूप में स्मरण करते ह। जिस युग में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कार्य किया वह युग लाला लाजपत राय, लोकमान्य तिलक, प मदन मोहन मालवीय और महात्मा गाधी जैसे महापुरुषों का था उस युग में जो निडर नेता थे उनमें स्वामी जी अग्रणीय थे। जो नेता उत्साही थे उनमें स्वामी जी मुख्य थे जिन महापुरुषों के जीवन पर अपनी जीवन-चर्चा बनाई, उनमें भी स्वामी जी अग्रणीय थे। स्वामी जी जीवन भर वीर योद्धा की तरह रहे शहीद हो कर भारतीयों के सम्मुख एक आदर्श जीवन रख गए।

स्वामी श्रद्धानन्द श्रद्धा की मूर्ति थे। उन्होंने अपने युग में स्वराज्य आन्दोलन शुद्धि आन्दोलन अछूतोद्धार- जातपात का विषय, दलितोद्धार, नारी-शिक्षा आर्य समाजिक सगठन-सुदृढ़ता के लिए आजीवन संघर्ष किया। कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जिसमें स्वामी जी ने कमी छोडी हो, बल्कि यह कहना गलत न होगा कि जितना उन्होंने किया उतना किसी ने भी न किया होगा। आज स्वतन्त्रता प्राप्ति के 52 वर्ष बाद भी स्वामी श्रद्धानन्द जी का आर्य जाति के नाम आह्वान उतना ही प्रासगिक है जितना उस समय में था। आर्यों मिल जुल कर कार्य करो, संगठित हो जाओ। यह तो शाश्वत सत्य है कि 'सघे शक्तिः कली युगे।' आपके सगठन में शक्ति होगी तो आपकी सभी बात मानी जाएगी। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा था-आर्य पुरुषो। सोचो कि वो कौन से सिद्धान्त थे जिन्होंने एक लंगोट बंद साधु को वह शक्ति प्रदान की थी, जो इस समय महाराजाओं मे भी दिखाई नहीं देती। पता लगाओ कि आर्य समाज स्थापित करने मे ऋषि का क्या प्रयोजन था।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

याज्ञवल्क्य द्वारा मैत्रेयी को आत्मज्ञान

ले. डॉ० उर्वी, प्रवक्ता संस्कृत श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, (दिल्ली)

उपनिषदो मे आख्यानो एव सवादो के माध्यम से आत्मज्ञान दिया गया है। बृहदारण्यकोपनिषद् मे याज्ञवल्क्य तथा मैत्रेयी का सवाद है। जिसमे मैत्रेयी याज्ञवल्क्य से कहती है कि मुझे भौतिक धन नहीं चाहिए मुझे तो आप ऐसा धन दे जो कभी भी नष्ट न होने वाला हो। आत्म ज्ञान के रूप मे याज्ञवल्क्य मैत्रेयी को सर्वोत्तम तथा सदा विद्यमान रहने वाला धन प्रदान करत हैं।

आत्मा ही दर्शनीय श्रवणीय मननीय तथा ध्यान करने योग्य है। इन सभी साधनो के सम्पन्न होने पर ही आत्मा का साक्षात्कार होता है। इस प्रकार समझाते हुए याज्ञवल्क्य मैत्रयी को कहते हैं कि हे मैत्रेयी ! पति इसलिए प्रिय नहीं होता क्योकि वह पति है वह अपनी पत्नी का भरण पोषण करता है उसे सन्तान देता है अपितु वह अपनी आत्मा के कारण से ही प्रिय होता है क्योकि उसका आत्मा उसे पति योग्य कर्म करने को प्ररित करता है। स्त्री इसीलिए प्रिया नहीं होती क्योकि वह स्त्री है सुन्दर है उसमे आकर्षण है अपितु वह आत्मा के कारण से ही प्रिय है क्योकि उसकी आत्मा सृजन क्षमाशाल सहनशील है। पुत्र इसलिए प्रिय नही हाते क्योकि वे पुत्र हैं अपितु वे आत्मा क कारण स ही प्रिय होते हैं वे माता पिता का आत्मा स उत्पन्न होते है कहा भा गया है आत्मा वै जायते पुत्र । पुत्र अथात् पुम् नरकात् त्रायते पितर जो अपने पिता को नरक से बचाता है। पुत्र का आत्मा पुत्रोचित कर्म करन वाला है अत वह प्रिय है। धन इसलिए प्रिय नही हाना क्योकि वह धन है। वह आत्मा के कारण ही प्रिय होता है। वह दूसरो को सहायतार्थ ही उत्पन्न हुआ है अतएव वह प्रिय है। दूसरो म अपना आत्मा का अनुभव करके हा व्यक्ति धन द्वारा उनकी सहायता करता है। ब्राह्मण इसलिए प्रिय नहीं होता क्योकि वह ब्राह्मण है। वह आत्मा के कारण ही प्रिय है। कोई भा व्यक्ति चाहे वह ब्राह्मण ही क्यो न हो केवल अपने ब्राह्मणत्व के कारण वह प्रिय नहीं होता। वह इसलिए प्रिय होता है क्योकि उसका आत्मा सबके समान है। अत आत्मा के कारण वह प्रिय होता है। क्षत्रिय इसलिए प्रिय नहीं होता क्योकि वह क्षत्रिय है। क्षत्रिय होकर भी यदि वह क्षत्रियोचित कर्म न करे तो वह कैसे प्रिय होगा। उन कर्मों को करने के लिए प्रेरित करने वाला आत्मा है। वह आत्मा द्वारा प्रेरणा प्राप्त करके ही प्रिय बनता है। क्षत्रिय आत्मा के कारण ही प्रिय होता है। लोक इस लिए प्रिय नहीं होते क्योकि वे लोक हैं। अपितु वे अपने ही कारण से प्रिय होते हैं वे समस्त ससार को धारण करने वाले हैं ज्योतियो को प्रदीप्त रखने वाले हैं। उनके मूल मे एक सर्वभूतान्तरात्मा कार्य कर रहा है अत प्रिय हैं। देवता इस कारण प्रिय नहीं होते क्योकि वे देवता हैं अपितु वे अपने आत्मा के कारण से ही प्रिय होते हैं जो उन्हे दान देने के लिए उद्भासित होने के लिए प्रेरित करता है। अत वे आत्मा के कारण हो प्रिय होते हैं। प्राणी प्राणी होने के कारण प्रिय नहीं होते अपितु वे आत्मा के कारण ही प्रिय होते हैं आत्मा ही उन्हे एक दूसरे की रक्षार्थ प्रेरित करता है। सभी कुछ आत्मा के कारण से प्रिय है। किसी अन्य के कारण से नहीं क्योकि आत्मा ही सर्वप्रेरक है सर्वप्रमुख है। हे मैत्रेयी! आत्मा ही दर्शनीय श्रवणीय मननीय तथा ध्यान किए जाने योग्य है। इस आत्मा के दर्शन श्रवण मनन तथा विज्ञान से ही सबका ज्ञान हो जाता है। वस्तुत याज्ञवल्क्य मैत्रयी के हृदय मे उपर्युक्त सभी के लिए वैराग्य उत्पन्न करते हैं जिससे कि मैत्रेयी उन सबको त्याग दे और केवल आत्मा मे ध्यान लगाए। क्योकि यह वैराग्य ही अमृतत्व का साधन है। जब तक हम पति स्त्री पुत्र धन इत्यादि के बन्धन मे पडे रहेगे हमें मुक्ति नहीं मिलेगी। हम सब के बाह्य रूप को देखते हैं और उसे सत्य एव प्रिय मानते रहते हैं यह प्रीति गौणी है। क्योकि सत्य कुछ और है। आत्मा मे ही मुख्य प्रीति है अत हे मैत्रेयी। उन सभी को छोड़कर आत्मा ही दर्शन करने योग्य है। पहले आचार्य तथा आगम के द्वारा श्रवण करने योग्य तत्पश्चात् तर्क सहित मनन करने योग्य है तदनन्तर निदिध्यासितव्य अर्थात् निश्चय से ध्यान करने योग्य है। इन्हीं साधनों से सुसम्पन्न होने पर वह आत्मा देखा जा सकता है अनुभव किया जा सकता है।

ब्राह्मण क्षत्रिय आदि जो कि कर्म का साधनमात्र हैं उन्हें मुख्य मान लेना ही अज्ञान है ठीक उसी प्रकार जैसे रस्सी को देखकर सर्प की अनुभूति होना। उस अज्ञान को दूर करने के लिए याज्ञवल्क्य कहते हैं–हे मैत्रेयी ! दर्शन श्रवण मनन तथा ज्ञान होने पर ही निश्चित रूप से यह आत्म विषयक ज्ञान हो जाता है। आत्मा ही सब कुछ है। आत्मा का ज्ञान होने पर सब कुछ ज्ञात हो जाता है। आत्मा किसी से पृथक नहीं है और ऐसा भी नहीं है कि ब्राह्मण क्षत्रिय देवता प्राणी तथा लोक इन सबका आत्मा पृथक पृथक है। इन सबका आत्मा एक जैसा ही है तथा ये भी आत्मा से भिन्न नहीं हैं आत्मा ही हैं। आत्मा है तो ये भी हैं अन्यथा नहीं। इसके विपरीत यदि कोई किसी व्यक्ति वस्तु जाति आदि मे आत्मा को नहीं मानता तो उसके लिए वह व्यक्ति अथवा जाति मानो नष्ट हो जाती है क्योंकि आत्मा ही तो सबका सार है परमात्मा ही सबका आत्मा है जो सबके भीतर विद्यमान है। जो कुछ भी इस ससार मे विद्यमान है वह सब कुछ आत्मा से ही उत्पन्न होता है तथा उसी मे विलय हो जाता है। वह ठीक उसी प्रकार है जैसे मकडी ही स्वय जाला बुनती है और अपने अन्दर ही समेट लेती है जैसे पृथ्वी पर औषधिया उत्पन्न होती हैं उसी प्रकार उस अक्षर ब्रह्म अर्थात् परमात्मा से ही यह सब कुछ उत्पन्न होता है। परमात्मा ही जीवात्मा रूप मे सब मे विद्यमान है बाह्य रूप से देखने में सभी प्राणी पृथक पृथक प्रतीत होते हैं सभी में भेद प्रतीत होता है परन्तु आत्मज्ञान होने पर ही यह भेद पृथक्ता दूर हो जाते हैं। आत्मा ही सबके भीतर है आत्मा मे ही सबकुछ है इस प्रकार सब प्राणियो मे एक आत्मरूप समत्व भाव आने पर मनुष्य घृणा राग द्वेष से मुक्त हो जाता है। जिस प्रकार भिन्न भिन्न वर्ण की मणियो मे सूत्र एक ही होता है उसी प्रकार भिन्न भिन्न प्राणियो मे एकमात्र आत्मा ही होता है जब एक ही आत्मा सभी जीवो मे एकत्व रूप से विद्यमान है तब शोक और मोह कैसा ? हम जो यह कहते हैं यह अच्छा है यह बुरा उसका भी प्रश्न ही नही उठता क्योकि एक ही आत्मा एक व्यक्ति के भीतर अच्छा और एक व्यक्ति के भीतर बुरा नहीं हो सकता। उस स्थिति मे निन्दा स्तुति क्रोध भय ये सभी विकार दूर हो जाते हैं। एकमात्र समभाव ही रहता है। सभी भावो से मुक्ति हो जाती है यही मोक्ष है यही आत्मज्ञान है।

आर्य सद्भावना सत्संग समिति, अमृतसर को मारुति कार उपलब्ध

आर्य सद्भावना सत्सग समिति अमृतसर का कार्यक्रम व इसकी बढती हुई लोकप्रियता के कारण इसका विस्तार कढियाला व अजनाला तक फैल गया है। दूर दूर जाने के लिए मैंने अमृतसर वासियों से एक वाहन की अपील की थी जिसके फलस्वरूप अमृतसर की प्रतिष्ठित डा श्रीमती उर्मिला लखनपाल ने उदारता प्रकट करके हमे इस कार्य हेतु मारुति–800 (1990) भेंट की इसके लिए समिति से उन्होने कोई भी धनराशि नहीं ली। यह पूर्णत निशुल्क दी है। आपकी छोटी बहन सुषमा गुप्ता जो अविवाहित थीं दिल्ली में प्राचार्या के पद पर कार्य कर रही थी उनका आकस्मिक निधन हो गया और आपने सुषमा गुप्ता मेमोरियल फड से उनकी स्मृति मे हमे यह कार भेट की है इसके पूर्व इसी फड से आपने 'महर्षि दयानन्द नि शुल्क महिला सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र हेतु 2 सिलाई मशीने भी भेट की हैं। यह गाडी देकर उन्होने वेद प्रचार के कार्यों हेतु हमारा जो सहयोग किया वह अद्वितीय है। अन्यो को भी इससे प्रेरणा लेकर दान पुण्य के कार्यों को करते रहना चाहिए। मैं श्रीमती उर्मिला लखनपाल का इस दान के लिए बार बार धन्यवाद करती हू।

–माधुरी योगमति

सम्पादकीय

31 दिसम्बर 1993 को सायंकाल श्री वीरेन्द्र जी हमे छोड कर सदा के लिए चले गए थे। उनको हमारे बीच मे से गए पूरे 6 वर्ष बीत गए हैं परन्तु ऐसा लगता है कि जैसे यह घटना अभी अभी घटी हो। वीरेन्द्र जी एक समय एक बहुत बडे क्रान्तिकारी व्यक्ति थे। उन्होंने आजादी की लडाई के लिए अंग्रेजो से भी टक्कर ली थी। वह देश के लिए जेल भी गए थे। सरदार भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारियो से उनका सम्बन्ध था। उनके पिता महाशय कृष्ण जी भी कलम के धनी थे और उन्ही की तरह श्री वीरेन्द्र जी भी कलम के धनी थे। उनके सम्पादकीय लेख पढने के लिए बहुत से लोग लालायित रहते थे। वह देखते रहते थे कि जो समस्या देश के सामने उठी है उस के लिए श्री वीरेन्द्र जी क्या लिखते हैं उनका दृष्टिकोण इस विषय मे क्या है ? क्योकि कोई भी समस्या यदि देश के सामने उठती थी या समाज के सामने उठती थी तो श्री वीरेन्द्र जी उसके समाधान के लिए अपनी कलम जरूर उठाते थे। उनकी कलम का लोहा उनके विरोधी भी मानते थे। महाराणा प्रताप के नाम पर महाशय कृष्ण जी ने अपनी अखबार का नाम प्रताप रखा था। जैसे महाराणा प्रताप कभी किसी अत्याचारी के व देश के शत्रु के सामने नही झुके इसी प्रकार से यह अखबार वीर प्रताप और इसके सम्पादक कभी भी किसी के सामने नहीं झुके। महाशय कृष्ण जी ने प्रताप की आवाज को बुलन्द रखा और कभी झुकने नही दिया। इसी प्रकार स्व श्री वीरेन्द्र जी ने अपने पिता जी की तरह ही वीर प्रताप व प्रताप के नाम को सदा ऊचा रखा उनकी यह अपनी विशेषता थी। चाहे उनका कोई अपना हो या बेगाना यदि कोई गलत कार्य करता था तो वह उसके विरुद्ध अपनी आवाज उठाते थे। श्री वीरेन्द्र जी का यह महान विशेषता था कि यदि सरकार की ओर से कुछ गलत हो रहा है तो वह उसके विरुद्ध भी अपनी आवाज उठाते थे। उनको इस बात की कोई चिंता नहीं थी कि कोई उनसे नाराज हो जाएगा। इसलिए अक्सर सत्तापक्ष उनसे नाराज रहता था। क्योकि वह समय समय पर उनकी गल्तियो से पर्दा उठाते रहते थे। इसके कारण उन्हे कइ बार हानि भी उठानी पडी परन्तु उन्होने कभी भी इसकी कोई चिन्ता नही की। उन्होने कभी भी अपने आपको व अपने अखबार को महत्व नहीं दिया सदा देश को सम्मुख रखा। वह अपने देश से बहुत प्यार करते थे। इसीलिए देश की आजादी के लिए उन्होने कई बार जेल की यात्राए की और यातनाए सही थीं

श्री वीरेन्द्र जी जहा एक राष्ट्रीय नेता थे वहा एक कट्टर आर्य समाजी भी थे आर्य समाज के प्रति उनके दिल मे बहुत बडी श्रद्धा थी। वह जन्म से ही आर्य समाजी थे क्योकि उनके पिता महाशय कृष्ण भी आर्य समाज के रंग मे पूरी तरह रंगे हुए थे। महाशय कृष्ण जी कई वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महामन्त्री व प्रधान रहे और इसी प्रकार श्री वीरेन्द्र जी भी कइ वर्षों तक इस सभा के महामन्त्री व प्रधान रहे। आजीवन उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब व आर्य समाज की सेवा की। जब वह सभा के प्रधान थे तो मै भी महामन्त्री के रूप मे उनके साथ कई वर्ष तक कार्य करता रहा। मैंने उन्हे बहुत नजदीक से देखा है। वह अक्सर मेरा मार्ग दर्शन करते रहते थे। मै उनको कभी भुला नहीं सकता।

31 दिसम्बर को उनकी पुण्य तिथि है। इस दिन प्रतिवर्ष हम उन्हे याद करते हैं। क्योकि वह न भूलने वाला दिन है। हम कभी भी श्री वीरेन्द्र जी को भुला नहीं सकेगे। उन जैसा योग्य नेता आर्य समाज मे मिलना कठिन है। मैं उनकी पुण्य तिथि पर अपनी ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से व आर्य विद्या परिषद व पजाब की समस्त आर्य शिक्षा सस्थाओ की ओर से सभा के सभी अधिकारियो व सदस्यो की ओर से उन्हे श्रद्धाजलि भेंट करता हू। परमात्मा हमे सदा उनके पद चिन्हो पर चलने की शक्ति प्रदान करें।

—अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट
सभा महामन्त्री

श्री वीरेन्द्र जी एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हे हम कभी भी भूला नही सकेगे। 31 दिसम्बर 1993 को सायकाल हृदय गति रूक जाने से अचानक वह हमे छोड कर सदा के लिए चले गए। इस दिन वह प्रात अपने वीर प्रताप के कार्यालय भी गए दिन भर कार्य भी करते रहे सायकाल अचानक यह घटना घट गई।

श्री वीरेन्द्र जी से मेरा पारिवारिक सम्बन्ध था। आर्य समाज के नाते तो हम एक दूसरे से मिलते ही थे परन्तु इसके अतिरिक्त भी उनका मेरे परिवार से व मुझ से बहुत स्नेह था वह आर्य समाज के उत्सवो को छोड कर कही बाहर नही जाते थे परन्तु मुझे मिलने के लिए वह कई बार मेरे पास आ जाया करते थे और मै भी कई बार उनके पास चला जाया करता था। जब भी हम आपस मे बैठते थे तो वह अधिकतर आर्य समाज की बाते ही किया करते थे आर्य समाज के प्रति उनके मन में बहुत तडप थी और उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की उन्नति के लिए बहुत कार्य किया।

श्री वीरेन्द्र जी गुरुकुल कागडी को भी बहुत उन्नत करना चाहते थे पुण्य भूमि स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी की तप स्थली के प्रति उनका विशेष लगाव था। वह चाहते थे कि पुण्य भूमि की रक्षा की जाए उनकी इच्छानुसार ही हमने पुण्य भूमि को रक्षित किया है मैने वहा जो कुछ भी किया है इसलिए किया है कि श्री वीरेन्द्र जी का यह हार्दिक इच्छा थी कि इस भूमि की रक्षा की जाए आज वह भूमि और भवन पूरी तरह से सुरक्षित है।

श्री वीरेन्द्र जी के देहावसान के पश्चात् मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का प्रधान चुना गया। जनवरी 1994 से निरन्तर मै आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की उन्नति के लिए कार्य करता आ रहा हू हमने प्रयास किया है कि श्री वीरेन्द्र जी ने जो कार्य आरम्भ किए थे उन्हे पूर्ण किया जाए। इसलिए आज आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब सभी क्षेत्रो मे सुचारू रूप से कार्य कर रही है। सभा के सभी अधिकारी व सदस्य इसमे अपना पूरा पूरा सहयोग दे रहे है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी सहयोग देते रहेगे।

श्री वीरेन्द्र जी का अभाव हमे सदा खटकता रहेगा। वह एक बहुत सूझबूझ वाले व्यक्ति थे। उन जैसी सूझबूझ रखने वाले कम ही व्यक्ति हुआ करते हैं। आर्य समाजी क्षेत्र व राजनीतिक क्षेत्र दोनो मे उनका विशेष स्थान था। भले ही उन्होने राजनीति मे सक्रिय भाग नहीं लिया परन्तु फिर भी राजनीतिक क्षेत्र मे उनकी अपनी एक विशेष पकड थी कई बडे बडे राजनीतिक नेता उनका सम्मान किया करते थे परन्तु आज राजनीतिक क्षेत्र मे हमारे पास उन जैसा प्रभावशाली व्यक्ति कोई दिखाई नही पडता। क्योंकि वह महान व्यक्तित्व के धनी थे उनसे राजनीतिक नेता भी प्रभावित थे।

श्री वीरेन्द्र जी की उपमा किसी और व्यक्ति से नहीं की जा सकती। उनमे बहुत सी विशेषताए थी जिनका वर्णन करना मेरे लिए कठिन है। मै कई वर्षों तक उनके साथ सभा मे उपप्रधान के रूप मे कार्य करता रहा हू। वह कई बार कहते थे कि इस बार आप प्रधान बन जाए परन्तु मैने उन्हे स्पष्ट कर दिया था कि आपके होते हुए मै प्रधान बनना स्वीकार नही करूगा परन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी इच्छा अनुसार ही मैंने सभा का प्रधान पद सभी के आग्रह पर स्वीकार किया है। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की गरिमा सभी क्षेत्रो में सदा बनी रहे।

31 दिसम्बर को श्री वीरेन्द्र जी की पुण्य तिथि पर मै अपनी ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से और आर्य विद्या परिषद पजाब व सभा से सम्बन्धित सभी शिक्षा सस्थाओ की ओर से व सभा के सभी अधिकारियो व सदस्यो की ओर से व पजाब की सभी आर्य समाजो की ओर से उन्हे श्रद्धाजलि भेट करता हू और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि वह उस पवित्र आत्मा को जहा भी वह इस समय हो उनके पवित्र कर्मानुसार सदा सुखी रखे और हमे उनके पदचिन्हो पर चलने की शक्ति प्रदान करे।

—हरबंस लाल शर्मा सभा प्रधान

स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक का अभिनन्दन समारोह व वानप्रस्थ साधक का शिलान्यास

डा. के के पसरीचा सभा वरिष्ठ उपप्रधान

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक का इस समय आर्य समाज के क्षेत्र मे अपना एक विशेष स्थान है। वह इस समय रोजड (सागपुर) जिला साबरकाठा (गुजरात) मे आर्य वन विकास परिसर में वह एक दर्शन योग महाविद्यालय चला रहे हैं जिसमे दर्शन शास्त्रो के ज्ञान के साथ साथ योग साधना भी सिखाई जाती है। इस बार वहा 15 से 21 नवम्बर 1999 तक स्वामी सत्यपति जी के अभिनन्दन समारोह का तथा वानप्रस्थ साधक आश्रम के शिलान्यास का कार्यक्रम रखा हुआ था। इस अवसर पर एक साधना शिविर का आयोजन भी किया गया था मुझे भी इसका निमन्त्रण पत्र मिला था। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेम पसरीचा जी की यह हार्दिक इच्छा थी कि इस बार हम इस साधना शिविर मे अवश्य भाग ले। इससे पूर्व भी स्वामी जी के द्वारा लगाए गए कई शिविरो मे हमने भाग लिया था। इसलिए मैं अपनी धर्मपत्नी सहित 13 11 99 को जालन्धर से चल कर 15 11 99 को अहमदाबाद पहुचा यहा से यह स्थान 70 किलोमीटर है। इससे आगे जाने के लिए सारा प्रबन्ध आश्रम का ओर से किया गया था। हम सायकाल तक आश्रम मे पहुच गए।

स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक छ दर्शन शास्त्रो के इस समय सब से उच्चकोटि के विद्वान् हैं। मीमासा शास्त्र भी उन्होने श्री युधिष्ठिर जी मीमासक से विधिपूर्वक पढा है। इसका भी उन्हे पूरा ज्ञान है अन्य दर्शन शास्त्रो के विद्वान् मिल जाते हैं परन्तु मीमासा शास्त्र के बहुत कम विद्वान् मिलते हैं। जो विधिवत इसे पढा सके श्री स्वामी सत्यपति जी उनमे से एक हैं।

स्वामी जी का जन्म रोहतक जिला के फरमाना (महम) ग्राम मे हुआ था। 1947 में इनका सारा परिवार मुस्लिम मत को त्याग कर वैदिक धर्म में प्रवेश हुआ था। इनका बचपन गाव मे साधारण लोगो का तरह बीता। बाल्यावस्था मे इन्हे पढाई का कोई अवसर नहीं मिला। ईश्वरोपासना और वैराग्य की भावना इन मे बचपन से था। 19 वर्ष की अवस्था में इन्होंने लोगों से पूछ पूछ कर अक्षर ज्ञान प्राप्त किया। इन्हें विधिवत रूप से इस समय तक किसी भी पाठशाला में पढने का अवसर नहीं मिला। अक्षर ज्ञान प्राप्त हो जाने पर इन्हे आत्मा-परमात्मा के बारे में जो शकाए होती थीं उनके बारे में जानने के लिए इन्होने सत्यार्थ प्रकाश पढा। यहा से इनके मन में आर्य समाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए मनुदेव के नाम से गुरुकुल झज्जर मे प्रविष्ट हुए। वहा श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के सान्निध्य मे साधना करते हुए विधिवत रूप से सस्कृत का ज्ञान प्राप्त किया और दर्शनो का भी अध्ययन किया। इसके पश्चात् दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर दिल्ली मे भी अध्ययन किया। इन दोनों स्थानो पर इन्होंने सस्कृत भाषा व्याकरण महाभाष्य दर्शन उपनिषद तथा वेदादि ग्रथों का अध्ययन किया और व्याकरणाचार्य दर्शनाचार्य वेद वाचस्पति आदि की उपाधिया प्राप्त कीं। 7 अप्रैल 1970 को इन्होने स्वामी ब्रह्ममुनि जी से सन्यास की दीक्षा ग्रहण की और स्वामी सत्यपति जी के नाम से प्रसिद्ध हुए और अब रोजड आर्य वन विकास के परिसर मे दर्शन योग महा विद्यालय चला रहे हैं। इसके साथ ही 21 11 99 को यहा पर ही वानप्रस्थ साधक आश्रम का शिलान्यास भी किया गया है। इस अवसर पर आयोजित समारोह मे स्वामी सत्यपति जी को आर्य जनता की ओर से 51 लाख रुपए की थैली इस आश्रम के निर्माण हेतु प्रदान की गई है। 16 लाख रुपए के आश्वासन भी मिले हैं। इस समारोह मे लगभग साढे तीन हजार महानुभाव भिन्न भिन्न 17 प्रान्तो से वहा पहुचे थे। भोजन तथा रहने की सभी के लिए बहुत अच्छी व्यवस्था की हुई थी। इतनी बडी सख्या मे पधारे लोगो के लिए जगल मे इस आश्रम मे ठहरने की व्यवस्था करना भोजन तथा दूध आदि की व्यवस्था करना कोई आसान कार्य नहीं था। परन्तु स्वामी जी ने वहा सारी व्यवस्था की हुई थी।

21 11 99 को समारोह का आरम्भ दर्शन योग महाविद्यालय के ब्रह्मचारियो द्वारा गाए गए सस्कृत गीत से हुआ। जिसमे परमात्मा से बुद्धि की प्रार्थना की गई। इसके पश्चात यजुर्वेद के मन्त्रो का पाठ हुआ। स्वागत भाषण आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने दिया। कोठारी स्वामी नारायण चरण दास जूनागढ ने इस समारोह का दीप प्रज्ज्वलित कर के उद्घाटन किया। लुधियाना से पधारे श्री सत्यानन्द जी मुञ्जाल मालिक हीरो साईकिल ने स्वामी सत्यपति जी का अभिनदन पत्र पढा। इस समारोह में पधारे सन्यासियों मे प्रमुख रूप से पूज्य स्वामी सर्वानन्दजी स्वामी धर्मानन्द जी स्वामी जगदीश्वरानन्द जी स्वामी सुमेधानन्द जी तथा आचार्य बलदेव जी नैष्ठिक आचार्य वेदव्रत मीमासक आचार्य देवव्रत जी दिल्ली प्रो धर्मवीर अजमेर डा सोमदेव मुम्बई तथा अन्य बहुत से विद्वान् सन्यासी वहा पधारे हुए थे।

साधना की दृष्टि से हमारी यात्रा बडी सफल रही। वहा 15 11 99 से 20 11 99 तक जो साधना शिविर चलता रहा उसमे दिनचर्या बहुत अच्छी थी। प्रात चार बजे उठना शौच स्नानादि के पश्चात् 5 15 पर आसन प्राणायाम करना 6 बजे स्वामी सत्यपति जी का क्रियात्मक योग पर प्रवचन होना 7 बजे यज्ञ यज्ञोपरान्त प्रातराश फिर दर्शनों की कक्षाये आरम्भ हो जाना। दोपहर साढे 12 बजे भोजन डेढ बजे विश्राम उसके पश्चात् फिर अध्ययन रात्रि भोजन भोजन के बाद भ्रमण के समय घूमते घूमते लाऊड स्पीकर द्वारा श्लोकों का समूह गान वेद मन्त्रो का पाठ बहुत रोचक लगता था। लोग परिधि में घूमते जाते थे और श्लोकों तथा मन्त्रों का पाठ करते जाते थे। उसके पश्चात् फिर प्रवचन होना साढे 9 बजे रात्रि में सो जाना और प्रात काल चार बजे फिर उठ जाना। यह एक बहुत ही रोचक प्रक्रिया व दिनचर्या थी। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति के साधन बताना था। जिसको स्वामी सत्यपति जी ने अच्छी प्रकार से इस विषयमें सभी को बताया। स्वामी जी बहुत ही त्यागी और तपस्वी महानुभाव हैं और बहुत उच्चकोटि के विद्वान हैं। इन्होंने ब्रह्मचर्य से सीधा सन्यास आश्रम मे प्रवेश किया है इसलिए भी इनकी महत्ता है। योग साधना द्वारा और समाधी के द्वारा स्वामी जी ने ईश्वर साक्षात्कार का जो अनुभव प्राप्त किया हुआ है उसके सम्बन्ध में उन्होंने अपने अनुभव आए सभी महानुभावों को बता कर चकित कर दिया।

उनके शिष्य बहुत हैं परन्तु श्री ज्ञानेश्वर जी और श्री विवेक जी श्री सतीश जी की विद्वता तथा जीवन शैली ने हमे बहुत प्रभावित किया और ऐसा मन करता था कि हम इनके पास ही बैठे साधना करते रहे और तत्व ज्ञान प्राप्त करे परन्तु हमारे लिए ऐसा करना कठिन था। फिर भी इस शिविर मे भाग लेकर और इस समारोह मे पहुच कर हमने बहुत कुछ प्राप्त किया है। हमारी यात्रा बहुत ही लाभकारी रही। शिविर व समारोह की समाप्ति पर 22 11 99 का हम पूर्व निश्चित मैडीकल कान्फ्रैंस मे कोची चले गए और उसके पश्चात कई ऐतिहासिक स्थानो को देखने के पश्चात् हम 5 दिसम्बर को जालन्धर पहुच गए। मैं स्वामी सत्यपति जी का धन्यवादी हू कि उन्होंने हमें इस समारोह मे सम्मिलित होने का अवसर दिया

आर्य समाज अन्धेरी का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर अधेरी (पश्चिम) 120 आराम नगर सात बगला मुबई 40061 के वार्षिक समारोह मे आमन्त्रित करते हुए हमे प्रसन्नता हो रही है आप आर्य समाज के कार्यों मे हमारे सदा सहायक हैं आपका सहयोग हमारे लिए अमूल्य है।

आपके पधारने से उत्सव की शोभा तो बढेगी ही साथ ही मुबई महानगर के इस व्यस्त जीवन मे से कुछ समय सामवेद पारायण महायज्ञ तथा विद्वानो के प्रवचन उपदेश एव भक्ति सगीत का आनन्द भी प्राप्त होगा आध्यात्मिक उन्नति के इस महायज्ञ मे आना न भूले। कार्यक्रम 23 12 99 से 26 12 99 रविवार तक चलेगा। इस अवसर पर श्री स्वामी मेधानन्द जी श्री ओंकार नाथ जी आचार्य अखिलेश्वर जी आचार्य श्री वागीश जी श्री प हरबस लाल जी शर्मा प्रधान आ प्र सभा पजाब आचार्या नन्दिता शास्त्री (वाराणसी) कैप्टन श्री देवरत्न श्रीमती क्रान्ति आर्या श्री नरेश जी भजनोपदेशक तथा अन्य कई विद्वान पधार रहे हैं।

–ज्ञानचन्द प्रधान

इतिहास

ले० श्री [illegible] (उ०प्र०)

सन् 1975 ई० मे कुछ तथाकथित इतिहासकारो ने कहा महाभारत हुआ ही नहीं महाभारत हुआ तो था किन्तु रामायण से पहले। न यहा कभी गाण्डीव रहा न पिनाक। यह तीन वक्तव्य देकर अपनी भारतीय इतिहास विषयक अज्ञानता का परिचय दिया था। उस समय हमने "रामायण "महाभारत और लका "रामायण एक इतिहास है कपोल कल्पना नहीं "गाण्डीव भी था और पिनाक भी रामायण पहले महाभारत बाद मे ' यह चार लेख विभिन्न समाचार पत्रों में लिखे थे। उनके दैनिक अनेक साप्ताहिक और अनेक मासिक पत्रो मे हमारे यह लख प्रकाशित हुए थे। इतिहास किसे कहते हैं ? इन पक्तियो मे हम इस विषय पर लिखने लगे हैं।

मैकाले की योजना की शिक्षा से शिक्षित कहलाने वाले इन तथाकथित इतिहासको को यह पता है कि मैकाले ने यह शिक्षा योजना इसलिए भारत मे प्रचलित कराई थी कि इससे शिक्षित होकर भारतीय केवल रक्त रग और नाम से भारतीय रह जाए किन्तु आचार विचार से एकदम अभारतीय तथा अग्रेजी सभ्यता के पुजारी बन जाए। यह जानकर भी उसी पद्धति को कार्यान्वित करने के लिए अग्रेजो द्वारा तैयार किए गए कल्पित मिथ्या इतिहास को स्वाधीनता के पचास वष बीत जाने पर आज भी प्रमाण मानते रहना बुद्धिमानी नहीं कही जा सकती। खेद की बात तो यह है कि विदेशियो और उनका अन्धानुकरण करने वाले भारतीय लेखको के लेखो स इधर उधर हटकर खोज करना तो एक ओर रहा यह लोग साधारण तर्कों से भी काम लेने को तैयार नहीं। उन तर्कों से भी जो इनके अपने विचारो मान्यताओ और धारणाओ के विषय मे उत्पन्न होते हैं। तर्कों से उत्पन्न होने पर उन तर्कयुक्त प्रश्नो के युक्तियुक्त तथा प्रमाणिक उत्तर ढूढना ही अनुसन्धान कहलाता है जो व्यक्ति इस प्रकार के अनुसन्धान के लिए तैयार न हो वह वास्तविकता को कदापि नह[illegible] सकता और बिना वास्तविक[illegible] जाने इतिहासवेत्ता होन का विचार रखना नितान्त खोखला दम्भ मात्र है। ऐसे व्यक्तियो द्वारा इतिहास विषयक वक्तव्य देना अनाधिकार प्रयत्न तथा जाति को दिग्भ्रान्त करने का पाप है।

उन दिनो जब इन तथाकथित इतिहासवेत्ताओं के वक्तव्य भारत के प्रमुख समाचार-पत्रो मे प्रकाशित हो रहे थे तब अनेक स्थानो पर 'रामायण और महाभारत ऐतिहासिक ग्रन्थ हैं अथवा नहीं' इस विषय पर गोष्ठिया और सम्मेलन आयोजित किए गए। परन्तु इन गोष्ठियो और सम्मेलनो के आयोजको के मन मस्तिष्क पर भी मैकाले की योजना की शिक्षा का ही प्रभाव है परिणाम स्वरूप वही पी एच डी और इतिहास के कालेज के प्रवक्ता ही बुलाए जाते रहे। वह बेचारे क्या कहते ? या तो वह पक्ष लेते प्राध्यापकों द्वारा प्रतिपादित भारतीय इतिहास विषयक भ्रान्तियो का और या अपने आयोजको की भावनाओ की ओर ध्यान देते तो यह कह देते कि 'अभी भारतीय इतिहास पर और खोज की आवश्यकता है। इस विषय मे और अधिक जानकारी किए बिना कुछ कहना उचित नही।' इस का अर्थ हुआ कि "खुश रहे शेख भी शैतान भी बेजार न हो।"

यह सामान्य बात है। जब किसी विषय की जानकारी न हो तब किसी भी पक्ष और वह भी विशेषकर कार्यक्रम के आयोजको को रूष्ट करना अभिप्रेत न हो तो इस प्रकार का निर्णय अथवा वक्तव्य देना उपयोगी रहता है। वैसे इस प्रकार के वक्तव्य से एक ही परिणाम निकलता है कि आयोजन निरर्थक और निष्फल रहा चाहे वह मन मे विरोधी और कपटपूर्ण भावना रखते हुए आयोजको से बुरा न बनने के लिए ऐसा वक्तव्य दिया गया हो अथवा अपनी अज्ञानता और अयोग्यता को छिपाने के लिए।

इन आयोजनो मे भारतीय इतिहास की जानकारी रखने वालो को नहीं बुलाया गया। बुलाना तो एक ओर रहा—उन लोगों से सम्पर्क कर यह जानने का प्रयत्न भी नहीं किया गया कि इस विषय पर आप कोई जानकारी दे सकेगे क्या? अथवा इस विषय मे आप कुछ कहने की इच्छा रखते हैं क्या ?

भारतीय इतिहास को योरोपीय लोगों ने विशेषकर ब्रिटेन निवासियो ने क्यो विकृत किया ? इस विषय के इतिहास विषयक सुप्रसिद्ध अनुसन्धानकर्त्ता तथा 'भाषा का इतिहास' वैदिक वाङमय का इतिहास और भारतवर्ष का बृहद् इतिहास आदि अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थो के रचयिता स्वर्गीय श्री पण्डित भगवद्दत्त जी के विचार पाठको की जानकारी के लिए हम यहा प्रस्तुत कर रहे हैं तथा इसके पश्चात् इतिहास किसे कहते है ? एतद्विषयक प्रामाणिक विवेचन प्रस्तुत करेगे।

"राथ ह्विटने बेबर मैक्समूलर मैकडानल्ड कीथ और रैपसन आदि पाश्चात्य लेखको को यह महान भय था कि यदि एक बार भी आर्य इतिहास सत्य स्वीकृत हो गया तो तौरेत अबूर और इन्जील का मत जो वर्तमान यहूदी और ईसाईयो ने समझ रखा है—ससार से उठ जाएगा। ससार वेदो की ओर झुकेगा भारतीय गौरव पराकाष्ठा को प्राप्त होगा और ससार भारत का अभूतपूर्व मान करने लगेगा। मनु आदि ऋषि सर्वोपरि माने जायेगे कथित आसुरी और पञ्चशिरत आदि साख्य प्रवक्ता हिरण्गर्भ आदि योगवक्ता स्कन्द इन्द्र विष्णु भारत चक्रवर्ती मानधाता हैहय अर्जुन जामदग्न्य राम दाशरथि राम और पार्थ अर्जुन आदि अति महारथ महासेनापति वर्तमान ऐतिहासिको के हृदय मे उज्ज्वलता प्राप्त करेगे। ससार का अद्वितीय पुरुष श्री कृष्ण जिसके पश्चात् उससे शताश दिव्य गुण रखने वाला एक भी पुरुष आज तक इस भूतल पर नहीं जन्मा—ससार का हृदय सम्राट होगा अत इन जर्मन और अग्रेज आदि लेखको ने इतिहास पुराण ग्रन्थो का महा निरादर किया। वैदिक ग्रन्थो से वे साक्षात् रूप से परे नहीं हट सके पर उन्हे अधिकाश मिथ्या कल्पनायें कहकर उन्होने परे फैंक दिया और इतिहास आदि को उन्होने वैदिक ग्रन्थो से विपरीत बता कर अपनी कपोल-कल्पना आरम्भ की।"

श्री पण्डित भगवद्दत्त कृत भारतवर्ष का बृहद इतिहास इन विचारो को व्यक्त करने वाले स्वनामधन्य श्री पण्डित भगवद्दत्त जी ने भारतीय इतिहास विषयक अपनी खोज प्रस्तुत करते हुए घोषणा की है कि 'युरोप के लेखको को ज्ञान हो जाना चाहिए कि उनकी कल्पनाये अब भारत मे मान्य नही होगी। उन्हे शिष्य बनकर भारतीय विद्वानो से पढना होगा और अपने उच्छृखल तथा कल्पित भाषा मतो को तर्कयुक्त बनाना होगा। उन्हे ईसाई पक्षपात छोडकर सत्य की अराधना करनी होगी।

इतिहास किसे कहते है ? इस विषय को पाठकगण नीचे का पक्तियो मे पढे और तब निश्चय करे कि यह लोग कितने इतिहासवेत्ता हैं ? जो आजकल इतिहास के अधिकृत विद्वान् और प्रवक्ता होन का दम भरते हैं।

'इतिहास पुरावृत्त ऋषिभि परिकीर्त्तयते। आचार्य शोनक कृत बृहद्देवता 4।46। इतिहास अर्थात् पुरावृत्त (पुराना वृतान्त) ऋषियो द्वारा (वर्णित) है।

'इतिहैवमासोदिति य कथ मत स इतिहास आचार्य कृत निरुक्त भाष्यवृत्ति 2।10। निश्चय पूर्वक ऐसा हुआ था ऐसा जो कहा जाता है वह इतिहास है।

'इतिहास पुरावृत अमरकोष नामलिगा नुशासनम् 1।6।4। इतिहास प्राचीन वृत्तान्त को कहत हैं।

'इति शब्द परमार्थोपदशेऽत्यम।

इतिहास्त ऽस्मिन्नितिहास (श्री सर्वानन्द कृत टीका सर्वस्व)

परम्परा से जो कहा जा रहा है कि ऐसा हुआ था वह अव्यय है अर्थात् उसमे परिवर्तन योग्य कुछ भी नही है इसलिए वह इतिहास है।

इद शृणु महाप्रज्ञ धर्मपुत्र महायश ।

इतिहास पुरावृत्त शरणाथ महाफलम्॥

महाभारत अनुशासन पर्व

इस श्लोक की द्वितीय पक्ति मे इतिहास को पुरावृत्त प्राचीन वृतान्त कहा गया है।

पुराण प्रविमेद एवेतिहास इत्येके।

स च द्विविधा परक्रिया पुराकल्पाभ्याम्।

परक्रिया पुराकल्प इतिहासातिद्विधा।

स्योदक नायका पूर्वा द्वितीया बहुनायका ॥ (राजेश्वर कृत काव्य मीमासा पृष्ठ 3)

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सुल्तानपुर लोधी में गायत्री-यज्ञ का आयोजन

स्त्री आर्य समाज के तत्वावधान मे प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी आर्य समाज सुल्तानपुर लोधी मे श्रद्धेय स्वामी महात्मा आनन्द भिक्षु जी की पुण्य स्मृति जो 8 दिसम्बर को होती है मे सप्त दिवसीय गायत्री यज्ञ का शुभ अनुष्ठान किया गया प लालबिहारी जी त्रिपाठी पुरोहित के ब्रह्मत्व मे सम्पूर्ण गायत्री यज्ञ व इसकी पूर्णाहुति तिथि 12 12 99 दिन रविवार को प्रात 8 बजे से 11 बजे तक डाली गई। आर्य समाज की नवनिर्मित भव्य यज्ञशाला (वदमन्दिर) मे भरे जनसमूह क बीच यह कार्य सम्पन्न हआ धर्म प्रेमी श्रद्धालु आर्य बन्धुओ माताओ बहनो वृद्धो बच्चो सभी ने इस पवित्र धर्म कृत्य यज्ञ मे दृढ निष्ठा भक्ति से बढ चढ कर हिस्सा लिया। उदारमना यजमानो ने पर्याप्त मात्रा मे घृत मामग्री आदि यज्ञ का सम्पूर्ण सामान तथा यज्ञ शष प्रसाद वितरण हेतु दसी घृत से बना हलुवा व ताजे कदला फनादि की विशेष व्यवस्था का जो सभी श्रद्धालुओ "रा दान मे आया ऋषि लगर हेतु पर्याप्त मात्रा मे आटा दाल व सब्जी अचारादि दान रूप मे श्रीमता विजय रानी कुमार की तरफ से भेट किया गया नकद राशि भी इस पावन कृ"य "तु प्रमुख यज्ञमानो व सदस्याओ ने स्त्री समाज को प्रदान का पूर्णाहुति वाले दिन बृहद् यज्ञोपरान्त मधुर स्वरा मे श्री सागर चन्द ठकराल जा व सदस्या श्रीमती विश्वरूपा चावला जा ने अपन अपन भजन प्रस्तुत किए श्रोतागण सुनकर झूम उठ यज्ञोपरान्त पुष्प वर्षा द्वारा सभा यजमानो को शुभाशीर्वाद दिया गया तत्पश्चात् प्रधान जा श्री आनन्द किशोर पसरीचा का अध्यक्षता मे महात्मा जा का श्रद्धाजलि भट करन वालो मे प्रमुख श्री द्वारका दास चावला जी ने जो महात्मा जा के अति निकट रहे है उनके जीवन पर विस्तृत प्रकाश डाला। अपने विचारो म चावला जी ने उन्हे एक सच्चे वेदानुयाया ऋषि भक्त व यज्ञ का भक्त बताया उनके सद्गुणे को उजागर कर श्रोताओ को प्रभावित किया और अपनी श्रद्धाजलि भेट की। चूकि महात्मा जी को आर्य समाज सुल्तानपुर लोधी से विशेष लगाव था और उनकी अपार कृपा यहा के यज्ञ प्रेमी यजमानों पर थी अपने जीवन काल में उन्होंने यहा पर कई बडे बड़े यज्ञ व सस्कार व पुत्रेष्टि यज्ञ भी करवाए जो पूर्ण सफल रहे। संस्कारो में यज्ञ से पूर्व महात्मा जी लोगों से बीडी सिगरेट शराब व मास अण्डे आदि व अन्य बुराईयो को छुडवाने का पूर्ण सकल्प करवाकर फिर यजमानो से यज्ञ करवाते थे इस कारण सच्चे वेदानुयायी ऋषि दयानन्द के परम भक्त मा आनन्द भिक्षु जी महाराज से सुल्तानपुर लोधी के आर्य परिवार बहुत ही प्रभावित रहे हैं। बडी धूम धाम से उनकी याद मे प्रति वर्ष उनकी पुण्यस्मृति (तिथि) पर श्रद्धाजलि रूप मे यह गायत्री यज्ञ यहा रचाया जाता है। महात्मा जी को श्रद्धाजलिया प्रदान करने उपरान्त प्रधान जी व सस्था के अन्य पदाधिकारियो की उपस्थिति मे यज्ञशाला वेदमन्दिर के निर्माण पर हुए खर्च का सम्पूर्ण विस्तृत ब्यौरा (लेखा जोखा) श्री द्वारका दास चावला अध्यक्ष बिल्डिग एकाउण्टस कमेटी न पढकर प्रस्तुत किया। विस्तृत ब्यौरा सुनकर सभी सदस्य व अन्य लोग प्रसन्न हुए। अन्त मे श्री चावला जी ने अपनी तरफ से व प्रधान जी का तरफ से इस यज्ञ मे सभी आगन्तुक आर्य माडल हाई स्कूल का सारा स्टाफ व शिक्षक वर्ग का धन्यवाद किया। पुरुष समाज की तरफ से श्री चावला जा ने स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती लता पसरीचा व मन्त्राणी श्रीमति शान्ति दवी चावला जी का तथा स्त्री समाज की अन्य सभी सदस्याआ व जिनके सत्प्रयास से यह सारा कार्य सम्पन्न हुआ उन सभी माताओ ब"नो का हार्दिक धन्यवाद कर बधाई दी और प्रभु का धन्यवाद देकर सबका उत्साह वर्धन किया। शान्ति पाठोपरान्त ऋषि लगर मे सभी ने प्रीति भोज किया खूब आनन्दित होकर यज्ञशष प्रसाद लेकर अपने अपने घरो को प्रस्थान किया। बडा ही रोचक व उत्साहवर्धक कार्यक्रम रहा। ईश्वर सभी को पूर्ण शक्ति व बल प्रदान करे ताकि समारोह पूर्वक ऐसे कार्य खूब होवे ताकि हम सब इसी जीवन मे धर्म अर्थ काम और मोक्ष प्राप्त कर सके। जो मानव जीवन का परम लक्ष्य है।

—लाल बिहारी त्रिपाठी पुरोहित

(पृष्ठ 5 का शेष)

इतिहास की गति दो प्रकार की है। वे दो प्रकार परिक्रया और पुराकल्प हैं। परक्रिया में एक नायक अथवा प्रधान व्यक्तित्व होता है तथा पुराकल्प में अनेक प्रधान व्यक्तित्व होते हैं।

प्राग्वृतकथन चैकराज कृत्यभिवादिव।

यस्मिन् स इतिहास स्यात् पुरावृत्त य एव हि॥

(शुक्रनीति सार 4 B 1102 1103।

प्राचीन कथन जिसमे एक राजा का कृत्य वर्णित है इतिहास ही है क्योंकि उसमे निश्चित प्राचीन वर्णन है।

पुराणम इतिवृत्तम् आख्यायिका उदाहरणम् धर्मशास्त्र अर्थशास्त्र चेति इतिहास।

(आचार्य विष्णुगुप्त कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र अ 5)

पुराण इतिवृत्त आख्यायिका उदाहरण धर्मशास्त्र अर्थशास्त्र मे छ इतिहास हैं।

अत्रापि उदाहरन्ति इद इतिहास पुरातनम्।

महाभारत शान्ति पर्व

यहा भी उदाहरण देते हैं इस पुरातन इतिहास का (इस उद्धरण मे इतिहास और पुरातन शब्द के साथ साथ उदाहरन्ति अर्थात् उदाहरणदेते हैं भी दृष्टव्यतथा विचारणीय है।)

धर्मार्थ काममोक्षाणामुपदेश समन्वितम्।

पुरावृत्त कथा मुक्तामेतिहास प्रचक्षते।

(विष्णु पुराण की श्रीधर स्वामी कृत टीका 1 14)

आर्षादि बहुधाख्यान देवर्षि चरिता श्रमम्।

इतिहासमिति प्रोक्त भविष्याद भुतधर्मयुक्त।

(आर्युक्त टीका3 14 110)

धर्म अर्थ काम और मोक्ष के उपदेश से समन्वित तथा प्राचीन कथा से युक्त इतिहास कहा जाता है। आर्ष देव और ऋषियो के चरित्र का आश्रय लिए हुए जो बहुत से आख्यान (वर्णन) हैं वह इतिहास है ऐसा कहा गया है कि वह भविष्य को अद्भुत धर्म से युक्त करने वाला है।

वार्तैविह्य पुरातनी। पुरातनी वार्ता इतिह इति निपात समुदाय।

उपदेशपारम्पर्ये वर्तते इतिह इत्येव ऐतिह्यम्।

(हेम चन्द्र वैत्त कृत अभिधानाचितामणि)

पुरानी वार्ता ऐतिह्य है। पुरानी वार्ता निश्चयपूर्वक इस प्रकार था ऐसा वर्णन करती है। उपदेश परम्परा से यह चली आती है अत यह ही इस प्रकार की निश्चित वार्ता मे होने स एतिह्य है।

एविह्य शब्देनेतिहासपुराण गृह्यते।

(भट्ट भास्कर 31वीं शती विक्रम)

एतिह्य शब्द से इतिहास पुराण ग्रहण होता है।

प्रिय पाठकगण जो व्यक्ति इतिहास की इन परिभाषाओ व्याख्याओ और लक्षणो स अपरिचित हैं वह भारतीय इतिहास विषय के प्रामाणिक विद्वान् नही कहला सकते तथा ऐसे व्यक्तियो द्वारा भारतीय इतिहास के विषय मे कुछ कहना कोई महत्व नहीं रखता। भारतीय जिसने इतिहास विषयक उपर्युक्त विवेचना का पढा हो। अलमति विस्तरेण बुद्धिमद्वर शिरोमणिषु किमधिक लेखने ?

बठिडा आर्य गर्ल्ज सी सै स्कूल को एक और सफलता

बठिण्डा में रेडक्रास की कैडेटस नर्सिंग डिवीजन की जिला स्तरीय प्रतियोगिता मे इस बार भी आर्य सी सै स्कूल बठिण्डा की टीम ने दूसरा स्थान प्राप्त किया तथा एक छात्रा ममता रानी दसवीं सी ने बैस्ट कैडेट का स्थान प्राप्त किया।

सिविल अस्पताल बठिडा के डाक्टरों ने होम नर्सिंग और फर्स्ट एड की Theory व Practical की परीक्षा ली। छात्राओ ने बठिडा जिला के डिप्टी कमिश्नर साहब के करकमलो से शील्ड व मोमैन्टोस प्राप्त करके अपने माता-पिता व स्कूल का नाम ऊचा उठाया।

जैसा कि आप पिछ"न समाचार मे भी पढ चुके है कि हमारे विद्यालय ने पढाई के अलावा Co-Curricular Activities मे काफी कार्यों मे भाग लेकर Remarkable स्थान प्राप्त किए जैसे कि State Level पर जिला मानसा में गीत प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान पाकर बच्चों ने गर्वनर साहब श्री वी के एन छिब्बर जी के हाथो से ईनाम प्राप्त किए।

इन सब छोटी बडी सफलताओ से प्रिंसीपल स्टाफ व बच्चो का मन मयूर खुशी से नाच उठ"ा है। —प्रि० शान्ति सिन्धुल

ब्रह्मदेश (बर्मा-म्यांमार) में वैदिक धर्म का प्रचार करने वाले स्व. डा. ओम् प्रकाश

डा. भवानी लाल भारतीय

भारत का पड़ौसी देश बर्मा (ब्रह्मदेश) अब तो अपना नाम बदल कर म्यामार के रूप में पहचाना जाने लगा है, किन्तु किसी समय यह हमारे देश का ही एक प्रान्त था। भारत और बर्मा का सम्पर्क बहुत पुराना है। आर्य समाज के अनेक प्रचारको ने ब्रह्मदेश जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। स्वामी श्रद्धानन्द, डा चिरजीव भारद्वाज, जैमिनी मेहता का ब्रह्मदेश भ्रमण तो पुराना हो गया, कुछ वर्ष पूर्व डा सत्यप्रकाश ने भी वहा जाकर आर्य समाज के सदेश का प्रचार किया था। इसी ब्रह्मदेश की राजधानी रगून (आज यह नगर यागो के नाम से जाना जाता है) डा ओम् प्रकाश की कर्मस्थली थी। उनका जन्म 7 अक्तूबर 1912 को माण्डले नगर के एक आर्य दम्पति श्री आत्माराम तथा श्रीमती द्रौपदी देवी के यहा हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा डी ए वी स्कूल माण्डले में हुई। रगून के सैंट गेब्रियल हाई स्कूल से आपने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् रंगून के मैडिकल कालेज से 1938 में एम बी बी एस की परीक्षा पास की। हिन्दी प्रेम ने उन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन की साहित्य रत्न परीक्षा में बैठने की प्रेरणा दी फलत: 1956 मे वे साहित्य रत्न बने।

डा ओम् प्रकाश जहां एक श्रेष्ठ चिकित्सक के रूप में प्रसिद्ध हुए वहां सार्वजनिक जीवन में आपने आर्य समाज तथा हिन्दी प्रचार को अपना मुख्य ध्येय बनाया। 1953 से 1983 तक की तीस वर्ष की अवधि में आपने वैदिक धर्म तथा हिन्दी के कार्य को तीव्र गति दी। आपके पुरुषार्थ तथा प्रेरणा से बर्मा भाषा मे सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद भिक्षु डा किन्तिमा ने किया जो 1959 मे रगून से प्रकाशित हुआ। हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए आप रंगून से एक द्विभाषी पत्र भी निकालते थे जिसमे बर्मा तथा हिन्दी मे लेख छपते थे। बर्मा मे रहते समय आपने आर्य सत्संग गुटका का सम्पादन किया जो उस देश मे बहुत लोकप्रिय हुआ। पं नरदेव वेदालकार की अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद आपने आर्य समाज आदर्श एवं उपलब्धियां शीर्षक से किया। बर्मा में रहते हुए आपने आर्य समाज के अतिरिक्त अन्य सेवाभावी संस्थाओं में क्रियात्मक भाग लिया। इनमें हिन्दी साहित्य सम्मेलन, टैगोर सोसाईटी, हिन्दू सैन्ट्रल बोर्ड, इण्डियन म्यूजिक तथा आर्ट सोसाईटी, रामकृष्ण मिशन, गांधी मैमोरियल ट्रस्ट आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। बर्मा मे राजनैतिक परिवर्तन हुए। उससे कुछ पहले ही डा साहब भारत आ गए और दिल्ली की पंचशील कालोनी मे स्थायी रूप से रहने लगे। जब मै पजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोधपीठ का अध्यक्ष था तो उन्होने अपने परिजनो के साथ मेरे निवास पर आकर भेट की। 15 सितम्बर 1998 को अमेरिका (केलीफोर्निया) मे उनका निधन हो गया।

दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना में यज्ञ

दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना में मासिक यज्ञ का आयोजन 27-11-99 शनिवार को प्रात: 9 बजे से 11 बजे तक स्कूल के आंगन में सम्पन्न हुआ। जिसे श्रीमती सरला लूम्बा एव माता सावित्री देवी जी ने बडी श्रद्धा से सम्पन्न कराया। बहुत से छात्र, छात्राएं यज्ञमान बने यज्ञ के पश्चात् कुमारी हरप्रीत ने पर्यावरण और उसकी सुरक्षा एवं कुमारी सुनीता ने "जब आवे सन्तोष धन तब धन," पर बहुत मधुरता से बोला, जिसे सब ने बहुत पसन्द किया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधान श्री अयोध्या प्रकाश जी मल्होत्रा, प्रबन्धक श्री आशानन्द जी आर्य तथा श्री ओम प्रकाश जी गुप्ता, श्री ओम प्रकाश जी पासी, श्री अरुण कुमार जी सूद ने छात्र-छात्राओं को आशीर्वाद दिया।

—सुनीता मलिक

(पृष्ठ 1 का शेष)

दयानन्द को जीवन यात्रा के मार्ग पथ-प्रदर्शन के लिए उन चिन्हों की खोज करो और जिस समय उन्नति का शिखर बडा ऊचा और भयावना प्रतीत हो उस समय इस ज्योतिस्तम्भ की ओर टिकटकी लगा कर ऊपर चढते जाओ। फिर देखो कितनी सरलता से मार्ग समाप्त हो जाता है। अन्त मे मैं इतना ही लिख कर समाप्त करता हू कि स्वामी श्रद्धानन्द भारत माता के उन गिने-चुने शहीद पुत्रों में से थे जिनका समस्त व्यक्तित्व, बलिदान, त्याग और समाज सेवा की ज्वाला से ओत-प्रोत था और जिन्होंने अन्तत: स्वाधीनता एवं समाजोद्धार रूपी यज्ञ मे अपनी पवित्र आहुति देकर भारतीय समाज के जीवन को एक नइ ज्योति एव प्रेरणा प्रदान की। स्वामी श्रद्धानन्द जी वस्तुत: एक भविष्य-दृष्टा-युग-प्रवर्तक थे और उनका जीवन न केवल आर्य समाज के लिए अपितु समस्त देश भक्त भारतीय जनता के लिए एक महान प्रेरणा स्रोत रहेगा। वह निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी, निस्वार्थ समाज सेवी भारतीय सस्कृति के पुनरुत्थान के लिए सक्रिय पग उठाने वाले कर्मवीर सन्यासी थे। ऐसे सन्यासी महात्मा के उपदेशों तथा आदर्शों को बृहदरूप में प्रसार व प्रसारण करने की नितान्त आवश्यकता है जिससे समाज को प्रेरणा प्राप्त होगी। मुझे पूर्ण आशा है कि आर्यजन स्वामी जी का बलिदान दिवस मनाते समय उनके आदर्श और त्यागपूर्ण जीवन से कुछ न कुछ अवश्य शिक्षा प्राप्त करके अपने जीवन में धारण करेंगे। यह स्वामी जी के बलिदान दिवस पर उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आर्य समाज वेद मन्दिर, भार्गव नगर, जालन्धर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर, जालन्धर की साधारण सभा की बैठक 4 दिसम्बर 1999 को,श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें नए पदाधिकारियों का चुनाव किया गया। जो निम्न प्रकार है ।

संरक्षक :–बाबू सरदारी लाल जी आर्य रत्न।

प्रतिष्ठित सदस्य :– मा० पूर्ण चन्द जी, बाबू काशी राम जी, श्री लाल चन्द जी।

प्रधान :–श्री कमल किशोर जी।

वरिष्ठ उपप्रधान :–पं मनोहर लाल जी,

उप प्रधान :– श्री राम चन्द जी रत्न, श्री कर्म चन्द जी, श्री मंगलदास जी, श्री चमन लाल जी, श्रीमती वीराँ देवी।

मन्त्री:–श्री राज कुमार जी।

सहायक मन्त्री:–श्री लाभ चन्द जी।

उपमन्त्री :–पं सन्त राम जी, श्री विशम्भर लाल जी, श्रीमती सुभाष रानी।

कोषाध्यक्ष :–श्री सुदेश कुमार रत्न।

उप कोषाध्यक्ष:–श्रीमती कान्ता देवी।

प्रचार मन्त्री :–श्री सोमनाथ जी, श्री ओशक कुमार जी, श्रीमती सत्या देवी जी।

पुस्तकाध्यक्ष :–श्री जगदीश भगत जी।

लेखा निरीक्षक :–श्री राज कुमार जी रत्न ।

गंगा राम मिडल स्कूल प्रबन्धक :–पं मनोहर लाल जी।

सिलाई स्कूल प्रबन्धक :–श्रीमती सत्या देवी।

स्टोर कीपर :–श्रीमती प्रकाश देवी।

ऋषि लंगर कमेटी :–श्री अमीचन्द जी, श्री हन्सराज जी, श्री हरबन्स लाल जी।

(अन्तरंग सदस्य)

1. श्री प्रीतम दास जी, 2 श्री हन्स राज जी (पित्तल वाले) 3 श्री तारा चन्द जी गोत्रा, 4 श्री च ण दास जी, 5 श्री प सरदारी लाल जी, 6 श्री ओम प्रकाश जी, 7 श्री पं वेद प्रकाश जी, 8 श्री ज्ञान चन्द जी, 9. श्रीमती शीला देवी, 10 श्रीमती वीरां देवी, 11. श्रीमती पमुना देवी, 12 श्रीमती दर्शना देवी, 13 श्री रवि प्रकाश गोत्रा, 14 श्री पं दीवान चन्द जी, 15 श्री सुरेन्द्र कुमार।

आर्य युवक परिषद

प्रधान .– श्री सोमनाथ जी।

मन्त्री :– श्री रजन कुमार जी।

कोषाध्यक्ष :– श्री सुशील कुमार जी।

—कमल किशोर प्रधान

जय-जय श्रद्धानन्द महान

श्री [illegible] 'आर्य' [illegible], मुजफ्फरपुर(उ. प्र.)

जिसने किया समर्पित जीवन,
धर्म तथा राष्ट्र के हित में।
किया परिश्रम अथक सर्वथा,
जिसने जीवन भर पराक्रम"।
अपराजेय उसी स्वामी ने,
दिया धर्म के हित बलिदान।
जय जय 'श्रद्धानन्द' महान॥

जीवन जिसका बदल गया था,
सुनकर 'दयानन्द' उपदेश।
अपने सत्कर्मों से जिसने,
दिया धरा को नव संदेश।
स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर,
दिया वक्ष का अपना त्राण।
जय-जय 'श्रद्धानन्द' महान॥

छूआछूत के भी विरोध मे,
तुमने किया सतत् संघर्ष।
दलितों को भी गले लगाया
सम का भाव किया उत्कर्ष।
प्रेम तथा कर्तव्य भावना,
का जन हित में तना वितान।
जय-जय 'श्रद्धानन्द' महान॥

ऋषि की शिक्षा पद्धति तुमने,
गुरुकुल में की स्थापित।
संजोए थे अन्तर्मन में,
धर्म तथा राष्ट्र का हित।
स्वातंत्र्य युद्ध के प्रांगण मे तुम,
ले आए थे नया विहान।
जय-जय 'श्रद्धानन्द' महान॥

दिव्य तुम्हारे शुचि जीवन से,
हम भी यदि हों अब प्रेरित।
त्याग-तपों के, बलिदानों के,
भाव करें हमको उद्वेलित।
निश्चित हम इतिहास बदल दें,
गूंजे वेदों का जयगान,
जय जय 'श्रद्धानन्द' महान॥

[illegible] 2000

सभी आर्यजनो को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सत्यार्थ सदेश को भूमण्डल मे प्रसारित करने के उद्देश्य को लेकर,श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्वावधान में प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली निबध प्रतियोगिता इस वर्ष भी आयोजित की जा रही है। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतियोगियों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ रही है। पिछले वर्षों में कुछ स्वाध्यायशील आर्यजनों का कहना था कि वे सूचित ही नहीं हो पाए, अतएवं इस बार सूचना काफी पहले प्रकाशित की जा रही है, कृप्या अधिकाधिक सख्या में भाग लें।

विषय :–"आश्रम व्यवस्था में ही समाज का समग्र सुख निहित है"

(सत्यार्थ प्रकाश पंचम समुल्लास के आधार पर)

पुरस्कार :–प्रथम 3100 रुपए, द्वितीय 2100 रुपए, तृतीय 1500 रुपए एवं पांच सान्त्वना पुरस्कार प्रत्येक 100 रुपए (लेखिका वर्ग में दो विशिष्ट सान्त्वना पुरस्कार)

–: प्रतियोगिता के नियम :–

1. प्रतियोगिता में किसी भी आयु वर्ग के स्त्री पुरुष भाग ले सकते हैं।

2 निबंध फुलस्केप कागज के लगभग 15 पृष्ठों में हो। कागज के एक ही तरफ सफाई से टंकित या हस्तलिखित हो। निबंध आसानी से निर्णायकों द्वारा पढ़ा जा सके। इस हेतु टंकित हो तो अच्छा है। हस्तलिखित भी स्वीकार्य।

3. निबन्ध की भाषा आर्य भाषा (हिन्दी) व लिपि देवनागरी होगी। अन्य भाषाओं के उदाहरण दिए जा सकेंगे।

4. निबन्ध लेखक/लेखिका अपना नाम, पता आदि अलग से एक कागज पर निबंध के साथ भेजेंगे। निबंध वाले पृष्ठों में कहीं भी अपना नाम/पहचान चिन्ह हस्ताक्षर आदि नहीं होने चाहिएं।

5 सत्यार्थ प्रकाश न्यास को निबंध प्राप्त होने की अंतिम तिथि 10 जनवरी 2000 होगी। तत्पश्चात् प्राप्त निबंध प्रतियोगिता मे शामिल नहीं किए जाएंगे।

6. पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता को इसकी सूचना दी जाएगी। पुरस्कार वितरण 26 से 28 फरवरी 2000 में उदयपुर में आयोजित सत्यार्थ प्रकाश समारोह के अवसर पर होगा।

7. पुरस्कार के संबंध में परीक्षकों का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा।

8. प्राप्त सभी निबंधों के प्रकाशनादि के संबंध में सर्वाधिकार सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर को होगा।

9. उपरोक्त नियमों की पूर्ण अनुपालना न होने की स्थिति में निबंध अस्वीकृत किए जा सकेंगे।

—स्वामी तत्वबोध सरस्वती अध्यक्ष

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामन्त्री सम्पादक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस/ऐलिमेंट प्रिंटर्स जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ ।

मकर 1972949099

2277 श्री पुस्तकालय की गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)

रजि न PB/JL/55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

दूरभाष ☎ 292926

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 50 अंक 40 18 पौष सम्वत् 2056 तदनुसार 30 दिसम्बर 1999/2 जनवरी 2000 दयानन्दाब्द 175 वार्षिक शुल्क 50 रुपये आजीवन 500 रुपये

वैदिक ज्ञान परिचय अनमोल रत्न निधि

आर्यों व आर्य सन्तानो के लिए महत्वपूर्ण प्राथमिक ज्ञान

परमात्मा का निज नाम–ओ३म्
आर्य–श्रेष्ठ (उत्तम गुणयुक्त)

महामन्त्र–गायत्री मन्त्र–ओ३म् भूर्भुव स्व । तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न प्रचोदयात्।

वेद संहिताए चार है –वेद ज्ञान चार ऋषियो को मिला –

1 ऋग्वेद (ज्ञानकाण्ड) ऋषि अग्नि मन्त्रसख्या 10552/80

2 यजुर्वेद (कर्म काण्ड) ऋषि वायु मन्त्र सख्या–1975

3 सामवेद (उपासना काण्ड) ऋषि आदित्य मन्त्र सख्या 1875

4 अथर्वेद (विज्ञान काण्ड) ऋषि अङ्गिरा मन्त्र सख्या 5977

उपवेद–ऋ०–आयुर्वेद (शरीर की रक्षा एवम् चिकित्सा)।

यजु० धनुर्वेद (धनुर्विद्या की जानकारी)।

साम० गन्धर्ववेद (सगीत विद्या का वर्णन)

अथर्व० अर्थ वेद (ज्ञान विज्ञान शिल्प विद्या)।

वेदाङ्ग–वेदों को पढने के लिए ऋषि मुनियो ने 6 वेदाङ्गो की रचना की।

1 शिक्षा–स्वर व्यञ्जन इनके भेद तथा शुद्ध उच्चारण विधि

2 व्याकरण–शब्द रचना प्रकृति और प्रत्यय का विस्तृत विवेचन।

3 निरुक्त–वैदिक शब्दो के अनेक अर्थो का ज्ञान।

4 छन्द –वेद मन्त्रो के अर्थो को जानने की सुविधा।

5 ज्योतिष–ग्रह उपग्रह सौरमण्डल खगोल भूगर्भ विद्या।

6 कल्प–याज्ञिक कर्म काण्ड का वर्णन।

उपाङ्ग–इन्हे दर्शन अथवा शास्त्र या दर्शन शास्त्र कहते हैं–

1 साख्य 2 योग 3 न्याय 4 वैशेषिक 5 मीमासा 6 वेदान्त

उपनिषद–उप (निकट) + नि (निश्चित) + सद् (नाश करना गति प्राप्ति शिथिल करना)। इनके अध्ययन से अन्धविश्वास मिथ्या धारणाये दूर होती हैं।

मुख्य प्रामाणिक उपनिषद ग्यारह हैं –1 ईश 2 केन 3 कठ 4 प्रश्न 5 मुण्डक 6 माण्डूक्य 7 ऐतरेय 8 तैत्तिरीय 9 छान्दोग्य 10 बृहदारण्यक 11 श्वेताश्वतरोपनिषद।

ब्राह्मण ग्रन्थ–प्रमुख ब्राह्मण ग्रन्थ चार हैं।

1 ऐतरेय 3 शतपथ 3 साम 4 गोपथ। वेदो को समझने के लिए ब्राह्मण ग्रन्थो की रचना की गई।

अष्टाङ्गयोग–योगके आठ अङ्ग हैं

1 यम–सत्य अहिसा अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह।

2 नियम–शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधान।

3 आसन 4 प्राणायाम 5 प्रत्याहार 6 धारणा 7 ध्यान 8 समाधि।

त्रैतवाद–1 ईश्वर 2 जीव 3 प्रकृति।

आश्रम व्यवस्था–जीवन मे 4 आश्रमो का वर्गीकरण –1 ब्रह्मचर्य 2 गृहस्थ 3 वानप्रस्थ 4 सन्यास।

वर्ण व्यवस्था–कार्यो के आधार पर 4 वर्णों का वर्गीकरण

1 ब्राह्मण–पढना पढाना 2 क्षत्रिय–रक्षा करना।3 वैश्य–व्यापार सचालन 4 शूद्र–सेवा करना।

नोट–वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत महिलाओ सहित सभी वर्णों के लोगो को वेद पढने का अधिकार है।

आर्य समाज के प्रवर्तक युग द्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती

जन्म 12 02 1824 जन्मस्थान गुजरात मौरवी प्रान्त टकारा ग्राम

माता का नाम–श्रीमती यशोदा (अमृतबेन अमूबा)

पिता का नाम–श्री करसन जी तिवारी।

गुरु का नाम–दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द (प्रज्ञा चक्षु)

आर्य समाज की स्थापना 7 4 1875 निर्वाण तिथि 30 10 1883।

अमर कृतिया–ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका वेद भाष्य सत्यार्थ प्रकाश सस्कार विधि आर्याभिविनय आर्योद्देश्य रत्न माला आर्य समाज स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश गोकरुणानिधि आदि आर्य ग्रन्थो की रचना प्राणीमात्र के कल्याणार्थ की।

सस्कार विधि–जीवन की शुद्धता हेतु 16 संस्कार – 1 गर्भाधान 2 पुसवन 3 सीमन्तोन्नयन 4 जात कर्म 5 नामकरण 6 निष्क्रमण 7 अन्नप्राशन 8 चूडाकर्म 9 कर्णवेध 10 उपनयन 11 वेदारम्भ 12 समावर्तन 13 विवाह 14 वानप्रस्थ 15 सन्यास 16 अन्त्येष्टि।

सत्यार्थ प्रकाश मे 14 सम्मुलास है –1 ईश्वर एक नाम अनेक 2 बाल शिक्षा 3 अध्ययन अध्यापन विधि 4 विवाह और गृहाश्रम का व्यवहार 5 वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम की विधि 6 राज प्रजा धर्म 7 ईश्वर और वेद विषय 8 जगत की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय 9 विद्या अविद्या बन्ध और मोक्ष का व्याख्या 10 आचार अनाचार भक्ष्य और अभक्ष्य विषय 11 आर्यावर्तीय मत मतान्तर का खण्डन मण्डन विषय 12 चार्वाक बौद्ध और जैन मत समीक्षा 13 ईसाई मत विवेचन 14 इस्लाम मत का विषय।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

सभा प्रधान श्री हरबस लाल जी शर्मा का आदेश

मैं पिछले कुछ समय से अस्वस्थ चला आ रहा हू इसलिए मै आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान के कर्त्तव्यो का सही तौर पर पालन नहीं कर पा रहा। अत मैं सभा के सविधान की धारा 24 मे वर्णित सख्या 7 के द्वारा प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करते हुए डा के क पसरीचा सभा वरिष्ठ उप प्रधान को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का कार्यकर्ता प्रधान नियुक्त करता हू और सभा के प्रधान क रूप म मुझ जो अधिकार प्राप्त हैं वह सब अधिकार भी मैं उन्हे देता हू। इसके साथ ही आर्य विद्या परिषद पजाब मे व आर्य विद्या सभा म मुझ जो अधिकार प्राप्त हैं वह भी मैं उन्हे देता हू। उनकी देख रख मे अब सभा का सारा कार्य चलेगा मैं केवल सभा की बैठको मे अध्यक्षता करूगा जिस भी बैठक मे मैं उपस्थित हूगा। मेरी अनुपस्थिति मे सभा की बैठको की भी वह अध्यक्षता करेगे। मैंने यह सब इसलिए किया है ताकि सभा का कार्य सुचारू रूप से चलता रहे।

मेरा यह आदेश तुरन्त लागू समझा जाए और यह आदेश आगामी चुनाव तक लागू रहेगा। ... कोई परिवर्तन नहीं होगा और न ही यह आदेश नि...

–हरबस लाल शर्मा
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर

सेवा में
1 श्री डा के क पसरीचा वरिष्ठ उप प्रधान
2 श्री अश्विनी कुमार जी ... सभा महामन्त्री

प्रेरक बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द

ले. डॉ० महेश जी विद्यालंकार दिल्ली

स्वामी श्रद्धानन्द महर्षि दयानन्द के सच्चे अर्थ मे उत्तराधिकारी और शिष्य थे उन्होने ऋषि के चिन्तन मनन मन्तव्यो आदर्शों उद्देश्यो आदि को व्यावहारिक रूप देने मे सम्पूर्ण जीवन आहुत कर दिया। ऋषि के कार्यों को उन्होने आगे बढाया। अपने गुरु को स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने आचरण कार्यों तथा बलिदान से जो श्रद्धाजलि दी है वह युगो तक इतिहास मे पठनाय वन्दनीय और स्मरणीय रहेगी ऐसा महापुरुष निश्चय ही अपने मे विलक्षण तपस्वी त्यागी कमर्ठ श्रद्धावान और सकल्पी रहा होगा जो कहा से उठा और कहा पहुचा महापुरुष और महानग्रन्थ ससार की अमूल्य धरोहर होते हैं नो मानवता का असत्य से सत्य अधम से धर्म पाप से पुण्य तथा मृत्यु से जीवन की ओर प्रेरित करते हैं स्वामी श्रद्धानन्द का व्यक्तित्व एव कृतित्व ऐसा ही था। वे सदा भूले भटके दुर्गुण दुर्व्यसन म फसे लोगो के लिए प्रेरक प्रकाश स्तम्भ बने रहेगे।

महापुरुषो के जीवन कर्म कार्य सन्देश शिक्षाए आदि प्रत्येक काल परिस्थिति तथा परिवर्तन मे प्रासागिक उपयोगी एव सार्थक होते हैं। स्वामा श्रद्धानन्द का जीवन कार्य विचार तप त्याग सेवा बलिदान आदि आज के आर्य समान ओर उनके अधिकारियो व अनुयायियो को बहुत कुछ सीखने करन सभलने और आग बढने का प्रेरणा ओर चेतना दे सकता ह यह तभी हा सकता है जब ण्म ईमानदारी तथा सच्चाई से साखना सुधरना आगे बढना चाहते है नहा तो पर्व उत्सव जन्म दिन बलिदान दिवस आदि आत है। रस्म पूरी करक जलसे लगर माला फोटो तथा एक दूसरे की प्रशसा ने पूर हा नात है जा इन कार्यक्रमा का मूल चतना प्रयोजन उद्दश्य आदि होत है ग्स तक कोई बिरला ही सोच पाता है जिन्होने सोचा समझा पकडा और जीवन को सुधार लिया उनके जीवन कुन्दन बनकर चमके वे इतिहास पुरुष बन गए। मूलशकर शिवरात्रि का रात जागकर स्वामा दयानन्द बन गए उनके जीवन मे एक शिवरात्रि न कायाकल्प कर दिया। हमारे जीवनो मे कितना शिवरात्रिया आई और चली गई ? हम वहीं खडे ? पत्थर पूजा मे सिर रगडे जा रहे हैं ? अमीचन्द को ऋषि के एक वाक्य ने हीरा बना दिया था। मुशीराम को एक प्रवचन ने श्रद्धानन्द की पदवी पर पहुचा दिया। नास्तिक गुरुदत्त को ऋषि की अन्तिम मृत्यु की मुस्कान ने आस्तिक बनाकर आर्य समाज का दीवाना कर दिया। उदाहरणो से इतिहास भरा पडा है।

अग्रेजी शिक्षा दीक्षा रहन सहन भोग विलास पूर्ण वातावरण के रमण मुशीराम के जीवन मे नास्तिकता दुर्गुण दुर्व्यसन आदि आ गए थे। जिसके कारण उनका जीवन अन्धकारमय होता जा रहा था। ऋषि दयानन्द के चुम्बकीय व्यक्तित्व से निकलने वाली ज्ञान गगा ने मुशीराम के जीवन को बदल दिया। दोषो भरे जीवन का पटाक्षेप हो गया। पूर्व गुप्त सस्कार जाग उठे। जीवन मे परिवर्तन और ऊपर उठने का दौर चल पडा। जीवन मे नई क्रान्ति जागी। ऋषि के दर्शन विचार पाण्डित्य सत्यार्थ प्रकाश और धर्म पत्नी शिवदेवी के सेवा प्रेरणा तथा सद्भावना से उन्हे यह पवित्र धार्मिक जीवन जीने की प्रेरणा मिली। भोग विलास मदिरा देश धर्म जाति गुरुकुल शिक्षा नारी शिक्षा एव शुद्धि यज्ञ का ब्रह्म बनकर इतिहास प्रसिद्ध उल्लेखनीय स्मरणीय तथा वन्दनीय कार्य कर गए।

यदि हम स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से सीखना चाहे शिक्षा प्रेरणा आदर्श और भावना लेना चाहे। तो उनका जीवन कदम कदम पर हमे बहुत कुछ सीखा समझा एव ऊचा उठा सकता है। तो हम क्यो नहीं ऊपर उठ सकते हैं। हम भी सभल व सुधर सकते हैं। पाप अधर्म एव बुराईयो को छोडकर महान व प्रभु भक्त बन सकते हैं। अपना कायाकल्प कर सकते हैं। यह तभी होगा जब हम अन्दर से जागेगे ? हृदय मे ज्ञान ज्योति जागेगी। अपने पाप दोषो को दखेगे। देखकर सोचेगे व स्वीकार करेगे कि मेरे अन्दर दोष है उन्हे मैंने दूर करना है। दूर करने के लिए दर्द बेचैनी घृणा आदि मन मे लानी होगी। तप व त्याग करना होगा। तपस्या की भट्टा मे तपना होगा। तब कहीं जाकर दुर्गुण दुर्व्यसन पीछा छोडेंगे। विचित्र बात है कि आज कोई अपने दोषो तथा बुराईयो को देखकर स्वीकार कर उन्हें सुधार करने को राजी नहीं है ? अपने को निर्दोष तथा दूसरे को दोषी देखने की प्रवृत्ति मनुष्य को पतन की ओर ले जा रही है। स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना तन मन धन तीनों राष्ट्रहित में आहुत कर दिए। प्रतिदान में कुछ नहीं चाहा। घने घोर जगल में विपरीत परिस्थितियों और साधन-सुविधाओ के अभाव में गुरुकुल कागडी की स्थापना करना। उसे चलाना आगे बढाना और विश्व प्रसिद्धि दिलाना स्वामी श्रद्धानन्द की अमरता के लिए एक ही प्रमाण पर्याप्त है। उन्होने वैदिक शिक्षा पद्धति का पुनरुद्धार किया। अग्रेजो की शिक्षा पद्धति का विकल्प गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही हो सकती है। यह उन्होने सिद्ध करके दिखा दिया। गुरुकुल कागडी स्वामी श्रद्धानन्द के तप त्याग सेवा का फल है। यह सस्था स्वामी जी का जीवन्त स्मारक है। आर्य समाज का मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय केवल एक यही है। यदि हम स्वामी श्रद्धानन्द को जीवित स्मरणीय तथा अनुकरणीय रखना चाहते हैं तो गुरुकुल कागडी मे स्वामी श्रद्धानन्द के स्वप्नो विचारो और आदर्शों को जीवित व क्रियान्वित रखना होगा। जिस दिशा और दशा में आज गुरुकुल जा रहा है। यदि यही दौर चलता रहा तो वहा स्वामी श्रद्धानन्द का नाम लेने वाला कोई न मिलेगा। हम सबको स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से प्रेरणा और शिक्षा लेनी चाहिए कि उन्होने अपना सर्वस्व सस्था के लिए नि स्वार्थ भाव से त्याग दिया था। पदलोलुपता स्वार्थ लाभ एव लोभ की प्रवृत्ति को छोडे। तभी सस्था का हित होगा।

कोई भी सस्था सगठन समाज और राष्ट्र व्यक्तियो के तप त्याग सेवा बलिदान आदि से चलते हैं। व्यक्तियो के जीवन और कार्यों से आने वाली पीढिया शिक्षा व प्रेरणा लेती है। स्वामी श्रद्धानन्द के कार्य सदा प्रेरणा व शक्ति देते रहेंगे। रौलट एक्ट के विरोध में चादनी चौक मे विशाल जलूस मे सैनिको के सामने सीना खोलकर खडे हो जाना। पहले मेरे ऊपर गोली चलाओ फिर जलूस पर चलाना। यह उनके साहस वीरता एव निर्भीकता का परिचायक है। उनका यह कार्य इतिहास में अमर रहेगा। स्वामी जी पहले व्यक्ति थे जिन्होने जामा मस्जिद से वेदमन्त्र बोलकर हिन्दू-मुसलमानो को एकता और भाईचारे का सन्देश दिया था। उन्होने दोनों [illegible] हम सब एक परमात्मा की सन्तान हैं। हमें आपस में मिल जुलकर रहना चाहिए। स्वामी जी पहले और अन्तिम व्यक्ति थे। जिन्हे जामा मस्जिद से प्रवचन करने का अवसर मिला था जिन्होने वेद और मानवता के सन्देश को सुनाया था।

स्वामी जी ने दलितो पतितो और अछूतों के लिए स्मरणीय कार्य किया है। वे सब मानव समान हैं। हम भावना के पुजारी थे। जो पिछड गए हैं। जो लोभ स्वार्थ अज्ञानता आदि के कारण विधर्मी बन गए हैं। जो हमार पूर्वजो की सन्तान थे। उन्हे पुन शुद्धि के द्वारा अपने धर्म मे वापिस लाना। उनका महत्त्वपूर्ण व उल्लेखनीय कार्य रहा है। इसी कार्य के कारण उनके महात्मा गाधी से मतभेद हुए। इसी शुद्धि के कारण उन्हे अपने प्राणो का आहुति देनी पडी। उनके बलिदान से हिन्दू जाति के सगठन को शक्ति मिली। उनका बलिदान भारतीय करण और राष्ट्रीय करण का सूचक है। उनके सभी कार्य और सेवाए राष्ट्र की धरोहर हैं। आज का जीवन और जगत स्वामी श्रद्धानन्द से बहुत कुछ शिक्षा प्रेरणा तथा उपदेश ले सकता है। प्रत्येक क्षेत्र म हम उनसे तप त्याग और सेवा की भावना का सीख ले सकते हैं महापुरुषो के जन्म मरण बलिदान सदा हमे जगाने सभालने सुधारने और ऊपर उठने की प्रेरणा देने आते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जैसा चरित्र इतिहास में कहीं न मिलेगा आज चारों ओर मानव के समक्ष तरह तरह की समस्याये उलझन विवाद सकट आदि खडे हैं। मनुष्य मनुष्यत्व से हट व कट रहा है घोर नास्तिकता फैलती जा रही है भोगविलास श्रृगार व वासना के अम्बार लग रहे हैं। मानव भोगवाद मे फिसता जा रहा है। जीवन में धार्मिक व आध्यात्मिक पक्ष छूट रहा है। ससार विनाश की ओर बढ रहा है। ऐसे अशान्त सघर्ष रोग भरे जीवन जगत को स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन और कार्यों की प्ररणा सजीवनी शक्ति का कार्य कर सकती है। यदि हम सच्चे अर्थ में मानव जीवन को सार्थक व सफल बनाना चाहते हैं और देश धर्म जाति की ओर मानवता आदि की सेवा करना चाहते हैं तो स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से प्रेरणा भावना एव आदर्श प्राप्त करे। यही उनका सच्चा बलिदान दिवस मनाना तभी यह उन्हें सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगा

सम्पादकीय...

हमारे जीवन का एक वर्ष अतिवर्ष व्यतीत होता चला जा रहा है। सन् 1999 जा रहा है और सन् 2000 आरम्भ हो रहा है। वैसे तो प्रत्येक वर्ष का बहुत महत्व है सन् 1999 का भी अपना महत्व था और अब सन् 2000 का भी अवश्य एक विशेष महत्व होगा परन्तु इस वर्ष में गत कई वर्षों से कुछ और अधिक विशेषताए होंगी। वैज्ञानिक दृष्टि से प्रत्येक वर्ष कुछ नए नए आविष्कार लेकर हमारे सामने आ रहा है। धीरे धीरे सारे ससार का एक दम ही कम्प्यूटरीकरण हो गया है। कुछ वर्ष पहले कोई जानता भी नहीं था कि कम्प्यूटर क्या चीज होती है परन्तु अब सारे ससार में बिना कम्प्यूटर की सहायता के इन्सान का कोई कार्य नहीं हो रहा। आगामी वर्षों मे और क्या कुछ होगा यह कुछ कहा नहीं जा सकता। प्रत्येक वर्ष वैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होता जा रहा है। इसी प्रकार हथियारो के भी नए नए आविष्कार हो रहे हैं। नए नए हथियार बन रहे हैं जिससे स्वय इन्हे बनाने वाले इन्सान का जीवन खतरे मे पडता जा रहा है।

पहले कोई यह भी नहीं जानता था कि चित्र भी चल सकते हैं। पहले मूक चल चित्र बना उस पर लोगों को अचम्भा सा हुआ था कि चित्र कैसे चल रहे हैं होठ कैसे हिल रहे हैं इन्सान दौडता भागता काम करता हुआ चित्रों में दिखाई दे रहा है। परन्तु शीघ्र ही चलचित्र के साथ आवाज भी आ गई सिनेमाघर बन गए फिल्मे बन गईं परन्तु वहा तक ही बस नही हुआ छोटे पर्दे पर भी चल चित्र आ गया। टेलीविजन बन गया पहले ब्लैक एण्ड व्हाईट फिर रगीन और अब घर घर मे टैलीविजन पहुच गया देश विदेश की सभी बातें समाचार आहार व्यवहार सस्कृतिया सभी कुछ देखी जा सकती हैं। आज टेलीविजन के विदेशी चैनलो पर कई देशो के लोग भरत के लोगो को और बच्चो को अपनी सस्कृति घोल घोल कर टेलीविजन के माध्यम से पिला रहे हैं और यह देखकर भारतीय माता पिता दु खी हो रहे हैं कि यह क्या हो रहा है। टेलीविजन आया तार द्वारा टेलीफोन को जोडा गया। इन्सान एक दूसरे की बात बहुत दूर बैठे सुनने लगा। परन्तु सुनने का साधन बहुत दूर तक तार ही रही परन्तु अब विज्ञान और आगे बढ गया है बिना खम्बा लगाए बिना तार लगाए मोबाईल फोन पर एक दूसरे की आवाज लोग सुनने लगे। किसी भी समय कहीं भी बैठकर कोई भी किसी से भी बातचीत कर सकता है। अब तो यहा तक हो गया है कि घर से बाहर गए व्यक्ति से सडक मे चलते चलते भी आप बात कर सकते हैं। मैंने कई बार देखा है कई लोग स्कूटर पर सफर करते हुए मोबाईल फोन निकाल कर कान से लगा लेते हैं और बाते करने लग जाते हैं। कार मे तो अक्सर ऐसा हो रहा है कि कार मे बैठे बैठे लोग स्वय भी फोन करते हैं जहा वह बात करना चाहे वह कार के सफर मे भी बात कर सकते हैं। कई बार इसका एक दुष्परिणाम भी सामने आया है कि कार चलाने वाले ने ज्यो ही मोबाईल टेलीफोन कान से लगाया तो उसका ध्यान सामने से हट गया और एक दुर्घटना का शिकार हो गया। मोबाईल फोन लाभकारी भी हुआ परन्तु इसके साथ ही दु खकारी भी बनता जा रहा है।

शीघ्र ही 2000 से बाद अर्थात् इस वर्ष मे 31 दिसम्बर सन् 2000 की समाप्ति पर प्रथम जनवरी सन् 2001 से एक नई शताब्दी आरम्भ हो जाएगी। पिछले एक सौ वर्षों मे जैसे ससार बहुत आगे बढा है। इसी प्रकार इस शताब्दी मे और अधिक आगे बढेगा। हमें लगता है कि उसका रूप कुछ और ही होगा। मानव समस्याए आगामी शताब्दी मे और अधिक बढती हैं या घटती हैं यह तो समय ही बताएगा परन्तु यह सच्चाई है कि इस शताब्दी में ससार का स्वरूप कुछ और ही होगा। हो सकता है इस शताब्दी मे विज्ञान अपनी चरम सीमा को प्राप्त कर ले। प्रकृति का सिद्धान्त है कि जो चीज बढती है एक दिन उसकी बढौतरी एक सीमा पर जाकर रुक जाती है और वहा से समाप्ति की ओर चल पडती है। विज्ञान बढ रहा है इन्सान के भोग विलास बढ रहे हैं पाप अत्याचार बढ रहे हैं रोग बढ रहे हैं चिकित्सा साधन बढ रहे है इन्सान की इच्छाए अभिलाषाए बढ रही हैं। अराजकता बढ रही हे आतकवाद बढ रहा है। ऐसा लगता है कि प्रत्येक चीज बढ रही हे आखिर कही तो इसकी सीमा होगी। कही तो जाकर यह चीजे रुकेगी

आज इन्सान बहुत आगे बढ रहा है वह प्रकृति पर भी हावी हो[ता] जा रहा है। चाद तारो पर पहुच रहा है। परमात्मा के बनाए नियमो का भी तोडने पर उतारु है। ऐसा लगता है कि शायद एक दिन इन्सान अपन[े] जैसा इन्सान भी कृत्रिम रूप मे बनाने मे सफल हो जाए ऐसे अविष्कार आज होने आरम्भ भी हो गए हैं। कई असम्भव बाते आज सम्भव होती जा रही हैं आगे चलकर और क्या कुछ हो सकता है कुछ कहा नही जा सकता परन्तु यह सच्चाई है यह जो कुछ भी हो रहा है यह सब मानव को विनाश की ओर ले जा रहा है। वह सादा जीवन वह सादा आहार व्यवहार खान पान रहन सहन सब समाप्त हो रहा है। इसके स्थान पर सब कृत्रिम होता जा रहा है इन्सान का खान पान रहन सहन आहार व्यवहार सब कृत्रिम हो गया है इन्सान मे से देवत्व समाप्त हो रहा ह राक्षसपन बडी शीघ्रता से बढता जा रहा है। इन्सान मे से इन्सानियत भी गायब होती जा रही है हैवानियत बढ रही ह।

मानव जीवन की अब कोई कीमत दिखाई नही पडती कुछ थो[डे] से पैसे का लोभ लालच देकर किसी का भी जीवन समाप्त किया [जा] सकता है । अभी अभी एक मानव बम्ब द्वारा श्रीलका मे क्या कु[छ] करवाया गया और अभी अभी भारतीय वायुयान को हाईजैक करके कैसे सैंकडो लोगो की जाने सकट मे डाली गई और हत्याए की गई ऐसे घिनोने कार्य निरन्तर बढ रहे है। इन्सान की सोच बदलती जा रह[ी] है। वह अकेलेपन तक सीमित होता जा रहा है। अपने स्वार्थ क लिए वह घिनौने से घिनौना कार्य करने के लिए तैयार है आखिर कही तो इस सब की समाप्ति होगी प्रत्येक कार्य अपनी सीमा को पार करक ही समाप्त होता है। इसी प्रकार प्रत्येक पाप भी अपनी सीमा का पार करके ही समाप्त होता है। इतिहास इस बात का गवाह हे महाभारत रामायण और दूसरे इतिहास के ग्रन्थ इसके साक्षी हे । हमारे धर्म ग्रन्थो म इसका विस्तार से वर्णन मिलता है परन्तु उन्हे आज कोइ पढता हा न[हीं] है और न ही इन्हे पढने मे रुचि कहीं किसी की दिखाई पडती है

इसलिए हम अपने जीवन मे आने वाले प्रत्यक वष का सम्मान करते हैं। आने वाले वष सन् 2000 के लिए भी हम सब के लिए मगलता क[ी] कामना करते हैं। नई शताब्दी हम सबके जीवन मे नई नइ उमगो और मगलताओ को लेकर आए यह भी परमात्मा से हमारी प्रार्थना है

—धर्मदेव आर्य
सहसम्पादक

वर्ष 2000 मंगलमय हो

वर्ष 1999 की समाप्ति पर और वर्ष 2000 के शुभारम्भ होने पर हम आर्य मर्यादा के सभी पाठको को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजो के अधिकारियों व सदस्यो को सभा से सम्बन्धित सभी शिक्षा सस्थाओं के प्रिंसिपलो प्राध्यापको अध्यापको प्रबन्ध समितियो के सभी पदाधिकारियों व सदस्यो को और सभी आर्य भाई बहनों को हार्दिक मगल कामनाए व शुभ कामनाए भेट करते हैं। यह वर्ष सभी के लिए नई उमगे लेकर आए और सबको सुख और शान्ति देने वाला हो ऐसी हमारी शुभ कामना है।

मगल कामनाओ सहित

हरबन्सलाल शर्मा सभा प्रधान	डा के के पसरीचा कार्यकर्ता प्रधान	अश्विनि कुमार शर्मा एडवोकेट सभा महामन्त्री
सरदारी लाल सभा उपप्रधान	ओ पी पाशी सभा कोषाध्यक्ष	राम कुमार शर्मा रजिस्ट्रार विद्या परिषद

"स्वामी श्रद्धानन्द सांस्कृतिक पथ प्रदर्शक"

ले० म. [illegible] अभिलाषी जी 1/1 आर्य [illegible] ज्वालापुर

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म स 1923 क फाल्गुन कृष्ण 13 को जालन्धर (पजाब क तलवन ग्राम म हुआ आपके पिता जी का नाम नानक चन्द था जो अग्रेजी राज्य मे रिसालदार थे आपक पिता जी को बाद म पुलिस इस्पैक्टर बरेली और फिर बनारस मे कोर्ट इन्सपैक्टर बनाया गया। वह बाल्यावस्था से हा शिव भक्त थ स्वामा श्रद्धानन्द का जन्म का नाम मुन्शा राम था और ज्योतिषा न उनका नाम बृहस्पति रखा था।

बचपन स आपकी बुद्धि बहुत तीव्र था रामायण का कथा सुनी जिसस सुनकर आपको बहुत प्यार हा गया पिता सरकारा कर्मचारी थे बार बार बदली हो जाती थी इसलिए शुरू शुरू मे आपका पढाई मे मन न लगा और कुछ हद तक आवारागद भा हो गए आपको एक बार एक मन्दिर मे जान से इसलिए रोका गया क्योकि उस दिन वहा राना न आना था और सिपाहा जन साधारण का मन्दिर मे जान का अनुमति नहीं दे रहे थे मन्दिर के विषय मे पक्षपात को देख कर स्वामा जा न ईसाई बनने का ठानी परन्तु जब एक पादरी का एक नर्स के साथ घृणित दशा म दखा तो ईसाई बनने का विचार भा छोड दिया बनारस मे एक नाग साधु ने एक अबला को पकड लिया उसे सन्तान के लोभ मे फसा कर वहा लाया गया था आपन उसक सतीत्व की रक्षा की इसा प्रकार दशहरे का भीड मे कुछ गुण्डे एक दवा क पीछे लग गए आपन उनकी चप्पलो स खूब मुरम्मत का मथुरा म एक नवयुवता का गासाइ के पज स रक्षा का इसलिए आपको हृदय मे वीर बनन का धुन सवार हा गइ

स 1834 म जब आप कवल वष क थ आपकी शादा हो गइ आप कुसगत मे पड गए और मद्यपान आरम्भ कर दिया 14 श्रावण स 1936 का स्वामी दयानन्द जा के आगमन पर उनका दखभाल का काम मुन्शा राम जा के पिता का सौंपा गया उन्होन मुशा राम न' स आग्रह किया कि व भा सत्सग मे चल और स्वामी जा के उपदश सुन स्वामा जी का उपदेश सन कर व बहुत प्रभावित हुए और मूर्तिपजा क विरुद्ध मन म धारणा बैठ गई। मुन्शी राम जी पहले नायब तहसीलदार बने फिर आपने त्यागपत्र दे दिया और लाहौर में कानून पढना शुरू कर दिया। मुख्तारी की परीक्षा पास की। एक पार्टी में मद्यपान का दौर चल रहा था। वहा अपने मित्रो की नशे में चूर दशा को देख कर मुन्शी राम जी की आखे खुल गई और इस व्यसन को सदा के लिए छोड दिया। यहा से नए जीवन का आरम्भ हुआ। पहले वह ब्रह्म समाज की ओर झुके। आत्मा के पुर्नजन्म की समस्या के समाधान ने आपको सत्यार्थ प्रकाश की ओर खींचा आठवे सम्मुलास को पढा और इतनी सन्तुष्टि हुई कि झट आर्य समाज के सभासद हो गए। तब सत्यार्थ प्रकाश को गहराई से विचारा और भक्ष्याभक्षय के समुल्लास को पढा। मद्य पहले ही छोड चुके थे परन्तु मास फिर भी खाते थे। एक दिन मास की टोकरी को गुजरते देखा और कटी बकरियो के पैर बाहर लटके देखे। सत्यार्थ प्रकाश की पक्तिया क्रान्ति करने लगीं और उस दिन से मास खाना भी छोड दिया इस प्रकार मुशी राम से महात्मा मुशी राम बन गए

मुन्शी राम जी भल ही वकील बन चुके थे लेकिन धार्मिक विचार मन मे इतने घर कर चुके थे कि यदि उनको पता चल जाता कि केस झूठा है तो पैसे वापिस कर देते थ। एक साहूकार का मुकद्दमा इसलिए छोडा दिया क्योकि उसमे जालसाजी थी आपकी वकालत खूब चमकी और आपका नाम एक नामी वकील मे हो गया।

धार्मिक क्षेत्र मे अनुयायी बहुत बढन लगे दूर दूर तक प्रचारार्थ जाने लगे एक बार कपूरथला में प्रचारार्थ गए और मूर्तिपूजा के विरुद्ध शास्त्रार्थ किया। सन् 1934 मे आपको श्री गुरुदत्त विद्यार्थी के सत्सग का लाभ हुआ। आप उनको अपना पथप्रदर्शक समझते थे गुरुदत्त के निधन पर आपको बहुत दु ख और गुरुदत्त का सारा कार्यभार उन्हीं को सम्भालना पडा।

स 1948 में 15 भाद्रपद को आपकी पत्नी आपको छोडकर स्वर्गवास हो गइ उन पर बहुत दबाव डाला गया कि दूसरा शादा कर ले परन्तु उन्होने इन्कार कर दिया आप अपने महान् गुणो से लोकप्रिय नेता हो चुके थे। आपके व्यक्तित्व पर महात्मा गाधी जी का बहुत प्रभाव था। दीन बन्धु एन्ड्रूज आपको गुरु मानते थे। इग्लैण्ड के अनेक प्रसिद्ध पुरुष आपसे आशीर्वाद मागते थे।

मुन्शी राम जी के जीवन की एक घटना ने उन्हें महात्मा मुन्शी राम से स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया। मुन्शी राम जी बहुत पशोपश में थे कि बाकी का समय धर्म प्रचार मे गुजारे या फिर वकालत का काम करे ? घर से तैयार होकर काला कोट पहन कर न्यायालय की ओर चल पडे। बाहर निकल कर एक चौक पर खडे होकर सोच में डूब गए। कभी सोचते कि वापिस घर चला जाऊ और यह वेशभूषा उतार कर फैंक दू और सन्यासी बन जाऊ। कभी सोचते कि नहीं यही धधा ठीक है। इस सोच में डूबे वहा खडे यही सोच रहे थे कि एक सफाई कर्मचारी सडक साफ कर रही थी। वह सफाई करती करती वहा पहुच गई जहा मुन्शी जी सोच मे डूबे खडे थे। उस स्त्री ने सफाई करनी थी और चौक मे वहा मुन्शी जी खडे थे। उसने कहा बाबू एक तरफ हो जा। मुन्शी जी को यह शब्द गूजन लगा बाबू एक तरफ हो जा बाबू एक तरफ हो जा। निश्चय किया कि एक तरफ ही हो जाना चाहिए सन्यासी बनने का निश्चय कर लिया और इस प्रकार व्यावहारिक धधे को छोड कर स 1971 मे सन्यास लेकर महात्मा मुन्शी राम से स्वामी श्रद्धानन्द बन गए।

आपने एक प्रस्ताव आर्य प्रतिनिधि सभा मे सन् 1898 मे रखा कि एक गुरुकुल खोला जाए जिसमे वैदिक शिक्षा स्वामी दयानन्द जी के दिखलाए मार्ग के अनुसार दी जाए। आपने 30 000 रुपए सग्रह करने की प्रतिज्ञा ली। तीन वर्ष मे 40 000 रुपए एकत्र किए और हरिद्वार के समीप गगा के तट पर दानशील स्व अमर सिह जी के दान की पवित्र भूमि पर कागडी गाव में 1959 विक्रमी मे गुरुकुल स्थापित किया। गुजरा वाला से 29 ब्रह्मचारी वहा लाए गए। [illegible] पूर्ण विश्वविद्यालय का रूप ले चुकी है जहा हर प्रकार की शिक्षा का प्रबन्ध है। और इसी प्रकार अनेक प्रान्तो में अनेक गुरुकुल चल रहे हैं। सन् 1908 ई (स 1935) मे आपक यत्न से सार्वदेशिक सभा की स्थापना हुई और आप उसके प्रधान निर्वाचित होते रहे। गढवाल में दुर्भिक्ष पीडिता की सहायता के लिए 70 सहस्त्र रुपया एकत्र किया। 54 सहस्त्र स अधिक खर्च हुआ शेष आय प्रतिनिधि सभा को सौंप दिया

स्वामी श्रद्धानन्द ने ईसाईयों के विरुद्ध बहुत प्रचार किया चूकि उन दिनो भारत पर विदेशी अधिकार था और अग्रेजो की सरकार होने के नाते अफसरो के यह कान भर गए कि आर्य समाज सरकार का शत्रु है। अत इस राजद्रोही सस्था बतलाया गया। 30 मार्च 1919 म दिल्ली मे निष्क्रिय प्रतिरोध आन्दोलन के सम्बन्ध मे भारा हडताल हुई और स्टशन पर गाला चला। कम्पनी बाग मे सभा हुई उस पर भी गोली चलाई गई परन्तु वीर श्रद्धानन्द ने आगे बढ कर कहा कि गोली चलानी हे तो मेरे सीन पर चलाओ स्वामी श्रद्धानन्द क इसा साहस ने गोलियो की बौछार का वहा ही रोक दिया। इस प्रकार एक सन्यासी के आत्म सम्पर्ण न अनगिनत लोगो का गोलियो स भून जाने से बचा लिया

आपका हिन्दा भाषा और हिन्दुओ स बहुत प्यार था हिन्दी को वह आर्य भाषा कहत ह गुरुकुल का प्रेस स एक पत्रिका उर्दू भाषा म सद्धर्म प्रचारक निकालत थ आपन उसका भा हिन्दा मे कर दिया आपका हिन्दा भाषाओ के एक सम्मेलन (भागलपुर) का सभापति बनाया गया।

शुद्धि और हिन्दू सगठन का कार्यक्रम तो आपका प्राण थे शुद्धि आन्दोलन ने हिन्दुओ मे एक क्रान्ति पैदा कर दी था व हिन्दू जो मुसलमान बन गए थे उनका शुद्धि करके वापिस हिन्दू बनाया जा रहा था। जिसस मुसलमानो का आघात पहुच रहा था और सभी मुसलमान स्वामी जी के प्राणो के प्यास हो गए उन्हे धमकी के पत्र आने लगे कि उनकी हत्या कर दी जाएगी एक प्रात एक नवयुवक स्वामी जी को मिलने आया और आकर उसन स्वामी जी के शरीर को गोलियो स छलनी कर दिया वह हत्यारा [illegible] भागने लगा तो श्री धर्मपाल [illegible] ने उसे पुलिस के आने तक दबोचे रखा और इस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द अमर शहीद हो गए। स्वामी जी की शवयात्रा का समूह इतना विशाल था कि कोई तीन मील तक लोग ही लोग दिखाई देते थ

पादरी भाग गया

ओम प्रकाश त्यागी

पिछले अंक से आगे

बिरसा की बात सुनकर पादरी भौचक्का-सा रह गया और अपनी झेंप मिटाने के लिए बोला-देखो भाई! यदि तुम लोग ईसा की शरण में आ जाएगा तो तुमको फिर भूत-प्रेत नहीं पकड़ेगा।

बिरसा-आप जैसे पढ़े-लिखे आदमी भी भूत प्रेत जैसी निराधार एवं मूर्खतापूर्ण बातों में विश्वास करते हैं ?

पादरी-हम क्या सभी वनवासी भूत-प्रेत मानते हैं और भूत-प्रेत के कारण नाना प्रकार की बीमारियों में फसे रहते हैं।

बिरसा-पादरी साहब! बीमारियो के कारण भूत-प्रेत होते हैं ऐसा किसी डाक्टर के सामने मत कह दीजिएगा अन्यथा वह आपको पागल घोषित कर देगा।

पादरी-गाव के अनपढ़ लोगों को ओर इशारा करते हुए पादरी ने कहा-आप लोग बतलाओ कि भूत-प्रेत से बीमारी होती है या नहीं ?

गाव के लोग-हा, होती है।

बिरसा-यदि भूत-प्रेत से बीमारी होती है और ईसा की शरण मे आने से भूत-प्रेत भाग जाता है तो पादरी साहब ईसाई लोग तो कभी बीमार नहीं होते होंगे।

(बिरसा की बात सुनकर पादरी सिर खुजलाने लगा और उसकी हालत देखकर गाव के लोग कहकहा लगाकर हस पड़े।)

बिरसा-पादरी जी! जब ईसा की शरण मे आने से ही भूत-प्रेत भाग जाते है और बीमारी दूर हो जाती है तो फिर आप लोग अस्पताल क्यो खोलते हैं और क्यों करोडो रुपया दवाईयों पर व्यय करते हैं।

(पादरी फिर सिर खुजलाने लगा और हसी का कारण बना।)

बिरसा-पादरी जी ! क्या आप बतला सकते हैं कि ये भूत-प्रेत कैसे उत्पन्न होते हैं और कहा रहते हैं ?

पादरी-हम नहीं जानता।

रोहन-पादरी जी ! ईसाई लोग ही मरने के बाद भूत-प्रेत बनते होंगे। जब कब्र में पड़े-पड़े ये परेशान हो जाते होंगे या उनकी कब्र में वर्षा के दिनो में पानी भर जाता होगा तो ये वहा से निकल कर गावों में चले आते होंगे और लोगों को तग करते होंगे। पादरी साहब-सुनो ! भूत-प्रेत कुछ नहीं यह आपका पाखण्ड है। इस पाखण्ड से बचने के लिए संसार भर के ईसाईयों को आर्य (हिन्दू) बन जाना चाहिए। यही मुक्ति का मार्ग है।

पादरी-मरने पर ईसाई भूत-प्रेत बनता है, आर्य (हिन्दू) नहीं, इसका क्या प्रमाण है ?

रोहन-पादरी जी ! हमारा आर्य (हिन्दू) धर्म पुनर्जन्म में विश्वास रखता है। मरने के पश्चात् मनुष्य तुरन्त दूसरा जन्म धारण कर लेता है, परन्तु आप के धर्मानुसार ईसाई मर कर न्याय के दिन तक कब्र में सोता रहता है। इससे सिद्ध होता है कि ईसाई लोग ही भूत-प्रेत बन सकते हैं।

पादरी-तुम दोनों शैतान हो, हमारा सब बात काट देता है।

बिरसा-पादरी जी ! हमने यह सुना है कि आप लोग दूध और घी के डिब्बे का लालच देकर हम गरीब और अनपढ लोगों को जब ईसाई बना लेते हैं तो फिर मिशन के नाम पर उनसे चन्दा लेते हो, उनसे गिरजा में बेगार लेते हो, उनके रीति-रिवाज, पर्व और त्यौहार बदलते हो, उनकी लड़कियों को शादी कराने के नाम पर अपने यहा बुलाते हो, उनको प्रति रविवार गिरजाघर आने को विवश करते हो और न आने वाले को दण्डित करते हो और जाति बिरादरी का ध्यान किए बिना उनके नवयुवक-नवयुवतियों की शादिया कराते हो। यदि ये बात सत्य है तो आप सेवा नहीं अपितु बड़ा भारी पाप कर रहे हो। आजादी की प्राप्ति के पश्चात् हमारे कन्धों पर से राजा-महाराजाओं की गुलामी का जुआ अभी उतरा नहीं कि आपने अपनी दासता की तलवार हमारे गले पर रख दी।

आपको विदित होना चाहिए कि हम वनवासी देखने में भले ही काले, निर्धन तथा अनपढ़ हैं, परन्तु हम चरित्रवान् और स्वतन्त्रता प्रिय हैं। हम किसी की दासता में रहना पाप समझते हैं। हमें अपना आर्य (हिन्दू) धर्म इसीलिए प्यारा है कि इसमें हमारे ऊपर किसी भी प्रकार की दासता नहीं है। हम अपने धर्म को अपनी इच्छानुसार मानने में पूर्ण स्वतंत्र हैं। हम चाहें तो मन्दिर में जा सकते हैं और चाहें तो घर में रहकर भी अपने भगवान् को याद कर सकते हैं। हमारा भगवान् ईसा की भांति केवल गिरजा में नहीं रहता अपितु वह सर्वत्र है।

पादरी जी! हम आपके धर्म को बुरा नहीं कहते, परन्तु हमारे देश, काल, अवस्था के अनुसार हमारा देशीय धर्म और सभ्यता ही हमारे अनुकूल है। कोई भी विदेशी धर्म और सभ्यता हमारे अनुकूल नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त जब हमारे धर्म में ही संसार की समस्त श्रेष्ठ बातों का समावेश है तो फिर हम अन्य विदेशी धर्म को क्यों अपनायें।

पादरी-यदि आप ईसा की शरण में नहीं आवेंगे तो आप को हम दूध घी का डिब्बा नहीं देगा, आपको अपने बैंको से उधार धान और पैसा नहीं देगा और अपने स्कूलों तथा अस्पतालों से आपको लाभ नहीं पहुचायेगा।

बिरसा-पादरी जी ! आपने हम आर्यों (हिन्दुओं) को पहचानने में भूल की है। हम लोग सोने, चादी, मकान और दुकान को धर्म के सामने कुछ नहीं समझते। हम क्षत्रिय लोग हैं। महाराणा प्रताप के साथ मिलकर हमारे पूर्वज घर बार छोड कर जंगलों में मारे-मारे फिरे और घास की रोटिया खाईं परन्तु अकबर के प्रलोभनो और तलवारों के सम्मुख सिर नहीं झुकाया और अपने पूर्वजों के धर्म को नहीं छोड़ा।

पादरी-देखो ! तुम्हारे धर्म में छूतछात के नाम पर तुम लोगों को अछूत माना जाता है। तुम्हारे हाथ का कोई पानी नहीं पीता व खाना भी नहीं खाता। ऐसे धर्म में रहने से क्या लाभ है ? अगर तुम ईसाई बन जाओगे तो तुम्हें कोई अछूत नहीं मानेगा और तुम सबके समान हो जाओगे।

बिरसा-पादरी जी ! ये सामाजिक कुरीतिया सभी धर्मों मे हैं परन्तु हमारी सरकार ने अब छूतछात को कानूनन बन्द कर दिया है और जो छूतछात को मानेगा उसे दण्ड दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त हमारे देश में आर्य समाज जैसी संस्था गत 100 वर्षों से इस सामाजिक कुरीति को समाप्त करने का प्रयत्न कर रही है परन्तु जरा आप अपनी आस्तीन में तो मुह डालिए। आपके ईसामसीह के शिष्य यूरोप, अमरीका और अफ्रीका में काले लोगो के साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं ? क्या यह बात सच नहीं है कि वहा गोरे ईसाई काले लोगों के साथ बैठने, उठने चलने, पढने और शादी-विवाह आदि करने तक में घृणा करते है और काले लोग ईसाइयों के इस अत्याचार का लगातार विरोध करने पर मौत के घाट उतरते रहे हैं।

(बिरसा की बात सुनकर पादरी भौचक्का रह गया।)

रोहन-पादरी जी ! क्या यह सच नहीं है कि अपना धर्म और संस्कृति छोड़ ईसाई बनने पर हमें हमारे बच्चो को सरकार द्वारा दी जा रही विशेष सुविधायें व सहायता प्राप्त न हो सकेगा। यह सच है कि फिर दो चार घी-दूध के डिब्बों पर हम अपना इतना बडा लाभ क्यों छोडे ?

पादरी-तुम्हारी सरकार मालूम नहीं कब मदद करेगी, हम तो तुम्हारी अभी मदद करता है।

रोहन-पादरी जी ! हम हजारो वर्षों से इन जगलों में नगे और भूखो भी मस्त रहते आए हैं और हम इस जीवन के आदी भी हो गए हैं। इसलिए हमें यदि कुछ दिन और अपनी रक्षा करते हुए इसी प्रकार रहना पडे तब हम सहर्ष रहेंगे परन्तु इस थोडे से प्रलोभन के लिए हम अपना और अपने परिवार का धम नहीं बिगाडेंगे।

पादरी-तुम हमारी बात समझता नही· हम तुमको पढा-लिखा कर इन्सान बना देगा।

बिरसा-पादरी जी ! आपको विदित होना चाहिए कि हमारी सरकार ने हमे शिक्षा प्राप्त करना अनिवाय कर दिया है। ऐसी स्थिति मे हमारी सरकार ही हमारे लिए स्कूल खोल रही है। इसलिए इस प्रलोभन मे भी हम नही फसेगे।

पादरी-ईसाई हो जाने से तुम्हारा कल्याण हो जाएगा।

रोहन-हमारा कल्याण हो या विनाश। जब आप हमारा धम सस्कृति और सभ्यता छीन लेगे और हम बहुसख्यक आय जाति मे से निकालकर विदेशी धम, सस्कृति और सभ्यता को मानने वाले अल्पसख्यक वर्ग में खडा कर देगे तो फिर हमारा कल्याण कैसे होगा ?

पादरी-भाई प्रतीत होता है कि आय समाजियो ने तुम्हारा दिमाग खराब कर दिया है और वो तुम्हारा भला नहीं होने देगे।

बिरसा-पादरी जी ! सौभाग्य से आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द की विचारधारा ने हमारी आखे खोल दी हैं और अब आप इन जगलों मे हमारे निधन, भोले और अनपढ भाइयो को लोभ-लालच देकर उनका धम न छीन सकोगे और हमारे ही देश के विरुद्ध यहा विदेशो के पचमार्गी दस्ते पैदा न कर सकोगे। आप भारत में सेवा करने नहीं आए, अपितु इग्लैंड अमरीका आदि देशो से प्राप्त करोडों रुपयों के बल पर हमे खरीदने आए हो और पाकिस्तान की भाति ईसाइस्तान बनाने आए हो। आप द्वारा बनाए गए ईसाइयों की स्वतन्त्र नागालैंड और झारखण्ड प्रात की माग इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि आप हमारे सेवक नहीं-भक्षक हैं।

पादरी-हम समझ गया कि अब हमारी दाल यहा नहीं गलेगी।

ऐसा कहकर विदेशी ईसाई मिशनरी वहा से भाग गया और वह गाव उसके चगुल मे आने से बच गया।

नारी सौन्दर्य, सौन्दर्य प्रतियोगितायें तथा भारतीय दृष्टि कोण

—चतुर्भुज मित्तल मन्त्री श्री गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट

1947 से पहले हमने भारत में कभी सौन्दर्य प्रतियोगिताए नहीं देखी सुनी थी। परन्तु स्वतन्त्रता मिलने के बाद महिलाओ की सौन्दर्य प्रतियोगिताए देश में आरम्भ हुई। मेरी याद मे सबसे पहली नारी सौन्दर्य प्रतियोगिता 1949 मे देहली के उपराज्यपाल की अध्यक्षता मे देहली मे हुई। जिसके ऊपर समाचार पत्रो में बहुत टीका टिप्पणी हुई और एक विदुषी महिला ने प्रश्न किया कि यह सौन्दर्य प्रतियोगिता कराने वाले जो हैं उन्होंने सौन्दर्य की परिभाषा कहा से सीखी और उन्हे सौन्दर्य क्या होता है इसका क्या ज्ञान है ? वह इसका परिचय दे ताकि पता चले कि वह सौन्दर्य की जाच करने के योग्य भी हैं कि नहीं

वास्तव मे अरब तथा यूरोप की सभ्यता व सस्कृति ने नारी को केवल एक शरीर मानकर तथा उस शरीर को काम वासना के लिए उपभोग का साधन मात्र म ना जिससे नारी का सौन्दर्य नापने के लिए उसके शरीर की बनावट चेहरे का रग कमर का पतला होना छातियो का उभार तथा केश व नख इत्यादि कैसे हैं यह सब सौन्दर्य के मापदण्ड रखे गए

परन्तु भारतीय सभ्यता व सस्कृति ने नारी को कई रूपो मे देखा जिनमे उपरोक्त रूप केवल एक है हमने नारी को कजक (क्वारी कन्या) के रूप में देखा जिसके हमने चरण छुए हमने उसे भागिनी के रूप मे देखा हमने उसे धर्मपत्नी के रूप मे देखा हमने उसे माता के रूप मे देखा हमने उसे रण चण्डी के रूप मे देखा हमने उसे भक्ति भाव से भरपूर देवी रूप मे देखा और हमने इसके सब रूपो मे स्त्री के शरीर को नहीं उसकी आत्मा को महत्व दिया। उसकी आत्मा बलशाली है उसका मन कितना पवित्र है उसकी बुद्धि कितनी स्वच्छ है हमने यह मापदण्ड समझे। हमारे कवियो ने कहा कि स्त्री तब सोहे जब उसके नयन सुन्दर हों और नयन वह सुन्दर हैं जिनमें लज्जा हो। कुछ कवियों ने कहा कि माता वह धन्य है जो

जननी जने तो भक्त जने या दाता या सूर

नहीं तो जननी बाझ रह काहे गवावे नूर।

हमने जब स्त्री को माता के रूप में देखा तो यह आशा की कि वह किसी शूरवीर पुत्र को जन्म दे। माता सुमित्रा जी ने सजीवनी बूटी ले जाते हुए हनुमान जी को पूछा कि लक्ष्मण को शक्ति कहा लगी है। हनुमान जी ने प्रश्न किया कि क्या यह अवसर यह पूछने का है कि शक्ति कहा लगी है तो माता सुमित्रा ने यह उत्तर दिया कि यदि शक्ति छाती मे लगी है तो मैं धन्य हू और यदि शक्ति पीठ मे लगी है तो मैं कहूगी कि सजीवनी मत ले जाओ। मुझे ऐसे पुत्र की आवश्यकता नहीं जो रणभूमि मे पीठ दिखाये। महाभारत मे विदुला जी की कथा आती है जिसने रण भूमि से लौटे अपने पुत्र को कहा कि इससे तो मैं निपूती ही अच्छी थी। माता जीजाबाई का किस्सा किसे ध्यान नहीं कि उसने अपने 16 18 साल के बेटे को सिहगढ़ के किले की ओर इशारा करके कहा कि बेटे जाओ और यह किला विदेशियो से छीन कर मा के चरणो में अर्पित करो सिहनीयो ने सिहो को जन्म दिया। गुरु गोबिन्द सिह जी ने चारो लाल देश के लिए वार दिए और अपनी पत्नी से कहा कि चार मोये तो क्या हुआ जीवित कई हजार। ऐसे सिह पुत्रो को जन्म देने वाली माताए हमारे लिए धन्य थीं और उनका सौन्दर्य आपार था। कई पत्नियों की कथाए आती हैं जिन्होने अपने पतियो को धर्म युद्ध में भेजा और यदि वे वहा बलिदान हो गए तो वह वीर बालाए जौहर की चिता जलाकर स्वय जल गई परन्तु शत्रु इनके शरीर को छू भी नहीं पाया। हमें गर्व है उन वीराङ्गनाओ पर जो अपने बच्चे अपने पीठ पर बाध कर रानी झासी और दुर्गावती के रूप में रणचण्डी बनकर निकलीं। जिसे यह गीत याद नहीं जिसके आरम्भिक शब्द हैं-

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झासी वाली रानी थी

हमने स्त्री को देवी के रूप व प्रभु भक्त के रूप में देखा जिसे याद नहीं मीराबाई जी की गाथा

'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोये

हमने नारी की वन्दना की और जो निर्लज्ज है उसे सुन्दर नहीं माना परन्तु आज के सौन्दर्य प्रतियोगिताए करने वालों के लिए स्त्री एक हाँड मास का पुतला है और वासना तृप्ति की सामग्री है। वह उसके अग प्रति अगो का लेखा जोखा करते हैं और फिर नारी मान सम्मान की दुहाई देते हैं। खेद का विषय है कि आज नारी की पब्लिसिटी के लिए माडल बनाया जा रहा है। आज हर बड़ी व्यावसायिक कम्पनी सौन्दर्य प्रतियोगिताएं रख रही है। हर प्रान्त में हर बड़े नगर मे यह प्रतियोगिताए हो रही हैं और सरकार द्वारा इन्हें प्रोत्साहन दिया जा रहा है जो नारी का अत्यन्त अपमान है। ऐसी प्रतियोगिताए करने वालो को पता ही नहीं कि भारत का नारी के प्रति क्या चिन्तन है और नारी का सम्मान उसके शरीर के अगो से नहीं उसके गुणों से होगा। शरीर तो आज नहीं कल ढल जाने वाला है परन्तु माता वयोवृद्ध होकर भी अति सम्माननीय है मेरा उस सम्माननीय नारी को प्रणाम है।

प्रेषक—श्री जगदीश भगत
भार्गव नगर जालन्धर

अमर शहीद प. राम प्रसाद बिस्मिल बलिदान समारोह

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार दाल बाजार लुधियाना में गत रविवार 19 12 99 को प्रात 8 से 11 बजे तक अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल जी का बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह के आरम्भ में यज्ञ का आयोजन किया जिसे आर्य समाज के विद्वान् प सुरेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने सम्पन्न कराया। श्री देवपाल आर्य श्री अजय कुमार सूद श्री कपिलदेव शर्मा श्री सुरेन्द्र आर्य श्री कुलदीप आर्य एव अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने यज्ञ मे श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ की शिक्षाओ के माध्यम से प राम प्रसाद कट्टर आर्य समाजी बने श्री रोशन लाल आर्य श्री श्रवण कुमार जी बत्रा ने भी बिस्मिल जी के जीवन पर प्रकाश डाला। समारोह को श्री राजेन्द्र बत्रा श्री मतवाल चन्द आर्य महात्मा सुमनपति जी महाराज ने भी सम्बोधित किया। आर्य कालेज प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री राजेन्द्र दीवान सचिव श्री नरेन्द्र सिह भल्ला आदि गणमान्य व्यक्तियो ने भाग लिया। —आत्म प्रकाश

किदवाई नगर में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज गुरु विरजानन्द किदवाई नगर लुधियाना में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। 24 12 99 को प्रात समारोह से पूर्व यज्ञ किया जिसे आर्य समाज के पुरोहित श्री भगत सिंह जी मस्ताना ने सम्पन्न कराया सभी आर्य महानुभाव एव स्कूल के अध्यापकगण एव विद्यार्थी सम्मिलित हुए समारोह की अध्यक्षता श्री रोशन लाल जी आर्य प्रधान आर्य युवक सभा पजाब ने की ।

आर्य समाज के प्रधान श्री गुलजारी लाल कोषाध्यक्ष श्री गरीबदास स्त्री समाज की प्रधाना बहन शकुन्तला जी भोगल श्री राजेन्द्र जी बत्रा आदि महानुभावो ने भाग लिया। समारोह के पश्चात सभी को अल्पाहार दिया गया कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा आर्य समाज के प्रधान जी ने सभी का धन्यवाद किया।

कन्हैया लाल महामन्त्री

अमर वीर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी

मदनमोहन सोम प्रकाश आर्य, प्रधान आर्य समाज पूठी

"विशाल शरीर में विशाल आत्मा" स्वामी श्रद्धानन्द इस सत्य के मूर्तिमान स्वरूप थे "कोई व्यक्ति बुरी राहों पर चलकर भी, यदि जीवन को सुधारने का यदि प्रबल संकल्प कर ले तो वह कल्याण मार्ग का राही बन सकता है" इस उक्ति को क्रियात्मक रूप में सिद्ध करने वाले महान आत्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बचपन का नाम मुंशीराम था। मुंशीराम जी का जन्म पंजाब में जालन्धर जिला के तलवन गांव में 1856 में हुआ। पिता लाला नानक चद जी उत्तर प्रदेश में पुलिस अफसर थे। उनका बचपन आम आदमी की तरह अपने पिता जी की पुलिस अफसरी के कारण आचरण अच्छा नहीं था, जवानी अवस्था में शराब, अंडा, मास आदि के सभी दुर्व्यसन उनके जीवन में थे, ऐसा विवरण स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी आत्मकथा में स्पष्ट रूप में निडर होकर खुल कर लिखा है। मुंशी राम जी बरेली में अपने पिता जी के साथ रह रहे थे। ठीक उसी समय बरेली में "परम पूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती" वेदों के सूर्य की रोशनी को बिखेरते हुए बरेली में आए। मुंशीराम जी के पिता जी की पुलिस अफसर हेतु प्रबन्ध की डयूटी लगी थी उन्होंने मुंशी राम जी को भी स्वामी दयानन्द जी का उपदेश सुनने के लिए भेज दिया। मुंशीराम जी के जीवन में उथल-पुथल मच गई। परन्तु वह पूर्ण रूप से आस्तिक फिर भी नहीं बन सके।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम सुनते ही हर आर्य समाजी का सिर श्रद्धा से नम्र हो जाता है। उनके नाम में ही ऐसी शक्तिशाली प्रेरणा है मैं सदैव उनके नतमस्तक हो जाता हूं। उनके नाम का अर्थ ही श्रद्धा और आनन्द है जो सभी को शान्ति और प्रेरणा व सेवाभाव का सदेश देता है।

महर्षि दयानन्द के संसर्ग ने मुन्शीराम जी के जीवन की धारा को ही बदल दिया था। जब लाहौर में मुंशीराम जी वकालत की शिक्षा ग्रहण करने के लिए गए तो वहां इनका सम्बन्ध आर्य समाज से जुडा और वहां ही सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा। जालन्धर में वापिस आने तक मुंशीराम आर्य समाजी बन चुके थे और बाद में उनको जालन्धर में आर्य समाज का प्रधान बना दिया गया। श्रद्धानन्द जी ने अपना पूरा जोर लगा कर आर्य समाज के सिद्धान्तों और वेदों का प्रचार करते हुए पाखण्डों को दूर किया। 4 अप्रैल 1919 को इसी निडर बलवान और पवित्र आत्मा ने "जामा मस्जिद" दिल्ली के मिम्बर पर खड़े होकर जनसमूह को वेदों का उपदेश देते हुए देश की स्वतन्त्रता के लिए सर्वस्व बलिदान कर देने की प्रेरणा दी थी। अपने उपदेश का शुभारम्भ वेद मत्र ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे। से किया और समाप्ति ओ३म् शान्तिः शान्ति. शान्तिः से की थी।

स्वामी श्रद्धानन्द जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 1919 में अमृतसर में कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के रूप में राष्ट्रीय महासभा के मंच पर हिन्दी में भाषण दिया। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी जी ने उनके भाषण के बाद कहा था, "स्वागत समिति के अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी का भाषण उच्चता, पवित्रता, गम्भीरता और सच्चाई का नमूना था" हालाकि गांधी जी से स्वामी जी के कई बातों पर विचार भिन्न थे। गाधी जी नर्म थे स्वामी श्रद्धानन्द निडर थे दृढ़ सकल्पी थे। दोनों ने देश की आजादी में अपने-अपने ढग से योगदान डाला। अमृतसर मे जलियांवाले काड के बाद सभी नेता छिप गए थे मगर स्वामी श्रद्धानन्द जी डके की चोट पर निडर, निर्भय होकर कांग्रेस पार्टी का देश के हित में नेतृत्व किया। दिल्ली मे जलूस का नेतृत्व करते हुए सिपाहियों को अग्रेजों को ललकारा "लो मैं खड़ा हूं, गोली मारो! अपनी छाती संगीनों के सामने तान दी" इतनी निर्भीकता और साहस देखकर सारे प्रशासन और अंग्रेजों में सन्नाटा छा गया। फिर स्वामी जी महात्मा गाधी जी के "असहयोग आन्दोलन" मे जुड गए स्वामी जी ने सभी क्रान्तिकारियों के साथ साईमन कमिशन रोल्ट एक्ट का विरोध करते हुए पडित जवाहर लाल जी जैसे बडे-बडे नेताओं के साथ देश की सेवा मे काम किया।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी का अमरग्रथ सत्यार्थ प्रकाश पढते ही स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना जीवन वेद प्रचार अछूतोद्धार, नारी रक्षाशिक्षा व शुद्धि आन्दोलन में लगा दिया। सर्वप्रथम उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश मे बताई हुई "गुरुकुल शिक्षा प्रणाली" का बिगुल बजाने का सकल्प किया। जिसका दृढ सकल्प उन्होंने धन एकत्र करके हरिद्वार मे गंगा के किनारे "गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय" की स्थापना की। जिसमें विद्यार्थियों के साथ-साथ सबसे पहले गुरुकुल में अपने जिगर के टुकड़े दोनों पुत्रों को अजीत हरीश और इन्द्र को प्रवेश किया ताकि लोगों में गुरुकुल में बच्चे पढाने की जिज्ञासा बढ़ सके। बाद में अग्रेजी सरकार ने स्वामी जी के गुरुकुल कागडी पर नजर रखनी शुरू कर दी। क्योंकि स्वामी जी ने वहां देशभक्त, वैदिक मिश्नरी, सुदृढ शक्तिशाली, सुसंस्कारित सस्कृत भाषा के उपदेशक तैयार करने शुरू कर दिए। स्वामी श्रद्धानन्द जी कभी भी नहीं घबराये चाहे कितने ही सकट आए। बाद मे स्वामी जी ने हिन्दुओं को शुद्धिकरण का आन्दोलन शुरू किया। क्योंकि मुसलमान हिन्दुओं को लालच देकर इस्लाम धर्म में ले जा रहे थे। इस घटना से मुसलमानों में स्वामी जी के प्रति बहुत शत्रुता हो गई। अंत में एक षडयन्त्र द्वारा 'अब्दुल रशीद' नामक मुसलमान द्वारा गोली चलाने पर स्वामी जी को अपना 23 दिसम्बर 1926 बलिदान देकर सारी मानवजाति के भले के लिए प्राणों की आहुति देनी पड़ी। आज हर आर्य समाज, हर भारतवासी, सारी मानवजाति को गर्व है। "जब तक यहां चाद, सितारे, सूरज अपनी रोशनी देंगे तब तक हजारों नर-नारी स्वामी जी से प्रेरणा पाकर अपने जीवन को सुपथ पर ले जाकर सुख शान्ति प्राप्त करते रहेंगे।"

"श्रद्धा से तुम्हें पुकारते हैं, नाम भी कितना प्यारा है,
लेकिन स्वार्थ को त्यागा था, परमार्थ में जीवन वारा है॥
वेदधर्म की ला फुलवाड़ी गुरुकुल कागड़ी खोला था,
चले अकेले निर्भय होकर बचाने, न कोई बोली न बोला था॥
जब तक सृष्टि [illegible]गी, तब तक श्रद्धानन्द जी का नाम हो,
कहे सोमआर्य श्रद्धानन्द को मेरा कोटि कोटि प्रणाम हो॥"

आर्य समाज धूरी की वेद प्रचार गतिविधियां

जब से वर्ष 1999 2000 का आर्य समाज धूरी की नई युवा टीम का चुनाव हुआ तब से तीव्र गति से आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयाग से आर्य समाज धूरी हर क्षेत्र मे शिक्षा मे सेवा मे और वेद प्रचार मे ऐतिहासिक उन्नति की ओर अग्रसर है आर्य समाज धूरा क युवा प्रधान महाशय साम प्रकाश आय न बताया कि हमारा टाम का प्रमुख उद्देश्य आर्य समाज और वेदो के प्रचार को घर घर तक पहुचाना है हर व्यक्ति को आर्य समाज का ओर से हवन की सामग्री मुफ्त दी जाती है सारा समस्त प्रबन्ध आर्य समाज की ओर स फ्री किया जाता है

महाशय सोम प्रकाश जी ने बताया कि आर्य समाज धूरी मे सभी वैदिक उत्सव मनाने का दृढ सकल्प किया हुआ है। पिछले दिनो **ऋषि निर्वाण दिवस** 7 11 1999 को बहुत धूमधाम से महात्मा प्रेम प्रकाश जी की अध्यक्षता मे मनाया गया। प्रधान जी ने अपनी गतिविधियो की जानकारी देते हुए बताया है कि लगभग 10 15 सालो के बाद इस साल 9 11 99 से 14 11 99 तक वेद सप्ताह पहली बार इतने उत्साह से मनाया गया जिसमे सारे शहर की सस्थाओ और क्लबो और ऐसोसिएशनो के प्रधान मन्त्रियो ने आर्य समाज धूरी के प्रागण में आकर ओ३म् का ध्वज लहराया। सारे शहर में धूरी की अलग अलग यूनियनो ने आर्य समाज धूरी के स्वागत के लिए विशेष द्वार बनाए। मानो यू लग रहा था जैसे धूरी के सभी नगर निवासी आर्य समाज धूरी को पूरे जोश से तन मन धन से सहयोग दे रहे हैं आदरणीय श्री जगत वर्मा जी भजनोपदेशक ने समय बाध दिया गीतों के द्वारा आर्य सिद्धान्तो का प्रचार किया स्वामी इन्द्रवेश जी ने बहुत प्रभावी भाषण वेद मन्त्रो पर दिए। आदरणीय श्री वेद शर्मा जी योग विशेषज्ञ ने योग पर आर्य समाज का दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए लोगो का मन जीत लिया। महात्मा श्री प्रेम प्रकाश जी ने मच सचालन किया आर्य समाज के मन्त्री श्री वासुदेव जी सतीश पाल जी प्रहलाद जी रघुनाथ शर्मा जी पवन गर्ग जी कर्मचन्द जी डा सरीन महाशय प्रतिज्ञापाल जी मास्टर प्रकाश चन्द जी स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती उर्मिला रानी मन्त्राणी कृष्णा आर्या सभी सस्थाओ के प्रिसीपल एव विद्यार्थियो ने पूरा सहयोग दिया। आर्य समाज धूरी का भवन मदिर रात्रि को लाईटो के साथ चमचमा रहा था मानो प्रभु की कृपा आर्य समाज पर पूरी बरस गई हो।

(पृष्ठ 1 का शेष)

गीता ज्ञान—योगीराज श्री कृष्ण भगवान (महाभारत काल) प्राणीमात्र के कल्याणार्थ 18 अध्यायो की प्रस्तुति 1 आत्म विस्मृति 2 आत्म बोध 3 कर्तव्यबोध 4 ज्ञान यज्ञ 5 कर्म योग 6 ध्यान योग अध्याय 7 से 11 तक ब्रह्मविद्या बाध 12 भक्तियोग 13 क्षेत्र क्षेत्रज्ञ योग 14 प्रकृति के गुण 15 उत्तम पुरुष 16 दैवी और आसुरी सम्पत्ति 17 गुणत्रय और व्यवहार 18 मोक्ष सन्यास

यज्ञोपवीत उपनयन ब्रह्मसूत्र जनेऊ

अच्छे कार्य के निकट ले जाने वाला आचार्य तथा शिष्य के बीच प्रेम सूत्र का स्थूल प्रतिनिधि है। तीन बार तीन ऋणो से उऋण होने की याद दिलाते हैं अत यह पवित्र है।

1 ऋषि ऋण ज्ञान विज्ञान का परिचय प्राप्त करके हमे ज्ञान देने वाले ऋषियो की सेवा और ज्ञान प्रसार द्वारा उऋण होने का प्रयास

2 पितृ ऋण माता पिता की सेवा और उनके द्वारा किए गए उपकारो से उऋण होने का प्रयास।

3 देव ऋण दिव्य पुरुषो अथवा देवताओ द्वारा बताए गए कर्तव्य पथ निष्कामता पर चलकर उऋण होने का प्रयास।

निवेदन—आर्यजन इस अनमोल रत्न निधि को अपनी सन्तानो को भी अवश्य देंगे ताकि उनके ज्ञान मे वृद्धि हो सके।

हरिचन्द स्नेही एम ए बी एड
बौद्धिकाध्यक्ष प्रान्तीय आर्यवीर दल हरियाणा
निवास 18/55 भगत पुर सोनीपत (हरियाणा)

मूक आर्य समाज

रचयिता श्री विजय अशान बिस्त्री 18 गुलशन गोकुलधाम गोरेगांव पूर्व मुम्बई-400063

ढोंग बन कर रह गया है आज यह तेरा स्वराज।
आज रावण से भी बढकर यह बुरा है रामराज।
आज भी नवयुवक है बेकार कब है कामकाज।
आज भी रोटी के टुकडे पर बिके सीता की लाज॥
और सब कुछ देख कर भी मूक है मेरा समाज।
आज भी भारत के बाजारो मे बिकती है सुरा।
आज भी हस गा के मतवाले रिझाती अप्सरा।
आज भी लैला का शैदाई है मजनू सिरफिरा।
आज भी युवको के शिक्षण काव्य मे विष ही भरा।
और सब कुछ देख कर भी मूक है मेरा समाज
हम कहलाते गो रक्षक है गोहत्या लेकिन हो रही।
आज गो के साथ ही गोकरुणानिधि भी रो रही।
भूख से ककाल कितने लाल जननी खो रही।
फिर भी पशुधन से विमुख सरकार मेरी सो रही।
और सब कुछ देख कर भी मूक है मेरा समाज
आज सिनेमा बन रहे हैं पाठशाला प्रेम की।
और कालेज बन रहे है योगशाला प्रेम की।
आज होटल बन गए है रगशाला प्रेम की।
रात–दिन सीलोन गाता गीतमाला प्रेम की।
और सब कुछ देख कर भी मूक है मेरा समाज
धर्म और पथभ्रष्टता मिलते परस्पर आज भी।
वासना होती प्रदर्शित आड ले कर आज भी।
बिक रहे है लौह के मिटटी के ईश्वर आज भी।
दोष है अश्लील होने का कला पर आज भी।
और सब कुछ देख कर भी मूक है मेरा समाज।
नाम पर मजहब के अब भी अन्धश्रद्धा है यहा।
आज भी तुलते पटालीमन से है सर आगा खा
अब भी कलकत्ते के अन्दर रोज लाखों बेजबा।
काली के मन्दिर मे कहते है जो खूनी दास्ता।
और सब कुछ देख कर भी मूक है मेरा समाज।
धीरे–धीरे बन रहा है पश्चिमी भारत का लाल।
पश्चिमी है वेषभूषा भावनाए चाल–ढाल।
पश्चिमी भोजन की शैली नृत्य है और बोलचाल।
धीरे धीरे बन रहा योरूप मेरा भारत विशाल।
और सब कुछ देख कर भी मूक है मेरा समाज।
आज भी दक्षिण के मस्तक पर है जैसे ब्रिटिश ताज।
आज अग्रेजो के जाने पर भी अग्रेजी का राज।
हा ! कहो ताने सुनेगा कब तलक छलनी के छाज।
मुझ को उत्तर चाहिए इस बात का और वह भी आज।
क्यो यह सब कुछ देख कर भी मूक है मेरा समाज

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

23 12 99 को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द महाराज का बलिदान दिवस आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना मे समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह से पूर्व विशेष यज्ञ किया जिसे श्री सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया। यज्ञ की अग्नि श्री अशोक जी गोगिया न प्रज्जवलित की। श्री देवराज जी आर्य श्री अशोक जी भखीजा यजमान बने। समारोह की अध्यक्षता महात्मा सुमनापति जी ने की। समारोह के मुख्यवक्ता श्री रोशन लाल जी आर्य प्रधान युवक सभा पजाब थे। श्री मदनलाल चन्द जी स्वामी मित्रानन्द जी महात्मा सुमनापति जी ने भी समारोह को सम्बोधित किया

—आत्म प्रकाश मन्त्री

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट महामन्त्री सम्पादक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस/ऐलिमेंट प्रिंटर्स जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

Here's Where You Start: The Key Thought

The thought that you must carry all the time, like a big sign hanging over the stage of your living, is this:

I am going to keep my thinking and my attitude calm and cheerful right now.

That thought you are to have always with you, repeating it over and over to yourself until it sticks there without conscious effort. Just as the present moment is always with you, so is the thought, "I am going to keep my thinking calm and cheerful — right now."

Whatever happens, whatever situation arises as the day goes along, keep that *one* thought active and alive.

And, of course, situations will arise, every day, to which you have gotten in the habit of reacting with one of the unhealthy emotions. Then you will say to yourself, "Whoa, there, old fella, here's where we need calmness and cheerfulness."

Then you must substitute a healthy emotion — one containing equanimity, courage, resignation, determination, cheerfulness and pleasantness — for that unhealthy stress emotion you might otherwise have — the one containing fear, apprehension, remorse, disappointment, anxiety, or frustration.

Substituting Healthy Emotions for Stress Emotions

At first you'll find that you have usually *started* stewing over something, or you've already become irritated and upset before you remember to say to yourself, "I am going to keep my thinking and my attitude calm and cheerful — right now." As you practice, you'll be *ahead* of stress with the key thought, and be able to stop your descent into stressing emotions.

Either way, the moment you remember, "I am going to keep my thinking and attitude calm and cheerful — right now," you stop the thinking that generates the stress emotion

and start a train of thought that will generate healthy emotions Everybody develops his own tricks for substituting a healthy emotion for a stressing one — RIGHT NOW, when it is needed

On the occasions that are just "nasty little situations" of minor importance, one of my patients learned to begin whistling, and soon he trilled himself into complacency, equanimity and cheerfulness. Another patient, who had a good voice and liked to sing, learned that if she sang she could change her emotions for the better at once Another patient has learned to find beauty in the little things about her when she needs the lift And a man told me that he keeps planning a new experience ahead that he can turn to and think about whenever he finds his emotions are running toward the stressing side.

Many people find prayer a ready way for starting a pleasant stream of emotion. But it is important to get into the prayer the same attitude of calm and cheerfulness For instance, it would not do to pray like this "Oh, Lord, I feel miserable, and the situation I am in is terrible Won't you help me, God?"

The supplication should run more like this. "Thou hast created a wonderful, wonderful world for our enjoyment, O Lord. Give me the courage, the resignation, the determination, the equanimity, the cheerfulness, the pleasantness to enjoy this wonderful life Thou hast given me from Thy bounty."

These are all useful methods of substitution They will help you out of those numerous little snarls that come along every day — the sum total of which can get you down.

Mastering That Nasty Little Moment

These nasty little situations are easy to handle by remembering, "I am going to keep my thinking and my attitude calm and cheerful — *right now,*" and then deliberately call-

ing up and tossing in a healthy emotion instead of allowing the stressing one to go ahead It is very important in developing emotional stasis that you do handle stresses in this way. For although each of these minor stresses may seem trivial, yet these seemingly trivial episodes, if allowed each time to run a stressing course, will by themselves be enough to produce chronic emotional stress and E I. I. Eighty per cent of the average patient's stress arises from these poorly-controlled and relatively minor situations

If the Going Is Smooth

If you happen to be traveling through a good, smooth period of living, then, for heaven's sake, allow yourself *to feel* happy. Fill the hopper with equanimity, cheerfulness, and pleasantness Go the limit to enjoy the delightful magnificence of your world Life is wonderful if you allow it to be.

Four Things to Do If The Going Is Rough

The big situations that may arise in your living, (you and I have had them, and will continue to) are not as readily dealt with as are "the nasty little moments" Suppose your wife is sick, you can't get (in fact, you can't afford) help, the children are at loose ends, and it looks as though your plant was about to shut down, you already are working only three days a week Creditors are after you. That, my dear fellow, is not a spot where simply substituting an emotion is going to do the trick.

There is a general mode of procedure to keep in mind

1. First, stay outwardly as cheerful and calm as you possibly can. Lighten an awkward situation with a bit of humor, wry though it may be (Wry humor is, after all, the best variety.)

2 Avoid running your misfortune through your mind like a repeating phonograph record Do not let yourself get irritated, upset, or hysterical. Above all, don't start pitying yourself.

3. Lay your plans always to turn every defeat into some kind of a victory, remembering that the best victory is to have kept your courage, your equanimity and pleasantness Everyone will admire you for that

4. Run these flags up on your masthead and *keep them flying*:

Equanimity ("Let's stay calm ")
Resignation ("Let's accept this setback gracefully.")
Courage ("I can take this, and more.")
Determination ("I'll turn this defeat into victory.")
Cheerfulness ("Bowed but not broken")
Pleasantness ("Still good will toward men")

The Story of Two Men

You should know about these two men, and remember them as you deal with your problems They are as different as night and day One of them, Sam, is the perfect example of emotional stress The other, William, is the epitome of emotional stasis.

Sam, King of His Own Stew

Sam's world, if someone other than Sam inhabited it, would be a dreamland The *only* bad feature in Sam's life is his own condition of emotional stress, which, mind you, Sam is not accountable for, since he got it through bad family education

Sam is a well-to-do farmer and a director of a bank in a neighboring town Sam has a wonderful farm which he inherited from his father. From his father, too, he received a grouch of the kind fairly common among "successful men " I don't think a grouch like that is inherited, it's acquired by living in the shadow of someone else's grouch His mother was grouchy too, I imagine she got it living with Sam's father, or, perhaps, his father married the woman because she had the type of grouch he felt went with a solid citizen.

In spite of the fact that Sam had never had any hardships,

no financial losses, no extraordinary family catastrophies, no blows beneath the belt from unkind fate, he, nevertheless, walked through life as though utter and complete ruin were just around the corner

On Sam's side of the street, the sun never shone. Sam was like the man walking in a park telling a friend how unfortunate was his every move, saying, "Some people buy bonds – they go up Some people marry – she is a princess. For me – everything goes wrong " Just then a bird flew overhead, the complaining man took out a handkerchief and carefully cleaned a fresh spot from his lapel. "See?" he explained, "For some people they sing "

I have asked Sam's family, and Sam's neighbors, whether they have ever heard Sam say a hopeful, pleasant word, but none of them ever have Oh, yes, I almost forgot. His wife thinks that Sam did say something pleasant the first year they were married, but that was so long ago she is no longer sure.

To illustrate how Sam's disposition operates, I drove into his farm one day in July just about the time the oats were ready to be cut Sam had 60 acres of the nicest oats you'd ever want to see I said, "Sam, that's a wonderful field of oats you have there " Sam answered mournfully, "Yeah, but the wind'll blow it down before I get it cut "

I watched the oats Sam got it cut before it blew down He got it threshed before it burned up. And I knew he received a good high price for the oats. So the next time I saw Sam I said,

"Sam, how did the oats turn out?"

"Oh, I suppose good enough," he replied, "But a crop of oats like that sure takes a lot out of the soil "

Another year he had corn that ran 165 bushels to the acre. Before it was harvested, Sam was in my office and I said, (conversationally, as well as to see whether Sam was running true to form), "How's the corn this year, Sam?"

And Sam said, "Terrible! It's so heavy I don't know how we're going to get it in."

At another time in October, I met him on the street. It was one of those beautiful dreams of an October day that we so often have in Wisconsin With what I thought was contagious enthusiasm I said,

"Hello, Sam. Wonderful day, isn't it?"

Sam's answer was "Yeah, but when we get it, we'll get it hard "

These outlooks are typical of Sam

You will remember in Chapter 4 we talked about the type of emotionally induced illness that Sam has People with Sam's emotional color *always* develop emotionally induced illness, certainly by their middle fifties. And when they get it, they get it, like Sam's weather, *hard*. Very often they are invalids for the rest of their lives

William, King of Living

The other man to contrast with Sam is a man still to be seen on the streets of our town. His hat is respectable but old. His coat is clean but worn His smile is sincere, the look in his eyes is glad He is called William

William, too, inherited a good round sum from his father, just as Sam did And in an adventurous sort of way he tripled it and quadrupled it, and enjoyed it, as only William knew how to enjoy.

Then came 1929 and 1930. The bankers (and one was particularly bad) set upon William gleefully, and cleaned him out I am told, on good authority, that with a little lenience William could have come through the depression in good condition But this one banker snapped up what William had, while the snapping was good. William went on W P A.

I stopped one day when I saw him digging in a ditch with a string of other men William was 60, and he hadn't worked at manual labor for years, if ever When he saw me he smiled a great big smile and rested on his shovel

"You might almost say," he laughed, "that you are watch-

ing an honest man earn an honest dollar. But it isn't quite true. I earn only 79 cents of it The rest of the time I lean on my shovel and talk But then that's what the Government wants — it's not so much to get this ditch dug as it is to help the public's morale, and so the 21 cents I don't earn shoveling, I make up for by boosting the general morale of these fellows working here with me"

All the fellows down in the ditch laughed with him They had been feeling good ever since he joined them He always made everybody feel good.

William still had a few irons in the fire and he made a little money over and above his W.P A. intake But then both he and his wife, whom he adored, developed an abdominal malignancy at the same time

Each had an operation He lived and was cured But he lost his wife And it took all his recent savings to pay the hospital Through the whole thing, William never changed; he never talked about himself, nor complained

He had a pleasant story, an interesting anecdote, cheerful greetings, whenever anyone came to see him in his hospital room His wife's death must have made a great hole in his life, but he never let on He filled it with the old smile which shone now beneath the battered hat that was all he could afford. Here and there, he made a little to live on, one way and another, but always happy

Then he developed a malignancy of the larynx. More operations I'd see him in the office, and he had so many interesting things to tell me I had difficulty finding out how *he* was And, miraculously, he was cured of the malignancy in his larynx He still goes around the town, smiling, interested in everything, and interesting everyone in something

Probably the most remarkable thing about William is this The banker who cleaned William out in the depression has never had a friend I have never heard anyone say a good or kind word about him — except William

William thinks the banker is a man of great capacity, and told me once, "People think the man has no heart, but he is

kind, really. Nobody seems to pay any attention when he is kind, but they sure talk about it when he does the kind of thing a banker necessarily has to do."

One of William's neighbors, having admired the manner in which Will kept his head up, the cheerful smile on his lips, and the friendly, unwhining greeting through all his misfortune, stopped Will one morning and said, "William, if you'll excuse me, I want to say simply that I admire the way you come through misfortune after misfortune. I'd sure like to know your recipe. Would you mind giving it to me?"

William smiled warmly. Like everyone else, he liked a pat on the back.

"Well, I'll tell you. A long time ago I sat down to try to figure out my next move. It didn't look as though there was another move. I thought a long time. And then the answer came to me. I got up and repeated it to myself, 'William, you might just as well cooperate with the inevitable.' And that's what I've been doing ever since — cooperating with the inevitable."

The Importance of Handling the Average Moment

Let me give you one more example of the general procedure for you to follow, this time an example of how to handle, and how not to handle, the "nasty little moment."

Some time ago, I chanced to go Christmas shopping with two ladies in the department stores of Chicago. These two ladies were twin sisters.

The first of these sisters had left a chronically-ill husband at home, and had a boy fighting in the Far East. The second sister had nothing in her life to cause a ripple.

The first sister knew the art of enjoyment, that is to say, she knew how to attain emotional stasis. She made herself enjoy the entire day.

When we went into a department store, she would look around at the holiday decorations in genuine pleasure and

say something like, "I just love to shop at Christmas, the stores are all so gay"

If we stopped at a counter looking for some particular article, she would exclaim with pleasure, "My, they have such a wonderfully rich selection of everything. I've got a better choice of better things right here than any Roman Empress ever had," or, "Oh, wouldn't Charles just be thrilled to death with this? Why it just suits him to a T"

We had lunch in a department store restaurant. She said as we entered, "I always like to eat in here, it's so nice and big, and the meals are always so delicious" She enjoyed the whole meal, and we started out again with a neat tip to the waitress.

Her twin sister, on the other hand, had no reason for acting differently, except her acquired habit

As we entered a store — the very same store — she looked around in horror, "Just look at all the crowds. I just hate to do Christmas shopping"

At a counter she would say, "They have so much you just don't know what to choose They simply have too much Last year the thing I got Charley he didn't like, and I know he wouldn't like this either. And look at the prices. It's positively robbery, that's what it is"

In the department store restaurant, nothing was right or satisfactory. She complained to the waiter of every bit of food that came before her, and finally she became irritated because the waitress reached in front of her She made a scene with the manager that I thought would never be over. She entirely spoiled her own meal, and she could have spoiled her sister's and mine if we had not (knowing her) found her intensely amusing.

The next day the pleasant twin felt fine and chipper, and was about her usual work But the self-made battle-ax was sick abed with a migraine headache, as I knew she would be. "Why in the world," she grumbled belligerently, "do I get these headaches? Oh, oh, I'm so sick"

A SUMMARY OF THE AIDS FOR DEVELOPING EMOTIONAL STASIS PRESENTED IN CHAPTER 8

I. Practice thought control. When you catch yourself starting a stressing emotion like worry, anxiety, fear, apprehension, or discouragement, *STOP IT* Substitute a healthy emotion like equanimity, courage, determination, resignation, or cheerfulness.

II Carry this idea every minute of every day· *I am going to keep my attitude and thinking calm and cheerful—right now*

III When the going is good and smooth, allow yourself the delightful feeling of being happy.

IV. When the going gets rough

1 Stay outwardly as cheerful and as pleasant as you possibly can Lighten an awkward situation with a bit of humor, wry though it may be

2 Avoid running your misfortune through your mind like a repeating phonograph record Above all, do not let yourself get irritated, upset, or hysterical.

3 Try to turn every defeat into a moral victory.

4 Run these flags up on your masthead and *keep them flying*

- ***Equanimity*** **(Let's stay calm")**
- ***Resignation*** **("Let's accept this setback gracefully.")**
- ***Courage*** **("I can take all this and more.")**
- ***Determination*** **("I'll turn this defeat into victory.")**
- ***Cheerfulness*** **("Really, I'm holding my own," or, "Bowed but not broken.")**
- ***Pleasantness*** **("I'll still have good will toward men.")**

---

9. TWELVE IMPORTANT PRINCIPLES TO MAKE YOUR LIFE RICHER

Your maturity and emotional stasis will take a great step forward if you can maintain certain attitudes toward several of the important broad aspects of living. These all involve departments of living that seem to give many people considerable trouble, departments of living in which people are apt to react with typical immaturity and develop much emotional stress

It is best to formulate a definite mature plan of action in handling these aspects of life that cause people so much stress Let us examine such guiding principles They will save you an immeasurable amount of stress

1. *Keep Life Simple*

Keep yourself responsive to the simple things that are always near at hand and readily accessible. Don't get in the habit of requiring the *unusual* for your pleasure, a failing one is very likely to find in people having more than a little money or education.

Life becomes a tremendously interesting adventure if you learn how to get your pleasures from the world that lies immediately before your five senses.

How easy and simple it is to live enjoyably when the simple, interminable blue of the sky, with its long wisps of white cloud, becomes a pleasant thing to behold, a thing of beauty that thrills you every time you care to look skyward How easy to live when the grain in the panelling of the door arouses your admiration, or a scrambled egg satisfies, or plain Mrs. What's-her-name down the street becomes an object of keen interest because of her absorbing preoccupation with her lawn.

How simple and how nice to live like Gilbert White of Selbourne, like W C English, John Muir, or Thoreau, occupied with the constant, wonderful world of color, sound, smell, and sight that is available every single instant. If you tune yourself to it as Walt Whitman did, your every moment is a walk down an avenue of ready-made enjoyment.

W. C. English, a remarkable man. One of the finest men it has been my great fortune to know was a man who made himself entirely happy in the world that lies at the tips of our fingers, visible to our immediate sight, and always within hearing His name was W. C. English.

I met him when I was in college, he was already in his sixties W C. English was John Burroughs, John Muir, and Gilbert White of Selbourne all rolled into one. He enjoyed everything around him. His life was simple, his only needs were eyes to see, ears to hear, nose to smell and fingers to feel.

He needed no automobile to travel He could see more afoot. And in a mile afoot, he found infinitely more wonder than most people find in ten thousand miles on wheels. He knew every plant, every bush, every tree, by its scientific name, as well as its common name He knew the places where the pink lady's-slipper grew, where to find the fringed avens He knew what plants the Indians used for food, for paint, for other purposes; he knew how to prepare them The few people who have eaten one of his meals of wild Indian

vegetables beside an oak fire on the bluffs of the Wisconsin River have had one of the rare experiences men can have

He knew the insects They astounded him. Through personal observation he knew the life histories of some insects that were known to no other man. He enjoyed the birds and could spot and name them from far off The Wisconsin River Valley he knew as no other man has known it. He thoroughly knew his world, and was entirely at home in it At night he was at home with the stars and the sounds of the forest

He showed me how to catch sight of a wild deer, where to find the badger, how to trick a fox into showing where he lived, where to expect a rattlesnake and how to pick him up He knew about geology, fossils, and caves

In all this, he was not a pedant, but just a smiling, pleasant man with his hat tipped back on his head, striding along easily with long strides, enjoying a world in which *everything* interested him.

I have seen him spend a whole afternoon watching a jumping spider He lectured when he needed money, or wrote an article But he had no great need for money, because he was richer than Henry Ford and John D. Rockefeller combined. He would chuckle when he heard of other people's misfortunes, asking why people should be foolish enough to cause themselves so much trouble. For him the people he met were as interesting as the plants and birds, and he treated them with the same solicitude

He was one man who was truly loved and respected by all who knew him. His wife always said that she adored him more every year They lived 60 years together.

We can't, of course, be W. C English's, or live like him But the point is, we should cultivate the ability to find our major and constant enjoyments in the common things which are always at hand To be able to do so gives living a most tremendous lift whose value cannot be overestimated Developing a capacity for enjoying what is at hand, of course, carries with it simplicity in living

Now, mind you, it doesn't preclude soaring into the heights,

but it makes soaring what it is, namely, a *soaring*, after which one again returns to set one's feet on the terra firma of the world of our five senses, rather than making soaring a permanently insecure detachment from which there is no return because there is no place to return to.

2. *Avoid Watching for a Knock in Your Motor*

Among the world's most miserable people are those who cannot get over the idea that they have something terribly and intrinsically wrong somewhere — something very rotten in the state of their constitutions. They are forever miserable, listening for a possible knock in their motors, a grinding in their differentials They belong to a tremendously large organization — the "Symptom-a-Day-Club," in which it is required that the members start the day by waking up and immediately asking themselves, "Where am I sick today?"

Bellyachers are miserable people deserving our greatest sympathy and help They have gotten the way they are because of

(1) *Parents who were chronic bellyachers,* and who gave their poor miserable children the idea that our bodies are hellholes of aches, pains, and agues.

(2) *Doctors who gave them an organic substitute explanation for their E I I* These doctors were either inexperienced or were thinking more of their fee or their time, than they were of the patient

(3) *An interesting physiological fact* if any of us stop and ask ourselves, "Where do I hurt?" we can by self-examination find some place where we hurt The bellyacher by habitual self-examination is constantly finding these places and playing them for all they are worth All one needs to do to turn one of these insignificant, unimportant pains into something genuinely severe is to keep one's attention on the pain It soon grows ten times as severe

A common fuel for the bellyacher's fire is a common type

of muscle-sheath and tendon pain known as fibrositis Fibrositis *never* turns into anything serious. Although it is primarily an emotionally induced symptom, it is aggravated by muscular exertion, and by temperature and moisture changes It is exceedingly common, and there are few people who do not have it.

Some people, like myself, have fibrositis somewhere practically all the time. The bellyachers manage to squeeze every ounce of pain out of their fibrositis Not knowing that it is *merely* fibrositis, they add apprehension to it; if the fibrositis is in the chest, they are sure they have heart trouble, if it is in their scalp, they have a brain tumor, if it is in the abdomen, they have the cancer that is the beginning of the end

Sometime when you haven't anything else to do (God help you), center your awareness for an hour on the sensations that arise in your throat. At the end of the hour you will understand how a person who has allowed himself the apprehension that there is something wrong with his throat can feel so sure that his throat is plugged, swollen, inflammed, dripping, abscessed, cancerous — in short, fulminatingly catastrophic — beyond anything the medical profession has ever witnessed before What a sneering look of contempt the M D. receives who assures such a throat searcher that he has nothing wrong with his throat!

There are a terrific number of people, physiologically sound but emotionally unsound, who have developed the idea they are unwell, and who no more expect to be well in the future than you and I expect to grow younger. Sad to say, in the development of this idea they have often been ably abetted by some lazy physician who offered them an easy organic explanation for feeling the way they do

For instance, I had as a patient a lady who was sure she had some unusual fluid trickling about in odd ways in her abdomen She had already had three major operations. She had a small myoma of the uterus that actually amounted to exactly nothing.

She had been told by a surgically-minded physician that the

myoma was the cause of her trouble and should be taken out. I thought I was doing pretty well in allaying her fears and explaining her feelings. Then, in a moment of doubt, she returned to the surgically-minded individual of the first part.

He operated, assuring her afterward that not only had he removed the offending uterus, but, that through his magnanimity, her ovaries, too, would never after cause her any trouble. She felt well and was fairly happy for two months. Then she had a new set of complaints

Now her thinking was, "If my former trouble was caused by *something* that had to be removed, this one is, too" Now rational treatment is even more difficult than it was before I am trying again, but I'm afraid the idea is pretty well fixed in her mind that she has a diseased organ again, and is never to be well *She never expects to be well.* She is a sitting duck for the next physician who suggests an operation

But it isn't always the doctor's fault Josephine was a pretty maiden lady who was sacrificing herself to take care of her mother and father. The plans she had once made for her own adventure in living had been laid aside On the surface she appeared pleasant enough, but, fundamentally, she rebelled secretly against her lot.

She had an ulcer, and she centered all her complaints around that. Her complaints, and her parents' complaints, became so wearing that her physician consented to an operation for her ulcer Now, several years later, she is just as miserable abdominally as she was before, this time without an ulcer The physician was literally pushed into an operation. He knew he could remove her ulcer, but he also knew he couldn't remove the situation that would produce new abdominal difficulties after the ulcer was removed

Never before in history have people been bombarded by so many warnings of ill health as we are today. The radio and television are constantly suggesting symptoms in order to sell a remedy which even the truly sick do not need Anyone in a properly receptive mental state can feel the necessary symptoms and buy a bottle of the stuff the commercial on

the radio or television makes so alluringly curative Daily papers and magazines whoop up a disease and recite enough average feelings as symptoms, so that anyone can imagine he has the disease, or that he soon will have it Never before in history has a public been made so aware and so afraid of the diseases which our clay is heir to This constitutes a tremendous factor in the onset of emotionally induced illness.

A person may have symptoms from wrong emotions. If he pays no attention to these symptoms, either because he knows what they are, or because he has other more important things to think about, he cannot be said to have emotionally induced illness. But the moment he gets apprehensive, and concerned, about the symptoms he feels, and allows them to make him miserable, he has emotionally induced illness.

One of my patients was an executive of a large concern He was always under terrific pressure, with large responsibilities. As he went about his work, he frequently felt a tightness in his chest, and because it was not actually uncomfortable, and because he was intent on his job, he paid no attention to it but went on his way.

During a routine physical examination he mentioned the tightness to the company doctor, who told the executive that he probably had early coronary heart disease. From then on the poor fellow was licked, he thought of his heart all the time, and became extremely apprehensive whenever the tightness appeared He became unable to work and was a complete invalid for a year. It took numerous examinations by the best heart specialists in the country, and very intensive assurative therapy, to get the man back to his work Finally, he could again evaluate the tightness for what it was – a manifestation of the harrying and worrying, anxiety and hurrying, that was a part of his job.

But be sure you are organically sound. Here is the way to take care of your health Have a good thorough physical examination every year by a sensible doctor, to assure yourself that you are sound, or practically sound Between the yearly examinations *believe* you *are* sound. It something

turns up to cast any doubt in your mind as to your condition, go to the same doctor If your fear turns out to be groundless (as fears usually do) make nothing further of it It is so much more enjoyable to know that you are well than to believe there must be something morbidly wrong with you in spite of what the doctor says

We saw in Part I how a constant, morbid fear that there must be something wrong will eventually produce E I. I.

3. *Learn to Like Work*

The chances are that you, like most of the rest of us, have to work for a living. As with every other necessary factor in your life, you might just as well like it and avoid making trouble for yourself by not liking it.

A person who has convinced himself that he doesn't like work has a monotonous repetition of unpleasant emotions while he is working, and he is well on the way to an E I. I. There was a time when I used to suggest to a person who didn't like the type of work he was doing that he find himself a job he did like. But I found that usually such a person didn't like the second job any better than the first The root of the matter was that he just didn't like WORK — period.

It is perfectly obvious that anyone not liking work will have a dreadful set of emotions while he is working. And, as is usual with such people, they intermittently find an excuse for not working Then the economic pressures that go with no income produce an even more dreadful set of emotions.

The loafer is not the happy man. There has long been a myth, half-believed in every generation for centuries, to the effect that the lazy loafer is a happy person. A happy, lazy loafer is such an outstanding envy to the folks who slave for a living that he draws a great deal more comment than most human beings do, and more than he is entitled to. But he is, nevertheless, a very definite exception to the rule. The rule is that most lazy loafers are miserable people Of 25 lazy

loafers I know personally, only one is outstandingly carefree and happy And he happens to be a very energetic man, he is merely energetic in unproductive ways.

Unless, then, you expect to end up either in prison or on relief, you had better persuade yourself that you like work Dislike for work carries with it unpleasant emotions in more ways than one

We have our likes and dislikes because they were suggested to us, sometimes boldly and outright, sometimes insidiously and slyly. It is very easy, especially if you are still young and not too strongly set in your ways, to keep suggesting to yourself that you *like* work The stronger and more frequent the suggestion, the better the "take" After a little practice, you can get up in the morning, pound your fists on your chest, like Tarzan, and yell, "Come on, work! Bring on the work!"

A young person in high school or in college is often desperately troubled and bothered about what kind of work he should choose, or what kind he is most adapted to Actually what choice he makes is not very important. Any person can do a number of things equally well, some people could succeed in any kind of work The important ingredient is that the individual *wants* to work. With that one quality, he will make a good doctor, a good plumber, or a good teacher Without it, he won't be worth having around at any kind of a job What's more, he will be a drug to himself.

If a person likes to work, and has learned the simple joy of doing something well, if he feels pleased at producing something of value to society, he will be generating pleasant emotions for himself all the time he is working, as well as for the chap who hires him.

A person who has more than enough work to keep himself occupied, and who likes work, seldom develops E I. I. He does not have time to "think." "Thinking" usually means thumbing mentally over troubles. I mentioned earlier in this book that the group in my local society who have E. I. I. least often are the farmers' wives who have eight or nine children,

who take care of their homes, and also work on the farm They don't have time to "think" or to get sick. As one patient, who had too little to do, put it, "I'm all right until I start to think."

Work is therapy Liking to work is a wonderful prophylaxis against E. I I.

4. *Have a Good Hobby*

A fascinating and creative interest apart from your work is an absolute essential for happy living Two of our basic needs are the needs for new experiences and for creative effort A good hobby supplies them both.

Without a hobby, spare time becomes a boring span of time during which our minds are more and more apt to cogitate upon our troubles

There are any number of interesting and creative hobbies; I do not have to name them for you On the whole, I would say that the creative hobbies are more satisfactory than the collecting hobbies But collecting hobbies are not bad

I remember one patient, a lady in her early seventies, who for 40 years had carried on a monologue of how miserable her abdomen felt She could occupy hours telling the miserable stories of her visits to the country's greatest doctors, what each did, what each said, what each tried, and how her abdomen emerged victorious each time and continued unimproved or even worse than it had been There were embellishments and details which varied a bit with each recounting, but even these became old and worn to the immediate family, who were tired of the tale and probably tired of seeing the raconteur live on to tell it yet again Her children avoided her to avoid hearing the story *ad nauseam*. She added their alienation to the current chapters of her miserable saga.

On one visit, as I listened to her extended story, as I had listened many times before, I managed to get a word in edgewise, saying, "Why don't you get yourself a hobby?"

I received no answer at the time — she went right on into her transverse colon and all the mischief that lay therein But to my surprise, she called up two weeks later on the telephone and said, "I've got a hobby."

"Good," I answered, "What is it?"

"Button collecting," she replied.

My immediate feeling was, "Oh, pshaw — button collecting!" But since then, I have watched her collect buttons, and I think I'll take it up myself sometime It has done the intestinal lady a world of good In fact, it has made a likeable lady out of her

Now when she hears about a certain button, she will go out searching for it — perhaps, the search may take many days When she finds the button, she puts it on a card with similar buttons and puts the card up on the living room wall. Now when visitors come to see her, she actually finds it more to her liking to tell them the stories of the buttons than the story of her miserable bowel Her family is drifting back, interested, also, in the buttons.

One day the lady went to Madison to see the Governor of Wisconsin, at that time Governor Goodland He was 84 years old, she 74 When she had been admitted to the Governor's presence, she said, "I've come, Governor, to ask you for a button from your vest to put in my button collection "

"I'll be glad to give you one," the Governor replied, "But I haven't anything to cut a button off with."

The lady had foreseen that difficulty She promptly extracted a scissor from her handbag and handed it to the Governor. That worthy man proceeded to cut all the buttons from his vest and all the buttons from his coat.

As he handed them to the lady he said, "There you are, madam. I'd give you more, but I have to get home "

➧ 5. *Learn to Be Satisfied*

There is one understandable excuse for being dissatisfied· when there is obvious negligence, dishonesty, carelessness, or incompetence on someone's part, for example, your Con-

gressman's. But it is obviously *useless* to be dissatisfied when a situation cannot be altered, or when dissatisfaction can be seen to be entirely useless.

For instance, you meet people who are obviously disturbed by the weather and, just as easily, by everything else Living in chronic dissatisfaction is about as close to living in Hell as anything the world has to offer. The real tragedy is that it is so useless and unnecessary.

You remember the twin sisters I went Christmas shopping with. The one found it just as easy, and much more pleasant, to be satisfied with all the things her sister found it necessary to be dissatisfied with.

This habit of dissatisfaction is often acquired innocently by a child living in a family where one or both parents are continually at odds with everyone and everything else.

Other people acquire the habit of dissatisfaction in a different way Albert was a boy who was awkward and "queer." The other children loved to use him as a scapegoat for their cruelty Albert gradually came to suspect and dislike all other people. He came to dislike things other people liked or thought important. Today he registers dissatisfaction with everything and everyone, excepting himself, whom he is unconsciously defending in everything he does and thinks.

A few others become habitually dissatisfied because a series of misfortunes has soured them on everything, and they weren't originally equipped with the fortitude to rise above it This kind of thing is apt to happen to the man or woman who picks a lemon in marriage and then has to live with it. There are so many people attached, really tragically attached, to marital lemons that it is a great credit to *homo sapiens* that so few murders are actually committed. Henry once told me the secret, and Henry knew, for he was irrevocably riveted to about the sourest lemon I ever saw. Well, the secret, Henry said, was to cultivate a taste for lemons.

If I ever have enough money to erect a statue to anyone, it will be a statue for Henry. Henry, through 33 horrible years, took a terrible, unmerciful beating; while he took it,

he maintained a cheerful disposition, a warm, friendly outlook on the world and an unusual degree of good will toward men There have been saints who were not half so deserving And many men like Henry are flowers born to blush unseen, and waste their sweetness on the desert air. I hope someday I can raise enough money for a statue, or a sculptured group to praise them all.

A classic example of dissatisfaction. A young lady patient of mine had to be hospitalized with emotionally induced illness. She was a mess Her underlying trouble was that she had become thoroughly dissatisfied with *everything* in her life. She had been educated in an excellent eastern school to be a secretary and had a wonderful position in Washington, D C, when World War II came along and brought a certain young handsome army captain in and out of the office in which she worked

One and one add up to four — I mean two, at first — they were married and had two children by the time the war was over, over, that is, for everyone but Ellen Then she found herself living in a trailer, bringing up her children in a trailer (soon there were three)

The first time I was called to see her, she was in bed at one end of the trailer, and the captain stood wringing his hands at the other end She told me then, in no uncertain terms, and in a voice that made the captain's fingers white, that she didn't like housekeeping "A-tall," AND she didn't like living in a TRAILER, OR keeping house in a TRAILER, AND bringing up children in a TRAILER was TERRIBLE, AND (this she didn't say, but implied) she wasn't sure she liked her husband in a TRAILER — AND she CERTAINLY wished she had stuck to her secretary's job in Washington.

I was sure, from other remarks, she was dissatisfied with her physician since he wasn't getting her over her nausea and dizziness. She welcomed the idea of the hospital for the simple reason it took her out of that so-and-so trailer Without giving her a diagnosis, I *ordered* her (we were past the sug-

gesting stage) to send to the library for the four Pollyanna books they had.

Now, many people may consider them silly books, but usually the people who call them silly are on the defensive because of a rotten disposition, and they half-way know it Anyway, the young lady read the books I didn't say a thing; at the moment, she was enjoying the hospital.

One morning she volunteered her own diagnosis I had known all along she was bright enough. She said, "I've been thinking, or trying to think Good Lord, what a little fool I am. I've been dissatisfied with keeping house, I've been dissatisfied at having to bring up children in a trailer, I've been dissatisfied with my husband because he couldn't provide something better, I've been dissatisfied because I'm not a secretary with a good job

"All right, Doc, I've been thinking — I'm a damn fool I can't change this, at least not right away You and Pollyanna win; what am I making myself miserable for? Here's the answer: Keeping house in a trailer is, after all, very easy and no trick at all If Jud and I don't like the view out of our living room window, we can move the trailer and get a better view.

"As for bringing up children in a trailer, there is a great expanse of outdoors for them to run around in, and you don't get that on 33d Street I'm going to make a go of it, and I'm going to start planning a little house, the kind Jud and I want some day AND — bless me — I wouldn't trade this for the best secretarial job in the world."

You see, *she had the idea, the simple idea, that it's easier to be satisfied than dissatisfied, and much healthier*. She read all the Pollyanna books — I guess there must be about 16 She quickly learned the art of being satisfied. She evolved her own little mental tricks and had a lot of fun doing it. It wasn't long before she was perfectly well.

As I say, she really had a great deal of good sense. She soon found happiness in her family Finally they moved into the house she and Jud had dreamed of. I like to visit them to see

how pleasant and cheerful a family can be when they understand how important it is to stay that way

It's not hard to feel good. In regard to satisfaction and dissatisfaction, remember two things.

First, it is as easy, and much pleasanter, to find elements of satisfaction instead of dissatisfaction in the daily run of events All that is required is *the will* to feel satisfied. The wise individual knows that life is one damned frustration after another if you allow yourself to be frustrated, but it is also one satisfaction after another if you are determined to be satisfied. *Trouble is where you make it*

Don't want what you can't have. Secondly, another trick for dispelling dissatisfaction is to quit *wanting,* wanting this, wanting that This, of course, goes back to our first aid, which was cultivating the simple and the things at hand I knew a man of moderate means with a large family, who made himself miserable wanting things he couldn't afford First, he longed for an expensive camera He worked himself into such an irritation of desire that he finally bought it, although he could ill afford it, and his family could afford it even less. When he had that, he began to fairly itch for a power saw and could think of little else until he had that; next, he had to have a drill press. And so it went on He was always dissatisfied with what he had and thought he needed more. His family, meanwhile, were deprived of much they really needed

It would have been just as easy for this man to have found pleasure in things that it was easier for him to have. His education had been faulty, there had been no one to show him how to find enjoyment without expense. With a little help he might have learned to enjoy the beauties and wonders which surround us on all sides Had he invested a dollar for a copy of Gilbert White's, *The Natural History of Selbourne,* he would have found there is more in a simple walk than in a houseful of gadgets

Learning the trick of being satisfied goes a long way toward making us well-adjusted, efficient, happy, and the possessors of a rich and rewarding life

6. *Like People and Join the Human Enterprise*

In a world where people live next door to each other, rub elbows in the subway, and meet bumper-to-bumper on the highways, it is disastrous to emotional stasis to take a dislike to the race and to the individuals who comprise it. Letting people get in your hair is far, far worse than getting bats in it There are many more people than bats.

Some people dislike everybody. It is surprising in meeting people with E. I I how many people there are in the world who dislike practically everyone, from the president, whom they have never met to their next-door neighbor, whom they wish they had never met! They have nothing complimentary to say about a single soul, and are very derogatory toward everyone. Their immaturity has isolated them in a shell Yet they *have* to live in the world of people The extent of their cooperation in the affairs of people consists in getting what *they* require out of society

One of my patients was a man who had risen to be the superintendent of a manufacturing plant employing six thousand people. He was sick. In the beginning of his illness, he would suddenly be overcome by a spell of weakness, trembling, dizziness, and vomiting This occurred whenever he went to his office, which he shared with the other assistant manager. These spells became more and more frequent, and, before long, he began having them at home whenever he merely thought about his office Naturally he lost weight, and both he and his wife were quite certain that he had some serious malignancy and his days were numbered.

The root of his trouble was that he didn't like the other assistant manager who occupied the same office with him. He said, "The first time I saw him, I didn't like him. I didn't like the way he combed his hair I didn't like the way he whistled through his teeth, and the way he always started every sentence with the word 'listen,' and ended every paragraph with 'don't you know.' "

On questioning him further, I learned that he had never liked anyone. He hadn't liked his father, his mother, his brothers and sisters. He couldn't say that he cared for his wife. In short, he had never liked anyone.

He was a surprised man to find that he recovered from his illness when he began to suggest to himself the things he could find likeable about the man he had to work with, to assure himself that this man had likeable qualities, and to take the trouble to cultivate him and take him out for a round of beers.

Most people's peeves are an expression of their dislike for other people. I asked one of my patients to write down a list of his peeves, since he seemed to have so many. He filled out both sides of a sheet of typewriter-sized paper.

The first peeve he listed was "people chewing gum." "I can't stand anybody chewing gum," he said, "It just makes me grit my teeth." His second peeve was, "My wife rocking in a rocking chair. I just want to jump up and down and scream when she does that." His third peeve was, "My daughter playing the piano." And so on, and on. You can imagine how miserable his peeves must have made his family.

These dislikes are essentially childish. Dislikes like this are childish arrests in the selfish, self-centered attitude typical of childhood. Because people so afflicted are in their shell, they either never make friends or they drop the friends they start to make. This they blame not on themselves (Heaven forbid) but on the other people, whom they regard as being incapable of friendship. Next, on finding themselves isolated, they begin to pity themselves and to feel persecuted. They become hypochondriacal and develop deep-seated inferiorities. In all these ways, in addition to the plain irritations which other people cause them, these individuals lead a miserable life.

One of the finest sides to living is liking people and wanting to share actively in the human enterprise, the sum total of the effort the human race is making to get out of the jungle state and frame of mind. The greatest pleasures come by giving pleasure, to the fellow who works with us, to the chap

who lives next door, or to those who live under the same roof

There is no such thing as an "individual" in our society Each one of us is an "individual-community" If everyone in the United States were to begin today to live entirely as an individual without the materials and services he receives from the community (the people around him) there wouldn't be more than a couple of hundred people alive at the end of a year.

Entering consciously into this human enterprise, feeling one's self a part of the community, and looking upon one's self as an "individual-community" is an important element in maturity.

7. *Get the Habit of Saying the Cheerful, Pleasant Thing*

There are some people, like Sam, who have never been heard to utter anything but a jarring note. Such a note ruins the present moment, a steady stream of them turns the whole day into a junk pile Some people do it regularly; usually one hears it from the very high and the very low The very low think they ought to gripe, so they gripe The very high think they should sound worthy of their position, so they gripe at the taxes and the political opposition; they lambaste everyone under them

Hardly a moment arises during an entire lifetime that wouldn't benefit more by a sally of humor or a cheerful lift than by a mean barb or a sharp gripe. I know executives who carry on under tremendous pressure as affably and kindly as a girl skipping down the street. They are the boys who get along and stay out of the hospitals

On the other hand, there is the great-tycoon variety They snarl and hiss and backfire, slugging everybody verbally — in short, making constant, ugly asses of themselves You do not have to envy this great tycoon type, gentle reader, this constantly enraged bull who paws and bellows. You may be sure he is feeling just as miserable as he sounds. In his climb up

the ladder of success, he is just as miserable on the top rung as he was on the bottom rung The added difference is that on the top rung he is dizzy with his own eminence, and that starts another immature rush of emotions that gives him, as well as those around him, a pain in the neck.

Get up on the right side of the bed. Get the habit of starting out the day right A neat little trick is to look at your husband, or your wife, when you are both awake, and, even if it is an overstatement, say, "Good-morning, dear; you look fine this morning"

The next neat little trick is to go to the window, look out, and in a beautiful baritone, or soprano, that reaches to the end of the avenue, sing, "Oh, What a Beautiful Morning" Should it be raining, you say enthusiastically, "Ah, what a fine rain. Certainly good for the soil"

Sounds a bit silly, of course, but it pays off Positively the easiest way to lift your mind out of the mud is to dash off a series of pleasant remarks, or still better, a good funny story. The more adept you become in pleasantries, cheerios, and humor, the easier it is to stay out of despondency, frustration, and E. I I Incidentally, good humor is a quality which endears you to other people No one loves a crepe-hanger. Everyone likes to have someone around who has a sense of pleasantness and humor.

Be pleasant to your family. It is particularly important in family life to develop the habit of pleasant conversation when the family is together Do not, for your own, your children's, or your digestion's sake, make the family meal a recitation of troubles, anxieties, fears, warnings, and accusations. And what is more important, don't let the feeling pervade your family that everyone is so taken for granted that a pleasantness or kind word is unnecessary The crabbed note that clangs daily in so many families is a good foundation for many of the neurotic characteristics of later life

A sense of humor is a wonderful adjunct to common sense. There are various degrees and varieties. Practically everyone can develop a sense of humor if he goes after it

One of our town's clergymen was about as humorless as a dried apricot Moreover, it was very difficult for him to engage people in a conversation He gradually overcame both defeats in this way every day he read a good story and memorized it The next day he would tell his story to everyone he met. Every day he would do the same Usually the person to whom he told his story gave one in return. Gradually he came to recognize a good story when he heard one, and gradually he could pull a story out of his bag for almost any occasion He became known around the country as the clergyman with the good story. People were happy to see him approach.

8. *Meet Adversity by Turning Defeat into Victory*

Many people are precipitated into E. I. I. by some adversity Everything they had appears at one moment to have vanished, and they are completely at a loss to go on. Futility and frustration are piled on disaster The underlying crack in most of the people who give way beneath adversity is the immaturity of selfishness and egocentricity The death of a person near to them is calculated in terms of what it means to them, personally, in the way of services lost

One poor woman who had always been highly selfish and self-centered became hysterical after her husband died, to the point where she insisted that her son withdraw permanently from college to keep her company "Otherwise, I'll be alone here! I can't be all alone! I've got to have someone here!" and so on. No real thought or kindness for the man who had passed away, or for the son whose life she was continuing to ruin.

Do you remember William — King of Living — we talked about in chapter 8? At the time his wife died of a malignant disease of the intestines, he was in the hospital convalescing from an operation for the same thing No married couple had ever been more firmly attached to one another, nor more appreciative of each other's company than Mr. and Mrs. William had been.

He took the news of his wife's death thoughtfully. He considered it silently for a few minutes. Then in a very appreciative, straightforward tone, he began to tell of incidents which illustrated what a remarkable and fine person his wife had been. After that he never referred to her or her death He never bemoaned the fact that now he would be all alone. When he left the hospital to return to his two rooms, in which he was now to be alone, he did so without a mention that it would be changed or that the rooms they had called "home" would be without the presence of his wife

When I called on him there, he was just the same as before, he was just as cheerful, he was just as interested in the great wide world as he had ever been. He never dropped a note to indicate that his life was different now, or empty Soon he was out and around, talking to old friends (and everyone is his friend), apparently unperturbed

A few years later I met him on the street outside my office "Well, howdy, Doctor," he said, "You look as though you had to get somewhere fast."

"No," I replied, "No hurry, just a habit I'm on my way to see a type of patient one always hates to see — a woman who has been upset and in bed ever since her husband died four months ago." Then I added that few people were able to handle adversity the way he could

"It isn't hard to do," he said, "if you keep your feet where they belong — on the ground. When you can't change something — you'd better accept it, and figure out how you can keep living the best possible way When a man loses his wife, or a wife her husband, what is mourning but just plain feeling sorry for *one's self*? There are long philosophical arguments leading up to that last statement, Doctor, but you're too busy to hear them right now. I'll give them to you later." He laughed, and walked on

➧ 9. *Meet Your Problems with Decision*

In the multitude of practical problems you are obliged to meet in the course of living, you cannot possibly always be

right, or make precisely the move that would be to your greatest advantage. But if, by and large, you can act using the principles and aids you are reading about in this chapter, your mistakes will not loom large or be very important.

Furthermore, *it is better to adjust your thinking to allowing and admitting a few mistakes than it is to keep milling and turning every little problem over and over in your mind.* Doing that results in a troubled, apprehensive outlook that will certainly produce E. I I.

Of the total number of decisions we have to make, only a very small percentage will be improved as the result of long continued study and consideration. Also, a great many of the decisions fall into the same category as deciding whether one wants to buy the pink-flowered set of dishes, or the dishes with the gold design. These are decisions in which the issue is usually of a minor nature, either of two actions will do perfectly well

The best rule to follow, therefore, is to make your decisions without a long huffing, puffing, rumpus, and fuss. Decide what you are going to do about a problem, then quit thinking about it.

One of my patients had a severe recurrent fibrositis, so severe that she would be in bed with it at times for weeks. No type of therapy would do the least bit of good She was a very vigorous and self-assured individual, and I knew she would resent my telling her that her fibrositis was due to a wrong set of emotions. However, seeing her in a few of these attacks, I was certain that there was a recurring factor in her life that was responsible for her attacks

I was planning on how I could most diplomatically bring this to her attention, when (to my relief), she offered her diagnosis of her own accord, "I think I know what is bringing these attacks on, Doctor. You may disagree with me, but I am sure by this time that there is some sort of a connection. My idea may be all wrong, but I've noticed that every time my husband gets into one of his terrible scrapes, I get an attack of my pain and have to go to bed."

"You are perfectly right," I assured her, "I was just getting ready to suggest the same thing "

"Well, Doctor," the poor woman asked, "How am I possibly going to handle it?"

"You must, of course, continue doing your best to help your husband, and get the best help for him On the other hand, he has gotten himself into a particular rut which he is likely to stay in for some time Every time he precipitates himself into a mess, and you know he will continue to do so, *decide at that time what you are going to do about it, then make yourself quit thinking about it.* It is turning the thing uselessly over and over in your mind, even after you know what course you will take, that is the thing that brings on your fibrositis "

She practiced this simple instruction with understandable difficulty at first But it gradually became easier as she practiced, and the husband gave her plenty of practice. Finally, when the tremendous decisions came, which she always had feared would eventually come, she was well enough practiced that she could pass through them with a minimal amount of somatic disturbance, and had nothing nearly as severe as her old fibrositis

Some decisions just can't be made. In our living we are apt to come upon a piece of trouble (and it is usually a tough, large piece) to which there is no apparent solution. The important thing in handling this variety of trouble is to tell ourselves that *there is no solution other than to* QUIT THINKING ABOUT THEM.

Mrs K—— had a family of three children and a husband who had been drunk just about every day for fifteen years. The depths of misery to which that woman and that family descended are beyond simple description Every possible treatment and approach had been tried to break the man of his drinking habit. None had more than a very short beneficial effect For certain reasons, the woman did not wish to divorce him Her misery, and the children's misery, grew deeper and deeper

Then one day she came to an important decision.

She said to herself, "We had better give up the idea that Albert ever can, or ever will, stop drinking From here on in, I'm not going to torture my mind anymore over Albert or his drinking. We'll take care of him, of course, but we'll quit worrying about him Instead, I am going to devote every energy I have toward making the rest of my life, and my children's lives, as happy as they can possibly be under the circumstances."

She realigned herself in relation to her problem

She was admitting that her problem was insoluble, and that there was no use expending any further worry or thinking upon it.

Her realigned efforts worked wonders She was like a new woman. The children began to take on a new dignity in place of the beaten looks they had worn so long

10. *Make the Present Moment an Emotional Success*

Getting rid of lousy emotional habits should not and need not be a complicated procedure Above all, keep it simple. Reduce it to the terms of a common denominator — *keep your attitude and thinking as cheerful and pleasant as possible* — RIGHT NOW.

The only moment we ever live is the present moment It is the only time *we ever have* to be happy.

Some people live on an expectancy basis, always looking for something in the future, completely losing the only value they have — that which is in the present moment

The boy in high school anticipates college, in college, he anticipates the joy that will be his when he gets an engineering job When he gets his engineering job, he believes that joy will come when he marries Mary and has a home; and so he goes on anticipating.

There finally comes a time in his life when further anticipation is no longer rosy That point is accompanied by a tremendous reorientation of thinking, values, and emotions. That is the point where the individual begins, visibly, to look

old, licked, and beaten At that point, too, anticipation is metamorphosed into thinking about the wonders and glories of the past (which are past)

Plan for the future, but don't brood on it. Naturally, we have to plan for the future, but we shouldn't make our present moment a constant thinking about it. Beyond the necessity of providentially planning the future, constant thinking of it and living in it, entail fear, concern, and apprehension.

It is utterly silly to be constantly worrying about what the future may do to our affairs, cattle, health, children, yes, even our life after death. Being upset over the future isn't going to alter it a great deal. Most of our worries are interest we pay ahead of time on things that never happen

The best insurance for a satisfactory future is to handle the present hour properly, do a good job of living now, be effective in your work, your thinking, your pleasantness, your helpfulness to other people, RIGHT NOW Yes, RIGHT NOW. The future will turn out to be as good as your present if you keep on handling THE PRESENT MOMENT correctly That's an important trick

11. *Always Be Planning Something*

A basic psychological need in every person is the need for new experiences Without new experience, life sags down into a rut of interminable drudgery

To have *the expectation* of a new experience coming up is always a lift to the present moment, and you should always be planning an experience It may be only a day's outing, or a half day of something on a Sunday, or merely a new feather in your hat Your planning needn't be anything elaborate, except on rare occasions The important thing is that it be *new experiences you are looking forward to.*

The planning is just as beneficial in supplying the right kind of emotions as is the new experience itself Barney Olds, whom I could just as well have used instead of William as an example of the king of living in chapter 8, was a man who

had met one catastrophe after another with superb equanimity, resignation, determination, courage, and cheerfulness. He finally had an illness that kept him in bed for three months; then a recurrence kept him in bed for a solid year He never complained

I said to him once, "Barney, don't you get tired of being in bed?"

Barney laughed heartily, "No I have a good appetite, that's half of living *And every day I have a good cigar*; that's the other half"

Barney enjoyed life more, confined to bed, than most people do on a holiday He loved to plan trips to distant parts of the world, to Tibet, Manga Reva, to Tasmania, and so forth He would write to travel agencies and steamship companies for information He would get books and literature from the library about the place he was "going to" At the end of each "trip" he knew as much about the land of his destination as though he had actually been there One travel agency was afraid it was missing Barney's business, and sent a representative to see him After that, the travel agency helped Barney play his game by sending him copies of official tickets to the places he was "visiting." Barney enjoyed himself all the more

12. *Don't Let Irritating Things Get Your Goat*

In almost every moment there are worries or irritations that would get under your skin IF YOU LET THEM It is hard to conceive of a single irritation, at least in the usual run of things, that *ever needs* to get under one's skin.

Whenever you are confronted with an irritation that is knocking and trying to get in, try the trick of forming the "magic circle" with your forefinger and thumb, holding it out before you, and say, "Nuts to that I'm not going to let it get under my skin" A little practice with this magic circle and you will soon be able to say "Nuts" very agreeably and pleasantly to most of the potential irritations that come along.

The Best Part of Being Human Is That You Can Learn

By including these twelve items in your general attitude, you will make a big stride toward emotional stasis and maturity Living will begin to take on a general glow of enjoyability You'll find yourself changing in very fundamental and effective ways, you'll begin to feel the grand feeling of "Boy, I feel good!" and life will become enjoyable

The really best quality of human beings is that they can always learn something new, once they see the necessity for learning it In my practise, I have seen hundreds of people rise to that capacity and turn themselves from a state of emotional stress to a credible state of emotional stasis If that hope and that possibility did not exist, I would long ago have left the practice of medicine for other fields, because more than half of the practice of medicine is curing E I I.

Before leaving this chapter, I wish to anticipate a question that is frequently brought up, "Why don't you include religion as one of your aids?"

Religion and Emotionally Induced Illness

The answer is in no way a disparagement of religion

It is true that many people are relieved of emotional stress when religious faith comes into their lives to occupy the vacuum that was made by the lack of one of the basic psychologic needs that are discussed in Chapter 14. These are people in whom there is a deep sense of insecurity, or people in whose lives there has been a great lack of affection or a minimum of recognition, or people who have a deep feeling of complete personal incompetence.

But it is equally true that religion, per se, neither increases nor decreases the individual's chances of getting E I. I

The clergy and strongly religious people have E I I just as often as non-religious people

One excellent minister, for instance, developed a very bothersome colon because of the terrific pressure of work

that the great charge under his care entailed Another good churchman had marked dizziness, weakness, and headache as a result of a prolonged and tough campaign to raise money for a new church. These, of course, are stresses of the type anyone might have But sometimes the stress arises out of religion itself as in the case of the militant and crusading minister who was greatly concerned and disturbed over the wickedness of his small town congregation and who succeeded, after a violent campaign, in bringing them to do as he wished. The physical effect was a prolonged dyspepsia, which finally became a frank ulcer.

It is evident in medical practice that a religious person needs the attitudes we are presenting in this book just as much as the non-religious. As a matter of fact, the attitudes presented in this book will beautifully augment and complete religious living, because the attitudes that comprise maturity are exactly the things the great teachers of ethics have always been driving at.

KEY POINTS IN CHAPTER 9

Important Points to Watch in Living

- 1. Keep life simple.
- 2. Avoid watching for a knock in your motor.
- 3. Learn to like work.
- 4. Have a good hobby.
- 5. Learn to be satisfied.
- 6. Like people.
- 7. Say the cheerful, pleasant thing.
- 8. Turn the defeat of adversity into victory.
- 9. Meet your problems with decision.
- 10. Make the present moment a success.
- 11. Always be planning something
- 12. Say "Nuts" to irritations.

10. ACHIEVING EMOTIONAL STASIS IN THE FAMILY

The Family Is Our Number-One Cause of Disease

The most important single educational factor to which most people are subjected is the family in which they grow up Because of the amount of time a person spends in the family and the authoritative nature of the control which the family has over our early thinking the family has more to do with molding our personalities and our ability to handle living than any other factor

In view of this tremendous effect the family has upon its charges, it is very sad that such a tremendous number of families are muffing their opportunities, and are doing a poor job.

It is very obvious, in seeing patients in the office, that our families are by far the greatest cause of wrong emotions our society has Not only in their childhood families do so many people contract emotional stress, but equally in the families of which they have themselves become a head The family –

our past family, and our present family – is by far the most common cause of E I I., by far our most prevalent disease.

The saddest part of this family failure is that with a small amount of steering the families that have been off-center for generations might be guided into the proper channel, where they would become an effective educational factor for good But, as in other fields of emotional guidance, there are no organized programs for accomplishing such an improvement

First, let us review the family atmospheres that produce immaturity and emotional stress.

Family Atmospheres That Produce Stress

1 **A kill-joy atmosphere in the family.** One of the common family atmospheres productive of the wrong kind of emotions is the KILL-JOY ATMOSPHERE. In such families a dismal, pessimistic attitude toward everything prevails "Oh, what do we want a picnic for anyway? It will probably rain, if it doesn't, the ants will eat everything up " In families like this, joy is nipped in the bud before it ever starts to bloom

Betty came from a family like this, a family of constant gloom Like the rest of her family, Betty had no sparkle or lustre, nor did any of her known ancestors. Her family life provided her with none of the qualities that would make her popular at school Betty was passed over by the students and by the teachers, it wasn't a dislike they had for her, but she was so negative that she always faded out of consideration She was just never invited to other childrens' homes because a gloomy atmosphere always attended her presence Betty's mother never invited other children over to play with Betty because her mother was gloomy and didn't like fun And, of course, Betty developed a gloomy attitude toward her own physiology, the same attitude her mother had regarding her own health

By the time Betty was 13, she was a confirmed hypochondriac. She was apprehensive of every manifestation that her gloomy emotions produced, until her health, or her supposed

lack of it, became her major concern. She joined the great and numerous Symptom-a-Day Club. When she awakened in the morning, her first thought would be, "How am I sick today?" After she was 13, Betty was not without medical attention any year of her life. Her apprehension concerning her health was strongly augmented by her mother's insistent concern. By the time she was 40, she had had four operations and a surgical menopause.

Betty's father, as well as her mother, was a glum pessimist, entirely taciturn and humorless He was that way because of the family *he* was brought up in The line of such families probably went back to neolithic times He was the "Sam, King of his own stew" you read about in chapter 7 whose wife said that possibly he had said something pleasant the first year they were married, but that it was so long ago she could no longer be sure

2. **The critical atmosphere in the family.** Another family atmosphere that breeds the wrong kind of emotions is the CRITICAL ATMOSPHERE. In such families, the atmosphere is charged with criticism of everybody. Usually the father starts it originally, but it becomes so universally prevalent among all the members of the family that all a visitor can say is, "Who flang that last brick?" An argument in the family is frequently this, "I'm not either losing my temper. You're the one who is losing your temper." As a matter of fact, all of them have permanently lost their tempers.

Barbara had the misfortune to have been born into a family like that. As she grew up she became, of course, the mirror of the family, and carried the atmosphere of criticism to school with her. In school she had a great deal of trouble because of her critical attitude toward the teacher and children And at home her life consisted in running a critical gauntlet in which all the other members of the family were arraigned against her At ten, Barbara had emotionally induced illness.

Cold war in the home. There are some families in which the critical atmosphere is maintained in the form of cold

warfare instead of more or less open flinging of bricks. The criticism here is in the nature of sharp cutting insinuations, often delivered in dulcet tones Clifford was a master at this sort of thing, when he and his wife Betty had guests in of an evening, Clifford would get in a cutting criticism of Betty by saying at the bridge table, "Better not let Betty keep score, she'll just get our accounts hopelessly bawled up," insinuating that Betty couldn't keep her household accounts straight Or he might say conversationally, "At our house we never know when or where we're going to eat until the can is opened "

This sort of thing, which went on year after year, always hurt Betty a great deal, and as time went on, Betty was sick a great part of the time with emotionally induced illness Notice that Clifford, who was responsible, was hit by the boomerang of having to pay the medical bills.

Critical influences from outside the family. Sometimes an illness-producing stream of criticism may issue from an odd source in an otherwise normal family. Jane was a fine girl and married George, a fine boy, who was deeply in love with her, and who, in a very understanding way, took good care of Jane. Jane's life was going along splendidly until she brought her first-born home from the hospital George secured the services of a practical nurse to help Jane with the housework and with the baby.

This practical nurse was an old-timer who knew everything better than Jane did, or the doctor did, for that matter, and she openly criticized the way in which Jane was handling the baby. She would criticize everything, including the formula the pediatrician had given the baby She would make remarks, "I don't think the baby is getting along well. There is something wrong with it, it just doesn't act like a baby should." Then Jane would cart the baby off to the pediatrician who would assure Jane that the baby was perfectly all right Whereupon, back home, Old Battleaxe would remark, "Well, you know sometimes these doctors don't tell you everything "

As this sort of thing continued, Jane began to feel poorly

without knowing why George and the doctor, at first, did not know what was wrong, either Then they both caught on Jane was a capable girl, intelligent and alert Her baby was a great event to her, a great challenge and opportunity for intelligent, creative motherhood But the Old Battleaxe had completely deflated Jane's confidence in herself and had sent her into a state of constant worry and deep-seated concern When the doctor and George found Jane's trouble, the remedy was simple and George applied it promptly He fired the Old Battleaxe. Jane was soon getting along fine.

The remedy isn't always that simple. Barbara, for instance, couldn't fire her father and mother

3. **The atmosphere of dislike.** Another common family atmosphere which produces the wrong kind of emotions is the ATMOSPHERE OF DISLIKE, or the atmosphere of lack of affection, an atmosphere that is fatal to anything good that the family as an institution stands for.

Usually this atmosphere of dislike stems from the basic fact that father and mother do not like each other, and the only reason they hang together is "for the children's sake." In the atmosphere of such a home, the children quickly learn not to like each other Love, or dislike, comes to children largely by example. The parents have no genuine affection for the children, and the children reciprocate with even less

In this kind of family nobody wants any of the other members. No one is necessary to anyone else, and when a person feels he isn't necessary, he never develops full mature individuality. No one in a family like this is made to feel important or desirable for himself No one ever gives or receives any appreciation Life is like eating dried, tasteless prunes.

Ellen was the youngest of seven children in a home where no one really cared about anyone else Being the youngest, she was the target of everyone else's ill will Every member of the family was criticizing Ellen as soon as she was old enough to understand "Oh, she's dumb" "She isn't going to be able to get through school." No one ever helped Ellen

By the time she got into school, she had a deeply grounded

inferiority complex. She looked past her teachers because everyone told her she was stupid. When Ellen, after a hectic childhood, at last grew up, she married a boy who had had the same kind of a past and the same kind of an inferiority complex When she had children, she was sure she lacked the ability to rear them, she had no confidence in her ability as a housewife. Hers was a constant life of worry

Ellen has been sick most of the time since childhood and is still sick today. It is not so easy to correct the factors in her illness as it was in the case of Jane, George, and the Old Battle-axe

4 **The atmosphere of selfish egoism.** Another family atmosphere that breeds the wrong kind of emotions is the ATMOSPHERE OF SELFISH EGOISM, which is a little different from the atmosphere of criticism, although it, too, usually starts with the father

Virginia, who had been doing all right alone, married a boy who was a pathological egoist of the kind whose only concern is himself This was not immediately apparent in Roger because he was the kind of an egoist who doesn't talk about himself But every thought he had was for himself When Virginia married him, of course, she didn't know what she was getting in to

Roger was decent enough, but he used Virginia solely for his own purposes Roger was addicted to hunting and fishing, and that's what he was forever doing — without taking Virginia along Outside of that, he liked to play cards, and bowl, so he did that Virginia was alone at home most of the time Roger liked only a few foods, so they were what the family ate Roger's work took him on the road much of the time, and Virginia was alone at home bringing up one, two, three, and four children When Virginia began to complain about not feeling well, Roger had no sympathy and no patience

Today, Virginia is a very sick girl and her health will not readily be brought back to normal. Roger does not see what *he* has to do with her health, and he now regards Virginia

as an obstruction to his pleasure. Virginia's children are maladjusted and are functionally ill too

5. **The complaining atmosphere.** Another bad atmosphere in a family is the COMPLAINING ATMOSPHERE. No family is more miserable than the one that has in it a perennial and perpetual bellyacher Most often the bellyacher is the mother, although I have seen families in which it is the father.

When a family contains someone who is constantly complaining, there is no possible enjoyment for anyone. These complainers awaken in the morning and start analyzing themselves for symptoms. It's usually easy to find a symptom somewhere, especially in the morning before you've had breakfast Everyone of us has a pain somewhere or other most of the time, if we wish to make something of it. If you ask yourself, as you sit there, "Where do I hurt?" you can find a place that hurts. These complainers are forever looking for those places and allowing their minds to play over the painful areas all day long The most pitiful part is that they paddle the rest of the family with their miseries.

In 99 cases out of 100, these complainers have nothing more wrong with them than an emotionally induced illness, but to hear them expound on their health, you would think they were fully equipped pathological museums In the family they succeed in producing an atmosphere of gloom and anxiety, and these are the elements the children acquire. Gloom, anxiety, and hypochondriasis is the educational influence such families give their children

In addition to making the family miserable, these complainers are poison to the bank account. One lady had, during the course of her miserable life, seen fifteen doctors, four cultists, two spiritualists, and had eight operations, had been in three sanitaria, and had spent a total of $32,000.

6 **The atmosphere of fear and anxiety in the family.** One businessman I know gets up in the morning with an anxiety, and jumps anxiously from one anxiety to the next until he goes to bed, and then keeps himself awake with more anxieties

For instance, *every morning* he hesitates and debates what particular tie he will wear, and sometimes goes into a dither over it At breakfast he worries whether he is using too much sugar on his cereal and immediately wonders whether he has diabetes Driving downtown to work he will debate with himself whether to take one street or another and, having taken one, worries that he should have taken the other, lest fate decree that he have an accident on the street he is on. Coming to his store he worries about the show windows and about the whistling of one of his clerks.

His family has caught the same worrying habit — it's very contagious. His wife picked it up, his children have grown up in it. To them, it is the normal natural way to live. They just haven't experienced any other way

Some day, if they are lucky, they may be released from the habit sufficiently to realize they are unhappy, that they are personally maladjusted, and that they have emotionally induced illness.

7 **The atmosphere of in-law domination.** Another atmosphere that can be very bad for the family's emotions is the ATMOSPHERE OF IN-LAW DOMINATION In-law domination may be very obvious and yet not easy to deal with.

Helen was a fine young lady who hailed from Philadelphia. She married a young man and went to live in his home town, a small village of 250, loaded with his relatives, some of whom were Banshees Some of these relatives saw Helen settled in a new modern house and felt that Helen was getting the deal *they* deserved but didn't get. They made good every opportunity to pick on Helen, to hurt her in little underhanded ways Helen became ill, and after a while she was too sick to work. Then the Banshee relatives really swooped down on her like vultures, and finished her up After that, the only time Helen ever felt well was when she returned to Philadelphia for a month's visit. In the course of a few years she became practically incapacitated by functional disease She was finally carried off the battlefield by the divorce court, and within a year she was back to her normal self. Ever since then she has been well.

Young people should live by themselves. With few exceptions, it is best for young people, just starting out, to live independently and far enough removed from their elders to have complete control and command of their own families In close proximity, parents are always finding it easy to offer suggestions, if not orders, a thing which neighbors do only when asked, but a thing which parents are apt to do when not asked In one family where the newlyweds lived in the same house with the parents, the mother-in-law was well-meaning and only wished to be helpful The daughter-in-law, too, wished, above all, to get along with the mother-in-law. They did get along, seemingly very nicely, but with the mother in the lead and guiding position, which frustrated the daughter-in-law's need for independent, creative living In-laws, grandmothers, and grandfathers had best live apart from the children and allow the children an independent life.

A Family Doesn't Need to Be a Bad Influence

Those we have reviewed are, of course, only a few of the bad atmospheres that make our families our most important breeding ground for disease In a physician's office, it becomes apparent that a great many families are doing a perfectly rotten job and are providing their members with the wrong kind of emotions Many other families are not doing as good a job as they might.

The pitfalls that a family can fall into are so numerous that it might seem discouraging to the well-intentioned home-maker or the intelligent newlywed

However, there is no need for discouragement

If you introduce into the family atmosphere the same rules that bring emotional stasis to the individual, you will have a family whose influence on its members is a healthy one You will have an atmosphere which develops maturity. You will have a family that is a unit of enjoyable life for everyone in it.

Home Is the Place Where —

Robert Frost once said, "Home is the place where, when you have to go there, they have to let you in"

We can paraphrase that to define what a home *should be*: "A good home is the place where, when you desperately need a lift, you'll be sure to find one." *A lift,* you understand, not more irritation, not nagging, not arguments, not a scathing look, not a lack of sympathy, but a LIFT.

Your first job, as a member of your family, is to keep your attitude and your thinking calm and cheerful — RIGHT NOW.

Your second job is to help the other members of your family keep their attitudes and thinking calm and cheerful RIGHT NOW

Here are a few ingredients to work into the daily living of your family

Family Atmospheres That Produce Emotional Stasis and Maturity

1. **Emphasize simplicity in living and simplicity in enjoyment.** As the American standard of living has increased, a greater and greater array of mechanisms have been dangled invitingly before the consumers' eyes The trend in American living has been to put so much emphasis on the means for enjoyment — fine houses, automobiles, better television sets, cameras, electric ranges — that in the process of getting the means, we provide ourselves with frustration and anxieties. Yearning, longing, and then paying the installments become so constant we never learn how, indeed, we never have the opportunity to learn how, just simply to *enjoy.*

The way to proceed is to learn the art of enjoyment first Minimize the need, or the longing in the family, for new installments. RIGHT NOW enjoy what there *is*· the green of the trees, the blue of the skies, your own whistling, having fun with each other. Leave out conversation of yearning for what you haven't.

The idea is to utilize the little, ever-present opportunities for pleasantry, the immediately available chances for a humorous sally, the RIGHT NOW moment for being nice to each other

2 **Get the idea of the family enterprise.** As soon as the children are old enough to understand, indoctrinate them with the idea that the family is meant to be a wonderful place for everybody in it; it's everybody's job to make it a wonderful place for everybody else; it's an enterprise for everybody, by *everybody*. The family enterprise is a cooperative effort in which father, mother, sister, brother, all have an active interest and a personal responsibility. The family enterprise is the primary and most important activity and responsibility that father, mother, brother and sister have

Don't forget this, the children will acquire and carry on the family enterprise if mother and *father* do their share. Usually it's the father who is just a boarding and bored member, always off to business, the races, and Heaven knows where. If the top brass takes the proper initiative, the children will invariably follow

The family enterprise becomes a continual round of mutual projects, of things done together, games played together, stories told around the fire, group studies of interesting things and places, Sunday afternoon nature jaunts, yearly family trips to the fair, laughter, conversation, and gaiety *that everyone* (and that includes father) engages in and which everyone helps everyone else to enjoy

3. **Attach the family to the human enterprise.** An important idea to get into family living is that the family is in tune with the wide community which surrounds it. Beside the responsibility the members have to one another in the family enterprise, they have a similar responsibility to the HUMAN ENTERPRISE This is quite a necessary step in the development of the children's maturity. It is part of that aspect of maturity which consists in turning our ego away from purely selfish considerations out toward the welfare of others. Never to develop this sense of the human enterprise is to bury

ourselves for life in a pit of very stinky little emotions If the children get the idea that the most important thing for anyone is the welfare and the happiness of the other people in our individual-community, they will have the instrument for producing a highly satisfactory emotional color, and they will find that life is filled with the highest kind of enjoyment

Furthermore, the idea of the human enterprise in the family brings to the members of the family a kindliness, a sympathy, and an understanding for other people, *which you cannot live happily without*

Part of the family enterprise consists in projects directed toward meeting, knowing, and helping the great wide world outside parties, "get to know your neighbors" picnics, family trips through industrial plants, family trips into the great wide world, adopting a war orphan, other projects that the family can, as they go about them, specifically label "Human Enterprise" Getting to use the name "Family Enterprise" for one type of activity and the name "Human Enterprise" for another, in itself teaches maturity and awareness of purpose in the children. Whatever helps the children is sure to help father and mother.

4 **Develop a family ability for turning defeat into victory.** Whatever happens, when events occur that might disappoint or frustrate, the attitude in the family should always be, "We are not going to let that get us down, we are going to make the best of it, and the best is going to be pretty good!" This gets easier and easier to do, and as the family becomes competent in its use, there will be very little that can sour the family's day

The particular maturity that is taught to the children by the tactic of turning defeat into victory is *flexibility and adaptability.*

The family is all set to go to Parfrey's Glen on a picnic when the rain begins to pour, so what? — yipee — it's just as much fun playing games in the living room with the picnic later on the living room floor.

Handling the lesser upsets in that way makes it easier to

meet the tougher assignments. Mother gets sick and goes to the hospital, everyone pitches in, not only on the work, but in holding up the family morale and mother's morale. It's doubly important, then, that every member keep the family clicking with heads up and chins out.

The trick of turning defeat into victory can become a game, with everyone trying to see who has the best solution for licking the upset, and then all cooperating on the best suggestion.

5. **Without affection, the family is a failure.** General affection is easily generated in a family if there is affection between father and mother. Affection must include everyone equally and must not be partial. Everyone is made to feel necessary and indispensible to the general family operations. Animosities between the children need never exist if they are nipped in the early bud, and if no animosities ever exist between father and mother. If there is bickering, strife, and verbal warfare in the top brass section of the family, the children will almost surely grow up to be bickering and disagreeable. They in turn get married and start another cycle of foolish disagreement and bickering.

A doctor gets tired of seeing these silly nincompoops who lose most of their affection for each other before the first year of marriage is over. It is so completely childish and unnecessary. The answer to any marriage is that you should be mature enough to rise above the problems it entails. With ten cents worth of good intentions, a nickel's worth of sympathy, and a quarter's worth of understanding, affection would grow through the years.

If the parents have affection, one of the rules in the family can be that no one is *ever* to quarrel or bicker with anyone else. That rule is not hard to maintain if the example comes from the top.

6. **The general tone should be kindly cheerfulness.** There is no such thing as the "dumps" in families where everyone pitches in to help the one who, because of some outside factor, needs a lift. Such a home is the place where, when you need a lift, you'll find it.

Here again the example is set by the top brass If the parents never get crabby at one another, or allow themselves the misery of feeling lousy and mean, a rule in the family can be that no one is to engage in this nefarious activity.

7 **Discipline should be reasonable, firm, yet pleasant.** Parents in unhappy families probably will not believe this, but in a happy family there isn't much call for discipline. Misbehaving children are unhappy children If the children are provided with a happy, pleasant atmosphere, two-thirds of your disciplinary problems disappear

Children must be taught certain fundamentals, like respect for others' rights and for others as individuals They should be taught to respect their elders, they should be taught the advisability of not flouting convention and living well within the law Honesty and integrity are absolute requisites

There will be times, of course, when discipline will be necessary Then discipline should be based on the reasonable ground that we act thus and thus because that way of acting is for our own good, and we do not act otherwise because it is bad for us and bad for those around us This basis for action can be explained just as well in a pleasant, well-meaning manner, it adds nothing to do it in a fit of splenic anger. For a wrong action there should be corrective explanation, and then a disciplinary measure carried forward without wavering or retracting Punishment twice for the same offense will hardly ever be necessary

8. **The family should instill confidence into its members.** It is important that the family should give the child a feeling of confidence — not only confidence in financial security, even if it isn't there, but confidence in his place in the family as someone who is respected for himself and as someone who has an important responsibility in contributing to the welfare and enjoyment of the family No child, however awkward or backward he may be, must be made to feel that he is any less useful or important to the family.

Thus a basic psychological need is satisfied and a step in the development of an important aspect of maturity is made.

9 **Mutual enjoyment in the family – right now.** An indispensable idea in the family is that family living is a series of mutual enjoyments – every moment and RIGHT NOW. It *means* mutual enjoyment to its members, a pleasant quip or a jolly phrase when father passes son in the hall, or when Mary comes into the kitchen with mother The family *means* mutual enjoyment, the glad word, the bit of fun, the happy smile – RIGHT NOW

RIGHT NOW, of course, "What are we waiting for – why wait – this is the time – right now – right now is the time to show affection – now is the time to operate the Family Enterprise – *this* is the moment – why wait any longer?" It is perfectly all right to plan for the future, but don't spend your present in the future

How Does Your Family Rate?

Stop right now and ask yourself, "What kind of a family do I belong to?" Is it the kind of an enterprise that is producing the wrong kind of emotions, functional disease, personal maladjustments, and unhappiness? If it is, be fair to yourself and admit it

Then take the next step Set an example

And the next step Hold a get-together with your wife or your husband, include the children if they are old enough, and talk this over, lay plans to have the kind of a family where, when your spirits are low, you will be sure to find a lift.

THE IMPORTANT POINTS TO REMEMBER IN CHAPTER 10

Your family will become a center of good, happy living, and an influence for maturity and emotional stasis in its members, if you introduce into the family these things:

- 1. Simplicity in living, and simplicity in enjoyment.
- 2. The idea of the family enterprise.
- 3. The idea that the family is part of the human enterprise.
- 4 A family attitude for turning defeat into victory.
- 5. An atmosphere of affection, mutual respect, and regard.
- 6. A general tone of kindly cheerfulness.
- 7. Reasonable, firm, yet pleasant discipline.
- 8. A feeling of mutual confidence and security
- 9. An atmosphere of enjoyment – RIGHT NOW.

11. HOW TO ATTAIN SEXUAL MATURITY

There is one *very* important spot in human living in which people's education has been either *nothing at all* or *worse* than nothing at all. That spot, of course, is sex

More people show immaturity in their sexual life than in any other field of human activity That is why doctors see so many people whose emotional stress is intimately related to immaturity in sex and sexual matters There are a tremendous number of people who have made a mess of sex, or sex has made a mess of them.

Maturity in any field has to be learned How can you possibly blame anyone for an immaturity in sex when no sensible effort is made to show him how to become mature? Where but on society and its institutions responsible for education — the family, the school, the church — does the blame rest for sexual delinquency, sexual stress, sexual mess?

Biology and Civilization

The sex instinct is a relatively weak instinct compared to

some of the others. The biological urge for food is *much* stronger, and so is the desire for security A person can go for a long time, even for a lifetime, without satisfying the sex urge, but no one can stand food and security deprivation very long

The relative insignificance of the sex instinct is further apparent in the fact that the cooperative effort we call "civilization" is mainly an attempt to supply food and security, *not sexual satisfaction.* Had the sex instinct been the strongest and most demanding of our biological urges, civilization would, doubtless, have been patterned to supply sexual satisfaction.

The biological urges being what they are, and civilization being the kind of thing it is, everyone can be allowed to be promiscuous in eating, or promiscuous in developing security, but it became apparent thousands of years ago that the very basis of civilized society would be destroyed if everyone were to be allowed to be promiscuous sexually The social and economic consequences of complete sexual promiscuity would be simply catastrophic

The restraints are necessary. Granting that we want the economic benefits of a cooperative enterprise like civilization, we have taken the only course in regard to the sexual instinct that we possibly could have taken That course has been to put the sexual instinct into well defined shackles of restraint. And *that* is what provides our sex problem.

The only way to shackle a thing as fundamental as a biological instinct, without upsetting the individual, is to develop a good educational process for showing the individual how he can possibly manage the instinct within its shackles *But civilization had to curb the instinct long before it developed wisdom enough to devise an educational process*

Is it any wonder we have the trouble with sex we do? You've got to be careful how you put a cork in a bottle of highly charged liquid. Either the cork will blow out or the bottle will burst.

The more you study a tough problem like sex, the more you become amazed that we human beings get along as well as we do, and the more you become convinced that the bunch of us are pretty remarkable little people The whole race muddles through.

The Sex Urge Is Not the Mainspring of the Human Being

Sigmund Freud and the psychoanalysts have developed the idea that sex is the mainspring of the human personality. It is true that sex causes a great deal of trouble for people for the reasons set forth above, but not because it is the mainspring It isn't. Sex is, as human biological urges go, a relatively little spring that has been jumping all over the box. It is a spring that has been jumping all over the box because of these factors.

1 Every person is equipped with the sex urge

2. The structure of our civilization makes it imperative to curb this urge to a very considerable extent, so that it still serves the purpose of reproducing our kind without upsetting social and economic structures

3 Although society makes such a curb necessary, society makes no organized effort to show people how they can handle their urge without trouble to themselves

4. There are numerous agencies, within society, deliberately fanning up people's sexual desires, largely because they find it profitable to do so

Many commercial enterprises capitalize on shaking up the fizz in the charged bottle These efforts to shake up the fizz have never been as prevalent as they have been in the last fifty years, and are one of the chief reasons why one out of three marriages is ending in divorce

Commercial advertising, newspapers, magazines, movies, television, find "cheesecake" attractive to the unrequited yearnings and earnings of a sexually-uneducated public. It

helps roll the dollars in, but is hard on those whose excited sexual desires get them into emotional or legal trouble.

Some youth (or immature adult) who is having trouble trying to adjust his sexual inclinations opens a magazine (any of our better weekly magazines) and he finds stimulating "cheesecake" on every other page The sexual longings that he has been trying to stifle are freshly stimulated, his imagination is stimulated, and a fresh set of stressing emotions are stimulated. If he stops there, the youth (or the immature adult) is just plain lucky He may go on to get into trouble.

The Popular Brand of So-Called Sophistication Is Immature

"Sophistication" has become a popular concept in mid-twentieth century United States A person is not in the mode if he is not "sophisticated," by which is meant a varying degree of looseness concerning sexual taboos There are, of course, various levels, or depths, of sophistication, beginning with sexy stories in open mixed society (the more shriekingly daring, obviously the more sophisticated) and progressing in ten easy lessons to situations of grossly illegal intimacy, in which the intimacy gradually becomes rancid and the illegality ever more bitter.

The philosophy underlying sophistication assumes that sophistication *is* sexual maturity — maturity in the same sense we defined it in chapter 7, namely, that *maturity is the capacity to handle human living with a minimum of trouble and a maximum of enjoyment*

There are two distinct parts to the philosophy of sophistication Some people subscribe only to the first part, others go along with both parts

The first part states that treating sex as an unmentionable human misfortune, to be regarded definitely as a sordid affair to be admitted reluctantly even into marriage, is merely to increase the amount of misery that the tromped-upon sex

urge can produce This first part of the philosophy of sophistication is, doubtless, correct. I am in full accord with it.

The second part of the philosophy of sophistication is that sex constitutes a major sport that is always in season, that licenses are free, and the game is to be pursued through all the byways of so-called romance

This second part is a gross error, as most of those discover who have to learn the hard way Almost without exception, the apple that is picked turns out to be much less of a pippin than it seemed to be on the tree, and worse still, it contains a large worm of discomfiture The miscreant realizes too late that it is much easier to stay out of trouble than to get out of it once he is in it.

The Trouble with So-Called Sophistication

A person who has strong sexual urges that he represses and denies can develop a severe and serious, acute and chronic, anxiety state But the person who resorts to the liberation of "sophistication" will suffer equally severe anxiety states. He can bring himself, as I shall show you in a moment, to the brink of considering and committing suicide There is no anxiety state more advanced than that.

Even short of the state in which suicide becomes a consideration, the devotee of "sophistication" has other anxiety backgrounds Being apprehended by the law, or being dragged before a court is neither the major trouble nor its culmination There is the personal degrading effect of lying, the constant fear of apprehension, the feeling of guilt. Then there is the broken home, or worse, a home in which things are not going smoothly, or still worse, a home in which growing children are being brought up in a poor atmosphere

What a silly, foolish, "sophisticated" adult does to himself is to a considerable extent his business, but it leaves the realm of private affairs when children are ruined for life because their family gave them wrong emotional patterns and habits

Even the sophisticate acknowledges the futility of "sophistication" when he has arrived at the point where he is ready to jump from a bridge or reach for a pistol. No system of action is mature or good that can possibly bring a person to the brink of suicide. And "sophistication" can. Let me give you a couple of examples.

Anything That Can Lead to Suicide Is Best Omitted

Richard Roe was a smart, quiet fellow. At least *he* thought he was. He meant no harm to anyone. He was a good husband, and a good father. Also, he didn't intend to be exactly mid-Victorian. Well, you know — it wasn't infatuation for another woman — not that kind of "triangle" thing, just an arrangement with a person of the other sex who, too, wasn't exactly mid-Victorian, but, shall we say, merely modern or advanced.

Richard carried on for a long time without anyone being the wiser (not even Richard). He thought, "This isn't hurting anyone else. I wouldn't want it to." He met the girl in various ways, at various places.

Then one night they were at a motel they had often frequented. The manager suspected an irregularity and intercepted the couple in the midst of a tryst. Richard had registered under an assumed name as husband of the lady. He was in a legal "spot." In fact, he was in a hot spot. He and the lady left before the police could be called, but the manager had secured his right name and address.

For two days Richard sweated. He came to see me because of indigestion — and told me his trouble. In addition to a physician, he had gone to a lawyer, too.

Believe me, *there was a miserable man*. He was trying to stave off utter and complete disaster. Mind you — UTTER AND COMPLETE DISASTER. For two days, Richard was as miserable as any human being could be. Physically *he felt terrible,* and he needed medical aid.

On the third day the motel manager filed his complaint,

at ten-thirty, Richard was given the summons; at ten-forty-five Richard had put a bullet through his head

The newspapers did not print news of the summons. They printed news of Richard's death The reason why Richard died never got out. The family honor was saved Richard was not Richard was dead.

Doctor Mac, let us call him, was a nice sort of a guy, until he decided to give in to the urge and look at life in a broad, serene way (Without any malice, you understand, but why shouldn't there be a little fun? After all, there are the Kinsey reports)

So he made advances and the affair went on, until his accomplice became pregnant Seeing the commercial value of her situation, she refused to let the doctor perform an illegal abortion (she would have had him there, too) but threatened him with suit.

The woman had come to me for examination when she thought she was pregnant, and told me the story in a boastful sort of way Doctor Mac faced complete ruin – the suit would have thrown things wide open, of course. But more than that, in the state in which Mac lived, immoral conduct would cost him his medical license to practice Knowing that the woman was just as responsible for the affair as was the doctor, I tried to talk her out of her intended law suit She was too silly to listen.

On the first inkling that she had seen a lawyer to start a suit, Doctor Mac committed suicide by taking arsenic Everyone thought he died a natural death I never saw the woman anymore, but I read of her drowning a month later.

More Often, the Trouble with Sophistication Lies This Side of Suicide

Alwin had been a pretty stable fellow and an astute businessman. Then he came to my office with something obviously functional. He tried to act his usual self. He swore he

had nothing to upset him or worry him. His trouble became more acute and gradually took a new course He was apprehensive and worried, which was unusual for him I told him he wasn't fooling anyone by playing anxious-free, and jokingly suggested he was having an affair. Whereupon, he unfolded a lurid tale. He hadn't met any legal noose, like Richard or Mac had, but he was worried just the same.

It Is Easier to Stay Out of Trouble Than to Get Out

The point in all this is, why start out on a track that can lead to a spot where suicide becomes a serious consideration, or, short of that, a course that can result in serious emotional illness?

There are communities in which sexual irregularity has become so accepted that discovery is not often attended by anything as drastic as suicide But I know from personal conversations with the doctors in such areas that functional illness holds a terrifically large place in the lives of the people in these communities.

Other Forms of Sexual Immaturity beside "Sophistication"

I have talked about "sophistication" first because so many people mistakenly consider it to be sexual maturity But there are other forms of sexual immaturity that produce much more emotional stress than does "sophistication"

A doctor's office during the course of a year sees many people with emotionally induced illness because they have brought sexual immaturity into marriage. Less often we see young people, or unmarried people, to whom sexual immaturity is also a source of emotional stress.

Sexual Difficulties before Marriage

Youth is as innocent in the awakening of his sex curiosity as he was in his desire to eat, but the attitude of his elders

makes the whole business seem at once bad and yet darkly inviting and mysterious. He is ordered to abstain, and then subjected to numerous varieties of sexual suggestion. Finally, the intimacy and privacy necessary for experimentation are only as far away as the car in the family garage. It, of course, isn't, and wasn't, even in the horse and buggy days, anything like a good or a healthy set-up.

Then we add the final spice, which is that, owing to economic circumstances, marriage must be delayed ten or fifteen years beyond the awakening of the urge.

Here is a spot where a little planning by society, or the development of an educational method, would be an excellent thing. As it is, the advice these young people get is pretty poor and misleading stuff.

Youth's sexual urge leads them in one of three directions. First, the youth may be lucky enough to have someone with the necessary amount of good sense steer him, or her, in the less troublesome direction.

Secondly, they may break down the barriers and experiment with sex; possibly they may break down the barriers forcibly and come up for assault or murder. If they cross the barriers amiably, they precipitate themselves into the types of trouble we spoke of above. Thirdly, they may take masturbation as a way out.

Masturbation Is Often the Source of Poor Emotions

Many people come to the doctor with emotionally induced illness because they are worried and apprehensive over a strong unconquerable habit of masturbating.

For instance, a twenty-eight-year-old single woman had tiredness, headaches, and a long string of symptoms because she was sure that her habit of masturbating was wrecking the foundations of her health. Her symptoms had become more severe after she found and read an old family health guide in which the writer stated that masturbation is invariably fol-

lowed by such dire physical consequence as sterility, tumors, heart disease, cancer, and insanity The author of that article was a far more enthusiastic moralizer than scientist, a fact which the poor lady did not know She felt that she had all the physical degeneration described by the author, and she was certain that her mind was going too She had arrived at the point where she was unable to do her usual work

There is another variety of poor emotions that result from masturbating, that are even more prone to produce E I I. These emotions arise because masturbating causes the individual to withdraw into himself and into a dream world of his own making He develops introvert tendencies, lives in social isolation, and prefers to live in his world of dreams and fantasies As a consequence, he lacks effectiveness in the real world, he lacks decisiveness, he staggers along through life, unproductive, unhappy, and alone His emotions are predominantly brooding, regretful, and generally unhappy. He or she presents a sad regressing picture.

To put it simply — masturbation is immaturity It is a childish way of satisfying one of the basic needs Just as with other forms of immaturity, it is bound to be unsuccessful in a world which calls for maturity

Sexual Perversion As a Source of Poor Emotions

There are, of course, people made miserable by the guilt, the difficulties, or the stigmata encountered by following one of the many types of sexual perversion, of which there are 14 or 15 different varieties, the most common being homosexuality Sex perversions are evidence of deeply-seated personality difficulties that require individualized treatment

Consequently, we will dismiss further discussion of the perversions in this book, except to offer assurances to the reader that boys and girls whose lives are rich with outside interests, who have had good training at home in thinking and acting carefully and critically, do not develop sexual perversions

Nor need parents be afraid about the danger of their sons and daughters coming in contact with homoerotics and thus being misled into unnatural sexual relations. Careful investigations disclose that the individuals who take up homosexuality were definitely homosexuals before they met their seducer.

Another misconception that requires correction is that it is the man who is markedly feminine, or the woman who is markedly masculine, who are most apt to be homoerotic. There is not the slightest connection. The male homoerotic is just as apt to be the athletic masculine type, and the female homoerotic a perfect feminine type. The unfortunate feminine man and the unfortunate masculine woman have enough of a handicap without adding this misconception.

Sexual Immaturity in Marriage

Sexual difficulties in marriage are extremely frequent, extremely provocative of emotional stress, extremely apt to start the schism that leads to divorce, and are always caused by sexual immaturity on the part of one or (usually) both the partners. There are many varieties, of course, of sexual difficulties in marriage, and we can mention only the most frequent here.

The difficulties start most often on the honeymoon, which to most newlyweds is the end of the dream world youth paints of the marital state. The *usual* experience on the honeymoon is that the boy and the girl find that it isn't as wonderful as they thought it would be, and they blame each other. If the boy and the girl can overlook the first years in which their experiences are vaguely somewhere between success and failure, they may find at the end of 30 years that the experience *can* be the rainbow they found it wasn't on their honeymoon.

Most young men, when first married, have the imagination of rabbits, the romantic capacity of sloths, and the sexual technique of oysters. When you mix this combination with the

fears, the discomforts, and the misinformation which the girl has accumulated, you end up with nights filled with horrible experiences

If a fair amount of maturity exists in the couple, such as sympathy, understanding, comradeship, and good-will, all may not yet be lost and the marital craft may yet be rescued before it flounders But with many couples, who have no maturity in other directions to save their sexual immaturity, the disillusionment of the beginning grows into the final break of the end.

When sexual immaturity brings one, or both, of the partners into the doctor's office with E I I, it is very apt to center around frigidity in the woman Over 40 per cent of the married women I see in my practice get no sexual enjoyment out of their marriage, and provide little enjoyment for their husbands. Wife happy? No — miserable Husband happy? No — just as miserable

Frigidity is most often the husband's fault. Much of this frigidity on the part of the wife is not her fault, but is due primarily to the clumsy, selfish technique of the husband, not merely in the first delicate experiences of marriage, but forever after

As many women put it, "He has not thought of anything but his own wishes. He leaves me cold and disgusted. Now it only makes me nervous I hate the whole thing"

You will always find that these husbands are immature children in other aspects of living as well as in sex. Mentally, their maturity stopped at age eight, physically, they went on to develop hair on their chests Many an otherwise excellent girl has been precipitated into chronic illness and chronic unhappiness by this common variety of inept and immature husband. Even though she may try to meet the situation philsophically, the situation proves to be too difficult.

Frigidity may be the result of faulty education. In a relatively smaller number of women, such frigidity is sometimes the result of poor sex education in their childhood Rose, for instance, was the unusually attractive daughter of a family

that lived in a tough part of town Because of the bad influences of the neighborhood, the mother stringently indoctrinated the young Rose against the entire matter of sex, scaring her on the entire subject until Rose had the idea that sexual intercourse was far and away the worst experience that could ever befall a woman, that it was, in fact, worse than death Rose never did know why or just how she ever became married Marriage for her was a hateful, hideous experience. After bearing two children, conceived in utter agony, Rose added the fear of another pregnancy to her already unwholesome sex outlook. She developed an intractable ulcerative colitis and has spent years in and out of hospitals

Frigidity in the wife is an important cause of yet another grave marital difficulty — unfaithfulness in the husband As one English Earl remarked, he greatly preferred to have his romantic efforts returned by the appreciative and enthusiastic embraces of the chambermaid than to suffer the reluctant frigidity of the Countess. Every man, earl or no earl, is made of the same material

Appetite is not the same in both partners. Another common source of difficulty in marriage is a failure on the part of the partners to recognize the *usual* difference in sexual appetites in man and woman In general, men are moved by the sexual instinct more frequently than are women. Unless this difference is appreciated by the partners, and each tries to meet the difference at least half way, irritation, disgruntlement, and deep displeasure are bound to result This common situation can be avoided only if each has enough maturity to appreciate the individual needs and desires of the other

There are many other varieties of difficulties arising in the complex relations of marriage We are not going to review them, but deal with them merely by saying that they all, without exception, result from immaturity, and are all to be corrected by developing maturity.

Sexual Maturity

Sexual maturity begins with the attitude that sex is not bad in itself, and, when rightly used, will enrich life and add materially to the pattern of enjoyment

The phrase, "rightly used," is the key to the whole business.

First, "rightly used," means acknowledging the existing restrictions on sexual activity as a necessary and a good thing so long as people are trying to continue the social and economic projects we call civilization Obviously, to keep out of trouble, sex had best be used within the legal limits, *that is to say, only in the married state.* This is the one side to maturity — minimizing trouble

Secondly, "rightly used," means developing the capacity to make the sexual aspect of marriage a satisfactory, complete, and constantly finer experience for husband and wife This is the other side of maturity — developing the capacity to handle living for maximum enjoyment

The first meaning of "rightly used" concerns chiefly the person out of wedlock, and the second concerns those who are married

Handling Sex Before Marriage

As far as a sex program for youth is concerned, an excellent, or even a good, solution does not exist. The best that can be done to help youth is to mobilize a few factors in their behalf that will help tide them over

The first thing we can do for youth is to be frank about the whole business It doesn't do to tell these young people they have no problem, or to imply that if they have, it is of their own making It is best to lay the cards on the table, and admit their elders had the same problem — and for them, as for youth now, the fact is that before marriage, there is no altogether satisfactory answer Then we should try to make it clear that marriage is a satisfactory answer only if personal

qualities of maturity can be developed before they get married.

The second help is not to insist, or even to imply, that the sexual urge should be forced out of mind. Instead, the youth's mind should be given interests and urges, important and lively enough to take up a good portion of his time, interests worthy in their own right of demanding the best the youth has.

Ways to help control the urge. Such urges are the urge to become proficient in a sport, adept and skilled in a handicraft, socially accepted and liked, capable of adding a desirable skill to the community enterprise Not only will a wealth of such pursuits serve to enable the youth to forget much of the time that he is a sexual animal, but it will also develop the maturities so necessary to his future

General mental maturity, the capacity to think, is the best step toward sexual maturity. A family which gives the youth a sense of belonging to the family enterprise, an education that gives the youth a keen sense of being a part of the human enterprise, a good mind with generally sound ideas — these are the best measures for sublimating the sex urge to a distinctly secondary level. Such a sublimation of interest and such a development of new urges must be provided, principally by *the family,* and also by the schools, churches, and by youth centers.

The need for youth centers is usually underestimated by our communities, and when the youth centers *are* provided, it is often in too niggardly a fashion. A good youth center in a community, designed to give youth high interests in their off-hours, is the most important organization outside the family Any community with the interests of its young people truly at heart can much less afford to be without a youth center than it can afford to be without paved streets or a municipal water supply.

A youth center is in the nature of a necessary public utility which only the municipality can provide

The third help is for adult society to fan the sexual flames

of youth as little as possible. It is entirely laudable to lift sexuality out of 19th Century prudery, but it is still necessary that parents, teachers, psychologists, and psychiatrists take pains to point out to adolescents the dangers of "petting" — the danger of excessive sex stimulation under conditions which do not provide for its proper gratification

One sees high school teenagers, either regrettably pregnant, or what is almost worse, with wrong emotional habits resulting from petting, which will give them lifelong nervous difficulties If young people are to be overstimulated by sexy literature, sexy movies, sexy stories from their elders, plus the opportunity provided by the family automobile, their elders should not be surprised when they seek a natural outlet for their sexual tension. By and large, our society is dealing youth a wretched hand, and then asking them to play a good game The pay-off is apparent in present-day divorce rates and marital difficulties. For the foolish things people do all the people pay.

Sexual Maturity in Marriage

Lamentable as poor handling of sex may be in the premarital individual, it is even more lamentable when sex produces clouds of wrong emotions to a married couple, as it does with great frequency.

In marriage, as in adolescence, general maturity is the best guarantee of sexual maturity The same sympathy, understanding, and willingness to cooperate that stamp maturity in general are absolutely essential if marital sexuality is to be something other than a source of trouble and internecine strife The golden rule of sympathy, understanding, and kindliness must be the basis of marital sexuality, just as it must be the basis of mature social ethics. Most people at the time of marriage have for each other the feeling we call affection Affection is entirely essential, but unless it is augmented by the golden qualities of sympathy, understanding, and kindliness on the part of both marital partners, it will

soon be replaced by remorse, disillusionment, bickering, and dissatisfaction.

Sex must be a mutual delight. The sexual relationship in marriage should be a truly cooperative enterprise in which neither wishes to derive pleasure at the expense of the other, and each is more intent in providing the maximum enjoyment for the other rather than for himself. They learn that finding pleasure in each other is a much wider thing than sex, and includes many more things than sex, but in which sex is an important factor.

Creating a mutually enjoyable experience becomes the object of each, and no rules apply except that whatever is done be good and pleasant to both, and enjoyed by both.

When two married people are personally mature together, sexual married life consists of mutual appeal and response, offer and acceptance, enticement, surprise, suspense – all achieved by constantly shifting aggressiveness and passivity, activity and relaxation on the part of each partner.

To two such people the pleasure to each from pleasing the other becomes so intermingled with the pleasure of being pleased and of knowing that the partner is pleased and wants to return the pleasure, that their two personalities become indistinguishable and become truly one through the years.

Each shared pleasure reinforces and builds up a long series of potentially limitless shared experiences of ecstasy. The physical and mental components of pleasure react and enforce each other Such married partners become more and more indispensable to each other No marriage can be a successful enterprise in which there is not such a sexual unity.

Egocentricity and selfishness are the childhood arrests that most commonly make a mess of marriage. The only person capable of true affection is the person who can forget himself and his own immediate interest while he places the welfare and interest of someone else foremost When both husband and wife can do that, they will have no domestic nor sexual trouble.

Assuming now that both marital partners are capable of working for the other's welfare, the stage is set for marital success

The next quality to maintain in the family between husband and wife, and later between parents and children, is the idea that TODAY, RIGHT NOW, *we are going to be cheerful and pleasant and make living enjoyable* Quarreling and fighting and bickering are permanently and completely out of the picture because they accomplish exactly nothing. Under *no circumstances* are they justifiable.

The "value" of "blowing your top." There is a school of psychiatrists who think that "blowing one's top" is a good way to work off something bad. This view is held mostly by psychiatrists who cannot control their own tops There is nothing to it. Blowing one's top serves no good purpose, one blowing more firmly sets the habit for the next blowing If both husband and wife are given to blowing their tops, something usually cracks sooner or later, such as patience, affection, or the standing invitation to cooperate Children blow their tops, it is a childish adult who finds it necessary to do so.

Marriage should and can be based on this fundamental assumption· *"We can make life more enjoyable for each other by living together; neither of us has any right to make any moment miserable for the other."* That becomes a perfectly simple, satisfactory, and practical formula if husband and wife each have about a dime's worth of sympathy, understanding and good-will

In such an atmosphere, the sexual side of marriage becomes a growing experience that constantly makes each more indispensable to the other; sexually their experiences are as cooperative, sympathetic, and understanding as are the other aspects of their life together.

Young married couples should know something about the anatomy and physiology of sex Ignorance is the only deterrent to human possibilities. When I see young couples going afoul in marriage because their sex life is going sour, along with their other marital enterprises, I refer them to a

sensible and concise discussion of sexual relations such as *Sex Manual* by G. Lombard Kelly, M D *, which I advise them to read together. Sometimes it is sex that goes sour first in marriage, sometimes it goes sour because everything else has gone sour.

When a marriage gets sour, the first thing for wife and husband to do is for *each of them* to bring cheerfulness and pleasantness back into their attitude toward the other.

KEY POINTS TO REMEMBER IN CHAPTER 11

The individual's sex problem consists in adapting his biological urge to the restrictions imposed by society Society has imposed the restrictions, but hasn't taken the trouble to teach the individual how to make a mature adjustment. Maturity and emotional stasis in sexual matters boils down to three rules

- **1. Tell yourself, in no uncertain terms, that in matters of sex you are going to play the game according to the rules. It is easier to keep out of trouble than to get out of it once you are in it. For all-important reasons – legal, moral, social, economic – sex *must* be confined to marriage.**
- **2. The successful sublimation of sex in the unmarried person (or in the married wolf) consists in providing the individual with interesting, absorbing, and vigorous activities, and in helping him mature in as many other departments of living as possible.**
- **3. Sexual maturity in marriage is dependent on developing the qualities of general maturity, especially sympathy, understanding, unselfishness, cooperativeness and affection.**

* Published by *The Southern Medical Supply Company*, Augusta, Georgia This book cannot be secured without a prescription from a doctor

12. WHAT TO DO WHEN YOUR WORK IS GIVING YOU THE JITTERS

The Emotional Stress of Our Industrial System

Never has the civilized world had the wealth of useful goods and materials that our present-day industrial system provides That, of course, is a wonderful benefit and help to all the people

But never has a method of production inflicted on its personnel such a flood of disagreeable emotions as does our present day industrial system. This, of course, is a primary source of unhappiness and emotionally induced illness for a great many people

When the industrial system began in England, it was the laborer in the sweat shops who had most of the bad emotions provided by the system But today it isn't primarily the common laborer, or the white-collar man at the foot of the ladder, who suffers most emotionally because of the system. The greatest victim is the man at the top, or near the top, who masterminds and manages the system. We see here the operation of nature's balance of compensations

The businessman or the craftsman, before the industrial

age, experienced *few* of the conditions that in today's world produce tense emotional states in corporation executives, vice-presidents, store managers, sales force, assembly line workers and so forth The incessant competitive business growth, departmental growth, and the pressure of piece-work, competitive striving, angling for advancement, low-interest, repetitive jobs, are at once the elements that make the industrial system great, and the elements that give men the emotional jitters and emotionally induced illness.

The Executive Has Stress

Werner had come up the hard way in the sales division of a company that makes several well-known nationally advertised products The company was old, and didn't amount to much, until one of its new products made a national hit far above anything even the company heads ever expected From then on, the board of directors wanted to continue putting out "hits "

Werner, by working around the clock for the company, on a small salary, and having no fun for himself or his family, had achieved a good position in the sales division Then he was placed in charge of sales for a new product that the board hoped would outdo the original "hit " What an opportunity! Werner thought; and there *were* opportunities, including the opportunity never to feel physically well again. The board would call Werner in and show him a comparative chart silhouetting him against some more successful department. The board would ask him for a progress report before the expected time. The board would ask for an explanation of a lower-than-expected sales curve. The board would pound its fist upon the table

With every new pressure from the board, Werner developed a new pressure in his upper abdomen and chest After one board meeting he checked his lungs, after another his heart, once his stomach, again his gall bladder.

He was an organ on which the board was playing a dismal tune Even before Werner was made head of sales, he could never brag that he felt fit as a fiddle But after his climb to sales manager, with the heat of the board upon him, he became a symphony of complaints, which included a completely equipped indigestion, finally centering around a perennial full-blown ulcer.

I met him the first time on a train. The poor fellow told me of his symptoms, ending with, "And the doctors don't seem to understand it." That last statement usually means the patient doesn't understand it

Werner worked up a tremendous tension and a diabolical indigestion, trying to bring his product before a reluctant public. Actually, the product he was given by the board to promote was developed 20 years too late. It died a slow, expensive death, and with it, Werner went down in the company, a functional wreck The effect of the system was exactly the same as if the board had inoculated Werner with tuberculosis. Yet the members of the board considered themselves kindly human beings, they were playing the part of good businessmen, as far as Werner was concerned

Now take a top-flight success from one of the boards — as a matter of fact, he has been on twenty-two boards at the same time — Old H——. He worked, he pushed, he pulled, he got there. But getting there meant holding on, holding on meant advancing with a bunch of enterprising young fellows yelping at his heels There came a steady competitive fight to stem off a reorganization, sleepless nights on which he'd gotten out of bed and walked for blocks, jittery spells when he tried to rest a minute on plane trips he took to secure stockholders' votes, finally a blackout when he hemorrhaged from an ulcer that he had, in his frenzy, tried to ignore. He was a great success — he beat the reorganization — he controlled the stock — he was really a great financier But as a man he was jumpy, jittery, restless, constantly nursing an ulcer — himself a financial success, and also a financial success for the doctors.

The Half-Way Man Has Stress

Now let us look at some of the lower rungs on the ladder.

There is no form of modern business management that is more competitive than being the manager of a chain store I've known many of these managers — fine fellows, everyone of them, smart, honest, hard workers. They had to be to survive the rigid screening process they went through to ascend from clerk to manager. But I have not seen a single one who did not have, in the course of his managership, some form of functional disease

Bill went farther than any of the others I ever knew, he finally ended as a manager over ten large districts. We X-rayed Bill four times from stem to stern while he was store manager in our town, to assure him that his abdominal pain and constipation were no more serious than his sour stomach and frequent belching. Every advancement, every move to a new city, was punctuated with more X-rays. The last time I saw him in his plush office in Chicago, he was still belching, still eating antacid tablets by the handful, and I could tell from the occasional wince that strolled across his face that he was still having abdominal pain.

Then take Joe. Joe had been a good man in the brass foundry; so good he was made foreman of 27 men. Then his headaches began, and the pain in his neck and in his chest. Then men above him wanted output; the men below him wanted to loaf. Between them, Joe was in a vise.

The Laborer's Job Gives Him Stress

Take a look at the lowly assembly lines. Henry left the farm for the glamour of the factory There he was given the thrill of putting the spark plugs into the engine block as it came down the line. The company speeded up the line. Incidentally, Henry had to speed up too. Then the engineers added two more cylinders, they weren't thinking of Henry.

Henry became more and more ailing. After a necessary leave of absence, he was put on a punch press doing piece work After two years he broke down again Now he's back on the farm. He wonders why he ever went to the factory

A very interesting thing happened in another plant — in one division a dozen men run grinders over sheet metal, producing a piercing terrific noise. I've seen four men from that division with ulcers in the last two years, how many more quit because of stomach trouble, I do not know. You remember that Dr Hans Selye produced ulcers in dogs by subjecting them to a constant piercing disagreeable noise!

Worry and Accidents

It's the worried man in industry who has most of the accidents. Attention to the job is interrupted by a train of thought about a disagreeable problem — possibly trouble with the wife at home — possibly worry over the house mortgage — possibly anxiety over a dozen different things — then zingo! zip! he loses his hand in a press, or a moving rod pierces his arm Seventy-five per cent of the accidents happen to repeaters.

The Pressure Is the Same in All Industry

In every line of modern industry and business, the competitive pressures are the same, probably nowhere greater than in the newspaper game An editor friend of mine says there is no one on his paper from the editor (himself) on down who doesn't have a few physical complaints. And he adds, "In addition to feeling punk physically, these fellows are fundamentally unhappy, because the pace and the pressures are so great"

Perhaps Industrial Civilization Is Worth It

What price modern productive methods? What good is

wealth acquired with a raw stomach? Far better a sweet stomach and a modest living But where, in modern business-industry, can you find a sweet living without a sour stomach? The tension of bigger and better commercialism ruins almost every job you can pick up.

Modern business and industry is one of the great reasons for the terrific prevalence of the emotionally induced illness of our time In certain respects the system is a childhood arrest — it is psychologically immature. At a certain age the child is constantly competitive, pitting and matching himself against all comers, striving to beat his fellows, constantly endeavoring to excel. As a person matures, this competitive spirit melts into a cooperative willingness to share with the other fellow, to give rather than to take Such maturity is frightened off by our present economic Frankenstein

To be mature in this sense, to act with mature decency when competitive striving calls for selfish pushing ahead, means inevitable failure in the kind of system we have Anyone who follows such mature principles as noncompetitive cooperation, a desire to be of benefit to human beings as human beings, a feeling for helping people out of difficulties, can be a financial success only by a most miraculous series of accidents

I know several financial failures, that is to say, men who never succeeded in any business or in any commercial endeavor they ever undertook Almost without exception, they are among the finest human beings I have ever met

Still, We've Got to Eat

Nevertheless, we do have to make a living Maybe you've gotten your functional illness as a direct result of our business-industrial system You are going to have to continue living in it and being a part of it.

Then (to yourself) play it as a game, something that's a great big lark, something done because it's ENJOYABLE, not

a duty Play it cheerfully and pleasantly, and don't let the trap of competitive striving catch you

It's barely possible that following this advice, you may never drive a Cadillac, but you'll enjoy eating peanuts and watermelon at a picnic you get to in a rattling good 1937 Chevvy. You may even end up in the poor house, but you'll have a good time getting there, and you'll live to sing at the funerals of the poor devils who beat you up the ladder

A BRIEF SUMMARY OF CHAPTER 12

The industrial system, as we know it in this country, is a wonderful provider of human needs But unfortunately it is also a great provider of stressing emotions to the people who make it run Great responsibilities, the constant demand for great effort, and the fight to maintain his gains are common stresses of the top executive The competitive fight for advancement, with its overshadowing insecurity, is the lot of the man on the way up Non-creative and low-interest jobs with monotonous repetitions bring a deep form of stress to the laborer

The only good, long-range answer is that industry must gradually humanize itself, as some portions of industry are already trying to do.

For the individual who is caught in his job, the only answer is to try to sneak enjoyment in through the back door, to make himself as cheerful as possible, and to be upset by the irritations of the job as little as possible He himself must dictate the level of his emotions, not allow the job to dictate them for him

In short, the man who is being crushed by industrialism can put the methods you are reading about in this book to good use.

13. MEETING THE AGING YEARS

Emotional Stress Increases with the Years

E I I is prevalent at all ages, but it grows more and more prevalent in the declining years of life — the very time an individual should be gliding into a calm, easy harbor, instead of back into the storm. This is true partly because of the conditions and situations that the aging person must try to cope with, on the other hand many people handle age poorly simply because they never handled any part of their lives well The inability grows larger like a giant snowball toward the end.

This increase with age in the incidence of E. I I is a new development in our century. It has come about because aging today is attended by far more stress than ever before in history For several thousand years the social and economic status of the aged did not change at all, the conditions of the aged in the Fourth century, B C. were practically identical with those of the Nineteenth century, A D Today, the status of the aged is very different from what it was 100 years ago, and, in another 50 years, the changes will be even greater.

The important change in our time has been *a tremendous increase in the absolute and relative number of people over 65* In 1900, one person in twenty was over 65. Today one in eleven is over 65, and by 1980, it will be one in seven

"Senility" Is Often E. I. I.

The functional illnesses of age may be any of those of earlier years, but they tend to assume one similar pattern because the prevalent emotional picture in old age is insecurity (of finances, of health, of the future), apprehension, disappointment, discouragement, and so on

These emotions, you will remember (Chapter 3), are the ones that stress the pituitary to produce the somatotrophic hormone (STH) with its attending joint, arterial, and kidney effects In other words, STH effects *are* degenerative effects

We have no way of judging, as yet, just how much of the degenerative disease of the aged is emotionally induced, but probably a large part of it is. Without the degenerative diseases, which are so chronic and slow and debilitating, the aged person would go along smoothly and fairly vigorously to a happier and more kindly end.

It is important to note that the group of people over 65 is the *only* group whose life expectancy has not increased since 1900 At any age up to 65, you can expect to live longer than an individual of the same age in 1900. But after 65, you cannot expect to live longer than a person of the same age did a hundred years ago. This holds in spite of the fact that practically no old person today dies of pneumonia or other infection, and in spite of the fact that people even with some of the degenerative diseases, such as heart disease, can be carried on for years longer than might have been possible even 20 years ago. It can mean only that degenerative disease has been accelerated in our time, and the cause of the acceleration is an increase in emotional stress

At first sight, it is hard to believe that much of what we

regard in the aged as natural deterioration is actually E. I. I. But let me give you an example that will illustrate the truth of such a statement.

George W____ illustrated perfectly the way in which the emotions characteristic of old age produce degenerative disease, *and how a change toward the right kind of emotions will produce a reversal of the degenerative changes.* You have to see this sort of thing to believe it

I was introduced to George by his physician, Dr. K. M. Bowman, a well-known San Francisco psychiatrist George, at 83, was working on the stage of the theater in the San Francisco Municipal Home for the Aged. He was the stage manager, and he was getting ready for a production the people of the Home were putting on that night George was as active as a good man of 60, and you could tell he was greatly enjoying his work.

"George," Dr Bowman said, "Hold out both your hands "

George did. There was a slight tremor in them, especially in the right, but it didn't amount to much.

"How bad did you shake two years ago?," Dr Bowman asked

George demonstrated with a terrific wobbling of both hands

"He isn't exaggerating " Dr. Bowman said

Then he told me the story. When he had first seen George two years before, George was living with his son and daughter-in-law. He had been bedridden for six months, he shook so hard he had to have help in eating, he was so weak he couldn't take care of his own toilet

George had been a stage manager on Broadway in his prime. He was a master at his work, one of the best in the business. He had one child, a boy, who moved to the West Coast when he became of age. When George was 48, his wife died. The theater business was declining, some of his shows went sour For a number of reasons, George began to drink, and he lost the job he had had for 23 years. From then on, he

went from job to job, occasionally managing a small, obscure stage, but usually just a common stagehand.

At 72 he was destitute, and his son sent him enough money to come to San Francisco. There George lived with his son, to whom he had become almost a stranger. His habits were not too tidy; his ways were not those of his hosts I suppose at first his son and daughter-in-law had intended to make the old man happy. But the relationship, especially on the part of the daughter-in-law, became one of belligerent and bare tolerance George knew he wasn't wanted. The city was new to him, he had no friends there, there was no one around the few legitimate theaters who cared to talk to him. So George began to ail, his degeneration became more and more rapid, and it was not too long before he was in bed. They had a doctor once or twice. The doctor called it hardening of the arteries and senile debility

Then Dr Bowman chanced to see him. He examined George and said, "We're just finishing a new theater with a fine stage up at the Municipal Home for the Aged, and we need a stage manager from Broadway. I'm going to take you up there "

George was excited, but he didn't think he could ever get out of bed again. His son and daughter-in-law were even more dubious, but secretly they were happy to have him move out of their care

He was moved in an ambulance, and carted out to the theater stage in a wheelchair. In two weeks he was walking out, and, in another two, he was as active as an old tomcat. He improved rapidly after that.

Around the Home, Dr. Bowman showed me at least eight other people we just chanced to meet who had stories of a reversal of their degenerative disease just as remarkable as George's

The demonstration that degenerative processes in the aging *can be* the result of *emotional stress* as well as "natural senility" requires a laboratory — like the San Francisco Municipal Home for the Aged. In the average community there

is usually little chance to reverse the stressing situation which is producing the degeneration of the aging person

The San Francisco Municipal Home for the Aged has that *necessary* difference most homes for the aged do not have One of the best contrasts is afforded by the unimaginative, expensive depositories being built in so many counties for the aged. The central idea of the San Francisco Home is that it is a COMMUNITY of elderly people, run by elderly people The bookkeeper, the vegetable purchaser, the engineer, the plumber, the stage manager are residents who are old hands at their trade. The Home aims to be self-supporting in a financial way, in a recreational way, and in an essential-service way

What Getting Old Today Means

Don't think that getting old today is the same kind of thing that getting old was 50 years ago. Times change, and so do the factors that the aging have to contend with

Financial insecurity. First is the matter of financial security How well off are you, or how well off are you going to be at the age of 65? With the depreciation of the dollar, which means lower annuities, with the high tax level, with the hesitancy to employ people older than 45, more people than you think are not going to be self-sufficient at the age of 65. The average family today, maintaining the standard of living that everyone has become accustomed to, is just barely able to scrape along, let alone save. We always think that next year we will start to save The only person who doesn't procrastinate with saving is the financier, or the banker, or the insurance salesman. Don't envy them. They have other problems that give most of them severe functional disease.

One third of people over 65 have no income whatever of their own, and 75 per cent have an income of less than $1000, including old age assistance. At least there's the Federal old

age assistance, you say (if you're under 50) Thank somebody for that. That, at least, is the difference between eating *something* and eating nothing, between sleeping in a bed *somewhere* and sleeping out in the park. Would you (supposing you are 40) like the idea of having to go on "relief"? You can bet your last dollar you won't like it any better when you are 65

Job insecurity. The last resort of the scoundrel is to suggest, "Why doesn't the old fellow get a job?" The scoundrel doesn't appreciate that in the present labor market it's getting hard for the fellow over 45 to pick up a fresh job

Here is a man of 60. He is a skilled tool maker, his accident liability is considerably less than a younger man's, his absenteeism will be definitely less, his dependability in a pinch will be greater, he will be less aggressive in fomenting labor trouble. Yet he can't get a job, even though a doctor would pronounce him physically fit. Why can't he, why can't the others of 60 or over — no, let's say 50 or over — get a job so that they might support themselves?

Because, being a vigorous young nation, we worship youth and *slight* (that's a mild term) old age Old age is regarded as a regrettable incident, necessary (God forbid) for others, an incident which we hope will not be prolonged beyond reason (which isn't long), an incident which will be as troubleless to the younger members of the family as possible (somehow *they* cannot see *themselves* at 65).

The older man doesn't get a job. Some efficiency expert found the younger man more dextrous, turning out more parts for the company He didn't stop to think that the older man was putting something human into the company, he didn't know that something human in a company would be worth more than lucre He didn't find out that the company would be still making enough for everyone (including the stockholders and management) to live

Not being able to make a living or having enough to live on isn't all — it's just the beginning of the troubles which the aging have to take on

The insecurity of children's indifference. There's the matter, for instance, of changing family sentiment regarding the aged. I can remember the time when "Honor thy father and mother" was taken seriously. If it was the last thing they were able to do, the children felt obliged to see that their aging parents were well cared-for.

Today it is *usual* for children to stand by without emotion (except a sigh of relief) and see their parents placed upon Federal aid, or if the presence of their elders becomes irksome, it is quite satisfactory to see them placed in a nursing home. This has gradually become the attitude that is acceptable to the society in which we live. It is not going to be changed for decades, if ever

But the truth is that it's terribly hard on the old folks They remember when these same children had to be fed, had to be protected, required long hours of their time and care. And the compensation is to be set aside as though they had never mattered For these children they lived What has it brought them? These children they loved Now who returns any love? There are plenty of people, don't you fear, who have broken hearts (that is to say, severe pituitary stress) because they have been so damnably let down in their needy years

More than just the children are at fault. But it isn't only the children. It's *everybody*. Everybody around them regards the aging person as someone who is just in the way impeding progress. Slow on the street; slow getting off of buses, yes, slow to die. Actually and truthfully, the old folks aren't wanted by society. The best indication of that is that we call them a "problem " A problem and the makings of it are not wanted. The kind of county homes we throw them into as a last resort is an indication that we don't really care a great deal for the aged

Don't think the aged don't sense these attitudes, don't think for a moment that these factors do not have a great deal to do with the health of the aging That is the point I'm trying to get across. The social solution is evident enough — either children should become old-fashioned enough to care,

or society become interested enough to provide adequate community life for those it is now throwing out of society But that still isn't all that stresses the pituitary to produce STH in the aged

Fear of ill-health. There's the matter that they don't feel well (suppose it *is* functional) always, always, they fear that complete disability may be just around the corner The ordinary young person goes into a tailspin when he is told that he needs to be incapacitated for two years. As a matter of fact, it is very seldom that we doctors dare to put it to a patient so simply Well, now, suppose you have to be afraid, as an elderly patient always has to be afraid, that your age may bring you to your bed tomorrow of a wasting disease you can never be rid of!

It takes a lot of courage in the aged just to act cheerful and never say anything about these fears!

Fear of death. And, too, — you youngsters to whom death is still something that never happens — to the aged (and they think of it, never fear) death is closer at hand than it has ever been. Most every living thing, unless it is very, very miserable, wants to keep on living And so they think, during those long nights (many are the aged who don't sleep well) of the experience that lies threateningly just ahead They feel like the Irishman, "If I knew where I was going to die, I'd sure stay away from that damn place" But for them the situation has lost its humor. It's the BIG THING that's just ahead, HOW and WHEN is it going to be?

Loss of friends. But there are all kinds of other sad things for the older person. Their friends who once dropped a cheerful word, their spouse, who once offered a helping hand, their dog, who once wagged his tail, have all gone. Have you ever in the deepening twilight stood out on a lonely sweep of the earth — have you ever felt an awful lonesomeness pulling you down into the soil — a lonesomeness so deep as if to say, "This and only this is all, there is no more?" If you have, you have just a little inkling of how the aged person feels who is *really*

alone in the twilight, without a soul to care, or show the least parting affection.

You'd think that after 70, 80, 90 years, one would at least deserve, — if not a band and a celebration — some appreciative recognition from society for having accomplished his feat — staying out of jail, bringing up a family, and just generally carrying on through all the difficulties of the years But a posthumous text is the best the children and society can wring from hearts that (never fear), too, will grow old.

Poor housing for the aging. Then take another social cause of distress to the aged — the matter of housing Fifty years ago, two-thirds of our elderly people lived in rural areas. Today, two-thirds live in cities With this change they have lost the sympathies, friendliness, and neighborliness of the small communities. Today, 50 per cent of our aged have unsatisfactory housing and living arrangements, and a large portion of the other 50 per cent are realizing with dismay that their industrial pensions or other income that had, heretofore, been adequate, no longer cover increased rentals and increased food costs. A person on a Federal pension is expected to feed and house himself on seventy-five dollars a month. Housing on such an income can be only the very worst available, a dreary inhospitable room where one must be ashamed to have visitors.

An age that is dark when it should be golden. And so, old age is for most of the aging in our society the dark age instead of the golden age For more and more people, the last years mean more and more misery. Those who are now under 55 may think they have their troubles, but when they are 65, they will really know what trouble is

The troubles of the aging are so acute and so fundamentally devastating, that the miseries of the older people are frequently sending them beyond emotionally induced illness into frank mental derangement. Twenty years ago most of the people in mental institutions were young or middle-aged The old stayed sane. Today four out of every ten admissions to mental institutions are over 65! The cause?

Simple! The conditions our aged are asked to meet are enough to break men's minds. These patients are often labeled "senile dementias" But don't forget, they are degenerative dementias, emotionally induced The proportional admissions of the aged to mental institutions has increased considerably faster than the increase in the total number of the aged

It's Your Problem, Too

Practically every adult living today will live to be 65 and over In 1925 there were 20 younger people for every person over 65 Today there are only 11 younger for everyone over 65, and in 1975, there will be only 8 younger for everyone older than 65. You see, you are going to get there too! The problem of the aged is not like the problem of India You will probably never have to live in India, but you will most certainly live to be older than 65 What is to be done about the problems of oldsters?

You are 20 or 25 or 30

What are you doing about your old age? Now is the best time to start planning

You are 40 or 45 or into the fifties.

You cannot afford to waste time when time is so precious.

You are 60 or 65

There is still time to do much – you have a long time to live.

You are in the seventies or eighties

Contentment, which is something inside and not outside, can still be yours for the trying

What Will We Do About Old Age?

This

Whether you are 20 or whether you are 60, the sooner you develop a mature idea of what your program will have to be

after you are 65, the happier your old age is going to be.

Maturity in old age means essentially what maturity at any age means — it means that as an individual lives, he enjoys what there is to enjoy, his friends, family, work, spare time, and the wonderful world, and he develops a great kindness and thoughtfulness which enables him to be a giver to all, but especially to those weaker and less fortunate Finally he is able to compromise and see the other fellow's point of view instead of disagreeing and rearing up into a fight

Practically, Maturity in Old Age Means This —

If you are young

1. Develop emotional stasis now. We talked about the tough situations our oldsters are faced with But the most important source of trouble is not any of these By far the greatest trouble oldsters have — I should say about 75 per cent of their trouble — is that in their upper years their emotional states have at last caught up to them, as emotional states always do by the time we are 65 The reactions a person allowed himself to have when he was 20 become more obvious as a person grows older. Nine times out of ten, the old man "who is just as sweet as he can be" was always a kindly, understanding person The old lady with an acid tongue and a battleaxe approach to the ordinary incidents of life, was that way when she was 40, and also, though possibly less obviously so, when she was 20 Unless we work on them with conscious thought control, our emotional states in old age are the quintessence of our earlier dispositions with most of the masking flavors filtered off

So, whether you are 20 or 60 you can still learn kindliness, love for your fellows, cheerfulness, and an eye for the thousands of little enjoyable things about us that cost nothing

All through life we have a choice — we have the same choice whether we are 20, or 40, or 60, or 80, except that, at 80, we have more strongly established the habit of making the choice

in one certain direction But even at 80 a resolute person can change the habit in his choice We have the choice between reacting with *equanimity, resignation, courage, determination, and cheerfulness* on the one hand, or with *crabbiness, grumbling, worry, and apprehension* on the other.

The choice is your's — RIGHT NOW

If a person *realized* that he had a conscious choice between the two ways of reacting to his world, *and he knew the consequences of taking one or the other path,* he would not hesitate in choosing equanimity, resignation, determination, courage, and cheerfulness. As in many simple truths, the better choice is so obvious it is missed Somewhere our education should have made it crystal clear that the choice was ours, and that with a flip of our mind a good emotional state was ours, with all the trimmings

2. **Plan future finances.** Save something regularly to add to retirement income. Cut your present scale of living if you need to. Remember what Thoreau once said, that any event that requires a new outfit is not worth the trouble

3. **Plan a place to live** when you are advanced in years Will you have your home or will you have money to pay rent?

4. **Expand your interests** by developing hobbies — gardening, farming, or anything that you can use later when you are done in the office or the shop

Instead of retiring, start a little trade or a little business, be it ever so small Get your mind active in new fields; go to night school, take a correspondence course in some new subject. Get acquainted with books.

5. Since you are going to be old some day, **start making people see the problems of the aged** as realistically as you do — they are going to get there too Above all, help turn sentiment against the type of county old-age homes that are being built in so many states These are poor solutions to the problems of the aged and the very fact of their existence will, in years to come, forestall a better answer. Throw your opinion

and your efforts toward the establishment of the San Francisco-type of home for the aged, which is a community plan on a community scope. These obviously cannot be built by most counties. They will have to built at the state or Federal level

If you are already aged:

1. Cooperate with the inevitable and accept gracefully whatever fate may bring.

2. Whenever an old friend departs, seek a new one; life is as empty or full as you make it.

3. Try to be flexible and adaptable in your thinking; avoid prejudice; don't criticize youth for being as they are.

4. Dress neatly; sew up the holes in the old garments very carefully. Retain good, clean manners.

5. Do not dawdle; pursue interests as though you meant business.

6. Above all, keep the disposition pleasant and cheerful. Greet people with a smile and a kind word. Don't gripe except when no one else can hear you, and when you can't hear yourself.

7. Never let yourself know how tired you are. Just sit down for a while, telling yourself that doing so was what you had in mind, anyway.

8. Don't worry about dying. Everyone who lived before you stood it.

A SUMMARY OF CHAPTER 13

Instead of being a Golden Age, the sixties, the seventies, and eighties are an age of increased emotional stress owing to financial insecurity, job insecurity, children's indifference, the fear of ill health, fear of death, the loss of friends, poor housing, and general public indifference Much of what is

regarded as senile degenerative disease is actually emotionally induced illness, in which STH factors are prominent

If you are young, prepare for age by developing emotional stasis, that is to say, a happy disposition – NOW Plan future finances and a place to live when you are old Develop new active interests, against the time when your job runs out

If you are already aged, you can produce contentment inside, even if there isn't any reason for it outside Cooperate with the inevitable, find a new friend when an old one leaves Stay flexible and adaptable in your thinking. Do not criticize youth. Dress neatly. Keep that disposition pleasant, greet people with a smile. Sit down when you must, but don't let yourself know how tired you are. And as for death – didn't everyone before you stand it?

14. THE FULFILLMENT OF YOUR SIX BASIC NEEDS

There are some people with E I I. who are unaware of any emotions that might be responsible for their illness These people frequently have fundamental emotions of a wrong variety because their *basic psychological needs* are not being filled

The ordinary human being, like you and me, has six basic instinctive needs — six psychological WANTS — things that he feels deeply inside himself he must have If one of these needs is not filled, a deep-seated restlessness is produced, a vague unrequited longing, and an undercurrent of disappointment that colors every minute of the day and night

Such an individual may be adapting himself very well, otherwise, to his environment, managing to put up a cheerful pleasant front, but deep down inside, there is a great gnawing longing because one or more of his psychological needs is only an empty yawning sore of misery.

1. *The First of These Basic Needs Is the Need for Love*

Everyone (even the person who seems to hate everybody

else) has an inner desire and need for love – he wants to receive the affection and high regard of at least one other human being. Receiving such affection makes us feel important and valuable, it makes us feel that we have a place in the order of people and things.

The proper fulfillment of this need adds a glow of warmth, richness, and beauty to what is otherwise very dull living If there is no love from anyone, no high regard from a single other soul, a deep vacuum is made in a person into which are sucked the emotions of distress, longing, lonesomeness, and, eventually, social hostility And these unhealthy emotions are present constantly, day and night, tainting the fundamental background of living

This lack may begin in childhood. There are many unfortunate people who feel the sting of the lack of affection from early childhood on, because they have the bad luck to have been born into a family where real affection simply does not exist Mother and father wage a continual cold war against each other, with periods when the war gets pretty hot and the air is filled with angry words, with, perhaps, a dish or two for punctuation What they can't take out on each other, the parents take out on the children

The children, learning by imitation, imagine that constant bickering, quarreling, spite, and hatred are the stuff that all life is made of, so sisters and brothers return blow for blow Everyone feels alone, hunted, exploited, uncomfortable, and on the defensive. These boys and girls may get quite old, or may go all the way through life, without ever getting the idea that there is such a thing as affection, or that there are human beings capable of it But the psychological need for it is present, and these people have a restlessness, and a yearning, for something they haven't got Basically, they are very unhappy.

The odd and tragic thing is that they don't consciously realize it and, of course, they don't know that it is lack of affection that underlies their restlessness.

This sort of thing isn't at all uncommon. It often shows its effects (which are functional disease and gross unhappiness) in some of the best families.

Verna was a beautiful girl whose mother died when she was a baby Her father, who showed very little affection for her at any time, put the girl in an orphanage where she found more abuse and psychological torment than affection. At the age of fifteen, she met Eugene, an only child and a wealthy boy, with a very protective and selfish mother.

Eugene was captivated more by Verna's sexual attractiveness than anything else, and for the first (and only) time in his life, he did something his mother did not want him to do — he eloped with Verna Verna had received no affection in the orphanage and she received less as the wife of Eugene Eugene was too selfish, too self-centered and dependent on his mother to be capable of affection for Verna Eugene's mother, who always lived just a few blocks away, resented Verna's position with her son and did her best to hold Eugene and turn him against Verna in every way she could.

For years this went on. When children came, the mother worked on them to turn them against Verna, in this she succeeded to the point where a 16-year-old daughter repeatedly told Verna, "I hate you!" The need for affection wasn't the only need that went empty in Verna, some of the others that we are going to talk about, likewise, were empty gulfs of despair Verna experienced years of functional disease which grew gradually to the point of complete disability When the cause of her illness was explained to a much-doubting husband and mother-in-law, they went through the outward appearance of affection But wise Verna sensed this as a sham The only thing that could have altered the situation would have been for Verna to start life all over It was only with great difficulty and self-discipline that Verna began to feel a sense of value in the returned good-will of other people when she went into Red Cross work on an all-out scale

Even worse than Verna's situation is the situation of a girl

who has been brought up in an affectionate family atmosphere and then finds herself married to a man who is capable of about as much affection as a cold blob of cottage cheese. These husbands (and there are a lot of them) forget their wives are human beings with human wants and feelings.

These chaps have little idea that there are such things as human wants and feelings — outside their own. They have a childhood arrest in certain essential compartments of their personalities. If they are capable of any affection, they never show their wives the capacity. After all, it would be easy for the big lugs to show the little woman some affection in many little ways every day. A hug, a kiss, a pleasantry, a compliment on her appearance, or an appreciation of a meal, would put a few blooms in the arid desert that such a woman, unfortunately, inhabits.

It finally serves the big fool right when he has to pay a long, hard medical bill for functional illness of which he is the cause. But this, too, he turns against the wife, blaming her for the sickness his immature stupidity produced. Men like this are one of the big reasons for functional illness in married women.

Sexual love is basically important. The thing we call love, the kind of thing we mean by affection, is a complex thing composed of various parts, and part of this basic need for love is the basic need for sexual love. In any marriage, conjugal affection is intimately bound with sexual affection. A marriage can seldom be unified, affectionate, and mutually satisfactory if the sexual experience between the partners is not unified, affectionate, and mutually satisfactory.

If, for one reason or another, sexual love never develops in a marriage, or fades away and disappears, one or both of the married couple becomes restless, dissatisfied, grumbly, irritable, and complaining. The functional disease produced by this kind of a situation is often hard to treat because the patient would rather not tell about the trouble, consequently it can never be remedied. Sometimes this kind of trouble is

hard to remedy anyway. But this type of trouble produces some very odd results

For instance, Mrs T____ had a severe fibrositis of the lower back, so severe that she went to many clinics and many hos pitals The usual treatment did her very little good.

Mrs. T____ was a career woman. Both she and her husband held important and responsible positions that took precedence over their home life. After their day's work, they came to a home (managed by a housekeeper) used only for meals or for social entertainment. Their sexual life gradually grew thinner and more disinterested, partly because of Mrs. T____'s tendency to deprecate sexuality in favor of her career, and finally because Mr. T____ found more satisfaction in a secret mistress

At first the decreasing sexual atmosphere of their marriage was welcomed by Mrs. T____ Then she developed fibrositis, which on the surface had nothing to do with Mrs. T____'s womanliness. But then she, too, was catapulted into the arms of a lover, and for the first time in her life experienced sexual satisfaction. The remarkable thing was that her fibrositis disappeared *at once.*

Because of her career position, and also because of a profound feeling of guilt, Mrs T____ periodically tried to deny herself to her lover With each of these episodes, the fibrositis returned, only to disappear when this illicit love was allowed again into her life.

In many other ways, sexual incompatibility or unhappiness in marriage is the primary cause of functional disease in husband or wife, or both.

The old people must be loved, too. A group of people who commonly suffer from the need of love and affection are the aged, who must walk more and more alone as those whom they loved, and those who loved them, are taken away by the robber, death An old man loses his wife, the only person who showed him affection, and finds in her place a daughter-in-law, who shows him in many little open or half-hidden ways that he belongs in the category of a "necessary-care-

which-we-will-have-to-tolerate" And so the last of life, for which the first was made, becomes a toasting on a spit turned by a mean wench, assisted by her children, silently aided by the unfeeling attitude of the man's own son. A great deal of what in older people appears superficially to be degenerative disease characteristic of old age is in fact functional disease, the result of the lonesomeness, futility, despair, and sadness that have become the closest companions of their nights and days

2. *Your Second Basic Need Is the Need for Security*

Freud said that man wants most of all to be loved Adler, that he wants most of all to be significant Jung, that he wants security. All three are valid, man is complex and needs many things.

You feel secure if — and only if — there is enough income to buy at least the necessities of life now and in years to come, if your right to life is protected from irresponsible fiends and egomaniacal tyrants by a just government, if you are relatively sure that you will not be struck down by a devastating disease or catastrophe, if you have about you people you know will help you through a deal of trouble

Because *complete* security is an impossible thing, many worry warts defeat an otherwise secure state by worrying over the insecurity of security They worry about cancer, and experience, thereby, more agony than death, again and again To them, government policies spell their certain ruin 30 years hence. They are sure that disaster, in one of its endless forms, is always around the corner

Such people, of course, never know a feeling of security. Because of continual insecurity, they lead miserable lives, mentally and physically They become wracked with functional disease. The trouble with people like these is obvious, they are always worrying right out in plain sight before the entire world

But many people who *are* in insecure positions never show it outwardly, and very often even minimize their insecurity to themselves. Yet down beneath the surface of moment-to-moment emotions, they have a deep feeling of insecurity, felt through its physical manifestations.

An executive may feel an insecurity in regard to his position because capable younger men are coming up and pushing at his heels A man may feel insecure about life itself — the boy in battle, the Jew in Nazi Germany, the anti-communist in Soviet Russia There may be the insecurity felt by a woman whose husband wants a divorce There may be the insecurity felt by the boy who is the target of bullies in a boarding school There is the insecurity felt by a man in any kind of a serious jam.

There are hundreds or, perhaps, thousands of varieties of insecurity this world can concoct for those who live in it. Even though we keep them in the background of our thinking, these insecurities can become the type of monotonous repetitions of unpleasant emotions that lead to functional disease.

One of the common ingredients that people discover in old age is a feeling of insecurity They need to fear ill health, particularly disabling illness Many need to fear financial insecurity Many feel insecure as to what the end of life may bring them There is the inevitable feeling of insecurity at losing loved ones whom they depended upon for certain assistance and qualities of life.

So, to a lack of affection many aged people must add lack of security. At the time when life should be gentle and kind, it becomes cruel and forbidding When the race is nearing the end and a fellow is coming down the homestretch, there should be the cheering of the audience along the way, instead there is the jeering of the insensitive, and the interrogation of the welfare department

The types of emotion that these situations saddle upon the elderly persons are those emotions that stress the pituitary production of STH. The chronic STH effects are essentially

those of degeneration of the kidneys, the arteries, and the organs, in general, as you saw in Chapter 4 Thus it is that degenerative changes are accelerated by the old person's adverse situations If the type of emotion in such individuals is changed by fulfilling the basic needs in which they have been deficient, such as the needs for love and security, the processes of degeneration are reversed to such a degree that the individual seems to become years younger.

Many families are made to feel the pangs of insecurity because of a nonsupporting husband, whether the lack of support stems from alcoholism, laziness, or bad luck alters only the intensity of the emotions, not their essential color The impending loss of home, property, and prestige add up to headaches, disturbances of the gastrointestinal system, and a host of other functional effects.

3. *The Third Basic Need Is the Need for Creative Expression*

The child building with blocks, the housewife making a set of curtains, the financier planning a new holding corporation, the girl writing poetry, the carpenter building a house, — all have the very satisfying feeling that out of raw materials they are creating something new

No one, including you and me, has fundamental happiness if he is not being constructive either in his leisure hours or in his work. It is natural for everyone to identify himself with the world of human beings and to feel that he is assuming a part in that world. The universal urge toward creative expression is a vague kind of restlessness that becomes more and more unpleasant and disturbing if it is not put into action. But when it is put into action, there is the accompanying thrill — a sort of mental breathlessness, and an inward joy of *doing* and *creating*.

Creative activity must not be thwarted. There is probably no frustration greater than a thwarted person with an intense

desire for major creation There was Ethel, for instance, whom I saw because of a functional illness she developed because her desire for creation was nipped in the bud by an unthinking family

Ethel married Roger They were both fine people with excellent families behind them Through high school and college, Ethel had built up plans of the kind of home and the kind of family she wanted to raise. At the time of their marriage, economic conditions in the country were bad, and Roger's parents invited the newlyweds to live on the first floor of their own home. They moved to the second floor. Ethel's mother-in-law was a considerate, kind individual who wished to be tactful and kind to Ethel She cautiously and carefully suggested to Ethel that she might do a certain thing in such and such a way Ethel was truly grateful for the tip and followed the suggestion The mother-in-law was encouraged, by Ethel's enthusiasm, to make more suggestions.

As Ethel's children came, the mother-in-law took a more and more active hand Ethel had an inner, unexpressed feeling that she had in fact become a member of Roger's family and was rearing no new family, was creating no home of her own Her dreams were dissolving into nothing. Worse still, she couldn't get out of her predicament without being rude in the extreme and making life miserable for all of them Ethel grew gradually more frustrated and began more and more to suffer ill health. This was an additional indication to the mother-in-law that her help was needed The mother-in-law was, in fact, the mother of both families; Ethel was a dependent child And Ethel became quite ill

Because Roger and his parents were intelligent people, the doctor could at last make them see Ethel's predicament, they could be shown that Ethel needed above all to be the Ethel she had always hoped to be, she needed to be allowed to create her own home and her own family Ethel and Roger moved away by themselves in a new home they planned together Ethel recovered.

There are many people just as deeply upset, just as frus-

trated as Ethel, because they have been unable to follow an urge to do or to create certain things, an urge they may have felt since childhood These people may appear to be cheerful people on the surface, but the deeper color of their emotions is anything but happy — their thwarted drives end in restless, unrequited yearning, anxiety, discouragement, and finally, perhaps, a loss of self-esteem

4. *The Fourth Need Is the Need for Recognition*

There is in everyone the need to feel that he and his efforts are being appreciated — appreciated by those for whom we strive

Everyone needs to be regarded by *someone* as being of *some* importance, and doing *something* that is of *some* good

It often happens that a man may leave a perfectly good position because he feels that his efforts are not being properly appreciated. He resents the fact that although he worked above the call of duty and did an extraordinarily good job, none of his superiors or equals showed any indication of having recognized it. His need for recognition is given a severe blow He leaves

The unthanked home-maker. But consider the housewife. Actually, from a standpoint of sheer dreariness and the amount of time spent on the job, she has the toughest job there is But most of our housewives never receive a word of recognition from one year's end to the other They, and their washing and ironing, come to be taken as a matter of course by their husbands and children The meals are accepted in the same silent air of "after all, we have this coming" Everyone assumes that the house cleans itself, that the things they drop pick themselves up, that clean clothes get into the closets automatically, that the comforts of home just naturally exist without anyone's skillful touch

This lack of recognition for a difficult job, this thanklessness, goes a long way to make homemaking the world's tough-

est job. The husband quits his job because of lack of recognition, but the housewife doesn't quit hers But she feels all the more keenly the disappointment at the lack of recognition Much of the tiredness that goes with constant housework rises directly out of the lack of recognition the housewife receives Her tiredness is the tiredness of a human being who is being relegated to the position of a lifeless, meaningless drudge

The unthanked oldster. Again in old age, there is this matter of lack of recognition.

Most of the recognition for his work, or recognition of him as an individual, goes out of an older person's life with the death of his friends. An important element in what we mean by friendship is the trading of mutual recognition A man who has no friends can fill his need for recognition only by sheer capacity, and that avenue is no longer open to the elder who is denied a job at his old trade The people who remain surrounding the elder regard age as incapacity, and generally do not regard the old as worthy of respect because they are old. Especially when he is poor, the elder is regarded as a social inconvenience. If he is rich, he becomes an exploitable opportunity In place of recognition, the aged person is treated as a failure, a burned-out being who is about to be flicked away A person who lived courageously and well, whose earlier actions benefited the younger generation who are now critical, is often ushered out coldly and unsympathetically, under a hail of spiritual, if not physical, stones. Gone the recognition, gone the acclaim, just an old man no one really wants Such a crying need of recognition brings emotions that hasten the end

Appreciate your child, but don't spoil him. At the beginning of life, too, recognition is important — just as important as love The intelligent, advanced child is apt to be showered with too much recognition — he may be buried in it so that he can never get his head out into the clear and really evaluate himself for what he is, and forever after he lives under the handicap of too high an opinion of himself.

On the other hand, the slow and awkward child's feeling of recognition may be very negligible He tries in his halting imperfect way to do something that might bring a bit of the recognition which he, like everyone else, longs for. But instead, the reactions of those around him make him feel that his efforts belong in the failure class. He feels that he does not measure up to his brothers or sisters All the attention he receives is on the disciplinary level. Compliments rarely come his way. He develops an increasing sense of incompetence The important element of self-esteem gradually leaves him, perhaps never to return He is always miserable and restless He may seek even the kind of recognition that the doer of bad deeds receives He becomes a lost cause because his need for recognition is a lost cause

5. *The Fifth Need Is the Need for New Experiences*

A human being cannot be kept in a dull monotonous routine without developing a monotonous repetition of unpleasant emotions, and functional disease with it Any kind of a job, long continued, carries with it a certain amount of monotony But the most monotonous job can be made bearable by the thought of a new experience that lies ahead. As one housewife said, "I'd scream if I didn't have that trip to the Black Hills next month to look forward to "

It's an emotionally bad day that starts without the hope or expectancy of a single lift Even a trip to the meat market might be called a lift, so might an airy conversation, or an interesting person.

Here again the housewife is decidedly in a more unfortunate position. The average day offers more variations and opportunities for new experiences for the male of the species He goes outside the house and outside the neighborhood to work, meets and talks to people, and his work itself may hold interesting variations These ready opportunities for new experiences are not available to his wife

Probably the best example I have seen of how a dearth of

new experiences can produce severe functional disease was Mrs. S——. She was only 26 when I first saw her. She was staying with her mother because she had been sick abed almost three months Whenever Mrs. S—— tried to get up, she became so dizzy and faint she had to go back to bed. She was obviously hyperventilating. I remember when the call first came to see her. I was occupied, and I sent a fourth-year medical student who was a preceptee in my office.

He returned all aglow, "Oh, boy, do I have a dandy hyperventilator for your clinic!" The lad was a smart student The several doctors, who up to that time had cared for Mrs. S——, had labeled her illness variously as "anemia," "female trouble," and even "heart disease," so that, in addition to being discouraged, she was also confused

Since childhood, Mrs. S—— had been an eminently normal sort of person — which means also that she had the normal fulfillment of her basic needs. She married during World War II and soon had two children. When her husband left the Army, he took a job trucking bread from a central distributing station to outlying towns. He left home at two o'clock in the morning and got back at noon Houses were at a premium but they finally found one that had the advantage of a low rent The house was six miles from the nearest town, a desolate, dull-green house, set on a desolate, rocky, treeless hilltop. There, in that dismally awful setting, with no neighbors, with only shabby, poorly furnished rooms, Mrs. S—— tried hard and desperately to make a livable home and bring up the children in a happy frame of mind.

Because of the husband's need for sleep, and because of the small children, the couple found it impossible to go out evenings. Besides, there was nothing convenient to go to. After her husband left in the wee early hours, Mrs. S—— felt afraid to be alone with the children in that desolate place. A restless, questionable watch dog offered poor solace. The brown, weathered rocks outside added a dismal dreary note during the day.

Had the husband had a dime's worth of understanding, five cents worth of sympathy, and two cents worth of good intentions, he might have sensed what the situation meant for his wife He made *his* bread rounds, joked with the other truckers and workmen, *saw* things and *did* things. Mrs S____ couldn't even leave the place because Mr S____ had to take the car to work.

He was surprised and disgruntled as his wife became increasingly more complaining and sick Her increasingly long stays with her mother he regarded as depriving him of a home he was rightfully entitled to He criticized her for the medical expense she was creating Finally, after the medical student had discovered Mrs S____'s true illness, Mr S____ thought the doctor's explanation was an unrealistic figment of the imagination

But later on, Mr S____ did develop more of an appreciation for his wife's needs when he found that after treatment she was again a functionally valuable housewife who could get his meals and wash his clothes She improved even more after he had moved her to a nice little place in an attractive little town where she had a tree in the yard, pleasant neighbors, and a sandbox for the children It was little enough.

But, as I said, Mrs S____ was a normal person — she had a good power of adjustment It had been the utter impossibility of new experiences (which a sensitive, life-loving girl like Mrs S____ needs) plus, of course, the lack of security, the absence of affection, and the depressing effects of that awful environment, that had tossed her into bed for three long months But now she is doing fine

6. *The Sixth Basic Need Is Self-Esteem*

In spite of disappointments, in spite of the little or big personal failures that a person experiences through life, most everyone, nevertheless, manages to think sufficiently well of himself to be encouraged to go ahead. His actual capacities

may be ever so minute, his deficiences may (to others) far overshadow his insignificant good qualities, but he himself is able to find some field for personal satisfaction – at least a rebuttal against criticism, supporting it with an injustice complex.

A person who is fired from a job he thought he was holding down well, or a person who is "told off" by someone whose good-will he assumed, or a person who loses, by some catastrophe, all he has been working for, feels afterward as though there were nothing left, he feels the utter emptiness of failure, he is done up. But after a little time, his assurance, his feeling that he is worth something after all, gradually returns, and though it may be nicked and chipped a bit, his self-esteem is back. He hardly notices the nicks.

But there are many people who lose *every* vestige of self-esteem, they look upon themselves as failures in every respect, there is nothing more to do or to try. They feel they have no place in the world, no worth, no importance, no ability, no judgment, no future, no past except guilt and failure There is no bottom to the despair these people feel. They are the most miserable, the sickest, and the most deplorable of all human beings Such a condition in which *all* self-esteem is gone is called a depressive state The sheer hopelessness of it all, hour after hour, may finally bring a fling of desperate bravado, this is known as a *manic-depressive state.*

Two types of person prone to depression. Two types of people are most apt to lose their self-esteem and have depressive states One type is the person with a great abundance of self-confidence and esteem without much in the way of abilities to back it up. The other is the person who starts out with a strong inferiority complex in youth, never rises above it, and finally succumbs to a series of failures

Depressions can occur anytime during life, but are most common after middle life, about the time when one looks back and recoils from the obvious fact that one's accomplishments and achievements have nowhere measured up to early plans and hopes This alone will not bring on the depression,

but if there is added a set-back or two, preventable or unpreventable, what is left of self-esteem begins to vaporize

John Doe was always a confident fellow who bragged rather easily He was always ready to criticise the other fellow's political or religious views and "set him straight" This made him somewhat of an irritation in any office, particularly to the boss whose abilities John Doe regarded as far lower than his. At forty, John Doe stormed out of the office one day He had quit! What was more, he had put the boss in his place Work at that time was easy to get, and J D joined a much larger company where he figured his abilities would be recognized and amply rewarded

But he was never advanced His politics grew very nasty. He began to be sharp to everyone and anyone And one day, when he was 56, he was calmly told his services were no longer necessary This time a job was much harder to find, and before he found one, he became truly alarmed that possibly another job was not to be had. He was on his new job only two months when he was laid off. His wife, who had never been too easy to live with, berated him day and night.

John was at last completely flattened out. All that he thought he was, he now recognized as a mistake, everything he had prided himself on was now a delusion; the things he had always dreamed of being and doing had melted away. The only future lay with the welfare department John Doe went into a severe depression and was institutionalized at the expense of the state.

There are all sorts of variations on that theme Sometimes the failure of the individual is unquestionable, but sometimes the failure is not nearly so great as the victim imagines it is.

What happens in either case is that the person does not have enough self-confidence to go on or to do anything. He is in a state of being personally whipped

The loss of this sixth psychological need has more immediate and apparent effects than does the lack of any of the

other basic needs The others lead eventually to an agitated feeling of vague anxiety and unrest. The loss of self-esteem is characterized by the depressive state.

Gradually the feeling of complete failure wears off, and after months or years, the person again acquires enough self-esteem to become useful to himself and others.

If a person who is developing a depression can put into action the program of conscious thought-control, which we are outlining in these chapters, he can avert his depression. Once a classical depression has developed, there are only two things that can be done to help the patient take care of him and wait until the depression wears off naturally, or give the patient electroshock therapy, which snaps him out of it in two or three weeks. The alternative to this is, of course, to exercise conscious thought-control and keep yourself out of a dangerous depression.

What to Do About Your Basic Needs

Review for yourself the presence or absence in your life of these six basic psychological needs. Ask yourself **Do I in my private world:**

- **1. Receive the *love* of others, or am I a lone, unwanted individual;**
- **2. Have *security,* or am I afraid of my finances, my job, my social status, my legal status;**
- **3 Exercise *creative expression* in my work, in my hobbies, or in any other way;**
- **4. Receive the *recognition* of any of my fellow men;**
- **5 Have the possibility of *new experiences,* or am I an old fossil in a deep rut;**
- **6. Have my own *self-esteem,* or am I going down in my own estimation?**

You might as well be frank, candid, and objective in your answers — it is yourself you are dealing with.

1. If you are situated somewhat like Verna, and there is

no one in your world who really cares a penny's-worth about you, the best compensation is to give your love to those about you, and do for them as you would like to be done by Part of maturity, you will remember, is to have the giving rather than the receiving attitude It becomes a great satisfaction to love and do good for the people around you who do not deserve or expect it

2 If it's **security** you lack, decide what you are going to do about it and then quit turning it over and over in your mind. If you cannot do anything to increase your security, there is no use adding worry to it, it's already bad enough. Remember how William, King of Living, handled insecurity? You might re-read Chapter 8

3. If it's **creative expression** you lack, if you feel you are not making or creating *anything*, that you are just a machine for menial chores, get busy and don't let it eat you any longer. Try doing something you have always hankered to do, try it on your own, or go to the nearest vocational school and pick up a creative art. You might as well start to live!

4 If it's **recognition** that you yearn for, quit yearning, accept the compensation of knowing that you are doing as good a job *for other people* as you possibly can Give them the recognition instead.

It could be, madam, that if your husband reads this the big goof might give you a little recognition tomorrow by saying, "It is a wonderfully good dinner, my darling!" It would feel good, wouldn't it? But even if you get no recognition from him, you tell him, "You look fine and nice this morning, Fred! I've got a swell-looking man!" He'll like that, and your recognition of him will help you almost as much Maybe someday he'll give some of it back.

5. If you've become a drudge, caught tight in dull routine, by all means, bust out into some **new experience**. You should be looking ahead and **planning a new experience all the time.** Buy something; do something, something exciting, join something, go somewhere. Off with you, this minute, into planning a new experience!

6. If your self-esteem has been jolted lately, smooth yourself with humility. Don't try to be, don't think yourself as being, too much. Just an ordinary person. There have been lots of them — many more of that kind than any other. Lincoln was a plain person, with humility, just like you. Then smile! Put conscious thought control into action to substitute equanimity, courage, determination, and cheerfulness for those stress emotions of failure, disappointment, futility. You are just as good as I am, and we are just as good as they are, God bless them!

THE IMPORTANT POINTS TO REMEMBER IN CHAPTER 14

There are six basic psychological needs in every person. If a person lacks any one of them in his life, he will be basically unhappy, tense, and restless without knowing why These needs are the need for affection, security, creative expression, recognition, new experiences, and self-esteem.

- If you lack love and affection from others —
  Give more than your share of love and affection to others.
- If you lack security —
  There is no use adding worry to a bad situation; run the emotionally healthy flags up on your masthead.
- If you lack creative expression —
  Go to it, nothing is holding you.
- If you lack recognition —
  Give recognition to other people instead; some of it will come back.
- If you lack new experiences —
  Go out and get them, be planning something all the time
- If you have lost your self-esteem —
  Remember this: you are just as good as I am, you and I are just as good as they are, God bless them.

15. HERE IS YOUR FINAL BLUEPRINT

The Choice Is Yours

Practice thought control. When you catch yourself starting a thought that will produce a stressing emotion like worry, anxiety, fear, apprehension, discouragement, or the like, STOP IT, and substitute thinking that brings a healthy emotion, like equanimity, resignation, courage, determination, and cheerfulness.

Keep This Always in Mind:

The key thought: Carry this idea every minute of every day: *I am going to keep my attitude and thinking calm and cheerful* — RIGHT NOW

Handle Life This Way:

When the going is good: Tell yourself life is good, and allow yourself the delightful feeling of being happy

When the going gets rough: 1. Stay outwardly as cheerful and as pleasant as you possibly can. Lighten an awkward situation with a lift of humor, with kindness, or a bit of a smile.

2 Avoid running your misfortune through your mind like a repeating phonograph record. Above all, do not let yourself get irritated, upset, hysterical, or self-pitying

3. Try to turn every defeat into a moral victory

4. Run these flags up on your masthead and *keep them flying*·

- Equanimity ("Let's stay calm.")
- Resignation ("Let's accept this setback gracefully.")
- Courage ("I can take all this and more.")
- Determination ("I'll turn this defeat into victory.")
- Cheerfulness ("See, I'm coming up.")
- Pleasantness ("I still have goodwill toward men.")

Important Areas in Living to Watch

- Keep life simple
- Avoid watching for a knock in your motor.
- Like work.
- Have a good hobby
- Learn to be satisfied.
- Like people.
- Say the cheerful, pleasant thing.
- Turn the defeats of adversity into victory.
- Meet your problems with decision.

- Concentrate on making the present moment an emotional success.
- Always be planning something.
- Say "Nuts" to irritations.

➧ *Make Your Family an Asset Rather Than a Liability*

Put These Things into the Family:

- Simplicity in living, and simplicity in enjoyment.
- The idea of the family enterprise.
- The idea that the family is part of the human enterprise
- The attitude of turning defeat into victory.
- An atmosphere of affection, mutual respect and regard.
- A general tone of kindly cheerfulness.
- Reasonable, firm, yet pleasant discipline.
- A feeling of mutual confidence and security.
- An atmosphere of enjoyment – right now.

➧ *Control Your Sex Urge Rather Than Having It Control You*

• **If you are unmarried:** Sublimate your energies into interesting, absorbing and vigorous activities, and develop your general maturity.

• **If you are married:** Every relation between you and your wife, or husband, and this includes the sexual relation, needs to be mature, that is to say, sympathetic, understanding, unselfish, cooperative, and affectionate.

• **In any case:** Be content to keep sexuality within the accepted bounds. It is easier to stay out of trouble than to get out of it once you get in it.

Fill Up Your Own Unfulfilled Basic Needs

Here Is How:

- If you lack love and affection from others —
  Give more than your share of love and affection to other human beings.
- If you lack security —
  There is no use adding worry to a bad situation; run the emotionally healthy flags up on your masthead.
- If you lack creative expression —
  Go to it, nothing is holding you.
- If you lack recognition —
  Give recognition to other people instead; some of it will come back.
- If you need new experiences —
  Go and get them; be planning something all the time.
- If you have lost your self-esteem —
  Remember this: you are just as good as I am; you and I are just as good as they are, God bless them.

This Blueprint Leads to Maturity

By following the blueprint (and the choice is yours) you will be developing maturity and emotional stasis

Maturity Is This:

- *Responsibility* and *independence,* instead of dependence.
- A *giving* rather than a receiving attitude.
- *Cooperativeness* and a *feeling for the human enterprise,* instead of egoism and competitiveness.
- *Gentleness, kindliness,* and *good-will,* instead of hostile aggressiveness, anger, hate, cruelty, and belligerence.

- The ability to distinguish *fact* from fancy.
- *Flexibility* and *adaptability,* instead of awkward and stubborn resistance to changes dictated by fate, fortune, and intelligence.

Good Living Is Yours

If you are going to limp through year after year of anxious, troubled misery, 100 years, or 75, or even 50, is an interminable hell on earth, the shorter life is, under such conditions, the better, none at all would be best

But once you learn the trick of striding along, eyes calm with equanimity, head up with determination, chest out with courage, a pleasant word for fellow travelers, and resignation on meeting rocky rough roads, your years will beg repetition, and your living will be a fascinating enterprise that you would welcome for a hundred years

The choice of whether to limp or to stride is yours – RIGHT NOW.

A WORD TO THE PROFESSIONAL READER

The physician who prescribes this book for his patient, or the teacher who is interested in "total" education, may wish to know more about the psychological concepts underlying my method of treating emotionally induced illness.

The Basic Psychological Concept in the Method

The basic psychological concept of the method of treatment presented in this book is the *learning-maturity concept.* Simply stated, this means that emotional stress is the result of miseducation, or lack of proper education, and that emotional stasis can be achieved by *learning* the qualities that comprise *maturity* Stress is bound to arise in an immature person because he is trying to handle adult situations and problems with primitive and childish techniques. The learning-maturity concept has gradually been emerging from the constantly boiling cauldron of psychiatric and psychological thinking This concept is the direct antithesis of Freudian psychiatry, which has been oriented by the concept that emotional stress is conditioned early in life by an unacceptable experience that is relegated to the dusky murkiness of the subconscious, where it preys on the host forevermore

The learning-maturity concept further implies that the treatment of emotional stress consists in showing the patient precisely what maturity means in the handling of everyday

living, and then showing him a practical discipline for carrying on his living with a passable degree of maturity

In contrast, the therapy of traditional psychiatry consists quite largely of digging into the personal history and the half-buried past, a very interesting though, in my opinion, not a very fruitful method of treatment. It does afford the therapist an excellent idea of the particular variety of immaturity a patient has, but this is a matter which can be determined fairly readily, without hours spent on a psychiatric couch Being interested mainly in the past, the traditional psychiatrist often prefers to do very little about the present or the future

The learning-maturity concept, on the other hand, insists that, regardless of the omissions and commissions of the past, a person has to *start in the present* to acquire some maturity so that the future may be better than the past The present and the future depend on learning new habits and new ways of looking at old problems There simply isn't any future in digging continually into the past

Instead of recreating the past, as does the conditioning concept, the learning-maturity concept emphasizes an improved approach for the present and future

The Common Denominator in Emotionally Induced Illness

The starting point in the treatment of E. I. I. becomes simple and clear when one realizes that the underlying emotional problem has the same common denominator in every patient This common denominator is that the patient has forgotten how, or probably never learned how, to control his *present* thinking to produce *enjoyment* Constant fear, anxiety, apprehension, irritation, frustration, and discouragement absolutely preclude the possibility of enjoyment Emotional stress can be helped *only by learning* to react to situations RIGHT NOW with equanimity, courage, determination, and cheerfulness The person who learns to handle the ma-

jority of life situations with equanimity, courage, determination, and cheerfulness has taken a long step into maturity. Beyond this step there remains the development of unselfish cooperativeness and good judgment to make maturity fairly complete.

My method of therapy places the patient on the enjoyment principle by a conditioned reflex through conscious thought control, by substituting equanimity, courage, determination and cheerfulness, whenever anxiety, apprehension, and so on, begin to make their appearances. This substitution is done by conscious thought control until habit can eventually take over. Such substitution is what people with emotional stasis are doing habitually all the time

The Practical Application of the Common Denominator and the Learning-Maturity Concept

The point of greatest practical difference between the traditional adequate psychotherapy and the learning-maturity method is this adequate psychotherapy requires hours and hours of the doctor's time and can, therefore, be used only on an extremely small fraction of patients who need therapy, the learning-maturity method can be applied in ways that require practically none of the doctor's time.

How can the learning-maturity method be applied without hours of the doctor's time?

First, because maturity in one person is the same thing as maturity in another person, and second, because there is the same common denominator in every person with emotionally induced illness, the course and procedure of therapy *is the same in every patient,* regardless of how their problems may differ in detail.

The essential thing to show patients is how they may henceforth meet the ordinary life situations with maturity and emotional stasis, and how they may introduce enjoyment into the present moment This can be done in the same way for everyone Therapy for emotionally induced illness can be standard-

ized to a single pattern and yet help practically 100 per cent of the patients. If one can develop a system of instruction that will help *one* patient develop maturity and emotional stasis, the same system would work for almost any other patient

For the past 20 years I have tried various methods and various techniques, working always with this requirement in mind: **Because there are so many patients with E. I. I., the doctor must have a method that does not require much of his time.** I submit that *unless a method meets this criterion, it is useless in medical practice.*

One method that at first seemed to promise well was group therapy Ten, 25, 50, even 75 patients would meet periodically for orientation lectures, followed by general group discussion But this grew to a point where I was spending three hours every night with such groups This was not saving the doctor's time and it was a grueling program!

The results of group therapy were encouraging, but not too satisfactory. Much still remained to be given the patient in private sessions

After several false starts with sound alone, I finally tried an audiovisual demonstration, using wire recordings, and later tape recordings, coupled with colored slides projected on a screen. Almost at once patient response indicated that this was it!

The method was perfected so that one patient, and his spouse, could receive instruction in private What this method lacked by not having the doctor talking directly to the patient was more than compensated by the thoughtful care that could go into the preparation of a tape recording far superior to an off-the-cuff lecture, plus the additional interest of slides on a screen giving point and interest to the demonstration. The doctor saw the patient briefly before and after each audio-visual demonstration.

Here was a method which worked during the day while the doctor was attending his other patients. Bit by bit the audiovisual demonstrations were pieced together, changed here and altered there, until they developed a hitting power

that far exceeded the group therapy sessions. The present demonstrations can admittedly be vastly improved upon, and, indeed, they are constantly being added to and changed

The audiovisual sessions are attended by the patient and his spouse at weekly intervals. He sees the doctor for a period of five minutes before and after each session, so that the doctor may make certain that the patient is being suitably oriented. The tape recordings present essentially the same material contained in this book, greatly augmented by the visual aid of the screen projections

During the past six years, thousands of patients have attended these therapeutic sessions The majority have either been cured of their ailment, or have been shown how to tolerate their symptoms. Most of them have been shown how to live happily. The doctor, too, benefits by removing his greatest worry and care, which is "How can I possibly bring effective help to these scores of people with emotionally induced illness?" The layman cannot possibly appreciate what a tremendous burden functional disease produces for the doctor. The doctor needs a method of therapy as much as does the patient.

Having seen what can be accomplished by audiovisual sessions utilizing the learning-maturity concept, and failing to see how the tremendous number of patients can be given the necessary therapy in any other way, I am of the opinion that eventually this system, or some modification of it, *must* become the universally accepted method of treating emotionally induced illness.

A Comparison of the Learning-Maturity Method and "Adequate Psychotherapy"

Adequate psychotherapy for E. I. I. consists of three distinct phases, the period of explanation, the period of ventilation, the period of education

The emphasis is placed on the period of ventilation, the

period of explanation is very sketchy and often unconvincing; the period of education varies in intensity with various psychiatrists. Some leave it out altogether.

Psychoanalysis consists only of the period of ventilation The analyst considers a period of education entirely superfluous

The learning-maturity method by audiovisual presentation emphasizes the period of explanation and the period of education. The period of ventilation is turned into a period of demonstration.

The period of explanation. The initial step, in both adequate psychotherapy and in the learning-maturity method, is to explain to the patient that he has emotionally induced illness, and to give him some idea of how E I I works

The adequate psychotherapist has considerable trouble in doing this because his explanations are exceedingly ephemeral, and leave the average patient completely unconvinced.

As an example. a patient of mine who was seen by a psychiatrist was given this explanation of his diarrhea· "You hate your mother-in-law, and you would like nothing better than to have her out of your life Your diarrhea is your body's organ-language of that repressed desire " To the patient that sounded pretty weak. He was not convinced that his diarrhea had anything to do with his mother-in-law, especially when his diarrhea did not stop after his mother-in-law had been killed in an accident (with which the patient had nothing to do)

Admittedly the man's mother-in-law had much to do with the emotional stress which was manifesting itself in his colon, but to give the explanation that the body is acting out a phrase of language, which the mind dare not express, is, in my opinion, just as silly as it sounds It sounded silly to the patient.

Another symbolic psychiatric explanation is, "You feel a lump in your throat because that is your body's expression of the fact that you have things in your life you can't swallow." There is, of course, a connection between the "things in your

life" and the lump, but why can't the explanation be factual, that is to say, physiological, instead of merely figurative?

It is much easier to convince patients that they have E. I. I. if the explanation is physiological, as in the first part of this book. After the audiovisual sessions on explanation, the patient usually says, "Sure, you were describing me all the time. Why didn't someone tell me before how this worked?"

We know, today, what the mechanism of E. I. I. is. Why not use it? In fairness, it must be noted that psychiatrists are turning more and more to physiologic explanations of the emotion-symptom relationship. But many of them still rely on the hokus-pokus of symbolism.

The period of ventilation. Traditional psychiatrists, and especially psychoanalysts, place their main emphasis on the part of their therapy they term "ventilation," which consists in having the patient talk about himself.

The ventilative sessions of an hour each, at weekly intervals, extend from weeks to years, depending on how deeply buried the subconscious material happens to be.

From such ventilation, the psychiatrist hopes to have the patient uncover the mainspring of his illness, the theory being that emotional stress is due to repressed and buried complexes that tend to disappear as soon as the patient knows of their presence and significance. The main objection to this theory is that it does not often work, it does not often produce a cure of the patient's emotional stress.

In the audiovisual presentation of the learning-maturity method there is obviously no place for ventilation. Instead of listening to the patient ventilate, as in "adequate psychotherapy," the doctor ventilates for the patient. In the audiovisual sessions, as in this book, the patient is presented with the chief situational and personality factors that produce emotional stress. He has time to compare his own situation with the hypothetical ones presented during the sessions, he analyzes himself and realizes that perhaps what he has always considered normal for himself is, after all, abnormal.

Very often, a person who has attended several audiovisual sessions will voluntarily reveal a situation in his life that he had been hiding. If the patient doesn't voluntarily bring me an assay of himself after a reasonal number of sessions, I ask him, "Now that you have seen the kind of thing that produces E I I. in most people, what do you think is doing it in you?" If he doesn't have an immediate answer, I ask him to bring it with him before he attends the next session

The period of education. After the explanatory and ventilative periods, the psychotherapist usually discusses, with the patient, ways and means of alleviating his difficulties This period of education is by no means universally used by all psychiatrists Many psychiatrists do not give the patient any directive program and believe educational efforts are useless. Their emphasis, of course, is on the cathartic effect of the ventilative period.

The learning-maturity concept emphasizes the educative period The main effort is *not* to dig up the past but to show the patient how he may go about acquiring the qualities that will make his present and future more endurable and satisfactory than his past

A person is what he is because of the sum total of influences that he has met in the past. Whatever those influences were does not preclude the application of new influences and new learning patterns now or in the future. If a poor swimmer is shown how, the chances are he can be a better swimmer. Once in a great while, of course, there will be someone who just can't learn to swim, but the majority can be helped.

The *final* know-how for developing maturity and emotional stasis we do not yet have, it is something that will have to be acquired through trial and error. However, there is already quite a bit we do know, let us begin to apply that

INDEX

INDEX